UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186306

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University

Call No. H 329.545 Accession No. H·2315

Author K152

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

राम-कथा

(उत्पत्ति और विकास)

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल्० उपाधि के लिए स्वीकृत निबंध

लेखक

रेवरेंड फ़ादर कामिल बुल्के एस० जे०, एम० ए०, डी० फ़िल्०

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, संत जेवियर कॉलिज, राँची

प्रकाशक

हिन्दी परिषद्, विश्वविद्यालय

प्रयाग

प्रथम संस्करण, नवंबर, १९५०

मुद्रक—महादेव प्रसाद, आज़ाद प्रेस, प्रयाग

जिनकी प्रतिभा ने राम-कथा को भारत तथा निकटवर्ती
देशों के साहित्य में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
स्थान दिलाया और भारतीय संस्कृति
का एक उज्ज्वलतम प्रतीक बना
दिया, उन

आदि कवि वाल्मीकि

को रामकथा की दिग्विजय का प्रस्तुत विवरण सश्रद्धा समर्पित है।

त्वदीयं वस्तु वाल्मीके तुभ्यमेव समर्प्यते

परिचय

प्राचीन भारत के समान ही आधुनिक यूरोप ज्ञान सम्बन्धी खोज के क्षेत्र में अग्रसर रहा है। यूरोपीय विद्वान ज्ञान तथा विज्ञान के रहस्यों के उद्घाटन में निरंतर यत्नशील रहे हैं। उनकी इस खोज का क्षेत्र यूरोप तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि संसार के समस्त भागों पर उनकी दृष्टि पड़ी। इस महत्त्व-पूर्ण ग्रथ के लेखक फादर बुल्के को हम इन्हीं विद्याव्यसनी यूरोपीय अन्वेषकों की श्रेणी में रख सकते हैं। भारतीय विचारधारा को समझने के लिये इन्होने सस्कृत तथा हिंदी भाषा और साहित्य का पूर्ण परिश्रम के साथ अध्ययन किया। प्रयाग विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त आपने डी० फिल० के लिये 'रामकथा का विकास' शीर्षक विषय चुना। प्रस्तुत ग्रंथ उनका थीसिस ही है जिस पर उन्हें प्रयाग विश्व-विद्यालय से डी० फिल० की उपाधि मिली है।

सुयोग्य लेखक ने इस ग्रथ की तैयारी में कितना परिश्रम किया है यह पुस्तक के अध्ययन से ही समझ में आ सकता है। रामकथा से सम्बन्ध रखनेवाली किसी भी सामग्री को आपने छोड़ा नहीं है। ग्रंथ चार भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में 'प्राचीन रामकथा साहित्य' का विवेचन है। इसके अन्तर्गत पाँच अध्यायों में वैदिक साहित्य और रामकथा, वाल्मीकिकृत रामायण, महाभारत की रामकथा, बौद्ध रामकथा तथा जैन रामकथा सबधी सामग्री की पूर्ण परीक्षा की गई है। द्वितीय भाग का संबंध रामकथा की उत्पत्ति से है और इसके चार अध्यायों में दशरथ जातक की समस्या, राम-कथा के मूल स्रोत के सम्बन्ध मे विद्वानों के मत, प्रचलित वाल्मीकीय रामा-यण के मुख्य प्रक्षेपों तथा रामकथा के प्रारंभिक विकास पर विचार किया गया है। ग्रंथ के तृतीय भाग में 'अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिंहा वलोकन' है। इसमें भी चार अध्याय हैं। पहले और दूसरे अध्याय में संस्कृत के धार्मिक तथा ललित साहित्य में पाई जाने वाली रामकथा संबंधी सामग्री की परीक्षा है। तीसरे अध्याय में आधुनिक भारतीय भाषाओं के रामकथा सबधी साहित्य का विवेचन है। इसमें हिंदी के अतिरिक्त तामिल, तेलगू, मल-यालम, कनारी, बंगाली, काश्मीरी, सिंहली आदि समस्त भाषाओं के साहित्यों

की छान-बीन की गई है। चौथे अध्याय में विदेश में पाये जाने वाले रामकथा के रूप का सार दिया गया है और इस संबंध में तिब्बत, खोतान, हिंदेशिया, हिंदचीन, श्याम, ब्रह्मदेश आदि में उपलब्ध सामग्री का पूर्ण परिचय एक ही स्थान पर मिल जाता है। अंतिम तथा चतुर्थ भाग में रामकथा सम्बन्धी एक एक घटना को लेकर उसका पृथक्-पृथक् विकास दिखलाया गया है। घटनाएँ कांड-क्रम से ली गई हैं अतः यह भाग सात कांडों के अनुसार सात अध्यायों मे विभक्त है। उपसहार में रामकथा की व्यापकता, विभिन्न रामकथाओं की मौलिक एकता, प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ, विविध प्रभाव तथा विकास का सिंहावलोकन है।

इस संक्षिप्त परिचय से ही यह स्पष्ट हो गया होगा कि यह ग्रंथ वास्तव में राम-कथा संबधी समस्त सामग्री का विश्वकोष कहा जा सकता है। सामग्री की पूर्णता के अतिरिक्त विद्वान लेखक ने अन्य विद्वानों के मतों की यथा स्थान परीक्षा की है तथा कथा के विकास के सबध में अपना तर्कपूर्ण मत भी दिया है। वास्तव में यह खोजपूर्ण रचना अपने ढंग की पहली ही है और अनूठी भी है। हिन्दी क्या किसी भी यूरोपीय अथवा भारतीय भाषा में इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नहीं है। अतः हिंदी में इस लोकप्रिय विषय पर ऐसे वैज्ञानिक अन्वेषण के प्रस्तुत करने के लिए विद्वान लेखक बधाई के पात्र हैं। आशा है कि भविष्य में उनकी लेखनी से इस प्रकार के अन्य खोजपूर्ण ग्रंथ प्रकाश में आवेंगे। प्रस्तुत अध्ययन का उत्तरार्ध 'राम-भक्ति का विकास' तो शीघ्र ही प्रकाशित होना चाहिए। प्रयाग विश्वविद्यालय हिंदी परिषद् को इस बहुमूल्य कृति के प्रकाशन पर गर्व होना स्वाभाविक है।

नवम्बर, १९५०

धीरेन्द्र वर्मा

निवेदन

भारत तथा निकटवर्त्ती देशों के साहित्य में राम-कथा की अद्वितीय व्यापकता एशिया के सांस्कृतिक इतिहास का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस रामकथा का अध्ययन अनेक दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। प्रस्तुत निबंध में इसकी उत्पत्ति तथा कथावस्तु के विकास की रूपरेखा अंकित करने का प्रयत्न किया गया है। इस सीमित परिधि के दृष्टिकोण से प्राचीन तथा अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य का निरूपण और विश्लेषण क्रमशः प्रथम तथा तृतीय भाग मे किया गया है।

राम-कथा की उत्पत्ति तथा मूलस्रोत के संबंध में अनेक भ्रामक धारणाएँ विद्वन्मंडली में प्रचलित हो गई हैं। इनका निरूपण तथा खंडन द्वितीय भाग का विषय है। यद्यपि निबंध के इस भाग में किसी सर्वथा नवीन निष्कर्ष का प्रतिपादन नहीं है, किंतु विवेच्य विषय से संबंध रखनेवाली समस्त प्रकाशित सामग्री का मौलिक रूप से वर्गीकरण तथा स्पष्टीकरण किया गया है।

चतुर्थ भाग में वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु के क्रमानुसार राम-कथा के विभिन्न कथांग के विकास का अलग अलग वर्णन किया गया है। इसके लिए प्रथम तथा तृतीय भागों मे निरूपित प्राचीन तथा अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक था। यह साहित्य अत्यन्त विस्तृत है और इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन प्रायः सर्वथा मौलिक है; अतः इसमें त्रुटियाँ अवश्य रह गई होंगी। इनके लिए मैं विद्वानों से विनयपूर्वक क्षमाप्रार्थना करता हूँ।

राम-भक्ति के पल्लवित होने के साथ साथ राम-कथा का विकास अपनी अंतिम परिणति पर पहुंच गया था। अतः पंद्रहवीं शताब्दी के बाद के संस्कृत साहित्य का पूरा निरूपण अनावश्यक था। इसी प्रकार आधुनिक आर्य भाषाओं का राम-कथा-साहित्य प्रस्तुत निबंध के दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत कम महत्त्व रखता है। वास्तव में यह साहित्य प्रधानतया राम-कथा-साहित्य न होकर राम-भक्ति-साहित्य सिद्ध होता है। इसका (विशेषकर हिन्दी राम-साहित्य का) समुचित अध्ययन राम-भक्ति की उत्पत्ति और विकास के

पूरे विश्लेषण के पश्चात् ही सभव हो सकेगा। आशा है कि एकाध वर्ष की खोज के बाद मैं 'रामभक्ति' (उत्पत्ति और विकास) नामक ग्रंथ प्रकाशित कर सकूँगा। तत्पश्चात् हिन्दी साहित्य की राम-भक्ति-शाखा की रचनाओं का कथा तथा भक्ति दोनों दृष्टिकोणों से विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन करने का मेरा विचार है।

प्रस्तुत निबंध प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत हुआ है। परीक्षकों के सुझाव के अनुसार मैंने कई स्थलों पर भावों का किंचित् स्पष्टीकरण किया है तथा निरीक्षक के इच्छानुसार 'संहार' नामक अंतिम अध्याय पुनः लिखकर अधिक विस्तार में प्रस्तुत किया है।

निबंध के तृतीय भाग की सामग्री एकत्र करने में बहुत से भारतीय तथा विदेशी विद्वानों से सहायता मिला है। इसके संबंध में निम्नलिखित विद्वान् विशेष रूप से मेरे धन्यवाद के पात्र हैं—डा० राजेंद्र हाजरा (पौराणिक साहित्य); श्री एस० तिरुमलैसामी आयंगर (तामिल); रेवरेण्ड टी० रायण और सी० सत्यनारायण (तेलगू); डा० पी० के० नारायण पिल्लै (मलयालम); श्री एच० लोबो (कनारी); श्री प्रह्लाद प्रधान (उड़िया); श्री एन्० के० भागवत (मराठी); श्री मनसुखलाल झावेरी (गुजराती); श्री एफ० मारटिनी और सुश्री एस० कार्पेलेज (हिंदचीन)।

मैं पूज्य डॉ० धीरेंद्र वर्मा के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ; वे मुझे कई वर्षों से हिन्दी के अध्ययन में प्रोत्साहन देते आ रहे हैं। उनकी प्रेरणा से मैं राम-कथा की खोज में प्रवृत्त हुआ था और उनके विद्वत्तापूर्ण परामर्शों के फलस्वरूप निबंध को प्रस्तुत रूप दे सका हूँ। अपने निरीक्षक डॉ० माता प्रसाद गुप्त के प्रति अपना आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। उन्होंने मुझे अपना बहुमूल्य समय देने में कभी संकोच नहीं किया और निबंध के प्रत्येक अंश को यथासंभव परिपूर्ण बनाने के लिए समय समय पर अनेक सुझाव दिए हैं।

डॉ० रघुवंश का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समस्त पाण्डुलिपि पढ़ने का कष्ट उठाया है। श्री रामसिंह तोमर ने प्रूफ़ देखने का भार स्वतः लेकर इस पुस्तक के शीघ्र प्रकाशित होने में जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उनका सदा आभारी रहूँगा।

राँची
३०-६-५०

कामिल बुल्के

विषय-सूची

प्रथम भाग

प्राचीन राम-कथा-साहित्य

अध्याय पृ०

१. वैदिक साहित्य और राम-कथा

क—वैदिक साहित्य में राम-कथा के पात्र ... ३

इक्ष्वाकु, दशरथ, राम, अश्वपति, जनक

ख—वैदिक साहित्य में सीता ... ६

सीता सावित्री; सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी

ग—वैदिक साहित्य में राम-कथा का अभाव ... २७

२. वाल्मीकिकृत रामायण

क—वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ ... ३०

ख—रामायण का रचनाकाल ... ३५

ग—आदिकवि वाल्मीकि ... ३७

३. महाभारत की रामकथा

क—महाभारत और रामायण ... ४१

ख—महाभारत में रामकथा ... ४३

(१) आरण्य-पर्व (२) द्रोणपर्व (३) शांतिपर्व

(४) महाभारत में रामावतार

ग—रामोपाख्यान ... ४६

(१) आधार (२) रामोपाख्यान और रामायण की तुलना

४. बौद्धरामकथा ... ५२

(१) दशरथ जातक (२) अनामकं जातकम्

(३) दशरथ कथानम् (४) अन्य बौद्ध साहित्य

५. जैन रामकथा

क—जैन रामकथा की सामान्य विशेषताएँ ... ६०

ख—विमल सूरि की परम्परा ... ६२
ग—गुणभद्र की परम्परा ... ६८

द्वितीय भाग

रामकथा की उत्पत्ति

६. दशरथ-जातक की समस्या

(१) पाली जातकट्ठवण्णना की प्रामाणिकता ... ७६
(२) दशरथ जातक की गाथाएँ ... ७७
(अ) जलक्रिया (आ) अनित्यता का उपदेश
(इ) राम का राज्यकाल (ई) उपसंहार
(३) दशरथ जातक की राम-कथा ... ८३
(अ) डॉ० वेबर का मत (आ) दशरथ जातक की अंतरंग समीक्षा
(४) पाली त्रिपिटक और रामायण ... ९२
(५) रामायण पर बौद्ध प्रभाव ? ... ९९

७. रामकथा का मूलस्रोत

क—ए० वेबर का मत ... १०२
ख—एच० याकोबी का मत ... १०३
ग—दिनेशचंद्र सेन का मत ... १०९
घ—उपसंहार ... ११२
परिशिष्ट (१) रामकथा का ऐतिहासिक आधार
(२) वानर और राक्षस
(३) राम-कथा का भूगोल

८. प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण के मुख्य प्रक्षेप

क—उत्तरकाण्ड ... १२०
ख—बालकाण्ड ... १२२
ग—अवतारवाद ... १२३
(१) सामग्री का निरूपण (२) तर्क

९. राम-कथा का प्रारंभिक विकास

क—रामकथा-संबंधी गाथाएँ और आख्यान-काव्य ... १३४
ख—आदिरामायण की उत्पत्ति ... १३६

ग—आदिरामायण का विकास ... १४०
(१) प्रक्षेप (२) बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड
(३) अवतारवाद
घ—रामकथा का व्यापक प्रसार ... १४५

तृतीय भाग

अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य का सिंहावलोकन

१०. संस्कृत धार्मिक साहित्य में राम-कथा

क—रामभक्ति की उत्पत्ति और विकास ... १४६
ख—पौराणिक साहित्य ... १५३
(१) हरिवंश (२) महापुराण (३) उपपुराण
ग—साम्प्रदायिक रामायण ... १६३
(१) योगवासिष्ठ (२) अध्यात्म रामायण
(३) अद्भुत रामायण (४) आनन्द रामायण
(५) कालनिर्णय रामायण (६) गौण रामायण
घ—अन्य धार्मिक साहित्य ... १७२
(१) जैमिनी भारत (२) सत्योपाख्यान
(३) हनुमत्संहिता (४) बृहत्कोशल खंड
परिशिष्ट। 'हिंदुत्व' में उल्लिखित रामायण

११. संस्कृत ललित साहित्य में राम-कथा

क—महाकाव्य ... १८०
(१) रघुवंश (२) रावणवह (सेतुबंध)
(३) भट्टिकाव्य (४) जानकीहरण
(५) अभिनन्दकृत रामचरित (६) रामायण-मंजरी तथा दशावतार चरित (७) उदारराघव
(८) उत्तरकालीन महाकाव्य
ख—नाटक ... १८७
(१) प्रतिमानाटक तथा अभिषेक नाटक
(२) महावीर चरित तथा उत्तररामचरित
(३) कुन्दमाला (४) अनर्घराघव
(५) बालरामायण (६) महानाटक

(७) आश्च र्यचूडामणि (८) प्राचीन
किंतु अप्राप्य नाटक (९) प्रसन्नराघव
(१०) गौण नाटक (११) उत्तरकालीन नाटक
ग—स्फुट काव्य ... १९९
(१) श्लेष काव्य (२) विलोमकाव्य (३) चित्रकाव्य
(४) शृंगारिक खंडकाव्य
घ—कथा-साहित्य ... २०१
परिशिष्ट । रामलिंगामृत की कथावस्तु

१२. आधुनिक भारतीय भाषाओं में राम-कथा

क—द्राविड़ भाषाओं के साहित्य में राम-कथा ... २०९
(१) तामिल (२) तेलगू (३) मलयालम
(४) कनारा (५) आदिवासी कथाएँ
ख—आर्य भाषाओं के साहित्य में राम-कथा ... २१५
(१) सिंहली (२) काश्मीरी (३) बंगाली
(४) हिन्दी (५) अन्य आर्य भाषाएँ—उड़िया,
मराठी, गुजराती, आसामी

१३. विदेश में राम-कथा

क—तिब्बत, खोतान २२८
ख—हिंदेशिया २३१
(अ) प्राचीन राम-कथा (आ) अर्वाचीन राम-कथा—
(१) सिंहावलोकन (२) हिकायत सेरी राम
(३) पातानी राम-कथा (४) जावा
का सेरत काण्ड
ग—हिंदचीन, श्याम, ब्रह्मदेश २४०
घ—पाश्चात्य वृत्तान्त २४६

चतुर्थ भाग

राम-कथा का विकास

१४. बालकाण्ड

(१) वाल्मीकि रामायण का बालकाण्ड २५३
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण—(अ) तीनों
पाठों में विभिन्नता (आ) बालकाण्ड की उत्पत्ति

(१) बालकाण्ड का विकास २५८
(क) राम का जन्म तथा प्रारंभिक कृत्य (ख) अहल्योद्धार (ग) परशुराम (घ) नवीन सामग्री
(२) अवतारवाद २६६
(क) दशरथ-यज्ञ (ख) अवतारवाद का विकास (ग) अवतार के कारण
(४) दशरथ के विवाह तथा सतति २७७
(क) विवाह-कथाएँ (ख) संतति (ग) वंशावली
(५) राम-सीता-विवाह २८३
(क) धनुर्भंग (ख) सीतास्वयंवर
(६) सीता की जन्मकथा २९०
(क) जनकात्मजा (ख) भूमिजा (ग) सीता और लंका – (अ) रावणात्मजा (आ) पद्मजा (इ) रक्तजा (ई) अग्निजा (उ) उपसंहार (घ) दशरथात्मजा

१५. अयोध्याकाण्ड

(१) वाल्मीकीय अयोध्याकाण्ड ३०७
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण – (अ) तीनों पाठों में विभिन्नता (आ) प्रक्षेप
(२) अयोध्याकाण्ड का विकास ३१३
(क) राम की चित्रकूट-यात्रा (ख) अंध-मुनि-पुत्र-वध (ग) भरत की चित्रकूट-यात्रा (घ) राम का चित्रकूट में निवास
(३) राम का निर्वासन ३१९
(क) वनवास के विविध कारण (ख) कैकेयी की वरप्राप्ति (ग) कैकेयी का दोषनिवारण (घ) मंथरा

१६. अरण्यकाण्ड

(१) वाल्मीकीय अरण्यकाण्ड ३२७
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण—(अ) तीनों पाठों में विभिन्नता (आ) प्रक्षेप
(२) अरण्यकाण्ड का विकास ३३१
(क) दण्डकारण्य-प्रवेश (ख) शूर्पणखा (ग) जटायु (घ) सीता की खोज

(३) सीताहरण ३३७
(क) कारण (ख) मूलरूप (ग) कनकमृग (घ) मायासीता
१७. किष्किन्धाकाण्ड
(१) वाल्मीकीय किष्किन्धाकाण्ड ३५२
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण—(अ) तीनों पाठों में विभिन्नता (आ) प्रक्षेप
(२) किष्किधाकाण्ड का विकास ३५७
(क) सुग्रीव से मैत्री (ख) वालिवध (ग) वानरों का प्रेषण (घ) वानरों की खोज
१८. सुन्दरकाण्ड
(१) वाल्मीकीय सुन्दरकाण्ड ३६४
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण—(अ) तीनों पाठों मे विभिन्नता (आ) प्रक्षेप
(२) सुन्दरकाण्ड का विकास ३६८
(क) समुद्रलंघन (ख) हनुमान् के छद्मवेष (ग) लकादेवी (घ) लका की घटनाएँ
१९. युद्धकांड
(१) वाल्मार्कीय युद्धकाण्ड ३७३
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण—(अ) तीनों पाठों में विभिन्नता (आ) प्रक्षेप
(२) युद्धकाण्ड का विकास ३८३
(क) विभीषण की शरणागति (ख) सेतुबध (ग) राम का मायामय शीश (घ) हनुमान् का ओषधिपर्वत ले आना (ङ) कुंभकर्ण-वध (च) इंद्रजित्-युद्ध (छ) रावणवध (ज) अग्निपरीक्षा (झ) नवीन सामग्री
२०. उत्तरकांड
(१) वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड ४०४
(क) कथावस्तु (ख) विश्लेषण—(अ) तीनों पाठों में विभिन्नता (आ) उत्तरकाण्ड की उत्पत्ति
(२) उत्तरकाण्ड का विकास ४०९
(क) शम्बूक-वध—(अ) उत्तरकाण्ड की कथा

(आ) पउमचरिय की कथा (ख) राम का अश्वमेध
(ग) नवीन सामग्री—राम का विभीषण से मिलना; राम की तीर्थयात्राएँ तथा विलासक्रीड़ाएँ; सीता द्वारा रावण-वध
(३) रावणचरित ४१७
वंशावली; पूर्वजन्म तथा अवतार-कारण; शिवभक्ति; मंदोदरी से विवाह
(४) हनुमान् की जन्मकथा ४२४
(क) वायु के पुत्र (ख) शिव के अवतार (ग) विष्णु के अंशावतार (घ) राम के पुत्र
(५) सीतात्याग ४३०
(क) सीतात्याग का अभाव (ख) सीतात्याग के विविध कारण—(अ) लोकापवाद (आ) धोबी का वृत्तान्त (इ) रावण का चित्र (ई) परोक्ष कारण (ग) अवास्तविक सीतात्याग
(६) कुशलवचरित ४४४
(क) कुशलवचरित का विकास (ख) कुशलव की जन्मकथा—(अ) यमल कुश-लव (आ) वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि (ग) कुश-लव-युद्ध
(७) रामकथा का निर्वहण ४५२
(क) प्राचीन सुखांत राम-कथा (ख) दुःखान्त राम-कथा (ग) अर्वाचीन सुखांत राम-कथा
२१. संहार
क—राम-कथा की व्यापकता ४५७
ख—विभिन्न राम-कथाओं की मौलिक एकता ४६१
ग—प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ ४६७
घ—विविध प्रभाव ४७४
(१) जैन राम-कथाओं का प्रभाव (२) शैव प्रभाव (३) शाक्त प्रभाव (४) कृष्ण-भक्ति का प्रभाव
ङ—विकास का सिंहावलोकन ४८०
परिशिष्ट । राम-कथा-साहित्य की तालिका ४८७
सहायक ग्रंथ-सूची ४९६
अनुक्रमणिका ५०६

संकेत-चिह्न

रा०	वाल्मीकि रामायण (दाक्षिणात्य पाठ)
गौ० रा०	वाल्मीकि रामायण का गौडीय पाठ
दा० रा०	वाल्मीकि रामायण का दाक्षिणात्य पाठ
प० रा०	वाल्मीकि रामायण का पश्चिमोत्तरीय पाठ
अ० रा०	अध्यात्म रामायण
आ० रा०	आनन्द रामायण
म० भा०	महाभारत
इं० ए०	इंडियन एन्टीक्वेरी
इं० हि० क्वा०	इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली
ज० अ० ओ० सो०	जर्नल अमरीकन ओरियेन्टल सोसाइटी
ज० ए० सो० ब०	जर्नल एसिआटिक सोसाइटी ऑव बंगाल
ज० रा० ए० सो०	जर्नल रायल एसिआटिक सोसाइटी
हि० इं० लि०	हिस्ट्री इंडियन लिटरेचर (विंटरनित्स)
हि० सं० लि०	हिस्ट्री संस्कृत लिटरेचर (कीथ)

—:०:—

प्रथम भाग

प्राचीन राम-कथा साहित्य

अध्याय

१. वैदिक साहित्य और राम-कथा
२. वाल्मीकिकृत रामायण
३. महाभारत की राम-कथा
४. बौद्ध राम-कथा
५. जैन राम-कथा

पहला अध्याय

वैदिक साहित्य और राम-कथा

क—वैदिक साहित्य में राम-कथा के पात्र

१. वैदिक साहित्य में राम-कथा के अनेक पात्रों के नामों का उल्लेख मिलता है। क्या इससे सिद्ध होता है कि राम-कथा वैदिक काल में ही प्रचलित और प्रसिद्ध हो चुकी थी? इस प्रश्न का उत्तर देने के पहले उन स्थलों का विश्लेषण करना होगा जहाँ उपर्युक्त पात्रों का उल्लेख मिलता है। सीता-सम्बन्धी सामग्री सब से महत्त्वपूर्ण होने के कारण दूसरे परिच्छेद में अलग संकलित है। इस पहले परिच्छेद में रामायण के अन्य पात्रों के उल्लेख दिए जाते हैं।[1]

इक्ष्वाकु

२. **ऋग्वेद** में इक्ष्वाकु का एक बार उल्लेख हुआ है (१०.६०.४) लेकिन उस सूक्त में इक्ष्वाकु का नाममात्र दिया गया है जिससे केवल यह प्रतीत होता है कि वह कोई राजा थे। **यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान् मरायुर्येधते** (यस्य इक्ष्वाकुः उप व्रते रेवान् मरायी एधते)—जिसकी सेवा में धनवान और प्रतापवान् इक्ष्वाकु की वृद्धि होती है।

अथर्ववेद में भी एक बार इक्ष्वाकु का नाम आया है। उस मंत्र में ज्वर से छुटकारा पाने के लिए कुष्ठ पौधे से प्रार्थना की जाती है। इसके अंतर्गत यह वाक्य मिलता है—

त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं (१९.३९.९)—तू, जिसको इक्ष्वाकु

---

१. यहाँ रामायण की आधारिक कथावस्तु में सीधा सम्बन्ध रखने वाले पात्रों का अभिप्राय है। विश्वामित्र, अगस्त्य और भरद्वाज ऋग्वेद के ऋषि हैं, वशिष्ठ का भी यजुर्वेदीय संहिताओं में लेकर उल्लेख मिलता है। बालकांड और उत्तरकांड की विविध अंतरकथाओं के पात्रों के नाम वैदिक साहित्य में मिलते हैं। उनका यहाँ पर उल्लेख नहीं होगा।

पूर्वकाल में जानता था। इससे इतना ही पता चलता है कि इस मन्त्र के रचनाकाल में इक्ष्वाकु एक प्राचीन वीर माने जाते थे।

द श र थ

३. वैदिक साहित्य में दशरथ का एक बार उल्लेख हुआ है। **ऋग्वेद** की एक दानस्तुति में अन्य राजाओं के साथ साथ दशरथ की भी प्रशंसा की गई है (१.१२६.४)

चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति।

'दशरथ के चालीस भूरे रंग के घोड़े एक हजार घोड़ों के दल का नेतृत्व ले रहे हैं।'

इक्ष्वाकु से सबन्ध रखने वाले स्थलों के समान उपर्युक्त उद्धरण से भी राजा दशरथ का कोई विशेष परिचय नहीं मिलता।

मध्य एशिया की एक आर्यजाति का नाम मितन्नि था। इनके एक राजा दशरथ का नाम सुरक्षित है जिसका शासनकाल १४००ई० पूर्व के लगभग माना जाता है[1]।

रा म

४. राम दाशरथि, परशुराम और बलराम, इन तीनों का उल्लेख पहले पहल **रामायण** और **महाभारत** में हुआ है। फिर भी वैदिक साहित्य से अनेक राम नामक व्यक्तियों का परिचय मिलता है। इनका उल्लेख करने के पहले **तैत्तिरीय आरण्यक** (५.८.१३) के एक स्थल का उद्धरण देना है। यहां 'राम' शब्द का, 'पुत्र' के अर्थ में प्रयोग हुआ है। प्रवर्ग्य (सोमयज्ञ के पहले की एक विधि विशेष) का अनुष्ठान करनेवाले के नियम यों दिए जाते हैं —

संवत्सरं न मांसमश्नीयात्
न रामामुपेयात्।
नास्य राम उच्छिष्टं पिबेत्
तेज एव तत्संशयति॥

'वह एक वर्ष तक मांस का भक्षण न करे। स्त्री[2] का भोग न करे। मिट्टी

---

१. दे० दिनेशचन्द्र सेन : दि बंगाल रामायणस्, पृ० ३९।

२. 'रामा' का अर्थ यहां पत्नी हो सकता है। अन्य स्थलों पर यह वेश्या के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है (तैत्ति० संहिता ५. ६. ८. ३; काठक सं० ३२. ७; जैमिनि उपनिषद् ब्राह्मण

के वर्त्तन से पानी न पीए। उसका पुत्र उच्छिष्ट न पीए। इसी तरह उसका (यजमान) तेज पुंजीभूत होता जाता है'। सायण के अनुसार 'राम' का अर्थ यहां 'रमणीय पुत्र' होता है, जो सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है। कालक्रम के अनुसार वैदिक साहित्य के विभिन्न रामों का परिचय नीचे दिया जाता है।

(१) राम, ऋग्वेद का एक राजा

ऋग्वेद में 'राम' का एक बार उल्लेख हुआ है। उसका नाम अन्य प्रतापी यजमानों के साथ प्रयुक्त होने के कारण यह प्रतीत होता है कि वह कोई राजा हुआ होगा।

प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु।
येयुक्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ॥ (१०.९३.१४)

'मैंने दुःशीम पृथवान, वैन और राम (असुर[1]) इन यजमानों के लिए यह (सूक्त) गाया है। इन्होंने पाँच सौ (घोड़े अथवा रथ) जुतवाए (जिससे) उनका मुझपर अनुग्रह चारों ओर फैल गया है।

(२) राम मार्गवेय, श्यापर्णीय ब्राह्मण

ऐतरेय ब्राह्मण में (७.२७.३४) राम मार्गवेय और जनमेजय के विषय मे एक कथा मिलती है, जिससे इतना ही परिचय मिलता है कि वह श्यापर्ण कुल के ब्राह्मण और जनमेजय के समकालीन थे। उनका **रामायण** की कथा से कोई सम्बन्ध नितांत असंभव है। सायण 'मार्गवेय' की व्युत्पत्ति 'मृगु' से मानते हैं, वेबर इसका संबंध मार्गव (मनु की एक जाति, १०.१६) से जोड़ते हैं।

(३) राम औपतस्विनि

शतपथ ब्राह्मण में 'असुग्रह' नामक यज्ञ के तत्व पर विचारविनि-

.११.५.१०)। अथर्ववेद (१.२३.१), तैत्ति ब्रा० (२.४.४.१) और कौशिक सूत्र (२६.२२.४) मे 'रामा' एक पौधे का नाम भी है, जिस पर सायण की टीका यों है 'भृंगराजाख्या ओषधिः'।

१. 'असुर' यहाँ पर राम की उपाधि प्रतीत होता है। यह लुड्विग का मत है। अन्य विद्वानों के अनुसार असुर का अलग उल्लेख होना चाहिये।

मय होने पर अन्य आचार्यों के मतों के साथ साथ राम औपतस्विनि के मत का भी उल्लेख होता है (४.६.१.७) इससे यह पता चलता है कि वह उपतस्विन् के पुत्र और याज्ञवल्क्य के समकालीन थे।

(३) राम क्रातुजातेय

जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण के दो स्थलों पर राम क्रातुजातेय वैयाघ्र-पद्य का उल्लेख मिलता है। दोनों बार उसका नाम दार्शनिक शिक्षा देने-वालों की एक नामावली में दिया जाता है। दोनों स्थलों पर वह शंग शास्यायनि आत्रेय का शिष्य है और शंग बाभ्रव्य का शिक्षक (जै० उप० ब्रा० ३७. ३२. ४.६. १. १)।

इन विभिन्न रामों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राचीनतम वैदिक काल में ही क्या राजाओं में और क्या ब्राह्मणों में 'राम' नाम प्रचलित था।

अ श्व प ति

५. **शतपथ ब्राह्मण** (१०.६.१.२) और **छांदोग्य उपनिषद्** (५.११.४) अश्वपति कैकेय का उल्लेख मिलता है। दोनों ग्रंथों में प्रसंग एक ही है—कई ब्राह्मण आत्मा और ब्रह्म के विषय में दार्शनिक विवेचन कर रहे हैं। 'वैश्वानर' के तत्त्व के संबंध में वे किसी निश्चय पर नहीं पहुंचते। उनमें से एक यह प्रस्ताव करते हैं, 'अश्वपति कैकेय वैश्वानर तत्त्वतः जानते हैं। उनके यहां चलें। प्रस्ताव स्वीकृत होने पर वे वहाँ जाते हैं और अश्वपति उनको वैश्वानर के तत्त्व के सम्बन्ध में शिक्षा देते हैं।'

अश्वपति कैकय देश के राजा थे और इतने विद्वान थे कि वह ब्राह्मणों को भी सिखलाते थे, इतना ही परिचय उपर्युक्त स्थलों से मिलता है। इस प्रसंग में **रामायण** के अन्य पात्रों से किसी सम्बन्ध की सूचना नहीं होती। फिर भी **शतपथ ब्राह्मण** और **छांदोग्य उपनिषद्** में जनक वैदेह का भी उल्लेख हुआ है जिससे सम्भवतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वे दोनों समकालीन विद्वान राजा थे।

ज न क

६. कालक्रम के अनुसार जनक का पहला परिचय हमें कृष्णयजुर्वेदीय **तैत्तिरीय ब्राह्मण** में प्राप्त होता है। सावित्राग्नि-यज्ञ का फल बतलाने के लिए

एक आख्यान दिया जाता है जिसमें जनक वैदेह देवताओं से मिलते हैं। देवता उपर्युक्त यज्ञ के अनेक परिणामों का वर्णन करते है (३.१०.६)।

इससे विस्तृत परिचय नही मिलता लेकिन आगे चलकर **शतपथ ब्राह्मण** में 'जनक वैदेह' का चार भिन्न प्रसंगों में उल्लेख हुआ है। जनक के साथ साथ याज्ञवल्क्य का भी चारों स्थलों पर उल्लेख हुआ है। जनक इतने विद्वान तत्त्वज्ञ के रूप में सामने आते हैं कि वे याज्ञवल्क्य को भी शिक्षा देते हैं और स्वय ब्राह्मण बन जाते हैं। बाद के **बृहदारण्यक उपनिषद्** में स्थिति बदल गई है। उसमें याज्ञवल्क्य ही जनक को शिक्षा देते हैं।

शतपथ ब्राह्मण का पहला प्रसग (११.३.१.२.४) **जैमिनि ब्राह्मण** में भी मिलता है (१.१६) इसमें जनक वैदेह अग्निहोत्र के विषय में याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछते हैं और उचित उत्तर पाने पर उनको १०० गांवों का पुरस्कार देते हैं।

दूसरे प्रसग मे (श० ब्रा० ११.४.३.२०) मित्रविद यज्ञ का गोतम राहूगण के पास से जनक वैदेह के पास जाने का उल्लेख है। जनक अनेक वेदांग-विद् ब्राह्मणों में यह यज्ञ न पाकर उसे याज्ञवल्क्य में पाते हैं और उनको एक सहस्र गांवों का पुरस्कार देते हैं।

तीसरे प्रसंग में जनक के ब्राह्मण बनने की कथा है (श० ब्रा० ११.६.२.१.१०)। जनक तीन ब्राह्मणों से मिलते हैं, जिनमें से एक याज्ञवल्क्य हैं। जनक तीनों से अग्निहोत्र की विधि पूछते हैं। तीनों में याज्ञवल्क्य का उत्तर सबसे अच्छा होने पर भी पूरा नहीं है, इसलिए जनक विस्तारपूर्वक अग्निहोत्र रहस्य समझाते है। अंत में याज्ञवल्क्य से एक वर पाकर जनक याज्ञवल्क्य से यथारुचि प्रश्न पूछने का अधिकार चाहते हैं। 'इस समय से लेकर' यही परिच्छेद का अंतिम वाक्य है, 'जनक ब्राह्मण ही थे।'

चौथा प्रसग **शतपथ ब्राह्मण** को छोड़कर अन्यत्र भी पाया जाता है (श० ब्रा० ११.६.३.१ आदि) **जैमिनि ब्राह्मण**(२.७६.७७.) **बृहदारण्यक उप०** ३.१.१.२) जनक याजकों को बहुत दक्षिणा देकर एक यज्ञ का प्रबंध करते हैं और सब से विद्वान ब्राह्मण को १००० गांवों का पुरस्कार देने की प्रतिज्ञा करते हैं। इस पर शाल्क्य याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछते हैं और अधिक जिज्ञासा प्रकट करने के कारण मर जाते हैं। यह वृत्तांत

किंचित् परिवर्तन सहित **जैमिनि ब्राह्मण** और **बृहदारण्यक उपनिषद्** में भी मिलता है।

इसी प्रसंग को छोड़कर **बृहदारण्यक** में जनक और याज्ञवल्क्य के संबंध में एक और विस्तृत वृत्तान्त मिलता है (बृ० आ० उप० ४.१.१ से ४.४.७ तक) जिसमें याज्ञवल्क्य ब्रह्म, परलोक और आत्मा के विषय में जनक को शिक्षा देते हैं। अंत में जनक याज्ञवल्क्य को अपने आपको तथा अपनी प्रजा को समर्पित करते हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद् में दो अन्य स्थलों पर भी जनक का उल्लेख हुआ है। एक स्थल में जनक गायत्री के विषय में बुडिल आश्वतपस्वि से कुछ कहते हैं (५.१४.८) दूसरा स्थल अधिक महत्त्व-पूर्ण है। इसमें गार्ग्य बालाकि और अजातशत्रु का वार्त्तालाप दिया जाता है जो **बृहदारण्यक उपनिषद्** (२. ११. १) के अतिरिक्त किंचित् परिवर्त्तित रूप में **कौषीतकी उपनिषद्** (४. १) और **शांखायन आरण्यक** (६. १) में भी मिलता है। गार्ग्य बालाकि अजातशत्रु[1] काशी के राजा के यहाँ जाकर कहते हैं—'क्या मैं ब्रह्म के विषय में कथन करूं?' अजातशत्रु के उत्तर में जनक से ईर्ष्या आभासित है : 'इस वचन के लिए एक सहस्र दूंगा क्योंकि सब के सब जनक (वैदेह) जनक (पिता संरक्षक) ही हैं कह कर उनके यहाँ दौड़ कर जाते हैं।'

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि रामायण के अन्य पात्रों की अपेक्षा जनक वैदेह का वैदिक साहित्य में कहीं अधिक उल्लेख होता है। अर्वाचीन राम-कथा साहित्य में वैदिक जनक तथा **रामायण** के जनक अभिन्न माने जाते हैं। वास्तव में दोनों की अभिन्नता सिद्ध करने के लिए प्रमाण नहीं दिए जा सकते हैं। स्वीकार करना पड़ता है कि वैदिक साहित्य में कहीं भी इसका उल्लेख नहीं मिलता कि सीता जनक की पुत्री हैं अथवा राम उन के जामाता हैं।

प्रस्तुत प्रश्न एक अन्य कारण से और जटिल बन जाता है। **वाल्मीकि रामायण** में दो भिन्न राजाओं का उल्लेख है जिनका नाम जनक है—एक मिथि का पुत्र तथा दूसरा ह्रस्वरोमा का पुत्र और सीता का पिता (रा० १. ७१)। जातकों में भी अनेक जनक नामक राजाओं का

---

१. यह अजातशत्रु (काशी के राजा) मगध के राजा (४९१ ई० पू०) से भिन्न है।

उल्लेख है। (दे० **महाजनक जातक** ५३९)। **महाभारत** में सीता जनक की पुत्री तो मानी जाती है लेकिन जहाँ जहाँ जनक का स्वतन्त्र उल्लेख होता है वहाँ रामकथा से किसी संबन्ध का निर्देश मात्र भी नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त इसमें कई भिन्न भिन्न जनक नामक राजाओं का उल्लेख होता है। जनक, इन्द्रद्युम्न का पुत्र (३. १३३. ४ पूना संस्करण) ; जनक देवराति (१२. ३११. ३. ४) ; जनक जनदेव (१२. २२०. ३); जनक कराल (१२. ३०३. ७)

वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा पुराणों में 'जनक' मिथिला देश के राजवंश का नाम भी माना जाता है :

जनकानां कुले जाता राघवानां कुले वधू (**गौडीय रामायण** ५. ३६. २०)

सीतापि सत्कुले जाता जनकानां महात्मनाम् (रा० ७. ४५. ४)
इदं धनुर्वरं ब्रह्मंजनकरभिपूजितम् (रा० १. ६७. ८)
भो भो राजन् जनकानां वरिष्ठ (महाभारत ३ १३३. १६)
वंशोजनकानां (वायुपुराण ८९. २२)

अतः निष्कर्ष यह है कि मिथिला का कोई भी राजा जनक के नाम से पुकारा जा सकता है। वैदिक साहित्य के जनक तथा सीता के पिता, इन दोनों की अभिन्नता असम्भव तो नहीं है लेकिन उपर्युक्त विश्लेषण पर ध्यान देने से यह अत्यन्त संदिग्ध प्रतीत होती है। **वायुपुराण** (८९. १५) **पद्मपुराण** (पाताल खड ५७. ५) आदि मे सीता के पिता, जनक, का नाम सीरध्वज भी बताया जाता है।

ख—वैदिक साहित्य में सीता

७. वैदिक साहित्य से दो भिन्न भिन्न सीताओं की सूचना मिलती है। पहली सीता कृषि की एक अधिष्ठात्री देवी है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद से लेकर सारे वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर होता रहा है। दूसरी सीता का परिचय हमें **तैत्तिरीय ब्राह्मण** से प्राप्त होता है जहाँ सीता, सावित्री, सूर्य की पुत्री, और सोम राजा का उपाख्यान कुछ विस्तारपूर्वक दिया गया है। इस सीता का उल्लेख इस स्थान को छोड़ कर वैदिक साहित्य में और कहीं नहीं

मिलता। पहले इस उपाख्यान का थोड़ा विश्लेषण करके, सीता कृषि की अधिष्टात्री देवी से सबध रखनेवाली सामग्री पर विचार किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त 'सीता' शब्द अर्थात् लांगलपद्धति का वैदिक साहित्य मे अनेक बार उल्लेख हुआ है। लेकिन उन स्थलों पर सीता मे व्यक्तित्व का आरोप नहीं किया गया है। अतः प्रस्तुत विषय के दृष्टिकोण से महत्त्व-पूर्ण न होने के कारण उन स्थलों का विश्लेषण अनावश्यक है।[1]

सीता सावित्री

८ सीता सावित्री की कथा हमे **कृष्णयजुर्वेद** के **तैत्तिरीय ब्राह्मण** में मिलती है (२. ३. १०)। किसी काम्यप्रयोग का प्रभाव दिखलाने के उद्देश्य से सीता सावित्री और सोम राजा का उपाख्यान उद्धृत किया गया है। इसमे सीता और श्रद्धा दोनों प्रजापति की पुत्रियाँ मानी जाती हैं। सायण के अनुसार प्रजापति यहाँ पर सविता अर्थात् सूर्य का पर्यायवाची शब्द माना जाना चाहिए। प्रस्तुत उपाख्यान में सीता सोम राजा के प्रेम को स्थागर नामक अगराग के द्वारा प्राप्त करती है यद्यपि सोम पहले सीता की बहन श्रद्धा से प्रेम करते थे। इस कथा का मूल रूप **ऋग्वेद** के **सूर्यासूक्त** में विद्यमान है (१०. ८५) जहाँ सूर्या, सूर्य की पुत्री, का सोम के साथ विवाह वर्णित है। इस सूक्त में सोम से स्पष्टतया चद्रमा का अभिप्राय है और अनेक विद्वानों के अनुसार सूर्या से उषा निर्दिष्ट है। **ऋग्वेद** की इस कथा का उल्लेख दोनो ऋग्वेदीय ब्राह्मणों में भी मिलता है—'प्रजापति ने सोम राजा को अपनी पुत्री सूर्या सावित्री को दे दिया' (ऐत० ब्रा० ४. ७.

१. कल्पसूत्रों को छोड़कर अन्यत्र स्थलों पर सीता शब्द का उल्लेखमात्र हुआ है।

(१) ऋग्वेद १. १४०. ८।

(२) अथर्ववेद ११. ३. १२।

(३) यजुर्वेदीय संहिताओं में अश्वमेध वर्णन के अतर्गत जहाँ क्षेत्र तैयार करने के लिए हल द्वारा सीताएँ खींची जाती हैं।

काठक स० २०. ३

कपिष्ठल स० ३२, ५ ६।

मैत्रायणी स० ३. २. ४. ५

तैत्तिरीय स० ५, २. ५. ५।

(४) शतपथ ब्राह्मण १३. ८. २. ६. ७। श्राद्ध के वर्णन मे सीताएँ खींचने का उल्लेख।

कौ० ब्रा० १८. १)। इसके अतिरिक्त **तैत्तिरीय संहिता** (२. ३. ५.) तथा **काठक** (११. ३) और **मैत्रायणी** (२. २. ७) संहिताओं के समानान्तर स्थलों पर प्रजापति की तेतीस पुत्रियों का सोम राजा के साथ विवाह वर्णित है। इनमें से केवल रोहिणी का नाम दिया गया है। **तैत्तिरीय ब्राह्मण** में इस कथा का परिवर्तित रूप इस प्रकार है :

'प्रजापति ने सोम राजा को और इसके पश्चात तीनों वेदों की सृष्टि की। सोम राजा ने इन (वेदों) को हस्तगत किया।

सीता सावित्री सोम राजा को (पतिस्वरूप) चाहती थी। (लेकिन) वह (सोम राजा) श्रद्धा (सीता की बहन) को चाहते थे।

सीता ने अपने पिता प्रजापति के पास जाकर कहा, आपको नमस्कार, मैं आपके पास आई हूँ और आपकी शरण लेती हूँ ॥१॥ मैं सोम राजा की (पतिस्वरूप) कामना करती हूँ। वह श्रद्धा को चाहते हैं।

प्रजापति ने उसके लिए स्थागर (नामक सुगन्धित द्रव्य को पीसकर) अलंकार (अर्थात् अंगराग) तैयार किया। पूर्व दिशा की ओर दशहोतृ (मंत्र) पढ़कर, दक्षिण की ओर चतुर्होतृ, पश्चिम की ओर पंचहोतृ, उत्तर की ओर षडहोतृ, और ऊपर की ओर से सप्तहोतृ पढ़कर तथा सभार, और (देव) पत्नीमंत्रों से (उस अंगराग को अभिमंत्रित करके उन्होंने उससे सीता का) मुख अलंकृत किया ॥२॥

(इसके अनन्तर) वह सोम राजा के पास गई। सीता को देख कर (और प्रेम के वशीभूत होकर) उन्होंने कहा, मेरे पास आइए। सीता ने कहा, मेरे साथ भोग कीजिए (लेकिन पहले प्रतिज्ञा कीजिए कि) सदा मेरे ही साथ भोग करेंगे और जो (वस्तु) आपके हाथ में है (उसको मुझे दे दीजिए)। सोम राजा ने सीता को तीनों वेद दे दिए। इसी तरह स्त्रियाँ भोग के कारण (पुरुषों को) पराजित करती हैं।

यदि कोई (पुरुष) चाहता हो कि मैं प्रेमिका का प्रिय बन जाऊँ ॥३॥ अथवा यदि कोई (स्त्री) चाहती हो कि जिससे मैं प्रेम रखती हूँ वह मुझसे प्रेम करे (तो वह निम्नलिखित प्रयोग करे) इस स्थागर अलंकार को तैयार करके पूर्व दिशा की ओर दशहोतृ (मंत्र) पढ़ कर, दक्षिण की ओर चतुर्होतृ, पश्चिम की ओर पंचहोतृ, उत्तर

की ओर पत्नीहोतृ, ऊपर की ओर से सत्तहोतृ पढ़कर, तथा संभार, और (देव) पत्नीमंत्रों से (इस अंगराग को अभिमंत्रित करके और इससे) अपने मुख को अलंकृत करके वह प्रियतम के पास जाए। वह अवश्य प्रेम करने लगेगा ॥४॥'

९. सीता सावित्री की इस कथा का **वाल्मीकि रामायण** से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता है। फिर भी सम्भव है कि अनसूया के अंगराग का वृत्तांत इस उपाख्यान से प्रभावित हुआ हो। अत्रि की पत्नी सीता को माला, वस्त्र और आभूषणों के अतिरिक्त एक अनश्वर (असंक्लिष्ट) अंगराग भी प्रदान करती हैं, जिससे सीता का शरीर दिव्य सौन्दर्य को प्राप्त होता है (रा० २.११८) :

इदं दिव्यं वरं माल्यं वस्त्रमाभरणानि च।
अंगरागं च वैदेहि महार्हमनुलेपनम् ॥१८॥
मया दत्तमिदं सीते तव गात्राणि शोभयेत्।
अनुरूपमसंक्लिष्टं नित्यमेव भविष्यति ॥१९॥
अंगरागेण दिव्येन लिप्तांगी जनकात्मजे।
शोभयिष्यसि भर्तारं यथा श्रीर्विष्णुमव्ययम् ॥२०॥

अध्यात्मरामायण में भी इस अंगराग का उल्लेख है (२.९,) :

अंगरागं च सीतायै ददौ दिव्यं शुभानना।
न त्यज्यतेऽङ्गरागेण शोभा त्वां कमलानने ॥८९॥

रामचरितमानस में इसका उल्लेख नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास संभवतः **तैत्तिरीय ब्राह्मण** के उपाख्यान से परिचित थे और उसे सीता की मर्यादा के विरुद्ध समझकर उन्होंने इस अंगराग के विषय में जानबूझ कर कुछ नहीं कहा। वे लिखते हैं :—

दिव्य बसन भूषण पहिराए।
जे नित नूतन अमल सुहाए ॥ (३.४.३)

१०. सीता सावित्री की कथा के एक दूसरे प्रभाव की कल्पना की जा सकती है[1]। **महाभारत** और **वाल्मीकि रामायण** के समय से

---

१. दे० ए० वेबर : आन दि रामायण पृ० २०, २१।
एम० मो नयेर विलियम्स : इंडियन विज़डम (पृ० ३६०) और ब्राह्मनिज्म (पृ० ११० टिप्पणी)
एच० याकोबी : डस रामायण, पृ० १३७।

लेकर परशुराम और बलराम की कथाएँ भी प्रचलित थीं। इसीलिए **रामायण** के नायक को निर्दिष्ट करने के लिए किसी विशेषण की आवश्यकता का अनुभव होने लगा था। पहले **महाभारत** तथा **रामायण** में 'राम दाशरथि' का प्रयोग हुआ था। आगे चलकर रामभद्र के अतिरिक्त 'रामचन्द्र' नाम चल पड़ा। भवभूति के **महावीरचरित** ('चन्दमुह रामचंद' दे० अंक २. २०) तथा **उत्तररामचरित** (७. १२) में इस नाम का सब से पहला उल्लेख मिलता है। बाद में **पद्मपुराण** आदि रचनाओं में रामचंद्र सब से लोकप्रिय नाम बन गया है। राम दाशरथि को चंद्र की यह उपाधि क्यों मिली है ? इस प्रश्न को सुलझाने के लिए डॉक्टर वेबर ने सीता सावित्री के वृत्तान्त का सहारा लिया है। यद्यपि डॉक्टर वेबर की कल्पना को निर्मूल सिद्ध करने का मैं साहस नहीं कर सकता लेकिन 'रामचंद्र' नाम का कारण **वाल्मीकि रामायण** में ढूंढना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है।

राम के सौंदर्य तथा लोकप्रियता की अभिव्यंजना के लिए वाल्मीकि ने बहुत स्थलों पर चंद्रमा से राम की तुलना की है :

(रामं) **चंद्रमिवोदितम्** (२, ४४, २२)
(राममुख) **पूर्णचन्द्रमिवोदितम्** (६. ३३. ३२)
(रामः) **पूर्णचन्द्राननः** (२. १. ४४)
(रामः) **सोमवत्प्रियदर्शनः** (१. १. १२)
(रामः) **लोककान्तः शशी यथा** (५. ३४. २२)

ये उद्धरण सुगमता से बढ़ाए जा सकते हैं। अतः रामचंद्र नाम का आधार **वाल्मीकि रामायण** को छोड़ कर किसी अन्य प्राचीन उपाख्यान में ढूंढना अनावश्यक है। आदिकाव्य में राम के सौंदर्य, लोकप्रियता और सौम्यता का अभिव्यंजना के लिए, उनके कोमल और शान्त स्वभाव के अंकन के लिये जो बार बार चंद्र की तुलना मिलती है वह 'रामचन्द्र' नाम की उत्पत्ति समझने के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त 'रामचन्द्र' का वाल्मीकि रामायण में एक ही बार प्रयोग हुआ है। राम-रावण-युद्ध के वर्णन में कहा गया है कि 'रामचन्द्र को रावणराहु से ग्रस्त देखकर' देवता, वानर आदि घबड़ाते हैं:

रामचन्द्रमसं दृष्ट्वा ग्रस्तं रावणराहुणा (६. १०२. ३२)

यहाँ पर 'रामचन्द्र' तथा 'रावणराहु' स्पष्टतया रूपक मात्र हैं। आगे चलकर

'रामचन्द्र' रूपक न रहकर, साधारण व्यक्ति वाचक संज्ञा के रूप में चल पड़ा और आज तक चला आ रहा है।

यदि प्रारंभ ही से राम के लिए 'रामचन्द्र' नाम का प्रयोग किया जाता तो हम संभवतः और आगे बढ़ सकते और यह कह सकते कि राम के शील और शान्त स्वभाव का कारण यह है कि मूलतः वह चन्द्रमा के देवता ही थे। तब सीता सावित्री और सोम राजा का उपाख्यान राम-कथा का बीज माना जा सकता तथा **रामायण** का अंगराग और **तैत्तिरीय-ब्राह्मण** का स्थागर अलंकार मूलतः खेत की सीता अर्थात् लांगलपद्धति में पड़ी हुई ओस होता जिसमें चन्द्रमा प्रतिबिंबित है। इसी तरह सीता सावित्री और सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, दोनों का उद्गम एक होता। लेकिन प्रोफेसर वेबर जिन्होंने यह कल्पना की है, स्वयं स्वीकार करते हैं कि यह कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि राम सोमवंशी न होकर सूर्यवंशी ही हैं। अतः उनका सोम से कोई प्राचीन सम्बन्ध बहुत संभव नहीं है।

सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी

११. प्रारंभिक वैदिक काल में जिन देवताओं का उल्लेख है वे अधिकतर प्रकृति के देवता हैं अर्थात् 'प्रभावशाली प्राकृतिक दृश्यों' और शक्तियों में देवताओं की कल्पना कर ली गई है।'[1] कार्यक्षेत्र के अनुसार वे तीन वर्गों में विभक्त हैं—द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी के देवता। **ऋग्वेद** में इन्द्र (२५० सूक्त), अग्नि (२०० सूक्त) और सोम अर्थात् सोम-लता के मादक रस का देवता (१०० से अधिक सूक्त) सर्वप्रधान हैं। फिर भी सूर्य, द्यौ, वायु, उषा, वरुण, मित्र, पर्जन्य आदि बहुत से देवताओं का उल्लेख हुआ है। इन सब का कार्यक्षेत्र विस्तृत था और आर्यों का कुशल-क्षेम इन्हीं पर निर्भर माना जाता था।

इनके अतिरिक्त एक दूसरे प्रकार के देवताओं की कल्पना की गई जिनका कार्य-क्षेत्र बहुत सीमित माना जाता था। इनमें क्षेत्रपति, वास्तो-

---

१. दे० बेनीप्रसादः हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, पृ० ४१। जिस समय भारत यूरोपीय जातियों साथ थीं, इन देवताओं का रूप कौन सा था, इस पर यहां पर विचार नहीं किया जा सकता है। इतना ही निर्विवाद है कि वैदिक साहित्य में ये देवता अधिकतर प्रकृति के देवता होते हैं।

पति (घर का देवता) सीता और उर्वरा (उपजाऊ भूमि) प्रधान हैं। धार्मिक चेतना में इनका स्थान गौण था। क्योंकि आर्यों का कुशल-क्षेम पहले प्रकार के देवताओं पर निर्भर माना जाता था। सीता, क्षेत्रपति आदि कृषिसंबंधी देवताओं के कम महत्त्व का एक और कारण यह है कि प्रारम्भ में कृषि की अपेक्षा पशु-पालन प्रधान रहा होगा। **ऋग्वेद** के सबसे प्राचीन अंश में (२.७ मंडल) केवल एक ही सूक्त में कृषि-सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग है और यह सूक्त दसवें मंडल के समय का माना जाता है[1]। वह **ऋग्वेद** का एकमात्र स्थल है जहां सीता में व्यक्तित्व और देवत्व का आरोप किया गया है। इस सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, और सीता सावित्री का अन्तर यह है कि एक तो इसमें देवत्व का आरोप है और दूसरे इसका उल्लेख आगे चल कर बराबर होता रहा। यद्यपि वैदिक साहित्य में उनसे सम्बन्ध रखनेवाली केवल दो भिन्न प्रार्थनाएँ मिलती हैं, फिर भी इनका प्रयोग कृषि सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त अग्निचयन और पितृमेध के अवसरों पर भी होने लगा। **गृह्यसूत्र** में हमें सीता के प्रति दो नई प्रार्थनाएँ मिलती हैं। **ऋग्वेद** से लेकर गृह्यसूत्रों तक इन सब स्थलों का यहां पर उल्लेख होगा और महत्त्व के अनुसार इन पर न्यूनाधिक विचार किया जाएगा।

(१) ऋग्वेद का सूक्त (४.५७)

१२. **ऋग्वेद** के सूक्त प्रायः एक ही देवता से सम्बन्ध रखते हैं। लेकिन जिस सूक्त में सीता का उल्लेख है उसमें कृषि सम्बन्धी अनेक देवताओं से प्रार्थनाएँ की जाती हैं। बहुत सम्भव है कि ये प्रार्थनाएं अनेक स्वतन्त्र मन्त्रों के अवशेष हैं जो एक ही सूक्त में संकलित हो जाने पर बाद में चौथे मंडल के अन्तर्गत रखे गए। पहले तीन छंदों का देवता क्षेत्रपति है, चौथे छंद का देवता शुन (एक देवता जिसके द्वारा कार्य सुखपूर्वक चलता हो और जो अगले छंद के शुन से भिन्न है—**शुनाख्यो वायिवंद्रयोरन्यतमः सुखकृद्देवः** सायण); पाँचवें और आठवें छंदों के देवता **शुनासीर** हैं (शौनक के अनुसार ये

---

१. दे० ऋग्वेद ४. ५७। इसमें 'सीता' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो १० वें मंडल को छोड़कर ऋग्वेद में और कहीं नहीं मिलता। दे० ज० अ० आ० ओ० १७, पृ० ८५. ६। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि सीता आदि देवताओं की कल्पना पुरानी नहीं है। इससे केवल यह सिद्ध होता है कि उनका स्थान अपेक्षाकृत गौण था। आगे दिखलाया जाएगा कि उनका और विशेष करके सीता का महत्त्व धीरे धीरे उत्तरोत्तर बढ़ता रहा।

इन्द्र और वायु हैं लेकिन यास्क के अनुसार वायु और आदित्य समझना चाहिये), छठे और सातवें छंद की देवी सीता है। सारे सूक्त का भावानुवाद इस प्रकार है :—

हितकारी क्षेत्रपति के साथ हम गौ और अश्व के लिए पुष्टकारक (अन्न) प्राप्त करते हैं। वह (क्षेत्रपति) हम लोगों को उक्त प्रकार का (अन्न) प्रदान करे ॥१॥

हे क्षेत्रपति ! जिस तरह से धेनु दूध देती है, इसी तरह तू प्रचुर मात्रा में हमलोगों को मधुश्रावी और घृतसदृश जल प्रदान कर। ऋत के स्वामी (उक्त प्रकार के दान से) हम पर कृपा करें ॥२॥

खेत की ओषधियां हमारे लिए मधुयुक्त हों। द्युलोक, जल समूह और अंतरिक्ष हम लोगों के लिए मधुयुक्त हों। क्षेत्रपति हमारे मधुयुक्त हो। हम लोग (शत्रुओं से) भयरहित होकर (क्षेत्रपति की) शरण लेते रहें ॥३॥

(बैल आदि) वाहन सुख से रहे। कृषक सुख से रहे। हल सुख से जोते (हल का) रस्सियाँ सुख से बाँधी जाएँ। अंकुश को सुख से ऊपर उठा उठा कर चलाओ ॥४॥

हे शुनासीर ! तुम दोनों हमारी इस स्तुति से प्रसन्न हो जाओ। जो जल तुम दोनों ने आकाश में बनाया है, उससे इस (भूमि को) सींचते रहो ॥५॥

हे सौभाग्यवती ! (कृपा दृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो। हे सीते ! तेरी हम वन्दना करते हैं जिससे तू हमारे लिये सुन्दर धन और फल देने वाली होवे ॥६॥

इन्द्र सीता को ग्रहण करें, पूषा (सूर्य) उसका संचालन करे। वह पानी से भरी (सीता) प्रत्येक वर्ष हमें (धान्य) प्रदान करती रहे [१] ॥७॥

---

१. अवार्ची सुभगे भव सीते वंदामहे त्वा।
यथा नः सुभगासि यथा नः सुफलासि ॥६॥
इंद्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषानुयच्छतु
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥७॥
सायण के अनुसार 'इंद्रः सीता...' का अर्थ है—'इन्द्रः सीता सीताधारकाष्ठा निगृह्णातु' और 'सा न...' का अर्थ, 'सा पयस्वत्युदकवती', जो चिन्त्य प्रतीत होता है।

सुन्दर हल सुखपूर्वक हमारे लिए भूमि को जोतें, कृषक वाहनों! पीछे पीछे सुख से चलें। पर्जन्य मधुर जल द्वारा (पृथ्वी को सिक्त करें) हे शुनासीर! हम लोगों को सुख प्रदान करो[1] ॥८॥

प्रस्तुत विषय के दृष्टिकोण से इस सूक्त का महत्त्व यह है कि इसमें सीता के प्रति सब से प्राचीन प्रार्थना सुरक्षित है। सीता के प्रति जो दूसरी प्रार्थना वैदिक साहित्य में मिलती है उसकी अधिकांश सामग्री इस सूक्त से ली गई है। तीनों ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रों में भी 'कृषिकर्माणि' परिच्छेद के अंतर्गत इस सूक्त का उल्लेख हुआ है।

(२) सीरा युंजंति

१३. सीता के नाम जो दूसरी प्रार्थना वैदिक साहित्य में मिलती है वह 'सीरा युंजंति' मंत्र का एक अंश है। यह मंत्र यजुर्वेदीय संहिताओं में भी मिलता है और **अथर्ववेद** में भी। **यजुर्वेद** में इसका प्रयोग कृषि को छोड़कर एक दूसरे प्रसंग में हुआ है जो मौलिक नहीं प्रतीत होता। अतः पहले **अथर्ववेद** के प्रसंग का विश्लेषण किया जाता है।

अथर्ववेद : अथर्ववेद के मंत्र जीवन की भिन्न भिन्न आवश्यकताओं के लिए लिखे गए हैं। उद्देश्य के अनुसार वे अनेक वर्गों में विभाजित किए जाते हैं, 'भैषज्यानि' रोग से छुटकारा पाने के लिए, 'आयुष्याणि' स्वास्थ्य और दीर्घ आयु के लिए, 'पौष्टिकानि', व्यापार, कृषि, पशुपालन आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए, 'अभिचारिकाणि' शत्रुओं और भूतों के नाश के लिए।

प्रस्तुत 'सीरा युंजंति' मंत्र 'पौष्टिकानि' मंत्रों में से एक है। (अथर्ववेद, ३.१७) इसमें कृषि के विभिन्न कार्यों की सफलता के लिए अनेक देवताओं से प्रार्थना की जाती है। ढाई छंद को छोड़कर इस मंत्र की सारी सामग्री **ऋग्वेद** के दो सूक्तों से ली गई है[2]।

---

१. इस सूक्त के अनुवाद के लिए लूड्विग, ग्रासमैन, विलसन और सायण के अतिरिक्त पं० रामगोविन्द, द्विवेदी के हिन्दी भाष्य से सहायता मिली है। (वैदिक पुष्पमाला, १, भागलपुर)।

२ छंद ३, ९ और ५ 'उत्तरार्द्ध' : नई सामग्री।
छन्द १ और २ : ऋग्वेद १०. १०१ सूक्त के रचयिता ऋत्विजों को यज्ञ के लिए प्रोत्साहित करते हुए यज्ञ की तुलना कृषि के विभिन्न कार्यों से करते हैं (हल जोतना, बीज बोना, फसल लुनना)
शेष छंद, ऋग्वेद ४. ५७।

सीरा युंजंति कवियो युगा वि तन्वते पृथक् धीरा देवेषु सुम्नयौ ॥१॥

'देवताओं से अनुग्रह प्राप्त करने की आशा में धीर चतुर (कृषक) हलों को जोड़ते हैं और जुओं को अलग अलग करके दोनों ओर फैलाते हैं।'

युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्।
विराजः श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमायवन् ॥२॥

'हलों को जोड़ो, जुओं को फैलाओ और बने हुए खेत में यहाँ पर बीज बोओ। अन्न की उपज हमारे लिए भरी पूरी होवे और धान्य हँसुए के लिए उत्तरोत्तर बढ़ता जाए।'

लांगलं पवीरवत्सुशीमं सोमसत्स रु।
उदिद्वपतु गामवि प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् ॥३॥

'अच्छा फल वाला, बहुत सुख देने वाला, चिकना मूठ वाला हल, गौ भेड़, शीघ्रगामी, रथ और हृष्टपुष्ट सुन्दरी उत्पन्न करे (अर्थात् कृषि के द्वारा हर प्रकार का सुख मिल जाए)।'

इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषाभि रक्षतु।
सा न पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥४॥

'इन्द्र सीता को ग्रहण करें (दबावें) पूषा, (सूर्य) उसकी रखवाली करे। वह पानी से भरी (सीता) प्रत्येक वर्ष हमें (धान्य) प्रदान करती रहे।'

शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनुयन्तु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीःकर्तमस्मै ॥५॥

'हे हवि से चूनेवाले शुनासीर! (फाल और हल)[1] इस मनुष्य के लिए सुन्दर फलवाली (जौ आदि) औषधियाँ उत्पन्न करो।'

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम्।
शुनं वरत्रा बध्यंतां शुनमष्ट्रामुदिंगय ॥६॥

'वाहन सुख से रहें। कृषक सुख से रहें। हल सुख से जोते (हल की) रस्सियाँ सुख से बाँधी जाएँ। अंकुश को सुख से ऊपर उठा उठा कर चलाओ।'

---

१. यास्क के अनुसार 'शुनासीरौ' से वायु और आदित्य का अभिप्राय है जैसे आगे ७ वें छंद में। तब अनुवाद इस प्रकार होगा—'हे हवि से उत्तेजित शुना और सीर'।

शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम्।
यद्दिवि चक्रथः पयस्तेनेमामुप सिंचतम् ॥७॥

'हे शुनासीर! (वायु और आदित्य) तुम दोनों यहीं पर मेरी विनय स्वीकार करो, जो जल तुम दोनों ने आकाश में बनाया है, उससे इस (भूमि) को सींचते रहो।'

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः ॥८॥

'हे सीते! तेरी हम वंदना करते हैं, हे सौभाग्यवती! (कृपादृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो; जिससे तू हमारे लिए हितांकांक्षिणी होवे और जिससे तू हमारे लिए सुन्दर फल देनेवाली होवे।'

घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना ॥९॥

'घी और मधु से सानी हुई सीता विश्वदेवताओं और मरुतों से अनुमोदित (रक्षित) होवे। हे सीते! ओजस्विनी और घी से सींची हुई, तू जल (दूध) के साथ हमारे पास विद्यमान रह[1]।'

मंत्र के अंतिम छंदों से स्पष्ट है कि उच्चारण के साथ साथ खेत की सीता में घी और मधु का सिंचन किया जाता था। **काठक गृह्यसूत्र** में जहाँ गोयज्ञ के अंत में इस 'सीरा युजति' मंत्र का प्रयोग है, भाष्यकार इस सिंचन का स्पष्ट उल्लेख करते हैं,

कर्मणि समाप्ते घृतेन सीतेति चतुर्गृहीतेनाज्यस्य प्रदानम्।

अर्थात् कार्य समाप्त होने पर 'घृतेन सीता' आदि कहकर चार बार घी डाला जाता है।

१४. **यजुर्वेद : यजुर्वेद** उन मंत्रों का संग्रह है जिन्हें अध्वर्यु और उसके

---

१. पं० जयदेव जी शर्मा (अजमेर, आर्य साहित्य मंडल) का अनुवाद—'हे सीते! (सा) वह तू (ऊर्जस्वती) पुष्टिकारक अन्न देनेहारी और घृतवत् दूध आदि पदार्थों से (पिन्वमाना) सब को तृप्त करती हुई (पयसा) पुष्टिकारक अन्न और जल सहित (नः अभि-आ-ववृत्स्व) हमारे पास विद्यमान रह'। सारे मंत्र के अनुवाद के लिए ह्विटनी और वेबर के अतिरिक्त पं० क्षेमकरणदास द्विवेदी 'अथर्ववेदभाष्यम्, लूकरगंज, प्रयाग) की सहायता ली गई है

सहायक विविध यज्ञों में पढ़ते थे। **कृष्ण यजुर्वेद** की चारों संहिताओं में मन्त्रों के साथ कुछ गद्य भी मिलाया गया है। **शुक्ल यजुर्वेद** की एकमात्र **वाजसनेयि संहिता** में केवल मन्त्र दिए गये हैं और उनसे सम्बन्ध रखने वाला गद्य **शतपथ ब्राह्मण** में संकलित है। इन सब रचनाओं में 'अग्नि-चयन' के वर्णन के अंतर्गत उपर्युक्त 'सीरा युंजंति' मंत्र किंचित् पाठभेद सहित उद्धृत है।

'अग्निचयन' में हमें उन मंत्रों और कर्मों का विस्तृत वर्णन मिलता है जो अग्नि की वेदी के निर्माण के लिए आवश्यक समझे जाते थे। यह प्रसंग यजुर्वेद का सब से दार्शनिक अंश है। इसमें यज्ञ के तत्त्व और महत्व के सबन्ध में अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। वेदी के क्षेत्र को तैयार करने के लिए हल द्वारा विशेष युक्ति के अनुसार सीताएं खींची जाती थीं। उस समय 'सीता युंजंति' मंत्र पढ़ा जाता था, जिसमें सीता के प्रति निम्नलिखित प्रार्थना मिलती है।

'हे कामधेनु सीते! मित्र, वरुण, इन्द्र, आश्विन, पूषण, प्रजा और औषधियाँ, (इन सबों) का मनोरथ पूरा कर।

घी और मधु से सानी हुई सीता विश्वदेवताओं और मरुतों से अनुमोदित (रक्षित) होवे। हे सीते! ओजस्विनी और घी से सींची हुई, तू जल (दूध) के साथ हमारे पास विद्यामान रह[1]।'

आगे चलकर श्रौत सूत्रों में 'अग्निचयन' का वर्णन तो मिलता है लेकिन एकाध सूत्रों को छोड़कर प्रस्तुत मंत्र का उल्लेख नहीं मिलता[2]।

१५. **तैत्तिरीय आरण्यकः कृष्णयजुर्वेद** के तैत्तिरीय आरण्यक में हमें पहले पहल उपर्युक्त सामग्री का पितृमेध के अवसर पर प्रयोग मिलता है। अंत्येष्टि के पश्चात् जलाई हुई हड्डियाँ एक घड़े (अस्थिकुंभ) में रखी जाती थीं और उपर्युक्त समय पर गाड़ी भी जाती थीं। इस क्रिया के अनन्तर हल द्वारा उस स्थान पर 'जिसे श्मशान कहते थे' अनेक सीताएँ खींची जाती थीं[3]।

---

१. दे० तैत्तिरीय सं०: ४. २. ५. ५. ६; काठक सं०: १६. १२; मैत्रायणि सं: २. ७. १२; कपिष्ठल सं०: २५. ३; शतपथ ब्रा०: ७. २. २।

२. दे० कात्यायन श्रौत सू०: १७. २. १० और वैतान सूत्र २८. २९।

३. दे० तैत्तिरीय आर०: ६. ६। शतपथ ब्राह्मण में भी इस क्रिया का वर्णन मिलता है (१३. ८) लेकिन वहां किसी मंत्र का उल्लेख नहीं है।

साथ साथ 'सीरा युंजंति' मंत्र के छंद पढ़े जाते थे। इस कार्य की समाप्ति पर सीताओं की ओर देखते हुए पुरोहित कहते थे—

'हे सीते ! तेरी हम वंदना करते हैं, हे सौभाग्यवती ! (कृपादृष्टि से) हमारी ओर अभिमुख हो, जिससे तू हमारे लिए सुन्दर धन और फल देने वाली होवे'।

ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चल कर यह प्रयोग सीमित रहा क्योंकि केवल दो गृह्यसूत्रों में पितृमेध के अंतर्गत इस प्रार्थना का उल्लेख है।

प्रस्तुत विषय समाप्त करने के पहले हम गृह्यसूत्रों की सामग्री पर भी दृष्टि डालेंगे[1]। ये सूत्र श्रुति के अंग तो नहीं हैं, फिर भी इनकी वैदिक साहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है और इनका सूत्रपात वैदिक काल के अन्त में हुआ है।

(३) गृह्य सूत्र

१६. वैदिक साहित्य की अपेक्षा गृह्यसूत्र में सीता से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री कहीं अधिक विस्तृत है[2]। इससे स्पष्ट है कि वैदिक काल के अन्त में कृषि का महत्त्व बढ़ने लगा था। यह सामग्री प्रायः विविध कृषिकर्मों के वर्णन में मिलती है। इसका विश्लेषण करने के पहले उन स्थलों का उल्लेख करना है जहाँ कृषि को छोड़कर किसी दूसरे प्रसंग में सीता से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री मिलती है।

ऊपर कहा गया है कि **तैत्तिरीय आरण्यक** में पितृमेध के अवसर पर सीता से प्रार्थना की जाती थी। **कृष्णयजुर्वेद** के **आग्निवेश्य** और **बोधायन गृह्यसूत्रों** में भी इसी प्रसंग में सीता से इस प्रार्थना का उल्लेख है[3]। इन दोनों सूत्रों में इस स्थल को छोड़कर सीता से सम्बन्ध रखनेवाली अन्य सामग्री नहीं मिलती।

---

१. धर्म. और शुल्वसूत्रों में सीता का उल्लेख नहीं मिलता।

२. निम्नलिखित गृह्यसूत्रों में सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का कोई उल्लेख नहीं है। साम्वेद के खदिर और जैमिनि सूत्र और कृष्णयजुर्वेद के आपस्तम्ब हिरण्यकेशिन, भारद्वाज, वैखानस और वाराह गृह्यसूत्र। जहां 'सीता' अर्थात् लागलपद्धति का शब्दमात्र आया है उन स्थलों का यहां पर उल्लेख नहीं किया गया है।

३. दे० आग्निवेश्य गृ० सू०, ३ ८, (लोष्टचिति) और बोधायन गृ० सू०, पितृमेध सूत्रम् १. १८ (श्मशानकरणम्)।

काठक गृह्यसूत्र में 'सीरा युंजंति' मंत्र का 'गोयज्ञ' के अवसर पर एक नया प्रयोग हुआ है। अन्य सूत्रों में इस गोयज्ञ का और पशुपालन से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कार्यों का वर्णन अवश्य मिलता है। लेकिन अन्यत्र इसी प्रसग में सीता का उल्लेख नहीं मिलता। गोयज्ञ नई ब्याई गौओं के स्वास्थ्य आदि के लिए किया जाता है। इसमें **काठक गृह्यसूत्र** के अनुसार दो सीताएँ खींची जाती हैं, 'सीरा युंजंति' मंत्र पढ़ा जाता और अन्त में सीता में घी डाला जाता है[1]।

१७. उक्त स्थलों को छोड़कर सीता का उल्लेख केवल कृषि कार्यों के वर्णन में हुआ है। इन कृषि सम्बन्धी कार्यों में सीता का स्थान समझने के लिए हमें स्मरण रखना चाहिए कि वह कृषि की एकमात्र अधिष्ठात्री देवी नहीं है। इन विविध यज्ञों और कार्यों में सीता के साथ साथ अन्य देवताओं का भी बराबर उल्लेख होता है। इसके अतिरिक्त 'आग्रयण' (अथवा नवयज्ञ) के अवसर पर केवल इन्द्र, अग्नि, विश्वदेवता और द्यौपृथिवी का उल्लेख हुआ है। फिर भी इसी एक यज्ञ को छोड़कर कृषि के अन्य यज्ञों में सीता से अवश्य प्रार्थना की जाती थी। अतः कृषि की एकमात्र अधिष्ठात्री देवी न होने पर भी, सीता का स्थान प्रधान माना जाना उचित है। इन विविध कृषिकर्मों का परिचय नीचे दिया जाता है।

'लांगलयोजनम्' का वर्णन चारों वेदों के गृह्यसूत्रों[2] मे मिलता है जिनमें से **शुक्लयजुर्वेद** का **पारस्कर गृह्यसूत्र** और **अथर्ववेद** का **कौशिक सूत्र** सब से अधिक विस्तार मे जाते हैं। खेत ही पर अनेक

---

१. दे० काठक गृह्यसूत्र : ७१. १. ६ (दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत ग्रन्थमाला ९)

२. दे० ऋग्वेद के शाखायन गृ० सू० : ४. १३; कौपीतक शाबव्यकृत : ३. १३ और आश्वलायन गृ० सू० : २. १०. ३. ४
सामवेद का गोभिल गृ० सू० : ४. ४. २७, २९
शुक्लयजुर्वेद का पारस्कर गृ० सू० . २. १३
कृष्णयजुर्वेद का मानव गृ० सू० : २. १०. ७
अथर्ववेद का कौशिक गृ० सू० : २०

मानव गृ० सू० में इस कर्म के दो भिन्न भाग माने जाते है, आयोजन (कर्षण सामग्रीकरणम्) और पर्ययन (प्रथमं क्षेत्रगमनम)।

देवताओं[1] को स्थालीपाक आदि चढ़ाया जाता है। हल द्वारा सीताएँ खींची जाती और साथ साथ 'सीरा युंजंति' मंत्र पढ़ा जाता है और अन्त में ब्राह्मणों को भोजन दिया जाता है।

'सीतायज्ञ' का उल्लेख तीन सूत्रों[2] में मिलता है। **पारस्कर गृह्यसूत्र** में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। खेत के उत्तर या पूर्व में किसी जोते हुए शुद्ध स्थल पर (या गाँव में) आग जलाते हैं और स्थालीपाक तैयार करते हैं। घृत की आहुति करते समय इन्द्र, सीता और उर्वरा से प्रार्थना की जाती है। इसके अनन्तर सीता, यजा (यज्ञ की देवी) सभा (भक्ति की देवी) और भूति (धन की देवी) को स्थालीपाक चढ़ाया जाता है। अंत में सीता की रक्षा करने वाले भूतों को (सीतागोप्तृ) भी दर्भ की बलि चढ़ाई जाती है। स्त्रियाँ भी बलि चढ़ाती हैं और कार्य समाप्त होने पर यजमान ब्राह्मणों को भोजन दिया जाता है।

आहुति करते समय सीता से जो प्रार्थना की जाती है, उसका अर्थ यह है—

'इन्द्रपत्नी[3] सीता का मैं आह्वान करता हू, जिसके तत्त्व में वैदिक और लौकिक (दोनों प्रकार के) कार्यों की विभूति निहित है। वह (सीता) सब कार्यों में निरंतर मेरी सहायता किया करे। स्वाहा[4]।'

इसके पश्चात् उर्वरा के प्रति यह प्रार्थना पढ़ते थे—'अति प्रशंसित उर्वरा (उपजाऊ भूमि) का मैं इस यज्ञ में आह्वान करता हूं, जो अश्व, गौ (आदि संपत्ति प्रदान करने) वाली है, जो प्राणियो का नित्य पालन करती है, जिसके चारों ओर खलियानों की माला (सुशोभित) है। वह स्थिर रहने वाली (उर्वरा) निरंतर मेरी सहायता किया करे। स्वाहा।'।

---

१. पारस्कर गृ० सू० मे ८ देवता, गोभिल गृ० सू० मे ९ देवता और मानव गृ० सू० में १२ देवता है। इनके नाम प्रत्येक सूत्र मे भिन्न है, लेकिन इंद्र और सीता सर्वत्र पाए जाते है।

२ दे० पारस्कर गृ० सू० : २. १७, काठक गृ० सू० : ७. ७१ ७ और गोभिल गृ० सू : ४. ४. ३०।

३ कीथ अनुमान करते है कि 'इंद्रपत्नी' विशेषण का कारण यह है कि ऋग्वेद मे ८. २१. ३ इंद्र को 'उर्वरापति' कहते है।

४ दे० पारस्कर गृ० सू० : २. १७. ४—'यस्या भावे वैदिकलौकिकाना भूतिर्भवति कर्मणाम। इंद्रपत्नीमुपह्वये सीता सा मे त्वनपायनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा'।

काठक गृह्यसूत्र के अनुसार इस यज्ञ में केवल 'सीरा युंजंति' मंत्र की यह प्रार्थना पढ़ी जाती है 'घी और मधु से सानी हुई सीता, विश्वदेवताओं और मरुतों से रक्षित होवे। हे सीते! ओजस्विनी और घी से सींची हुई तू जल के साथ हमारे पास रह।' भाष्यकार देवपाल लिखते हैं कि कार्तिक शुक्ल की द्वादशी में यह सीतायज्ञ आर्यों में प्रसिद्ध है, **यत्र वीरणादिमयी सीता कुमारी देवता विरच्यते** 'जब खस आदि (सुगंधित घास) से सीता कुमारी देवी की मूर्ति बनाई जाती है।'

'लागलयोजनम्' और 'सीतायज्ञ' के अतिरिक्त निम्नलिखित कृषि-कर्मों का उल्लेख मात्र मिलता है। बीजवपनीय यज्ञ, प्रलवन (धान्य के लुनने पर), खलयज्ञ, तंत्रीयज्ञ (धान्य के साफ किए जाने पर), पर्य्ययण (धान्य के घर पहुँचने पर)[1]। इन सब अवसरों पर इन्द्र, सीता आदि अनेक देवताओं को बलि चढ़ाई जाती थी। **मानव गृह्यसूत्र** के अनुसार अन्य सब त्योहारों पर भी (सांवत्सरेषु पर्वसु) उन्हीं देवताओं की पूजा होनी चाहिए[2]। इससे हम अनुमान कर सकते हैं कि इन कृषि के अधिष्ठाता देवताओं का महत्त्व बराबर बढ़ता रहा और कृषकों के धार्मिक जीवन में इनका स्थान उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा था। इनमें से सीता को प्रधान समझना चाहिए। यह प्रस्तुत विश्लेषण से संभवतः स्पष्ट हो जाता है।

१८. उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त **कौशिक सूत्र** के तेरहवें अध्याय में सीता से जो विस्तृत प्रार्थना की गई है उसका उद्धरण हमने अन्त तक छोड़ रखा है। **कौशिक सूत्र** के इस अध्याय की सामग्री **सामवेद** के **अद्भुत-ब्राह्मण** से मिलती जुलती है। अनेक विलक्षण घटनाओं पर अपशकुन के निवारण आदि के लिए जो कर्मकांड आवश्यक समझा जाता था उसका इस अद्भुताध्याय में वर्णन है। सीता सम्बन्धी सामग्री 'लांगलोःसंसर्गे' अर्थात् दो हलों के उलझ जाने के प्रसंग में आ गई है। ऐसे अवसर पर पुरोडाश तैयार करके पुरोहित को जंगल में पूर्व की ओर एक सीता खींचनी पड़ती थी

---

१. बीजवपनीय के लिए दे० काठक गृ० सू०: ७. ७१. ८, गोभिल गृ० सू०: ४. ४. ३० और मानव गृ० सू०: २. १०. ७ शेष यज्ञों का उल्लेख केवल गोभिल (वही) और मानव गृ० सू० (वही) में मिलता है।

२. भाष्यकार देवपाल लिखते हैं कि यह पूजा कृषकों के लिए है—'कृषिवृत्तिर्जीवनैः'।

और उसमें आग जलाकर आहुति करते समय उसे सीता से यह प्रार्थना करनी पड़ती थी।

वित्तिरसि पुष्टिरसि प्राजापत्यानां[1] त्वाहं मयि
पुष्टिकामो जुहोमि स्वाहा॥
कुमुद्वती पुष्करिणी सीता सर्वांगशोभनी।
कृषिः सहस्रप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि॥
उर्वी त्वाहुर्मनुष्याः श्रियं त्वा मनवो विदुः।
आशयेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः॥
पर्जन्यपत्नि[2] हरिण्यमिजितास्यभि नो वेद।
कालनेत्रे हविषा नो जुषस्व तृप्तिं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥
याभिर्देवा असुरानकल्पयन्यातून् गंधर्वान् राक्षसंश्च।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रापोषं सुमगे रराणा॥
हिरण्यस्रक् पुष्करिणी श्यामा सर्वांगशोभिनी।
कृपिर्हिरण्यप्रकारा प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि॥
अश्विभ्यां देवि सह संविदाना इन्द्रेण राधेन
सह पुष्ट्या न आगहि॥
विशस्त्वा रासन्तां प्रदिशोऽनु सर्वाहोरात्रार्धमासमासा
आर्तवा ऋतुभिः सह॥
भर्त्रीदेवानामुत मर्त्यानां भर्त्री प्रजानामुत मनुष्याणाम्
हस्तिभिरितरासैः क्षेत्रसारधिमिः सह।
हिरण्यैरश्वैरा गोभि प्रत्यष्टा श्रीरियं मयि॥

'(हे सीते) तू प्रजापति की संतति को धन और पुष्टि (देनेवाली) है, मैं पुष्टि की कामना करके तुझको आहुति देता हूं। स्वाहा।

हे कुमुदों और पुष्करों[3] से सुसज्जित सर्वांगशोभनी सीते, इस सहस्र-प्रकारा कृषि की श्री निरंतर मेरे साथ रहे।

---

१. यह ए० वेबर का पाठ है। दे० अबहैंडलूगन बर्लिनर एकाडेमी, १८५८, पृ० ३७०-७३। ब्लुमफील्ड के अनुसार 'प्राशापत्यानां' होना चाहिए। (दे० जर्नल अमेरिकन ओरियैन्टल सोसाइटी भाग १४)।

२. अथर्ववेद में पृथिवी को पर्जन्यपत्नी कहा गया है (१२. १. ४२)।

३. वेबर के अनुसार इसका अनुवाद है, 'बालियों से सुसज्जित'।

मनुष्य तुझको उर्वी कहते हैं, बुद्धिमान् तुझको श्री मानते हैं, हमको स्वास्थ्य-कर और शक्तिप्रद अन्न प्रचुर मात्रा में दे।

हे विजयिनी! हिरण्यमयी! पर्जन्यपत्नी! हम पर कृपा कर। हे कालनेत्रे! हवि से प्रसन्न हो जा और द्विपदों तथा चतुष्पदों के लिए हमको तृप्ति दे।

जिन (शक्तियों) से देवतागण असुरों, यातुओं, गंधर्वों और राक्षसों का नियंत्रण करते हैं, इन (शक्तियों) के साथ आज प्रसन्न होकर हमारे पास आ और हमको सहस्रविध पुष्टि प्रदान कर।

हे श्यामे! हिरण्यमयी माला धारण करने वाली, पुष्करों से सुसज्जित सर्वांगशोभिनी, इस हिरण्यमयी कृषि को श्री निरंतर मेरे साथ रहे।

हे देवि! तू आश्विनों, इन्द्र, और राध (नक्षत्र) के साथ संघबद्ध है, पुष्टि (कारक अन्न) के साथ हमारे पास आ।

सब दिशाओं में वैश्य तेरी देख रेख करते हैं। दिन, रात, अर्द्धमास, पूर्णमास और ऋतुएं (सब तेरी देख रेख करती हैं)।

'मनुष्यों और देवताओं दोनों का तू पालन करती है। विविध आसन से युक्त हाथी, क्षेत्रसारथि, हिरण्य, अश्व, गोधन, यह (सारी) सम्पत्ति निरंतर मेरे साथ रहे।'

इस प्रार्थना में सर्वांगशोभिनी, हिरण्यमयी माला धारण करने वाली, कालनेत्रा, श्यामा, हिरण्यमयी पर्जन्यपत्नी सीता का मानवीकरण अत्यन्त स्पष्ट है।

१६. **ऋग्वेद** से लेकर गृह्यसूत्रों तक उपर्युक्त सीता-संबंधी सामग्री देख कर हम निस्संकोच कह सकते हैं कि इस सीता का व्यक्तित्व शताब्दियों तक कृषि करने वाले आर्यों की धार्मिक चेतना में जीता रहा। **महाभारत** आदि में भी इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। द्रोणपर्व के जयद्रथवधपर्व के अंतर्गत ध्वजवर्णन नामक अध्याय में (७. १०५) कृषि की अधिष्ठात्री देवी, सब बीजों को उत्पन्न करने वाली सीता का उल्लेख हुआ है।

मद्रराजस्य शल्यस्य ध्वजाग्रेऽग्निशिखामिव।
सौवर्णीं प्रतिपश्याम सीतामप्रतिमां शुभाम्॥ १८॥

सा सीता[1] भाजते तस्य रथमास्याय मारिष।
सर्वबीजविरूढेव यथा सीता श्रिया वृता॥ १६॥

हरिवंश के द्वितीय भाग में दुर्गा की एक लम्बी स्तुति के अंतर्गत कहा गया है, 'तू कृषकों के लिए सीता है तथा प्राणियों के लिए धरणी।'

कर्षुकाणां च सीतेति भूतानां धरणीति च (२. ३. १४)।

बौद्ध **अभिधर्म महाविभाषा** के चीनी अनुवाद में यों लिखा है:—

'यदि कृषक बीज बोने के बाद शरत्काल में प्रचुर शस्य प्राप्त करता है, तब वह कहता है, यह (शस्य) श्री, सीता और समा इन देवियों का वरदान है[2]।'

वाल्मीकि रामायण पर भी सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी का प्रभाव पड़ा है। यद्यपि इसका **रामायण** में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है फिर भी अयोनिजा सीता के जन्म और तिरोधान के जो वृत्तान्त मिलते हैं वे संभवतः इस वैदिक सीता के व्यक्तित्व से प्रभावित हैं। इसका विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग में किया जाएगा।

ग—वैदिक साहित्य में रामकथा का अभाव

२०. विस्तृत वैदिक साहित्य की बहुसंख्यक रचनाओं में जहां कहीं राम-कथा के पात्रों के नाम मिलते हैं, उन सब स्थलों का उल्लेख और महत्त्वानुसार उनके प्रसंग का वर्णन प्रस्तुत अध्याय के पहले दो परिच्छेदों में किया गया है। सारी सामग्री का सिंहावलोकन करने पर वैदिक साहित्य और राम-कथा के सम्बन्ध के विषय में हम किस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं इसका इस अन्तिम परिच्छेद में निर्णय करना है।

ऋग्वेद में इक्ष्वाकु, दशरथ और राम, इन तीनों का एक एक बार उल्लेख हुआ है। वे प्रभावशाली ऐतिहासिक राजा थे, इतना ही परिचय

---

१. सीता का अर्थ यहाँ पर 'लांगल का अग्रभाग' होता है। पद्मपुराण में भी 'सीता' इस अर्थ में प्रयुक्त है (दे० पातालखंड, अध्याय ७७)।

२. दे० ज० रा० ए० सो०: १९०७, पृ० १०२ महाविभाषा का रचनाकाल तीसरी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध माना जाता है (दे० कर्न: मेन्युअल ऑव बुद्धिज्म पृ० १२१।

इन स्थलों से मिल सकता है। इनका पारस्परिक सम्बन्ध असम्भव नही है, लेकिन इसका कोई निर्देश नहीं मिलता है। आगे चलकर इनका वैदिक साहित्य में और कहीं उल्लेख नहीं हुआ है। **ऋग्वेद** में सीता का भी एक बार उल्लेख हुआ है लेकिन इस सीता का **रामायण** के उपर्युक्त अन्य ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्ध असम्भव ही है, क्योंकि उसका व्यक्तित्व ऐतिहासिक न होकर सीता अर्थात् लांगलपद्धति के मानवीकरण का परिणाम है[1]। इस सीता का उल्लेख वैदिक काल के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक बराबर होता रहा है।

ब्राह्मणों से राम मार्गवेय, राम औपतास्विनी तथा राम क्रातुजातेय इन तीनों का परिचय मिलता है। इनके ऐतिहासिक होने में कोई संदेह नहीं किया जा सकता है, लेकिन उनका **रामायण** के राम से कोई भी सम्बन्ध संभव प्रतीत नही होता।

ब्राह्मणों तथा प्राचीन उपनिषदों में अश्वपति और जनक का पहले पहल उल्लेख मिलता है। अश्वपति का **रामायण** के पात्रों से कोई सबन्ध निर्दिष्ट नहीं हुआ है। इतना ही प्रतीत होता है कि वे एक ऐतिहासिक राजा थे, जो सम्भवतः जनक के समकालीन थे। ब्राह्मणों के जनक और रामायणीय जनक की अभिन्नता की समस्या का निर्णय करना असम्भव प्रतीत होता है। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। **रामायण** का कवि सीता के पिता जनक का प्रसिद्ध वैदिक जनक से सम्बन्ध जोड़ता है, यह स्पष्ट है और स्वाभाविक भी है। लेकिन इस अभिन्नता के लिए वैदिक साहित्य से कोई प्रमाण नही निकाला जा सकता। इस अभिन्नता को मानते हुए भी जनक के सारे वृत्तांत में रामकथा का कोई भी संकेत विद्यमान नहीं है।

इसी तरह देखा जाता है कि वैदिक रचनाओं में **रामायण** के एकाध पात्रों के नाम अवश्य मिलते हैं, लेकिन न तो इनके पारस्परिक सम्बन्ध की कोई सूचना दी गई है और न इनके विषय में किसी तरह **रामायण** की कथा-वस्तु का किंचित् भी निर्देश किया गया है। जनक और सीता का बार बार उल्लेख होने पर भी दोनों का पिता-पुत्री-सम्बन्ध कहीं भी निर्दिष्ट नहीं हुआ है।

---

१. तैत्तिरीय ब्राह्मण की सीता सावित्री का भी रामायण की कथा-वस्तु से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

अतः वैदिक काल में **रामायण** की रचना हुई थी अथवा राम-कथा सम्बन्धी गाथाएँ प्रसिद्ध हो चुकी थीं, इसकी समस्त विस्तृत वैदिक साहित्य में कोई भी सूचना नहीं दी जाती। अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम **रामायण** के पात्रों के नामों से मिलते हैं जिससे **रामायण** के पात्रों की ऐतिहासिकता के लिए भी किंचित् आधार मिलता है, इतना ही स्पष्ट और असंदिग्ध प्रतीत होता है।

दूसरा अध्याय

वाल्मीकिकृत रामायण

२१. वाल्मीकिकृत **रामायण** के पूर्व राम कथा-संबंधी आख्यान प्रचलित थे। इसका आभास **महाभारत** के द्रोणपर्व और शांतिपर्व के संक्षिप्त राम-चरित से तथा अन्य निर्देशों से भी मिलता है (दे० नीचे अनु० ३५, ३६, १४५)। ये आख्यान आजकल अप्राप्य हैं और इस प्रकार वाल्मीकिकृत **रामायण** राम-कथा की प्राचीनतम विस्तृत रचना सिद्ध होती है। निबन्ध के चौथे भाग में प्रचलित वाल्मीकि **रामायण** की कथावस्तु के साथ साथ प्रत्येक काड का विश्लेषण किया जायगा। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद में **रामायण** के भिन्न भिन्न पाठों की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इसके बाद **रामायण** के रचनाकाल पर विचार किया गया है। अंतिम परिच्छेद में आदि-कवि वाल्मीकि से संबंध रखने वाली सामग्री एकत्र की गई है।

क —वाल्मीकिकृत रामायण के तीन पाठ

२२. वाल्मीकिकृत **रामायण** का पाठ एकरूप नहीं है। आजकल इस रचना के तीन पाठ प्रचलित हैं—

१. दाक्षिणात्य पाठ : गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई), निर्णय सागर प्रेस (बम्बई) तथा दक्षिण के संस्करण। यह पाठ अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित और व्यापक है।

२. गौडीय पाठ : गोरेसियो (पैरिस) तथा कलकत्ता संस्कृत सीरिज़ के संस्करण।

३. पश्चिमोत्तरीय पाठ : दयानन्द महाविद्यालय का संस्करण (लाहौर)। प्रत्येक पाठ में बहुत से श्लोक ऐसे मिलते हैं जो अन्य पाठों में नहीं पाये जाते। दाक्षिणात्य त
प्रत्येक पाठ में श्लोकों

इसके अतिरिक्त जो श्लोक तीनों पाठों में पाए जाते हैं उनका पाठ भी एक नहीं है और इनका क्रम भी बहुत स्थलों पर भिन्न है।[1]

इन पाठान्तरों का कारण यह है कि वाल्मीकिकृत **रामायण** प्रारंभ में मौखिक रूप से प्रचलित था और बहुत काल के बाद भिन्न भिन्न परम्पराओं के आधार पर स्थायी लिखित रूप धारण कर सका। फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से तीनों पाठों की तुलना करने पर सिद्ध होता है कि कथावस्तु में जो अंतर पाए जाते हैं वे गौण हैं। प्रस्तुत लेखक ने इस दृष्टिकोण से तीनों पाठों की विस्तृत तुलना की है।[2]

इस तुलना से स्पष्ट है कि उत्तर कांड की रचना बहुत बाद में हुई थी। इस कांड में तीनों पाठों में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं मिलता। केवल दाक्षिणात्य पाठ में सीतात्याग का कारण यह बताया जाता है कि भृगु ने अपनी पत्नी का हत्या के कारण विष्णु को शाप दिया था। यदि उत्तरकांड प्रारंभ से **रामायण** का एक अंग होता तो अन्य कांडों की तरह इस कांड में भी परिवर्तन और अंतर उपस्थित होते।

उदीच्य पाठ :

२३. पाठों की तुलना से एक अन्य परिणाम यह भी निकलता है कि गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ अपेक्षाकृत बहुत निकट प्रतीत होते हैं। इन दोनों में दाक्षिणात्य पाठ के बहुत से आर्ष प्रयोग एक ही तरह से सुधारे गये हैं और बहुत से अन्य स्थलों पर भी दोनों का पाठ दाक्षिणात्य संस्करण से भिन्न होते हुए भी एक है। अतः जो श्लोक तीनों में पाए जाते हैं वहां दाक्षिणात्य पाठ अपेक्षाकृत प्राचीन और मौलिक माना जाना चाहिये। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभ में **आदि रामायण** के दो पाठ धीरे धीरे भिन्न होने लगे थे :—उदीच्य तथा दाक्षिणात्य। जहां गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ दाक्षिणात्य पाठ से भिन्न होते हुए भी आपस में समान हैं, वहां उदीच्य पाठ मानना अनुचित न होगा। आर्ष प्रयोगों की अपेक्षाकृत कमी के अतिरिक्त, निम्नलिखित विषय उदीच्य पाठ के अपने ही प्रतीत होते हैं (ये केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में पाए जाते हैं) :—

---

१. दे० एच० याकोबी : इस रामायण, पृ० ३

२. दे० सी० कुल्के: दि थ्री रिशन्स्स आव दि रामायण, जर्नल ओरियन्टल रिसर्च

१. एक तीसरी अनुक्रमणिका, जिसमें सात काडों की सामग्री का उल्लेख मिलता है (दे० गौ० रा० १.४ तथा प० रा० १.३)। दाक्षिणात्य पाठ में केवल दो अनुक्रमणिकाएँ दी गई हैं।

२. भरत तथा शत्रुघ्न की यात्रा तथा राजगृह में निवास दो सर्गों में वर्णित है। (दे० गौ० रा० १.७६,८० तथा प०रा० २.१,२) दाक्षिणात्य पाठ में इसका उल्लेख मात्र किया गया है।

३. एक ब्राह्मण कैकेयी को शाप देता है। (दे० गौ० रा० २.८. ३३ आदि तथा प० रा० २.११. ३७ आदि)

४. सीता जनक तथा मैनका की मानसी पुत्री है। (दे० गौ० रा० ३.४ तथा प० रा० ३.२)।

५. सम्पाति का अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाना (दे० गौ० रा० ४.६२ तथा प० रा० ४.५५)।

६. केशरी का दिग्गज धवल का वध करना और वर स्वरूप हनुमान को प्राप्त करना। (दे० गौ० रा० ५.३ तथा प० रा० ४.५२)

७. निकषा का विभीषण से अनुरोध करना कि वह रावण को समझावे (दे० गौ० रा० ५.७६ तथा प० रा० ५.७५)।

८. दशरथ तथा सागर की मैत्री (दे० गौ० रा० ५.६४.२१-२२ तथा प० रा० ५.६६.४६-६२)

९. कुंभकर्ण रावण से कहता है–'नारद ने मुझसे कहा था कि देवताओं ने विष्णु के एक अवतार द्वारा रावण वध की आयोजना की थी' (दे० गौ० रा० ६.४०.४१.प० रा० ६.४१.४२)

१०. हनुमान्/कालनेमि का वृत्तान्त तथा हनुमान का गंधर्वों से युद्ध करना। (दे० गौ० रा० ६.८२,८३ तथा प० रा० ६.८१)

उदीच्य पाठ जो संभवतः पहली शताब्दी ई० से दाक्षिणात्य पाठ से भिन्न होने लगा था, बाद में पुनः दो पाठों में विभक्त होने लगा, गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय। डा० लेवि का अनुमान है कि कम से कम ५०० ई० से ये दोनों पाठ भिन्न होने लगे थे।[1]

---

१. जूर्नल ऐसिएटिक पैरिस : १९१८, पृ० १ आदि।

गौडीय पाठ

२४. गौडीय पाठ के निम्नलिखित वृत्तान्त अन्य दो पाठो में नहीं मिलते।

१. विभीषण रावण से अलग होने के बाद पहले कैलास पर अपने भाई वैश्रवण से मिलता है और बाद में राम की शरण लेता है। (दे० गौ० रा० ५. ८६)।

२. औषधि के लिये जाते समय हनुमान की भरत से भेंट (दे० गौ० रा०६. ८२ ६० आदि)।

३. सीताहरण के पूर्व जटायु राम से अपने संबन्धियों के यहां जाने की आज्ञा लेकर घर जाता है (दे० गौ० रा० ३.२३.३. १०)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ

२५. पश्चिमोत्तरीय पाठ तथा गौडीय पाठ बहुत निकट हैं, यह उपर्युक्त उदीच्य पाठ के विश्लेषण से स्पष्ट है। फिर भी पर्याप्त सामग्री पश्चिमोत्तर तथा दाक्षिणात्य पाठ दोनों में मिलती है। इसका कारण यह होगा कि बाद मे पश्चिमोत्तराय पाठ का परिपूर्ण करने के उद्देश्य से प्रचलित तथा व्यापक दाक्षिणात्य पाठ का सहारा लिया गया है। इस तरह वर्षा-ऋतु का एक विस्तृत वर्णन दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय दोनों पाठो मे मिलता है। (दे० द्दा० रा० ४. २८. १४-५२, और प० रा० ४. २१) यह वर्णन त्रिष्टुभ मे है।

ब्रह्मास्त्र द्वारा द्रुमकुल्य का विनाश भी दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तराय पाठ मे मिलता है। (दे० द्दा० रा० ६. २२, तथा प० रा० ५. ६६)। अनेक वृत्तान्त कवल पश्चिमोत्तराय पाठ में ही पाए जाते हैं। उदाहरणार्थः—

१. कैकेयी का एक ब्राह्मण से विद्याबल प्राप्त करना, जिसके द्वारा वह सग्राम म अपने पति का रक्षा करने में समर्थ हुई। (दे० प० रा० २. ११. ४२ आदि)।

२. हनुमन्मंगल : एक पूरा सर्ग जिसमे वानर हनुमान की वीरता की प्रशसा करते हैं। (दे० प० रा० ४. ५६)।

३. समुद्र का राम और लक्ष्मण को एक कवच और अस्त्र प्रदान करना। (दे० प० रा० ५. ६६)।

४. नागपाश के अवसर पर नारद का आना और राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाना। (दे० प० रा० ६. २७)।

५. मदोदरी 'केश' ग्रहण : विभीषण के द्वारा पता चलता है कि रावण होम कर रहा है। यदि यह यज्ञ पूर्ण हो सका तो रावण अजेय सिद्ध हो जायगा। वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुंच कर उसका ध्यान भग करने में असमर्थ हैं। अन्त में अगद मदोदरी को केशों से खोच कर उसे रावण के पास ले आता है। इस पर रावण उत्तेजित हो जाता है और यज्ञ समाप्त नहीं हो पाता। (दे० प० रा० ६. ८२)।

दाक्षिणात्य पाठ

२६. जो श्लोक तीनों पाठों में मिलते हैं, इनके लिए दाक्षिणात्य साधारणतया अधिक प्राचीन माना जाना चाहिए। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। फिर भी इस पाठ में भी बहुत प्रक्षेप पाए जाते हैं। निम्नलिखित वृत्तान्त न तो गौडीय पाठ में मिलते और न पश्चिमोत्तरीय पाठ में—

१. रामादि का जन्मतिथि (**चैत्रे नावमिके तिथौ**) तथा उसी अवसर पर राशियों के सगम। (दे० दा० रा० १. १२. २ आदि)।

२. बालकांड की अनेक पौराणिक कथाएँ : कश्यप की तपस्या जिसके फलस्वरूप वह हरि को वामनावतार में पुत्र-स्वरूप प्राप्त कर सका। (१६. १०-१७) जह्नु का गगा को पीना (४३. ३४-४१); विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत ले जाना (४५. ४०-४३); विष्णु का कूर्मावतार वर्णन (४५. २७-३२); इन्द्र का ब्राह्मण के रूप में विश्वामित्र से अन्न माँगना (६५. ३-१०); सगर के जन्म की कथा (७०. २२-३७)।

३. कैकेयी की माता के अपने पति द्वारा त्यक्त किये जाने की कथा (२. ३५)।

४. सीता की यमुना से प्रार्थना (२. ५५. १३-२१)

५. राम, लक्ष्मण और सीता का वाल्मीकि से भेंट (२. ५६. १६-१७)

६. अकंपन का रावण को जनस्थान की घटनाओं का हाल देना और रावण का मारीच के पास जाना (३. ३१)

७. राक्षसी अर्यामुखी का वृत्तान्त (३. ६६. ११-१२)।

८. सुग्रीव का लक्ष्मण को शान्त करने के लिए तारा को उनके पास भेजना (४. ३३. २५-६२)।

९. हनुमान का लका देवी से युद्ध (५. ३. २० ५१)।

१०. सुग्रीव-रावण-युद्ध (६. ५० तथा ६. ४१. १-१०)।

११. अगस्त्य का राम को सूर्यस्तव देना (६. १०५)।

१२. सीता की राम से तारा तथा अन्य वानर पत्नियों को अयोध्या ले जाने की प्रार्थना (६. १२३. २३-३२)।

ख—रामायण का रचनाकाल

२७. एक शताब्दी के पूर्व **रामायण** पहले पहल पाश्चिम मे विख्यात होने लगा, उस समय अनेक विद्वानों का मत था कि इसकी रचना अत्यन्त प्राचीन काल मे हुई थी—ए० श्लेगेल के अनुसार ११वी श० ई० पू० तथा जी० गोरेसियो के अनुसार लगभग १२वी श० ई० पू०[1]। इस मत के प्रतिक्रियास्वरूप जी० टी० ह्वालर तथा डा० वेबर ने **रामायण** पर युनानी तथा बौद्ध प्रभाव मान कर उसकी रचना अपेक्षाकृत अर्वाचीन समझी है[2]। इन दोनों के मत का खडन निबन्ध के द्वितीय भाग में किया जायगा।

आगे चलकर **रामायण** के रचनाकाल के विषय में लिखते हुए विद्वान प्रायः **आदि रामायण** (वाल्मीकि की प्रामाणिक रचना) तथा प्रचलित वाल्मीकि **रामायण** का अलग अलग रचना-काल निर्धारित करते हैं।

रामायण के भिन्न भिन्न पाठों की तुलना करने पर स्पष्ट है कि उत्तरकाण्ड बाद का लिखा हुआ है। वास्तव मे उत्तरकाण्ड तथा बालकांड दोनो वाल्मीकिकृत रचना में विद्यमान नही थे इसके लिए द्वितीय भाग में प्रमाण दिए जायेगे। (दे० ८ वां अध्याय)। वाल्मीकिकृत **आदि रामायण** (कांड २,६) तथा प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** मे जो अन्तर पाया जाता है इसके लिए बहुत काल की आवश्यकता है। छोटे मोटे प्रक्षेपों को छोड़कर प्रस्तुत प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** का रूप (१-७ काड) कम से कम दूसरी शताब्दी ई० का है यह बहुसख्यक विद्वानों का मत है।

---

१. दे० ए० डब्लू० श्लेगेल: जर्मन ओरियन्टल जर्नल, भाग ३, पृ० ३७९।
जी गोरेसियो : रामायण भाग १० भूमका।

२. जे० टी० ह्वालर: हिस्ट्री आफ इडिया, भाग २ (लन्दन १८६९)।
ए० वेबर : आन् दि रामायण (बम्बई १८७३)।

एम० विंटरनित्स इस प्रश्न का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद एच० याकोबी के परिणाम पर पहुँचते हैं। एच० याकोबी पहिली अथवा दूसरी शताब्दी ई० को प्रचलित **रामायण** का काल मानते हैं, एम० विंटरनित्स दूसरी श० ई० अधिक समीचीन समझते हैं[1]। सी० वी० वैद्य[2] इसका काल दूसरी श० ई० पू० तथा दूसरी श० ई० के बीच में मानते हैं यद्यपि वह पहिली श० ई० पू० अधिक सम्भव समझते हैं। कालिदास के समय में **रामायण** ने अपना प्रचलित रूप धारण किया था तथा **महाभारत** के आरण्यपर्व के रचना काल में बालकाड तथा उत्तरकाड की कुछ सामग्री प्रचलित हो गई थी। अतः अधिक सभव है कि प्रचलित **रामायण** का रूप दूसरी श० ई० के बाद का नही है। **आदि रामायण** प्रचलित **रामायण** से इतना भिन्न है कि इस महत्त्वपूर्ण विकास के लिए कई शताब्दियों की आवश्यकता प्रतीत होती है। अतः वाल्मीकिकृत रचना कम से कम तीसरी श० ई० पू० की होगी। कई विद्वान वाल्मीकि का काल और प्राचीन मानते हैं।

प्रामाणिक वाल्मीकिकृत **रामायण** मे बौद्ध धर्म की और निर्देश नहीं मिलता। अतः इसकी रचना बुद्ध के पूर्व हो अथवा पाचवीं श० ई० में हुई होगी। यह एम० मोनियर विलियम्स तथा सी० वी० वैद्य का प्रधान तर्क प्रतीत होता है।[3] लेकिन प्राचीन बौद्ध साहित्य तथा जातकों की सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि तिपिटक के रचनाकाल मे राम-कथा संबंधी स्फुट आख्यान, काव्य प्रचलित हो चुका था लेकिन **रामायण** की रचना नहीं हो पाई थी। (दे० नीचे अनु० २२)।

डा० याकोबी **रामायण** का रचनाकाल पाँचवी श० ई० से पूर्व, छठी और आठवीं श० ई० पू० के बीच मे मानते हैं[4]। ए० ए० मैकडोनेल भी याकोबी के तर्क दुहराकर **रामायण** की उत्पत्ति बौद्ध धर्म के पूर्व मानते हैं।[5] ए० बी० कीथ डा० याकोबी के ग्रन्थ के २० वर्ष बाद उनके तर्कों का विस्तृत

---

१. एच० याकोबी : इस रामायण, पृ० १००, ।
एम विंटरनित्स: हि० इ० लि० भाग १, ५००, ५१७।

२. सी० वी० वैद्य . दि हिस्टरी आव दि रामायण, पृ० २० और ५१।

३. एम० एम० विलियम्स : इंडियन एपिक पोइट्री (लन्दन १८६३) पृ० ३।

४. दे० एच० याकोबी : वही पृ० १०१ आदि।

५. दे० ए० ए० मैकडानल . संस्कृत लिटरेचर (लन्दन १९२८) पृ० ३०७।

विश्लेषण तथा खंडन करके **आदि रामायण** की रचना चौथी शताब्दी ई० में रखते हैं।[1] एम० विंटरनित्स प्रायः ए० बी० कीथ से सहमत हैं लेकिन वाल्मीकि को तीसरी शताब्दी ई० पूर्व में मानते हैं।[2] अतः अधिक संभव प्रतीत होता है कि वाल्मीकि ने लगभग ३०० ई० पू० अपनी अमर रचना की सृष्टि की है। इस निर्णय की पुष्टि इससे भी होती है कि **रामायण** के प्रधान पात्र (राम,सीता दशरथ आदि) पाणिनि में नहीं मिलते।

ग —आदि-कवि वाल्मीकि

२८. आदि कवि वाल्मीकि के विषय में प्रामाणिक वाल्मीकिकृत **रामायण** में कुछ भी सामग्री नहीं मिलती। **महाभारत** के अनेक स्थलों पर एक वाल्मीकि नामक ऋषि का उल्लेख मिलता है जो कवि वाल्मीकि से भिन्न प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त **महाभारत** में कवि वाल्मीकि तथा भार्गव नामक कवि का भी उल्लेख मिलता है। (दे० आगे अनु० ३१) **तैत्तिरीय प्रातिशाख्य** (१. ६. ४) में एक वैयाकरण वाल्मीकि का नाम मिलता है जो डा० याकोबी के अनुसार निश्चित रूप से कवि वाल्मीकि से भिन्न है।[3]

प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** में वाल्मीकि राम के समकालीन माने जाते हैं। दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप में राम, लक्ष्मण तथा सीता चित्रकूट के निकट वाल्मीकि से भेंट करते हैं,

> **इति सीतां च रामश्च लक्ष्मणश्च कृतांजलिः।**
> **अभिगम्याश्रमं सर्वे वाल्मीकिमभिवादयन् ॥१६॥**
> **तान्महर्षिः प्रमुदितः पूजयामास धर्मवित्।**
> **आस्यतामिति चोवाच स्वागतं तं निवेद्य च ॥१७॥**
>
> (दा० रा० २. ५६)

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में इस घटना का कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन तीन पाठों के बालकांड तथा उत्तरकांड में वाल्मीकि के विषय में निम्नलिखित सामग्री मिलती है।

---

१ दे० ज० रा० ए० सो० १९१५ पृ० २१८, २८, दि एज आव दि रामायण।

२. एम० विंटरनित्स : वही, पृ० ५१६।

३. दे० ए० वेबर: वही, पृ० १७ टिप्पणी। एच० याकोबी: वही, पृ० ६६ टिप्पणी।

बालकांड में **रामायण** की उत्पत्ति की कथा दी जाती है। तमसा के दक्षिण एक आश्रम में रहने वाले वाल्मीकि नारद से राम-कथा का सार सुन कर, और बाद में श्लोक का आविष्कार करके, ब्रह्मा के कहने पर राम-कथा श्लोकबद्ध करते हैं और अपनी इस रचना को कुश और लव को सिखलाते हैं। ये दोनों **रामायण** सर्वत्र गाते हैं और एक बार उसे अयोध्या के राजमहल में राम और उन के भाइयों को सुनाते हैं (दे० रा० १, सर्ग १, ४)।

उत्तरकांड के अनुसार सीता वाल्मीकि के आश्रम में लव और कुश को जन्म देती हैं (दे० सर्ग ६६)। वे वाल्मीकि से **रामायण** सीख कर उसे राम के यज्ञस्थल पर सुनाते हैं (दे० सर्ग ९३, ९४)। **रामायण** सुन कर राम सीता को बुला भेजते हैं और वाल्मीकि सीता को ले आकर सभा में सीता के सतीत्व का साक्ष्य देते हैं (दे० सर्ग ९५, ९६)।

२९. वाल्मीकि के डाकू होने और इसके बाद तपस्वी बनने की जो कथाएँ आगे चल कर प्रचलित हो गई हैं, इनका मूलस्रोत संभवतः **महाभारत** में देखा जा सकता है। अरण्यपर्व में च्यवन (अथवा भार्गव) नामक भृगु के पुत्र की कथा मिलती है। वह तपस्या करके इतने समय तक निश्चल खड़े रहे कि उनका सारा शरीर वल्मीक से आच्छादित था (**वल्मीकेन समावृत**)। राजपुत्री सुकन्या ने उनको अन्धा बना दिया और बाद में उनसे विवाह किया। (दे० म० भा० ३. १२२)

वाल्मीकि के डाकू होने की कथा का पहला आभास भी **महाभारत** में मिलता है। अनुशासन-पर्व में तीन श्लोक पाए जाते हैं, जिनमें वाल्मीकि युधिष्ठिर से कहते हैं—'विवाद में मुनियों ने मुझको एक बार ब्रह्मघ्न कहा था। इस कथन मात्र से मैं पापी बन गया था। मैंने शिव की शरण ली और उन्होंने मुझको यह कह कर पाप से मुक्त कर दिया—तेरा यश श्रेष्ठ होगा।'

वाल्मीकिश्चाह भगवान्युधिष्ठिरमिदं वचः।
'विवादे साग्निमुनिभिर्ब्रह्मघ्नो वै भवानिति ॥८॥
उक्तः क्षणेन चाविघ्नस्तेनाधर्मेण भारत।
सो ऽहमीशानमनघममोघं शरणं गतः ॥९॥

मुक्तश्चास्मि ततः पापैस्ततो दुःखविनाशनः ।
आह मां त्रिपुरघ्नो वै यशस्ते ऽग्र्यं भविष्यति ॥१०॥

(अनुशासन पर्व, अध्याय ४९)

इस उद्धरण में एक वाल्मीकि का उल्लेख है जिसका यश श्रेष्ठ (अग्र्य) होगा । अतः उसे कवि वाल्मीकि मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये । इस वाल्मीकि को मुनियों के शाप से ब्रह्महत्या का दोष लगा था । आगे चल कर कवि वाल्मीकि का वास्तव में ब्रह्मघ्न तथा डाकू माना जाना उपर्युक्त कथा का एक स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है ।

महाभारत की इन दो कथाओं के संयोग से वाल्मीकि के विषय में **अध्यात्म-रामायण** में निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है (अ० रा० २. ६. ४२ ८८)

जब राम, लक्ष्मण, और सीता, निर्वासित होकर चित्रकूट के पास पहुँचे तब उन्होंने निवास स्थान पूछने के लिए वाल्मीकि से भेंट की। वाल्मीकि ने राम की स्तुति करने के पश्चात् राम-नाम-महात्म्य दिखलाने के उद्देश्य से अपनी कथा सुनाई ।

अहं पुरा किरातेषु विरातैः सह वर्धितः ।
जन्ममात्रद्विजत्वं मे शूद्राचाररतः सदा ॥ ६५ ॥

'मैं पहले किरातों के साथ रहता था और निरन्तर शूद्राचार के आचरण में रत होने के कारण मेरी द्विजातीयता जन्ममात्र की थी। मेरे शूद्रा के गर्भ से बहुत से पुत्र उत्पन्न हुए । उस समय चोरों के कुसंग में मैं भी चोर हो गया था और सदा धनुष-बाण धारण किए रहता था। एक दिन मैंने सात मुनियों को जाते देखा और उनके वस्त्रादि छीनने की इच्छा से उन्हें घोर वन में रोक लिया । मुनियों ने कहा कि जिन कुटुम्बियों के लिये तुम प्रतिदिन पाप-संचय करते हो उनसे जा कर पूछ लो कि वे तुम्हारे अधर्म के भागी बनने के लिए तैयार हैं कि नहीं। मैंने पुत्र-स्त्री आदि से पूछा । वे मुझसे बोले—यह पाप तो तुम्हीं को लगेगा । हम केवल उससे प्राप्त हुए धन के ही भोगने वाले हैं। यह सुन कर मुझे वैराग्य हुआ और मैंने उन मुनियों की शरण ली । हे राम ! उन्होंने आपस में मिल कर परामर्श किया और आप के जामाताओं को उलटा करके मुझसे कहा—तुम इसी स्थान पर रह कर एकाग्रचित्तसे सदा मरा, मरा का जप करो—'

एकाग्रमनसात्रैव मरेति जप सर्वदा ॥२०॥

मैंने ऐसा ही किया। इसी तरह निश्चलतापूर्वक रहने से मेरे ऊपर वल्मीक बन गया। एक हजार युग बीतने पर वे ऋषि लौटे और मुझको निकलने का आदेश देकर उन्होंने कहा—'हे मुनिवर, तुम वाल्मीकि हो। इस समय तुम वल्मीक से निकले हो, इसलिए तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ।'

३०. **अध्यात्म-रामायण** की यह कथा **आनन्द-रामायण** में भी मिलती है।[1] **कृत्तिवास-कृत रामायण** में इसका किंचित् परिवर्त्तित रूप पाया जाता है। वाल्मीकि का नाम रत्नाकर था और वह च्यवन का पुत्र था—

च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर।

(कृत्तिवासी रामायण पृ० २)

सात मुनियों के स्थान पर उनकी भेंट ब्रह्मा तथा नारद से होती है। वैराग्य उत्पन्न होने के बाद रत्नाकर राम नाम का जप करने में असमर्थ हैं। इस पर नारद 'मरा, मरा' जपने का आदेश देते हैं। शेष कथा **अध्यात्म-रामायण** की कथा से मिलती है[2]।

पंजाब में वाल्मीकि योगियों द्वारा सन्त माने जाते हैं। इसके सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है कि जब तक नागरिक भंगियों को देखने से इनकार करते थे तब तक वाल्मीकि की लाश प्रतिदिन बनारस में दिखाई पड़ती थी।[3]

—::०::—

१. दे० राज्यकाड अध्याय १४, इ० ए०: भाग २४ (१९०५) पृ० २२०; भक्तमाल ७१-७२। मद्रास कैटालाग (आर० ३८१४) में जैमिनी रामायण का पुष्पिका—इति जैमिनीरामायणे रामनाममाहात्म्ये व्याधस्य सम्पदिदर्शनम्।

२. अन्यत्र वाल्मीकि का शिव तथा नारद से भेंट होना है: दे० इ० ए०: भाग ३ पृ० ३५; डे पोलियें (मियालाजी डेस इंड्) के अनुसार वाल्मीकि दो ऋषियों के कहने पर १२ वर्ष तक तपस्या करके भावी रामायण लिखने में समर्थ हुए। दे० डब्लू कुक: ट्राइब्स एंड कास्ट्स, भाग १, २६२-३।

३. आर० सी टेम्पल: लेजन्ड्स आव दि पंजाब, भाग १ (१८८४) पृ० ५२९ आदि; इ० ए०: भाग २७, पृ० ११२।

तीसरा अध्याय

महाभारत की राम-कथा

क—महाभारत और रामायण

३१. **रामायण** में **महाभारत** के वर्णों का निर्देश भी नहीं मिलता है। दूसरी ओर **महाभारत** में न केवल राम-कथा का वरन् वाल्मीकिकृत **रामायण** का भी उल्लेख पाया जाता है। इससे स्पष्ट है कि **रामायण** के बाद **महाभारत** को अपना प्रचलित रूप मिला है। फिर भी बहुत सम्भव है कि **भारत** अर्थात् **महाभारत** का प्राचीनतम रूप **रामायण** के पूर्व उत्पन्न हुआ था। **भारत** (चतुर्विंशतिसहस्री) तथा **महाभारत** (शतसहस्री) इन दो सोपानों का उल्लेख **महाभारत** में मिलता है (दे० १. १. ६१ पूना संस्करण) प्रायः समस्त विद्वानों की सम्मति से **रामायण** का रचना काल **भारत** तथा **महाभारत** के बीच में माना जाता है। **शांखायन** आदि सूत्र तथा **पाणिनि** में भारत के विषय में निर्देश मिलते हैं, **रामायण**-संबंधी नहीं अतः ऐसा प्रतीत होता है कि **भारत** की रचना **रामायण** के पूर्व हो चुकी थी। इतना असंदिग्ध है कि **भारत** तथा **रामायण** स्वतंत्र रूप से उत्पन्न हुए **भारत** पश्चिम में तथा **रामायण** पूर्व में। दोनों के सम्पर्क के पश्चात् **भारत** ने **महाभारत** का रूप धारण कर लिया है[1]।

महाभारत में रामकथा के जो रूप मिलते हैं उनका निरूपण अगले परिच्छेद में किया जाएगा। यहाँ पर **महाभारत** में **रामायण** तथा वाल्मीकि संबंधी उल्लेख दिए जाते हैं।

अरण्यपर्व में भीम हनुमान के विषय में कहता है कि वह **रामायण** में प्रसिद्ध है—

> **भ्राता मम गुणश्लाघ्यो बुद्धिसत्वबलान्वितः।**
> **रामायणे ऽतिविख्यातः शूरो वानरपुंगवः ॥११॥**
>
> (अध्याय १४७ ; पूना संस्करण)

---

१. देखो ई० डब्लू हाप्किंस : दि ग्रेट एपिक, पृष्ठ ५८ आदि ;
वी० एस० सुक्थाकर : एनल्स भंडारकार इन्स्टीटयूट, भाग १२. १. ७६;
एम् विंटरनित्स : हिस्ट्री इंडियन लिटरेचर भाग १, पृ० ५०० आदि।

स्वर्गारोहणपर्व में भी **रामायण** का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यह श्लोक **हरिवंश** (३. १३२. ६५) में भी दुहराया जाता है।

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरि सर्वत्र गीयते ॥ ६३ ॥

(महाभारत, १७ अध्याय ६)

वाल्मीकि का अनेक स्थलो पर तपस्वी तथा ऋषि के रूप में उल्लेख मिलता है[1]। लेकिन अन्यत्र वह कवि भी माने जाते हैं—

अपि चार्य पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि।
न हन्तव्याः स्त्रिय इति यद् ब्रवीषि प्लवंगम ॥

(द्रोणपर्व, १४३. ८५)

इस श्लोक का उत्तरार्द्ध **वाल्मीकि रामायण** से उद्धृत है (युद्धकांड ८१.२८)

शांतिपर्व में भार्गव नामक कवि का एक श्लोक और उद्धृत है जो **रामायण** के एक श्लोक से मिलता जुलता है—

श्लोकश्चायं पुरा गीतो भार्गवे महात्मना।
आख्याते रामचरिते नृपतिं प्रति भारत ॥ ४० ॥
राजानं प्रमदं विदेत् ततो भार्या ततोधनम्।
राजन्यसति लोकेऽस्मिन् कुतो भार्या कुतो धनम् ॥४१ ॥

(शांतिपर्व, ५६)

अराजके धनं नास्ति नास्ति भार्यप्यराजके।
इदमत्याहितं चान्यतः सत्यमराजके ॥ ११ ॥

(अयोध्याकाड ६७)

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि **महाभारत** के रचयिता वाल्मीकिकृत **रामायण** से अभिज्ञ थे। इसके अतिरिक्त रामोपाख्यान **वाल्मीकि रामायण** पर निर्भर है। (दे० नीचे अनु० ३२) तथा नलोपाख्यान के अन्तर्गत भी सुदेष्ण का स्वगत भाषण **रामायण** से उद्धृत किया गया है।[2] फिर भी **महाभारत**

---

१. दे० १. ५५. १४; २. ७. ७६; ३. ८५. ११२; ५. १०१. ११ तथा १२. २०७. ४। दे० एम् सोरेन्सेन : इडैक्स टू दि नेम्स आव दि महाभारत।

२. दे० वी० एम् कृष्णामाचर : दि नल एपिसोड एड दि रामायण ; ए वाल्यूम आव ईस्टर्न एड इंडियन स्टडीज, पृष्ठ २९८-३०३।

के प्राचीनतम पर्व न तो **रामायण** और न कवि वाल्मीकि का उल्लेख करते हैं। इन पर्वों में केवल रामकथा के पात्रों की ओर निर्देश किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि **भारत** के कवि राम-कथा और उसके प्रधान पात्रों से परिचित थे। बाद में **महाभारत** के रचयिताओं ने वाल्मीकि की रचना से परिचय प्राप्त किया था।

ख—महाभारत में राम-कथा

३२. **महाभारत** में रामकथा का चार स्थलों पर वर्णन किया जाता है। रामोपाख्यान इनमें सब से विस्तृत और महत्त्वपूर्ण होने के कारण इसका तृतीय परिच्छेद में अलग विश्लेषण किया जाएगा।

इन चार रामकथाओं के अतिरिक्त रामकथा तथा राम-कथा के पात्रों का उपमाओं आदि के लिए लगभग पचास स्थलों पर उल्लेख हुआ है[1]। युद्ध-संबंधी पर्वों में द्रोणपर्व सब से अर्वाचीन है। इसमें रामकथा के १४ उल्लेख मिलते हैं लेकिन अन्य युद्ध-संबंधी पर्वों में, भीष्म, कर्ण तथा शल्यपर्व में कुल मिलाकर केवल पाँच उल्लेख दिए गए हैं। आरण्यपर्व में रामकथा का दो बार वर्णन हुआ है और इसके अतिरिक्त रामकथा की ओर पद्रह संकेत मिलते हैं। यह पर्व अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और कथाओं तथा उपाख्यानों का भंडार है। नलोपाख्यान, रामोपाख्यान, सावित्री की कथा आदि ये सब आरण्यपर्व में सम्मिलित किए गए हैं। इस पर्व में राम के अवतार होने का भी उल्लेख मिलता है।

(१) **आरण्य पर्व की राम-कथा** (३. १४७. २८-३८ पूना संस्करण)

३३. रामोपाख्यान के अतिरिक्त आरण्यपर्व में एक रामकथा और उद्धृत है। भीम हनुमान के संवाद के अंतर्गत हनुमान् ग्यारह श्लोकों में वनवास और सीताहरण से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक, सारी रामकथा संक्षेप में कहते हैं। इसमें रामावतार, तथा राम का ११००० वर्ष तक राज्य करने का उल्लेख है। बालकांड और उत्तरकांड की सामग्री का तथा सीता की अग्निपरीक्षा का कोई उल्लेख नहीं होता।

(२) **द्रोण पर्व की राम-कथा** (७. ५९. १-३१)

३४. द्रोणपर्व तथा शांतिपर्व की रामकथा षोडशराजोपाख्यान के अंतर्गत

---

१. डब्लू. हॉपकिन्स जर्नल अमेरिकन ओरियेंटल सोसाइटी, भाग ५०, (१९३०) पृ. १०३।

मिलती है। पुत्र के मरण के कारण शोकातुर सृञ्जय को सान्त्वना देने के उद्देश्य से नारद ने उनको सोलह राजाओं की कथा सुनाई थी। ये राजा महान् होते हुए भी अपने अपने समय पर सब के सब मर गए थे (**स चेन्ममार सृंजय**)। द्रोणपर्व में अभिमन्युवध के कारण शोकसंतप्त युधिष्ठिर को धैर्य देने के लिए व्यास उनको षोडशराजोपाख्यान सुनाते हैं।

इन सोलह राजाओं में से एक राम भी थे। नारद राम की महिमा का वर्णन करते हुए अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड के अन्त तक रामकथा की रूपरेखा खींचते हैं। प्रसंग के अनुसार रामकथा की अपेक्षा रामराज्य की समृद्धि तथा राम की महिमा को अधिक महत्त्व दिया गया है। वनवास से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक सारी कथा का वर्णन १० श्लोकों में समाप्त किया जाता है (१. १०)। इसके अनन्तर राम का अभिषेक, राम के गुणों की उत्कृष्टता, रामराज्य में दुष्टों का अभाव, राम का ११००० वर्ष का शासनकाल तथा उनकी मृत्यु (**स चेन्ममार सृंजय**)—इन सब का वर्णन २१ श्लोकों में दिया जाता है। इस रामकथा में भी न तो बालकांड तथा उत्तरकांड की सामग्री सम्मिलित है और न सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख किया गया है। राम सब प्राणियों, ऋषियों, देवताओं तथा मनुष्यों से महान कहे जाते हैं, फिर भी रामावतार का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता।

(३) शांति पर्व की राम-कथा (१२. २२. ५१-६२)

३५. प्रसंग द्रोणपर्व के समान है लेकिन यहां पर कृष्ण युधिष्ठिर को षोडशराजोपाख्यान सुनाते हैं। द्रोणपर्व तथा शांतिपर्व की रामकथाओं का अन्तर यह है कि शांतिपर्व में रामकथा की सामग्री नहीं के बराबर है। और केवल रामराज्य तथा राम की महिमा का वर्णन किया गया है। फिर भी चौदह वर्ष के वनवास का उल्लेख होता है जिससे स्पष्ट है कि लेखक राम-कथा से अनभिज्ञ नहीं था। उसने प्रसंग के अनुसार (महान होते हुए भी मर जाना-**स चेन्ममार सृञ्जय,** दे० श्लोक ६१) केवल राम तथा उनके राज्य की महिमा पर ध्यान दिया है। यहाँ पर भी रामावतार का उल्लेख नहीं मिलता।

महाभारत में रामावतार

३६. आरण्यपर्व में तीन स्थलों पर रामावतार का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। भीम-हनुमान-संवाद में हनुमान यों कहते हैं:

अथ दाशरथिर्वीरो रामो महाबलः ।
विष्णुर्मानुष्यरूपेण चचार बसुधामिमाम् ॥
(३. १४७. २२ पूना संस्करण) ।

रामोपाख्यान में ब्रह्मा देवताओं से कहते हैं कि 'विष्णु मेरे आदेश के अनुसार अवतार लेकर रावण की हत्या करेंगे' ।

तदर्थमवतीर्णोऽसौ मन्नियोगाच्चतुर्भुजः ।
विष्णुः प्रहरतां श्रेष्ठः स कर्मैतत्करिष्यति ॥५॥
(३. २६०)

आरण्यपर्व के अन्तिम अध्याय में कहा गया है कि विष्णु ने दशरथ के गृह में रह कर रावण का वध किया है।

विष्णुना वसता चापि गृहे दशरथस्य वै ।
दशग्रीवो हतश्छन्नं संयुगे भीमकर्मणा ॥१८॥
(३. २९९)

इसके अतिरिक्त दाशरथि के विषय मे कहा जाता है कि वह **मयस्य जेता नमुचेश्च हन्ता** (३. २६. ९) है । इससे भी राम के अवतार होने का पता चलता है ।

उपयुक्त उद्धरण **महाभारत** के पूना सस्करण मे मिलते हैं । बम्बई के निर्णय सागर प्रेस से प्रकाशित **महाभारत** मे इसी आरण्यपर्व के अतर्गत रामावतार के दो और उल्लेख किए गए हैं । (दे० ३. ९९. ३४ और ३. १५१. ७)

आरण्यपर्व को छोड़कर रामावतार का उल्लेख शांतिपर्व तथा स्वर्गारोहणपर्व में भी मिलता है ।

शांतिपर्व में हरि अपने दस अवतारों का वर्णन करते हुए कहते हैं:—

सांधौ तु समनुप्राप्ते त्रेतायां द्वापरस्य च ।
रामो दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पतिः ॥१६॥
(१२. ३४८)

स्वर्गारोहणपर्व में:—

वैदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते ॥९३॥
(१८. ६)

संभव है दोनों अन्तिम उद्धरण पूना के प्रामाणिक संस्करण में प्रक्षेप माने जाएगे। फिर भी **महाभारत** के रचयिता रामावतार से परिचित थे, यह आरण्यपर्व के प्रामाणिक उद्धरणों से असंदिग्ध है। साथ साथ उत्तरकाड का किंचित् परिचय भी मिला होगा क्योंकि रामोपाख्यान में रावण की कथा का कुछ वर्णन मिलता है तथा शांतिपर्व मे शम्बूकवध का उल्लेख हुआ है—

श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदारकः।
जीवितो धर्ममासद्य रामान्सत्यपराक्रमात्॥६७॥
(१२. १५२)

ग—रामोपाख्यान

३७. रामोपाख्यान का प्रसग इस प्रकार है। द्रौपदी के हरण तथा उसको पुनः प्राप्त करने के पश्चात युधिष्ठिर अपने दुर्भाग्य पर शोक प्रकट करके इस प्रकार कहते हैं— **अस्ति नूनं मया कश्चिदल्पभाग्यतरो नरः** क्या मुझसे कोई भी अधिक अभागा है? (३.२५७) इस पर मार्कण्डेय राम का उदाहरण देकर युधिष्ठिर का धैर्य बधाने का प्रयत्न करते हैं। युधिष्ठिर के रामचरित सुनने की इच्छा प्रकट करने पर मार्कण्डेय रामोपाख्यान सुनाते हैं। पूना के प्रामाणिक सस्करण मे इस रामचरित का विस्तार ७०४ श्लोकों का है, जिनमे से पूरे २०० श्लोक युद्ध के वर्णन के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

(१) रामोपाख्यान का आधार

३८. इस विस्तृत रामचरित तथा वाल्मीकिकृत **रामायण** का क्या संबध है? डा० वेबर इस समस्या के संबध में किसी निर्णय तक पहुँचने मे असमर्थ हैं।[1] इनके अनुसार निम्नलिखित चार संभावनाए हैं—

१. रामोपाख्यान **रामायण** का आधार है।
२. रामोपाख्यान एक ऐसे **रामायण** पर निर्भर है जो प्रचलित **रामायण** का पूर्वरूप हो।
३. रामोपाख्यान वाल्मीकिकृत **रामायण** का स्वतत्र सक्षिप्त रूप है।

---

१. ए० वेबर : आन दि रामायण, पृष्ठ ६५।

४. रामोपाख्यान तथा **रामायण** दोनों किसी एक सामान्य मूल-स्रोत के स्वतंत्र विकास माने जा सकते हैं।

ई० हाप्किन्स तथा ए० लूड्विग का मत है कि रामोपाख्यान रामकथा का एक स्वतंत्र रूप है, जो **रामायण** को छोड़कर किसी अन्य प्राचीन राम-चरित पर निर्भर है[1]। रामोपाख्यान तथा **रामायण** में जो अन्तर पाए जाते हैं वे यह सिद्ध करते हैं कि रामोपाख्यान **रामायण** का संक्षिप्त रूप नहीं हो सकता। यह इस मत का मुख्य तर्क है। डा० याकोबी का प्रत्युत्तर यह है कि रामोपाख्यान के रचयिता ने **रामायण** की किसी हस्तलिपि का सहारा नहीं लिया है लेकिन अपने प्रदेश में प्रचलित **रामायण** उसे कंठस्थ रहा होगा। इस कथा का संक्षिप्त वर्णन करने में छोटे मोटे अंतर सहज ही आ गए होंगे। अतः डा० याकोबी का मत है कि रामोपाख्यान वाल्मीकिकृत **रामायण** के किसी प्राचीन रूप का स्वतंत्र संक्षेपमात्र प्रतीत होता है। अधिकांश विशेषज्ञ डा० याकोबी का पक्ष लेते हैं[2]। **महाभारत** के संपादक डा० सुक्थाकर ८६ स्थल उद्धृत करते हैं जिनमें रामोपाख्यान तथा **रामायण** में शाब्दिक साम्य मिलता है। दूसरी ओर रामोपाख्यान में अनेक प्रसंग (इंद्रजित् का यज्ञ, काक का वृत्तान्त आदि) **रामायण** के बिना समझ में नहीं आ सकते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि रामोपाख्यान का वृत्तान्त मौलिक नहीं है। इसके अतिरिक्त **महाभारत** में **रामायण** तथा कवि वाल्मीकि का उल्लेख हुआ है। (दे० ऊपर अनु० ३१) अतः **रामायण** को रामोपाख्यान का आधार मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

(२) रामोपाख्यान तथा रामायण की तुलना

दोनों वृत्तान्तों की तुलना सुबोधगम्य रखने के लिए वाल्मीकिकृत **रामायण** के काण्डों के अनुसार सामग्री का विभाजन किया जाता है।

---

१. ई० डब्लू हाप्किन्स : दि ग्रेट एपिक, पृष्ठ ६३ आदि।
ए० लूड्विग : यूबर डस रामायण, पृष्ठ ३० आदि।

२. एच्० याकोबी : डस रामायण, पृष्ठ ७२
एम्० विंटरनित्स : हिस्ट्री इंडियन लिटरेचर, भाग, पृष्ठ ३८४।
एच० ओल्डेनबर्ग : डस महाभारत, पृष्ठ ५४ आदि।
वी० एम्० सुक्थाकर: रामोपाख्यान एंड महाभारत, कार्ने कामेमोरेशन वाल्यूम, पृष्ठ ४७२-८८।

३९. **बाल कांड** : रामोपाख्यान में केवल निम्नलिखित प्रसंगों का उल्लेख हुआ है। (दे० अध्याय २५२,२६०,२६१)

राम तथा उनके भाइयों का जन्म (लेकिन पुत्रेष्टि यज्ञ तथा पायस का उल्लेख नहीं है)

सीता, जनक की पुत्री (कहीं भी आयोनिजा का उल्लेख नहीं है)।

ब्रह्मर्षि, देवता आदि रावण से संत्रस्त होकर ब्रह्मा की शरण लेते हैं। ब्रह्मा रामावतार का रहस्य प्रकट करते हैं। ब्रह्मा के आदेश के अनुसार देवता विष्णु की सहायता के लिए ऋक्षों तथा वानरों की स्त्रियों से पुत्र उत्पन्न करते हैं।

चारों भाइयों की शिक्षा तथा विवाह (३ श्लोक), सीता को छोड़कर अन्य पत्नियों के नाम नहीं मिलते।

४०. **अयोध्या कांड** : इस काड की सारी सामग्री ३४ श्लोकों में संक्षेप में दी गई है। (अध्याय २६१) गुह तथा अत्रि का उल्लेख नहीं होता। कैकेयी को केवल एक वर मिला था। मन्थरा के विषय में कहा जाता है कि वह एक गंधर्वी दुंदुभी का अवतार है।

४१. **अरण्य कांड** : रामोपाख्यान इस काड की सामग्री अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से देता है (दे० अध्याय २६१,२६३) इसमें कोई भी महत्त्व-पूर्ण परिवर्त्तन नहीं हुआ है।विराध, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य, अयोमुखी तथा शबरी, इनसे संबंध रखनेवाली सामग्री का अभाव है।

४२. **किष्किंधा कांड**: राम सुग्रीव की मैत्री, वालिवध तथा वानरों का प्रेषण और उनका पूर्व पश्चिम तथा उत्तर की दिशा से प्रत्यागमन—अर्थात् किष्किंधाकाड के प्रथम ४७ सर्गों की सामग्री में निम्नलिखित परिवर्त्तन मिलते हैं—

सुग्रीव के साथ सख्य करने के लिए राम के बल की परीक्षा नहीं होती।

वालि तथा सुग्रीव के केवल एक द्वन्द्वयुद्ध का उल्लेख हुआ है।

४३. **सुंदर कांड** : किष्किंधाकांड का अंतिम भाग (सर्ग,४८,६७) तथा सुन्दरकांड के प्रथम ६० सर्ग,अर्थात् हनुमान और उसके साथियों की यात्रा

का समस्त वृत्तान्त रामोपाख्यान का रचयिता स्वयं वर्णन नहीं करता। हनुमान राम के पास लौटकर उसे सुनाते हैं। रामोपाख्यान तथा **रामायण** की इस सामग्री में कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं है। रामोपाख्यान की एक विशेषता यह है कि इसमें अविंध्य को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

रामायण में सीता हनुमान से अविंध्य का उल्लेख करती है और इसके बाद अविंध्य के विषय में और कुछ नहीं कहा जाता है।

अविंध्यो नाम मेधावी विद्वान्राक्षसपुंगवः।
धृतिमाञ्छीलवान्वृद्धो रावणस्य सुसंमतः॥ ११॥
रामक्षयमनुप्राप्तं रक्षसां प्रत्यचोदयत्।
न तु तस्य स दुष्टात्मा शृणोति वचनं हितम्॥ १२॥

(सुन्दरकांड, सर्ग ३७)

रामोपाख्यान में त्रिजटा सीता को सान्त्वना देकर अविंध्य का सन्देश सुनाती है। राम सुग्रीव के साथ मैत्री करके शीघ्र आनेवाले हैं। रावण नलकूबर के शाप के कारण सीता का सतीत्व नष्ट करने में असमर्थ है।

अविंध्यो नाम मेधावी वृद्धो राक्षसपुंगवः।
सरामस्य हितान्वेषी.....॥

(अध्याय २६४. ५५ आदि)

इसके अतिरिक्त सीता हनुमान से अविंध्य के इस संदेश का उल्लेख करती है (अध्याय २६६)। इन्द्रजित् के वध के बाद अविंध्य रावण को सीता का हत्या करने से रोकता है (अध्याय २७३); **रामायण** में सुपार्श्व को यह कार्य सौंपा जाता है (युद्धकांड, सर्ग ९२)।

रावणवध के पश्चात् विभीषण तथा अविंध्य सीता को राम के पास ले जाते हैं (अध्याय २७५)।

४४. युद्धकांड : युद्धकांड की सामग्री ३२३ श्लोकों में समाप्त की गई है (अध्याय २६७-२७५)। इस सामग्री में अपेक्षाकृत अधिक परिवर्तन किए गए हैं, युद्धकांड की सामग्री की जटिलता को ध्यान में रखकर यह स्वाभाविक कहा जा सकता है। दोनों वृत्तान्तों की तुलनात्मक तालिका इस प्रकार है—

युद्धकांड सर्ग १-४० : अध्याय २६७;

रावण की सभा, राम का मायामय सिर, रावण-सुग्रीव युद्ध, इन सब का रामोपाख्यान में अभाव है। सेतुबंध के वृत्तान्त में समुद्र राम को स्वप्न में दर्शन देता है और सहायता करने की प्रतिज्ञा करता है। राम का समुद्र में बाण मारना आदि इसका रामोपाख्यान में उल्लेख नहीं हुआ है।

युद्धकांड सर्ग ४१-४३ : अध्याय २६८;

अंगद का दूतत्व, लंका का अवरोध, पहला युद्ध।

युद्धकांड सर्ग ४४-५८;

पहला शरबंध, द्वन्द्वयुद्ध। रामोपाख्यान में इस सामग्री का अभाव है।

युद्धकांड सर्ग ५९ : अध्याय २६९;

द्वन्द्वयुद्ध। राम-रावण युद्ध।

युद्धकांड सर्ग ६०-६८ : अध्याय २७०, २७१;

रामोपाख्यान के अनुसार कुम्भकर्ण का वध लक्ष्मण द्वारा किया जाता है।

युद्धकांड सर्ग ६९-७९ :

द्वन्द्व-युद्ध तथा लंकादहन। रामोपाख्यान में इस सामग्री का अभाव है।

युद्धकांड सर्ग ८०-९२ : अध्याय २७२-२७३;

रामायण में इन्द्रजित् एक मायासीता की हत्या करता है। रामोपाख्यान में इसका उल्लेख नहीं है। नागपाश का वृत्तान्त रामायण में दो बार मिलता है। रामोपाख्यान में केवल एक बार और इसमें विभीषण राम और लक्ष्मण को अंशाल्ल से स्वस्थ कर देता है तथा राम को कुबेर का भेजा हुआ जल देता है। इस जल से आंखें धोकर राम अदृश्य प्राणी देख सकते हैं (**अंतर्हितानां भूतानां दर्शनार्थम्**। २७३.१०) हनुमान का ओषधी पर्वत ले आने का रामोपाख्यान में उल्लेख नहीं होता।

युद्धकांड सर्ग ९३-९८

द्वन्द्वयुद्ध, जिसका उल्लेख रामोपाख्यान में नहीं है।

युद्धकांड सर्ग ९९-१११ : अध्याय २७४;

रामोपाख्यान में लक्ष्मण के शक्ति लगने का वृत्तान्त नहीं मिलता। इसमें रावण माया द्वारा राम और लक्ष्मण का रूप धारण किए हुए मायामय राक्षसों को उत्पन्न करता है। राम इनकी हत्या करते हैं और इसके

बाद ब्रह्मास्त्र द्वारा रावण को इसी तरह जलाते हैं कि राख भी शेष नहीं रहती (**न च भस्माप्य दृश्यत। दे० श्लोक ३१**)

युद्धकांड सर्ग ११२-१२२ : **अध्याय** २७५;

इस सामग्री में अंतर यह है कि रामोपाख्यान में सीता की कोई अग्नि-परीक्षा नहीं होती।

४५. उत्तरकांड : रामोपाख्यान राम के अयोध्या में प्रत्यागमन तथा उनके अभिषेक पर समाप्त होता है लेकिन उत्तरकांड की कुछ सामग्री रामोपाख्यान के प्रारंभ में दी गई है। रावणवंश, रावण और उसके भाइयों की तपस्या तथा वर प्राप्ति, वैश्रावण की हार, रावण का पुष्पक पर अधिकार प्राप्त करना। इनका संक्षेप में वर्णन किया गया है (अध्याय २५८-२५९)। रामोपाख्यान में विश्रवा की तीन पत्नियों का उल्लेख है—

पुष्पोत्कटा—कुंभकर्ण और रावण की माता।

मालिनी—विभीषण की माता।

राका—खर तथा सूर्पणखा की माता।

रामायण में कैकसी (सुमाली की पुत्री) रावण, कुंभकर्ण, सूर्पणखा तथा विभीषण की माता मानी जाती है।

चौथा अध्याय

बौद्ध राम-कथा

४६. प्राचीन काल से बौद्धों ने राम-कथा अपनाई है और उसे जातक-साहित्य में स्थान दिया है। जातक एक ऐसी कथा है जिसमें महात्मा बुद्ध अपने असख्य पूर्वजन्मों में मनुष्य अथवा पशु के रूप में, भाग लेते हैं। इस उपाय के द्वारा बौद्ध धर्मोपदेशक प्रचलित कथाओं और लोकप्रिय आख्यानों को अपनाने में समर्थ हुए हैं। प्राचीन बौद्ध साहित्य में राम-कथा सम्बन्धी तीन जातक सुरक्षित हैं, जिनमें बुद्ध राम का रूप धारण करते हैं। इनमें से **दशरथ जातक** सब से अधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है, इस कारण इसका वर्णन पहले किया गया है।

द श र थ जा त क

४७. **दशरथ-जातक** को लेकर बहुत वादविवाद हुआ है क्योंकि कई विद्वानों का मत यह है कि इसमें राम-कथा का मूलरूप सुरक्षित है। निबन्ध के द्वितीय भाग में इस विवादग्रस्त विषय का पूरा विश्लेषण किया जाएगा। यहाँ पर इतना ही कहना पर्याप्त है कि यह **जातक** जिस **जातकट्ठवण्णना** में पाया जाता है वह पाँचवीं शताब्दी ई० की एक सिंहली पुस्तक का पाली अनुवाद है। इस सिंहली पुस्तक में जो कथाएँ पाई जाती हैं वे प्राचीन पाली गाथाओं के आधार पर लिखी गई हैं।

प्रत्येक जातक में पहले 'वर्त्तमान कथा' (**पच्चुप्पन्न वत्थु**) दी जाती है जिसमें यह बतलाया जाता है कि किस अवसर पर महात्मा बुद्ध ने इस जातक को कहा है।

इसके बाद 'अतीत कथा' (**अतीतवत्थु**) उद्धृत है, जो वास्तव में जातक ही माना जाना चाहिए।

अन्त में महात्मा बुद्ध 'जातक का सामंजस्य' (**समोधान**) प्रस्तुत करते हैं जिसमें वह वर्त्तमान कथा और अतीत कथा के पात्रों की अभिन्नता प्रकट करते हैं।

गाथाएं प्रायः अतीत कथा ही में मिलती हैं, लेकिन वे कभी वर्त्तमान कथा और कभी समोधान मे भी विद्यमान हैं। इनके लिए एक टीका जोड़ी गई है जिसमें गाथा के प्रत्येक शब्द का अर्थ दिया गया है।

पाली **जातकट्ठवण्णना**[1] के **दशरथ-जातक** की राम-कथा का संक्षेप इस प्रकार है :

वर्त्तमान कथा : महात्मा बुद्ध ने यह जातक जैतवन मे कहा। किसी गृहस्थ का पिता मर गया था। इस पर उसने शोक के वशीभूत होकर अपना सारा कर्त्तव्य छोड़ दिया। यह जान कर बुद्ध ने उससे कहा कि प्राचीन काल के पंडित लोग (**पोराणक पंडिता**) अपने पिता के मरण पर किंचित् भी शोक नहीं करते थे। इसके अनन्तर दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण देने के लिए महात्मा बुद्ध ने **दशरथ-जातक** सुनाया।

अतीत कथा : दशरथ महाराज बाराणसी में धर्मपूर्वक राज्य करते थे। इनकी ज्येष्ठा महिषी के तीन सतान थीं : दो पुत्र (राम-पंडित और लक्खण) और एक पुत्री (सीता देवी)। इस महिषी के मरने के पश्चात् राजा ने एक दूसरी को ज्येष्ठा महिषी के पद पर नियुक्त किया (**अग्गमहेसिट्ठाने उपेसि**) उसके भी एक पुत्र (भरतकुमार) उत्पन्न हुआ। राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया। जब भरत की अवस्था सात वर्ष की थी, रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य माँगा। राजा ने स्पष्ट इनकार कर दिया। लेकिन जब रानी अन्य दिनों भी पुनः पुनः इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके षड्यन्त्रों के भय से अपने दोनो पुत्रों को बुलाकर कहा—'यहाँ रहने से तुम्हारे अनर्थ होने की संभावना है। किसी अन्य राज्य या वन में जाकर रहो और मेरे मरने के बाद लौटकर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो'। तब राजा ने ज्योतिषियों को बुला कर उनसे अपनी मृत्यु की अवधि पूछी। बारह वर्ष का उत्तर पाकर उन्होंने कहा—'हे पुत्रो, बारह वर्ष के [illegible] आकर (राज) छत्र को उठाना'। पिता की वंदना करके दोनों भाई चलने वाले थे कि सीता देवी भी पिता से विदा लेकर उनके साथ हो लीं। तीनों के साथ साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिए। उनको लौटाकर तीनों हिमालय पहुँच गए और वहां आश्रम बनाकर रहने लगे।

---

१. दे० फाउसबाल : दि जातक, भाग ४, १२३ नं० ४६१।

नौ वर्ष के बाद दशरथ पुत्रशोक के कारण मर जाते हैं। रानी भरत को राजा बनाने में असफल होती है क्योंकि अमात्य और भरत भी इसका विरोध करते हैं। तब भरत चतुरंगिणी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन को चले जाते हैं। आश्रम के पड़ोस में सेना छोड़ कर भरत थोड़े अमात्यों के साथ राम के पास जाते हैं। उस समय राम अकेले ही हैं। भरत उनसे पिता के देहान्त का सारा वृत्तान्त कह कर रोने लगते हैं। राम पंडित न तो शोक करते और न रोते हैं (**रामपंडितो नेव सोचि न रोदि**)।

मध्या समथ लक्खण और सीता लौटते हैं। पिता का देहान्त सुन कर दोनों अत्यन्त शोक करते हैं। इस पर रामपंडित उनको धैर्य देने के लिए अनित्यता का धर्मोपदेश सुनाते हैं[1]। उसे सुनकर सबों का शोक मिट जाता है (**निस्सोका अहोसि**)।

बाद में भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी रामपंडित यह कह कर वन में रहने का निश्चय प्रकट करते हैं—'मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त में राज्य करने का आदेश दिया है। अब लौटकर मैं उनकी आज्ञा का पालन न कर सकूंगा। मैं तीन वर्ष के बाद लौट आऊँगा'।

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते हैं तब रामपंडित अपनी तृण की पादुकाएं (**तिणपादुका**) देकर कहते हैं 'मेरे आने तक ये शासन करेंगी'।

खड़ाउओं को लेकर भरत, लक्ष्मण और सीता अन्य लोगों के साथ वाराणसी लौटते हैं। अमात्य इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते हैं। अन्याय होते ही पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती हैं (**परिहनन्ति**) और ठीक निर्णय होने पर वे शांत रहती हैं।

तीन वर्ष व्यतीत होने पर रामपंडित लौट कर अपनी बहन सीता से विवाह करते हैं। सोलह सहस्र वर्ष तक धर्मपूर्वक राज्य करने के बाद वे स्वर्ग चले जाते हैं।

समाधान : इसमें पहले राम के १६००० वर्ष तक शासन करने के विषय

---

१. रामपंडित का सारा उपदेश गाथाओं में है। इसका विश्लेषण निबन्ध के तृतीय भाग में किया जायगा (दि० अन० ६८ आदि)।

में एक गाथा उद्धृत है और इसके बाद महात्मा बुद्ध **जातक** का सामंजस्य यों बैठाते हैं—उस समय महाराज सुद्धोदन महाराज दशरथ थे। महामया (बुद्ध की माता) राम की माता यशोधरा (राहुल की माता) सीता, आनन्द भरत थे और मैं रामपंडित था।

अनामकं जातकम्

४८. तीसरी शताब्दी ई० मे **अनामकं जातकम्** का कांग-सेंग-हुई द्वारा चीनी भाषा मे अनुवाद हुआ था। मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। चीनी अनुवाद **लियेऊत्त्सी किंग** नामक पुस्तक में सुरक्षित है (दे० चीनी तिपिटक का तैशो संस्करण न० १५२)। इस **जातक** में किसी भी पात्र के नाम का उल्लेख नहीं हुआ है, लेकिन राम और सीता का वनवास, सीता-हरण, जटायु का वृत्तान्त, बालि और सुग्रीव का युद्ध, सेतुबंध, सीता की अग्निपरीक्षा इन सबों के संकेत मिलते हैं। इसमें एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि राम को विमाता के कारण पिता द्वारा वनवास नहीं दिया जाता। वे अपने मामा के आक्रमण की तैयारियाँ सुन कर अपने आपसे अपना राज्य छोड़ देते हैं। बालिवध का वृत्तान्त भी बदल गया है; राम के धनुषसंधान को देखते ही बालि भयभीत होकर भागता है और उसका आगे चल कर कोई उल्लेख नहीं है। यह परिवर्तन स्वाभाविक है। राम ने अर्थात् बोधिसत्व ने बालि का वध किया है, इसकी कल्पना बौद्धों के लिए असह्य हुई होगी। **अनामकं जातकम्** का वृत्तान्त इस प्रकार है[1]:

एक समय बोधिसत्व एक महान् राजा था। वह सदैव चार गुणों से (दान, प्रियवचन, न्याय, समदर्शिता) समस्त जीवों की रक्षा करता था। उसका मामा भी राजा हो गया था। वह निर्लज्ज, लोभी, निर्दयी तथा दुष्ट था। बोधिसत्व का राज्य छीनने के लिए उसने एक सेना तैयार की।

बोधिसत्व के राज्य-संचालकों ने भी सेना एकत्र की। बोधिसत्व ने सेना निरीक्षण करके कहा—'केवल अपने स्वार्थ के लिए मैं असख्य मनुष्यों का जीवन नष्ट करूँगा। यदि मैं बाहर चला जाऊँ तो समस्त देश की रक्षा हो जायगी'।

---

१. अंग्रेजी अनुवाद, दे० चीन रामायण : सरस्वती विहार [illegible] ८ (१९३८ ई०)। फ्रेंच अनुवाद : दे० बुलेटिन एकाल फ्रां[illegible] (१९०४) पृ० ६९८।

मंत्रियों को राज्यभार सौंपकर वह अपनी रानी के साथ वन चला गया। उसके मामा ने राज्य में प्रवेश कर देश पर अधिकार कर लिया। जनता को इससे बहुत कष्ट हुआ।

बोधिसत्व पहाड़ी वन में निवास करता था। समुद्र में दुष्ट नाग रहता था। उसने ऋषि का छद्म-वेष धारण कर लिया। जिस समय राजा फल लेने गया था, नाग रानी का अपहरण कर भाग निकला। समुद्र की ओर उसका पथ दो घाटियों के तंग रास्ते से था। पहाड़ी पर एक विशाल पक्षी रहता था। उसने अपने पंख फैला कर रास्ता रोक लिया। नाग ने पक्षी को मारा और उसका दाहिना पंख तोड़ डाला। अन्त में वह समुद्र में अपने द्वीप को लौट गया।

फल तोड़कर राजा लौटा। अपनी रानी को न पाकर वह बहुत दुखी हुआ और धनुष-बाण लेकर रानी की खोज में पर्वतों मे इधर उधर घूमने लगा। एक नदी के श्रोत पर पहुँच कर राजा ने एक बड़े बन्दर को देखा जो उदास और खिन्न था। पूछने पर बन्दर ने कहा 'मैं एक राजा था। मेरे चाचा ने मेरा राज्य छीन लिया है। अब मेरा कोई साथी नहीं रहा।' राजा ने भी अपना सब वृत्तान्त कहा। पारस्परिक सहायता के लिये वचनबद्ध हो कर दोनों ने मैत्री कर ली। दूसरे दिन बन्दर ने अपने चाचा से युद्ध किया। राजा (बोधिसत्व) ने धनुष में बाण सधाना, जिसे देखते ही बन्दर का चाचा मारे डर के भाग निकला।

बन्दर ने अपने साथियों को बोधिसत्व की रानी की खोज लगाने की आज्ञा दी। एक एक कर सभी चल पड़े। बन्दरों ने एक आहत पक्षी देखा। पक्षी ने बताया कि एक नाग ने रानी को चुराया है।

कपिराज ने अपनी सेना को समुद्र पार करने में असमर्थ पाया। इन्द्र ने छोटे बन्दर का रूप धारण कर कहा—'प्रत्येक बन्दर को पर्वत का एक एक टुकड़ा लाने की आज्ञा दो। समुद्र में इस प्रकार एक मार्ग बन जाएगा और आप द्वीप में पहुँच जाएगें।'

बन्दरों ने ऐसा ही करके समुद्र पार किया। सब बन्दरों ने नाग-द्वीप को घेर लिया। नाग ने एक विषैला घना कुहरा उत्पन्न किया जिससे सभी पृथ्वी पर गिर पड़े। छोटे बन्दर (इन्द्र) ने एक देवी औषधि सबकी नाकों में लगाई और सब स्वस्थ हो कर जाग पड़े।

अब नाग ने आधी और बादल से सूर्य छिपा लिया। बिजली चमकने लगी। छोटे बन्दर (इन्द्र) ने बतलाया कि बिजली ही नाग है। इस पर राजा ने एक बाण से नाग को मार गिराया।

रानी को छोटे बन्दर ने मुक्त किया। राजा अपने मामा का देहान्त सुनकर अपने देश चला गया। राजा ने रानी से कहा—'पति से अलग दूसरे के घर निवास करने पर लोग स्त्री के आचरण पर सन्देह करते हैं। तुम्हें स्वीकार करने में परम्परा के अनुसार कहां तक औचित्य है?' रानी ने उत्तर दिया— 'मैं एक नीच की गुफा में रही थी, किन्तु फिर भी मैं इसमें पंकज की तरह रही हूँ। यदि मुझमें सतीत्व है तो पृथ्वी फट जाय'। पृथ्वी फटी और रानी ने कहा 'मेरा सतीत्व प्रमाणित हुआ।' राजा और रानी के प्रभाव के कारण सब वर्ग अपने अपने धर्म का पालन करने लगे। बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा, 'तब मैं राजा था, गोपा रानी थी, देवदत्त मामा था और मैत्रेय इन्द्र (छोटा बन्दर) था'। बोधिसत्व के आचरण में शांति की पारमिता असीम है।

दशरथ कथानम्

४६. चीनी तिपिटक के अन्तर्गत **त्सा पौ त्सं किंग** नामक १२१ अवदानों का एक संग्रह है[1]। यह संग्रह ४७२ ई० में चीनी भाषा में अनूदित हुआ था। अप्राप्य मूल भारतीय ग्रंथ की रचना दूसरी शताब्दी ई० के बाद हुई थी, क्योंकि इसमें राजा कनिष्क अनेक कथाओं के प्रधान पात्र माने गए हैं। इसमें एक **दशरथ-कथानम्** भी मिलता है जिसकी विशेषता यह है कि इसमें सीता का या किसी भी राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नहीं हुआ है। कथा वस्तु यों है—

प्राचीन काल में जब कि मनुष्य की आयु दस सहस्र वर्ष होती थी जम्बू द्वीप में दशरथ नाम का एक राजा राज्य करता था। उसकी प्रधान महिषी के राम नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। दूसरी रानी के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम रामण (लोमन-लक्ष्मण) था। राम में नारायणीय शक्ति थी। तीसरी रानी से भरत और चौथी से शत्रुघ्न उत्पन्न हुए।

---

१. दे० चीनी तिपिटक : तैशो संस्करण, नं० २०३।
फ्रेंच अनुवाद : दे० सिल्वान लेवी, एल्बम केर्न, पृ० २७९ आदि।
अँग्रेजी अनुवाद : दे० चीन रामायण, सरस्वती विहार ग्रन्थमाला ८।

तीसरी रानी पर राजा का अत्यधिक प्रेम था। एक दिन राजा ने कहा—'तुम्हारी किसी भी इच्छा की पूर्ति के लिए मैं अपना संपूर्ण धन और कोष देने में संकोच नहीं करूँगा'। रानी ने उत्तर दिया—'मुझे इस समय कोई आवश्यकता नहीं है।' राजा बीमार पड़े। उन्होंने राम का राज्याभिषेक किया। राम को राजपद पर आसीन होते देखकर छोटी रानी ने ईर्ष्यावश राजा से कहा' मैं अब आपके दिए हुए वर की पूर्ति चाहती हूं। राम गद्दी से उतार दिए जाएं और मेरे पुत्र का राज्याभिषेक हो। यही मेरी इच्छा है।' यह सुनकर राजा दुखित हुआ। राजधर्म के अनुसार वह अपने वचन को नहीं तोड़ सकता था। इस समय रामण (लक्ष्मण) ने राम से अपनी शक्ति और साहस दिखलाने की प्रार्थना की। राम ने कहा—'अपने पिता की आज्ञा भंग कर कोई भी पुत्र पितृ भक्त नहीं कहला सकता'।

तब दशरथ ने दोनों पुत्रों को वनवास दे दिया और १२ वर्ष के बाद लौटने की आज्ञा दी। भरत उस समय दूसरे देश में थे। दशरथ की मृत्यु के पश्चात् भरत लौटे। उन्हें अपनी माता के कार्यों से घृणा हो गई। वह सेना के साथ उस पर्वत पर गए जहां राम निवास करते थे। भरत ने राम से कहा—'मैं आपसे राजधानी लौटने और शासन का भार ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूं।' राम ने कहा—'वनवास के लिए पिता की आज्ञा हो चुकी है। उसे तोड़ने पर मैं आज्ञाकारी पुत्र नहीं कहलाया जाऊँगा।'

तब भरत ने राम की चमड़े की खड़ाउएं मांगी और अयोध्या लौट गए। खड़ाउओं को राजसिंहासन पर रखकर भरत शासन की देख भाल करने लगे। प्रति दिन प्रातः और संध्या वह पादुकाओं की पूजा करते थे और उनसे आज्ञा लेते थे।

धीरे धीरे वनवास की अवधि समाप्त हुई। राम अपने देश को लौट आए। भरत ने राम से राज्यभार ग्रहण करने की प्रार्थना की। पहले राम ने अस्वीकार किया परंतु भरत के बहुत आग्रह करने पर राम ने राज्यभार स्वीकार किया। सब लोग अपने अपने धर्माचरण का पालन करने लगे। सर्वत्र शान्ति और समृद्धि का राज्य था।

अन्य बौद्ध साहित्य

५०. ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चल कर बौद्धों में रामकथा की लोक-

प्रियता घटने लगी। **अवदान-शतक** (दूसरी श० ई०) **दिव्यावदान** (चीनी अनुवाद २६५ ई०) आर्य-शूर की **जातकमाला, कल्पद्रुम-अवदान, रत्नावदान-माला, द्वाविंशति अवदान,** इन सबो में राम कथा संबधी सामग्री नही मिलती। **लंकावतारसूत्र** के प्रथम अध्याय में लंकापति रावण और महात्मा बुद्ध का धर्म के विषय में वार्त्तालाप दिया गया है परन्तु इसमें राम-कथा का निर्देश भी नहीं पाया जाता है। **खोतानी रामायण** तथा श्याम के **राम-जातक** में बुद्ध अपने पूर्वजन्म में राम थे ऐसा कहा जाता है लेकिन वास्तव मे ये दोनों रचनाएं बौद्ध साहित्य के अंग नहीं हैं। इनका उल्लेख निबंध के तृतीय भाग मे किया जायगा।

पाँचवाँ अध्याय

जैन राम-कथा

क—जैन राम-कथा की सामान्य विशेषताएँ

५१. बौद्धों की भाँति जैनियों ने भी राम-कथा अपनाई है। अन्तर यह है कि जैन कथा-ग्रंथों में हम एक अत्यन्त विस्तृत राम-कथा साहित्य मिलता है। बौद्ध महात्मा बुद्ध को राम का पुनरवतार मानते हैं। इसी तरह जैनियों ने राम-कथा के पात्रों को अपने धर्म में एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। राम (या पद्म) लक्ष्मण और रावण न केवल जैन-धर्मावलम्बी माने जाते हैं लेकिन तीनों को जैनियों के त्रिषष्टि महापुरुषों में भी रखा गया है। इन त्रिषष्टि महापुरुषों का वर्णन इस प्रकार है : २४ तीर्थंकर (जैन धर्मोपदेशक), १२ चक्रवर्ती (भारत के ६ खंडों के सम्राट), तथा ९ बलदेव, ९ वासुदेव और ९ प्रतिवासुदेव। इनकी जीवनियाँ जैन धर्म में महाभारत, रामायण तथा पुराणों का स्थान लेती हैं।

त्रिषष्टि महापुरुषों का विस्तृत वर्णन संभवतः पहले पहल **त्रिषष्टिलक्षण-महापुराण** में मिलता है। इस रचना के दो भाग हैं, जिनसेनकृत **आदि-पुराण** (नवीं श० ई०) तथा गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (८९७ ई०)। लेकिन नवीं शताब्दी में बहुत पहले इन जीवनियों की सामग्री तैयार हो चुकी थी, विशेष करके **तिलोयपण्णत्ति** में (पाचवीं श० ई०)। **पउमचरिय** (चौथी श० ई०) में कहा गया है कि पद्मचरित अर्थात् रामचरित विमल सूरि के पूर्व 'नामावलियबद्ध' (१ ८) था। इस 'नामावलीबद्ध' शब्द में संभवतः ६३ महापुरुषों की किसी प्राचीन नामावली की ओर निर्देश है।

प्रत्येक कल्प के त्रिषष्टि महापुरुषों में से नौ बलदेव, नौ वासुदेव और नौ प्रतिवासुदेव होते हैं। ये तीनों सदैव समकालीन रहते हैं। राम, लक्ष्मण और रावण क्रमशः आठवें बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव माने जाते हैं[1]।

---

१. हे० एम्० विंटरनित्स : हि० ऑ० लि०, भाग २, पृष्ठ ४९७। एच् याकोबी : डेर जैनजमुस, बर्लिन १९२५ पृष्ठ २४८। हरिसत्य भट्टाचार्य : नारायण, प्रति. नारायण व बलभद्र, दि जैन एन्टीक्वेरी भाग ८, पृष्ठ ३६।

बलदेव (बलभद्र) और वासुदेव (नारायण) किसी राजा की भिन्न-भिन्न रानियों के पुत्र हैं। वासुदेव अपने बड़े भाई बलदेव के साथ प्रतिवासुदेव (प्रति-नारायण) से युद्ध करते हैं, और अन्त में प्रतिवासुदेव का वध करते हैं। इसके बाद वह दिग्विजय करके भारत के तीन खंडों पर अधिकार प्राप्त करते हैं और इस प्रकार अर्द्धचक्रवर्ती बन जाते हैं। मरने पर वासुदेव को प्रतिवासुदेव-वध के कारण नरक जाना पड़ता है। नौ वासुदेवों में लक्ष्मण और कृष्ण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बलदेव अपने भाई की मृत्यु के कारण शोकाकुल होकर जैन दीक्षा ले कर मोक्ष प्राप्त करते हैं (जैसे राम और बलभद्र)।

प्रतिवासुदेव सदैव वासुदेव का विरोध करते हैं तथा वासुदेव के चक्र से मारे जाते हैं (जैसे रावण और जरासंध)।

५२. जैन राम कथा का एक दूसरी विशेषता यह है कि इसमें वानर और राक्षस दोनों विद्याधर-वंश की भिन्न भिन्न शाखाएँ मानी जाती हैं[1]। प्राचीन बौद्ध गाथाओं (दे० जातक ५१०, ४३६) तथा **महाभारत** के कई स्थलों पर विद्याधर का अर्थ है : (आकाशगामी तथा कामरूपी) जादूगर। अलौकिक शक्ति से विभूषित माने जाने के कारण **कथासरित्सागर** में (अतः **बृहत्कथा** में भी), **रामायण** तथा **महाभारत** में विद्याधर देवयोनियों के अन्तर्गत रखे गए हैं। फिर भी **रामायण** तथा **महाभारत** में वे किसी भी कथा में कोई महत्त्वपूर्ण भाग नहीं लेते। **कथासरित्सागर** तथा जैन कथा-साहित्य में इनका बहुत उल्लेख होता है। विद्याधरों की उत्पत्ति जैन ग्रंथों के अनुसार इस प्रकार है—श्री ऋषभ (जैन-धर्म संस्थापक) ने तपस्या करने के उद्देश्य से अपने पुत्र भरत को अपना राज्य दे दिया था। भरत के निर्वाण में पाँच राजवंश, इक्ष्वाकु, कुरु, हरि, उग्र, नाथ,) देश का शासन करने लगे। जब इन पाँचों वंशों में राज्य का विभाजन हो चुका था तब दो राजकुमार नमि और विनमि पहुँचे। उनको विजयार्थ पर्वत (विंध्य) पर अपना राज्य स्थापित करने की आज्ञा मिली। ये दो राजकुमार विद्याधरों के पूर्वज हैं। जैनियों के अनुसार विद्याधर मनुष्य ही माने जाते हैं। उन्हें काम-

१. ब्यू लुटर्स : जर्मन ओरियेन्टल सोसाइटी जर्नल, भाग ९३, १९३९, ५४८९ आदि। एच० याकोबी : इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन एंड एथिक्स, ब्राह्मनीज्म एं० जैनिज्म : दि जैन गजेट, भाग २२, १९२६ पृष्ठ ११७।

रूपत्व, आकाशगामिनी आदि अनेक विद्याएँ सिद्ध होती हैं। इससे उनका नाम विद्याधर पड़ा। वानर-वंशी विद्याधरों की ध्वजाओं, महलों तथा छतों के शिखर पर वानरों के चिह्न विद्यमान थे, अतः वे वानर कहलाये।

५३. जैन राम-कथा की एक तीसरी विशेषता यह है कि उनमें प्रारंभ से ही उन लौकिक ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है जिसमें राम का शिकार करना, रावण आदि का मांसाहारी होना, कुम्भकर्ण की छः महीने की निद्रा, रावण का राक्षस तथा सुग्रीव के वानर होने आदि की असत्य कथाएँ पाई जाती हैं। इससे स्पष्ट है कि जैन राम-कथा **वाल्मीकि रामायण** के बाद उत्पन्न हुई है। जैन राम कथा के दो भिन्न रूप प्रचलित हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में तो केवल विमलसूरि की राम कथा का प्रचार है लेकिन दिगम्बर सम्प्रदाय में इसके दो रूप मिलते हैं, अर्थात् विमलसूरि तथा गुणभद्र दोनों की राम-कथा प्रचलित है, यद्यपि विमलसूरि की परम्परा को अधिक महत्व मिला है। इन दो रूपों का अलग अलग परिचय नीचे दिया जाता है।

ख--विमलसूरि की परम्परा

५४. विमल सूरि ने **पउमचरिय** लिखकर पहले पहल लोकप्रिय रामकथा को जैन धर्म के सांचे में ढालने का प्रयत्न किया है।[1] कवि का कहना है कि यह पद्मचरित आचार्यों की परम्परा से चला आ रहा था और नामावलीबद्ध था (१.८)। इसका अर्थ यह हो सकता है रामचरित केवल नामावली के रूप में अर्थात् उसमें कथा के प्रधान-प्रधान पात्रों, उनके माता-पिताओं, स्थानों और भवान्तरों आदि के नाम ही होंगे। वह पल्लवित कथा के रूप में न होगा और उसी की विमलसूरि ने विस्तृत चरित के रूप में रचना की होगी। (नाथूराम प्रेमी, जैन साहित्य और इतिहास पृ० २२०)।

विमलसूरि का काल असंदिग्ध नहीं है। जैन परम्परा के अनुसार (पउमचरिय ११२. १०३) **पउमचरिय** ७२ ई० की है, लेकिन भाषा के आधार पर डा० याकोबी आदि विद्वान **पउमचरिय** को तीसरी अथवा चौथी शताब्दी ई० की रचना मानते हैं।[2] यह ग्रंथ शुद्ध जैन महाराष्ट्री में लिखा

---

१. पउमचरिय, भावनगर १९१४। एच० याकोबी का संस्करण।

२. एच० याकोबी : इन० इ० ए० भाग ७ और माडर्न रिव्यू १९१४, दिसम्बर। ए० कीथ : हिस्ट्री सं० लि० पृष्ठ ३४, ए० सी० वूलनर : इन्ट्रोडक्शन टु प्राकृत।

है, इसका संस्कृत रूपान्तर रविषेणाचार्य ने ६६० ई० में किया है। यह संस्कृत अनुवाद **पद्मचरित** के नाम से प्रसिद्ध है।[1] हिंदी खड़ी बोली गद्य के इतिहास में इस **पद्मचरित** का स्थान महत्त्वपूर्ण है क्योंकि संवत् १८१८ में दौलतराम ने इसका भाषा में अनुवाद किया था। रविषेण ने मौलिकता का किंचित् भी प्रदर्शन नहीं किया है। उसकी समस्त रचना **पउमचरिय** का पल्लवित छायानुवाद मात्र प्रतीत होती है। दोनों रचनाओं का कथानक नितान्त एक है। आगे चलकर जैन कवियों ने रविषेण का अनुकरण किया है। उनकी रचनाओं में कहीं भी कथानक में परिवर्तन नहीं दिखलाई पड़ता। विमलसूरि तथा रविषेण की रामकथा परम्परा की मुख्य मुख्य रचनाएं निम्नलिखित तालिका में दी जाती हैं। इस विस्तृत साहित्य से जैनियों में रामकथा की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है।

५५. प्राकृत : विमलसूरिकृत **पउमचरिय** (तीसरी-चौथी श० ई०)

संस्कृत : १. रविषेणकृत **पद्मचरित** (६६० ई०) सबसे प्राचीन जैन संस्कृत ग्रन्थ।

२. हेमचन्द्र-कृत **जैन रामायण** (१२ वीं श० ई०) यह रामचरित **त्रिषष्टिशलाका पुरुष-चरित** में मिलता है लेकिन अलग भी छप गया है। कलकत्ता सं० १९३०।

३. जिनदास-कृत **रामपुराण**[2] (१५ वीं श० ई०)

४. पद्मदेवविजयगणि-कृत **रामचरित**[3] (१६ वीं श० ई०)

५. सोमसेन-कृत **रामचरित** (१६ वीं श० ई०) इसकी हस्तलिपि जैन सिद्धान्त भवन (आरा) में विद्यमान है।

इन रचनाओं के अतिरिक्त कथाकोषों में भी रामचरित की सामग्री मिलती है। दसवीं शताब्दी के हरिषेणकृत **कथाकोष** में **रामायण कथानकम्** (नं० ८४) तथा **सीता कथानकम्** (न० ८९) उद्धृत हैं। **सीता कथानकम्** में विमलसूरि के अनुसार सीता की अग्निपरीक्षा वर्णित है लेकिन **रामायण**

---

१. पद्मपुराण, मानिकचन्द्र जैन ग्रन्थमाला, नं० २९-३१।

२. देखो एम० विंटरनित्स : हि० इं० लि० भाग २ पृष्ठ ४९६।

३. देखो राजेन्द्र लाल मित्र : नोटिसस संस्कृत मन्युस्क्रिप्ट्स, भाग १०, पृष्ठ १३४। भंडारकार : रिपोर्ट १८८२-८३, पृष्ठ ८२।

कथानकम् (५७ श्लोक) अधिकांश में वाल्मीकि पर निर्भर है। रामचंद्र मुमुक्षुकृत **पुण्याश्रवकथाकोष** (१३३१ ई०, हिन्दी अनुवाद निर्णय सागर प्रेस, १९०७ ई०) में जो लवकुश की कथा मिलती है वह भी विमलसूरि की परम्परा पर निर्भर है। अमितगति-कृत **धर्मपरीक्षा** में **वाल्मीकि रामायण** की निन्दा की जाती है (११ वीं श० ई०)। **शत्रुंजय-माहात्म्य** के नवें सर्ग में भी राम-कथा विमलसूरि के अनुसार है (१२ वीं श० ई०)। **जिनरत्नकोष** में **पद्मपुराण, रामचरित, पुण्याश्रव, सीताचरित, रावण, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित** आदि शब्दों के अंतर्गत अन्य रामकथा संबंधी गौण रचनाओं का उल्लेख मिलता है। अधिकांश सामग्री अप्रकाशित है।

अपभ्रंश : स्वयंभूदेवकृत **पउमचरिय** (८ वीं श० ई०)

कनारी : नागचंद्र कृत **पम्पपरामायण**[1] (११ वीं श० ई०)

यह रचना कनारी भाषा के कई रामचरित-संबंधी ग्रंथों का आधार है। कुमुदेन्दुकृत **रामायण** (१३ वीं श० ई०) देवप्पकृत **रामविजय-चरित** (१६ वीं श० ई०) देवचंद्रकृत **रामकथावतार** (१२ वीं श० ई०) चंद्र-सागर वर्णी-कृत **जिन रामायण** (१६ वीं श० ई०)।[2]

विमल सूरि की रामकथा तथा **रामायण** की तुलना करने पर स्पष्ट है कि विमलसूरि ने कथानक में कोई आमूल परिवर्त्तन नहीं किया है। रामकथा के भिन्न भिन्न तत्वों में जो परिवर्तन विमलसूरि की रचना में मिलते हैं इनका विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग में किया जाएगा। यहाँ पर सारी रचना का संक्षिप्त वर्णन दिया जाता है। **पउमचरिय** छः भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(१) राक्षस तथा वानरवंश का वर्णन (पर्व १-२०)

५६. राजा सेणिय (श्रेणिक) किसी दिन गोयम (गौतम), महावीर के प्रधान शिष्य से रामकथा का यथार्थ रूप जानने की इच्छा प्रकट करता है। इस पर गोयम पउमचरिय सुनाता है। प्रारंभ में विद्याधर लोक, राक्षस वंश, वानरवंश और रावण का वंशावली का वर्णन दिया गया है।

राक्षस राजा रत्नश्रवा तथा केकसी के चार सन्तान हैं। रावण, कुम्भकर्ण

---

१. बी० एम्० श्रीकांठिया : ट्रैजिक रामायण, मैसूर युनिवर्सिटी मैगज़ीन भाग ७।

२. इंडियन हिस्ट्री क्वार्टरली, भाग १५, पृष्ठ ५७४-९४।

चन्द्रनखा और विभीषण। जब रत्नश्रवा ने पहले पहल अपने पुत्र रावण को देखा था तब शिशु माला पहने हुए था। इस माला में पिता को रावण के दस सिर दिखाई पड़े और इसीलिये शिशु का नाम दशानन या दसग्रीव रखा गया था। अपने मौसेरे भाई का विभव देखकर रावण आदि भाई तप करने जाते हैं और विद्याएँ प्राप्त करते हैं। इसके बाद रावण मंदोदरी तथा ६००० अन्य कन्याओं से विवाह करता है और दिग्विजय में बहुत से राजाओं को परास्त करता है। इस वर्णन में इन्द्र, यम, वरुण आदि देवता न होकर साधारण राजा हैं। इस विजययात्रा में रावण नलकूवर की पत्नी का प्रेमप्रस्ताव अस्वीकार करता है और किसी केवली का उपदेश सुनकर धर्मप्रतिज्ञा करता है 'मैं विरक्त परनारी का भोग नहीं करूँगा' (१४. १५३)।

वालि वैरागी बन कर सुग्रीव को अपना राज्य देता है और जैन दीक्षा लेता है। हनुमान रावण की ओर से वरुण के विरुद्ध युद्ध करके अनंगकुसुमा (चद्रनखा की पुत्री) से विवाह करता है।

खरदूषण, रावण का भाई न होकर, किसी अन्य विद्याधरवंश का राजकुमार है, और चन्द्रनखा से विवाह करता है। आगे चल कर दोनों के पुत्र शम्बूक का उल्लेख किया जाएगा।

(२) राम और सीता का जन्म और विवाह (पर्व २१-३२)

५७. यहाँ से लेकर रामायण की प्रधान कथा-वस्तु का वर्णन मिलता है। जनक तथा दशरथ की वशावली के बाद दशरथ की तीन पत्नियों का उल्लेख है। कौशल्या, सुमित्रा और सुप्रभा। एक दिन नारद ने रावण से कहा था कि आपकी मृत्यु जनक की पुत्री के कारण दशरथ के पुत्र के द्वारा होगी। अतः रावण ने अपने भाई विभीषण को इन दोनों की हत्या करने के लिये भेजा। यह जान कर नारद ने दोनों राजाओं को सावधान कर दिया। वे अपने-अपने रूप का एक एक पुतला अपने-अपने महल में रख कर गुप्त रूप से परदेश चले गये। विभीषण ने इन दोनों की मूर्त्तियों का सिर काटकर समुद्र मे फेंक दिया। परदेश मे दशरथ कैकेयी के स्वयंवर में पहुँचे और कन्या ने दशरथ के गले में माला डाल दी। इस पर अन्य राजाओं से युद्ध हुआ। इस युद्ध मे कैकेया ने बड़े कौशल से दशरथ का रथ हाँका जिससे दशरथ ने प्रसन्न हो कर उसे एक वर दिया। उसके बाद दोनों राजा अपने अपने नगर में राज्य करने लगे।

राजा दशरथ की चार रानियों के चार पुत्र उत्पन्न हुए:—

राम या पद्म	(कौशल्या अथवा अपराजिता का पुत्र)
लक्ष्मण	(सुमित्रा का पुत्र)
भरत	(कैकेयी का पुत्र)
शत्रुघ्न	(सुप्रभा का पुत्र)

राजा जनक की विदेहा नामक रानी के एक पुत्री सीता तथा एक पुत्र भामंडल उत्पन्न हुआ। सीतास्वयंवर में राम ने धनुष चढ़ाया और सीता से विवाह किया। इसके बाद दशरथ को वैराग्य हुआ। उस समय कैकेयी ने अपने वर के बल पर भरत के लिये राज्य माँगा। यह सुन कर राम,लक्ष्मण और सीता दक्षिण की ओर चले जाते हैं। भरत वन में जाकर राम से राज्य करने का अनुरोध करते हैं।

(३) वनभ्रमण (पर्व ३३-४२)

५८. **पउमचरिय** का यह अश **वाल्मीकि रामायण** से नितान्त भिन्न है। इसमें राम और लक्ष्मण के अनेक युद्धों का वर्णन है। राम गन्धर्व राजा की तीन कन्याओं को पत्नीस्वरूप ग्रहण करते हैं। लक्ष्मण भी वज्रकर्ण की आठ कन्याओं से और कल्याणमाला, वनमाला तथा रतिमाला से विवाह करते हैं और उनको बाद में बुलाने की प्रतिज्ञा करते हैं। जटायु से भेंट करने के पश्चात् दण्डकवन में निवास प्रारंभ होता है।

(४) सीता हरण और खोज (पर्व ४३-५३)

५९. सीता हरण का कारण विमलसूरि के अनुसार इस प्रकार है: शम्बूक ने (चन्द्रनखा नथा खरदूषण का पुत्र) सूर्यहास खग की सिद्धि के लिए १२ वर्ष तक साधना की थी। उसकी साधना सफल हुई और खंग प्रकट हुआ। लक्ष्मण संयोग से वहाँ पहुंचते हैं। खंग को देख कर वह उसे उठाते हैं और पास के बाँस को काट कर शम्बूक का सिर भी काट लेते हैं। चन्द्रनखा अपने मृत पुत्र को देख कर विलाप करते करते वन में फिरने लगती है। राम और लक्ष्मण के पास पहुंच कर वह उनसे उनकी पत्नी बनने का प्रस्ताव करती है। असफल होकर वह पति के पास लौट कर अपने पुत्र के वध का समाचार सुनाती है। रावण को भी सूचना भेजी जाती है। इतने में खरदूषण की सेना को लक्ष्मण अकेले रोक लेते हैं। रावण पहुंच कर और सीता को देख कर उस पर आसक्त हो जाता है। वह अवलोकनी विद्या

से जानता है कि लक्ष्मण ने राम को बुलाने के लिये उन्हें सिंहनाद का संकेत बताया है। अतः वह सिंहनाद करके और राम को लक्ष्मण के पास भेजकर सीता का हरण करने में सफल होता है।

सीता हरण के बाद राम और सुग्रीव के सख्य का वर्णन किया जाता है। सुग्रीव की विपत्ति **रामायण** के वृत्तान्त से भिन्न है। साहसगति ने सुग्रीव का रूप धारण कर उसकी पत्नी और राज्य को छीन लिया था। राम साहसगति को मारते हैं और सुग्रीव को उसका राज्य लौटा कर उसकी १३ कन्याओं से विवाह करते हैं। सुग्रीव की आज्ञा से विद्याधर सीता की खोज करने जाते हैं। खोजते हुए सुग्रीव रत्नजटी से सुनता है कि रावण ने सीता का हरण किया है। यह सुन कर सब विद्याधर रावण से डर कर युद्ध करने से इनकार करते हैं। तब उनको अनन्तवीर्य का कथन स्मरण आता है, उसने रावण से कहा था कि जो कोटि-शिला उठा सकेगा उससे तेरी मृत्यु होगी। अतः विमान पर चढ़कर सब वहाँ जाते हैं और लक्ष्मण कोटि-शिला उठाते हैं। लेकिन विद्याधर अब भी रावण से डरते हैं और हनुमान को रावण के पास भेजने की सलाह देते हैं। हनुमान रावण का परम मित्र माना जाता है। उस की यात्रा का वर्णन विस्तृत है। वह वज्रमुख की कन्या (लंका सुन्दरी) से विवाह करता है और विभीषण और सीता से मिलता है। वह इन्द्रजित से बाँधा जाता है और लंका में महलों का विध्वंस कर सीता का संदेश राम के पास ले आता है।

(५) **युद्ध** (पर्व ५४-७७)

६०. इस भाग में **रामायण** के युद्धकाड की मुख्य घटनाएँ किंचित परिवर्त्तन सहित वर्णित हैं। समुद्र नाम के एक राजा ने वानरों की सेना रोक ली। उसका नल के साथ महान् युद्ध हुआ और अन्त में समुद्र की पराजय हुई। राम ने समुद्र को उसका राज्य लौटा दिया और लक्ष्मण ने उसकी कन्या के साथ विवाह किया। सुवेल नामक राजा की पराजय के बाद सेना लंका पहुँची। जब लक्ष्मण को शक्ति लगी तो द्रोणमेघ की कन्या विशल्या की चिकित्सा से वह अच्छा हुआ और उन्होंने उसके साथ विवाह कर लिया। जैन परम्परा के अनुसार लक्ष्मण (अर्थात् नारायण) ने रावण (अर्थात् प्रतिनारायण) का वध किया है।

(६) **उत्तरचरित** (पर्व ७८-११८)

६१. अयोध्या में लौट कर राम और लक्ष्मण राज्य करने लगते हैं।

राम की ८००० और लक्ष्मण की १३००० पत्नियाँ हैं। भरत की दीक्षा लेने के पश्चात् राम लोकापवाद के कारण गर्भवती सीता का निर्वासन करते हैं। बाद में सीता के पुत्र लवण और अंकुश राम और लक्ष्मण से युद्ध करते हैं। अन्त में लवण और अंकुश अपने पिता से मिलाप करते हैं। सुग्रीव, हनुमान और विभीषण के कहने पर राम सीता को बुलाते हैं। सीता अग्निपरीक्षा में सफल होकर एक आर्यिका के पास जैन दीक्षा लेती हैं और बाद में स्वर्ग जाती हैं।

किसी दिन दो स्वर्गवासी देव बलभद्र नारायण का स्नेह परखने के लिये लक्ष्मण को विश्वास दिलाते हैं कि राम का देहान्त हुआ है। इस पर लक्ष्मण शोक के कारण मर कर नरक जाते हैं। लक्ष्मण की अंत्येष्टि के पश्चात् राम विरक्त होकर दीक्षा लेते हैं और साधना करके मोक्ष पाते हैं। रावण ने विरक्त परनारी का भोग करने की प्रतिज्ञा पूरी की थी, इसके फलस्वरूप वह कई जन्म लेकर आगे चल कर अर्हन्त (अरहा दे० ११८. ७३) का पद प्राप्त करेगा।

ग—गुणभद्र की परम्परा

६२. जैन राम कथा का दूसरा रूप हमें पहले पहल गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में मिलता है। गुणभद्र जिनसेन के शिष्य तथा कर्नाटक प्रान्त के निवासी थे। इन्होंने अपने गुरु के **आदिपुराण** के अंतिम १६२० श्लोक रचकर उसे समाप्त किया और इसके बाद **उत्तरपुराण** अर्थात् **त्रिषष्टिलक्षण-महापुराण** का द्वितीय भाग भी लिखा। इस **उत्तरपुराण** के अंतर्गत आठवें बलदेव, नारायण तथा प्रतिनारायण (राम, लक्ष्मण तथा रावण) का चरित्र ६७ वें तथा ६८ वें पर्व में ११९७ श्लोकों में वर्णित है।[1] यह रामकथा विमलसूरि तथा वाल्मीकि के कथानक से बहुत भिन्न है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें सीता रावण तथा मन्दोदरी की औरस पुत्री मानी जाती है।

गुणभद्र का आधार अज्ञात है। जिनसेन अपने **आदिपुराण** में कवि परमेश्वर की गद्य-कथा का उल्लेख करते हैं और उसे अपनी रचना का आधार मानते हैं। गुणभद्र जिनसेन की रचना पूरी करते हैं अतः संभव है कि वह भी कवि परमेश्वर की कथा पर निर्भर रहे हैं। कवि परमेश्वर की

---

१. दे० स्याद्वाद ग्रन्थमाला नं० ८, इंदौर, सं० १९७५।

रचना अप्राप्य है लेकिन तिब्बती रामायण तथा अन्य ग्रंथो में भी सीता मन्दोदरी की पुत्री मानी जाती है। अतः राम-कथा का यह रूप संभवतः जनसाधारण में प्रचलित हुआ होगा और कवि परमेश्वर या गुणभद्र ने उसे जैन-धर्म के अनुरूप करके अपनी रचना मे स्थान दिया होगा। श्री नाथूराम प्रेमी[1] गुणभद्र की रामकथा के आधार के विषय में इस प्रकार लिखते हैं—'हमारा अनुमान है कि गुणभद्र से बहुत पहले विमलसूरि ही के समान किसी अन्य आचार्य ने भी जैनधर्म के अनुकूल सोपपत्तिक और विश्वसनीय स्वतन्त्र रूप मे राम-कथा लिखी होगी और वह गुणभद्राचार्य को गुरु परम्परा द्वारा मिली होगी।' गुणभद्र की गुरु-परम्परा के दो और नाम कनारी भाषा के कवि चामुण्डराय की रचना में मिलते हैं। चामुण्डराय **त्रिषष्टिलक्षणमहापुरुष** के लेखकों की निम्नलिखित सूची देते हैं—कूचि भट्टारक, नन्दिमुनीश्वर, कविपरमेश्वर, जिनसेन, गुणभद्र। गुणभद्र की राम-कथा अन्य जैन रचनाओं मे भी ज्यों की त्यों मिलती है।

६३. संस्कृत[2] :गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (नवी श० ई०)
कृष्ण कविकृत **पुण्यचंद्रोदय पुराण** (१६ वीं श० ई०)

प्राकृत :
पुष्पदन्तकृत **तिसट्ठी-महापुरिस गुणालंकार** (१० वीं श० ई०)
कनारी : चामुण्डरायकृत **त्रिषष्टिशलाका-पुरुष-पुराण** (१० वीं श० ई०)
बंधुवर्मा का **जीवनसंबोधन** (१२०० ई०)
नागराजकृत **पुण्याश्रव-कथासार** (१३३१ ई०)

पुण्यचंद्रोदय पुराण को छोड़कर उपर्युक्त रचनाओं में राम-कथा के अतिरिक्त अन्य ६३ महापुरुषों के चरित भी मिलते हैं। गुणभद्र की राम-कथा का संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है :

६४. दशरथ (वाराणसी के राजा) के चार पुत्र उत्पन्न होते हैं; राम सुबाला के गर्भ से, लक्ष्मण कैकेयी के गर्भ से और बाद में जब दशरथ अपनी राजधानी को साकेतपुर स्थापित करते हैं भरत और शत्रुघ्न, किसी

---

१. दे० नाथूराम प्रेमी : जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ २८२।

२. मल्लिषेणकृत महापुराण (११ वीं श० ई०) प्रकाशित नहीं है। १३०० ई० के आशाधरकृत 'त्रिषष्टिस्मृति शास्त्रम' (मानिकचन्द जैन ग्रन्थमाला न० ३६) मे जिनसेन तथा गुणभद्र का सार मिलता है। राम-कथा ८१ श्लोको मे समाप्त की जाती है।

अन्य रानी के गर्भ से जिनका नाम नहीं दिया जाता है। दशानन विनमि विद्याधर वंश के पुलस्त्य का पुत्र है। किसी दिन वह अमितवेग की पुत्री मणिमती को तपस्या करते देखता है और उसपर आसक्त होकर उसकी साधना में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है। मणिमती निदान करती है: 'मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूंगी।' मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मंदोदरी के गर्भ में आती है। उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते कि वह आपका नाश करेगी। अतः रावण ने भयभीत होकर मारीच को आज्ञा दी कि वह उसे कहीं छोड़ दे। कन्या को एक मंजूषा में रखकर मारीच उसे मिथिला देश में गाड़ आता है। हल की नोक से उलझ जाने के कारण वह मंजूषा दिखलाई पड़ती है और लोगों द्वारा जनक के पास ले जाई जाती है। जनक मंजूषा को खोल कर एक कन्या को देखते हैं और उसका नाम सीता रखकर उसे पुत्री की तरह पालते हैं। बहुत समय के बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाते हैं। इस यज्ञ के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है। इसके बाद राम सात अन्य कुमारियों से विवाह करते हैं और लक्ष्मण पृथ्वीदेवी आदि १६ राज-कन्याओं से। दोनों दशरथ से आज्ञा लेकर वाराणसी में रहने लगते हैं।

नारद से सीता के सौंदर्य का वर्णन सुन कर रावण उसे हर लाने का संकल्प करता है। सीता का मन जांचने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का सतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान करना असंभव है। जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट वाटिका में विहार करते हैं तब मारीच स्वर्ण मृग का रूप धारण करके राम को दूर ले जाता है। इतने में रावण राम का रूप धारण कर सीता से कहता है कि मैंने मृग को महल भेजा है और उनको पालकी पर चढ़ने की आज्ञा देता है। यह पालकी वास्तव में पुष्पक है जो सीता को लंका ले जाता है। रावण सीता का स्पर्श नहीं करता है क्योंकि पतिव्रता के स्पर्श से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जायगी।

दशरथ को एक स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया है और वह राम के पास यह समाचार भेजते हैं। इतने में सुग्रीव और हनुमान बालि के विरुद्ध सहायता मांगने के लिये पहुंचते हैं। हनुमान लंका जाते हैं और सीता को सान्त्वना दे कर लौटते हैं (लंकादहन का कोई उल्लेख नहीं मिलता)। इसके बाद लक्ष्मण द्वारा बालि का वध होता है

और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता है। अब वानरों और राम की सेना लंका की ओर प्रस्थान करती है। युद्ध के विस्तृत वर्णन के अन्त में लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काटते हैं। इसके बाद लक्ष्मण दिग्विजय कर के और अर्द्ध-चक्रवर्ती बन कर अयोध्या लौटते हैं। लक्ष्मण की १६,००० और राम की ८,००० रानियां हैं। सीता के आठ पुत्र उत्पन्न होते हैं (सीता त्याग का उल्लेख नहीं मिलता)। लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मर कर रावणवध के कारण नरक जाते है। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वीसुन्दर को राज्य पद पर और सीता के पुत्र अजितजय को युवराज पद पर अभिषिक्त करके दीक्षा लेते हैं और मुक्ति पाते हैं। सीता भी अनेक रानियों के साथ दीक्षा लेती हैं और अच्युत स्वर्ग मे पहुंचता हैं।

द्वितीय भाग

राम-कथा की उत्पत्ति

अध्याय

६. दशरथ-जातक की समस्या

७. राम-कथा का मूल-स्रोत

८. प्रचलित वाल्मीकि रामायण के मुख्य प्रक्षेप

९. राम-कथा का प्रारम्भिक विकास

छठा अध्याय

दशरथ-जातक की समस्या

६५. **दशरथ जातक** में राम-कथा का जो रूप विद्यमान है वह अनेक विद्वानों के अनुसार **रामायण** की कथा का मूलरूप माना जाना चाहिए। डा० वेबर ने पहले पहल इस मत का प्रतिपादन किया था। यद्यपि डा० याकोबी ने इसका खंडन किया था, फिर भी आधुनिकतम काल तक दिनेशचन्द्र सेन आदि डा० वेबर का मत मानते चले आ रहे हैं[1]। प्रस्तुत अध्याय में इस विवादग्रस्त विषय से संबंध रखने वाली सामग्री का पूरा विश्लेषण करना अनुचित नहीं होगा।

दशरथ-जातक पाली **जातकट्ठवण्णना** में सुरक्षित है। इस पुस्तक की प्रामाणिकता पर पहले परिच्छेद में प्रकाश डाला गया है और इसके बाद के दो परिच्छेदों में **दशरथ-जातक** की गाथाओं और गद्य का अलग अलग विश्लेषण किया गया है। अध्याय के अन्त में **रामायण** और **बौद्ध-साहित्य** के पारस्परिक प्रभाव पर विचार किया जाएगा।

---

१. दे०—ए० वेबर: आन दि रामायण
दिनेशचन्द्र सेन: दि बंगाली रामायन्स, पृ० ७ आदि
ग्रियर्सन: ज० रा० ए० सो०, १९२२, पृ० १६५ ३०।
डब्लू स्टुटरहाइम: राम लेगन्डन एंड राम-रेलिक्स इन इंडोनेजियन, पृ० १०५।
जे० चिलम्र्स. इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली, भाग १५, पृ० २८९।
डी० ए० नरसिंहाचार का मत है कि इस प्रश्न का निर्णय करना असंभव है। (वही, पृ० ५८०)।
निम्नलिखित विद्वान एच० याकोबी के अनुसार दशरथ जातक में रामकथा का विकृत रूप देखते हैं—
एम्० मोनियेर विलियम्स: इंडियन विजडम, पृ० ३१६ टि०
सी० वी० वैद्य: दि रिडिल आफ दि रामायण पृ० ७३।
एम० विंटरनित्स: हि० इ० लि० भाग १, पृ० ५०८।
सी० लैस्सन ने पहले इस मत का प्रतिपादन किया था। दे० इंडियन एन्टीक्वेरी; भाग २, पृ० १००२-३।

पाली जातक टठ्ठवणणना की प्रामाणिकता

६६. बौद्ध त्रिपिटक (बौद्ध धर्म की श्रुति तीसरी शताब्दी ई० पू०) मगध देश में पाली भाषा में लिपिबद्ध किया गया था। इसके द्वितीय पिटक **सुत्तपिटक** के पाँचवे भाग का नाम **खुद्दक निकाय** है। इसी **खुद्दक निकाय** के अन्तर्गत जातकों की गाथाएँ दी गई हैं और तीसरी शताब्दी ई० पू० से ही सुरक्षित हैं[1]। इन गाथाओं के साथ साथ प्रारंभ ही से गद्य की टीका भी प्रचलित हुई होगी क्योंकि इसके बिना बहुत गाथाएँ अपूर्ण और अबोध-गम्य हैं। वर्त्तमान पाली **जातकट्ठवण्णना** पाँचवीं शताब्दी ई० की एक सिंहली पुस्तक का अनुवाद है। मूल सिंहली पुस्तक, जिसमें केवल गाथाएँ पाली में दी गई थीं, आजकल अप्राप्य है। इसके अज्ञात लेखक का कहना है कि मैंने अनुराधपुर की परंपरा के आधार पर अपनी रचना की है[2]।

उपर्युक्त परिचय से स्पष्ट है कि गाथाओं की अपेक्षा जातकों का गद्य बहुत कम महत्वपूर्ण और प्रामाणिक है। ये कथाएँ पाचवीं शताब्दी ई० में परंपरा के आधार पर लिपिबद्ध की गई हैं। शताब्दियों तक अस्थिर रहने के कारण इनमें परिवर्तन और परिवर्द्धन की सम्भावना रही है। इस गद्य को तीसरी श० ई० पू० की अखंड परंपरा मानना और इसके आधार पर **रामायण** के मूलरूप के सम्बन्ध में किसी सिद्धांत का प्रतिपादन करना अवैज्ञानिक है। वास्तव में **जातकट्ठवण्णना** में अनेक स्थलों पर गाथाओं और गद्य में विरोध और असंगति दिखलाई पड़ती है। एक जातक (न० २५३) **विनयपिटक** और **जातकट्ठवण्णना** दोनों में मिलता है। गाथा तो एक ही है लेकिन गद्य दोनों ग्रन्थों में भिन्न है, जिससे स्पष्ट है कि जातकों के गद्य की प्रामाणिकता संदिग्ध है[3]।

---

१. दे० टी० डब्लू० रिजडेविट्: बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० ११५।
एम० विंटरनित्स: हि० इ० लि० भाग २, पृ० ११५।
फिर भी इन गाथाओं में कहीं कहीं परिवर्द्धन हुआ है। दे० इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टरली; भाग ४, पृ० ११-१२।

२ अनुराधपुर की इस परम्परा आजकल एक अप्राप्य पाली जातकट्ठ-कथा पर निर्भर है, इसका अनुवाद सिंहली में हुआ था।

३. हर्टेल: जर्मन ओरियन्टल जर्नल, भाग ६०, पृ० ३६६ आदि। शार्पेटियेः वही, भाग ६२ पृ० ७२५ आदि। विंटरनित्सः हि० इ० लि० भाग २, पृ० ११०।

द श र थ-जा त क की गा था एं

६७. **दशरथ-जातक** में जो राम-कथा मिलती है वह रामायणीय कथा का विकृत रूप माना जाना चाहिए। इसके प्रमाण तीसरे परिच्छेद में दिए जाएंगे। हमारे तर्कों का एक महत्त्वपूर्ण आधार यह है कि इस **जातक** की सारी कथा गद्य में दी गई है और पुरानी गाथाओं से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रखती। प्रस्तुत परिच्छेद में इन गाथाओं का अलग विश्लेषण किया गया है।[1]

ये गाथाएं स्वाभाविक रूप से तीन भागों में विभक्त की जा सकती हैं—

(अ) जलक्रिया (गाथा १)

६८. **एथ लक्खण सीता च उभो ओतरथोदकं।**
एवायं भरतो आह राजादशरथ मतो ॥१॥

'लक्ष्मण और सीता दोनों जल में उतरें, क्योंकि भरत कहते हैं—राजा दशरथ मर गए।'

यह पहली गाथा स्पष्टतया **रामायण** में वर्णित जलक्रिया से सम्बन्ध रखती है, **रामायण** के निम्नलिखित श्लोक प्रस्तुत गाथा से मिलते जुलते हैं। राम लक्ष्मण से कहते हैं—

भरतो दुःखमाचष्टे स्वर्गतं पृथिवीपतिम् ॥१५॥
जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मनः ॥२०॥
सीता पुरस्ताद् व्रजतु त्वमेनामभितो व्रज।
अहं पश्चाद् गमिष्यामि गतिर्ह्येषा सुदारुणा ॥२१॥
(रा० २.१०३)

पाली **जातकट्ठवण्णना** में इस गाथा का एक भिन्न अर्थ देने का प्रयत्न किया गया है। प्रसंग यों है—

---

१. एन्० बी० उत्तमकारः ज० रा० ए० सो०, सेन्टीनरी सप्लीमेंट, पृ० २०३-२१। एच० लूडर्सः जर्नल गर्टगिन लर्नेड सोसाइटी १८९७, पृ० ४०, और जर्मन ओरियेंटल जर्नल, पृ० ६८७ आदि।

इस परिच्छेद में इन दोनों विद्वानों से विशेष सहायता मिली है। पाठ के लिए, दे० फाउसबाल, दि जातक, भाग ४, न ४६१।

लक्ष्मण और सीता की अनुपस्थिति में भरत ने वनवासी राम के पास आकर उनको दशरथ के देहान्त का समाचार सुनाया है। शाम को लक्ष्मण और सीता वन से लौटते हैं। इसके बाद के वृत्तान्त का अनुवाद इस प्रकार है:—

'राम पंडित ने सोचा ये दोनों जवान हैं और मेरे समान बुद्धिमान नहीं हैं। सहसा पिता का मरण सुनने पर इस (समाचार) का शोक उनके लिए असह्य होगा और न जाने उनका हृदय विदीर्ण हो जाए। किसी उपाय से मैं दोनों को पानी में उतरने के लिए कहूँगा, और फिर समाचार सुनाऊँगा। तब सामने का जलाशय दिखलाकर राम ने कहा—तुम दोनों अधिक देर से आए हो। यह तुम्हारा दंड है, इस पानी में उतरकर वहाँ खड़े रहो। तब उन्होंने अर्दगाथा सुनाई—

'लक्ष्मण और सीता दोनों जल मे उतरें'।

राम के इसी शब्द को सुनकर दोनों पानी में उतर कर खड़े रहे। इसके अनन्तर अन्य अर्दगाथा सुनाकर राम ने उनको समाचार दिया।

'भरत कहते हैं : राजा दशरथ मर गए'।

पिता के देहान्त का समाचार सुनकर दोनों मूर्च्छित होकर गिर पड़े। राम ने उनसे फिर यही कहा और वे पुनः मूर्च्छित होकर गिर गए। जब दोनों तीसरी बार मूर्च्छित होकर गिरे तब अमात्यों ने उनको उठाकर, जल से निकाल स्थल पर बिठाया।'

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि **जातक** का प्रसंग मौलिक नहीं है। लेखक संभवतः **रामायण** मे उल्लिखित जलक्रिया से अपरिचित था और इसलिए उसने यह कष्टकल्पना की होगी।

(आ) अनित्यता का उपदेश (गाथा २-१९)

६६. केन रामप्पभावेन सोचितब्बं न सोचसि।
पितरं कालकतं सुत्वा न तं पसहते दुखं ॥२॥

'हे राम! शोक का कारण होते हुए भी आप किस धैर्य के बल पर शोक नहीं करते। पिता का देहान्त सुनने पर भी आप दुख के वशीभूत नहीं होते।'

यं न सक्का पालेतुं पोसेन लपतं बहुं।
स किस्स विञ्ञु मेधावी अत्तानं उपतापये ॥३॥

'बहुत विलाप करने पर भी जो रखा नहीं जा सकता उसके लिए बुद्धिमान् शोक नहीं करता।'

दहरा च हि वृद्धा च ये बाला ये च पंडिता।
अड्ढा चेव दलिद्दा च सब्बे मच्चुपरायना ॥४॥

'बालक और वृद्ध, मूर्ख और पंडित, धनी और दरिद्र सबों का मरण निश्चत है।'

फलानमिव पक्कानं निच्चं पपतना भयं।
एवं जातानं मच्चानं निच्चं मरणतो भयं ॥५॥

'जिस तरह से पक्के फलों के गिरने का नित्य भय होता है, इसी तरह जन्म लिए हुए मनुष्यों को नित्य मरण का भय है।'

सायमेके न दिस्संति पातो दिट्ठा बहुज्जना।
पातो एके न दिस्संति सायं दिट्ठा बहुज्जना ॥६॥

'बहुत से जो प्रातःकाल दृष्टिगत होते हैं इनमें कई सायंकाल नहीं दिखलाई देते हैं और बहुत से जो सायंकाल दृष्टिगत होते हैं, इनमें से कई प्रातः काल नहीं दिखलाई देते हैं।'

परिदेवयमानो चे कंचिदत्थं उदब्बहे।
सम्मूल्हो हिंसमत्तानं कयिर चेनं विचक्खणो ॥७॥

'अपने आप को दुःख देनेवाले मूर्ख को यदि विलाप करने से कुछ अर्थ प्राप्त होता, तो बुद्धिमान भी यही करता।'

किसो विवण्णो भवति हिंसमत्तानमत्तनो।
न तेन पेता पालेंति निरत्था परिवेदना ॥८॥

'अपने आप को दुःख देने से वह कृश और विवर्ण बन जाता है। इससे मृत पुनर्जीवित नहीं होते, (अतः) विलाप निरर्थक है।'

यथा सरणमादित्तं वारिना परिनिब्बये।
एवमपि धीरो सुतवा मेधवी पंडितो नरो।
खिप्पमुप्पतितं सोकं वातो तूलं व धंसये ॥९॥

'जिस प्रकार जलता हुआ घर पानी के द्वारा बुझाया जाता है, उसी प्रकार धीर, श्रुतिमान्, बुद्धिमान् और पंडित शीघ्र ही अपने शोक का उसी भाँति उन्मूलन करते हैं जिस भाँति पवन कपास को छितराता है।'

एको व मच्चो अच्चेति एको व जायते कुले।
सब्बोगपरमा त्वेव संभोगा सब्बपाणिनं॥१०॥

'मनुष्य अकेला मर जाता है और अकेला कुल में जन्म लेता है। सब प्राणियों का सुख एक दूसरे के सबध पर निर्भर रहता है (अथवा सब प्राणियों के सुख का उद्देश्य है उनका सयोग या मैत्री)।'

तस्सा ही धीरस्स बहुस्सुतस्स
सप्पस्सतो लोकमिमं परं च।
अञ्ञाय धम्मं हृदयं मनं च
सोका महंतापि न तापयंति॥११॥

अतः जो इहलोक और परलोक (का यथार्थ रूप) देखनेवाले और धर्म का जानने वाले[1] धीर और श्रुतिमान् मनुष्य होते हैं, इनका हृदय और मन महान् शोक से भी संतप्त नहीं होता।'

सोहं दस्सं च भोक्खं च भरिस्सामि च नातके।
ससं संपालयिस्सामि किच्चमेवं विजानतो॥१२॥

'सो मैं (दान) दूगा और (स्वयं भी धन का) उपभोग करूंगा तथा अपने सबधियों का भरण-पोषण करूगा। दूसरों का भी (अथवा जो जीवित हैं उनका) मैं पालन करूगा - यही बुद्धिमान का कर्त्तव्य है।'

७०. इस उपदेश की भूमिका-स्वरूप गाथा मे राम से यह प्रश्न किया जाता है कि पिता का मरण सुनकर आप किस धैर्य के बल पर शोक नही करते। इसके बाद की गाथाओं में[2] शोक की व्यर्थता पर एक उपदेश उद्धृत किया गया है। जातक के गद्य के अनुसार ये [illegible] के शब्द हैं लेकिन इस सारे उपदेश मे कहीं भी राम-कथा की ओर

१. अथवा—'और इसका (इहलोक और परलोक का) तत्व जाननेवाले।'

२. गाथा ११ से उपदेश समाप्त प्रतीत होता है। गाथा १२ का न तो कोई पूर्वापर सम्बन्ध है और न इसमे राम-कथा की ओर निर्देश मिलता है। जातक मे यह गाथा उपदेश का अश मानी जाती है।

किंचित् भी निर्देश नहीं मिलता। डा० विंटरनित्स[1] का कहना है कि रामायण में राम अपने पिता के देहान्त का समाचार सुनकर अत्यन्त शोक करते हैं (रा० २. १०३. १ आदि) और केवल बाद में भरत को सांत्वना देते हैं (रा० २. १०५. १५. ४२)। जातक में राम किंचित् भी शोक नहीं करते। इसमें बौद्ध प्रभाव स्पष्ट है। डा० विंटरनित्स आगे चल कर अनुमान करते हैं कि पुरानी गाथाओं मे भी राम अत्यन्त शोकातुर दिखलाए गए थे और बौद्धों ने इन गाथाओं को नया रूप दिया है। राम के शोक से सम्बन्ध रखने वाली गाथाएँ छोड़ दी गई हैं, इतना ही हम स्वीकार कर सकते हैं। लेकिन गाथाओं का वर्त्तमान रूप बौद्धो द्वारा निर्मित है यह मानने की कोई आवश्यकता नहीं होती। मृत सम्बंधियों के कारण शोक करना व्यर्थ है, यह कोई विशेष बौद्ध धारणा नहीं है। महाभारत के अनेक स्थलों पर 'शोकापनोदनम्' के अंतर्गत प्रस्तुत गाथाओं से मिलते जुलते श्लोक पाए जाते हैं। द्रोणपर्व में नारद मृत्यु की सृष्टि की कथा में यों कहते हैं—[2]

आत्मानं वै प्राणिनो घनन्ति सर्वे
नैनं मृत्युर्दण्डपाणिर्हिनस्ति।
तस्मान्मृतान्नानुशोचंति धीराः
सत्यं ज्ञात्वा निश्चयं ब्रह्मभृष्टम्॥ (५४. ५०)

स्त्रीपर्व के **धृतराष्ट्रस्य शोकापनोदनम्** में विदुर का कहना—

शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पंडितम्॥ (२. २२)

भगवद्गीता में,

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥ (२. २७)

इस प्रकार के और बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। अतः जातक की गाथाओं की शिक्षा बौद्धों की अपनी नहीं है। जलक्रिया संबंधी गाथा की तरह ये गाथाएं भी बौद्धों द्वारा ज्यों की त्यों अपना ली गई होंगी। फिर भी वाल्मीकि रामायण में केवल गाथा पाँचवी रामायण में मिलती है।

---

१. द० हि० इ० लि०: भाग १, पृ०५०८।

२. इसकी तुलना दशरथ जातक की ११ वीं गाथा से की जा सकती है

यथा फलानां पक्वानां नान्यत्र पतनाद् भयम् ।
एवं नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम ।

(रा० २. १०५. १७)

अतः हमें मानना पड़ेगा कि **दशरथ जातक** की गाथाएँ **वाल्मीकि रामायण** पर निर्भर नहीं हो सकतीं । इनका मूलस्रोत कोई प्राचीन आख्यान रहा होगा[1] ।

(इ) राम का राज्य काल (गाथा १३)

७१. दस वस्ससहस्सानि सट्ठि वस्ससतानि च ।
कंबुगीव महाबाहु रामो रज्जमकारयि ॥ १३ ॥

'कंबुग्रीव महाबाहु राम ने सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य किया ।'

वाल्मीकि रामायण, महाभारत, और हरिवंश, तीनों में इस गाथा का संस्कृत रूप पाया जाता है । **रामायण** में—

दश वर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च ।
भ्रातृभिः सहित श्रीमान् रामो राज्यमकारयत्

(६. १२८. १०४ दक्षिण संस्करण)

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति ॥ १. १. ९७.

महाभारत में—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ।
राज्यं कारितवान्रामस्ततस्तु त्रिदिवं गतः ॥ ३. १४८. ३८.
दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
सर्वभूतमनः कांतो रामोराज्यमकारयत् ॥ ७. ५९. २८.

महाभारत (१२. २८. ६१) और **हरिवंश** (४१. १५१) दोनों में-

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च
अयोध्याधिपतिर्भूत्वा रामो राज्यकारयत् ॥

इस उद्धरणों से स्पष्ट है कि पाली गाथा और संस्कृत श्लोक का मूल-स्रोत एक ही है। यह पाली गाथा **दशरथ जातक** के समाधान में दी

---

१. डा० लूडर्स (दे० गैटिंगन जर्नल, १८९१ पृष्ठ १३०) के अनुसार यह पाली में था; डा० याकोबी मूल रूप को संस्कृत में मानते हैं।

जाती है। यह समोधान, इस एक गाथा को छोड़कर, गद्य में ही लिखा गया है— इससे डा० याकोबी अनुमान करते हैं कि यह गाथा कहीं से उद्धृत की गई है। इस जातक की वर्तमान कथा में 'पोराणकपंडिता' का उल्लेख है, अतः प्रस्तुत गाथा का मूलस्रोत कोई प्राचीन काव्य रहा होगा और बहुत सभव है कि यह 'वाल्मीकिकृत' **रामायण** ही हो। डा० याकोबी का यह अनुमान चिंत्य अवश्य है। **जातक** की अधिकांश गाथाओं का मूलस्रोत वाल्मीकिकृत **रामायण** नहीं हो सकता यह ऊपर दिखलाया गया है; अतः इस गाथा के विषय मे भी हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते हैं कि **रामायण** ही इसका मूलस्रोत है। फिर भी इसमे सन्देह नहीं है कि यह किसी प्राचीन राम-सम्बन्धी उपाख्यान या गीत से बौद्धों द्वारा अपनाई गई है।[1] जातक मे जो 'पोराणकपडिता' का उल्लेख मिलता है इससे इस निर्णय की पुष्टि होती है।

(इ) उपसंहार

७२. **दशरथ जातक** की गाथाओं का विश्लेषण ऊपर किया जा चुका है। इनमें कहीं भी बौद्धों द्वारा कल्पित सामग्री हो, यह मानने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त पहली गाथा के प्रसग-परिवर्त्तन से स्पष्ट है कि इनका मूलस्रोत बौद्ध साहित्य को छोड़कर ब्राह्मण धर्म के वातावरण में निर्मित पुराने आख्यान-साहित्य में और राम-सम्बन्धी प्राचीन गीतों में ढूँढना चाहिए।

दशरथ जातक की राम कथा

अ—डा० वेबर का मत

७३. डाक्टर वेबर[2] के अनुसार **दशरथ-जातक** में राम-कथा का पूर्व-रूप रक्षित है। इसके अतिरिक्त वे पाँचवीं शताब्दी ई० की दो अन्य बौद्ध रचनाओं में इस कथा के प्राचीनतम तत्त्व पाते हैं।

---

१. डा० लूडर्स का मत है कि मूल पाली मे ही था, दशरथ जातक की गाथा १३ रामायण आदि के संस्कृत श्लोक का अनुवाद है। इसके लिए कोई भी प्रमाण नहीं दिया जा सकता है।

२. डे० ए० वेबर: आन दि रामायण।

धम्मपद की टीका[1] में निम्नलिखित कहानी मिलती है। यह ज्यों की त्यों पाली **जातकट्ठवण्णना** में भी उद्धृत है (दे० न० ६ देव-धम्म जातक)।

वाराणसी के राजा[2] के दो पुत्र थे—महिसास(क) और चन्द। उनकी माता के मरने पर राजा ने फिर विवाह किया। नई महिषी के सूर्य नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसी अवसर पर राजा से उसको एक वर भी मिला। जब सूर्य युवावस्था को प्राप्त हुआ तब रानी ने वर के बल पर अपने पुत्र के लिए राजसिंहासन का अधिकार माँगा। राजा ने स्पष्ट इनकार किया। लेकिन महिषी के षड्यन्त्रों से भयभीत होकर उन्होंने अपने पुत्रों को, यह कह कर, वनवास दिया—'मेरे मरने के बाद लौटकर राज्य पर अधिकार प्राप्त करना।' सूर्य अपने आप दोनों भाइयों के साथ चला गया।

राजा के मरने के पश्चात् तीनों बनारस लौटते हैं। महिसासक राजा बन जाते हैं, चंद उपराजा और सूर्य सेनापति।

यही संक्षेप में **धम्मपद टीका** की कथा है। डा० वेबर के अनुसार यह **दशरथ जातक** का प्रथम रूप है। आगे चल कर वे बुद्धघोष की **सुत्तनिपात-टीका**[3] में वर्णित शाक्य तथा कोलिय वंशों की उत्पत्ति की कथा में (२. १३) **दशरथ जातक** का द्वितीय रूप देखते हैं। इस कथा के चार भाग हैं, जिनमें से पहले दो भाग हमारे विषय से सम्बन्ध रखते हैं।

७४. (१) शाक्यों की उत्पत्ति : वाराणसी की पटरानी के नौ संतानें थीं—चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ। उसके मर जाने के बाद अंबट्ठ राजा ने नया विवाह किया और अपनी युवती पत्नी को पटरानी बनाया (**अग्गमहेसिं ठठाने उपसि**)। नई पटरानी के पुत्र उत्पन्न होने पर राजा ने उसको एक वर दिया और उसने अपने पुत्र के लिए राजसिंहासन माँगा। राजा ने पहले इनकार किया फिर भी उसने अपने नौ पुत्र-पुत्रियों को यह कह कर वनवास दिया, 'मेरी मृत्यु के पश्चात् आओ और राज्य पर अधिकार

---

१. दे० एच० सी० नार्मन: कामेंटरी आन धम्मपद, भाग ३, ७३, बर्लिनगेम, हावेर्ड ओरियेंटल सीरिज़ भाग २९, पृ० ३०९।

२. देवधम्म जातक में इनका नाम 'ब्रह्मदत्त' भी दिया जाता है।

३. दे० इंडिश्चा स्टुडियन: भाग ५, पृ० ४१२ आदि। एच० स्मिथ: सुत्त-निपात कामेंटरी (परमत्थजोतिका) पाली टेक्स्ट सोसाइटी, १९१६।

प्राप्त करो।' बहुत से लोग उनके साथ चल दिए और सबों ने वन में एक नगर बसाया। नगर को 'कपिलवत्थु' नाम दिया गया क्योंकि उसी स्थान पर कपिल नामक तपस्वी तपस्या करते थे। राजसन्तान से विवाह करने योग्य वन में कोई नहीं था, इसलिए चारों राजकुमार अपनी बहनों से ही विवाह करने के लिये बाध्य हुए। ज्येष्ठा कन्या पिया अविवाहित रह कर सबों की माता मानी जाने लगी। यही शाक्यों की उत्पत्ति की कथा है।

(२) **कोलियों की उत्पत्ति** : कुछ समय बाद अविवाहित पिया को कुष्ठ रोग हो गया। इस पर वह वन के किसी एकांत स्थान पर छोड़ दी गई। इसी वन में राम नामक एक राजा रहते थे। कुष्ठ रोग के कारण राजा राम भी, अपने पुत्र को राज्य देकर, वन में आए थे और औषधीय पौधों का सेवन कर स्वस्थ हो गये थे। इन्हीं पौधों द्वारा पिया की चिकित्सा करके, राम ने इससे विवाह किया और ३२ पुत्र उत्पन्न किए (१६ यमल)। इसके बाद उसने वन में 'कोलनगर' बसाया और शाक्य राजकुमारियों से अपने पुत्रों का विवाह करवाया। यही कोलिय वंश की उत्पत्ति की कथा है।

(३) **शाक्यों और कोलियों का युद्ध** : कोलिय-वंश में उत्पन्न भगवंत बुद्ध ने शाक्यों और कोलियों में जो युद्ध प्रारंभ हुआ था उसे शांत कर दिया।

(४) **शाक्य तथा कोलिय**: प्रत्येक वंश के २५० राजकुमार भिक्षु बन गए थे। वे अपने वैराग्य में दृढ़ न होकर लौटने की अभिलाषा करते हैं। तब महात्मा बुद्ध उनको **महा-कुणाल-जातक** सुनाकर, उनकी संसार में आसक्ति को दूर करते हैं[1]।

७५. डा० वेबर के अनुसार राम कथा का विकास इस प्रकार हुआ **धम्मपद** और **सुत्तनिपात** की टीकाओं में विमाता की ईर्ष्या के कारण

---

१. तीसरे और चौथे भाग के लिए दे० कुणाल जातक की वर्त्तमान कथा, जातक नं० ५३६।

२. रचनाकाल के अनुसार तीनों रचनाओं का क्रम यों है—१. बुद्धघोषकृत सुत्तनिपात टीका (४१०-४३२ ई०) २. जातक कट्ठवण्णना ३. धम्मपद टीका (४५० ई०) दे० हार्वर्ड ओरियेंटल सीरिज भाग २८, पृ० ५८।

राजसंतति को वनवास दिया जाता है, भाई-बहन का विवाह होता है और राम के नाम का भी उल्लेख होता है।

दशरथ-जातक में विमाता के कारण वनवास और भाई-बहन के साथ साथ दशरथ, लक्ष्मण, भरत और सीता, ये नाम भी मिलते हैं और राम, पराये न होकर, राजकुमारों के ज्येष्ठ भाई बन जाते हैं।

रामायण में राजकुमारों की राजधानी वाराणसी से अयोध्या बन जाती है, वनवास का स्थान हिमालय से दंडकारण्य में बदल जाता है, और राम तथा सीता भाई-बहन न होकर प्रारंभ ही से विवाहित होते हैं। इन परिवर्त्तनों के अतिरिक्त सीताहरण और रावणवध, ये नये वृत्तान्त भी जोड़े गए हैं।

रामायण में सीता के वनवास के अन्त तक कोई सतान नहीं होती, यह डा० वेबर के अनुसार **दशरथ-जातक** की कथा का प्रभाव है जिसमें वनवास के बाद ही उसका विवाह होता है। वाराणसी का अयोध्या बनना भी बौद्ध कथाओं के प्रभाव के कारण हुआ। शाक्य और कोलिय वंशों की राजधानियाँ क्रमशः कपिलवत्थु और कोलनगर थीं; दोनों नगर अयोध्या के पड़ोस में थे। वनवास का स्थान इसीलिए बदल गया है कि सीता-हरण और रावणवध का वृत्तान्त जोड़ना था। (अंतिम विषय का आधार युनानी कवि होमर की रचना है, दे० आगे अनु० ६२)।

७६. श्री दिनेशचद्र सेन भी **दशरथ-जातक** में राम-कथा का आधार और पूर्व-रूप देखते हैं[1]। वे **दशरथ-जातक** को छठी शताब्दी ई० पूर्व का मानते हैं, **रामायण** में एकाध पाली गाथाओं का संस्कृत अनुवाद पाते हैं और अन्तरंग प्रमाण भी देते हैं—'**रामायण** और बौद्ध कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि विश्वकवि वाल्मीकि ने कितने कौशल से इस अपरिष्कृत बौद्ध कथा को उत्कर्ष की सीमा तक पहुँचाया है।' इस तर्क का इस तरह प्रत्युत्तर दिया जा सकता है 'रामायण तथा बौद्ध कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि बौद्धों ने **रामायण** के हृदयंगम कथानक को शोक की व्यर्थ कि एक उपदेश मात्र में बदल दिया है'।

७७. डा० वेबर तथा श्री दिनेश चन्द्र सेन जातकों की गाथाओं

---

१. दे० दि बंगाली रामायन्स; पृ० ७ आदि।

और गद्य, इन दोनों की प्रामाणिकता में कोई भेद नहीं मानते यद्यपि दोनों के रचनाकाल में शताब्दियों का अन्तर है। यह तर्क **दशरथ-जातक** के विषय में विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें प्रायः समस्त कथा गद्य में ही दी गई है। पहली गाथा का जो प्रसग **दशरथ-जातक** में दिया गया है वह मौलिक नही है और अन्य गाथाओं का मूलस्रोत भी कोई पुराना **रामायण** से मिलता जुलता उपाख्यान रहा होगा, यह संभवतः गाथाओं के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो गया है।

इसके अतिरिक्त डा० वेबर के मत का खंडन करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं,—

(१) **दशरथ-जातक** की राम-कथा की अंतरंग समीक्षा करने पर वह **रामायण** की कथा का विकृत रूप मात्र सिद्ध होती है (दे० अगला परिच्छेद)।

(२) डा० वेबर का मत इस धारणा पर निर्भर प्रतीत होता है, 'जिस कथा में अपेक्षाकृत कम पात्र, कम घटनाए, कम तत्व मिलते हैं वह निस्सन्देह पूर्वकृत होगी'। ऐसी धारणा निर्मूल है। इसका प्रमाण **दशरथ-कथानम्** में मिलता है। यह कथा एक सग्रह में पाई जाती है, जिसकी रचना दूसरी श० ई० के बाद हुई थी। इस **दशरथ कथानम्** में सीता का या किसी राजकुमारी का कोई भी उल्लेख नहीं है।

रामकथा का यह रूप दूसरी श० ई० के बाद भी बौद्ध जगत् के किसी प्रदेश में प्रचलित रहा होगा। अतः डा० वेबर के अनुसार राम-कथा के विकास के विभिन्न सोपान निर्धारित करने की युक्ति अत्यन्त अनुपयोगी सिद्ध होती है। **दशरथ-कथानम्** के रचनाकाल में **वाल्मीकि रामायण** भारतवर्ष में प्रसिद्ध हो चुका था और अन्य बौद्ध केन्द्रों में पाली जातक के अतिरिक्त राम-कथा का विकसित रूप भी प्रचलित हो चुका था। फिर भी डा० वेबर की युक्ति के अनुसार **दशरथ-कथानम्** के वृत्तान्त में इन सब रचनाओं के पहले का राम कथा का रूप विद्यमान है।

(३) राम-कथा का विकसित रूप जो **वाल्मीकि रामायण** में भी पाया जाता है वह प्राचीन काल से ही बौद्धों में प्रचलित था। इसके संकेत पाली **जातकट्ठवण्णना** की अन्य गाथाओं से मिलते हैं (दे० नीचे, अनु० ८३)। **अनामकं जातकम्** में भी राम-कथा का विकसित रूप मिलता है (दे० अनु० ४८)। इस जातक का २५४ ई० में चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था।

इसके अतिरिक्त **अश्वघोष, अभिधर्म महाविभाषा** आदि प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों में **वाल्मीकि रामायण** के निर्देश मिलते हैं।

७२. अश्वघोषः बुद्धचरित महाकाव्य से पता चलता है कि अश्वघोष (दूसरी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध[१]) न केवल ब्राह्मण राम-कथा से लेकिन वाल्मीकिकृत **रामायण** के पाठ से भी परिचित थे और इससे अपनी सारी रचना में प्रभावित हुए हैं।[१]

राम का आज्ञापालन (६. २५), उनका वन से लौटना[२] (६.६७) दशरथ का पुत्रवियोग के कारण शोक (८.७६.८१)—इन सब में राम-कथा के किसी निश्चित रूप की ओर निर्देश नहीं है। लेकिन वामदेव की वनवासी राम से भेंट (६. ६), वाल्मीकि (१. ४८) तथा सारथि सुमंत्र (६. ३६, ८. ८) का उल्लेख—यह रामायणीय रामकथा (विशेष करके अयोध्या कांड) से सम्बन्ध रखता है[३]।

---

१. दे० सी० डब्लू गनेर : अश्वघोष एंड दि रामायण। जर्नल एंड प्रोसीडिंग्स एशियाटिक सोसाइटी, भाग २३, पृ० ३४७-६७।
ए० बी० कीथ : संस्कृत लिटरेचर, पृ० ५९।
एम० विंटरनित्स : हि० इ० लि० भाग १, ४९० और भाग २, २६२।
कावेल: दि बुद्धचरित आव अश्वघोष, भूमिका पृ० १२।
ई० एच० जान्स्टन : बुद्धचरित, भूमिका।

२. राम के वन से लौटने का एक अन्य उल्लेख भी मिलता है।
महीं विप्रकृतामनार्यैस्त्वयोवनादित्य रक्ष रामः (९. ५९)
'पृथ्वी को अनार्यों से पीड़ित देखकर राम ने वन से लौट कर उसकी रक्षा की।'
इसमें दशरथ-जातक तथा रामायण को छोड़कर राम-कथा के किसी अन्य रूप की ओर निर्देश है। यह संभवतः अनामक जातकम् हुआ होगा।

३. रामायण में (५. ९. ११) रावण की सोती हुई पत्नियों का जो चित्र अंकित किया गया है इससे अश्वघोष सिद्धार्थ के शयनागार के वर्णन में प्रभावित प्रतीत होते हैं (५. ४८. ६२)।
गजेन्द्रमृदिताः फुल्ला लता इव महावने (रा० ५. ९. ४७)।
गजभग्ना इव कर्णिकारशाखा (बु० ५. ५१)।
इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिससे स्पष्ट है कि दोनों वर्णनों का मूल स्रोत एक है। यह वर्णन बुद्ध-चरित का एक आवश्यक अंश माना जाना चाहिए परन्तु रामायण में यह अनावश्यक लगता है। अतः इस वृत्तान्त का मूल-स्रोत बुद्धचरित ही है और यह रामायण में प्रक्षिप्त है—यह कीवल और विंटरनित्स का तर्क है। कीथ मानते हैं कि अश्वघोष इसमें रामायण का अनुकरण करते हैं। यह अंतिम मत अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

इसके अतिरिक्त अश्वघोष के **सौन्दरानन्द** में वाल्मीकि के सीता के दोनों पुत्रों का शिक्षक होने का उल्लेख हुआ है। इससे यह ध्वनि निकलती है कि अश्वघोष उत्तरकांड की कथा-वस्तु से अभिज्ञ थे।

बुद्धचरित के अनेक स्थलों पर **रामायण** की कथावस्तु से बहुत कुछ समानता मिलती है। सिद्धार्थ के बिना छंदक के कपिलवस्तु के लौटने का सारा वर्णन सुमंत्र के प्रत्यागमन से प्रभावित हुआ है। कवि स्वयं दोनों वृत्तान्तों की तुलना करते हैं—

त्वामरण्ये परित्यज्य सुमित्र इव राघवं (६. २६)
और

मुमोच्च वाष्पं पवि नागरो जनः पुरा रथे दाशरथेरिवागते (८.८)

गौतमी के विलाप में (८. ५१. ८) जो राजमहल और वनवास का विरोध चित्रित किया गया है वह **रामायण** में दशरथ (२. १२. ९७-१०१; २. ५८. ५-६) और कौशल्या के विलाप (२. ४३. १-२०) का स्मरण दिलाता है। दोनों में वनवासी पुत्र का पैदल जाना, भूमि पर शयन करना आदि उल्लेख हुआ है।

प्रलंबबाहुर्मृगराजविक्रमो महर्षभाक्षः कनकोज्ज्वलद्युतिः।
विशालवक्षा घनदुन्दुभिस्वनस्तथाविधोऽप्याश्रमवासमर्हति ॥
(बुद्धचरित ८. ५३)

गजराजगतिर्वीरो महाबाहुर्धनुर्धरः।
वनमाविशते नूनं सभार्यः सलक्ष्मणः ॥
(रा० २. ४३. ६)

शुचौ शयित्वा शयने हिरण्मये प्रबोध्यमानो निशि तूर्यनिस्वनैः।
कथं वत स्वप्स्यति सोऽद्य मे व्रती पटैकदेशांतरिते महीतले ॥
(बु० ८. ५८)

दुःखस्यानुचितो दुखं सुमंत्र शयनोचितः।
भूमिपालात्मजो भूमौ शेते कथमनाथवत् ॥
(रा० २. ५८. ६)

७९. **अभिधर्म महाविभाषा** आदि तीसरी श० इ० उत्तरार्द्ध की

अभिधर्म महाविभाषा में **रामायण** का उल्लेख किया गया है। यह रचना चीनी अनुवाद में सुरक्षित है।[1] इसमें लिखा है—'**रामायण** नामक ग्रन्थ में १२००० श्लोक हैं। ये श्लोक केवल दो विषयों से सम्बन्ध रखते हैं, (१) रावण द्वारा सीता का हरण और (२) राम द्वारा सीता की पुनः प्राप्ति तथा (अयोध्या में) प्रत्यागमन। बौद्ध ग्रन्थ इतने सरल नहीं होते। इनमें अपरिमित प्रकार की रचनाएं मिलती हैं और इनके अर्थ असंख्य होते हैं।'

इसके अतिरिक्त तीन बौद्ध रचनाएं और मिलती हैं जिनसे पता चलता है कि **रामायण** का बौद्धों में पर्याप्त प्रचार था।[2] कुमारलातकृत **कल्पनामंडितिका** में (तीसरी श० ई० का अंत) **महाभारत** और **रामायण** का उल्लेख हुआ है। वसुबंधु (चौथी श० ई०) की जीवनी में भी यह कहा गया है कि वसुबंधु **रामायण** की कथा सुना करते थे। **सद्धर्मस्मृत्युपाख्यान सूत्र** में **रामायण** का दिग्दर्शन उद्धृत है। यह रचना पहली शताब्दी ई० की मानी जाती है। इसका छठी शताब्दी में चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था।

आ—दशरथ जातक की अन्तरंग समीक्षा

८०. राम-कथा का जो रूप पाली **दशरथ-जातक** के गद्य में मिलता है वह या तो **रामायण** ही पर अथवा **रामायण** से मिलती जुलती किसी अन्य राम-कथा पर निर्भर है। यह **दशरथ-जातक** की अंतरंग परीक्षा से सिद्ध होता है।[3]

रामायण में कैकेयी के वरस्वरूप राम को चौदह वर्ष तक वनवास मिला था, अतः राम का दशरथ के मरने के बाद वन में रहना स्वाभाविक और

---

१. दे० केर्न : मेन्युल आव बुद्धिज्म, पृ० १२१, ज० रा० ए० सो० १९०७, पृ० ९९-१०३।

२ तीनों रचनाएं केवल चीनी अनुवाद में सुरक्षित हैं।
दे० एम्० विंटरनित्स : हि० इ० लि० भाग २, पृ० २६९।
ए० बी० कीथ : संस्कृत लिटरेचर, पृ० ८ (भूमिका), ५६।
के० चाटानबे : ज० रा० ए० सो० १९०७ पृ० ९९-१०३।
एम्० लेवी : जर्नल आजियाटिक १९१८, पृ० १ आदि।

३. दे० एच० याकोबी : वही पृ० ८५। सी० वी० वैद्य : वही, पृ० ७३।

आवश्यक है। लेकिन **दशरथ-जातक** में इसके लिए कोई समीचीन कारण नहीं मिलता। दशरथ ने राम और लक्ष्मण से कहा था कि वे उनकी मृत्यु के पश्चात् लौटें। तब उन्होंने ज्योतिषियों से अपना अंतकाल पूछा था। यह समझकर कि मैं बारह वर्ष तक जीता रहूँगा उन्होंने अपने पुत्रों से इस अवधि के अन्त में आने के लिए कहा था। फिर दोनों पुत्रों को एक ही आदेश मिला था। तब लक्ष्मण क्यों नौ वर्ष के बाद लौटते हैं?

रामायण की कथा में सीता का अपने पति के साथ **चले** जाना स्वाभाविक है। **दशरथ-जातक** में इसके लिए कोई ऐसा कारण नहीं है। विमाता के षड्यंत्रों की सीता को कोई आशंका नहीं थी। **जातक** में सीता दशरथ के मरने पर लक्ष्मण के साथ राजधानी को लौट आती हैं और राम तथा सीता का तीन वर्षों के वियोग के बाद विवाह होता है। इसमें संभवतः **रामायण** के सीताहरण के पश्चात दोनों का संयोग प्रतिबिंबित है।

८१. अब प्रश्न यह उठता है कि यदि **दशरथ जातक** ब्राह्मण राम-कथा पर निर्भर है तो दोनों में इतना अन्तर क्यों। इसके तीन मुख्य कारण स्पष्ट हैं। एक तो **दशरथ-जातक** का जो रूप **जातकट्ठवण्णना** में प्रस्तुत है वह शताब्दियों तक अस्थिर रहने के बाद पांचवीं शताब्दी ई० में लिपिबद्ध किया गया है। अतः इसमें परिवर्त्तन की संभावना रही है, विशेष करके दूर सिंहलद्वीप में जहां **रामायण** की कथा उस समय कम प्रचलित थी। दूसरे, बौद्ध आदर्श और शैली का प्रभाव भी पड़ना अत्यन्त स्वाभाविक है। तीसरे, **दशरथ-जातक** की वर्त्तमान कथा के अनुसार महात्मा बुद्ध ने पिता के मरण से शोकातुर पुत्र को धैर्य देने के लिए दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण देकर यह **जातक** कहा था। इस उद्देश्य के लिए सीताहरण का उल्लेख अनावश्यक था। इसके अतिरिक्त इस **जातक** के अनुसार महात्मा बुद्ध ही अपने एक पूर्वजन्म में रामपंडित थे, अतः रावण-वध का बौद्ध आदर्श के प्रतिकूल होने के कारण न होना स्वाभाविक है।

बौद्ध जातकों की शैली के अनुसार राजधानी, अयोध्या न होकर वाराणसी है। वनवास का स्थान हिमालय है जो बौद्ध कथाओं में अत्यन्त लोकप्रिय है और जिसका उल्लेख जातकों में निरंतर होता रहता है।

वनवास का कारण विमाता के षड्यन्त्रों का भय है, सो अनेक अन्य

बौद्ध कथाओं में भी मिलता है। राम और सीता, भाई-बहन का विवाह, महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन कहा जा सकता है लेकिन इसके लिए भी बौद्ध साहित्य में कई उदाहरण प्रस्तुत थे। (दे० ऊपर अनु० ७३-७४ और कुणालजातक न० ५३६)।

दशरथ के अंतकाल के विषय में ज्योतिषियों का कथन असत्य सिद्ध होता है। इसमें भी चिन्तामणि वैद्य बौद्ध प्रभाव देखते हैं। बौद्धों की ज्योतिषियों से जो अरुचि थी यह भूल में प्रकट की गई है।

सारांश यह है कि **दशरथ-जातक** में जो आंतरिक असंगति मिलती है वह ब्राह्मणीय कथा का इस **जातक** का आधार होना सिद्ध करती है। दूसरी ओर **जातक** तथा **रामायण** में जो अंतर पाए जाते हैं वे भी उपर्युक्त कारणों से स्वाभाविक प्रतीत होते हैं।

पाली तिपिटक और रामायण

८२. बौद्ध साहित्य में जो राम-कथा-संबंधी सामग्री मिलती है इसके विश्लेषण से सिद्ध होता है कि **दशरथ जातक** के गद्य में जो वृत्तान्त प्रस्तुत हुआ है वह ब्राह्मणीय राम कथा का विकृत रूप है। इस **जातक** की गाथाओं का भी मूलस्रोत बौद्ध नहीं है। फिर भी इनका आधार प्रचलित वाल्मीकिकृत **रामायण** भी नहीं हो सकता। अतः ये गाथाएं पुराने आख्यान-काव्य पर निर्भर होंगी (दे० अनु० ७२)।

अब प्रश्न यह उठता है कि पाली तिपिटक की गाथाओं में जो थोड़ी सी राम-कथा संबधी सामग्री सुरक्षित है क्या वह **रामायण** का आधार माने जाने के लिए पर्याप्त है? इस प्रश्न को सुलझाने के पहले **दशरथ-जातक** को छोड़कर अन्य राम-कथा से संबंध रखने वाली सामग्री का निरूपण करना है जो पाली तिपिटक में मिलती है।

८३. **राम-कथा-संबंधी गाथाएं : दशरथ-जातक** की गाथाओं को छोड़ कर पाली **जातकट्ठवण्णना** में दो गाथाएं और मिलती हैं, जिनमें राम और सीता का उल्लेख हुआ है। इनसे पता चलता है कि गाथाओं के कवि ब्राह्मण राम-कथा से परिचित थे।

जयद्दिस जातक (न० ५१३) की गाथा १७ के अनुसार राम का

वनवास हिमालय प्रदेश में न होकर दण्डकारण्य में है। एक माता अपने पुत्र से कहती है,

यं दण्डकारण्णगतस्स माता
रामस्सका सोत्थानं सुगत्ता
तं ते अहं सोत्थानं करोमि ॥

जिस तरह से दण्डकारण्यवासी राम की सुन्दर माता ने (अपने पुण्य द्वारा पुत्र का) कल्याण किया है इस तरह मैं तेरा कल्याण (सोत्थानं स्वस्त्ययन) करती हूँ।

वेस्संतर जातक (न० ५४७) में मद्री, वेस्सतर की पत्नी कहती है,

अवरुद्धस्सहं भरिया राजपुत्तस्स सिरीमतो।
तं चाहं नातिमण्णामि रामनि सीता वनुब्बता ॥
(गाथा ५४१)

'मैं एक प्रतापवान् निर्वासित राजकुमार की भार्या हूँ। अनुगामिनी सीता जिस तरह से राम का आदर करती थीं इसी तरह मैं इनका आदर करती हूँ।' इससे यह ध्वनि निकलती है कि वनवास के समय राम और सीता का संबध भाई-बहन का न होकर पति-पत्नी का था।

८४. **सामजातक : साम-जातक** (न० ५४०) का वृत्तान्त[1] **रामायण** की अंध-मुनि-पुत्र-वध-संबंधी कथा (दे० २.६३-४) का एक अन्य रूप मात्र है। बौद्ध जगत् में इस **जातक** की लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि सांची और अमरावती के स्तूपों पर तत्संबंधी चित्र अंकित किए गए हैं। पाली **जातक-ट्ठवण्णना** के अतिरिक्त यह **जातक महावस्तु** (२.२०६) में **श्यामक जातकम्** के नाम पर और **चरियापिटक** (३. १३) में **सुवण्णसामचरियम** के नाम पर पाया जाता है। लेकिन इन दोनों का वृत्तान्त बहुत संक्षिप्त है और इसका आधार स्पष्टतया **साम-जातक** ही है।

---

१. दे० जे० शार्पेंटिये : वियेना ओरियेन्टल जर्नल, भाग २७, पृ० ९४, भाग २४ पृ० ३९७।
एच० ओल्डेन्बर्ग : जातक स्टुडियन, जर्नल गेटिंगन सोसाइटी, १९१८, पृ० ४५६ आदि।
एम्० विंटरनित्स : हि० इं० लि० भाग १, पृष्ठ ५०६, भाग २ पृष्ठ १४७ आदि।
दिनेश चन्द्र सेन : वही पृष्ठ १५ आदि।

दूसरी ओर **रामायण** के अतिरिक्त अंध-मुनि-पुत्र-वध की कथा **रघुवंश** (नवां सर्ग) आदि में भी मिलती है। परंतु ये वृत्तान्त **रामायण** की तत्सम्बन्धी कथा पर निर्भर हैं और **साम-जातक** से कोई सीधा संबंध नहीं रखते। अतः यहां पर पाली **जातक** और **रामायण** की कथा की तुलना पर्याप्त है। **साम जातक** का संक्षिप्त वृत्तान्त इस प्रकार है—निषादों के कुल में उत्पन्न दुकूलक और पारिका हिमालय प्रदेश के किसी आश्रम में तपोमय जीवन बिताते हैं। विवाहित होकर भी वे ब्रह्मचारी ही रहते हैं। बोधिसत्व अलौकिक रीति से पारिका के गर्भ से जन्म लेते हैं और साम कहलाते हैं। साम के १६ वें वर्ष में दुकूलक और पारिका दोनों को एक सर्प अन्धा कर देता है। उसी समय से साम अपने माता-पिता की सेवा-सुश्रुषा करने लगते हैं।

एक दिन साम नदी से पानी लेने जाता है। उस स्थल पर वह बनारस के राजा (पिलियक) के विषैले बाण से विद्ध होता है। राजा के पहुँचने पर उसे तनिक भी क्रोध नहीं आता किन्तु अपने अन्धे माता पिता के भाग्य पर वह फूट-फूट कर रोने लगता है। राजा अन्धे माता पिता के पास आकर उनके पुत्र के वध का समाचार देता है, जिसे सुन कर दुकूलक और पारिका रोने लगते हैं। उनके कहने से राजा दोनों को पुत्र के मृत शरीर के पास ले जाता है। माता-पिता मर्मस्पर्शी विलाप करते हुए शपथ (सच्चक्रिया) करते हैं। पारिका कहती है—'यदि मेरा पुत्र माता-पिता का सच्चा भक्त था तो विष लुप्त हो जाए।' दुकूलक भी अपने और अपनी पत्नी के नाम पर 'सच्चक्रिया' करता है। वनदेवी भी उसी तरह करती है। साम उठ बैठता है और राजा का स्वागत करता हुआ कहता है – 'मैं केवल मूर्च्छित हुआ था। जो माता-पिता की सेवा करते हैं वे दोनों लोक में सुख पाते हैं'। इसके बाद साम राजा पिलियक को राज धर्म का उपदेश देता है।

रामायण की कथा में आहत मुनि-पुत्र अधिक उत्तेजित हो जाता है, उसके माता-पिता का विलाप अधिक हृदयस्पर्शी तथा करुणाजनक होता है, और अन्त में वह पुनर्जीवित नहीं होता है। फिर भी दोनों वृत्तान्तों का पारस्परिक संबंध संदिग्ध नहीं कहा जा सकता।

कथा के अतिरिक्त शाब्दिक साम्य भी पाया जाता है –

अयं एकपदी राज (गाथा २६)
अयं एकपदी राजन् (रा० २. ६३. ४४)

अदूसक पितापुत्ता तयो एकूसुना हता (गा० ३६)
वृद्धो च मातापितरावहं चैकेषुणा हता । (रा० ६३. ३२)

वृद्ध पिता के विलाप में एक पूरी गाथा भी मिलती है जो **रामायण** के ८ श्लोक से बहुत मिलती जुलती है,

को दानि भुंजयिस्ससि वनमूलफलानि च
सामो अयं कालकतो अंधानं परिचारक (गा० ८५)
कंदमूलफलं हत्वा को मां प्रियमिवातिथिम्
भोजायिष्यत्यकर्म्मण्यमप्रग्रहमनायकम् ।। (गा० ६४. ३४)

ऐसा प्रतीत होता है कि **साम-जातक** के सरल वृत्तान्त में इस कथा का प्राचीन रूप सुरक्षित है [1] । यह वृत्तान्त राम कथा में स्वतंत्र रूप में प्रचलित था । आगे चल कर **रामायण** की कथा में उसे एक नया और काव्यात्मक रूप मिला है ।

८५. **वेस्सन्तर जातक** : यह जातक बौद्ध जगत में सब से प्रसिद्ध और लोकप्रिय था । इसकी ७८६ गाथाओं में राजकुमार वेस्सन्तर की दानवीरता का चित्रण हुआ है । कथावस्तु इस प्रकार है[2]—राजकुमार वेस्सन्तर ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं किसी भी माँगी हुई वस्तु के देने से इनकार नहीं करूंगा । देश की भलाई का ध्यान न रखते हुए उसने एक अलौकिक हाथी दान में दिया । दंडस्वरूप उसको वनवास दिया गया । उसकी पतिभक्त पत्नी मद्दी और दो पुत्र उसके साथ गए । वह चार घोड़ों के रथ में चले । पथ में एक ब्राह्मण भिखारी ने रथ माँग लिया । वेस्सन्तर ने उसे निस्संकोच दे दिया । अन्त में चारों एक कुटी में पहुँच कर वहीं निवास करने लगे । तब सक (शक्र) एक कुरूप ब्राह्मण के वेश में दिखाई पड़े और उन्होंने वेस्सन्तर के दोनों पुत्रों को दास के रूप में माँगा और प्राप्त किया । तत्पश्चात् ब्राह्मण ने पत्नी को भी माग लिया । इस पर ब्राह्मण अपना परिचय देता है और कथा आनन्द पूर्वक समाप्त होती है ।

इस **जातक** में अनेक स्थलों पर राम-कथा से मिलते जुलते वृत्तान्त मिलते

यही ओल्डेनबेर्ग और विंटरनित्स का मत है । शार्पेन्टिये रामायण की कथा पूर्वकृत मानते हैं ।

२. दे० जातकट्ठवण्णना का श्रीतम जातक नं० ५४७ । इसका उल्लेख मिलिंद पान्ह (४. १. ३५, ४. ८. १) और चारिया-पिटक (१. ९) में हुआ है ।
दे० विंटरनित्स : हि० इ० लि० भाग २ पृष्ठ १५१. २ ।

हैं, राम के समान वेस्सन्तर का वनवास के पहले दान देना, कौशल्या का तथा वेस्सन्तर की माता का विलाप, वन और कुटी वर्णन। मद्दी और सीता, दोनों अपने पति के साथ वन को जाने के लिये अनुरोध करती हैं,

अग्गिं निज्जालयित्वान एकजालसमाहितम्।
तत्थ मे मरणं सेय्यो यं चे जीवे तया विना॥
(गाथा ७३)

यदि मा दुःखितामेवं वनं नेतुं न वेच्छसि।
विषमग्निं जलं वाहमास्यास्ये मृत्युकारणात्॥
(रा० २. २६. ३१)

लेकिन दोनों रचनाओं में कहीं भी अक्षरशः एकरूपता नहीं मिलती। जो समानता मिलती है यह सम्भवतः आधिकारिक वस्तु के सादृश्य के कारण उत्पन्न हुई है। इस **जातक** तथा **रामायण** के पारस्परिक प्रभाव के प्रमाण नहीं दिए जा सकते हैं। इतना ही असंदिग्ध है कि **वेस्संतर जातक** का रचयिता राम-कथा से परिचित था (दे० ऊपर अनु० ८३ में उद्धृत गाथा ४५१), लेकिन वह **रामायण** भी जानता था, इसके लिए **वेस्संतर जातक** में कोई आधार नहीं मिलता।

८६. **संबुला जातक: संबुला जातक** (न० ५१६) में पतिभक्त संबुला का वृत्तान्त दिया गया है। अपने कुष्ठरोगी पति, राजकुमार सोत्थिसेन, के साथ वनवासी बन कर वह उसकी सेवा में अपना जीवन बिताती है। किसी दिन एक दानव संबुला को बन में देखता है और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। संबुला इनकार करती है और मक्क (शक्र) द्वारा बचाई जाती है। इस घटना का वृत्तान्त सुनकर सोत्थिसेन अपनी पत्नी के सतीत्व पर संदेह करता है। यह देखकर संबुला एक 'सच्चकिरियम्' (सच्चक्रिया) द्वारा अपने पति को नीरोग कर देती है।

तथा मं सच्चं पालेतु पालयिस्सति चे ममं
यथानं नाभिजानामि अञ्ञं पियतरं तया
रतेन सच्चवज्जेन व्याधि ते वूपसम्मति (उपशमति)।
(गाथा २७)

इसके बाद दोनों राजधानी लौट जाते हैं। कृतघ्न सोत्थिसेन अन्य स्त्रियों

के साथ विलास करके अपनी पत्नी को दुःख देता है। अन्त में अपने पिता के कहने पर वह संबुला से क्षमा मागता है, और दोनों का जीवन सुखमय बन जाता है।

सबुला और सीता दोनों वनवासी पति की सेवा करती हैं। सबुला की सत्यक्रिया सीता की अग्निपरीक्षा से समय की शपथ का स्मरण दिलाती है। दानव और रावण दोनों की धमकी में भी शाब्दिक समानता मिलती है—'यदि तुम मेरी महिषी बनने के लिए सहमत न हुई तो तुम मेरा प्रातः का भोजन ('पातरासाय—प्रातराश') बन जाओगी।'

नो चे तुवं महेसेय्यं संबुले कारयिस्ससि।
अलं त्वं पातरासाय मय्हं भक्खा भविस्ससि॥
(गाथा १०)

द्वाभ्यामूर्ध्वंतु मासाभ्यां भर्तारं मामनिच्छतीम्।
मम त्वां प्रातराशार्थं सूदाश्छेत्स्यंति खंडशः॥
(रा० ५. २२. ६)

८७. **महासुतसोम जातक : महासुतसोम जातक** (न० ५३७) में एक गाथा पाई जाती है जिसमे 'महासत्तो' (बोधिसत्व) एक 'पोरिसादो' को (पुरुषाद) भर्त्सना देकर कहते हैं—

पंच पंच नखा भक्खा खत्तियेन पजानता।
अभक्खं राजा भक्खेसि तस्मा अधम्मिको तुव॥
(गाथा ५८)

यह बालि की राम के प्रति की उक्ति का स्मरण दिलाता है—

पंच पंचनखा भक्ष्या ब्रह्मक्षत्त्रेण राघव॥
(रा० ४. १७. ३६. मनु ५. १७)

८. **उपसंहार** : श्री दिनेशचन्द्र सेन[1] का अनुमान है कि जातकों के साहित्य से वाल्मीकि ने अपनी सामग्री प्राप्त की है और इसे अपनी अमर रचना के नये साचे मे ढाला है। यह मत चिंत्य है। जातकों में राम-कथा से सीधा संबध रखने वाली सामग्री निम्नलिखित है—

---

१. डे० वही : पृष्ठ २२, और एम० विंटरनित्स : वही, भाग १, पृष्ठ ५०८।

'शोकापनोदन' का एक छोटा सा भाषण,
जलक्रिया के विषय में एक गाथा,
राम के राज्यकाल के विषय में एक गाथा,
राम का दण्डकारण्य में वनवास का उल्लेख, और
सीता का अपने पति के साथ वनगमन का उल्लेख।

इसके अतिरिक्त **वेस्संतर जातक** की कथा-वस्तु **रामायण** के वृत्तान्त से कुछ मिलती जुलती है। **सबुला** तथा **महासुतसोम जातक** में एक एक गाथा पाई जाती है जिसका रूपान्तर **रामायण** में भी मिलता है। **साम-जातक** का वृत्तान्त सम्भवतः दशरथ द्वारा अंध-मुनि-पुत्र-वध की कथा का आधार माना जा सकता है।

इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि समस्त **रामायण** का आधार पाली गाथाओं में ढूंढना व्यर्थ है। **रामायण** राम-कथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य पर निर्भर है और इस आख्यान-काव्य की थोड़ी सी सामग्री पाली गाथाओं में आ गई है। इसका अर्थ यह है कि जिस समय पाली तिपिटक बनता रहा (चौथी शताब्दी ई० पू०) उस समय राम-कथा को लेकर पर्याप्त मात्रा में आख्यान-काव्य की रचना हो चुकी थी। क्या आगे बढ़कर कहा जा सकता है कि **रामायण** की भी रचना हो चुकी थी?

उपर्युक्त सामग्री से ऐसा प्रतीत नहीं होता। **साम-जातक** के अतिरिक्त पाली तिपिटक में केवल पांच गाथाओं में **रामायण** के श्लोकों से शाब्दिक समानता पाई जाती है। यदि **रामायण** जैसे महाकाव्य की रचना हुई होती तो गाथाओं के कवि इससे कहीं अधिक प्रभावित हुए होते। इसके अतिरिक्त **रामायण** की अपेक्षा पाली तिपिटक की सामग्री पुराने आख्यान-काव्य की शैली और छंद से कहीं अधिक निकट है। **साम-जातक** के वृत्तान्त में भी सम्भवतः अंध-मुनि-पुत्र-वध की कथा का प्राचीन रूप सुरक्षित है।

तिपिटक के ५४७ जातकों में यक्ख, दानव, नाग, रक्खस, बन्दर और अन्य असंख्य पशु आदि के विषय में कितनी ही कहानियाँ मिलती हैं

वरन्तु कहीं भी राक्षस रावण तथा हनुमान आ.[1] **रामायण** के अन्य कपियों का उल्लेख नहीं हुआ है।[1]

निष्कर्ष यह है कि तिपिटक के रचनाकाल में राम-कथा-सम्बन्धी स्फुट आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था लेकिन **रामायण** की रचना उस समय नहीं हो पाई थी।

रामायण पर बौद्ध प्रभाव ?

८९. पिछले परिच्छेद के निर्णय के अनुसार पाली तिपिटक की रचना **रामायण** के पहले हुई थी। अतः **रामयण** पर बौद्ध धर्म का प्रभाव पड़ना असम्भव नहीं कहा जा सकता है। कई विद्वान इस प्रभाव को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हैं।[2]

दशरथ-जातक में एक प्राचीन बौद्ध कथा सुरक्षित है जिसमें बौद्ध आदर्श के अनुसार धैर्यवान् राम शोक पर विजय प्राप्त करते हैं। **रामायण** इस कथा पर निर्भर है और इसी तरह **रामायण** का मूल-स्रोत बौद्ध ही है। वेबर के इस मत का निरूपण तथा खंडन प्रस्तुत अध्याय में हो चुका है। यहाँ पर इसका उल्लेख मात्र पर्याप्त है।

श्री दिनेशचन्द्र सेन का अनुमान है कि वाल्मीकि ने एक विशेष उद्देश्य से **दशरथ-जातक** का सरल वृत्तान्त विकसित कर दिया है। बौद्ध तपस्या और भिक्षुपन के प्रतिक्रियास्वरूप आदि कवि ने **रामायण** में हिन्दू गृहस्थ जीवन का आदर्श अपने पाठकों के सामने रखा है।

ह्वालर[3] भी **रामायण** का उद्देश्य बौद्धों से जोड़ते हैं। इनके अनुसार **रामायण** का समस्त काव्य ब्राह्मण और बौद्ध दोनों धर्मों के सघर्ष

---

१. कई जातकों में भारतवर्ष के सेनक-नामक राजाओं का उल्लेख पाया जाता है। (मन्धातृ जातक, नं० ९; महाजनक जातक नं० ५३९; निमिजातक नं० ५४१) इनका सम्बन्ध वैदिक साहित्य की जनक-सम्बन्धी सामग्री से सन्दिग्ध नहीं है लेकिन इन जातकों में राम-कथा का निर्देश मात्र भी नहीं पाया जाता है।

२. दे० एच० याकोबी : वही पृ० ८८।
एम० विंटरनित्स : वही भाग १, पृ० ५०९।
दिनेशचन्द्र सेन : वही पृ० २३।

३. दे० जे० टा० ह्वालर : दि हिस्ट्री आव इंडिया, भाग २ पृ० ७५, २२७ आदि।

का प्रतीक है। राक्षसों से बौद्धों का अभिप्राय है। लंका पर जो आक्रमण का वर्णन किया जाता है इसमें सिंहल द्वीप के बौद्धों के प्रति वाल्मीकि का विरोध और द्वेष प्रकट हुआ है।

इस मत के विरुद्ध कहना पड़ता है कि एक तो लंका और सिंहल द्वीप की अभिन्नता संदिग्ध है (दे० आगे अनु० ११३) दूसरे, यदि वाल्मीकि ने राक्षसों के वर्णन में बौद्धों का चित्रण करना चाहा तो स्वीकार करना पड़ेगा कि उन्हें अपने अभिप्राय को छिपाने में पूर्णतया सफलता मिली है। राक्षस ब्राह्मणों के विरोधी अवश्य हैं लेकिन वे स्वयं भी यज्ञ करते हैं और नरभक्षी भी कहे जाते हैं। **रामायण** में जो राक्षसों का चित्रण मिलता है उसमें उनके बौद्ध होने का कोई भी निर्देश नहीं मिलता।

रामायण की सारी रचना में महात्मा बुद्ध का एक बार उल्लेख हुआ है। जाबाली वृत्तान्त के अंतर्गत, राम बुद्ध को चोर और नास्तिक कहते हैं,

यथा हि चोरः स तथा हि बुद्धस्तथागत नास्तिकमंत्र विद्धि।

(रा० २. १०९. ३४)

व्हीलर के अनुसार जाबाली बौद्ध धर्म के प्रतिनिधि हैं और राम उनके विरुद्ध ब्राह्मण धर्म का पक्ष लेते हैं। लेकिन जाबाली बौद्ध धर्म का पक्ष न लेकर लोकायत दर्शन का प्रतिपादन करते हैं और राम इसका खंडन करते हुए नास्तिकों के प्रसंग में बुद्ध का उल्लेख मात्र करते हैं। इसके अतिरिक्त जाबाली का सारा वृत्तान्त निश्चित रूप से क्षेपक है और जिस अंश में बुद्ध का उल्लेख हुआ वह इस वृत्तान्त के अंतर्गत एक नया क्षेपक प्रतीत होता है (दे० आगे० अनु ३९२)। बुद्ध-संबंधी छन्द न तो गौडीय पाठ में मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ में। अतः **आदि रामायण** में न तो बुद्ध का कोई उल्लेख हुआ था और न बौद्ध धर्म के प्रत्यक्ष प्रभाव का कहीं भी असंदिग्ध निर्देश नहीं मिलता।

९०. **रामायण** पर बौद्ध धर्म के परोक्ष प्रभाव के प्रश्न के विषय में इतना निश्चयात्मक उत्तर नहीं दिया जा सकता। **रामायण** की अपेक्षा **महाभारत** में कहीं अधिक कटु भाव, उग्र रणोत्सुकता, घोर युद्ध, अदमनीय विद्वेष आदि दिखलाई देते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि **महाभारत** की रचना पश्चिम भारत में हुई थी और **रामायण** की कोशल में जहाँ सभ्यता तथा संस्कृति का विकास आगे बढ़ चुका था। परन्तु इसके एक अन्य कारण की कल्पना की जा सकती है।

रामायण के रचनाकाल में कोशल में बौद्ध धर्म का पर्याप्त प्रचार हो चुका था अतः यह असंभव नहीं है कि वाल्मीकि ब्राह्मण धर्म के वातावरण में रहते हुए भी परोक्ष रूप से बौद्ध आदर्श से प्रभावित हुए थे। सीता का हिंसा के विरुद्ध भाषण (**रौद्रं परप्राणाभिहिंसनम्** आदि, दे० रा० ३. ६) जो बौद्ध अहिंसा का स्मरण दिलाता है, प्रक्षिप्त माना जा सकता है (दे० आगे अनु० ४१४), लेकिन राम का अत्यन्त शांत और कोमल स्वभाव, उनकी सौम्यता आदि ध्यान में रखकर स्वीकार करना पड़ता है कि वे मुनि पहले हैं, क्षत्रिय बाद में। अत. उनके चरित्रचित्रण में किंचित् परोक्ष बौद्ध प्रभाव देखना निर्मूल कल्पना नहीं प्रतीत होती है।

सातवां अध्याय

राम-कथा का मूलस्रोत

९१. आदिकवि वाल्मीकि के पूर्व राम कथा संबंधी आख्यान-काव्य प्रचलित हो चुका था और इसके आधार पर वाल्मीकि ने **रामायण** लिखा है इसके सम्बन्ध में आजकल बहुत मतभेद नहीं है। लेकिन अनेक विद्वानों की धारणा है कि वाल्मीकि ने पहले पहल दो अथवा तीन नितान्त स्वतन्त्र आख्यान एक ही कथासूत्र में ग्रथित करके राम-कथा की सृष्टि की है। प्रस्तुत अध्याय में इन विद्वानों के मत का निरूपण तथा खंडन किया गया है।

क—ए० वेबर का मत

९२. डा० वेबर के अनुसार राम-कथा का मूल-रूप बौद्ध **दशरथ जातक** में सुरक्षित है। इस कथा में सीताहरण तथा रावण से युद्ध का कोई उल्लेख नहीं मिलता। डा० वेबर का अनुमान है कि सीताहरण की कथा का मूल-स्रोत संभवतः होमर में वर्णित पैरिस द्वारा हेलेन का हरण है और लंका में जो युद्ध हुआ उसका आधार संभवतः युनानी सेना द्वारा ट्राय का अवरोध है[1]।

इस मत के अनुसार राम-कथा के दो प्रधान मूलस्रोत होते हैं, **दशरथ-जातक** तथा होमर का काव्य। पिछले अध्याय में **दशरथ-जातक** की समस्या का पूरा विश्लेषण करने पर इस निर्णय पर पहुँचा गया है कि **दशरथ-जातक** की राम-कथा वाल्मीकीय राम-कथा का विकृत रूप मात्र सिद्ध होती है। अतः यहाँ पर केवल डा० वेबर के दूसरे मूलस्रोत पर विचार करना पर्याप्त होगा।

दशरथ-जातक राम-कथा का एक आधार **है**, इससे अब तक कई विद्वान सहमत हैं लेकिन होमर के काव्य को **रामायण** अथवा राम-कथा का

---

१. ए० वेबर : आन दि रामायण, पृ० ११ आदि।

एक आधार मानने के लिए ए० वेबर को छोड़कर कोई भी तैयार नहीं है। प्रारंभ से ही प्रायः सब विद्वानों ने इसका विरोध किया है[1]। यवनों, पह्लवों तथा शकों आदि का समस्त प्रामाणिक **रामायण** में कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है। होमर के काव्य में नावों को बहुत महत्त्व दिया जाता है। यदि वाल्मीकि इससे परिचित होते तो उन्होंने सेना को समुद्र के पार पहुँचाने के लिए सेतु के स्थान पर अवश्य नावों का सहारा लिया होता। होमर तथा वाल्मीकि की रचना में जो साम्य मिलता है (स्त्री का हरण तथा धनुष-संधान) वह इतना सामान्य और साधारण है कि जब तक अन्य विशेषताओं में कोई साम्य नहीं मिलता तब तक पारस्परिक प्रभाव मानने की आवश्यकता नहीं है। डा० वेबर ने बौद्ध साहित्य में होमर के अन्य वृत्तान्त भी दिखलाए हैं लेकिन ये उद्धरण पहले पहल **महावंश** तथा बुद्धघोष की रचना में विद्यमान हैं। ये दोनों ग्रन्थ पाँचवीं श० ई० के हैं, अतः उनकी रचना वाल्मीकि के आठ शताब्दियों के बाद हुई थी। इनसे वाल्मीकि के मूलस्रोत के लिए कोई प्रमाण नहीं मिल सकता।

ख – एच० याकोबी का मत

९३. डा० वेबर की भाँति डा० याकोबी भी राम कथा के दो प्रधान आधार मानते हैं। उनका कहना है कि **रामायण** की राम-कथा स्पष्टतया दो स्वतन्त्र भागों के संयोग से उत्पन्न हुई है। प्रथम भाग अयोध्या की घटनाओं से सम्बन्ध रखता है और इसमें दशरथ प्रधान नायक हैं। द्वितीय भाग में दण्डकारण्य तथा रावणवध सम्बन्धी कथा मिलती है, इसका मूलस्रोत वेदों की देवता-सम्बन्धी कथाएँ प्रतीत होता है। डा० याकोबी के इस मत का समर्थन आज भी बहुत से विद्वान करते हैं[2]।

डा० याकोबी **रामायण** का प्रथम भाग, अर्थात् अयोध्या की घटनाएँ

---

१. १. वे० के० दी तेलांग : बाज़ रामायण कांपोट फ्राम होमर, बम्बई १८७३।
एम्० मोनियेर विलियम्स : इंडियन विजडम, पृ० ३१६ टि० १।
एच० याकोबी : वहीं, पृ० ९४ आदि।
ए० ए० मैकडानल : संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ ३०८।
२. दे० एच० याकोबी : वहीं, पृष्ठ ८६,१२७ टि०।
ए० ए० मैकडानल : वहीं, पृ० ३११।
ए० बी० कीथ : संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ ४३।

ऐतिहासिक मानते हैं। यह भाग किसी निर्वासित इक्ष्वाकुवंशीय राजकुमार की कथा पर निर्भर है। मूल-कथा संभवतः इस प्रकार थी—कोई राजकुमार घर से निर्वासित होकर इक्षुमति के तट को छोड़ कर सरयू के तटवर्ती कोशल देश पर अधिकार प्राप्त करता है। बाद में जब उसके इक्षुमति पर निवास का स्मरण न रहा तब वह अयोध्या से ही निर्वासित माना गया।

रामायण के द्वितीय भाग का आधार निर्धारित करने के लिये डा० याकोबी वैदिक साहित्य का सहारा लेते हैं। वैदिक साहित्य में जो राम कथा सबन्धी सामग्री मिलती है उसका विस्तृत निरूपण तथा विश्लेषण निबन्ध के **प्रथम अध्याय** में किया गया है। निष्कर्ष यह है कि वैदिक काल में न तो **रामायण** था और न राम-कथा-सबन्धी गाथाएँ प्रचलित थीं। डा० याकोबी इस निर्णय से असहमत नहीं हैं। लेकिन यह स्वीकार करते हुए भी कि सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, का वैदिक साहित्य मे न तो कोई चरित्र-चित्रण मिलता है न इनके विषय मे कोई कथा-वस्तु ही मिलती है और न इनकी कोई ऐतिहासिकता का ही प्रमाण है; फिर भी वैदिक सीता के व्यक्तित्व से **रामायण** की सीता विकसित हुई और वैदिक साहित्य में राम-कथा के द्वितीय भाग का सूत्रपात मिलता है, यही डा० याकोबी तथा कुछ अन्य विद्वानो का मत है[1]।

६४ डा० याकोबी की धारणा यह है कि **रामायण** के प्रधान पात्रो का प्रतिबिंब वैदिक साहित्य के देवताओं में देखा जा सकता है। उनके अनुसार **रामायण** की सीता तथा वैदिक सीता की अभिन्नता असदिग्ध है। इसके अतिरिक्त गृह्यसूत्रो में सीता 'पर्जन्यपत्नी' तथा 'इन्द्रपत्नी' कही गई है। इससे स्पष्ट है कि राम इन्द्र का एक अन्य रूप मात्र है। वैदिक काल के पशुपालन करने वाले आर्यों के देवता 'इन्द्र' बाद के कृषकों के लिए परिवर्त्तित होकर 'राम' बन गए हैं। पूर्व भारत में वह 'रामदाशरथि' के रूप में तथा पश्चिम में 'बलराम' के रूप में स्वीकृत किए गए थे। बलराम और इन्द्र दोनों गोप हैं। यह विशेषता उनकी मौलिक अभिन्नता की ओर निर्देश करती है। राम दाशरथि और इंद्र की अभिन्नता को प्रमाणित करने के लिए डा० याकोबी इन्द्र के दो प्रसिद्ध कार्यों का प्रतिबिंब **रामायण** में देखते हैं।

---

१. दे० रमेशचन्द्र दत्त : ए हिस्ट्री आव सिविलाइजेशन इन एन्शन्ट इंडिया, पृ० २११। एस० के० बेल्वालकर : उत्तररामचरित, भूमिका पृष्ठ ५९।

इन्द्र का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य वृत्रासुर का वध, वैदिक साहित्य में प्रसिद्ध है (ऋग्वेद १. ३२)। इन्द्र इस वृत्रासुर को (जो ऋग्वेद में 'अहि' कहा गया है) मारते हैं और पर्वतों में रोका हुआ पानी विमुक्त कर देते हैं। सायण के अनुसार वृत्र का अर्थ मेघ है जिसमें पानी वृत्र ही के द्वारा रोका जाता है।[1] इन्द्र और वृत्र का यह वृत्तान्त राम और रावण के युद्ध के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। अतः रावण और वृत्र का मूलरूप एक है। इसके अन्य लक्षण भी मिलते हैं—रावण के पुत्र मेघनाद की उपाधि इन्द्र-जित है और उसका भाई कुंभकर्ण एक गुफा में रहकर एक वृत्र का स्मरण दिलाता है।

इन्द्र का दूसरा कार्य पणियों द्वारा चुराई हुई गायों की पुनः प्राप्ति है (ऋग्वेद २. १०)। देवशुनी सरमा, रसा नदी को पार करके इन गायों का पता लगाती है (ऋग्वेद १०. १०८)। वैदिक काल के पशुपालन करने वाले आर्यों के लिए गायों का जो स्थान था, वही कृषकों के लिए खेतों की सीता का था। फलस्वरूप गायों का हरण सीताहरण में बदल गया। जिस तरह से सरमा इन्द्र की सहायता करती है इसी तरह हनुमान राम के लिए सीता की खोज करते हैं।

९५. आजकल हनुमान विशेषकर गाँवों में लोकप्रिय हैं। इनका **रामायण** में जो चरित्रचित्रण हुआ है वह इस लोकप्रियता का एकमात्र कारण नहीं हो सकता। अतः डा० याकोबी अनुमान करते हैं कि हनुमान कृषिसंबंधी कोई देवता थे, सम्भवतः वर्षाकाल का अधिष्ठाता देवता। वह तो वायु का पुत्र है,[2] बादलों के समान कामरूपी है और आकाश में उड़ता है। वह दक्षिण की ओर से, जहाँ से वर्षा आती है, सीता अर्थात् कृषि के सम्बन्ध में शुभ समाचार लिए राम के पास पहुँचता है। इसके अतिरिक्त इन्द्र का एक नाम 'शिप्रवत्' (. ऋग्वेद ६. १७. २) है। निरुक्त में लिखा है—**शिप्रे हनू नासिके वा**, अतः इससे इन्द्र और हनुमान इन दोनों वर्षा-देव-ताओं का सम्बन्ध निर्दिष्ट होता है।

लक्ष्मण राम के सहायक मात्र हैं। वे कहीं भी घटनाओं की प्रगति को

---

१. एक अन्य मत के लिए दे० विंटरनित्स : वही भाग १, पृ० ८३।

२. इससे उनका नाम 'मारुति' यह नाम वृत्र के विरुद्ध इन्द्र तथा मारुतों के संघ का स्मरण दिलाता है।

बदलने की चेष्टा नहीं करते। फिर भी उनका वैदिक देवता मित्र से सम्बन्ध असंभव नहीं है क्योंकि वे तो सुमित्रा के पुत्र ही हैं।

रामायण के अन्य पात्रों और घटनाओं के विषय में डा० याकोबी बहुत ढूंढने पर भी वैदिक साहित्य में कोई समानता न पा सके।

९६. डा० याकोबी के इस मत के विरुद्ध हम सामान्य रूप से कह सकते हैं कि इसमें कल्पना प्रधान है, लेकिन इस कल्पना को प्रमाणित करने के लिए तर्क कम दिए जाते हैं।

रामायण की सीता के वृत्तान्त पर हम भी वैदिक सीता के व्यक्तित्व का प्रभाव मानते हैं। लेकिन दोनों में जो भिन्नता है वह समानता की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

राम और इन्द्र की अभिन्नता बहुत चित्य है। रावणवध और वृत्रवध तथा सीताहरण और गायों के चुराये जाने में जो थोड़ी सी समानता है वह इस अभिन्नता को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। वैदिक काल के अंत में सीता अवश्य एक बार पर्जन्यपत्नी और एक बार इन्द्रपत्नी कही गई है, लेकिन इस कारण इन्द्र और राम का मूल रूप एक मानना यह नितांत अनावश्यक है।[1] वैदिक साहित्य में बहुत कथाएँ और वृत्तान्त मिलते हैं, जिनसे स्पष्ट है कि साधारण प्रवृत्ति यह है कि जो देवता और पात्र प्रारम्भ में भिन्न थे उनसे संबन्ध रखनेवाली घटनाएँ बाद में मिला दी जाती हैं। डा० याकोबी हम को विपरीत दशा में ले जाना चाहते हैं। फिर यदि राम और इन्द्र का मूल रूप एक है, तब यह समझना कठिन हो जाता है कि राम के चित्रण में इंद्र के अत्यन्त स्पष्ट व्यक्तित्व की असंख्य विशेषताओं का लोप क्यों हो गया है[2]। रावण और वृत्रासुर में, वध किए जाने के अतिरिक्त कोई विशेष समानता नहीं है। वृत्र ऋग्वेद में कहीं भी इंद्रजित के अत्यन्त अनुपयुक्त नाम से विभूषित नहीं किया जाता है। यदि हमको मेघनाद को इंद्रजित अर्थात् रामजित समझना है तो यह नाम भी उचित नहीं है।

हनुमान के सम्बन्ध में भी डा० याकोबी की कल्पना निर्मूल है। हनुमान एक प्राचीन तामिल शब्द 'आण मंदि' अथवा 'आण मंति' (नर-

१. दे० एच० आल्डेन्बर्ग : डी रलिगियोन डेस वेद, पृ० ५७ टि०।

२. दे० ब्र.न नेगेलाइन : वियेना ओरियेन्टल जर्नल, भाग १६, पृष्ठ २४८।

कपि का संस्कृत रूपान्तर है[1]। अत. वे कोई वैदिक, वर्षाकाल के अधिष्ठाता देवता, कदापि नहीं हो सकते।[2]

इन सब आपत्तियों को ध्यान में रख कर हम निस्संकोच कह सकते हैं कि रामायण की उत्पत्ति और इसके मूलरूप के सम्बन्ध में डा० याकोबी का मत समीचीन प्रतीत नहीं होता।

९७. ई० हापकिन्स के अनुसार महाभारत के शांतिपर्व में जो राम-कथा मिलती है, इससे डा० याकोबी के मत की पुष्टि होती है। इस कथा में जो राम का चरित्र मिलता है वह प्राचीन देवता सम्बन्धी आख्यान पर निर्भर होगा। बाद में इससे सीता-कपि की अधिष्ठात्री देवी, की कथा जोड़ दी गयी है और अन्त में वाल्मीकि ने रावण, हनुमान, लंका आदि के वृत्तान्त लेकर उसे और बढ़ाया है।[3]

राम का व्यक्तित्व इन्द्र की कथाओं से विकसित हुआ हो, यह तो शांतिपर्व के प्रसङ्ग के विरुद्ध है। वहां १६ राजाओं के संक्षिप्त वृत्तान्त दिए जाते हैं—सब महान् थे, लेकिन सबके सब मर गए। अतः सृंजय को अपने पुत्र का मृत्यु के कारण शोक नहीं करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त शांतिपर्व के वृत्तान्त में एक वाक्य मिलता है जिससे स्पष्ट है कि वह विकसित राम-कथा पर निर्भर है।

> स चतुर्दश वर्षाणि वने प्रोष्य महातपाः।
> दशाश्वमेधां जारूथ्यानाजहार निरर्गलान्॥
>
> (म० भा० १२. २८. ५६)।

इसमें चौदह वर्ष तक वनवास के बाद दस अश्वमेधों का स्पष्ट उल्लेख है। ई० हापकिन्स के अनुसार वनवास का अभिप्राय यहां वानप्रस्थाश्रम से है। लेकिन एक तो चौदह वर्ष राम कथा का स्मरण दिलाता है और दूसरे वनवास के बाद ही अश्वमेध का उल्लेख है। अतः यहां राम के वानप्रस्थ बनने का अर्थ असभव है।

---

१. दे० एफ० ई० पार्गीटर : वृषाकपि ए हनुमान, ज० रा० ए० सो० १९१३, पृष्ठ ३९७।
सुनीति कुमार चटर्जी : बी० सी० ला कोमेमोरेशन वालूम, भाग १, पृ० ७५।

२. दे० ई० हाप्किन्स : एपिक मिथोलौजी, पृ० १३-१५

३. ई० डब्लू हाप्किम : ज० ए० ओ० सो० भाग ५०, पृष्ठ ८५ आदि।

९८. डा० वान नेगेलैन के अनुसार भी राम-कथा वैदिक साहित्य की सामग्री से विकसित हुई है। वास्तव में उनका मत कष्टकल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अतः उसका विस्तृत निरूपण यहां अनावश्यक है[1]। सार यह है कि पुरुरवा-उर्वशी (ऋग्वेद १०.९५) आदि अप्सराओं का मनुष्यों के साथ विवाह राम कथा का बीज है। सीता सौंदर्य और उनके अलौकिक जन्म का उल्लेख उनके अप्सरा होने का निर्देश है। सीता पृथिवी के मानवीकरण का परिणाम है। राम और पृथु वैन्य (ऋग्वेद १. ११२. १५ आदि) अभिन्न है। पृथु पृथिवी का पुलिंग मात्र है। इत्यादि।

९९. राम हुवास्त्र: डा० याकोबी ने अपने उपर्युक्त मत के प्रतिपादन के पश्चात् आगे चलकर अनुमान किया है कि इरानीय राम हुवास्त्र तथा भारतीय इन्द्र-राम का मूल स्रोत एक है लेकिन वह स्वयं स्वीकार करते हैं कि 'अवेस्ता' के देवताओं के अस्पष्ट और धुंधले व्यक्तित्व के कारण इस प्रश्न का निर्णय असभव है[2]।

राम हुवास्त्र (हुवास्त्र) का उल्लेख 'जेंद अवेस्ता' में प्रायः वायु तथा मिथ् के साथ होता है[3]। राम का अर्थ है 'शांति-विश्राम'; हुवास्त्र का अर्थ है 'चरागाह'; राम-हुवास्त्र का अर्थ है 'चरागाह में विश्राम'[4]। प्रारंभ में वायु तथा मिथ् से राम-हुवास्त्र (अर्थात् चरागाह में विश्राम) के लिए प्रार्थना की जाती थी। बाद में राम हुवास्त्र स्वयं देवता बन गया। वायु दो प्रकार का माना जाने लगा, एक भला और एक बुरा। राम हुवास्त्र तथा अच्छा वायु अभिन्न है[5]। इस राम हुवास्त्र के नाम पर एक पूरा यश्त जेद अवेस्ता में मिलता है। इसका रचनाकाल चौथी श० ई० पू० माना जाता

---

१. दे० वान नेगेलाइन : वियेना ओरियेंटल जर्नल भाग १६, पृष्ठ २२६। एम्० विंटरनित्स : वही, भाग १, पृष्ठ ५१६।

२. दे० एच० याकोबी : वही पृष्ठ १३६।

३. दे० सेक्रेड बुक्स आफ दि ईस्ट, भाग २३ और ३१।

४. दे० वही भाग ३१ पृष्ठ ३२३ छंद १५।

५. डारमेस्टर: एदुद इरानियन (भाग २, १९३) और ले जेंड अवेस्ता (भाग २, ३४९)।

है[1]। इस यश्त में भी राम हुवाख्र का कोई स्पष्ट व्यक्तित्व अंकित नहीं है और इस देवता की उत्पत्ति ध्यान में रखकर हम निस्संकोच कह सकते हैं कि ईरानीय राम हुवाख्र तथा भारतीय राम दाशरथि का कोई संबंध प्रतीत नहीं होता।

१००. यहां एक अन्य राम नामक देवता का उल्लेख असंगत नहीं होगा। एक असिरियन देवता का नाम है रम्मन अथवा रम्मानु, (हीब्रू में इसका नाम रिमोन है तथा सिरियन में हदाद)। रमानु की धातु का अर्थ है मेघगर्जन और वह वज्रपात, आंधी तथा वृष्टि का देवता माना जाता था[2]।

हाब्रू में 'राम' धातु का अर्थ है ऊँचा, श्रेष्ठ। बैबल में इस धातु से अनेक नगरों के नाम तथा दो तीन व्यक्तियों के नाम भी मिलते हैं[3]।

ग— दिनेश चन्द्र सेन का मत

१०१. ए० वेबर तथा एच० याकोबी की भांति दिनेशचन्द्र सेन भी राम-कथा के दो प्रधान मूल स्रोत मानते हैं।[4] एक तो **दशरथ-जातक** जो उत्तर भारत में प्रचलित था तथा दूसरा रावण-सम्बन्धी आख्यान जो मुख्यतया दाक्षिणात्य में प्रचलित थे। इन दोनों के संयोग से राम-कथा उत्पन्न हुई है। एक तीसरा लेकिन गौण आधार हनुमान-सम्बन्धी सामग्री है जिसमें प्राचीन वानर-पूजा का अवशेष देखा जा सकता है।

दशरथ जातक राम-कथा का पूर्व-रूप तथा आधार नहीं हो सकता है, इसके प्रमाण पिछले अध्याय में दिए गए हैं। यहां दिनेश चन्द्र के दो अन्य आधारों पर विचार किया जाएगा।

रावण-सम्बन्धी स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे, जिनका प्रधान विषय

---

१. इ० एम० कागा : दि एज आव यश्तस, ए वाल्यूम आव इस्टर्न एंड इंडियन स्टडीज़, पृष्ठ १३४, ४०।

२. दे० ए० उगड : बैबीलोनियन-एसिरियन डिक्शनरी।
आर० दुसो : ले दकुवर्ट द रास शमरा। (पेरिस १९४१) और ले रलिज़्यो द बाबिलोनी ए दासिरी, (पेरिस १९४५)।

३. दे० एफ० विगुरः दिकासयोनर द ला बिबल, पेरिस।

४. दे० दिनेशचन्द्र सेन : वही पृष्ठ ३, ७, २६, ४१, ५९।

था रावण की धार्मिकता, तपस्या तथा महत्त्व। इस मत को सिद्ध करने के लिए बौद्ध तथा जैन साहित्य का सहारा लिया जाता है। जैन राम-कथा में (दिनेश चन्द्र सेन केवल हेमचन्द्र का उल्लेख करते हैं) राक्षसवंश तथा वानरवंश का जो विस्तृत वर्णन मिलता है, यह इस बात को पुष्ट करता है कि राम की अपेक्षा राक्षस तथा वानर अधिक लोकप्रिय थे। **लंकावतार सूत्र** में रावण तथा बुद्ध का धर्म के विषय में संवाद उद्धृत है और इस ग्रंथ में कहीं भी रावण-राम-युद्ध का और निर्देश मात्र भी नहीं मिलता। अतः रावण, लंका का राजा, राम-कथा की उत्पत्ति के पहिले प्रसिद्ध हो चुका था। धर्मकीर्ति (६ ठी श० ई०) भी आदर्श बौद्ध राजा रावण को **रामायण** के दोषारोपण से बचाने का प्रयत्न करता है।

१०२ यही संक्षेप में दिनेशचन्द्र सेन का तर्क है। सबसे पहले कहना है कि रावण जैनियों के अनुसार जैन-धर्मावलम्बी था और बौद्धों के अनुसार बौद्ध था। अतः दोनों में से कम से कम एक धारणा भ्रामक है।

जैनियों के साहित्य में रावण की कथा स्वतन्त्र रूप से नहीं मिलती। रावण का उल्लेख केवल राम-कथा में ही किया जाता है और जैन राम कथा स्पष्टतया रामायणीय राम-कथा पर निर्भर है (दे० अपर अनु० ५३)। अतः जैन साहित्य में राम-कथा का मूल स्रोत ढूँढना व्यर्थ है।

बौद्ध **लंकावतार सूत्र** अथवा **सद्धर्म-लंकावतार सूत्र** के विषय में दिनेश चन्द्र सेन का तर्क अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह रचना पहले दूसरी श० ई० की मानी जाती थी और इसका प्रथम अध्याय (जिसमें लंकापति रावण तथा बुद्ध का संवाद मिलता है) प्रामाणिक माना जाता था। लेकिन आजकल इसके प्रमाण मिलते हैं कि **लंकावतार सूत्र** चौथी शताब्दी ई० का है और उसका प्रथम अध्याय प्रक्षिप्त है।[1] मूल भारतीय पाठ अप्राप्य है। गुणभद्र ने उसका ४४३ ई० में अनुवाद किया था। इस चीनी अनुवाद में रावण-बुद्ध-संवाद नहीं मिलता और रावण का कोई उल्लेख नहीं है। ५१३ ई० में इस रचना का पुनः चीनी भाषा में अनुवाद किया गया है और इस छठा शताब्दी के अनुवाद में एक नया प्रथम अध्याय मिलता है, जिसमें रावण धर्म के विषय में बुद्ध से प्रश्न करता

१. एम्० विंटरनित्स : वही भाग २, पृ० ३३७।
डॉ० टी० सुजुकी : स्टडीस इन द लंकावतार सूत्र, लन्दन १९३०।

है। इस अध्याय के प्रक्षिप्त होने के अन्तरंग प्रमाण भी मिलते हैं। अन्य अध्यायों में गद्य और पद्य का सम्बन्ध ऐसा है कि पद्य गद्य का अर्थ दुहराता है, तथा सारी रचना बुद्ध तथा बोधिसत्व महामति के संवाद के रूप में है। उनमें कहीं भी रावण का उल्लेख नहीं मिलता। केवल प्रथम अध्याय में पद्य गद्य का अर्थ नहीं दुहराता और इसमें ऐसी कोई सामग्री नहीं है जो सूत्र को समझने के लिए आवश्यक हो। डी० टी० सुजुकि का अनुमान है कि राम कथा की लोकप्रियता के कारण **लंकावतार-सूत्र** का सम्बन्ध इससे जोड़ा गया है। लंकावतार का अर्थ है बुद्ध का लंका में अवतार। लंका दक्षिण में माना जाता था। इसके अतिरिक्त कोई भी निर्देश नहीं मिलता।

रावण सिंहल द्वीप का राजा हुआ हो इसके लिए भी वहां के प्राचीनतम ग्रंथों में कोई प्रमाण नहीं पाया जाता। **दीपवंश** (चौथी श० ई०) तथा **महावंश** (पांचवीं श० ई०) सिंहल द्वीप के सबसे प्राचीन ऐतिहासिक काव्य हैं। इनमें राम कथा का निर्देश मिलता है (दे० महावंश, ६४.४२)। लेकिन सिंहल द्वीप के राजा रावण का कहीं भी उल्लेख नहीं पाया जाता है।

१०३. वाल्मीकि के पहले हनुमान के विषय में आख्यान-काव्य प्रचलित रहा होगा और वाल्मीकि ने उसका प्रयोग अपनी राम-कथा के लिए किया होगा, दिनेशचन्द्र की इस धारणा के लिए कोई प्रमाण नहीं मिलता। यह अनुमान मात्र ही है। वैदिक साहित्य में हनुमान का कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है। बौद्ध त्रिपिटक के जातकों में भी हनुमान का नाम नहीं आया, अतः उनके विषय में राम कथा के पहले स्वतन्त्र आख्यान प्रचलित थे यह बहुत संदिग्ध है। **समुग्ग जातक** (जातक ४३६) में एक वायुस्स पुत्र नामक विद्याधर का उल्लेख मिलता है जो जादूगर था और अन्यत्र भी वायुस्स पुत्त का अर्थ पहले जादूगर था लेकिन इसके सम्बन्ध में न तो हनुमान का उल्लेख हुआ है और न किसी अन्य वानर का।[1]

'हनुमान' शब्द संभवतः एक द्रविड शब्द का संस्कृत रूपांतर है (आण-नर, मन्दि-कपि) जिसका अर्थ है 'नरकपि'। इसी तरह वृषाकपि तथा हनुमान दोनों किसी प्राचीन द्राविड देवता के नाम के रूपान्तर हो सकते हैं।[2] वृषाकपि का उल्लेख

---

१. जर्मन ओरियेन्टल जर्नल : भाग ९३, पृ० ८९।

२. एफ० ई० पार्गीटर : ज० रॉ० ए० सो० १९११, पृ० ८०३ और १९१३ पृ० ३९६।

ऋग्वेद में मिलता है। लेकिन यह मानते हुए कि वृषाकपि का वृत्तान्त एक द्राविड देवता की कथा से विकसित है, इससे राम-कथा के हनुमान तथा वृषाकपि का कोई सीधा सम्बन्ध प्रमाणित नहीं होता। शब्दमात्र के साम्य के अतिरिक्त कथा की कुछ समानता भी आवश्यक है। यह मानते हुए भी कि हनुमान शब्द सचमुच द्राविड 'आण-मन्दि' का रूपांतर है इससे रामायणीय हनुमान के एक प्राचीन द्राविड देवता होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। **रामायण** में हनुमान की शक्ति का वर्णन करने के लिए अतिशयोक्ति का प्रयोग किया गया है फिर भी उसके देवता होने का कहीं भी उल्लेख नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रामाणिक **आदिरामायण** में इस अतिशयोक्ति का भी अभाव था (दे० आगे अनु० ४२२)।

घ—उपसंहार

१०४. उपर्युक्त मतों की सामान्य विशेषता यह है कि राम-कथा का मूलस्रोत निर्धारित करने के लिए दो अथवा तीन स्वतंत्र कथाओं का सहारा लिया जाता है। **दशरथ-जातक** के विषय में डा० वेबर का मत ही संभवतः इस प्रवृत्ति का मूल कारण है।

पिछले अध्याय में यह दिखलाया गया है कि **दशरथ-जातक** का वृत्तान्त ब्राह्मण राम-कथा का विकृत रूप मात्र है और प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण से स्पष्ट है कि राम-कथा के पूर्व रावण तथा हनुमान के विषय में स्वतंत्र आख्यान प्रचलित थे, ऐसा कोई निर्देश नहीं मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि राम-कथा के कारण ही दशरथ, रावण, हनुमान आदि प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। आगे चल कर भी इनका उल्लेख प्रायः केवल राम-कथा-सम्बन्धी सामग्री में मिलता है। यदि कहीं इनका स्वतन्त्र उल्लेख होता है तो यह निश्चित रूप से अपेक्षाकृत अर्वाचीन रचना अथवा किसी प्रक्षेप में है जैसे **लंकावतार सूत्र** में।

रामायण की अंतरंग समीक्षा करने पर बहुत विद्वान इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि अयोध्याकांड की घटनाएं अत्यन्त स्वाभाविक हैं, लेकिन दण्डकारण्य तथा लंका की घटनाएं अलौकिक और काल्पनिक प्रतीत होती हैं।

वास्तव में राम-कथा के इन दो भागों में अन्तर अवश्य पाया जाता है,

लेकिन इसे समझने के लिए राम-कथा के भिन्न भिन्न आधार मानने की आवश्यकता नहीं है। **रामायण** के इस द्वितीय भाग का प्रधान विषय है स्त्रीहरण और उसके कारण युद्ध। अयोध्या से राम के निर्वासन के समान यह भी एक अत्यन्त साधारण घटना प्रतीत होती है। अतः कथावस्तु के दृष्टिकोण से दो भागों में कोई मौलिक अंतर नहीं है। लेकिन इन दोनों भागों के वर्णन में अंतर का आ जाना एक प्रकार से अनिवार्य था। लोकप्रिय नायक को विकट जङ्गलों में निवास करना पड़ता है, एक क्रूर आदिवासी राजा उसकी पत्नी हर लेता है, और नायक असभ्य जातियों की सहायता से युद्ध करके उसे पुनः प्राप्त करता है। इस कथानक के काव्यात्मक वर्णन में अतिशयोक्ति का प्रयोग कितना स्वाभाविक था। प्रतिनायक की क्रूरता, सहायकों की वीरता, युद्ध की तीव्रता आदि अंकित करने के लिए किसी भी देश अथवा भाषा का कवि अनिवार्य रूप से अतिशयोक्ति का सहारा लेता है। कवि मात्र की यह विशेषता ध्यान में रख कर राम-कथा के दो सर्वथा भिन्न भाग मानने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

परिशिष्ट १

क—राम-कथा का ऐतिहासिक आधार

१०५. डा० याकोबी केवल अयोध्याकांड की घटनाओं के लिए ऐतिहासिक आधार मानते हैं। लेकिन अयोध्याकांड तथा **रामायण** के अन्य कांडों के कथानक में कोई मौलिक अन्तर मानने की आवश्यकता नहीं है। यह सम्भवतः प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण से स्पष्ट हो चुका है। अतः समस्त **रामायण** की प्रधान कथा-वस्तु के लिए ऐतिहासिक आधार मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये, यही अनेक विद्वानों का मत है[1]। **वाल्मीकि रामायण** पढ़ कर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि को अपने कथानक की ऐतिहासिकता के विषय में कोई संदेह नहीं है। नायक का छल से बालि का वध करना भी ऐतिहासिकता की ओर निर्देश करता है।

१०६. फिर भी डा० वेबर के अनुसार **रामायण** का समस्त काव्य एक

१. द० एम्० मोनियेर विलियम्स : इंडियन एपिक पोइट्री पृ० ८।
एस्० के० बेल्वलकर : वही पृ० ४०।
एम्० नारायण शास्त्री : ई० ए० भाग २०, पृ० ८-२७।

रूपक मात्र है जिसके द्वारा दक्षिण की ओर आर्य सभ्यता और कृषि का प्रचार दिखलाया जाता है[1]। प्रधान पात्र सीता, जिसका हरण और पुनः-प्राप्ति काव्य की कथा-वस्तु है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति न होकर, खेत की सीता (लांगलपद्धति) का मानवीकरण मात्र है और आर्य कृषि का प्रतीक माना जाना चाहिये। वैदिक सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी और **रामायण** की सीता अभिन्न है। **रामायण** में सीता के जन्म और तिरोधान संबंधी वृत्तान्त इसकी ओर निर्देश करते हैं। उसकी बहन उर्मिला के नाम का अर्थ लहराता हुआ खेत समझना चाहिए। भवभूति के **उत्तर रामचरित** में भी उसके पिता जनक का एक विशेषण 'सीरध्वज' मिलता है, जो कृषि से संबंध रखता है। (डा० वेल्वलकर[2] उसके पुत्र का भी उल्लेख करते हैं—कुश एक घास का नाम है, और लव लुनने से आता है)। आदिवासियों के आक्रमणों में इस सीता, आर्य कृषि के प्रतीक, की रक्षा राम पर निर्भर है। डा० वेबर के अनुसार राम दाशरथि और बलराम (हलभृत्) का संबंध स्वयंसिद्ध है। प्रारंभ में ये एक थे, बाद के विकास में वे दो भिन्न भिन्न पात्रों के रूप में प्रसिद्ध हो गए। राम का वनवास हेमंत ऋतु का प्रतीक है जब प्रकृति और विशेषकर कृषि का कार्य स्थगित होता है।[3] इसके अतिरिक्त **महाभारत** में जहां रामराज्य का वर्णन है, वहां इस बात का विशेष उल्लेख मिलता है कि कृषि की असाधारण उन्नति हुई थी। वास्तव में **महाभारत** के द्रोण पर्व और शांतिपर्व में रामराज्य का वर्णन किया जाता है। इस वर्णन के अनेक श्लोक **रामायण** में भी मिलते हैं। (दे० रा० ६. १८८)। केवल शांतिपर्व में कृषि का उल्लेख हुआ है—

कालवर्षी च पर्जन्यः सस्यानि समपादयत्।
नित्यं सुभिक्षमेवासीद्राम राज्यं प्रशासति ॥ ५३ ॥

---

१. दे० ए० वेबर : वही पृ० १८ आदि और हिस्ट्री आव इंडियन लिटरेचर पृ० १०२
ए० वेबर का मत अंशतः निम्नलिखित ग्रंथों में मिलता है।
रमेशचन्द्र दत्त : वही पृ० २११।
ए० बी० कीथ : संस्कृत लिटरेचर पृ० ४३।
जे० पिंकर्टन : महावीर चरित लन्दन १८७१ पृ० ८ (भूमिका)।

२. उत्तररामचरित : भूमिका पृ० ५९।

३. भारतवर्ष में ग्रीष्मकाल में कृषि नहीं हो सकती। हेमन्त में अवश्य होती है।

नित्यपुष्पफलाश्चैव पादपा निरुपद्रवाः ।
सर्वा द्रोणदुघा गावो रामे राज्यं प्रशासति ॥ ५८

'पर्जन्य यथासमय जल बरसाकर शस्य उत्पन्न करता था। इससे राम राज्य-शासन के समय किसी भांति का दुर्भिक्ष नहीं पड़ता था.....वृक्ष दा फल फूलों से युक्त रहते थे, गायें घड़े परिमाण दूध देती थीं।'

१०७. डा० वेबर का उपर्युक्त मत बहुत समीचीन प्रतीत होता है। राम दाशरथि और बलराम की अभिन्नता के लिए वे कोई प्रमाण नहीं दे सके हैं। इस इस अभिन्नता के विरुद्ध यह कहा जा सकता है कि **भारत** में ये दोनों भिन्न हो माने जाते हैं। वैदिक साहित्य में अनेक राम नामक व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है, जिससे स्पष्ट है कि 'राम' नाम प्रचलित हो चुका था। (दे० ऊपर अनु० ४)।

इसके अतिरिक्त राम की दक्षिण की यात्रा के फलस्वरूप रावण और बालि के स्थान पर उनके भाई विभीषण और सुग्रीव तो राजा बनाए जाते हैं, लेकिन दक्षिण की सभ्यता या कृषि में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन हुआ हो यह **रामायण** में कहीं भी नहीं दिखलाया जाता[1]। अतः हमें मानना पड़ेगा कि जिस उद्देश्य की पूर्त्ति दिखलाने के लिए यह काव्य लिखा गया है वह पूरा न हो सका। यदि सचमुच कवि के मन में कृषि को तथा कृषि-सबंधी देवताओं का विचार सर्वोपरि था तो यह समझ में नहीं आता कि क्यों कृषि को इतना कम महत्त्व दिया गया है[2]। वास्तव में राम-कथा तथा कृषि का कोई विशेष सम्बन्ध मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह भी स्मरण रखने योग्य है कि आर्यों के आगमन के पहले ही कृषि भारतवर्ष तथा दक्षिण में विद्यमान थी।

१०८. जे० टी० हीलर मानते हैं कि राम-कथा ब्राह्म और बौद्ध धर्म दोनों के संघर्ष का प्रतीक है। दिनेशचद्र सेन का विश्वास है कि वाल्मीकि ने बौद्ध भिक्षुपन के प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दू गृहस्थ जीवन का आदर्श पाठकों के सामने रखने के उद्देश्य से **रामायण** लिखा था। (इन दोनों मतों के खंडन के लिए दे० ऊपर अनु० ८६)।

१. ए० ए० मैकडानल; वही पृ० ३११. एच० याकोबी : वही पृ० १२९।
२. हैं० हर्ल हार्फ्स : एपिक मिथोलाजी, पृ० ११-१२

येदातोरे सुब्बराव के अनुसार **रामायण** का अर्थ दार्शनिक है,[1] **रामायण** के भौगोलिक स्थान सचमुच योगशास्त्र के चक्र हैं। ई० मूर भी राम-कथा में एक दार्शनिक शास्त्र का प्रतिपादन देखते हैं।[2]

इतना ही निश्चत है कि ये कल्पनाएं आदि-कवि के मन से कोसों दूर थीं। इनमें इतना ही तत्त्व है कि ऐतिहासिक घटनाओं के साथ साथ कवि निश्चत रूप से आज्ञाकारी राम, पतिव्रता सीता, भ्रातृ-भक्त लक्ष्मण आदि का आदर्श अपने पाठकों के सामने रखना चाहता था। इसी तरह राम नैतिकता के प्रतीक बन गए हैं तथा रावण अधर्म का। लेकिन सारी कथा में रूपक अथवा प्रतीक मात्र देखने के कोई समीचीन कारण नहीं है।

१०६. राम-कथा का ऐतिहासिक आधार मानते हुए भी एम्० वेंकट रत्नम् का विश्वास है कि यह वास्तव में मिस्र देश के रमसेस नामक राजा का इतिहास है[3]। रमसेस के विषय में आधुनिकतम खोज के आधार पर जो कुछ ज्ञात हुआ है उससे स्पष्ट है कि **वाल्मीकि रामायण** का उस राजा का कोई संबंध नहीं हो सकता। मिश्रदेश के प्राचीनतम पौराणिक कथाओं के अनुसार नू (आकाश) तथा गेब (पृथवी) के संयोग से रा अथवा रे (सूर्य) उत्पन्न हुआ।[4] रमसेस का अर्थ है—'रा ने उसे जन्माया' (मस धातु का अर्थ है जन्म लेना)।[5] रमसेस (१२९८-१२३२ ई० पू०) मिश्र देश के महान सम्राटों में से एक हैं। अपने शासनकाल के पूर्वार्द्ध में उनको हित्तैर-संघ के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा। उनकी पहली विजय कादेश (सिरिया) में हुई थी (१२९४ ई० पू०), लेकिन इसके पश्चात् १२७८ ई० पू० तक युद्ध होता रहा। अंत में रमसेस ने विजय प्राप्त करके एक हित्तैर की राजकन्या से विवाह किया और इसके बाद १२३२ ई० पू० तक एक विशाल राज्य का शांतिपूर्वक शासन किया।[6]

१. दे० क्वार्टर्ली जर्नल मिथिक सोसाइटी : भाग २२, पृ० ५१४।
२. दे० ई० मूर : द हिन्दू पेंथियान पृ० ३२९ टि०।
३. दे० वेंकटरत्नम : राम दि ग्रेटेस्ट फैरो आव ईजिप्ट।
४. जे० वान्दिवे : ला लिजिया एजिपशिंबन, पैरिस १९४४।
५. दे० एडुडस : भाग १७३. (१९२२) पृ० १४७।
६. ए० मोरे : हिस्टवार द लोरियन, पेरिस १९३६, भाग २, पृ० ५४७ आदि।

परिशिष्ट २

वानर और राक्षस

११०. राम-कथा के वानर तथा राक्षस वास्तव में प्राचीन विंध्य प्रदेश तथा दक्षिण की आदिवासी अनार्य जातियाँ थीं। इसके विषय में प्रायः मतभेद नहीं है। 'वानर' नाम की उत्पत्ति की समस्या सुलझाने के लिए अनेक अनुमान प्रस्तुत किए गए हैं। सी० वैद्य के अनुसार वानर जाति के लोग सचमुच वानर के समान दिखाई पड़ते थे और इससे उनका यह नाम चल पड़ा[1]। अन्य विद्वान जैन रामायणों का अनुकरण करके मानते हैं कि वानर, ऋक्ष आदि नाम उन जातियों की ध्वजा के कारण उत्पन्न हुए 'जिस जाति की ध्वजा पर बन्दर का चिह्न था वह वानरजाति कहलाती थी, जिसकी ध्वजा पर रीछ का चित्र था वह रीछ कहलाती थी जैसा आज कल रूसियों की ध्वजा पर रीछ का तथा अंग्रेज जाति की ध्वजा पर सिंह का चित्र होने से उन देशों के वीरों को ब्रटिश लैयन्स और रस्सियन बयर्स कहते हैं। जैनों की राम-रावण-कथा में वानरचिह्नांकित ध्वजा मुकुटधारी जाति वानरवंशीय कही गई है।'[2] उपर्युक्त मत असंभव नहीं कहा जा सकता है फिर भी जैनियों ने अनेक स्थलों पर राम-कथा के विषय में बहुत चिन्त्य परिवर्त्तन किए हैं। अतः जैन साहित्य का उपयोग करने में हमें सतर्क रहना चाहिए (दे० पांचवाँ अध्याय)। सबसे स्वभाविक अनुमान यह है कि आज कल के आदिवासियों के समान उन जातियों के भिन्न भिन्न कुल भिन्न भिन्न पशुओं और वनस्पतियों की पूजा करते थे। जिस कुल के लोग जिस पशु या वनस्पति की पूजा करते थे वे उसी के नाम से पुकारे जाते थे। इस पशु अथवा वनस्पति को आज कल के विद्वान 'टोटम' कहते हैं। आधुनिक भारत में ऐसी जातियाँ मिलती हैं जिनके भिन्न भिन्न गिरोहों के टोटम बाघ, बकरा, ऋक्ष, वानर आदि हैं[3]।

---

१. सी० वी० वैद्य : वही पृ० १५३।

२ दे० शिवनन्दन सहाय : तुलसीदास पृ० ४२६।

३. दे० सी वान फूरर: हाइमेनदार्फ, दि रेदिस आव दि विसन हिल्स, पृ० ६२९. (ज० रा० ए० सो १९४८, पृ० १९०) छोटा नागपुर मे रहने वाली ऊराओं नामक द्राविड जाति मे तिग्गा अथवा बजरंगी गोत्र पाया जाता है, जिसका अर्थ हनुमान (बन्दर) ही है। मुण्डा जाति मे भी गडी (अर्थात बंदर) का टोटम मिलता है।

१११. वैदिक साहित्य, विशेष करके **अथर्ववेद** में रक्षस्, राक्षस, पिशाच आदि भूतों का उल्लेख मिलता है। ये मनुष्य के शत्रु हैं, इनके विरुद्ध **अथर्ववेद** में बहुत मंत्र दिए गए हैं। इसी तरह राक्षस एक प्रकार से अनिष्ट, अशुभ, हिंसा और पाप का प्रतीक बन गया था और बाद में राम कथा के क्रूर और हिंसात्मक आदिवासियों को यह नाम मिला होगा। **रामायण** में राक्षसों का जो वर्णन किया जाता है वह **ऋग्वेद** में अनार्य दस्युओं के वर्णन से बहुत कुछ मिलता है। कवि वास्तविक नामों से अपरिचित थे। अतः जो नाम मिलते हैं—वे सब के सब वर्णनात्मक हैं कुंभकर्ण, मेघनाद, रावण (चिल्लाने वाला) दशग्रीव, विभीषण, प्रहस्त (लंबे हाथ वाला) इत्यादि।

११२. यह सब होते हुए भी **रामायण** में कवि ने अद्भुत रस तथा अतिशयोक्ति का बार बार सहारा लिया है और इस कारण राम-कथा को काल्पनिक ठहराने के लिए समालोचकों को आधार अवश्य मिलता है। रावण के दस सिर थे, हनुमान समुद्र लांघते हैं और आकाश में उड़ कर औषध पर्वत ले आते हैं, इस प्रकार के कथन बहुतायत से पाए जाते हैं। फिर भी रावण का केवल एक सिर था ऐसा वर्णन भी **रामायण** के कई स्थलों पर मिलता है[1]। 'दशग्रीव' नाम पहले रूपक के रूप में प्रयुक्त हुआ होगा (दशग्रीव अर्थात जिसका ग्रीव दश अन्य साधारण ग्रीवों के समान बलवान हो) और बाद में वस्तुतः दस ग्रीव धारण करने वाले प्राणी के अर्थ में लिया जाने लगा।

हनुमान के समुद्रलघन की कथा संभवतः किसी आश्चर्यजनक लंघन के आधार पर उत्पन्न हुई है। जब स्पेन की सेना को मेक्सिको में हटना पड़ा तब अलवाराडो नामक सिपाही एक अत्यन्त चौड़ा नाला लांघने में समर्थ हुआ था। यह देख कर मेक्सिको निवासी बोल उठे 'यह सचमुच सूर्य का पुत्र है'। इसी तरह हनुमान की कथा भी उत्पन्न हुई होगी, यह सी० वैद्य का अनुमान है[2]।

परिशिष्ट ३

रामकथा का भूगोल

११३. वाल्मीकि दक्षिण तथा मध्य भारत के भूगोल से अपरिचित थे,

---

१. चिंताहरण चक्रवर्ती : इ० हि० क्वा०, भाग १ पृ० ७७९ आदि

२. दे० वही : पृ० १६०।

इसका प्रमाण **रामायण** को पढ़कर मिलता है। अतः **रामायण** के भूगोल के विषय में जो विस्तृत साहित्य प्रकाशित हो चुका है और हो रहा है, वह अधिकांश अनुमान और कल्पना के आधार पर निर्भर है।

सिंहलद्वीप का सबसे प्राचीन नाम 'टप्रोबाने' है, जो युनानियों में प्रचलित था। अशोक के शिलालेखों में भी यह 'तम्बपत्रि' के नाम से पुकारा जाता है। इसके बाद सिंहल नाम प्रचलित होने लगा। इतना ही निश्चित है कि सस्कृत काव्य मे सिंहल तथा लका भिन्न भिन्न देश समझे जाते थे। भवभूति मुरारि, राजशेखर आदि सिहलदेश को लंका से भिन्न मानते हैं। वराह-मिहिर की **बृहत्-संहिता** में भी दोनों का अलग उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध साहित्य में पहले पहल सिंहल के लिए **लंका** नाम प्रयुक्त होने लगा था (दे० दीपवंश ६.१) और सभवतः दशवीं शताब्दी ई० से इसका प्रयोग व्यापक होने लगा।[1]

अधिकांश आधुनिक लेखक **रामायण** की लका तथा किष्किन्धा दोनों को मध्य भारत में रखते हैं।[2]

---

१. दे० एच० याकोबी : वही पृ० ९०-९३।

२. दे० एम० बी० बोवे : ई० हि० क्वा० भाग ४, पृ० ६९३-७०२।
हीरालाल : झा कामेमोरेशन वाल्यूम, पृ० १५१-६१।
इस साहित्य के सिंहावलोकन के लिए दे० एपिक एन्ड पुरानिक स्टडिस। भडारकर इस्टिट्युट, पृ० १३७-८।

आठवां अध्याय

प्रचलित वाल्मीकिकृत रामायण के मुख्य प्रक्षेप

११४. राम-कथा के प्रारंभिक विकास की रूपरेखा अंकित करने के पूर्व प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** की अंतरंग समीक्षा करके मुख्य प्रक्षिप्त अंशों का पता लगाना है। यही प्रस्तुत अध्याय का विषय है। चतुर्थ भाग में प्रत्येक कांड के विश्लेषण के साथ साथ गौण प्रक्षेपों का भी उल्लेख किया जाएगा।

उत्तरकांड

रामायण के प्रायः समस्त समालोचक उत्तरकांड को प्रक्षिप्त मानते हैं और इसके लिए भिन्न भिन्न तर्क प्रस्तुत करते हैं[1]। यहाँ सब से महत्त्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत किए जाते हैं।

११५. वाल्मीकिकृत **रामायण** के तीन प्रचलित पाठों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि उत्तरकांड की रचना अन्य कांडों के पश्चात् हुई थी (दे० ऊपर अनु० २२-२६)।

११६. युद्धकांड के अंत में जो फलस्तुति मिलती है उससे यह प्रमाणित होता है कि इसके रचना काल तक **रामायण** की परिसमाप्ति यहीं मानी जाती थी। **रामायणमिदं कृत्स्नं** (दे० ६.१२८.११७)।

११७. बालकांड के प्रथम सर्ग में एक अनुक्रमणिका मिलती है जिसमें केवल अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक के विषयों का उल्लेख किया जाता है। बाद में इस अनुक्रमणिका की अपूर्णता का अनुभव हुआ और फलस्वरूप एक दूसरी अनुक्रमणिका की रचना की गई, जिसमें बालकांड की सामग्री के साथ साथ उत्तरकांड का भी निर्देश मिलता है।

---

१. दे० एच० याकोबी : इस रामायण, पृ० २८ आदि ६४।
हृदयनारायण सिंह : क्या उत्तरकांड वाल्मीकि-रचित है!
ना० प्र० स० पत्रिका : १७. पृ० २७०-२८९।

स्वराष्ट्ररंजनं चैव वैदेह्याश्च विसर्जनम् . . २ ॥ ३८ ॥
अनागतं च यत्किंचिद्रामस्य वसुधातले ।
तच्चकारोत्तरे काव्ये वाल्मीकिर्भगवानृषि ॥ ३९ ॥
(२० १.३)

अगले सर्ग में भी उत्तरकांड का उल्लेख है—

प्राप्तराजस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषि : ।
चकार चरितं कृत्स्नं विचित्रपदमर्थवत् ॥ १ ॥
चतुर्विंशत्सहस्राणि श्लोकानायुक्तवानृषि : ।
तथा सर्गशतान्पंच षट् कांण्डानि तथोत्तरम् ॥ २ ॥
(रा० १.४)

इन दो उद्धरणों से स्पष्ट है कि उत्तरकांड की रचना प्रारम्भ हो चुकी थी। फिर भी सीतात्याग को छोड़कर अन्य किसी विषय का उल्लेख न होने के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरकांड उस समय अपना वर्त्तमान रूप और विस्तार नहीं प्राप्त कर पाया था। इस तर्क की पुष्टि इससे होती है कि बाद मे **वाल्मीकि रामायण** के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में एक तीसरी अनुक्रमणिका जोड़ी गई है जिसमें सात कांडों की सामग्री का उल्लेख होता है (दे० ऊपर अनु० २३)।

चौथे सर्ग के उपर्युक्त उद्धरण में २४००० श्लोक तथा ५०० सर्ग **रामायण** का विस्तार कहा जाता है। ध्यान देने योग्य है कि प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के प्रथम छः कांडों में इससे अधिक श्लोक और अधिक सर्ग पाए जाते हैं। अतः सार यह है कि **रामायण** में विषय और विस्तार के जो उल्लेख मिलते हैं उनसे पता चलता है कि उत्तरकांड की रचना बाद में हुई थी।

११८. उत्तरकांड की रचनाशैली अन्य प्रामाणिक कांडों की शैली से सर्वथा भिन्न है। प्रारंभ के ३६ सर्गों तक रावण तथा हनुमान की कथाओं के बाद ही रामचरित का वर्णन किया गया है और तब भी असंगत अंतर-कथाओं के बाहुल्य के कारण कथानक में कोई प्रवाह नहीं है। दे० नृग, निमि, ययाति, श्वेत, इन्द्र, इल आदि के वृत्तान्त)। शेष सामग्री जो आधे से भी कम है, रामचरित से तो संबंध रखती है, लेकिन उसमें भी एकता नहीं प्रतीत होती। सीतात्याग, शत्रुघ्न-चरित, शम्बूक-वध

राम का अश्वमेध तथा सीता का तिरोधान, आदि में कोई विशेष संबंध नहीं है। इसके अतिरिक्त उत्तरकांड में अवतारवाद की व्यापकता भी इस कांड को बाद की रचना सिद्ध करती है।

११९. उत्तरकांड तथा अन्य कांडो मे पारस्परिक विरोधी बातें भी मिलती हैं। उदाहरणार्थ युद्धकांड के अंतिम सर्ग में सुग्रीव, विभीषण आदि के चले जाने का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। फिर भी उत्तरकांड में पुनः इनके प्रस्थान का वर्णन किया जाता है (दे० सर्ग ४०)।

उत्तरकांड में वेदवती का वृत्तान्त दिया जाता है (दे० सर्ग १७)। इसके अनुसार सीता अपने पूर्वजन्म में वेदवती ही थी। यदि यह वृत्तान्त प्रक्षिप्त न होता तो इसका उल्लेख **रामायण** के अन्य कांडों में, जहाँ सीता-जन्म का प्रसग आया है, अवश्य किया जाता।

१२० वाल्मीकिकृत **रामायण** के इन अतरग प्रमाणों के अतिरिक्त एक बात और ध्यान देने योग्य है। **महाभारत** का रामोपाख्यान **रामायण** के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है (दे० ऊपर अनु० ३२)। इसमें रावणचरित की कुछ सामग्री को छोड़कर (और वह प्रारभ में दी जाती है) उत्तरकांड का कोई विषय नहीं आया है और रामोपाख्यान **आदि-रामायण** की तरह रामाभिषेक तथा रामराज्य की स्तुति पर समाप्त होता है। **आदिरामायण** तथा रामोपाख्यान के कारण एक काव्य परम्परा चल पड़ी और शताब्दियों तक चलती रही जिसके अनुसार राम-चरित का वर्णन उनके अभिषेक पर समाप्त किया जाता है।

उदाहरणार्थ—**रावणवह, भट्टिकाव्य** कुमारदासकृत **जानकीहरण** अभिनन्दकृत **रामचरित**, भासकृत **अभिषेक नाटक**, मुरारी का **अनर्घ्य-राघव**, राजशेखर का **बालरामायण**, कम्बनकृत प्राचीनतम **तामिल रामायण**, तेलुगु **द्विपद रामायण** तथा जावा का **काकाविन रामायण**।

बा ल कां ड

उत्तरकांड की भाँति बालकाड भी **आदिरामायण** का अग नही था। डा० याकोबी[1] का यह मत सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिये जा सकते हैं।

१. द० एच० याकोबी: वही, पृ० ५० आदि।

१२१. **रामायण** की पहली अनुक्रमणिका में (सर्ग १) बालकांड की सामग्री का सर्वथा अभाव है। इस अभाव को पूरा करने के उद्देश्य से एक दूसरी अनुक्रमणिका की रचना कर ली गई है (दे० ऊपर अनु० ११७)।

१२२. बालकांड की शैली उत्तरकांड की शैली से बहुत कुछ मिलती जुलती है। इसका प्रायः आधा भाग रामचरित से सम्बन्ध नहीं रखता। सगर-कथा, समुद्रमंथन, विश्वामित्र की कथा आदि वृत्तान्त पुराणों की शैली पर लिखे गए हैं।[1] **रामायण** के प्रामाणिक कांडों में कहीं भी ऐसी पौराणिक कथाएं नहीं मिलतीं।

१२३. बालकांड में जो सामग्री रामचरित से सम्बन्ध रखती है इसका आगे चलकर प्रामाणिक कांडों में कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। यही नहीं, लेकिन इससे विरोधी बातें भी पाई जाती हैं। बालकांड में लक्ष्मण और उर्मिला का विवाह वर्णित है, लेकिन अयोध्याकांड आदि में न केवल कहीं भी उर्मिला का उल्लेख नहीं होता (यद्यपि तीनों निर्वासितों का प्रस्थान विस्तार से चित्रित किया गया है), वरन् अरण्यकांड में लक्ष्मण को अविवाहित भी कहा जाता है (**अकृतदार** दे० ३. १८. ३)।

अयोध्याकांड में भरत की अवस्था के विषय में कहा जाता है—

बाल एत तु मानुल्यं भरतो नायितस्त्वया।

(२. ८. २८)

लेकिन बालकांड में युधाजित् मिथिला में पहुंचकर कहते हैं कि कैकय भरत को सस्त्री देखना चाहते हैं। इसके बाद चार भाइयों के विवाह का वर्णन किया जाता है, लेकिन मिथिला में युधाजित् का और उल्लेख नहीं होता। बालकांड के अन्तिम सर्ग में दशरथ भरत को युधाजित् के साथ राजगृह भेज देते हैं। और इसके बाद बहुत समय बीत जाने का उल्लेख है। (**बहूनृतून्** दे० १. ७७. २५)। फिर भी रामाभिषेक की तैयारी के समय भरत को बालक कहा गया है।

अवतारवाद

१२४. राम-कथा के विकास के दृष्टिकोण से प्रचलित वाल्मीकिकृत

---

१. दे० वी० लेस्नी: युबर डस पुराण-आर्टिग गेप्रेंग डस बालकाड; जर्मन ओरियेन्टल जर्नल भाग ६७, पृ० ४९७-५००।

रामायण की सब से महत्त्वपूर्ण प्रक्षिप्त सामग्री अवतारवाद से संबंध रखती है। अगले अध्याय में अवतारवाद की उत्पत्ति और उसके राम-कथा के विकास में महत्त्व पर विचार किया जाएगा। प्रचलित **रामायण** में इसका विस्तार तथा इसे प्रक्षिप्त मानने के कारण पर विचार करना ही इस परिच्छेद का उद्देश्य है[1]। प्रस्तुत विश्लेषण की विशेषता यह है कि इसमें **रामायण** की अवतारवादी समस्त सामग्री के साथ साथ उसकी भिन्न भिन्न पाठों में उपस्थिति अथवा अभाव का उल्लेख भी किया जाता है।

१. सामग्री का निरूपण

१२५. **बालकांड**: पुत्रेष्टि यज्ञ (सर्ग १५. १८) जिसमें विष्णु का अवतार लेना विस्तार से वर्णित है, ये सर्ग बालकांड में प्रक्षेप माने जाने चाहिये (दे० आगे अनु० ३१६)।

परशुराम राम से कहते हैं कि मैं आपको विष्णु मानता हूं। आपसे पराजय पाना कोई लज्जा की बात नहीं है।

> **अक्षय्यं मधुहन्तारं जानामि त्वां सुरेश्वरम्॥**
> **न चेयं तव काकुत्स्थ व्रीडा भवितुमर्हति।**
> **त्वा त्रैलोक्यनाथेन यदहं विमुखीकृतः॥**
> (७६. १७. १६)

ये श्लोक तीनों पाठों में मिलते हैं।

१२६. यद्यपि बालकांड स्वयं प्रक्षिप्त है फिर भी इसमें केवल इन दो स्थलों पर राम के अवतार होने का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त मूल बालकांड के रचनाकाल में राम अवतार नहीं माने जाते थे, इसके बालकांड में स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं।

राम का उत्कर्ष प्रथम सर्ग का वर्ण्य विषय है, फिर भी इसमें उनके

---

१. दे०-एच० याकोबी: वही, पृ० ६५, १३९।
ई०डब्लू हाप्किन्स: एपिक मिथोलोजी; पृ० २११।
जे० ए० यूर ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स; दूसरा संस्करण भाग ४, पृ० ४४१-९१ और नोट डी।
महाराष्ट्रायः श्री रामायण समालोचना: दूसरा भाग पृ० २४५-५०

अवतार होने का उल्लेख नहीं है, लेकिन केवल उनकी विष्णु से तुलना की जाती है (**विष्णुना सदृशो वीर्य्ये**, श्लोक १८) और अन्त में कहा जाता है कि राम अपना राज्य भोग कर ब्रह्मलोक जाएगें।

रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोक प्रयास्यति (**श्लोक ९७**)।

यदि कवि राम को विष्णु का अवतार मानता होता तो उनकी इहलीला समाप्त होने पर उनके ब्रह्मलोक जाने का उल्लेख नहीं करता।

विश्वामित्र राम से ताडका का वध करने का अनुरोध करके विष्णु द्वारा भृगुपत्नी के वध का उदाहरण देते है (२५. २१) तथा सिद्धाश्रम के विषय मे कहते हैं कि विष्णु ने वहा तप किया था।

इह राम महाबाहो विष्णुर्देवनमस्कृतः।
वर्षाणि सुबहूनीह तया युगशतानि च ॥२॥
तपश्चरणयोगार्यमुवास सुमहातयाः।

(सर्ग २९)

इससे स्पष्ट है कि विश्वामित्र राम के अवतार होने से अनभिज्ञ हैं।

१२७. **अयोध्याकांड** : प्रथम् सर्ग के ३५ प्रारंभिक श्लोक प्रक्षिप्त हैं (दे० आगे अनु० ३९२)। इनमें राम के अवतार होने का उल्लेख है—

स हि देवेमर्दीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभिः।
अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णुःसनातनः॥

(१. ७)

यह श्लोक तीनो पाठों में मिलता है। इसके अतिरिक्त अयोध्याकांड में अन्यत्र रामावतार का निर्देश-मात्र भी नहीं मिलता। 'लोकनाथ' (११०. ३) राम के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन यह राजा की उपाधि भी है और जिस सर्ग में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह भी प्रक्षिप्त है (दे० आगे अनु० ३९२)।

१२८. **अरण्यकांड** : दाक्षिणात्य पाठ में लक्ष्मण राम के दिव्य तथा मानुषिक पराक्रम का उल्लेख करते हैं—

दिव्यं च मानुषं चैवमात्मनश्च पराक्रमम् । (६६. १६)

लेकिन गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में राम के दिव्य तथा मानुषिक अस्त्रों का उल्लेख है—

दिव्यं त्वं मानुषं चास्त्रमात्मनश्च पराक्रमम्
(गौ० रा० ३.७१. १६)

—दाक्षिणात्य पाठ में शबरी राम को देववर कहती है—**त्वयि देववरे राम पूजिते पुरुषर्षभ** (दा० रा० ३. ७४. १२८) परन्तु अन्य पाठों में इस श्लोक का सर्वथा अभाव है ।

एक अन्य स्थल पर (जो तीनों पाठों में मिलता है) राम सारा जगत नष्ट करने की धमकी देते हैं (दे० दा० रा० ३. ६४. ७०), लेकिन इसमें उनके अवतार की ओर निर्देश देखना अनावश्यक है । यह तो उनको दिए हुए दिव्य अस्त्रों का प्रभाव माना जा सकता है ।

१२९. **किष्किंधाकांड** : इस कांड में अवतार सम्बन्धी कोई सामग्री नहीं मिलती । सुग्रीव तो लक्ष्मण से राम के विषय में 'तस्य देवस्य' शब्द का प्रयोग करते हैं (३६. ६), लेकिन इससे अवतारवाद की भावना देखना व्यर्थ है । आदरार्थ इस शब्द का राजाओं, ब्राह्मणों आदि के लिए प्रयोग होता है ।

१३०. **सुन्दरकांड** : दक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ में हनुमान् अशोकवन प्रवेश करने के पहले देवताओं की तथा राम-लक्ष्मण और सीता की स्तुति करते हैं,

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्राग्निमरुद्गणेभ्य :
(दा० रा० ५. १३. ५०)

न केवल इस दीर्घ छन्द का, लेकिन सारे प्रसंग (दा० रा० ५. १२. ५४. ६७) का गौडीय पाट में अभाव है ।

—हनुमान-रावण संवाद का एक अंश (दा० रा० ५. ५१. ३६-४५) गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में नहीं मिलता । इसमें हनुमान राम के

विषय में कहते हैं कि वह 'विष्णुतुल्यपराक्रम, सर्वलोकेश्वर, लोकत्रयनाथ,- आदि हैं।

१३१. **युद्धकांडः** उत्तरकांड के बाद इसमें अवतारवादी सामग्री सबसे अधिक मिलता है। यह अस्वाभाविक भी नहीं प्रतीत होता है क्योंकि युद्धकाँड सबसे अधिक विस्तृत है तथा इसमें अपेक्षाकृत अधिक प्रक्षेप भी जोड़े गए हैं। रावण से युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए मंत्री कहता है,

लंघनं च समुद्रस्य दर्शनं च हनूमतः।
वध तु रक्षसां युद्धे कः कुर्यान्मानुषो युधि॥

(दा० रा० ३४. २२ अन्य पाठों में भी है)

डा० याकोबी के अनुसार यह सर्ग एक विस्तृत प्रक्षेप में (सर्ग २३.४०) आया है (दे० आगे अनु० ४७६)।

१३२. सुग्रीव विभीषण से कहते हैं कि राम और लक्ष्मण गरुड पर अधिष्ठित हैं—

गरुडाधिष्ठितावावुभौ राघवलक्ष्मणौ (दा० रा ५०. २२)।

यह श्लोक अन्य दोनों पाठों में नहीं मिलता।

१३३. सर्ग ५६ अनेक कारणों से प्रक्षिप्त माना जाता है (दे० आगे अनु० ४८१)। इसमें दो स्थलों पर कहा गया है कि लक्ष्मण तब संज्ञा प्राप्त करते हैं जब वह अपने विष्णु का अंश होने का स्मरण करते हैं (दे० दा० रा० ६. ५६. ११०-१२० तथा अन्य पाठों के समानान्तर स्थल)।

१३४. मंदोदरी-विलाप तीनों पाठों में मिलता है। दाक्षिणात्य पाठ में इसका विस्तार १२६ श्लोक का है, गौडीय पाठ में ८२ का तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ में केवल ६३ का। तीनों में राम को विष्णु का अवतार कहा गया है, लेकिन दाक्षिणात्य पाठ के जिन श्लोकों में इसका उल्लेख हुआ है वे अन्य पाठों में नहीं मिलते और अन्य पाठों के अवतार-संबंधी श्लोक दाक्षिणात्य में नहीं पाए जाते हैं। उदाहरणार्थः

१. गौडीय पाठ में

अथवा रामरूपेण विष्णुश्च स्वयमागतः।
तव नाशाय मायामि प्रविश्यानुपलक्षितः॥

(६५. ६)

दाक्षिणात्य पाठ में—

अथवा रामरूपेण कृतान्तः स्वयमागतः।
मायां तव विनाशाय विधायाप्रतीतर्किताम्
(१११. ६)

इससे यह ध्वनि निकलती है कि स्वतन्त्र रूप से तीनों पाठों में अवतार-वादी सामग्री बाद में आ गई है।

१३५. अग्निपरीक्षा के समय देवता आकर राम की विष्णु-रूप में स्तुति करते हैं (दे० दा० रा० सर्ग ११७ तथा अन्य पाठों के समानान्तर स्थल) इस सर्ग के प्रक्षेप होने मे कोई संदेह नहीं है (दे० आगे अनु० ४८३)। इसमें सीता और लक्ष्मी की अभिन्नता का भी उल्लेख है (दे० श्लोक २७)।

१३६. दाक्षिणात्य पाठ में दशरथ राम से कहते हैं कि वह पुरुषोत्तम ही हैं (दे० ११६. १७)।

इदानीं च विजानामि यथा सौम्य सुरेश्वरैः।
वधार्यं रावणस्येह पिहितं पुरुषोत्तमम्॥

गौडीय पाठ में इस श्लोक में अवतार का उल्लेख नहीं है—

इदानीं च विजानामि यथा सौम्य सुरेश्वरैः॥ १८॥
वधार्यं रावणस्येह त्वं वनवासाय दीक्षितः।
(सर्ग १०४)।

दोनों की तुलना करने से स्पष्ट है कि किस तरह श्लोक को बदल कर अवतारवादी सामग्री जोड़ी गई है।

इसके बाद दशरथ लक्ष्मण को भी सबोधित करके राम को पुरुषोत्तम-अक्षर ब्रह्म आदि मानते हैं। यह अंश तीनों पाठों में तो मिलता है, लेकिन वह राम से जो संवाद हुआ है उसका अनुकरण मात्र प्रतीत होता है (दे० ११६. २७. ३५)।

१३७. दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ की फलस्तुति में विष्णु और राम की अभिन्नता मानी जाती है।

प्रियते सततं रामः स हि विष्णुः सनातनः ।
आदिदेवो महाबाहुर्हरिर्नारायणः प्रभुः ॥

(दा० रा० १२८. ११७)

गौडीय पाठ में यह श्लोक नहीं मिलता ।

१३८. उपर्युक्त उद्धरणों के अतिरिक्त कुछ और सामग्री का उल्लेख करना है जो दाक्षिणात्य पाठ मे नहीं मिलती—

(१) पश्चिमोत्तरीय पाठ में, नागपाश के वृत्तान्त मे, नारद राम के पास पहुँचकर उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाते हैं ।

(दे० प० रा० ६. २७. ७-४१) ।

(२) गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ में एक सर्ग मिलता है जिसमें रावण से अनुरोध किया गया है कि वह राम से युद्ध न करे क्योंकि राम मनुष्य नहीं हैं (दे० गौ० रा० सर्ग ३३, प० रा० सर्ग ३५) ।

(३) गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ में कुम्भकर्ण का एक भाषण उद्धृत है जिसमे वह कहता है कि नारद ने उसे विष्णु के एक अवतार द्वारा रावण-वध का रहस्य बतलाया था (दे० गौ० रा० सर्ग ४०, प० रा० सर्ग ४१) ।

१३९. **उत्तरकांड** : उत्तरकाड मे राम के अवतार होने का उल्लेख निम्नालांखित सर्गों म मिलता है ।

८, १७, २७, ३०, ५१, ७६, ९८, १०४, १०६, ११०, ११, ३७प्र० २-४, ५९प्र० २ ३ ।

इसके अतिरिक्त नागरिकों की राम के प्रति दृढ़भक्ति का उल्लेख किया जाता है (दे० दा० रा० १०७ १६ और ३७ प्र० ३) ।

दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षिप्त सर्ग मे (३७ प्र० ३) जो अन्य पाठों मे नहीं मिलता, सीता को भी लक्ष्मी का अवतार कहा गया है ।

तर्क

१४० उपर्युक्त सामग्री के निरूपण से स्पष्ट है कि प्रामाणिक कांडों की अवतारवादी सामग्री, जो तीनों पाठो में मिलती है, नहीं के बराबर है । और जो सामग्री तीनों पाठो मे मिलती है वह एक ऐसे अंश में पाई जाती जो स्पष्टतया प्रक्षिप्त है ।

अवतारवाद की बाद की भावना मानने के लिए यही सबसे महत्त्व-पूर्ण तर्क प्रतीत होता है। फिर भी इसके अतिरिक्त और प्रमाण भी दिए जा सकते हैं।

१४१. **रामायण** के प्रधान पात्र भी राम के अवतार होने से परिचित नहीं हैं। इस तर्क के विरुद्ध संभवतः कहा जा सकता है कि यह आवश्यक नहीं है कि वे राम को अवतार समझें। फिर भी उत्तरकालीन राम-काव्य में प्रायः सब पात्र राम को अवतार मानकर उन से प्रार्थना करते हैं, जिससे स्पष्ट है कि इस तर्क में कुछ तत्व है।

सीता अपने आपको साधारण स्त्री मानती है और अपने इस जन्म के दुःखों के कारण पूर्वजन्म के किए हुए पाप समझती हैं (दे० रा० ५ २५. १८; ६. ११३ ३६-३७; ७. ४८. २-४)। यहां नहीं, राम का अवतार होना भी उनसे छिपा हुआ है। वह राम की तुलना विष्णु से करती हैं (५. २१ २८; ५ ३८. ६५)। राम की राक्षसों के प्रति हिंसात्मक प्रवृत्ति देख कर वह राम के परलोक के विषय में चिंतित हैं (३ ६. १२) और जब रावण उनसे अनुरोध करता है कि वह राम, साधारण मनुष्य को, छोड़ दे (दे० ३ ४८ १४) तो वह उत्तर नहीं देती कि राम साधारण मनुष्य नहीं हैं। युद्ध के समय भी वह राम को अमर नहीं समझती।

लक्ष्मण भी राम को सान्त्वना देते हुए कहते हैं :

प्राप्स्यसे त्वं महाप्राज्ञ मैथिलीं जनकात्मजां।
यथा विष्णुर्महाबाहुर्वलिं बद्ध्वा महीमिमां॥

(३. ६१ २४)

हनुमान राम की तुलना विष्णु से करते हैं (५. ३४. २६; ५. ३७. २४) और राम से कहते हैं कि जिस तरह विष्णु गरुड़ पर आरूढ होते हैं इसी तरह आप मेरी पीठ पर चढ़िए—

मम पृष्ठं समारुह्य राक्षसं शास्तुमर्हसि॥१२२॥
विष्णुर्यथा गरुत्मन्तमारुह्यामरवैरिणम्।

(६ ५६)

राम का दूत बन कर हनुमान रावण से कहते हैं कि मैं विष्णु की ओर से नहीं आया हूं, लेकिन राम की ओर से,

विष्णुना नास्मि चोदितः ॥ १३ ॥
केनचिद्रामकार्येण आगतो ऽस्मि तवान्तिकम् ॥ १८ ॥
(रा० ५. ५०)।

इसी तरह और उदाहरण दिए जा सकते हैं। अगस्त्य राम को विष्णु का धनुष देते हुए राम और विष्णु की अभिन्नता से परिचित नहीं हैं—

इदं दिव्यं महच्चापं हेमवज्रविभूषितम्।
वैष्णवं पुरुषव्याघ्र निर्मितं विश्वकर्मणा ॥३२॥
(३. १२)

१४२ उपर्युक्त तर्क राम पर भी लागू होता है। राम न केवल नारायण से प्रार्थना करते (दे० २ ६. १) विधाता के विरुद्ध अपराध करने से डरते हैं (दे० २ २२ १४), । अधर्म और परलोक के भय से राज्याधिकार नहीं प्राप्त करते (२ ५३ २६), वरन् वह अपने आप को साधारण मनुष्य समझ कर विश्वास करते हैं कि पूर्वजन्म के किए हुए पापों का मुझे इसी जन्म में फल भोगना है—

पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि... ।(३ ६३ ४)
किं मया दुष्कृत कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि । (६ १०१ १८)

रावणवध के बाद राम सीता से कहते है,

या त्वं विरहिता नीता चलचित्तेन रक्षसा।
दैवसंपादितो दोषो मानुषेण मया जितः ॥५॥
(६. ११५)

इसके अतिरिक्त अवतारवाद की भावना की नवीनता राम की ब्रह्मा के प्रति उक्ति से स्पष्ट है—'मैं तो अपने आप को मनुष्य, दशरथ का पुत्र, समझता हूं। वास्तव में मैं कौन हूं, कहाँ से आया हूं इसे आप मुझसे कहिये'।

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्।
सो ऽहं यश्च यतश्चाहं भगवांस्तद् ब्रवीतु मे ॥
(६ ११७. ११)

१४३. ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि **रामायण** के अनेक पात्र राम की तुलना विष्णु से करते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे राम और विष्णु

को भिन्न समझते हैं। अन्य स्थलों पर भी कवि स्वयं इस तुलना का प्रयोग करते हैं (१. ७८. २६; ६. ५६. १२५) अथवा अन्य पात्रों द्वारा करवाते हैं : अनसूया (२. ११८. २०), देवता (३. २३. २६. ३. २४. २२; ३. ३०. ३२), अयोध्या-निवासी (२. २ ४३)।

न केवल राम की परंतु अन्य पात्रों की भी तुलना विष्णु से की जाती है। उदाहरणार्थ : रावण (७. २०. ५), अतिकाय (६ ७१ ८), इन्द्रजित् (६. ७३. ७), हनुमान (६. ५६. ३८)।

दूसरी ओर राम की तुलना अन्य देवताओं से भी की जाती है – इन्द्र, ब्रह्मा (१. १. १३; १. ७८. २५; २ ३०. २७, २. ६६ २६; ३. २३. ४; ४. २६. २ आदि), रुद्र (४. १६. ३८ आदि), बृहस्पति (१. १. ३२; १. १. ३६; २. २. ३० आदि), कुबेर या वैश्रवण (२ १६. ८. १ १ १६; २. १६. ४६ आदि) वरुण (३. ३७. ३ आदि), धर्म (१ १. १६) कामदेव (३. ३४. ६ आदि), अग्नि (५ ३६. ५३), यम (२ १ ३६), पर्जन्य (२. १. ३६; २. ३. २६)।

विष्णु तथा इन्द्र से जो तुलना की गई है, इससे स्पष्ट है कि **आदि रामायण** में विष्णु की अपेक्षा इन्द्र का स्थान ऊँचा माना गया था। राम की तुलना विष्णु से १८ बार की जाती है, इन्द्र से ७७ बार। कई स्थलों पर राम तथा लक्ष्मण की तुलना क्रमशः इन्द्र तथा विष्णु से की गई है जिससे स्पष्ट है कि विष्णु की अपेक्षा इन्द्र श्रेष्ठ माने जाते हैं (६ ६६. १२; ६. ३३. २८; ३. ६८ २८)। एक उदाहरण पर्याप्त होगा,

ततो राममभिक्रुष्य सौमित्रिरभिवाद्य च।
तस्थौ भ्रातृसमीपस्थः शक्रस्येंद्रानुजो यथा॥

(६. ६१. ४)

इस उद्धरण में वैदिक साहित्य के अनुसार विष्णु इन्द्र के अनुज माने जाते हैं। वैदिक साहित्य के अनुसार भी प्रामाणिक **आदिरामायण** में इन्द्र सर्वश्रेष्ठ देवता थे। राम की विजय इन्द्र की सहायता से होती है (दे० ६. १०२), यह भी इन्द्र की श्रेष्ठता सूचित करता है।

अरण्यकाण्ड में इसका एक ज्वलंत उदाहरण और मिलता है। इन्द्र

शरभंग से बातचीत करते हुए और राम को आते देख कर साथ के देवताओं से कहते हैं — 'राम इधर आ रहे हैं। मेरे साथ चले जाना क्योंकि राम मुझ को देखने के योग्य नहीं हैं। जब राम रावण पर विजय प्राप्त करेंगे तब मैं उनको देखूंगा' (दे० रा० ३. ५. २२)।

गौडीय पाठ इससे अधिक संक्षिप्त है —

यास्याम्यहमयं रामो यावन्मां नाभिभाषते।
कृतार्थमनमच्चिराद् द्रष्टास्म्यहमरिंदमम्॥

(गौ० रा० ३. ६. १७)

इस वृत्तान्त से जो ध्वनि निकलती है वह विष्णु-नारायण-अक्षर ब्रह्म के अवतार राम (६. ११७) की भावना से कितनी दूर है।

नवां अध्याय

राम-कथा का प्रारंभिक विकास

क–राम-कथा-संबंधी गाथाएं और आख्यान-काव्य

१४४ वैदिक साहित्य मे आख्यान इतिहास तथा पुराण मिलते है। ये ब्राह्मणों के अर्थवाद का एक आवश्यक अंग समझे जाते थे। प्राचीन काल मे धार्मिक सस्कारों तथा यज्ञों के अवसर पर ऐतिहासिक तथा पौराणिक इन्हे सुनाते थे[1]। अर्वाचीन वैदिक साहित्य मे ये पाचवां वेद कहे जाते हैं—**इतिहास पुराणं पंचमं वेदानां वेदं** (छान्दोग्य उप० ७. १. २)।

आख्यानों के गद्य के साथ जो पद्य दिया जाता था उसे गाथा कहा गया है। प्रारम्भ से ही दानस्तुति-स्वरूप 'नाराशंसी' गाथाओं का उल्लेख मिलता है (दे० ऋग्वेद १०. ८५. ६) और इसके विषय मे कहा जाता है कि ये झूठी हैं ('गाथानृत' 'नाराशंसा' दे० काठक संहिता १४. ५)। इन नाराशंसी गाथा-साहित्य के रचयिता तथा रक्षक राजदरबारों में रहनेवाले सूत थे। इनके अतिरिक्त कुशीलव जनसाधारण मे इन गीतों का प्रचार करते थे[2]।

१४५. वाल्मीकि के पूर्व राम कथा सबंधी गाथाएं प्रचलित हो चुकी थीं। इसका प्रमाण हमे बौद्ध तिपिटक मे मिलता है। एक ओर राम-कथा-सम्बन्धी गाथाएं **रामायण** पर नहीं निर्भर हो सकती हैं और दूसरी ओर बौद्ध गाथाओं मे जो राम-कथा-सम्बन्धी सामग्री मिलती है वह **रामायण** के आधार के लिए पर्याप्त नहीं है। अतः दोनों प्राचीन राम कथा-सम्बन्धी आख्यान काव्य पर निर्भर हैं (दे० कथा अनु० ८८)। **दशरथ-जातक** की वर्त्तमान कथा मे जो 'पोराणिकपंडिता' शब्द आया है इससे भी इस निर्णय की पुष्टि होती है। इसके अतिरिक्त **हरिवंश** के एक श्लोक में राम-कथा के इस मूल स्रोत का उल्लेख मिलता है। राम कथा के अत्यन्त सक्षिप्त वर्णन के पश्चात् इस प्रकार लिखा है,

---

१. दे० शतपथ ब्राह्मण : १३. ४. ३, शांखायन गृ० सू० १. २३. ११ आदि

२. दे० एम० विंटरनित्स: हि० इं० भाग १, पृ० ३१८।

गाथा अप्यत्र गायंति ये पुराणविदो जना : ।
रामे निबद्धतत्त्वार्था महात्म्यं तस्य धीमत : ॥
(अध्याय ४१. १४६)

इसमें अवश्य **रामायण** की ओर निर्देश देखा जा सकता है। फिर भी इसमें **रामायण** के पूर्व की प्राचीन गाथाओं का निर्देश देखना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है।

१४६. इस राम-सम्बन्धी गाथा साहित्य की उत्पत्ति इक्ष्वाकु-वंशमें हुई होगी। प्राचीन काल से **रामायण** के विषय में प्रसिद्ध है कि यह इक्ष्वाकु-वंश में उत्पन्न हुआ। **रामायण** में लिखा है,

इक्ष्वाकूलामिद तेषां राज्ञां वंशे महात्मानाम् ।
महदुत्पन्नमाख्यानं रामायणमिति श्रुतम् ।
(रा० १. ५. ३)

रामायण की भांति राम-सम्बन्धी आख्यान साहित्य भी इस वंश में उत्पन्न हुआ होगा। राम इक्ष्वाकुवंशीय थे। अत इक्ष्वाकु-वंश के सूतों ने इनके विषय में गाथाएं तथा आख्यान सुनाए होंगे। इसी तरह राम का चरित्र लेकर स्फुट आख्यान-काव्य का एक विस्तृत साहित्य बढने लगा। **महाभारत** के द्रोणपर्व तथा शांतिपर्व में जो संक्षिप्त राम-चरित मिलता है यह इस प्राचीन आख्यान-काव्य पर निर्भर प्रतीत होता है। साथ साथ **महाभारत** में राम-कथा की उपस्थिति इस बात को प्रमाणित करती है कि राम-सम्बन्धी आख्यान काव्य का प्रचार कोशल प्रदेश तक ही सीमित न था वरन पश्चिम की ओर भी फैलने लगा था जहां **महाभारत** की रचना हुई थी। पाली त्रिपिटक के रचनाकाल में अर्थात् चौथी शताब्दी ई० पू० में इस राम कथा-सम्बन्धी आख्यान काव्य का पर्याप्त प्रचार हो चुका था (दे० ऊपर अनु० ८८)। दूसरी ओर विस्तृत वैदिक साहित्य में राम-कथा-सम्बन्धी गाथाओं का कहीं भी निर्देश नहीं मिलता (दे० उपर अनु० २०)। अतः वैदिक काल के बाद और चौथी श० ई० पू० के पहले, संभवतः छठी श० में इस राम-कथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य की उत्पत्ति हुई थी। वास्तव में इसका निश्चित् रचनाकाल निर्धारित करने के लिए कोई आधार नहीं मिलता।

ख—आदिरामायण की उत्पत्ति

१४५. जिस दिन किसी कवि ने राम-कथा-सम्बन्धी स्फुट काव्य का सकलन करके उसे एक ही कथा-सूत्र में ग्रथित करने का निश्चय किया था उस दिन रामायण उत्पन्न हुआ। यह कवि कौन था? परम्परा वाल्मीकि को आदि-कवि मानती है। वास्तव में वाल्मीकि के पूर्व किसी कवि ने **आदिरामायण** की सृष्टि की है इसके लिए कोई प्रमाण नहीं है। फिर भी च्यवन का जो उल्लेख अश्वघोषकृत **बुद्धचरित्र** में मिलता है ध्यान देने योग्य है,

वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्यं
जग्रन्थ यन्न च्यवनो महर्षिः ॥
(१.४३)[1]

जिस काव्य की रचना करने मे च्यवन समर्थ नहीं थे उसकी वाल्मीकि ने सृष्टि की। इससे यह ध्वनि निकलती है कि वाल्मीकि के पूर्व च्यवन ने रामचरित सम्बन्धी सामग्री एक ही काव्य मे सकलित करने का प्रयत्न किया था। **महाभारत** में च्यवन भृगु का पुत्र माना जाता है—

भृगोमहर्षेः पुत्रो ऽभूच्च्यवनो नाम भार्गवः।
(म० भा० ६. १२२. १)

भार्गव-कृत **रामचरित** का जो उल्लेख **महाभारत** के शांतिपर्व में मिलता है, सभवतः इसी च्यवन की रचना की ओर निर्देश करता है,

श्लोकश्चायं पुरा गीतो भार्गवेन महात्मना।
आख्याते रामचरिते नृपतिं प्रति भारत ॥ ४० ॥
(शांतिपर्व. ५६)

जिस श्लोक के विषय मे यह कहा जाता है वह तो वाल्मीकिकृत **रामायण** पाया जाता है, लेकिन इससे च्यवन तथा इस भार्गव की अभिन्नता के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिलता, क्योंकि वाल्मीकिकृत **रामायण** भी च्यवन कृत **राम-चरित** पर निर्भर माना जा सकता है। बाद में वाल्मीकि को भार्गव माना गया है लेकिन **महाभारत** तथा **रामायण**

१. ई० एच० जानस्टन का सस्करण : कलकत्ता १९३५, ई० बी० कावेल के सस्करण मे 'वाल्मीकिनादश्च ससर्ज पद्य' ऐसा पाठ मिलता है।

में इनके भार्गव होने के उल्लेख नहीं है। उत्तरकाड में भार्गव च्यवन का जो उल्लेख हुआ है इसमें वाल्मीकि से कोई सम्बन्ध नहीं सूचित किया गया है (दे० सर्ग ६०)। अतः च्यवन ने वाल्मीकि के पूर्व राम-चरित-सम्बन्धी काव्य की रचना की है यह असंभव नहीं कहा जा सकता है। लेकिन इसके लिए केवल संकेत मिलते हैं, प्रमाण नहीं।

एक अन्य कल्पना भी की जा सकती है। **महाभारत** की एक कथा (दे० ऊपर अनु० २६) भार्गव च्यवन का उल्लेख किया गया है। निश्चल खडे रहने के कारण उनका सारा शरीर वल्मीक से आच्छादित था। इस कारण च्यवन का एक अन्य नाम संभवतः वाल्मीकि ही चल पड़ा। (वह महाभारत के वाल्मीकि नामक ऋषि से अभिन्न हो सकते हैं)। बाद में यह कथा संभवतः कवि वाल्मीकि के विषय में कही गई हो और फल-स्वरूप कुछ प्रान्तों में कवि वाल्मीकि का नाम भार्गव तथा अन्य प्रान्तों में च्यवन भी माना गया हो।[1]

१४८. **आदि-रामायण** के विषय में एक अन्य प्रश्न यह है कि इसमें राम के चरित्र का कितना अंश वर्णित था। पिछले अध्याय मे स्पष्ट है कि **आदिरामायण** में न तो उत्तरकांड था, न बालकांड था और न अवतारवाद। कई विद्वान और आगे बढ़कर मानते हैं कि राम, रावण तथा हनुमान के विषय में पहले स्वतन्त्र आख्यान-काव्य प्रचलित थे और इनके संयोग से **रामायण** की उत्पत्ति हुई है। सातवें अध्याय में यह दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि इस मत को सिद्ध करने के लिए कोई समीचीन प्रमाण नहीं दिए जा सकते हैं। अतः **आदिरामायण** के लिखे जाने मे भिन्न-भिन्न सोपान माने जाते हैं इनके लिए भी कोई आधार नहीं मिलता।[2] इस मत के अनुसार **रामायण** के विकास के प्रथम सोपान में राम को हिमालय प्रदेश में निर्वासित किया जाता है तथा सीता और लक्ष्मण उनके साथ जाते हैं। द्वितीय सोपान में वनवास का स्थान गोदावरी के तट पर माना जाता है और राम आदिवासियों के आक्रमणों से तपस्वियों की रक्षा करते हैं। तृतीय सोपान में दक्षिण के निवासियों को अधीन करने के आर्यों

---

१. कृत्तिवास के रामायण के अनुसार वाल्मीकि च्यवन के पुत्र थे। दे० प्रारंभ मे रत्नाकर की कथा।

२. दे० मी० लैम्मनः इंडिया आलटरतुम्मकंडे, १८७४, भाग २, पृ० ५०५।

के प्रारंभिक प्रयत्नों का वर्णन मिलता है। अन्तिम सोपान सिंहलद्वीप की जानकारी के कारण उत्पन्न हुआ। इसमें राम द्वारा सिंहल की विजययात्रा का वर्णन **रामायण** में जोड़ा गया है। राम के कारण दक्षिण अथवा लंका के निवासी आर्यों के अधीन हो गए थे इसकी ओर **रामायण** में कोई निर्देश नहीं है। इसके अतिरिक्त लंका तथा सिंहल की अभिन्नता भी अत्यन्त संदिग्ध है (दे० ऊपर अनु० ११३)।

इसी तरह **आदिरामायण** के न तो भिन्न भिन्न मूलस्रोत और न इसके लिखने में उपर्युक्त सोपान मानने की कोई अवश्यकता प्रतीत होती है। अतः **आदिरामायण** राम-सम्बन्धी स्फुट आख्यान काव्य के आधार पर लिखा गया है और इसमें अयोध्यकांड से लेकर युद्धकांड तक की कथावस्तु विद्यमान थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रचलित वाल्मीकिकृत **रामायण** के इन पाच कांडों में **आदिरामायण** का मूलरूप सुरक्षित है। इनमें भी बहुत प्रक्षेप पाए जाते हैं। प्रक्षेप जोड़ने की प्रवृत्ति प्रारम्भ ही से विद्यमान थी यह **रामायण** के भिन्न भिन्न कांडों की तुलना से स्पष्ट है दे० ऊपर अनु० २२ २६) और शताब्दियों तक बनी रही (यह मध्यकालीन टीकाकारों के साक्ष्य से ज्ञात है)। निबन्ध के चतुर्थ भाग में प्रत्येक कांड के विकास और प्रक्षिप्त सामग्री पर विचार किया जायगा।

आदिरामायण के विस्तार के विषय में **बौद्ध महाविभाषा** में कहा जाता है कि **रामायण** में १२००० श्लोक मिलते हैं (दे० ऊपर अनु० ७६)। अतः **आदिरामायण** के विकास में एक ऐसा समय था जब वह आजकल प्रचलित **रामायण** के आधे भाग से भी कम विस्तृत था।

१४६. **आदिरामायण** क्षत्रियों की सम्पत्ति थी। इसमें आदर्श क्षत्रिय सत्यसंध राम की महिमा प्रतिपादित की गई थी। मोक्ष तथा वैराग्य के स्थान पर स्वर्ग आदर्श अंतगति मानी जाती थी और इसे प्राप्त करने के लिए ब्राह्मणों की सहायता की आवश्यकता नहीं होती थी। बाद में सारे काव्य को ब्राह्मण ढाँचे में ढालकर सर्वथा नवीन रूप दिया गया है। यह डा० रूबन का मत है।[1] इसके लिए कोई समीचीन प्रमाण नहीं दिया गया है। डा० रूबन के उदाहरण (ऋष्यशृंग तथा विश्वामित्र की कथा

१. वाल्टर रूबेन: स्टुडियन जुर इन्डिशन गेशिछटे डस रामायण, पृ० ३०।

उत्तरकांड का अश्वमेध) स्पष्टतया प्रक्षेप हैं । इनसे केवल इतना ही ज्ञात होता है कि **आदिरामायण** के विकास मे ब्राह्मणों का प्रभाव स्पष्ट है । अतः इनसे **आदिरामायण** के रूप के विषय में कोई तर्क नहीं लिया जा सकता है । फिर भी डा० रूबन के इस मत मे कुछ तत्व है । राम-कथा-सम्बन्धी आख्यान-काव्य क्षत्रिय इक्ष्वाकुवंश मे उत्पन्न हुआ और इसका बहुत काल तक इन क्षत्रियों के दरबारों में प्रचार रहा ।

वाल्मीकि ने (जिनको ब्राह्मण न मानने के लिए कोई आधार नहीं मिलता) उस स्फुट आख्यान-काव्य को एक ही प्रबन्ध काव्य मे संकलित करके लगभग ३०० ई० पू० **आदिरामायण** की रचना की है । यह रचना बहुत कुछ प्राचीन आख्यान-काव्य से मिलती जुलती रही होगी । बाद के प्रक्षेपों की भावना स्पष्टतया भिन्न है (दे० आगे अनु० १५४) ।

१५०. **आदि-रामायण** की भाषा के विषय में भी संदेह किया गया है । मूल रचना की भाषा प्राकृत रही होगी । बाद मे, पहली शताब्दी ई० से इसका संस्कृत रूपान्तर चल पड़ा ।[1] डा० याकोबी के अकाट्य तर्कों से इस मत का खंडन करने के बाद आजकल इस मत का प्रतिपादन कोई नहीं करता ।[2] डा० याकोबी के मुख्य तर्क इस प्रकार हैं,

(अ) भारत मे प्राकृत **मूल-रामायण** तथा इसके संस्कृत रूपान्तर के विषय मे कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

(आ) यदि केवल पहला श० इ० मे **रामायण** का संस्कृत मे अनुवाद किया गया था, तो आर्ष प्रयोग कैसे संभव होते हैं ।

(इ) प्राकृत साहित्य की मुख्य विशेषता है—शृंगार तथा अद्भुत् रस का बाहुल्य (दे० कथासरितसागर) । इसके अतिरिक्त पाली तथा प्राकृत की शैली बहुत अपरिष्कृत है । अतः उपर्युक्त कारणों से प्राकृत-साहित्य संस्कृत काव्य का आधार तथा आदर्श होने के नितान्त अनुपयुक्त सिद्ध होता है ।

१५१. आठवें अध्याय म बालकांड को प्रक्षिप्त दिखलाया गया है । डा०

---

१. बाथः फुलेटान दे र्लितिरातान दे लन्द, पृ० २० आदि । ए० बां० कीथः इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टर्ली भाग २३, पृ० ७२ आदि ।

२. दे० एच० याकोबीः जर्मन ओरियेंटल जर्नल, भाग ५४, पृ० ५०७, ४१७ ।

याकोबी[1] के अनुसार **आदि-रामायण** का प्रारंभ बालकांड के निम्न-लिखित श्लोकों में सुरक्षित है,

सर्ग ५, श्लोक १-४ रामायण की स्तुति

सर्ग ५, श्लोक ५ ६ कोशल तथा अयोध्या की स्तुति

सर्ग ५, श्लोक ६
सर्ग ६, श्लोक २ ४ } दशरथ की स्तुति

सर्ग १८, श्लोक १६. २१ (उत्तरार्द्ध) २२. दशरथ के पुत्रों का उल्लेख ।

सर्ग १८, श्लोक २५ पुत्रों की स्तुति (अथवा अयोध्यकांड १.५)

सर्ग १८, श्लोक २४. १२ राम की श्रेष्ठता । (अथवा अयोध्याकांड-१, ६, ८)

इस भूमिका के बाद काव्य की मुख्य वस्तु का वर्णन प्रारम्भ हुआ होगा —दे० अयोध्याकांड सर्ग १, श्लोक ३६ ।

ग—आदिरामायण का विकास

१. प्रक्षेप.

१५२. **आदिरामायण** का विकास समझने के लिये उसके प्रचार की रीति को ध्यान में रखना परमावश्यक है । बालकांड तथा उत्तरकांड में लिखा है कि वाल्मीकि ने अपने शिष्यों को **रामायण** सिखला कर उसे राजाओं, ऋषियों, तथा जनसाधारण को सुनाने का आदेश दिया,

कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायतां पथ्या मुदा ॥४॥
ऋषिवाटेषु पुण्येषु ब्राह्मणावसथेषु च ।
रथ्यास् राजमार्गेषु पार्थिवानां गृहेषु च ॥५॥
(उत्तरकांड ९३)

इससे ज्ञात होता है कि **रामायण** मौखिक रूप से प्रचलित था । कुशीलव सारे देश में जाकर उसे गाकर सुनाते थे और इससे अपनी जीविका चलाते थे । वे काव्योपजीवी ही थे । **रामायण** उनको कंठस्थ था और वे

---

१. दे० एच० याकोबी: द्स रामायण, पृ० ५० आदि ।

उसे अपने पुत्रों को सिखलाते थे। **रामायण** का कोई ग्रंथ प्रचलित नहीं था और प्राचीन फलस्तुति श्रवणफलस्तुति ही है—

श्रुत्वा रामायणमिदं दीर्घमायुश्च विन्दति
(६. १२८. १०६)

बाद में **रामायण** के पढ़ने तथा लिखने का भी उल्लेख मिलता है—

रामायणमिदं कृत्स्नं शृण्वतः पठतः सदा ॥११६॥
भक्त्या रामस्य ये चेमां संहितामृषिणा कृताम्।
ये लिखन्तीह च नरास्तेषां वासांस्त्रविष्टपे ॥१२०॥
(६ १२८)

लेकिन फलस्तुति का यह अन्तिम अंश गौडीय पाठ में नहीं मिलता। टीकाकार कतक ने भी उसे प्रक्षिप्त माना है।

कुशीलव **रामायण** का गाते गाते अपने श्रोताओं की रुचि का भी ध्यान रखते होंगे। जिन गायकों में काव्यकौशल था वे इन लोकप्रिय अंशों को बढ़ाते थे और इसी तरह **आदिरामायण** का कलेवर बढ़ने लगा।[1]

१५३. चतुर्थ भाग में इन प्रक्षेपों का निरूपण किया जाएगा, अतः यहाँ इनकी सामान्य विशेषताओं का उल्लेख पर्याप्त है।

(१) बहुत प्रक्षेप पुनरुक्ति मात्र से उत्पन्न हुए हैं। एक ही घटना का वर्णन दुहराया जाता है अथवा मूल घटना के समान अन्य घटनाओं की कल्पना कर ली जाती है। उदाहरणार्थ :
रावण का मारीच के यहाँ जाना (३, सर्ग ३१, और ३५)
रावण के गुप्तचरों का वृत्तान्त (६, २० और २५, ३०)
सीता का गंगा तथा यमुना से प्रार्थना (२, ५२ और ५५)
आश्रमों का गमन, अत्रि, वाल्मीकि, शरभंग, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य के आश्रमों का उल्लेख **आदिरामायण** में नहीं मिलता था।
विराध, अयोमुखी आदि राक्षसों का वध।
राम के मायामय सिर का वृत्तान्त (६. ३१) मायामयी सीता-वध के वृत्तान्त (६. ८१) का अनुकरण मात्र है।

---

१. हे० एच० याकोबी: वही, पृ०, ६२-३।

(२) अद्भुत रस का सामग्री

लंकादहन, जिसमें हास्य-रस का भी समावेश है।
ओषधिपर्वत का ले आना (इसका कई बार वर्णन होता है)।
अग्निपरीक्षा।

(३) करुणात्मक स्थलों की पुनरुक्ति :

विलाप (दे० अरण्यकाण्ड, सर्ग ६०, ६२ और ६३)
हनुमान का सीता से विदा लेना (५.५८-६८)।
हनुमान द्वारा सीता से भेंट का वर्णन (५. ६६ ६०)।

(४) काव्यात्मक तथा अलंकारपूर्ण वर्णन

गंगा का वर्णन (२ ५०)
वर्षाऋतु का वर्णन (४. २८)
शरद् ऋतु का वर्णन (४. ३०)

(५) रामायण ज्ञान का भंडार बनाने की प्रवृत्ति

नीति के उपदेश (२. १००)
जाबालि का लोकायत दर्शन प्रस्तुत करना (२. १०८)
दिग्वर्णन (४ ४०-४३)

(६) आदर्शवाद का प्रभाव

राम का बालिवध को न्यायसंगत सिद्ध करने का प्रयत्न। (४. १७-१८)

२. बालकांड और उत्तरकांड

१५४. **आदिरामायण** का कथावस्तु न केवल बीच के प्रक्षेपों के कारण बढ़ने लगा वरन राम कौन थे, सीता कौन थीं, इनका विवाह क्यों और कैसे हुआ आदि नितान्त स्वाभाविक प्रश्न भी थे। जनसाधारण की इस जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिये बालकांड की रचना की गई।

यह बाद की रचना है, अतः इसमें एक नवीन वातावरण का आ जाना आश्चर्य जनक नहीं है। इसकी शिथिल शैली पर आदिकवि की छाप नहीं है। राम के बालचरित के अतिरिक्त उसकी मुख्य नवीन सामग्री है—पौरा-

णिक कथाएँ (जिनमें ब्राह्मणों का प्रभाव स्पष्ट है) और अवतारवाद की भावना (दे० पुत्रेष्टि-यज्ञ तथा परशुराम का वृत्तान्त) । आठवें अध्याय में दिखलाया गया है कि अवतारवाद मूल बालकांड का अंश नहीं हो सकता । उत्तरकाड मे यह अवतारवाद अत्यन्त व्यापक है । इससे स्पष्ट है कि यह कांड बालकाड के बहुत बाद रचा गया है । उत्तरकाड मे **रामायण** के प्रतिनायक रावण का पूर्वचरित सकलित है और इसके बाद राम का उत्तरचरित दिया जाता है, सीतात्याग और सीता का भूमिप्रवेश, राम का अश्वमेध तथा स्वर्गारोहण । इस काड मे भी बहुत पौराणिक कथाएँ उद्धृत हैं और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता बहुत स्थलों पर प्रतिपादित है । (दे० **शम्बूक वध, अश्वमेध**) । चतुर्थ भाग में बालकाड और उत्तरकांड, दोनों के विकास की रूपरेखा अंकित करने का प्रयत्न किया जायगा (दे० आगे० अनु० ३१६ और ५१७) ।

यहा स्मरण दिलाना अनुचित नहीं होगा कि राम-कथा के विकास मे **आदिरामायण** के प्रक्षेप अर्थात बालकाड, उत्तरकाड, अवतारवाद मूल **आदि रामायण** के प्रामाणिक अंश से कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं । द्वितीय अध्याय मे दिखलाया गया है कि दूसरी शताब्दी ई० मे लेकर **रामायण** अपना प्रचलित रूप धारण कर चुका था और उस समय से लेकर कवियों तथा जनसाधारण ने प्रामाणिक तथा प्रक्षिप्त सामग्री मे कोई अन्तर नहीं माना है । इस सामग्री की सबसे महत्त्वपूर्ण भावना अवतारवाद ही है । इसकी उत्पत्ति पर किंचित् प्रकाश डालना अपेक्षित है ।

३. अ व ता र वा द

१५५. अवतारवाद[1] की भावना हमें पहले पहल **शतपथ ब्राह्मण** मे मिलती है । प्रारंभ मे विष्णु की अपेक्षा प्रजापति को इस सम्बन्ध मे अधिक महत्त्व दिया जाता था । **शतपथब्राह्मण** के अनुसार प्रजापति ने मत्स्य (दे० १. ८. १. १); कूर्म (७. ५. १. ५, १४. १. २-११) तथा वाराह (१४. १. २. ११) का अवतार लिया था । प्रजापति के वाराह

१. दे० एच० याकोबी. इनवायरनमेंशन इ० प्रा० इ० भाग ७ ।
काने: हिस्ट्री आव धर्मशास्त्र भाग २, पार्ट २, पृ० ७१७ आ।
एम० एम० विलयम्स. इ० विजडम, पृ० ३१८ आदि ।
एच० राय चौधरी. अर्ली हिस्ट्री आव वैष्णव सेक्ट, पृ० ७६ ।

के रूप धारण करने की कथा **तैत्तरीय ब्राह्मण** (१. १. ३. ५) तथा **काठक संहिता** में भी (८. २) बीज रूप में मिलती है। **रामायण** में भी इसका उल्लेख है,

ततः समभवद् ब्रह्मा स्वयंभूर्दैवतैः सह ॥ ३ ॥
स वराहस्ततो भूत्वा प्रोज्जहार वसुंधरा।
(रा० २. ११०)

महाभारत के अनुसार मत्स्य ब्रह्मा का अवतार था (दे० ३. १८७)। बाद में जब विष्णु श्रेष्ठ माने जाने लगे तो मत्स्य, कूर्म तथा वाराह विष्णु ही के अवतार समझे जाते थे। वामनावतार प्रारम्भ से विष्णु से सम्बन्ध रखता था (दे० शतपथ ब्राह्मण १. २. ५. ५)। यह अवतार **ऋग्वेद** की एक कथा में विकसित माना जाता है (दे० ऋ० १. २२. १७; शतपथ ब्राह्मण (१. २. ५. १), **तैत्तरीय अरण्यक** के परिशिष्ट में (१०. १. ६) विष्णु के अवतार नृसिंह की कथा उद्धृत है। प्रारंभिक परशुराम सम्बन्धी कथाओं में परशुराम को विष्णु का अवतार नहीं माना गया है (दे० महाभारत ३. ११५)।

अतः अवतारवाद ब्राह्मण-साहित्य में तो विद्यमान था लेकिन न तो अवतारों की कोई विशेष पूजा की जाती थी और न इसमें विष्णु का प्रधान्य था। कृष्णावतार के साथ साथ अवतारवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन प्रारंभ हुआ। वासुदेव कृष्ण भागवतों के इष्ट देव थे। प्रारम्भ में उनका और विष्णु का कोई भी सम्बन्ध नहीं था। डा० हेमचन्द्र राय चौधरी[1] का कहना है कि किस समय वासुदेव कृष्ण विष्णु का अवतार माने जाने लगे इसका ठीक निर्णय करना असम्भव है। फिर भी वे अनुमान करते हैं कि सम्भवतः तीसरी शताब्दी ई० पू० से वासुदेव कृष्ण और विष्णु की अभिन्नता की भावना उत्पन्न हुई थी।

अवतारवाद के इस विकास का कारण प्रायः बौद्ध धर्म से जोड़ा जाता है।[2] बौद्ध धर्म तथा भागवत का भक्ति-मार्ग, दोनों समान रूप से ब्राह्मणों

१. दे० अर्ली हिस्ट्री आव वैष्णव सेक्ट, पृ० ६३।
२. दे० एच० रायचौधरी : वहीं, पृ० ६३।
एम० मोनियेर विलियम्स: वही पृ० ३१८।
सी० वैद्य: वही पृ० २५।

के कर्मकांड तथा यज्ञ का प्रधानता के प्रतिक्रिया-स्वरूप विकसित और पल्लवित हुए। इस कारण ब्राह्मणों का धर्म के विषय में एकाधिकार लुप्त हो गया था। बौद्ध धर्म का अधिकाधिक प्रचार देखकर ब्राह्मणों ने भागवतों को अपनी ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से, भागवतों के देवता, वासुदेव कृष्ण को विष्णु नारायण का अवतार मान लिया है।[1]

इससे अवतारवाद को बहुत प्रोत्साहन मिला। साथ साथ विष्णु का महत्त्व बढ़ने लगा। इस तरह धीरे धीरे अवतारवाद की सारी भावना विष्णु-नारायण में केन्द्रीभूत होने लगी और वैदिक साहित्य के अन्य अवतारों के कार्य विष्णु में ही आरोपित किए गए।

१५६. इधर कई शताब्दियों से राम का आदर्श भारतीय जनता के सामने प्रस्तुत था। **रामायण** की लोकप्रियता के साथ साथ राम का महत्त्व भी बढ़ता रहा। उनकी वीरता के वर्णन में अलौकिकता की मात्रा भी बढ़ने लगी। रावण पाप और दुष्टता का प्रतीक बन गया, राम पुण्य और सदाचरण के। अतः इस विकास की स्वाभाविक परिणति यह हुई कि कृष्ण की भाँति राम भी विष्णु का अवतार माने जाने लगे। यह कब हुआ इसका ठीक समय निर्धारित करना असम्भव है। फिर भी अवतारवाद उत्तरकांड में इतना व्याप्त है कि इसे उत्तरकांड की अधिकांश सामग्री के पूर्व का मानना चाहिए। अतः बहुत सम्भव है कि पहली शताब्दी ई० पू० से ही रामावतार की भावना फैलने लगी हो। प्राचीनतम पुराणों में (वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु मत्स्य, हरिवंश आदि में) अवतारों की तालिका में राम का नाम आया है। **महाभारत** में भी इसका उल्लेख होता है (दे० ऊपर अनु ३६)। अवतारवाद के विकास में सातवीं शताब्दी ई० से लेकर महात्मा बुद्ध भी विष्णु के अवतार माने जाने लगे।[1] पौराणिक साहित्य में ८०० ई० तक अवतारों की संख्या तथा नामों के विषय में बहुत मतभेद पाया जाता है। दशावतार (मत्स्य से लेकर कल्कि तक) की भावना उस समय से सर्वमान्य होने लगी थी।[2]

घ—राम-कथा का व्यापक प्रसार

१५७. राम-कथा सम्बन्धी गाथाओं से लेकर वाल्मीकिकृत **रामायण** के प्रचलित रूप तक राम-कथा के प्रारम्भिक विकास की रूपरेखा अंकित

१. कानें वही: पृ० ७२१।

२. आर० सी० हाजरा पुराणिक रेकार्डस, पृ० ८८ और इ० हि० क्वा० भाग ११ पृ० १२०-७।

करने का प्रयत्न प्रस्तुत अध्याय में किया गया है। यह उत्तरोत्तर विकास ही राम-कथा की लोकप्रियता का प्रमाण है। निबन्ध के अन्तिम अध्याय में इसके सारे विकास के सिंहावलोकन के साथ साथ उसकी विशेषताओं पर विचार किया जाएगा। यहाँ राम-कथा के प्रारंभिक व्यापक प्रसार की ओर संकेत करना है।

महाभारत की सामग्री से स्पष्ट है कि राम कथा न केवल कोशल प्रदेश में प्रचलित थी वरन् इसका प्रचार पश्चिम की ओर भी हो चुका था। **हरिवंश** से ज्ञात होता है कि **रामायण** की कथा को लेकर प्राचीन काल से नाटकों का अभिनय भी हुआ करता था,

रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्ये नाटकीकृतम्
जन्मविष्णोरमेयस्य रात्तसेंद्रवधेप्सया ॥६॥

(विष्णुपर्व अध्याय ६३)।

राम-कथा की लोकप्रियता का एक और महत्त्वपूर्ण प्रमाण बौद्ध तथा जैन साहित्य से मिलता है। बौद्धों ने ईस्वी के कई शताब्दियों पहले राम को बोधिसत्व मानकर राम-कथा की लोकप्रियता और आकर्षकता का साक्ष्य दिया है (दे० चौथा अध्याय)। जैनियों ने भी वाल्मीकि की रचना को मिथ्या कहकर राम-कथा के एक नये रूप राम को अपनाने का प्रयत्न किया है (दे० पांचवाँ अध्याय)।

इसी तरह राम-कथा प्रारम्भ से ही भारत की संस्कृति में इतनी फैल गई कि राम ने उस समय के तीन प्रचलित धर्मों में एक निश्चित स्थान प्राप्त किया—ब्राह्मण-धर्म में विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म में बोधिसत्व तथा जैन धर्म में आठवें बलदेव के रूप में। आगे चलकर संस्कृत साहित्य की प्रत्येक शाखा में, अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में, भारत के निकटवर्ती देशों में सर्वत्र राम-कथा का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

—::०::—

तृतीय भाग

अर्वाचीन राम-कथा साहित्य का सिंहावलोकन

अध्याय

१०—संस्कृत धार्मिक साहित्य में राम-कथा

११—संस्कृत ललित साहित्य में राम-कथा

१२—आधुनिक भारतीय भाषाओं में राम-कथा

१३—विदेश में राम-कथा

दशवां अध्याय

संस्कृत धार्मिक साहित्य में राम-कथा

क—रामभक्ति की उत्पत्ति और विकास

१५८. अर्वाचीन रामकथा-साहित्य में अवतारवाद की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई व्यापकता के साथ साथ भक्तिभावना भी उत्पन्न हुई और धीरे धीरे विकसित होने लगी। अतः राम-भक्ति की उत्पत्ति और विकास पर किंचित् प्रकाश डालना अपेक्षित है।

भारतीय भक्तिमार्ग का सूत्रपात और विकास राम-भक्ति के शताब्दियों पूर्व हुआ था। वेदों में इसका बीजारोपण हुआ और भागवतधर्म में वह पल्लवित हुआ। बौद्धधर्म तथा जैनधर्म की भाँति भागवतों का भक्तिमार्ग भी कर्मकांड तथा यज्ञ प्रधान ब्राह्मण धर्म के प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुआ था। लेकिन इसमें वेदों की निन्दा को स्थान नहीं मिला और इस प्रकार बाद में ब्राह्मण तथा भागवत धर्म के समन्वय से वैष्णव-धर्म की उत्पत्ति सम्भव हो सकी। इसमें प्राचीन वैदिक देवता विष्णु भागवतों के देवता वासुदेव-कृष्ण के अवतार माने गए हैं और भक्ति-भावना इन्हीं विष्णु-नारायण वासुदेव-कृष्ण में केंद्रीभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी। विष्णु के अन्य अवतार भी माने जाने लगे, जिनमें से रामावतार भारतीय संस्कृति के इतिहास के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण है (दे० ऊपर अनु०-१५४)। फिर भी भक्तिमार्ग के इतिहास में; भागवत-धर्म तथा पंचरात्र के साहित्य में शांडिल्य-भक्तिसूत्र; नारदीय भक्ति-शास्त्र; रामानुज,-निम्बार्क, मध्व तथा वल्लभाचार्य के संप्रदायों में कृष्णावतार को प्रायः एकाधिकार मिला है।[1]

---

१. भक्तिमार्ग के विकास के लिए दे० —
इनसाइक्लोपीडिया आफ रिलीजन इट एथिक्स, 'भक्तिमार्ग'।
हेमचन्द्र राय चौधरी : अर्ली हिस्टरी आव वैष्णव सेक्ट।
बलदेव प्रसाद मिश्र : तुलसी-दर्शन-पृ० ४१।

१५६. प्राचीन राम-कथा साहित्य के निरूपण से ज्ञात हुआ है कि **रामायण** के प्रक्षिप्त अंशो में तथा **महाभारत** के कई स्थलों पर रामावतार का उल्लेख मिलता है। युद्धकांड के एक परिक्षिप्त सर्ग में सीता को भी लक्ष्मी का अवतार बताया गया है (दे० सर्ग ११७.२७), लेकिन प्राचीन राम-साहित्य में कहीं भी राम-भक्ति का निरूपण नहीं मिलता। **हरिवंश** तथा प्राचीन पुराणों में भी राम-भक्ति का उल्लेख नहीं हुआ है। अतः रामावतार के बहुत काल बाद राम-भक्ति तथा राम-पूजा का आविर्भाव हुआ है। सर रामगोपाल भंडारकर का कहना है कि यद्यपि ईसवी सन् के प्रारम्भ से राम विष्णु के अवतार माने गए थे किन्तु उनकी विशेष रूप से प्रतिष्ठा ग्यारहवीं शताब्दी के लगभग ही प्रारम्भ हुई है।[1] डाक्टर श्राडर का भी निर्णय यह है कि जिन वैष्णव संहिताओं में राम अथवा राधा की एकांतिक पूजा प्रतिपादित की गई है ये अर्वाचीन हैं और पंचरात्र के प्रामाणिक साहित्य के अनुकरण में उत्पन्न हुई हैं।[2]

ऐसा प्रतीत होता है कि रामभक्ति का आविर्भाव दक्षिण भारत में हुआ है। तामिल अल्वारों की रचना, अर्थात् **नालायिर-प्रबन्ध** में भगवान विष्णु तथा उनके अवतारों के प्रति असीम भक्ति तथा आत्मसमर्पण की भावना का हृदयगम निरूपण मिलता है।[3] यद्यपि विष्णु के अवतार कृष्ण को अधिक महत्त्व दिया गया है, परन्तु प्राचीनतम अल्वारों के स्तोत्रों में लेकर राम का भी उल्लेख निरन्तर मिलता है (आठवीं श०ई०)।

कुलशेखर अल्वार की रचना में सम्भवतः प्रौढ रामभक्ति का प्राचीनतम निरूपण सुरक्षित है (नवीं श० ई० पूर्वार्द्ध)। यद्यपि उनके भी अधिकांश पद कृष्णावतार-संबन्धी हैं, परन्तु उनकी रचना का पाँचवा अंश रामावतार से सम्बन्ध रखता है और इसमें राम के प्रति अत्यन्त कोमल और हृदयस्पर्शी भक्ति अंकित की गई है।[4]

---

१. सर भंडारकर के तर्क अकाट्य प्रतीत होते हैं: दे० वैष्णविज्म शैविज्म ४७ आदि।

२. दे० डा० श्राडर: इन्ट्रोडक्शन् टु दि पंचरात्र (मद्रास १९१६) पृ० १९।

३. दे० टी० ए० गोपीनाथ राव: हिस्ट्री आव दि श्री वैष्णवस।

४. जर्नल श्री वेंकटेश्वर ओरियेन्टल इंस्टिट्यूट, तिरुपति भाग ३, १९४८, पृ० १६६।

१६०. रामभक्ति के काव्यात्मक तथा भावात्मक निरूपण के अतिरिक्त वैष्णव संहिताओं तथा उपनिषदों में रामभक्ति तथा रामपूजा का शास्त्रीय प्रतिपादन भी किया गया है। इस प्रकार के ग्रन्थों की रचना रामानुज-सम्प्रदाय में हुई है। रामानुज ने तो स्वयं राम-भक्ति पर नहीं लिखा है परन्तु अपने श्री-भाष्य में उन्होंने विभवों अर्थात् अवतारों में राम तथा कृष्ण का विशेष उल्लेख किया है (श्री भाष्य २.२.४२,)। उनके सम्प्रदाय में निम्नलिखित राम-सम्बन्धी वैष्णव संहिताओं का उल्लेख मिलता है—**अगस्त्य-संहिता**, **कालिराघव**, **बृहद्राघव**, और **राघवीय संहिता**।[1] **अगस्त्य-संहिता** हस्त-लिपि के रूप में सुरक्षित है, इसमें रामकथा का वर्णन नहीं किया गया है। तीन राम-भक्ति-सम्बन्धी साम्प्रदायिक उपनिषदें सुरक्षित हैं—**रामपूर्वतापनीय**, **रामोत्तरतापनीय** तथा **रामरहस्योपनिषत्**।[2] तीनों रामोपासना से सम्बन्ध रखती हैं तथा इनमें राम-यन्त्र, राम-मन्त्र, सीता-मन्त्र आदि का उल्लेख है। राम परम पुरुष तथा सीता मूलप्रकृति मानी जाती हैं। **रामतापनीय** के अनेक स्थलों पर **अध्यात्म रामायण** के रामहृदय तथा रामगीता से साम्य पाया जाता है।[3] इसमें एक संक्षिप्त रामचरित भी दिया गया है (दे० ४. १७. २६), जिसके अनुसार रावण ने मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से सीता का हरण किया था (**स्वनिवृत्यर्थम्**)। राम और लक्ष्मण सीता की खोज के मिस (**व्याजेन**) पृथ्वी का भ्रमण करते थे तथा सुग्रीव ने सीता को ले आने की आज्ञा दी थी। निम्नलिखित अन्य वैष्णव उपनिषदों में भी राम का उल्लेख हुआ है—**कलिसंतरण कृष्ण**। (जिसमें राम मुनियों को कृष्णावतार के समय गोपिकाएँ बनने का आश्वासन देते हैं), **गोपालोत्तर-तापनीय**, **तारासार**, **त्रिपाद-विभूति-महानारायण** तथा **मुक्तिकोपनिषद**। इनमें रामचरित का कोई वर्णन नहीं किया गया है।

डा० वेबर ने उपर्युक्त **राम-तापनीय-उपनिषद** का प्राचीनतम काल ११ वीं शताब्दी माना है। उस समय से लेकर राम-भक्ति-सम्बन्धी साहित्य का निर्माण होने लगा। स्तोत्रों के अतिरिक्त रामोपासना के विषय में भी

---

१. दे० डा० श्राडर: वही नं० २६, १०१, १३३।

२. दे० वैष्णव उपनिषद् (अडयार) और दयसन, सक्जिग उपनिषद्स पृ० ८०२।

३. दे० ए० वेबर: मेम्वायर बर्लिन एकाडेमी, १८६४, पृ० २८३।

बहुत सी रचनाओं का उल्लेख मिलता है जिनमें से एकाध हस्तलिपि के रूप में सुरक्षित हैं;—उदाहरणार्थ—

रामार्चनसोपान (राजेन्द्र लाल मित्र, संस्कृत कैटालाग भाग ६, पृ० २०२)।

सर्वसिद्धान्त (वही ७, ६६)।

रामार्चनचंद्रिका (हरप्रसाद शास्त्री, संस्कृत कैटालाग भाग १, पृ० ३२३)।

रामपूजापद्धति (वही)।

१६१. इन रचनाओं का अब तक विश्लेषण नहीं हुआ है। रामभक्ति के विकास में उनका क्या महत्व है, उसका रामानन्द की रचनाओं से क्या सम्बन्ध है आदि प्रश्नों पर खोज की अपेक्षा है। इतना ही स्पष्ट है कि रामानन्द के द्वारा राम-भक्ति को बहुत प्रोत्साहन मिला था। रामानन्द के सम्प्रदाय में संभवतः **अध्यात्म रामायण** की सृष्टि हुई थी। रामानन्द का सम्बन्ध प्रायः रामानुजाचार्य के संप्रदाय से जोड़ा जाता है तथा एकाध प्रचलित ग्रन्थ उनके लिखे हुए माने जाते हैं, उदाहरणार्थ : **वैष्णव-मताब्ज-भास्कर, श्री रामार्चनपद्धति** आदि। इतना ही स्पष्ट है कि रामावत सम्प्रदाय के साथ साथ रामभक्ति जनसाधारण में फैलने लगी तथा रामभक्ति-सम्बन्धी साहित्य की सृष्टि भाषा में भी होने लगी। आगे चल कर गोस्वामी तुलसीदास ने इस रामभक्ति को अपने अमर **रामचरितमानस** में एक काव्यात्मक तथा हृदयग्राही रूप दिया है।

१६२. बाद में रामभक्ति पर कृष्ण-राधा पूजा का प्रभाव पड़ा, और फल-स्वरूप राम-कथा के वर्णन में कृष्णलीला का अनुकरण भी किया गया है। **अध्यात्म रामायण** में केवल बाललीला-वर्णन में कृष्ण की बाललीला का प्रभाव पड़ा है, लेकिन आगे चल कर राम तथा सीता की विलासक्रीडा का **आनन्द रामायण, सत्योपाख्यान** आदि में विस्तृत वर्णन किया गया है। इस प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि १७ वीं शताब्दी में चन्द्रलाल ने राम-सीता-युग्म-भक्ति का प्रवर्तन किया है (दे० राजेन्द्र लाल मित्र, कैटालाग न० २३२६)। फलस्वरूप **हनुमत्संहिता, बृहत्कोशलखंड, आदिरामायण** आदि में राम की रासलीला का भी वर्णन किया गया है।

ख—पौराणिक साहित्य

अ. हरिवंश

१६३. **हरिवंश** ४०० ई० के लगभग का माना जाता है[1]। इसमें एक संक्षिप्त रामचरित मिलता है जिसमें रामावतार के उल्लेख के बाद वनवास से लेकर रावणवध तक **रामायण** की मुख्य घटनाओं का वर्णन दिया गया है। अनन्तर रामराज्य की प्रशंसा की गई है। (अध्याय ४१, १२१-१२५)। दशरथ के यज्ञ का अथवा अयोनिजा सीता का कहीं उल्लेख नहीं हुआ है।

हरिवंश के दो स्थलों पर **रामायण** का (दे० अध्याय ९३ और १३२) तथा वाल्मीकि के काव्य का (दे० अध्याय ५८) उल्लेख मिलता है। अवतारों की तालिकाओं में राम का नाम भी दिया गया है (दे० अध्याय ७८, १०४, १२८)।

आ. महापुराण

प्रधान महापुराण

१६४. पौराणिक साहित्य के कालनिर्णय के विषय में प्रस्तुत निबन्ध में डा० राजेन्द्र हजरा की पुस्तक[2] तथा उनके अन्य लेखों का सहारा लिया गया है। उनके अनुसार प्राचीनतम महापुराण कालक्रमानुसार निम्नलिखित है, **मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड, विष्णु, मत्स्य, भागवत तथा कूर्म पुराण**।

मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड तथा **मत्स्य** पुराण में रामचरित का कहीं वर्णन नहीं किया गया है। अन्य अवतारों के साथ **ब्रह्माण्ड** तथा **मत्स्य पुराण** में राम का नाम भी लिया गया है (दे० मत्स्य पु० अध्याय ४७, ब्रह्माण्ड पुराण अध्याय ७३)। इसके अतिरिक्त **ब्रह्माण्ड** के मैथिल-वंश के वर्णन में सीता के अलौकिक जन्म का उल्लेख दिया गया है (दे० २ अध्याय ६३)। इस पुराण का काल चौथी शताब्दी ई० माना जाता है।

---

१. आर० सी० हाजरा : इंडियन कलचर-भाग २ पृ० २३७ और न्यू इंडियन एंटिक्वरी भाग १, पृ० ५२२।

२. आर० सी० हाजरा : पुरानिक रेकर्ड्स आन हिन्दू राइटस एंड कस्टमस्, ढाका १९४०।

१६५. **विष्णु पुराण** (चौथी शताब्दी ई०) में भी अयोनिजा सीता का उल्लेख मिलता है (४, अध्याय ५) और राम-कथा का सक्षिप्त रूप भी उद्धृत किया गया है (४, अध्याय ४) । हरिवंश की रामकथा की अपेक्षा इसमे कुछ अधिक सामग्री मिलती है, विशेष कर ताडकावध, अयोनिजा सीता तथा राम आदि चार भाइयों के पुत्रो का उल्लेख ।

१६६. **वायु पुराण** (पांचवी श० ई०) की राम-कथा **विष्णु-पुराण** की राम-कथा मे भिन्न नही है (दे० रामचरित, अध्याय २८. १६१ २०० तथा अयोनिजा सीता का जन्म, अध्याय ८६. २२) ।

१६७. **भागवत पुराण** (छठी अथवा सातवी श० ई०) में जो राम-चरित उद्धृत है उसमें पौराणिक साहित्य मे पहले पहले सीता लक्ष्मी का अवतार मानी गई हैं और सीता स्वयवर तथा सीता-त्याग का वर्णन भी किया गया है (दे० स्कध ६, अध्याय १०. ११) ।

१६८. **कूर्म पुराण** (सातवी श० ई०) में राम-कथा-सम्बन्धी निम्न-लिखित सामग्री पाई जाती है :

राक्षस-वंश-वर्णन (पूर्वविभाग, अध्याय १६) ।

सूर्यवंश के वर्णन के अंतर्गत रामचरित का वर्णन जिसमें रावण-युद्ध के पश्चात् राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख किया गया है (पूर्वविभाग, अध्याय २१) ।

पतिव्रतोपाख्यान में माया सीता के हरण का वृत्तान्त (उत्तरविभाग, अध्याय ३४) ।

गौण महापुराण

१६९. शेष महापुराणों मे प्राचीन सामग्री के साथ साथ बहुत से प्रक्षेप भी पाये जाते हैं । कई महापुराणों का अनेक बार रूपान्तर भी किया गया है । अन्तिम रूपान्तर का काल डा० राजेन्द्र हजरा के अनुसार दिया गया है ।

वामन, लिंग, वाराह तथा **भविष्य पुराण** में राम-कथा-संबंधी सामग्री का नितान्त अभाव है ।

प्रचलित **अग्नि-पुराण** की रचना ८०० ई० के पश्चात् हुई है, लेकिन इसकी बहुत कुछ सामग्री और बाद की माननी चाहिए[1] । **अग्निपुराण** की

---

१ प्रा० सं० साहित्य : इंडियन लि० हि० भाग १२, पृ० ६८३ आदि ।

राम कथा **वाल्मीकि रामायण** के सात कांडों का संक्षेप मात्र है (दे० अग्निपुराण-अध्याय ५-११); इसमें राम का मंथरा पर अत्याचार करना वनवास का कारण बताया गया है तथा राम द्वारा माल्यवत् पर्वत पर चतुर्मास्य यज्ञ करने का उल्लेख है।

१७०. प्राचीन **नारदीय पुराण** अप्राप्य है; प्रचलित **नारद पुराण** दसवीं श० ई० का माना जाता है लेकिन बाद में इसमें बहुत से प्रक्षेप जोड़ दिए गए हैं[1]। पूर्वखंड में एक संक्षिप्त रामचरित के बाद (बालकांड से युद्धकांड तक) द्रविड़ देश में ब्राह्मणों से बाँधे हुए विभीषण की रामद्वारा मुक्ति की कथा दी गई है (दे० अध्याय ७६) तथा उत्तरकांड में बालकांड से उत्तरकांड तक समस्त **वाल्मीकि रामायण** की संक्षिप्त राम कथा दी गई है जिसमें राम-लक्ष्मणादि नारायण-संकर्षणादि के अवतार बताए गए हैं (दे० अध्याय ७५)।

१७१. **ब्रह्म पुराण** की अधिकांश सामग्री भिन्न भिन्न अन्य पुराणों से ली गई है। २१३ वें अध्याय का रामचरित ज्यों का त्यों **हरिवंश** के ४१वें अध्याय से उद्धृत किया गया है। १७६ वें अध्याय में रावणचरित के अन्तर्गत रावण की तपस्या के वर्णन के बाद एक संक्षिप्त राम-कथा भी पाई जाती है, जिसमें रावण द्वारा अमरावती से चुराई हुई वासुदेवप्रतिमा का वृत्तान्त दिया गया है। रावण-वध के बाद राम ने उस मूर्त्ति को समुद्र को समर्पित कर दिया था, लेकिन बाद में कृष्ण ने उसे पुरुषोत्तम-क्षेत्र में स्थापित किया था। **ब्रह्मपुराण** की शेष राम-कथा-सम्बन्धी सामग्री गौतमी माहात्म्य (अध्याय ७०-१७५) के अन्तर्गत मिलती है। यह माहात्म्य प्रारंभ में एक स्वतन्त्र ग्रन्थ था जिसकी रचना १०वीं शताब्दी में अथवा इसके बाद हुई थी[2]। इसमें भिन्न भिन्न तीर्थों का महत्व दिखलाने के लिए बहुत सी कथाओं का उल्लेख दिया गया है। रामतीर्थ-माहात्म्य में राम-कथा का वर्णन मिलता है जिसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

कैकेयी द्वारा देव-दानव-युद्ध में तीन वरों की प्राप्ति।
श्रवणकुमार-वध के प्रायश्चित स्वरूप दशरथ का अश्वमेध-यज्ञ करना,

१. आर० सी० हाजरा : इंडियन कलचर-भाग ३, पृ० ४७७।
२. आर० सी० हाजरा : इंडियन कलचर-भाग २, पृ० २३५।

तथा उसमें आकाश-वाणी द्वारा उसे पुत्रोत्पति का आश्वासन दिया जाना।

वनवास के समय राम द्वारा गौतमी-तट पर पिंडदान से दशरथ की नरक से मुक्ति (दे० अध्याय १२३)।

सहस्र-कुंड- माहात्म्य (दे० अध्याय १५४) में सीता त्याग का उल्लेख है और इसके बाद राम के सीता का स्मरण करके, गौतमी-तट के सहस्र-कुंड पर तपस्या करने का वर्णन किया गया है।

किष्किधातीर्थ-माहात्म्य में (अध्याय १५७) रावणवध के बाद अयोध्या की यात्रा करते हुए गौतमीतट पर राम के पांच दिन तक निवास तथा शिवलिंग पूजा का उल्लेख किया गया है।

१७२. **गरुण पुराण** का रचनाकाल सम्भवतः दसवीं शताब्दी ई० है, लेकिन इसमें जो **रामायण, महाभारत** तथा **हरिवंश** का वर्णन किया गया है वह बहुत अर्वाचीन प्रक्षेप माना जाना चाहिए।[1] गरुड़ पुराण की राम-कथा की विशेषता यह है कि इसमें राम स्वयं शूर्पणखा को विरूप कर देते हैं तथा अयोध्या लौटने के बाद पितृकर्म के लिए गयाशिर जाते हैं (दे० अध्याय १४३, वेंकटेश्वर संस्करण)।

१७३. **स्कंद-पुराण** की अधिकांश सामग्री की सृष्टि आठवीं शताब्दी के बाद[2] हुई है, लेकिन इसमें बहुत से प्रक्षेप मिलते हैं जिनका रचनाकाल अज्ञात है। वेंकटेश्वर प्रेस के संस्करण में निम्नलिखित राम-कथा-सामग्री मिलती है :

(१) माहेश्वरखंडः अध्याय ८, रावण-चरित के बाद रामावतार-वर्णन तथा राम द्वारा रावण वध।

(२) वैष्णव-खंड : कार्तिकेय-माहात्म्य, अध्याय २० २५ : अवतार कारण वर्णन में वृन्दा शाप तथा धर्मदत्त और कहला की कथा। धर्मदत्त का पुनर्जन्म में दशरथ होना।

अयोध्या माहात्म्य : अध्याय ६, राम का स्वधामगमन।

---

१. आर० सी० हाजरा: पुराणिक रेकर्ड्स, पृ० १४४ और एनल्स भं० ओ० रि० इं० भाग १९ पृष्ठ ६८-७५।

२. आर० सी० हाजरा : पुराणिक रेकर्ड्स पृ० १६५।

(३) ब्राह्म-खंड (अ) सेतुमाहात्म्य : अध्याय २, एक संक्षिप्त राम-चरित जिसमें विशेष कर सेतुबंध का वर्णन किया गया है।
अध्याय ७: समुद्र-बंधन के पूर्व राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का वर्णन।

अध्याय २२ : सीता की अग्निपरीक्षा तथा अग्नि द्वारा सीता के सतीत्व की प्रशंसा।

सर्ग २७ : रावण-वध के बाद ब्रह्महत्या के प्रायश्चित के लिए राम द्वारा कोटि-तीर्थ पर शिवलिंग की स्थापना।

सर्ग ३० : विभीषण द्वारा सेतुबंध को तोड़ने के लिए राम से प्रार्थना।

सर्ग ४४-४७: एक संक्षिप्त रामचरित के बाद (जो महाभारत के रामोपाख्यान पर निर्भर है) राम द्वारा रावणवध के प्रायश्चित-स्वरूप रामेश्वर लिंग की स्थापना, हनुमान को शिवलिंग को ले आने के लिए कैलाश भेजा जाना तथा मुहूर्त के बीत जाने की आशंका से राम द्वारा सैकत लिंग की स्थापना, हनुमान का बाद में पहुंचना तथा शोक करना।

(आ) धर्मारण्यखंड : अध्याय ३० ३१, ८६ श्लोकों में रामचरित का वर्णन जिसकी विशेषता यह है कि मुख्य घटनाओं की तिथियों का उल्लेख किया गया है (दे० नीचे अनु १२६)। अनन्तर राम द्वारा धर्मारण्य की तीर्थ-यात्रा का वर्णन।

(४) काशीखंड : इसमें राम-कथा नहीं मिलती।

(५) अवंतीखंड : चतुरशीतिलिंगमाहात्म्य, अध्याय ७६, हनुमान-चरित, जिसमें हनुमान रुद्रावतार माने गए हैं।

रेवाखंड : अध्याय १३६, अहल्योद्धार की कथा, जिसके अनुसार अहल्या राम से मुक्ति पाने के बाद नर्मदातीर्थ पर शिव की पूजा करती है।

(६) नागरखंड :अध्याय ६६-६८ दशरथ इन्द्र की मैत्री; दशरथ का केयपुर में पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या करना तथा उनको जनार्दन से आश्वासन मिलना। दशरथ के चार पुत्रों तथा एक पुत्री (शान्ता) की प्राप्ति।

अध्याय ६६-१०३ : राम के स्वर्गारोहण का वर्णन, जिसमें राम सीता-त्याग तथा लक्ष्मण मरण के बाद विभीषण के पास जाकर उनको धर्मोपदेश

देते हैं। विभीषण के आग्रह करने पर राम द्वारा सेतु का भंग; लौटते समय राम का अनेक तीर्थों में शिवलिंग की स्थापना करना।

अध्याय २०८ : अहल्योद्धार तथा अहल्या द्वारा तीर्थयात्रा और शिवपूजा।

(७) प्रभासखंड : प्रभासक्षेत्रमाहात्म्य : अध्याय १११-३, रामेश्वर-तीर्थ में राम-लक्ष्मण द्वारा अनेक लिंगों की स्थापना।

अध्याय १२३ : रावण द्वारा रावणेश्वर-तीर्थ में शिवलिंग की स्थापना।

अध्याय १७१ : दशरथ द्वारा पुत्रप्राप्ति के उद्देश्य से दशरथेश्वर में शिवलिंग की स्थापना।

१७४. **पद्मपुराण** के खंडों का अलग अलग रचनाकाल माना जाता है। पातालखंड, जिसमें बहुत सी राम-कथा-सम्बन्धी सामग्री मिलती है, १२ वीं शताब्दी का माना जाता है। उत्तरखंड अपना वर्त्तमान रूप १५०० ई० के लगभग प्राप्त कर सका। इसमें भी रामचरित का पूरा वर्णन किया गया है [1]।

पातालखंड का एक गौडीय पाठ सुरक्षित है जिसमें प्रारम्भ के २८ अध्यायों में कालिदासकृत **रघुवंश** से बहुत कुछ मिलती जुलती कथा दी गई है[2]। आनन्दाश्रम संस्करण के पातालखंड में रामाश्वमेध का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० अध्याय १, ६८)। इस वर्णन की निम्न-लिखित विशेषताएं उल्लेखनीय हैं :

एक रामचरित जिसमें मुख्य घटनाओं की सब तिथियों का उल्लेख है। यह **स्कंदपुराण** से उद्धृत किया गया है[3] (अध्याय ३६. ६. ८०)।

धोबी-कथन के फलस्वरूप सीता त्याग (अध्याय ५५-५८)।

कुश लव का उत्पत्ति तथा उनका राम की सेना से युद्ध करना (अध्याय ५९-६६)।

राम-सीता का सम्मिलन, जिससे राम-कथा सुखान्त बना दी गई है (सर्ग ६७-६८)।

---

१. आर० सी० हाजरा : इंडियन कलचर भाग ४, पृ० ७३ आदि।

२. दे० ढाका विश्वविद्यालय की हस्तलिपि नं० १६२३।

३. दे० [illegible]

पातालखंड के १०० वें अध्याय में बांधे हुए विभीषण की राम द्वारा मुक्ति की कथा दी गई है। (दे० ऊपर अनु० १७०) तथा ११२ वें अध्याय में एक 'पुराकल्पीयरामायण' का वर्णन भी किया गया है। उस राम-कथा में दशरथ की चार पत्नियों (कौशल्या, सुमित्रा, सुरूपा तथा सुवृषा) का उल्लेख है, बाललीला का किंचित् वर्णन किया गया है। सीतास्वयंवर में इन्द्र, रावण आदि के असफल प्रयत्न के पश्चात् राम के धनुर्भंग करने का उल्लेख मिलता है, शिव के दिए हुए अजगव धनुष पर वानर-सेना के समुद्र को पार करने की कथा दी गई है तथा कुंभकर्ण-वध रावण-वध के पश्चात् माना गया है। ११३ वें अध्याय में राम शिव से शिवभक्ति की प्रार्थना करते हुए दिखलाए गए हैं (**भक्तिरस्तु स्थिरा त्वयि** श्लोक १७६)।

सृष्टिखंड में कोई विस्तृत रामचरित नहीं मिलता है। केवल निम्नलिखित प्रसंगों का वर्णन किया गया है :

अध्याय ३५ : शम्बूक-वध की कथा।

अध्याय ३६-३८ . राम-अगस्त्य-संवाद जिसमें **वाल्मीकीय** उत्तरकांड के पांच सर्गों की सामग्री उद्धृत की गई है (सर्ग ७६-८३)।

अध्याय ३६ : राम का विभीषण को धर्मोपदेश देना तथा मथुरा में वामन की प्रतिष्ठा करना।

उत्तरखंड में रामरक्षास्तोत्र (अध्याय ७४) तथा शम्बूक-वध कथा (अध्याय २३०) के अतिरिक्त रामचरित का एक पूरा वृत्तान्त भी मिलता है (दे० अध्याय २६६-२७१)।[1] प्रारम्भ में रामावतार-कारण के वर्णन में स्वायंभू मनु की तपस्या का उल्लेख है, जिसके फलस्वरूप वह तीन जन्मों में विष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त कर सके। शेष कथा **वाल्मीकि** रामायण के सात कांडों का संक्षिप्त रूप मात्र है। अंतर यह कि इसमें अवतारवाद अधिक व्यापक है। राम और सीता विष्णु और लक्ष्मी के पूर्णावतार माने जाते हैं तथा लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमानुसार अनन्त

---

१. उत्तरखंड की इस कथा के गौडीय पाठ के लिए दे० जर्नल एसियाटिक सोसाइटी बंगाल, १८४२- पृ० ११२०,२८।

सुदर्शन और पांचजन्य के अंशावतार कहे गए हैं। इस कथा के अनुसार राम ने शूर्पणखा को विरूप किया था।

२७५. **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** की रचना सम्भवतः ७०० ई० के पूर्व हुई थी, लेकिन उसका वर्त्तमान रूप सोलहवीं शताब्दी ई० का है।[1] इसमें देववती वृत्तान्त के वर्णन के बाद सीता-हरण की कथा दी गई है जिसमें अग्नि द्वारा एक माया-मय सीता की सृष्टि करने का उल्लेख किया गया है (दे० प्रकृति-खंड, अध्याय १४)। यह कथा **श्रीमद्देवी-भागवत** के वृत्तान्त से अभिन्न है (स्कंध ६ अध्याय १६)।

३. उपपुराण

२७६. **विष्णु धर्मोत्तरपुराण** की रचना सम्भवतः सातवीं शताब्दी के लगभग काश्मीर में हुई थी।[2] इसमें रावण वध की कथा के बाद (अध्याय २००) भरत के गंधर्वों के विरुद्ध युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है (अध्याय २०२-२६६)। इसके अन्तर्गत एक रावणचरित मिलता है जिसमें राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन क्रमानुसार नारायण-संकर्षण-प्रद्युम्न-अनिरुद्ध के अवतार बताए गए हैं (दे० अध्याय २१२) और इसका उल्लेख भी किया गया है कि रावण सर्वदा एक स्वर्ण शिवलिंग अपने पास रखता था (**शातकुंभमयं लिंगं देवदेवस्य शूलिनः** दे० अध्याय २२२, श्लोक १२)।

२७७. **नृसिंह पुराण** (४००-५०० ई०)[3] में छः अध्याय मिलते हैं, जिनमें **वाल्मीकि रामायण** के प्रथम छः कांडों की कथा किंचित् परिवर्तन सहित संक्षेप में दी गई है (अध्याय ४७-५२)। अवतारवाद को अधिक महत्त्व दिये जाने के कारण राम नारायण के पूर्णावतार तथा लक्ष्मण शेष के अवतार बताए गये हैं। अहल्या अपने पति के शाप से 'पाषाणभूता' कही गई है। सीता के स्वयम्वर के बाद अन्य क्षत्रिय राजाओं के राम पर आक्रमण का वर्णन किया गया है। सीताहरण के समय रावण के सीता को स्पर्श

---

१. दे० आर० सी० हाजरा : पुराणिक रेकर्ड्स पृ० १६६ और एनल्स ओ० इ० भाग १९, पृ० ७६।

२. दे० जी बूलर : इं० ए० भाग १९, पृ० ३८२ आदि।

३. आर० सी० हाजरा : एनल्स भं० ओ० रि० इं० भाग २६, पृ० ४४

करने का उल्लेख है (दे० आगे अनु० ४४४) । रावणवध के पश्चात् राम के यज्ञों का तथा उनके स्वर्गारोहण का उल्लेख किया गया है । सीतात्याग का कोई भी निर्देश नहीं मिलता है । रावणवंश का वर्णन वृत्तान्त के आरम्भ में दिया गया है (अध्याय ४७) ।

१७८. **वह्निपुराण** की सं०१६४६ की एक हस्तलिपि लन्दन में सुरक्षित है ।[1] इसमें एक अत्यन्त विस्तृत राम-कथा मिलती है, जिसमें बालकांड से लेकर युद्धकांड तक समस्त **रामायण** की कथावस्तु का वर्णन दिया गया है। प्रारम्भ में रामावतार के कारण (भृगु-शाप) तथा रावण-कुम्भकर्ण को जन्मकथा (मधुकैटभ-हिरण्यकशिपु-हिरण्याक्ष) का उल्लेख किया गया है। 'पाषाणभूता' अहल्या का (पृ० १८२ अ) तथा हनुमान के मूषिका-रूप में लंका प्रवेश का भी उल्लेख मिलता है । शेष कथा (पृ०२६६ अ) में किसी मौलिकता का नाम भी नहीं है ।

१७९. शैव **स्कन्दपुराण** को छोड़ कर उपर्युक्त पुराणों तथा उपपुराणों में जो राम-कथा मिलती है उस पर साम्प्रदायिकता का प्रभाव कम पड़ा है । अन्य शैव तथा शाक्त उपपुराणों में इस सांप्रदायिकता की गहरी छाप स्पष्ट है । राम शिव अथवा देवि-भक्त के रूप में दिखाई पड़ते हैं तथा शिव अथवा देवी के प्रसाद से रावण पर विजय प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं।

वेंकटेश्वर प्रेस के **शिवमहापुराण** में निम्नलिखित राम-कथा-सम्बन्धी सामग्री मिलती है ।

रुद्रसंहिता ।

सृष्टिखण्डः नारद-मोह की कथा (अध्याय० ३-४) ।

सती खण्डः सती द्वारा राम की परीक्षा तथा राम का सती से कहना कि शंकर की आज्ञा से मैंने अवतार लिया है (अध्याय २४-२६) ।

युद्ध खण्डः वृन्दा-शाप की कथा (अध्याय २३) ।

इसके अतिरिक्त शतरुद्रसंहिता में शिव के वीर्य से हनुमान के जन्म की (अध्याय २०) भी दी गई है ।

गणपति कृष्णजी प्रेस के **शिवपुराण** के संस्करण में, धर्मसंहिता के अन्तर्गत एक संक्षिप्त रामकथा उद्धृत की गई है (अध्याय १३ १४०) । तथा

१. इंडिया आफिस लाइब्रेरी कैटलाग, पृ० १२९४ ।

ज्ञानसंहिता के अन्तर्गत वनवास के समय सीता द्वारा दशरथ के लिए पिंडदान का वर्णन किया गया है (अध्याय३०) और सागर को पार करने के लिए शिव से राम द्वारा सहायता की प्रार्थना का उल्लेख है (अध्याय ५०)।

१८०. **श्रीमद्देवीभागवत पुराण** के नवरात्रमाहात्म्य की रामकथा के अनुसार राम ने शूर्पणखा को विरूप किया था। शेष कथा रामायणीय कथा से बहुत कुछ मिलती जुलती है। अन्तर यह है कि सीताहरण के बाद नारद की शिक्षा के अनुसार राम रावण पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से नवरात्रोपवास करते हैं। इसके अन्त में 'सिंहारूढ़ा देवी भगवती' राम को दर्शन देकर रावण पर विजय का आश्वासन देती हैं। अनन्तर राम विजया पूजा करके वानर-सेना सहित समुद्र की ओर प्रस्थान करते हैं (दे० स्कंध ३, अध्याय २८-३०)। इस पुराण के नवें स्कंध में वेदवती-वृत्तान्त भी उद्धृत किया गया है (अध्याय १६)।

१८१. डा० राजेन्द्र हाजरा के अनुसार[1] **महाभागवत (देवी) पुराण** (गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई १९१३) की रचना दसवीं ग्यारहवीं शताब्दी के लगभग पूर्व बंगाल अथवा पश्चिम कामरूप में हुई थी। इसमें एक रामोपाख्यान मिलता है (अध्याय ३७-४९), जिसकी कथावस्तु वाल्मीकीय राम-कथा से बहुत भिन्न नहीं है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएं हैं। जब देवता रावणवध करने के लिए विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना करते हैं, विष्णु उनसे कहते हैं कि जब तक देवी लंका में निवास करती हैं मैं रावण को पराजित नहीं कर सकता। अनन्तर सब मिलकर कैलास पर देवी के पास जाते हैं। देवी सीताहरण के कारण लंका को छोड़ देने की प्रतिज्ञा करती हैं तथा शिव हनुमान का रूप धारण करके राम की सहायता करने का वचन देते हैं। युद्ध के वर्णन में राम के देवी से प्रार्थना करने का अनेक स्थलों पर उल्लेख है। ब्रह्मा भी राम की विजय के लिए देवी की मृण्मयी मूर्ति बनाकर उनकी पूजा करते हैं। इस वृत्तान्त में सीता मदोदरी के गर्भ से उत्पन्न मानी गई हैं (दे० अध्याय ४२-६४)।

---

१. प्रस्तुत लेखक के नाम डा० हाज़रा के एक पत्र में।

१८२. **बृहद्धर्म पुराण** की राम-कथा **महाभागवत (देवी) पुराण** से बहुत भिन्न नहीं है। इसमें **महाभागवत पुराण** की उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त सीताहरण का वृत्तान्त **नृसिंह पुराण** की कथा से मिलता जुलता है, तथा हनुमान बिडाल का रूप धारण करके लंका में प्रवेश करते हैं (दे० पूर्वखंड, अध्याय १८-२२)। राम-कथा के वर्णन के पश्चात् रामायणोत्पत्ति का वृत्तान्त दिया गया है, जिसमें श्लोकोत्पत्ति आदि के बाद **रामायण** के उत्कर्ष-वर्णन के प्रसंग में **रामायण** के **महाभारत** तथा पुराणों का बीज होने का उल्लेख किया गया है (दे० पूर्वखंड, अध्याय २५-३०)।

१८३. **सौर पुराण** (६५०-१०५० ई०)[1] में पौलस्त्य-संतति (अध्याय ३०. १४-१६) तथा सूर्यवंश का (अध्याय ३०. ४८-६६) किंचित् वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत की राम-कथा में राम को 'महादेवपरायण' कहा गया है तथा शंकर के प्रसादस्वरूप राम के अपना पद प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है। जनक ने गौरी को संतुष्ट करके सीता को (जो पार्वती के अंश से उत्पन्न हुई हैं) प्राप्त किया था, ऐसा कथन भी मिलता है।

१८४. **कालिका पुराण** (दसवीं-ग्यारहवीं श० ई०) में ब्रह्मा द्वारा राम की विजय के लिए दुर्गा की पूजा का उल्लेख किया गया है (अध्याय ६२. २०-३८) तथा ३८ वें अध्याय में जनक के हल जोतते समय सीता को तथा दो अन्य पुत्रों को प्राप्त करने की कथा दी गई है।

ग—साम्प्रदायिक रामायण

यो ग वा सि ष्ठ

१८५. **योगवासिष्ठरामायण** वास्तव में साम्प्रदायिक **रामायण** नहीं है, लेकिन इसका उल्लेख यहां अन्य साम्प्रदायिक रामायणों के साथ अधिक सुविधाजनक है। एम्० विंटरनित्स तथा एस० एन्० दास गुप्त योग वासिष्ठ को आठवीं शताब्दी ई० का मानते हैं,[2] लेकिन डा० वी० राघवन् के अनुसार उसकी रचना ११०० ई० और १२५० ई० के बीच में

---

१. आर० सी० हाजरा : न्यू इंडियन एंटिक्वेरी भाग ७, पृ० ११२०।

२. दे० क्रमशः हि० इ० लि० भाग ३, शप० ४४३ और हि० ई० फिलासफी भाग २, पृ० २३०।

हुई थी।[1] इस ग्रन्थ का मुख्य विषय वसिष्ठ-रामचन्द्र संवाद है, जिसमें वसिष्ठ राम को मोक्ष-प्राप्ति के उपाय पर एक विस्तृत उपदेश देते हैं। वाल्मीकि ने अरिष्टनेमि को यह संवाद सुनाया था तथा **योगवासिष्ठ** मे अगस्त्य सुतीक्ष्ण को शिक्षा के लिए वाल्मीकि-अरिष्टनेमि संवाद को दुहराते हैं।

इसके प्रारंभ में रामावतार के तीन कारण बताए जाते हैं। सनत्कुमार, भृगु तथा देव शर्मा ब्राह्मण के शाप (दे० वैराग्य प्रकरण अध्याय १)। अनन्तर राम के १६ वर्ष की अवस्था मे विरक्त होजाने की कथा दी गई है। विश्वामित्र के कहने पर वसिष्ठ ने एक विस्तृत उपदेश दिया जिसके फल-स्वरूप राम निर्लिप्त होकर अपने कर्त्तव्यपालन के लिए तत्पर हुए।

अन्तिम प्रकरण में काक भुशुण्डी के जन्म तथा उसके सुमेरु पर निवास की कथा दी गई है। इस कथा मे राम तथा भुशुण्डी का कोई विशेष सम्बन्ध नहीं सूचित किया गया है (दे० निर्वाण प्रकरण अध्याय १३-२३)।

अध्यात्म रामायण

१८६. साम्प्रदायिक रामायणों मे **अध्यात्म रामायण** निर्विवाद रूप से सब से महत्त्वपूर्ण है। इसके रचनाकाल तथा रचयिता के विषय में खोज की अपेक्षा है। इस ग्रन्थकी रामानन्द सम्प्रदाय में बहुत प्रतिष्ठा है और इसका प्रभाव **आनन्द रामायण, रामचरितमानस** तथा एकनाथ के **मराठी रामायण** आदि पर प्रत्यक्ष है। एकनाथ ने (१६ वीं श० ई०) **अध्यात्म रामायण** को एक आधुनिक रचना कहा है। अतः इसकी प्राचीनता में बहुत सन्देह है। सब से अधिक सम्भव यह है कि १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी में इसकी रचना रामानन्द सम्प्रदाय में हुई थी। रामानन्द को भी इसके रचयिता सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है।[2]

रामभक्ति के विकास मे इस ग्रन्थ का अधिक महत्त्व है, राम-कथा के विकास में इसका स्थान अपेक्षाकृत गौण है। इसका मुख्य उद्देश्य है वेदान्त दर्शन के आधार पर रामभक्ति का प्रतिपादन। प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से इसकी निम्नलिखित विशेषताएं उल्लेखनीय हैं :

---

१. दे० जर्नल अव ओरियेन्टल रिसर्च, भाग १३, पृ० १००-१२८।

२. दे० दि आथरशिप आव दि अध्यात्म रामायण, जर्नल गंगानाथ झा रिसर्च इस्टी-

समस्त रचना पार्वती-शंकर संवाद के रूप में दी गई है। नारद ने ब्रह्मा से इस संवाद को सुना था।

अवतारवाद की व्यापकता : राम, सीता तथा लक्ष्मण के परब्रह्म, प्रकृति तथा शेष के अवतार होने का निरन्तर उल्लेख किया गया है। विश्वामित्र, वसिष्ठ, जनक, कौशल्या, कुंभकर्ण रावण, आदि रामावतार के रहस्य से परिचित हैं।

बालकांड में भागवत का अनुकरण (दे० राम का कौशल्या को अपना दिव्य रूप दिखलाना तथा राम की बाललीला, अध्याय ३)।

अहल्योद्धार के अनन्तर केवट का वृत्तान्त, जिसे तुलसीदास ने अयोध्या-कांड में रखा है।

वाल्मीकि का रामनाम माहात्म्य दिखलाने के लिए अपनी आत्म-कथा सुनाना (दे० २. ६)।

मायामयी सीता के हरण का वृत्तान्त (दे० ३. ७)।

लक्ष्मण का १२ वर्ष तक उपवास करना (दे० ३. ४ तथा ६. ८)।

राम द्वारा सेतु-बध के पूर्व शिवलिंग की स्थापना (६. ४)।

रावण का शुक के परामर्श के अनुसार यज्ञ करना तथा अंगद द्वारा उसका भंग किया जाना (६. १०)।

रावण के नाभिदेश में स्थित अमृत का उल्लेख (६. ११. ५३)।

रावण के बैकुण्ठ जाने के उद्देश्य से सीताहरण करने का उल्लेख (७. ४. ६)।

अद्भुत रामायण

१८७. ऐसा प्रतीत होता है कि **अद्भुत रामायण** की रचना **अध्यात्म-रामायण** के कुछ काल बाद हुई है[1]। भूमिका में समस्त वृत्तान्त

---

१. दे० वी० राघवन : म्युसिक इन दि अद्भुत रामायण, जर्नल म्युसिक एकेडमी, भाग १६, पृ० ६६।
जी० ग्रियर्सन: आन दि अद्भुत रामायण, बुलेटिन स्कूल ओरियेन्टल स्टडिस, भाग ४, पृ० ११।
प्रस्तुत परिचय वेंकटेश्वर प्रेस संस्करण पर निर्भर है।

वाल्मीकि-भारद्वाज-संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है (दे० सर्ग १)। इसकी कथावस्तु तीन भागों में विभाजित की जा सकती है।

(अ) अवतार के कारण (सर्ग २-८)

नारद तथा पर्वत द्वारा विष्णु को दिया हुआ शाप रामावतार का कारण बताया गया है। इस कथा के अनुसार श्रीमती, अंबरीष की पुत्री को भी शाप दिया जाता है। वह जानकी बनकर राक्षस द्वारा चुराई जाएगी (सर्ग २.४)।

अनन्तर सीता के अवतार का कारण बतलाने के लिए एक नई कथा दी गई है। इसके अनुसार नारद ने स्वर्ग में अपमानित किए जाने के कारण लक्ष्मी को शाप दिया था जिसके फलस्वरूप वह मंदोदरी की पुत्री बन गई (दे० सर्ग ५-८ तथा आगे अनु० ३४८)।

(आ) वाल्मीकीय राम चरित (सर्ग ९-१६)

इसमे परशुराम के तेजोभंग से लेकर रावण-वध के बाद अयोध्या प्रत्यागम तक समस्त राम कथा का सक्षिप्त वर्णन किया गया है। इस राम-कथा के अनुसार राम ने परशुराम को तथा सीता हरण के बाद हनुमान को अपना विष्णुरूप दिखलाया था। इसके अधिकाश सर्गों (११-१५) में राम तथा हनुमान का भक्ति के विषय में एक विस्तृत सवाद दिया गया है।

(इ) सहस्रमुखरावण-वध (सर्ग १७-२७)

इस अन्तिम भाग मे देवी-माहात्म्य का प्रत्यक्ष अनुकरण किया गया है। देवी का रूप धारण कर सीता द्वारा पुष्कर-निवासी सहस्र-स्कंध रावण-वध इसका वर्ण्य विषय है। (दे० आगे अनु० ५३०)।

आ न न्द रा मा य ण

१८८. **आनन्द रामायण**[1] की रचना **अध्यात्मरामायण** के बाद तथा एकनाथ (१६ वीं श० ई०) के पूर्व हुई थी। अतः बहुत सम्भव है कि यह १५ वीं शताब्दी में लिखा गया हो। इसमें अनेक स्थलों पर **अध्यात्मरामायण** के उद्धरण मिलते हैं।[2] तथा बहुत सी विचित्र

१. दे० गोपाल नारायन (बम्बई) का सस्करण।

२. दे० महाराष्ट्रीय : श्री रामायण समालोचना, भाग २, पृ० ४२५।

कथाओं को भी स्थान दिया गया है। १२२५२ श्लोकों के इस विस्तृत ग्रन्थ की कथा-वस्तु का यहां अत्यन्त संक्षिप्त निरूपण किया जाता है। इसमें शिव-पार्वती संवाद का वर्णन है, जिसके अन्तर्गत द्वितीय कांड के तृतीय सर्ग रामदास-विष्णुदास का उप-संवाद मिलता है।

(१) सारकांड (१३ सर्ग)

दशरथ-कौशल्या-विवाह का वृत्तान्त जिसके अन्तर्गत रावण द्वारा कौशल्या-हरण की कथा मिलती है। देव-दानव युद्ध में कैकेयी की वरप्राप्ति। श्रावण-वध, दशरथ-यज्ञ तथा कैकेयी के पायस का एक काक द्वारा चुराया जाना तथा अजनी-पर्वत पर फेंका जाना (सर्ग १)।

इसके बाद के सर्गों में राम-जन्म से लेकर उत्तरकांड के प्रथम ४० सर्गों तक की समस्त वाल्मीकीय राम-कथा का वर्णन। निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं :

बाललीला-वर्णन (सर्ग २) तथा अहल्योद्धार के अनन्तर नाविक का वृत्तान्त (सर्ग ३, २४-२८)। दोनों वृत्तान्त **अध्यात्म रामायण** से लिए गए हैं।

सीता-स्वयंवर में रावण की उपस्थिति (सर्ग ३)।

अग्निजा सीता की जन्म-कथा (सर्ग ३, १८८ आदि)।

वृन्दा-शाप तथा कलहा-धर्मदत्त का कैकेयी-दशरथ के रूप में अवतार (सर्ग ४)।

सीताहरण के बाद सीता का रूप धारण कर उमा का राम की परीक्षा करना (सर्ग ७)।

रावण का शिव से आत्मलिंग तथा पार्वती को प्राप्त करने तथा दोनों को खो बैठने की कथा। (सर्ग ६)।

ऐरावण तथा मैरावण का राम-लक्ष्मण को पाताल से जाना तथा हनुमान द्वारा उनकी मुक्ति (सर्ग ११)।

सुलोचना की कथा (सर्ग ११, २०५ आदि)।

मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से रावण के सीताहरण करने का उल्लेख (सर्ग १३, ११६ आदि)।

(२) **यात्राकांड** (६ सर्ग)

वाल्मीकि रामायण की उत्पत्ति (दे० रा० १. २-१२ आदि) तथा वाल्मीकि द्वारा शतकोटि श्लोक रामायण की रचना का उल्लेख (सर्ग १. २)।

इसके बाद **आनन्द रामायण** की अधिकांश सामग्री नवीन है। इस कांड में राम के चारों दिशाओं में तीर्थ-यात्रा करने का वर्णन मिलता है।

(३) **यागकांड** (६ सर्ग)।

राम के एक अश्वमेध का वर्णन।

(४) **विलासकांड** (६ सर्ग)।

शंकरकृत रघुवीर-स्तव (सर्ग १), सीता का नख-शिख वर्णन। सीता-लंकार, जलक्रीड़ा, सीताराम-दिनचर्या (सर्ग २. ६)।

एक पत्नीव्रत रखने के पुरस्कार स्वरूप अगले अवतार में बहुत सी पत्नियों को प्राप्त करने का राम को आश्वासन (सर्ग ७-१६)।

राम का कामपीड़िता देवपत्नियों को कृष्णावतार के समय गोपिकाएं बनने का आश्वासन देना (सर्ग ७. २६ आदि)।

कृष्णावतार के समय सत्यभामा तथा कुब्जा बन जाने का गुणवती तथा पिंगला को राम द्वारा आश्वासन (सर्ग ८)।

सीता सहित राम की कुरुक्षेत्र-यात्रा (सर्ग ६)।

(५) **जन्मकांड** (६ सर्ग)।

राम द्वारा सीता-त्याग की कथा (सर्ग १-३,दे० आगे अनु० ५६७)।

कुश-जन्म तथा वाल्मीकि द्वारा लव की सृष्टि (सर्ग४)।

कुश-लव का राम-सेना से युद्ध करना, सीता की शपथ से पृथ्वी देवी का प्रगट होना तथा राम से भयभीत होकर पृथ्वी का सीता को लौटा देना, उर्मिला, मांडवी तथा श्रुकीर्ति के दो दो पुत्र उत्पन्न होना (सर्ग६-६)।

(६) **विवाहकांड** (६सर्ग)।

राम-लक्ष्मण आदि के आठ पुत्रों के भिन्न भिन्न विवाहो का वर्णन।

(७) **राज्यकांड** (२४ सर्ग)।

राम-राज्य-शासन के इस विस्तृत वृत्तान्त में कई विजय यात्राओं का

तथा राजनीति का वर्णन किया गया है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इस पर कृष्ण-लीला का गहरा प्रभाव पड़ा है। राम को देखकर स्त्रियां प्रायः कामातुर हो जाती हैं, इस पर राम उनको कृष्णावतार में उनकी लालसा पूरी करने की प्रतिज्ञा करते हैं (दे० शतनारीवर-प्रदान, सर्ग ४; द्विज-कन्याचतुष्टय-वरदान, सर्ग ११; षोडश सहस्र, वरदान, सर्ग १२; राम-दासी को राम का ताम्बुल-रस खाने के पुरस्कार-स्वरूप राधा बन जाने का वरदान, सर्ग २१। इसके अतिरिक्त कई स्थलों पर कृष्ण तथा रामोपासकों का विरोध आभासित है (दे० सर्ग ३) तथा रामावतार की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है (सर्ग २०)।

शतस्कंध रावण द्वारा राम की पराजय तथा सीता द्वारा उसके वध की कथा में (सर्ग ४. ८८ आदि) तथा चंडी का रूप धारण कर सीता द्वारा मूलकासुर-वध के वृत्तान्त में शक्ति-सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट है।

(८) **मनोहरकांड** (१८ सर्ग)

इस कांड में राम-कथा-सम्बंधी सामग्री नहीं मिलती। इसके वर्ण्य विषय रामोपासना-विधि, रामनाममाहात्म्य, चैत्रमहिमा, राम कवच आदि हैं।

(९) **पूर्णकांड** (९ सर्ग)

इस अन्तिम कांड में सोमवंशी राजाओं के आक्रमण तथा युद्ध और अनन्तर उनसे संधि के वर्णन के अतिरिक्त कुश के अभिषेक तथा रामादि के वैकुण्ठारोहण की कथा दी गई है।

काल निर्णय रामायण

१८९. रामायणों का एक ऐसा वर्ग मिलता है जिसकी विशेषता यह है कि इसमें राम-कथा की प्रधान घटनाओं की तिथियाँ दी गई हैं।

स्कंदपुराण (दे० ब्राह्मखंड के अंतर्गत धर्मारण्यखंड तीसवाँ अध्याय) तथा **पद्मपुराण** में (दे० पातालखंड छत्तीसवां अध्याय) संभवतः इस प्रकार की सबसे प्राचीन राम-कथा सुरक्षित है। **स्कन्दपुराण** तथा **पद्मपुराण** में लोमश ऋषि इस रामचरित के वक्ता माने जाते हैं।

अग्निवेश के नाम से इस प्रकार का एक अन्य रामायण प्रचलित है जिसके अनेक संस्करण मिलते हैं, उदाहरणार्थ :

अग्निवेश-रामायण (वेंकटेश्वर प्रेस, विस्तार, १०५ श्लोक)
समयादर्श-रामायण (लक्ष्मी नारायण प्रेस, विस्तार, १०३ श्लोक)
समयनिरूपण-रामायण (वेंकटेश्वर प्रेस, विस्तार, ४५ श्लोक)

राजेन्द्र लाल मित्र के कैटालाग में अग्निवेश-कृत **रामायणसार** (भाग ७, पृ० ५८) तथा **रामायणरहस्य** वा **रामहृदयम्** (भाग ८, पृ० १२५) का उल्लेख किया गया है। इस रचना का विस्तार २७७ श्लोक बताया गया है। तंजुर कैटालाग में अग्निवेश-कृत ५०० श्लोकों के विस्तार के **रामजातकम्** का उल्लेख है (दे० नं० ६४८८) **अग्निवेश रामायण** में कथा के दृष्टिकोण से कोई विशेषता नहीं है। घटनाओं की तिथियों के अतिरिक्त राम तथा सीता की अवस्था का भी ध्यान रखा गया है। विवाह के समय राम तथा सीता की अवस्था क्रमानुसार १५ तथा ६ वर्ष की थी, वनवास के समय २७ और १८ वर्ष की, राज्याभिषेक के समय ४२ और ३३ वर्ष की।

लोमश तथा अग्निवेश-कृत रचनाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित काल-निर्णय रामायणों का उल्लेख मिलता है :

अब्द-रामायण (दे० कल्याण का रामायणांक पृ० ३०४)
व्यासकृत **रामायणतात्पर्यदीपिका** (मद्रास कैटालाग, आर, १५१८)
रामावतारकालनिर्णयसूचिका (मद्रास कैटालाग, डी, १६०६)
श्रीनिवासराघवकृत **रामायणसंग्रह** (मद्रास कैटालाग, आर, २२३४ बी)

गौण रामायण

१६०. अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य में बहुसंख्यक रामायणों के नामों का उल्लेख मिलता है **रामायणादेव नाना संति रामायणानि हि** (दे० आनन्द रामायण, मनोहरकांड, सर्ग ८, ६२)। ये नाम संभवतः अधिकांश कल्पित हैं और यदि उनकी रचना भी हुई हो तो इसमें बहुत संदेह नहीं है कि ये ग्रंथ अपेक्षाकृत अर्वाचीन ही हैं।

इनमें से **भुशुण्डी-रामायण** का सब से अधिक उल्लेख किया जाता है। इसके दो अन्य नाम भी प्रचलित हैं, **मूलरामायण**[1] और **आदि रामायण**। अयोध्या के श्रावण कुंज तथा लक्ष्मण किले मे और अन्यत्र भी इसकी हस्तलिपि सुरक्षित होने का आश्वासन दिया जाता है। इसमें चार खंड (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर) बताए जाते हैं जिसके प्रथम खंड में अवतार, बालचरित, रामक्रीड़ा, सीतास्वयवर का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत लेखक इस रचना का अब तक निरीक्षण न कर सका। इंडिया आफिस से जो **चित्रकूटमाहात्म्य** मिला है इसमें इसके **आदि रामायण** का एक अंश होने का उल्लेख किया गया है (दे० इडिया आफिस कैटालाग नं० ३७०४) **चित्रकूट-माहात्म्य** की हस्तलिपि मे रचना अथवा लिपिकाल का उल्लेख नहीं है लेकिन यह मैकेंजी महोदय के सग्रह की है अतः कम से कम डेढ़ सौ साल पुरानी है। भरत-अत्रि-संवाद भुशंडी द्वारा शांडिल्य को सुनाया जाता है। चित्रकूट तथा उसके आस पास के तीर्थों के वर्णन के अतिरिक्त इसके माहात्म्य का रहस्योद्घाटन भी किया गया है। चित्रकूट के साँतानक वन में एक सरोवर है जिसके मध्य में एक रम्य मंडप बना हुआ है जहाँ एक वेदिका पर राम सीता और उनकी सखियों के साथ नित्य रासक्रीड़ा करते हैं (दे० अध्याय ४ और ५)।

१६१. **महारामायण** का उल्लेख श्री रामदास गौड़कृत **हिन्दुत्व** में किया गया है (दे० पृ० १३७)। इसके पाँच अध्याय (४८-५२) अयोध्या मे संवत् १९८५ में छपे हैं। इनका वर्ण्य विषय इस प्रकार है—राम चरणों की ४८ रेखाओं का वर्णन और उनके समस्त सृष्टि के उत्पत्ति स्थान होने का उल्लेख (अध्याय ४८); रामोपासकों के संस्कारों का वर्णन, जिनमें से एक धनुर्बाणसंस्करण माना गया है (अध्याय ४९); राम के निरक्षरातीत ब्रह्म होने का तथा उनकी सखीभाव से उपासना करने का उल्लेख (अध्याय ५०); सीता की ३३ शक्तियों की नामावली तथा उनके कार्य-[illegible] (अध्याय ५१); रामनाम के महत्त्व-वर्णन के प्रसंग में रम्-धातु से राम नाम की व्युत्पत्ति का प्रतिपादन तथा राम की रासक्रीड़ा का उल्लेख (अध्याय ५२)।

१६२. **मंत्ररामायण** (वेंकटेश्वर प्रेस) में रामचरित का अभाव है।

---

१. प्रकाशित मूलरामायण वाल्मीकिकृत रामायण का प्रथम सर्ग मात्र है।

इसमें रामरक्षास्तोत्र के बाद राम कथा के भिन्न भिन्न पात्रों द्वारा भिन्न भिन्न राममंत्रों का कथन मिलता है।

१६३. **वेदान्त रामायण** (लहरी प्रेस, बनारस स० १६६४) में परशुराम के जन्म तथा चरित्र का वर्णन किया गया है। इस कथा को वाल्मीकि ने राम के संदेह का निवारण करने के लिए सुनाया था। राम ने पूछा था कि परशुराम ने क्यों क्षत्रियों का नाश किया था और क्षत्रिय वंश का लोप क्यों नहीं हुआ।

१६४. उपर्युक्त प्राप्य रचनाओं के अतिरिक्त संस्कृत हस्तलिपि-सूचीपत्रों में और बहुत से ग्रंथों का उल्लेख किया गया है। ये अधिकाँश १७ वीं शताब्दी अथवा इसके बाद की रचनाएं प्रतीत होती हैं। श्री रामदास गौड़ ने अपने **हिन्दुत्व** नामक ग्रंथ में बस्ती-निवासी पं० धनराज शास्त्री की दी हुई टिप्पणियों के आधार पर उन्नीस रामायणों की कथावस्तु का किंचित् वर्णन सहित उल्लेख किया है (दे० पृ० १३७ आदि)। प्रस्तुत अध्याय के परिशिष्ट में उन रामायणों के नाम उद्धृत किए जाएँगे।

घ—अन्य धार्मिक साहित्य

जैमिनि भारत

(अ) जैमिनीय अश्वमेध

१६५. ऐसी अनेक रचनाएं मिलती हैं जो **जैमिनि-भारत** के अंश माने जाते हैं। इस ग्रंथ की रचना **भागवत पुराण** के बाद तथा १३ वीं श० ई० के पूर्व हुई थी, क्योंकि **जैमिनीय अश्वमेध**[1] में **भागवत पुराण** का उल्लेख किया गया है तथा इसका १३ वी शताब्दी में कनारी भाषा में अनुवाद हुआ था।[2] इसका मुख्य विषय युधिष्ठिर के अश्वमेध का वर्णन है। इसमें कुशलवोपाख्यान (अध्याय २५-३६) भी दिया गया है जिसकी कथावस्तु इस प्रकार है—धोबी के कथन के फलस्वरूप सीता-त्याग, कुश लव का जन्म तथा राम की सेना से युद्ध, अनन्तर राम और

---

१. दे० वेंकटेश्वर प्रेस का संस्करण।

२. दे० एम० विंटरनित्स: वही, भाग १, पृ० ५८८।

सीता का सम्मिलन। यह सुखान्त राम-कथा **पद्मपुराण** के पातालखंड के वृत्तान्त से बहुत कुछ मिलती जुलती है (दे० अध्याय ५५-६८)।

(आ) **मेरावणचरित** (मद्रास मैनुस्क्रिप्ट कैटालाग, डी २०८२) अथवा **हनुमद्विजय** (वही, डी १२२१५)।

१६६. यह एक स्वतन्त्र रचना प्रतीत होती है, फिर भी अध्यायों की पुष्पिका में इसे **जैमिनि भारत** का एक अंश माना गया है। इसमें अगस्त्य द्वारा राम से रुद्रांश हनुमान की मैरावण पर विजय का वर्णन किया गया है। मेघनाद-वध के बाद मैरावण राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाता और हनुमान अपने पुत्र मत्स्यराज की सहायता से मैरावण का वध करके दोनों को छुड़ाते हैं।

(इ) **सहस्र मुखरावणचरित्रम्** (मद्रास कैटालाग, डी २०६८)

१६७. यह रचना **जैमिनि भारत** के आश्रमवासपर्वत का एक अंश माना जाता है। इसकी कथावस्तु उपर्युक्त **अद्भुत रामायण** के वृत्तान्त से मिलती जुलती प्रतीत होती है। रावण पर सीता की विजय के विषय में एकाध और हस्तलिपियों का पता मिला है—**सीताविजय** (वही आर, ६६४ और आर १४८) जो **वाशिष्ठोत्तर-रामायण** का एक भाग माना जाता है और जिसमें सीता का शत-स्कंध-रावण पर विजय का वर्णन किया गया है। इस प्रकार की एक और हस्तलिपि का उल्लेख है जिसका शीर्षक है **शतमुखरावणचरित्रम्** (वही आर, ६४७ बी)।

स त्यो पा ख्या न

१६८. **सत्योपाख्यान** (वेंकटेश्वर प्रेस) में वाल्मीकि-मार्कण्डेय-संवाद वर्णित है। इसकी कथावस्तु से पता चलता है कि इसकी रचना **अध्यात्म रामायण** के बहुत बाद हुई थी, जब रामकथा तथा रामभक्ति पर कृष्ण लीला का गहरा प्रभाव पड़ने लगा था। संक्षेप में इसका वर्ण्य विषय इस प्रकार है : राम-लक्ष्मण आदि के विष्णु-शेष-सुदर्शन और शंख के अवतार होने के बाद (अध्याय १-२) मथरा-कैकेयी संवाद दिया गया है जिसमें दशरथ-कैकेयी के विवाह की कथा मिलती है (अध्याय ३-६), अनन्तर मथरा के पूर्वजन्म की कथा का वर्णन किया गया है जिसके अनुसार वह दैत्य विरोचन की पुत्री थी और विष्णु की आज्ञा से इन्द्र द्वारा वज्र से मारी

गई थी । (अध्याय १०-१५) पूर्वार्द्ध के शेष अध्यायों में (१६-४६) राम की बाललीला का विस्तार से वर्णन किया गया है । इसके निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं :

काक भुशुण्डी का राम की रोटी (शुष्कलि) चुराना, बाद में उसका राम से क्षमा माँगना, राम में निश्चल भक्ति की प्रार्थना करना तथा उनके गरुड को रामतत्व सिखलाने का उल्लेख (अध्याय २६) ।

रत्नालका और उसके पति का वृत्तान्त, अगले जन्म में उनको नन्द और यशोदा बनने का आश्वासन (अध्याय २६-३०) ।

नवमीमाहात्म्य

उत्तरार्द्ध में सीतास्वयवर का वर्णन किया गया है जिसमे प्रहस्त की उपस्थिति का उल्लेख भी है । राम सीता विवाह के बाद उनकी तीर्थयात्रा का उल्लेख हुआ है तथा जलविहार, वनविहार, सीता का मानलीला, होलिकोत्सव आदि का शृगारात्मक वर्णन किया गया है ।

हनुमत् संहिता

१६६. **हनुमत् संहिता** की संवत १५१५ की एक हस्तलिपि का उल्लेख राजेन्द्र लाल मित्र के कैटालाग में किया गया है (दे० भाग ७ पृ० २५०) । इस रचना का **महारासोत्सव** के नाम से प्रकाशन भी हुआ है (लखनऊ, सन् १६०४) ।

इसमें हनुमान अगत्स्य से राम की रासलीला तथा जलविहार का वर्णन करते हैं । विशेषता यह है कि सीता अपने शरीर से १८१०८ नारियों की सृष्टि करती हैं तथा इनके साथ रास करने के लिये राम-कृष्ण की भाँति, इतने ही रूप धारण कर लेते हैं । इसका विस्तार ३६० श्लोक का है ।

वृहत्कोशलखंड

२००. **वृहत्कोशलखंड** की संवत् १६१४ की एक हस्तलिपि राजेन्द्र लाल मित्र ने बेतिया (चम्पारण) में देखी थी (दे० वही, भाग ७ पृ० ५२) । ३०७२ श्लोकों की इस रचना में रामकथा को कृष्णचरित का प्रतिबिम्ब बनाने का प्रयास किया गया है । अपने विवाह के पर्व राम गोपिकाओं

तथा देवकन्याओं के साथ रासलीला करते हैं तथा बाद में सीता तथा उनकी सखियों के साथ क्रीड़ा करते हैं, और अंतर्द्धान हो जाते हैं, आदि।

रामकथा पर कृष्ण-लीला का यह प्रभाव अर्वाचीन है। फिर भी **हनुमत्संहिता** की सं० १७१५ की हस्तलिपि से पता चलता है कि गोस्वामी तुलसीदास के जीवनकाल में उसका सूत्रपात अवश्य हुआ था।

परिशिष्ट

'हिन्दुत्व' में उल्लिखित रामायण[1]

२०१. महा रामायण

शंकर-पार्वती संवाद
विस्तार—३,५०,००० श्लोक
विशेषता—कनक भवन-विहारी राम की ६६ रासलीलाओं का वर्णन।

२०२. संवृत रामायण

नारद-कृत
विस्तार—२४,००० श्लोक

२०३. लोमस-रामायण

लोमस ऋषि-कृत
विस्तार—३२,००० श्लोक
विशेषता—राजा कुमुद और वीरमती के दशरथ और कौशल्या के रूप में जन्म लेने की कथा।

२०४. अगत्स्य-रामायण

अगत्स्य-कृत
विस्तार—१६,००० श्लोक।
विशेषता—भानुप्रताप-अरिमर्दन की कथा तथा राजा कुन्तल और सिंधुमती के दशरथ और कौशल्या के रूप में जन्म लेने का वृत्तान्त।

---

१. दे० ऊपर, अनु० १९४।

२०५. मंजुल रामायण

सुतीक्ष्ण-कृत
विस्तार—भानुप्रताप-अरिमर्दन की कथा तथा शबरी के प्रति राम द्वारा नवधा-भक्ति-वर्णन।

२०६. सौपद्म रामायण

अत्रि-ऋषि कृत
विस्तार—६२,००० श्लोक।
विशेषता—वाटिका-प्रसंग।

२०७. रामायण महामाला

शिव-पार्वती-संवाद
विस्तार—५६,००० श्लोक
विशेषता—भुशुण्डी द्वारा गरुड़-विमोह-निवारण।

२०८. सौहार्द रामायण

शरभंग ऋषि-कृत
विस्तार—४०,००० श्लोक
विशेषता—राम-लक्ष्मण का वानरी भाषा समझने और बोलने का उल्लेख।

२०९. रामायण-मणिरत्न

वसिष्ठ-अरुन्धती-संवाद
विस्तार—३६,००० श्लोक
विशेषता—मिथिला तथा अयोध्या में राम का वसन्तोत्सव आदि मनाना।

२१०. सौर्य्य-रामायण

हनुमान-सूर्य-संवाद
विस्तार—६२,००० श्लोक
विशेषता—शुक-चरित्र तथा शुक के रजक होने का कारण और इसके द्वारा सीता-त्याग होना।

२११. चान्द्र-रामायण

हनुमान-चद्रमा-सवाद
विस्तार—७५,००० श्लोक
विशेषता—केवट की पूर्व-जन्म-कथा।

२१२. मैन्द-रामायण

मैंद-कौरव-सवाद
विस्तार—५२,००० श्लोक
विशेषता—वाटिका-प्रसंग

२१३. स्वायंभुव-रामायण

ब्रह्मा-नारद-संवाद
विस्तार—१८,००० श्लोक
विशेषता—मंदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म।

२१४. सुब्रह्म-रामायण

विस्तार—३२,००० श्लोक।

२१५. सुवर्चस-रामायण

सुग्रीव-तारा-संवाद
विस्तार—१५,००० श्लोक
विशेषता—सुलोचना की कथा। धोबी-धोबिन का संवाद तथा रावण के चित्र के कारण शान्ता की चुगली। शान्ता के प्रति सीता का शाप तथा उसको पक्षी योनि की प्राप्ति। महा-रावण-वध।

२१६. देव-रामायण

इन्द्र-जयन्त-सवाद
विस्तार—१,००,००० श्लोक।

२१७. श्रवण-रामायण

इन्द्र-जनक-संवाद
विस्तार—१,२५,००० श्लोक।

विशेषता—मथरा की उत्पत्ति। चित्रकूट में भरत की यात्रा के समय जनक का आगमन।

२१८. दुरंत रामायण

वसिष्ठ-जनक-संवाद

विस्तार—६१,००० श्लोक।

विशेषता—भरत की महिमा का वर्णन

२१९. रामायण-चम्पू

शिव-नारद-संवाद

विस्तार—१५,००० श्लोक।

विशेषता—शीलनिधि राजा के यहां स्वयम्वर।

ग्यारहवां अध्याय

संस्कृत ललित साहित्य में रामकथा

२२०. **बृहद्धर्मपुराण** में **रामायण** समस्तकाव्यों, इतिहासपुराण-आदि का मूलस्रोत माना गया है।

रामायणं महाकाव्यमादौ वाल्मीकिना कृतम्।
तन्मूलं सर्वकाव्यानामितिहासपुराणयोः॥ २८॥
संहितानां च सर्वासां मूलं रामायणं मतम्।
तदेवादर्शमाराध्य वेदव्यासो हरेः कला॥ २९॥
चक्रे महाभारताख्यातामितिहासं पुरातनम्।

(पूर्वभाग-अध्याय २५)

बृहद्धर्मपुराण के इस अध्याय में रामायणोत्पत्ति का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। विधि ने सरस्वती को कविशक्ति बनने का वरदान दिया था, (**भव त्वं कविताशक्तिः कवीनां वदनेषु ह**; दे० श्लोक ४६) सरस्वती ने क्रौंच के विलाप से शोकाकुल वाल्मीकि को देखकर उनके मुख में प्रवेश किया, जिसके फलस्वरूप वाल्मीकि ने श्लोक की सृष्टि की थी।

कविताशक्तिरूपा च विद्यारूपा सरस्वती।
तस्य शोकापनोदाय महर्षेर्मुखमाययौ॥

(वहां, श्लोक ६४)

अनन्तर विधि ने **रामायण** की रचना करने के लिए वाल्मीकि को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि अन्य कवि तुम्हारा अनुकरण करेंगे।

कृत त्वया महाकाव्ये भाव्यर्थे रामचेष्टिते।
लोकेष्वनुचरिष्यंति कवियोऽन्ये सदुक्तयः॥

(वहां, श्लोक ८०)

बृहद्धर्मपुराण के इस कथन की सार्थकता में किसी संदेह का अवकाश नहीं है। **रामायण** न केवल संस्कृत साहित्य का प्रथम महाकाव्य है,

जिसकी शैली से अन्य कवि प्रभावित हुए हैं, वरन् उसकी कथा वस्तु भी समस्त साहित्य के भिन्न भिन्न अंगों में व्यापक हो सकी[1]। कवियों ने स्वयं इस बात का अनुभव किया है। **प्रसन्न-राघव** की प्रस्तावना में नट सूत्र-धार से पूछता है— 'ये सब कवि क्यों रामचन्द्र का पुनः पुनः वर्णन करते हैं।' इसपर सूत्रधार कहता है कि यह कवियों का दोष न होकर गुणों का दोष है, जिन्होंने राम ही में अपने लिए एकमात्र आश्रय बनाया है, जिसके फलस्वरूप कवित्व-रूपी वृक्ष रामप्रशंसा रूपी फल के बिना किसी महत्त्व का नहीं हो पाता है।

नटः— **कथं पुनरमी कवयः सर्वे रामचंद्रमेव वर्णयन्ति।**

सूत्रधार :—**नायं कवीनां दोषः। यतः।**

स्वसूक्तीनां पात्रं रघुतिलकमेकं कलयतां
कवीनां को दोष स तु गुणगणानामवगुणः।
यदेतैर्निः शेषैरपरगुणलुब्धैरिव जग-
त्यसावेकश्चक्रे सततसुखसंवासवसतिः॥ १२॥

अपि च। भोः

बीजं यस्य चिरार्जितं सुचरितं प्रज्ञा नवीनो ऽङ्कुरः
कांड पंडितमंडली परिचयः काव्यं नवः पल्लवः।
कीर्तिः पुष्पपरम्परा परिणतः सोऽयं कवित्वद्रुमः
किं वन्ध्यः क्रियते विना रघुकुलोत्तंसप्रशंसाफलम्॥१३॥

(क) महा काव्य

२२१. राम-कथा सम्बन्धी प्राचीन महाकाव्यों में कथानक के दृष्टिकोण से कोई महत्वपूर्ण परिवर्त्तन नहीं मिलता। उनकी एक विशेषता यह है कि उनमें वाल्मीकि की रचना की अपेक्षा श्रृंगार को अधिक स्थान दिया गया है। पहले यह श्रृंगारिक वर्णन राक्षसों के विषय में किया गया है।

---

१. राम-कथा-सम्बन्धी काव्यों के रचना काल तथा उनकी साहित्यिक समालोचना के लिए दे०

एम्० विंटरनित्स : हि० ई० लि०, भाग ३।
एम० के० डे : हिस्टरी आव संस्कृत काव्य लिटरेचर।
ए० बी० कीथ : हि० स० लि० और संस्कृत ड्रामा।

(दे० सेतुबंध, सर्ग १०; भट्टिकाव्य, सर्ग ११)। लेकिन आगे चलकर कुमारदास ने **कुमार-संभव** के अनुकरण पर राम तथा सीता का संभोग-वर्णन भी किया है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है।

कालिदास कृत रघुवंश (४०० ई० के लगभग)

२२२. **रघुवंश** के नवें सर्ग में दशरथ के राज्य के वर्णन के अन्तर्गत मुनिपुत्र-वध का उल्लेख मिलता है (श्लोक ७३ ८२)। अनन्तर समस्त रामचरित का पांच सर्गों में वर्णन किया गया है (दे० सर्ग १०-१५); कथानक वाल्मीकिकृत **रामायण** पर निर्भर है। सीतात्याग, लवणवध, कुश-लव-जन्म, शम्बूक-वध, लक्ष्मण-मरण तथा स्वर्गारोहण के उल्लेख से स्पष्ट है कि कालिदास प्रचलित उत्तरकांड की कथा-वस्तु से परिचित थे (दे० सर्ग-१४-१५)। अयोनिजा सीता के अलौकिक जन्म की कथा तो मिलती है लेकिन कहीं भी सीता के लक्ष्मी के अवतार होने की ओर निर्देश नहीं किया गया है। काक जयंत का वृत्तान्त भरत के चित्रकूट से चले जाने के बाद दिया गया है। **वाल्मीकि रामायण** में इसका उल्लेख भरत के आने के पहिले किया गया है। अहल्या के विषय में कहा गया है कि वह वास्तव में शिला बन गई थी। वाल्मीकि के अनुसार रावण ने ब्रह्मा को अपने शीशों को समर्पित कर दिया था। कालिदास के अनुसार उसने शिव को उन्हें समर्पित किया था। शेष कथा वाल्मीकि से भिन्न नहीं है।

रावणवह अथवा सेतुबंध (५५०-६०० ई०)

२२३. महाराष्ट्री प्राकृत में लिखित **रावणवह** की काश्मीर में राजा प्रवरसेन अथवा उनके दरबार के किसी कवि द्वारा रचना हुई थी। इसका रचनाकाल प्रायः छठी शताब्दी ई० माना जाता है। डा० सुशील कुमार दे उस रचना को पांचवीं शताब्दी की मानते हैं। इसके रचयिता के विषय में एक भ्रामक धारणा प्रचलित है कि कालिदास ने उसे लिखा था।

रावणवह के पंद्रह सर्गों में वाल्मीकिकृत युद्धकांड की कथावस्तु का अलंकृत शैली में वर्णन मिलता है। कथानक में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन नही किया गया है। समुद्र-बधन के वर्णन में मछलियों के सेतु को नष्ट करने का उल्लेख है। आगे चलकर इस घटना के विषय में अनेक कथाओं की कल्पना कर ली गई है। **रावणवह** की एक विशेषता यह है कि

'कामिनीकेलि' नामक दसवें सर्ग में राक्षसियों का संभोगवर्णन मिलता है। बाद में इस वर्णन का अनुकरण **जानकी-हरण**, अभिनन्दकृत **रामचरित**, कम्बनकृत **तामिल रामायण** तथा जावा के प्राचीनतम **रामायण** आदि में किया गया है।

भट्टिकाव्य अथवा रावणवध (५००-६५० ई०)

२२४. **भट्टिकाव्य** की रचना कच्छ में छठी अथवा सातवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में हुई थी। इसके २२ सर्गों में व्याकरण के नियमों के निरूपण के साथ साथ वाल्मीकिकृत **रामायण** के प्रथम छः काण्डों की कथावस्तु का किंचित् परिवर्त्तन सहित वर्णन किया गया है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएं उल्लेखनीय हैं:—

दशरथ के शैव होने का उल्लेख (सर्ग १-३)।

पुत्रेष्टि-यज्ञ में कोई देवता प्रकट नहीं होते वरन दशरथ की पत्नियां हुतोच्छिष्ट खाती हैं (सर्ग १.१३)।

बला और अतिबला के स्थान पर जया तथा विजया नामक विद्याओं का उल्लेख है (सर्ग २.२१)।

केवल राम तथा सीता के विवाह का उल्लेख किया गया है (सर्ग २.४३)।

राम तथा लक्ष्मण दोनों खर दूषण तथा १४००० राक्षसों का वध करते हैं (सर्ग ३.३३)।

सीताहरण के पश्चात् राम पहले पहल जटायु से मिलते हैं (सर्ग ६.४१)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों के अनुसार रावण के विभीषण पर पाद-प्रहार का उल्लेख मिलता है (सर्ग १२.७६)।

राक्षसियों का संभोगवर्णन (सर्ग ११)।

ब्रह्मा के स्थान पर शिव राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाते हैं (सर्ग २३.१६)।

जानकीहरण (८०० ई० के लगभग)

२२५. सिंहलद्वीप की अपेक्षाकृत अर्वाचीन कथा के अनुसार कुमारदास छठी

शताब्दी ई० में वहां के राजा थे। आधुनिक समालोचक इस कथा पर विश्वास न रखकर कुमारदास को आठवीं शताब्दी के अंत का और नवीं शताब्दी के प्रारम्भ का कवि मानते हैं। कुमारदासकृत **जानकीहरण** की कथावस्तु वाल्मीकिकृत **रामायण** के प्रथम छः कांडों पर निर्भर है। कथानक मे अहल्या के शिला बन जाने के अतिरिक्त कोई अन्य परिवर्त्तन नहीं किया गया है, लेकिन अन्य भाइयों के विवाह का भी निर्देश मिलता है (दे० सर्ग ६-१०)। प्रथम सर्ग में दशरथ-राज्य-वर्णन के अन्तर्गत उनके हिमालय मे मृगया खेलने तथा मुनिपुत्रवध करने का किंचित् विस्तार सहित वर्णन किया गया है (दे० सर्ग १. ४५-६०)। कुमारदास की रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके २५ सर्गों में शृंगारात्मक वर्णनों को पर्याप्त स्थान दिया गया है। उदाहरणार्थ :—

दशरथ और उनकी पत्नियों के विहार-जलक्रीड़ा आदि का वर्णन (समस्त सर्ग ३)।

राम तथा सीता के पूर्वानुराग का वर्णन (सर्ग ७. १-३४)।

मिथिला में विवाह के पश्चात् राम तथा सीता का संभोगवर्णन, जिसमें कुमारसंभव का प्रभाव स्पष्ट है (समस्त सर्ग ८)।

सेतुबंध के अनुकरण पर राक्षसों की युद्ध के पूर्व केलि का वर्णन (समस्त सर्ग १६)[1]।

अभिनंदकृत रामचरित (नवीं शताब्दी)

२२६. गौडीय पाल-वंश के युवराज हारवर्ष की प्रेरणा से अभिनन्द ने नवीं शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध में **रामचरित** की रचना की थी। इसके ३६ सर्गों में राम-लक्ष्मण के प्रस्रवणपर्वत के वर्षा-निवास (दे० रामायण ४-२७) से कुंभ निकुंभ वध तक (दे० वही, ६-७७) की वाल्मीकीय राम-कथा का वर्णन मिलता है। भीम नामक कवि ने चार सर्गों का एक परिशिष्ट लिख कर युद्धकांड की कथावस्तु पूरी की है। इस रामचरित में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

वर्षा-ऋतु के पश्चात् सुग्रीव अपने आप राम के पास आता है और लक्ष्मण को भेज देने की आवश्यकता नहीं होती (सर्ग ५)।

---

१. दे० बुलेटिन स्कूल ओरियेन्टल स्टडिस; भाग ४, पृ० २८५।

अभिज्ञान-स्वरूप राम हनुमान को अंगूठी के अतिरिक्त एक नूपुर और स्तनोत्तरीय भी देते हैं तथा दिलीप, रघु, अज, दशरथ की वंशावली भी सिखलाते हैं (सर्ग ८)।

वाल्मीकि के किष्किन्धा-कांड की हनुमान आदि के गुफा में प्रवेश करने की कथा में (दे० रा० ४. ५०-५२) बहुत कुछ परिवर्त्तन किया गया है। कंदरा के प्रवेश पथ पर सोते हुए दुर्दर्म नामक राक्षस का अंगद द्वारा वध किया जाता है। भीतर जाकर हनुमान एक वानरवारसुन्दरी का दो बार प्रेम-प्रस्ताव अस्वीकार करते हैं। स्वयंप्रभा के गुफा में निवास करने का कारण भी **रामायण** में दिए हुए वृत्तान्त से कुछ भिन्न है (सर्ग १० १२)।

रावण के संभोग का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। (दे० 'दशानन-पानकेलि-वर्णनम्' नामक १८वां सर्ग)।

वाल्मीकि रामायण के गौडीय पाठ के अनुसार रावण का विभीषण पर पाद-प्रहार करने का तथा विभीषण के राम के शरण लेने के पहले अपने भाई कुबेर के पास जाने का उल्लेख हुआ है (दे० सर्ग २३-२७ तथा सर्ग २४-१३५)।

रामायणमंजरी तथा दशावतारचरित (११ वी श० ई०)

२२७. काश्मीर-निवासी क्षेमेन्द्र ने १०३७ ई० में वाल्मीकिकृत **रामायण** के पश्चिमोत्तरीय पाठ का ५३८६ श्लोकों में संक्षेप किया था और अपनी रचना का नाम **रामायणमंजरी** रखा था। इसमें क्षेमेन्द्र ने किसी मौलिकता का प्रदर्शन नहीं किया है, लेकिन अपने एक **दशावतारचरितम्** नामक अन्य ग्रंथ में जिसकी रचना १०६६ ई० में हुई थी, उन्होंने २६४ छन्दों के रामावतार-वर्णन में राम-कथा का एक नवीन रूप प्रस्तुत किया था।

इसकी विशेषता यह है कि समस्त कथा का वर्णन रावण के दृष्टिकोण से किया गया है। प्रारम्भ में रावण की तपस्या, वरप्राप्ति, अत्याचार आदि का कुछ चित्रण मिलता है (छन्द १-६६)। अनन्तर रावण के लक्ष्मी के अवतार पद्मजा सीता को पुत्रीस्वरूप ग्रहण करने की कथा दी गई है (दे० छन्द ७०-१०४, और आगे अनु० ३२०)।

१०५वें छन्द से रामायण की कथावस्तु का प्रारम्भ होता है। सूर्पणखा

रावण के पास आकर अपने विरूपीकरण तथा खरदूषण-वध का वृत्तान्त सुनाती है। इस पर रावण मारीच के यहां जाकर उससे जन्म से लेकर वनवास तक की विष्णु-अवतार राम की कथा सुनता है (१०५-१३०)।

अनन्तर रावण मारीच की सहायता से सीता को हर लेता है (१३१-१५१)। इसके बाद सुकेतु नामक गुप्तचर मारीच वध से लेकर (सुग्रीव-सख्य, वानरों का प्रेषण, हनुमान का समुद्रलंघन, अशोकवाटिका-भंजन आदि) लङ्कादहन तक की कथा रावण को सुनाता है (१५२-१६४)।

सुकेतु तथा विभीषण दोनों रावण से सीता को लौटा देने का अनुरोध करते हैं। विभीषण रावण की दुर्बुद्धि देखकर राम की शरण लेता है। अनन्तर रावण एक गुप्तचर से विभीषण-अभिषेक, सेतुबन्ध तथा राम के त्रिकूटागमन की कथा (२०७ २१३) तथा प्रतिहारपति से नागपाश द्वारा राम-लक्ष्मण के बन्धन तथा कुंभकर्ण को जगाने का वृत्तांत सुनता है (२१४-२२३)। प्रतिहारपति-रावण-संवाद के बाद कवि द्वारा शेष रामचरित का वर्णन किया गया है। कुंभकर्ण वध से लेकर राम स्वर्गारोहण तक की समस्त वाल्मीकीय कथा संक्षेप में दी गई है।

उ दा र रा घ व (१४ वीं श० ई०)

२२८. **उदारराघव** की रचना १४वीं श० ई० के मध्य में साकल्यमल्ल नामक कवि द्वारा हुई थी। कवि के अन्य नाम भी प्रचलित हैं—मल्लाचार्य, कविमल्ल और मल्लयाचार्य। इस रचना का विस्तार १८ सर्गों का बताया जाता है लेकिन इसके केवल नौ सर्ग सुरक्षित तथा प्रकाशित हैं, जिनमें सूर्पणखा विरूपीकरण तक का वर्णन मिलता है। कथानक **वाल्मीकि रामायण** से मिलता है।

अवतारवाद के विषय में कुछ परिवर्तन किया गया है। राम विष्णु के पूर्णावतार माने गए हैं तथा लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्न क्रमशः शेष-सुदर्शन-शंख के अंशावतार। सीता वनगमन के लिए राम से अनुरोध करते हुये कहती हैं कि मैंने बहुत से रामायण सुने हैं लेकिन उनमें राम कहीं भी सीता के बिना वन नहीं जाते हैं—

रामायणानीह पुरातनानि पुरातनेभ्यो बहुशः श्रुतानि।
न क्वापि वैदेहसुतां विहाय रामो वनं यात इति श्रुतं मे॥
(सर्ग ५-४८)

सारी रचना की शैली बहुत कुछ कृत्रिम और अलंकृत प्रतीत होती है, तथा इसमें वाल्मीकि के काव्य की अपेक्षा शृंगार को अधिक स्थान दिया गया है, उदाहरणार्थ :— मिथिला की स्त्रियों का वर्णन (सर्ग ३), वनवास में वनविलास (सर्ग ६-३२), सूर्पणखा का वृत्तान्त (६.६०-६१)।

उत्तरकालीन महाकाव्य।

२२६. पंद्रहवीं शताब्दी के बाद की बहुत सी अधिकांश अप्रकाशित रचनाओं का उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थ यहाँ तीन ऐसी रचनाओं की कथावस्तु का परिचय दिया जाता है।

सत्रहवी शताब्दी के चक्र कवि कृत **जानकी-परिणय** में वाल्मीकीय बालकाड की दशरथ- यज्ञ से लेकर परशुराम तेजोभङ्ग तक की प्रधान घटनाओ का ८ सर्गों में वर्णन किया गया है।[1] अहल्या के शिला बन जाने के उल्लेख के अतिरिक्त कथानक में कोई भी परिवर्तन नहीं किया गया है। छठे सर्ग के बाद दशरथ की मिथिला-यात्रा-वर्णन में उनकी विलास-क्रीड़ाओं का किंचित् विस्तार-सहित वर्णन किया गया है। कंबन-कृत **तामिल रामायण** में भी दशरथ की इस यात्रा का विस्तृत वर्णन मिलता है।

२३०. **रामलिंगामृत** का रचना बनारस निवासी अद्वैत नामक कवि द्वारा १६०८ ई० में हुई थी। इसकी हस्तलिपि लन्दन मे सुरक्षित है। (दे० इन्डिया आफिस कैटालाग न० ३६२०)।

हिन्दी साहित्य के दृष्टि कोण मे इसकी विशेषता और महत्व यह है कि इसकी रचना बनारस में गोस्वामी तुलसीदास के जीवनकाल में हुई थी अतः **रामलिंगामृत** की कथावस्तु का प्रस्तुत अध्याय के परिशिष्ट में वर्णन किया जायगा।

२३१. मोहनस्वामिकृत **रामरहस्य** अथवा **रामचरित** की सन १७५० ई० की एक हस्तलिपि लन्दन मे सुरक्षित है। (दे० इंडिया आफिस कैटालाग, न० ३६१७)। इस रचना के १२ क्रीडोपकरणों की अधिकांश सामग्री ज्यों

---

१. इसका प्रकाशन त्रिवान्द्रम संस्कृत सीरिज मे हुआ है।

२. 'शात्र' के स्थान पर 'सौत्र' लिखा है।

की त्यों **अध्यात्म रामायण** से उद्धृत की गई है। द्वितीयउपकरण में सुमंत्र द्वारा स्वायमू मनु तथा उनकी पत्नी की तपस्या का वर्णन मिलता है, जिसके फलस्वरूप वे तीन जन्मों में विष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त करने का वरदान पाते हैं। दोनों अब दशरथ-कौशिल्या हैं और आगे चलकर वसुदेव-देवकी, तथा कलियुग में हरिव्रत-देवप्रभा के रूप में जन्म लेंगे। सूर्यवंशवर्णन से लेकर रामचन्द्र-स्वर्गारोहण तक के इस कथानक में कहीं भी मौलिकता का नाम नहीं है। विशेषता यह है कि विवाह के पश्चात् अयोध्या में पहुँच कर नवदम्पति का सभोगवर्णन के रूप में **महानाटक** का समस्त द्वितीय अंक उद्धृत किया गया है। अगद के कार्य-वर्णन में भी **महानाटक** से एक विस्तृत अंश (अंक ८.४ २०) ले लिया गया है।

(ख) नाटक

२३२. राम-कथा को लेकर नाटकों के अभिनय की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसका निर्देश नवें अध्याय में उद्धृत किए हुए **हरिवंश** के एक श्लोक में मिलता है (दे० अनु० १५७)। इन प्राचीन नाटकों का लोप हुआ है, लेकिन आगे चलकर भी राम-सम्बन्धी नाटकों की रचना होती रही। यह इस परिच्छेद में वर्णित सामग्री से स्पष्ट है।[1] महाकाव्यों की अपेक्षा राम कथा-सम्बन्धी नाटकों में कथानक के दृष्टिकोण से अधिक परिवर्त्तन किया गया है, तथा अनेक नये पात्रों की सृष्टि भी की गई है जिससे **रामायण** की आधिकारिक कथावस्तु को (वनवास, सीताहरण-रावणवध) अपेक्षाकृत कम स्थान मिल सका है। दसवीं शताब्दी के पूर्व के नाटकों में से केवल **उत्तररामचरित** तथा **कुन्दमाला** में उत्तरकांड सम्बन्धी सामग्री का वर्णन किया गया है और दोनों में नाटक को सुखान्त बनाने के लिए सीता के भूमिप्रवेश की कथा बदल दी गई है। राम-कथा का यह महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन **कथासरित्सागर, जैमिनीय अश्वमेध, पद्मपुराण** तथा **आनन्द रामायण** में भी मिलता है।

प्रत्येक नाटक की विशेषताओं का अलग अलग वर्णन किया जायगा। यहां राम-कथा सम्बन्धी नाटकों की सामान्य विशेषताओं की ओर निर्देश करना

---

१. राम-कथा-सम्बन्धी नाटकों की साहित्यिक समालोचना के लिए दे० एस० लेवी : ल थेआत्र इन्डियन, पृ० २६७ आदि।

करना है। **रामायण** की आधिकारिक कथा-वस्तु को अपेक्षाकृत कम महत्त्व मिलने के अतिरिक्त इन नाटकों में निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती हैं:

(१) विस्तृत वर्णन तथा संवाद जिससे कहीं कहीं नाटक की गति में रुकावट पड़ी है।

(२) आदर्शवाद का प्रभाव। उदाहरणार्थ, वालिवध का **महावीरचरित, अनर्घराघव** तथा **महानाटक** में परिवर्त्तित रूप तथा **प्रतिमानाटक महावीरचरित, अनर्घराघव** तथा **बालरामायण** में कैकेयी का दोषनिवारण।

(३) श्रृंगार की व्यापकता। उदाहरणार्थ, **बालरामायण** में रावण का विरह-वर्णन, **मैथिलीकल्याण** में राम-सीता के पूर्वानुराग का चित्रण (अंक १. ४) तथा **महानाटक** में राम-सीता का संभोग-वर्णन जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है (अंक २)।

(४) अद्भुत-रस का प्रवेश। उदाहरणार्थ, **प्रसन्नराघव** (अंक ६), **आश्चर्य-चूडामणि, अद्भुतदर्पण**।

(५) पात्रों का अन्य पात्रों का रूप धारण कर लेना। उदाहरणार्थ, **महावीरचरित** तथा **अनर्घराघव** में शूर्पणखा मंथरा का रूप धारण कर लेती है, **बालरामायण** में मायामय, शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमशः दशरथ, कैकेयी तथा मंथरा का रूप धारण कर लेते हैं; **महानाटक** में रावण अपने हाथ में अपने दस शीश लिए हुए राम के रूप में सीता के पास जाता है; **आश्चर्य-चूडामणि** में रावण और उसका सारथि राम तथा लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता का हरण करते हैं और शूर्पणखा सीता के रूप में राम के पास जाती है।

प्रतिमा नाटक तथा अभिषेक नाटक

२३३. संभव है कि **प्रतिमानाटक** तथा **अभिषेक नाटक** भासकृत न होकर किसी दक्षिण भारत-निवासी अन्य कवि द्वारा कालिदास के बहुत कुछ बाद रचित हुए हों।[1] **प्रतिमा नाटक** की कालिदास के अनुसार राम की

१. डे० एम० कुप्पुस्वामिशास्त्री की आश्चर्यचूडामणि की भूमिका, बालमनोरमा सिरीज, मद्रास।

वंशावली (दिलीप, रघु, अज, दशरथ) तथा **अभिषेक नाटक** में सीता के लक्ष्मी के अवतार होने के उल्लेख से भी उपर्युक्त मत की पुष्टि होती है। फिर भी दोनों नाटकों को यहाँ पहला स्थान दिया गया है।

प्रतिमा नाटक के सात अंकों में वाल्मीकीय अयोध्याकाड की कथा-वस्तु तथा सीताहरण का वर्णन किया गया है। प्रथम अक में राम को वनवास दिए जाने की कथा मिलती है। इसकी विशेषता है शत्रुघ्न की उस समय अयोध्या में उपस्थिति।

द्वितीय अंक में दशरथ के मरण का वर्णन है, इसके अनुसार मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए दशरथ को उनके पूर्वजों के (दिलीप-रघु-अज) दर्शन होते हैं जो उनको परलोक ले जाने आए हैं।

तृतीय अक में भरत के प्रत्यागम का वर्णन है। प्रतिमागृह में अयोध्या के मृत राजाओं की मूर्तियों को देखकर भरत जान जाते हैं कि दशरथ की मृत्यु हुई है और वे राज्य-सिहासन ठुकराकर राम के पास जाने का संकल्प करते हैं। इसमें भरत को लक्ष्मण का अनुज बताया गया है।

चतुर्थ अक में वाल्मीकि के अनुसार भरत की चित्रकूट-यात्रा का वर्णन मिलता है तथा पचम अक मे साताहरण का एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है (दे० आगे अनु० ४३६)।

छठे अङ्क के अनुसार भरत सुमंत्र से सीताहरण का समाचार सुनकर कैकेयी को भर्त्सना देते हैं, जिस पर कैकेयी अपने निर्दोष होने का प्रमाण देती है। महर्षिशाप की रक्षा करने के लिए वसिष्ठ वामदेव आदि से परामर्श लेकर उन्होने राम को वनवास दिलाया था (दे० आगे अनु० ४१०)। अनन्तर भरत रावण के विरुद्ध सेना सचालन की आज्ञा देते हैं।

रावण-बध के बाद जनस्थान के आश्रम में राम की भरत आदि से भेंट का वर्णन अंतिम अक मे किया गया है। उस वृत्तान्त के अनुसार राम का अभिषेक भी जनस्थान में हुआ था, जिसके बाद सब पुष्पक से अयोध्या लौट गए।

२३४. **अभिषेक-नाटक** में बालिबध से लेकर रामाभिषेक तक की वाल्मीकीय कथा का अपेक्षाकृत कम परिवर्तन सहित वर्णन किया गया है।

सेतुबन्ध के स्थान पर समुद्र विभक्त हो जाता है और सेना समुद्रतल से पार उतरती है (अंक ४)। राम-तथा लक्ष्मण दोनों के मयामय शीश सीता को दिखलाए जाते हैं (इस परिवर्तन का महानाटक, जावा के प्राचीन रामायण तथा मलय के सेरी राम में अनुकरण किया गया है)। सीता की अग्निपरिक्षा के समय अग्निदेव प्रकट हो कर सीता के लक्ष्मी होने का रहस्योद्घाटन करते हैं

इमां भगवतीं लक्ष्मीं जानीह जनकात्मजाम्।
सा भवंतमनुप्राप्ता मानुषीं तनुमास्थिता॥

प्रतिमानाटक में राम को मनुष्य के रूप में देखा गया था, इस नाटक में राम के विष्णुत्व का अनेक स्थलों पर उल्लेख है।

भवभूति-कृत महावीरचरित तथा उत्तररामचरित

२३५. कन्नौज के दरबार के वातावरण में रहनेवाले भवभूति ने आठवी शताब्दी ई० पूर्वार्द्ध में **महावीरचरित** तथा **उत्तररामचरित** की रचना की थी।

महावीर चरित के सात अंकों में राम-सीता-विवाह से लेकर रामाभिषेक तक की कथा का वर्णन किया गया है। इसमें निम्नलिखित परिवर्तन मिलते हैं :

विश्वामित्र के आश्रम में राम-लक्ष्मण सीता उर्मिला से मिलते हैं। आश्रम में रावण के दूत के आ जाने का तथा धनुर्भंग होने का भी वर्णन किया गया है (अंक १)।

विवाह के पश्चात् परशुराम के मिथिला ही में आने का वर्णन है (अंक २)।

कैकेयी का एक जाली पत्र लेकर शूर्पणखा मंथरा के रूप में मिथिला पहुँचती है। इस पत्र में कैकेयी वर के बल पर राम का वनवास माँगी है, जिसके फलस्वरूप राम भरत को अपनी पादुकायें देकर मिथिला ही से सीता तथा लक्ष्मण के साथ वन के लिए प्रस्थान करते हैं (अंक ४)।

माल्यवान् की प्रेरणा से बालि राम को मार्ग में रोक लेता है और द्वन्द्व युद्ध में राम द्वारा मारा जाता है।

२३६. **उत्तररामचरित** में वाल्मीकीय उत्तरकांड की सामग्री का एक नवीन रूप प्रस्तुत है।

लोकापवाद के कारण सीतात्याग के वर्णन को और अधिक करुणाजनक रूप दिया गया है। सीता-सहित अपने वनवास के चित्रों का दर्शन करते समय तथा गर्भवती सीता को गंगातट के आश्रमों को दिखलाने का आश्वासन देने के पश्चात् राम सीता के विषय में लोकापवाद की कथा दुर्मुख से सुनते हैं तथा सीता का त्याग करने का निश्चय करते हैं (अंक १)।

कुश-लव के जन्म की तथा शम्बूक-वध की कथा दोनों वाल्मीकि से कुछ भिन्न हैं (दे० आगे अनु० ५२१ और ५७५)। कुश-लव के राम सेना से युद्ध करने का भी वर्णन किया गया है (दे० आगे अनु० ५२२)। कथा के दृष्टिकोण से नाटक की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता अंतिम अंक में मिलती है। वाल्मीकि के आश्रम में राम तथा अयोध्या की जनता के सामने सीता चरित-सम्बन्धी (त्याग, कुश लव-जन्म आदि) एक वाल्मीकिकृत नाटक का अभिनय वर्णित है। जिसके फलस्वरूप समस्त प्रेक्षकगण सीता की निर्दोषता का विश्वास करते हैं और राम सीता तथा कुश-लव के साथ अयोध्या लौटते हैं। राम-कथा के इस सुखान्त निर्वहण की उत्पत्ति और विकास का २० वें अध्याय में विश्लेषण किया जायगा (दे० अनु० ५८६-५८६)।

कुन्दमाला

२३७. **कुन्दमाला** की रचना निश्चित रूप से भवभूति के **उत्तररामचरित** के पश्चात् तथा भोजदेवकृत **शृंगारप्रकाश** (१०५० ई०) के पूर्व हुई थी। कवि के नाम के अनेक रूप मिलते हैं: दिग्नाग, धीरनाग तथा वीरनाग। धीरनाग अधिक संभव है[1]।

इस रचना पर, जिसकी कथावस्तु **उत्तररामचरित** से मिलती जुलती है, भवभूति का प्रभाव स्पष्टतया दिखलाई पड़ता है। इसमें कुश-लव युद्ध को छोड़कर सीतात्याग से राम-सीता-सम्मिलन तक की कथा वर्णित

१. दे० एनल्स भंडारकर ओरियेन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, भाग १६, पृ० १५८ (एस० के० दे०) और भाग १५ पृ० २३६ (ए० सी० बूलनर)।

है। तृतीय अंक में राम तथा लक्ष्मण वाल्मीकि-आश्रम के पास गौतमी के तट पर एक कुन्दमाला देखते हैं जिसको बनावट सीता के कौशल का स्मरण दिलाती है। आगे बढ़कर उन्हे सीता के चरणचिह्न भी दिखलाई पड़ते हैं।

चतुर्थ अंक के प्रारम्भ में बताया जाता है कि राजसेना को निकट जानकर वाल्मीकि ने अपने बल द्वारा आश्रम की स्त्रियों को अदृश्य हो जाने का वरदान दिया है। इसी तरह सीता अदृश्य होकर राम से मिलती हैं, राम सीता की छाया को जल मे देखकर विरह के कारण मूर्छित हो जाते हैं।

अंतिम अक में कुशलव के रामायणगान के पश्चात् सीता सभा में शपथ खाती हैं, जिसके फलस्वरूप पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता की निर्दोषता का साक्ष्य देती हैं। इस पर राम सीता को स्वीकार करते हैं तथा पृथ्वी देवी अंतर्ध्यान हो जाती हैं।

मुरारिकृत अनर्घराघव

२३८. **अनर्घराघव** की रचना ६०० ई० के लगभग मुरारि द्वारा हुई थी। इसकी कथावस्तु विश्वामित्र के आगमन से लेकर अयोध्या मे रामाभिषेक तक का वृत्तान्त है। तृतीय अंक में रावणदूत **शौष्कल** के मिथिला में आकर रावण की ओर से सीता को मांगने का उल्लेख है। **महावीर चरित** में भी रावण का एक दूत विश्वामित्र के आश्रम में सीता को रावण की ओर से मागता है। **अनर्घराघव** में वाल्मीकीय कथा के जो अन्य परिवर्तन मिलते हैं, वे सब **महावीरचरित** पर निर्भर हैं। उदाहरणार्थ, शूर्पणखा का मथरा के वेष मे कैकेयी के एक जाली पत्र के बल पर राम का निर्वासन माँगना (अंक ४), परशुराम का मिथिला ही से आगमन (अंक ४) तथा राम बालि-द्वन्द्व युद्ध (अंक ५)।

राजशेखरकृत बालरामायण

२३९. राम-कथा-सम्बन्धी सबसे विस्तृत नाटक **बालरामायण** की रचना १० वीं शताब्दी में हुई थी। इसके १० अंकों में सीतास्वयंवर से लेकर रामाभिषेक तक की कथा भवभूति तथा मुरारि के अनुकरण पर

वर्णित है। फिर भी कथानक के दृष्टिकोण से राजशेखर ने मौलिकता का भी प्रदर्शन किया है।

रावण स्वयं प्रहस्त के साथ सीता के स्वयवर में पहुँचकर धनुष-परीक्षा लेने से इन्कार करता है तथा सीता के पति को अपने शत्रुरूप में घोषित करके लौटता है (अंक १)। अनन्तर वह परशुराम से सहायता के लिए निष्फल प्रार्थना करता है (अक २) तथा लंका में पहुँचकर सीता के विरह के कारण अत्यन्त व्याकुल होता है। उसका मन बहलाने के लिए सीता-स्वयम्वर में अन्य राजाओं के प्रयत्नों के बाद राम की सफलता का अभिनय किया जाता है (अंक ३); बाद में सीता और उनकी धात्रेयिका (दूध-वहन) की मूर्तियाँ बनवाकर तथा उनके मुंह में सारिकाये स्थापित करके माल्यवान द्वारा विरही रावण को सान्त्वना देने का एक और निष्फल प्रयत्न किया जाता है (अंक ५)।

भवभूति तथा मुरारि के अनुसार परशुराम मिथिला में आते हैं। राम के निर्वासन की कथा कुछ भिन्न है। दसरथ तथा कैकेयी को अयोध्या में अनुपस्थिति का अवसर पाकर मायामय, शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमशः दशरथ, कैकेयी तथा मंथरा का रूप धारण कर लेते हैं और राम को निर्वासित करने में सफल होते हैं (अंक ६)।

सेतु बांधने के समय राम को निरुत्साह करने के लिए सीता का एक मायामय शीश समुद्र के तट पर माल्यवान् द्वारा फेंकवाया जाता है तथा मछलियों के सेतु को नष्ट करने के प्रयत्न का भी उल्लेख होता है (अंक ७)।

महानाटक अथवा हनुमन्नाटक

२४०. **महानाटक** के प्रथम रूप की रचना संभवतः दसवीं शताब्दी में हुई है[1]। लेकिन इसमें १४ वी शताब्दी तक प्रक्षेप जोड़े गए हैं जिसके फलस्वरूप आजकल दो बहुत भिन्न पाठ प्रचलित हैं—दामोदर मिश्र का

---

१. दे० एस० के० दे : दि प्राब्लेम आव दि महानाटक, इ० हि० क्वा० भाग ७, पृ० ५३७ आदि।

तथा (बगाल में) मधुसूदन का। दामोदर मिश्र का पाठ मूलरचना के अधिक निकट और प्राचीन है[1]।

इस नाटक के स्वरूप को लेकर बहुत वाद विवाद हुआ है। इतना ही निश्चित है कि इसकी रचना रंगमंच पर अभिनय करने के उद्देश्य से नहीं हुई थी। अधिक संभव है कि इसका पाठ यात्राओं में किया जाया करता था। इसके कथानक में दामोदर मिश्र के १४ अंकों के अनुसार, निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

अंक १. **सीतास्वयंवरः** सीता स्वयंवर में रावण का एक दूत उपस्थित है तथा परशुराम मिथिला ही में आकर पराजित होते हैं।

अक २. **रामजानकीविलासः** इसमे विवाह के अनन्तर राम और सीता का संभोगवर्णन किया गया है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुंच गया है।

अंक ३. **मारीचागमनः** रामके वनगमन के समय भरत के अयोध्या में विद्यमान होने का उल्लेख है (छंद ५) तथा अहल्योद्धार का वृत्तान्त अगस्त्याश्रम से पंचवटी की ओर जाते समय वर्णित किया गया है (२०) सीता के रक्षणार्थ भूमि पर धनुष से रेखा खींचकर राम लक्ष्मण को साथ लेकर, मायामृग को मारने जाते हैं (२७)।

अक ४. **सीताहरणः** राम तथा लक्ष्मण मृग का शिकार करने के लिए साथ साथ चले जाते हैं।

अंक ५. **वालिवध : महावीरचरित** आदि के अनुसार वालि स्वयं राम को ललकारता है। इसमें हनुमान को रुद्रावतार माना गया है (३३); अगले अंक में भी इसे 'रुद्रांश' कहा गया है।

अंक ६. **हनुमद्विजयः** इसमें सीता हनुमान को तीन अभिज्ञान देती हैं— चूडामणि, काक की कथा तथा राम का सीता को तिलक लगाने का वृत्तान्त (३६)।

---

१. ए० एस्टलेर : दि एलटेस्टे वार्सियोन इस महानाटक, जर्मन ओरियेन्टल सोसाइटी, १९३६।

अंक ७. **सेतुबंधः** राम के बाण चलाने का उल्लेख नहीं है।

अंक ८. **अंगदाधिक्षेपणः** अपने पिता के वध के कारण राम से बैर रखकर अंगद रावण को युद्ध में प्रवृत्त करने के उद्देश्य से रावण का अपमान करता है (छन्द २)।

अंक ६. **मंत्रिवाक्य** : लंका की सभा का वर्णन।

अंक १०. **रावणप्रपंच** : रावण पहले राम तथा लक्ष्मण के मायामय शीश सीता को दिखलाता है (अभिषेक नाटक के अनुसार); अनन्तर रावण राम का रूप धारण कर तथा अपने दस मायामय शीश हाथ में लेकर सीता को ठगने का प्रयत्न करता है।

अंक ११. **कुम्भकर्णवध** : इसमें राक्षसी प्रभंजनी के अंगद द्वारा वध का भी उल्लेख है।

अंक १२. **इन्द्रजित वध** :

अंक १३. **लक्ष्मणशक्ति भेद** : इसमें हनुमान को हटाने के लिए ब्रह्मा द्वारा नारद को भेज देने का उल्लेख है। इस तरह रावण लक्ष्मण को आहत करने का अवसर पाता है। अनन्तर लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए रावण के वैद्य सुषेण को लंका से ले आने का वृत्तान्त मिलता है।

अंक १४. **श्रीरामविजयः** प्रारम्भ में लोहिताक्ष नामक रावणदूत का राम के पास आने का वर्णन है। रावण राम से संधि का प्रस्ताव करता है तथा जामदग्न्य के परशु के लिए सीता को लौटाना चाहता है। राम इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं।

रावणवध के बाद अंगद अपने पिता के वध का प्रतिकार लेने के लिए समस्त सेना को ललकारता है, जिसपर एक आकाशवाणी द्वारा कहा जाता है कि कृष्णावतार में वालि व्याध के रूप में राम-कृष्ण का वध करेगा (७५)।

शक्तिभद्रकृत आश्चर्यचूडामणि

२४१. दक्षिण भारत का यह नाटक नवीं शताब्दी का माना जाता है, लेकिन इसका इतनी प्राचीनता बहुत संदिग्ध है।[1] इसमें शूर्पणखा

---

१. सुशील कुमार दे : हिस्टरी आव काव्य लिटरेचर, पृ० ३०२।

आगमन से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा तक की कथा का सात अंकों में वर्णन मिलता है। इसकी विशेषता यह है कि राम तथा सीता के पास मुनियों से प्राप्त एक अंगूठी तथा चूडामणि है, जिसके प्रभाव से छद्मवेषी राक्षस राम अथवा सीता के स्पर्श से अपना वास्तविक रूप धारण व लेते हैं। इससे नाटक का नाम **आश्चर्यचूडामणि** पड़ा ह (अक ३, छद ८)।

राम का रूप धारण करनेवाला रावण, लक्ष्मण का रूप धारण करने वाले अपने सारथि की सहायता से, सीता को हर लेता है। इतने में शूर्पणखा सीता के रूप में राम से बातचीत करती है तथा मारीच राम के रूप में लक्ष्मण से।

प्राचीन किंतु अप्राप्य राम-सम्बन्धी नाटक

२४२. निम्नलिखित अप्राप्य प्राचीन नाटकों के नाम मिलते हैं:—

(१) यशोवर्माकृत **रामाभ्युदय** (८ वीं शताब्दी) : इस नाटक के जो उद्धरण मिलते हैं उनसे प्रतीत होता है कि इसमें कथानक का बहुत कुछ परिवर्तित रूप मिलता था। पहले लक्ष्मण मृग को मारने जाते हैं, अनन्तर छद्मवेषी राक्षस से लक्ष्मण के संकट में होने का मिथ्या समाचार सुनकर राम भी जाते हैं। **उत्तर रामचरित** के अनुसार राम-वालि युद्ध के वर्णन में राम का दोषनिवारण किया गया है।

(२) **मायुराजकृत उदात्तराघव** (८ वीं श०)

(३) **छलित रामायण**

(४) **कृत्यारावण**

(५) **मायापुष्पक**

(६) **स्वप्नदशानन**

ये सब दसवीं शताब्दी के पूर्व के हैं।

(७) क्षीरस्वामीकृत **अभिनवराघव** : इसका उल्लेख हेमचन्द्र के शिष्यों द्वारा हुआ है।

(८) हेमचन्द्र के शिष्य रामचन्द्रकृत **रघुविलास** तथा **राघवाभ्युदय**।

जयदेवकृत प्रसन्नराघव

२४३. महादेव के पुत्र जयदेव ने १२ वीं अथवा १३ वीं शताब्दी में **प्रसन्नराघव** की रचना की थी, जिसमें सीता स्वयंवर से लेकर राम के रावण-वध के बाद अयोध्या में प्रत्यागमन तक की कथा का सात अंकों में वर्णन किया गया है। इस रचना पर मुरारि-कृत **अनर्घराघव** का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। कथानक के दृष्टिकोण से इसमें निम्नलिखित विशेषताएं मिलती हैं:

रावण तथा बाणासुर की सीतास्वयंवर में उपस्थिति और धनुषसंधान करने के निष्फल प्रयत्न। उस अवसर पर रावण का सीताहरण करने का संकल्प प्रकट करना (अंक १)।

धनुर्भंग के पूर्व राम और सीता का मिथिला के चंडिकायतन में मिलना (अंक २)।

विविध नदियों (यमुना, गंगा, सरयू, गोदावरी) का मानवीकरण तथा उनका सागर के तट पर मिलकर अपने भूमिभाग से सम्बन्ध रखनेवाली राम-कथा सुनाना (अक ५)।

विद्याधर रत्नशेखर का विरह-व्याकुल राम को लंका की घटनाएं इन्द्रजाल द्वारा दिखलाना (अक ६)।

गौण राम-संबंधी नाटक

हस्तिमल्ल कृत मैथिलीकल्याण

२४४. जैन कवि हस्तिमल्ल ने १२६० ई० के लगभग सीत-विवाह-सम्बन्धी **मैथिली कल्याण** की रचना की थी।[1] इस शृङ्गारात्मक नाटक के प्रथम चार अङ्कों में राम तथा सीता के पूर्वानुराग का वर्णन किया गया है। दोनों स्वयंवर के पूर्व मिथिला के कामदेवमंदिर में (अङ्क १) और मधुवीवन में (अङ्क २) मिलते हैं; अनन्तर चन्द्रकांतिधरगृह में अभिसारिका सीता का भी चित्रण किया गया है (अङ्क ४)। अंतिम अङ्क का वर्ण्य विषय धनुर्भंग तथा राम-सीता-विवाह है।

---

१. माणिकचन्द दिगंबर जैन ग्रन्थमाला नं० ५।

सुभट्ट कृत दूतांगद

२४५. १३ वीं शताब्दी की इस रचना में सुभट्ट ने अङ्गद के दूतत्व का प्रथम दो अङ्कों में वर्णन किया है। अनन्तर रावण की पराजय के पश्चात् राम के विजयोत्सव का चित्रण किया गया है।

भास्करभट्टकृत उन्मत्तराघव

२४६. भास्करभट्ट (१४ वीं शताब्दी) के **उन्मत्तराघव** नामक प्रेक्षणक में **विक्रमोर्वशीय** के चतुर्थ अङ्क का स्पष्टतया अनुकरण किया गया है। दुर्वासा के शाप से सीता के मृग रूप में बदल जाने पर राम का सर्वत्र सीता को ढूंढना तथा अगस्त्य की सहायता से उनको पुनः प्राप्त करना इस रचना का वर्ण्य विषय है।

व्यासमिश्रदेव-कृत रामाभ्युदय

२४७. व्यासमिश्रदेव ने १५वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में **रामाभ्युदय** की रचना की थी, जिसके दो अङ्कों में लंका का युद्ध, सीता की अग्निपरीक्षा, पुष्पक से अयोध्यागमन तथा राम का अभिषेक वर्णित है।

उत्तरकालीन नाटक

२४८. पन्द्रहवीं शताब्दी के पश्चात्, विशेष कर सत्रहवीं शताब्दी में, विस्तृत राम-कथा सम्बन्धी नाटक साहित्य की सृष्टि हुई है। अधिकांश सामग्री अब तक अप्रकाशित है। (दे० मद्रास तथा तंजूर संस्कृत कैटालाग)।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन नाटकों में अद्भुतरस को उत्तरोत्तर महत्व दिया गया है। उदाहरणार्थ यहाँ दो रचनाओं का उल्लेख किया जाता है।

निर्णयसागर से प्रकाशित सत्रहवीं शताब्दी के दक्षिणनिवासी महादेव-कृत **अद्भुतदर्पण** में राम को एक ऐंद्रजालिक दर्पण द्वारा लंका की घटनाएं दिखलाई जाती हैं।

उसी काल के **जानकी-परिणय** में, जिसकी रचना दक्षिणनिवासी रामभद्र दीक्षित द्वारा हुई थी, इतने पात्र एक दूसरे का रूप धारण कर लेते हैं कि समस्त नाटक हास्यप्रधान बन गया है। सीता का हरण करने के उद्देश्य से विराध राम का रूप धारण कर लेता है तथा शूर्पणखा राम को रोकने के उद्देश्य से सीता का रूप धारण करती है। दोनों आश्रम के पास

पहुँचकर एक दूसरे को नहीं पहचानते हैं और फलस्वरूप विराध शूर्पणखा को ले जाता है। इस प्रकार के अनेक और वृत्तान्त मिलते हैं।

ग. स्फुट काव्य

श्लेष-काव्य

२४६. (१) संस्कृत साहित्य का प्रथम विस्तृत श्लेष-काव्य राम-कथा से सम्बन्ध रखता है। संध्याकर नन्दि ने बारहवीं श० के प्रारम्भ में **रामचरित** की रचना की थी। इसके २२० आर्या-छन्दों में समस्त राम-कथा की प्रधान घटनाओं का वर्णन श्लेषात्मक शब्दों में किया गया है, जिससे साथ-साथ बङ्गीय राजा रामपाल का चरित्र भी वर्णित है। इसमें **वाल्मीकि रामायण** के कथानक से कोई भिन्नता नहीं है। इस रचना के अतिरिक्त निम्नलिखित राम-सम्बन्धी श्लेषकाव्यों का उल्लेख मिलता है।

(२) दिगम्बर जैन धनंजयकृत **राघव-पांडवीय** (बारहवीं श० पूर्वार्द्ध) जिसके १८ सर्गों में **रामायण** तथा **महाभारत** की कथा का वर्णन किया गया है।

(३) कविराज माधवभट्ट-कृत **राघवपांडवीय** (१२वीं श० उत्तरार्द्ध) जिसके १३ सर्गों में **रामायण** तथा **महाभारत** की कथा वर्णित है।

(४) हरदत्तसूरि-कृत **राघवनैषधीय**, जिसमें राम तथा नल का चरित्र-वर्णन मिलता है।

(५) चिदंबर-कृत **राघवपांडवयादवीय** (१६०० ई० के लगभग), जिसमें **रामायण-महाभारत** तथा **भागवतपुराण** की कथा का साथ-साथ वर्णन किया गया है।

(६) गङ्गाधर महाडकर-कृत **संकटनाशनस्तोत्र** (१८ वीं श०) जो राम तथा कृष्ण से सम्बन्ध रखता है।

विलोम काव्य

२५०. (१) सूर्यदेवकृत **रामकृष्णविलोमकाव्य** (१५४० ई० के लगभग): इसके ३६ छंदों में अक्षरों का स्वाभाविक क्रम राम से सम्बन्ध रखता है तथा (दाहिने से बायाँ) विपरीत क्रम कृष्ण से।

(२) वेंकटध्वारिन-कृत **यादवराघवीय** (सत्रहवीं श० पूर्वार्द्ध): इसके ३००

छंदों में अक्षरों के स्वाभाविक क्रम से राम-कथा तथा विपरीत क्रम से कृष्ण-कथा का वर्णन किया गया है। (दे० मद्रास कैटालाग न० डी ११८६१)।

(३) **राघवयादवीय** इसका विस्तार ६४ छंदों का है तथा कथावस्तु उपर्युक्त **यादवराघवीय** के समान है। (दे० मद्रास कैटालाग न० डी ७६५८ तथा इन्डिया आफिस कैटालाग न० ७१३३)।

चित्र काव्य

२५१. (१) कृष्णमोहनकृत **रामलीलामृत** के १२० छंदों में विश्वामित्रागमन से लेकर रावण-वध तक की राम-कथा का वर्णन किया गया है। इस अपेक्षाकृत अधुनिक काव्य में सम्बन्ध, पद्मबन्ध, सोपान, गोमुत्र आदि चित्रालकारों का व्यापक प्रयोग मिलता है। (दे० हरप्रसाद शास्त्री कृत संस्कृत कैटालाग भाग १, न० ३१७)।

(२) आंध्रदेश निवासी वेंकटेश कृत **चित्रबंधरामायण** का भी उल्लेख मिलता है। इसका विस्तार है : ६ सर्गों में विभक्त ६२० छंद। (दे० तंजूर कैटालाग न० ३७७२)।

शृंगारिक खंडकाव्य

२५२ राम-सम्बन्धी शृंगारिक खंडकाव्य की सृष्टि विशेषकर **मेघदूत** तथा **गीतगोविन्द** के अनुकरण पर हुई है।

मेघदूत के अनुकरण पर रचित निम्नलिखित ग्रथों का उल्लेख मिलता है।

(१) **हंससंदेश अथवा हंसदूत** : इसके रचयिता के कई नाम पाए जाते हैं। वेंकटदेशिक, वेंकटनाथ वेदांताचार्य और श्रीवेदान्तदेशिक। उन्होंने १३वीं श० ई० में **हंससंदेश** को लिखकर राम-काव्य के एक नवीन रूप का प्रवर्त्तन किया। इसमें हंस द्वारा सीता के पास लाए हुए राम-संदेश का वर्णन किया गया है।

(२) **भ्रमरदूत** : नैयायिक रुद्र वाचस्पति की २८८ छंदों की इस रचना में राम के सीता के पास भ्रमर को भेजने का वर्णन किया गया है।

(३) **भ्रमरसंदेश** : वासुदेव कृत।

(४) **कपिदूत** : इसमें हनुमान को भेजा जाता है (दे० ढाका युनीवर्सिटी मैनुस्क्रिप्ट न० ६७५ बी)।

(५) **कोकिलसंदेश** वेंकटाचार्य-कृत ३०० छंदों की १७वीं श० की रचना (दे० तंजूर कैट० न० ३८६२)।

(६) **चंद्रदूत** कृष्णचन्द्र तर्कालंकार-कृत। (दे० हरप्रसाद शास्त्री नोटिसेस, भाग २, पृ० १५३)।

२५३. **गीतगोविंद** के अनुकरण पर भी बहुत से राम-सीता-सम्बन्धी काव्यों की रचना हुई है। उदाहरणार्थ :

(१) **रामगीतगोविंद** जो भूल से जयदेवकृत माना जाता है।

(२) **गीताराघव** के नाम से दो रचनाएँ प्रचलित हैं, एक हरिशङ्करकृत तथा अन्य प्रभाकरकृत। (दे० हरप्रसाद शास्त्री, नोटिसस भाग २, पृ० ४३)।

(३) **जानकीगीता** श्रीहर्यार्याचार्य-कृत हरिनाथ कृत की एक **राम-विलास** नामक रचना का उल्लेख मिलता है जो संभवतः **जानकीगीता** से अभिन्न हो[1]।

(४) **संगीतरघुनंदन** इस १८वी श० विश्वनाथ सिंह की रचना में **गीतगोविंद** के अनुकरण के साथ-साथ सीता-राम की युग्मभक्ति का भी प्रतिपादन किया गया है। (दे० हरप्रसाद शास्त्री नोटिसस, भाग ३, न० ३२४)।

अन्य स्फुट काव्य

२५४. उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त **साहित्यदर्पण** के रचयिता विश्वनाथ कृत **राघवविलास**, सोमेश्वरकृत **रामशतक** मुद्गलभट्ट कृत **रामार्याशतक** कृष्णेंद्रकृत **आर्यारामायण** आदि का उल्लेख भी मिलता है, जिनमें राम-कथा के दृष्टिकोण से नई सामग्री नहीं मिलती, लेकिन जिनसे राम-कथा की लोकप्रियता तथा समस्त काव्य में व्यापकता का प्रमाण मिलता है।

घ. कथा साहित्य

२५५. **दशकुमारचरित, वासवदत्ता, हर्षचरित, कादम्बरी** आदि की—आख्यायिका—शैली में किसी विस्तृत राम-सम्बन्धी रचना की सृष्टि नहीं हो पाई है। कारण यह होगा कि इस शैली की रचनाओं का कथानक कल्पित माना जाता था।

---

१. दे० मोनियेर विलियम्स : इंडियन विज़डम, पृ० ३६८।

फिर भी सब से प्राचीन कथा साहित्य की रचना, गुणाढ्यकृत **बृहत्कथा** में (जिसकी रचना सम्भवतः ४०० ई० के लगभग और निश्चित रूप से ६०० ई० के पूर्व हुई थी) राम कथा भी वर्णित थी, ऐसा अनुमान किया जाता है । इस अनुमान का आधार यह है कि **कथासरित्सागर** में राम-कथा-सबन्धी सामग्री मिलती है और **कथासरित्सागर** में लेखक का कहना है कि मैं **बृहत्कथा** का संक्षेप मात्र प्रस्तुत करता हूँ—**यथा मूलं तथैवैतद् न मनागप्यतिक्रमः** (दे० १. १. १०)। गुणाढ्य की रचना का संक्षेप क्षेमेन्द्र तथा बुधस्वामी द्वारा भी किया गया है । बुधस्वामी के **बृहत्कथा-श्लोक-संग्रह** में रामकथा नहीं मिलती, लेकिन क्षेमेन्द्र की **बृहत्कथामंजरी** में रामकथा अति सक्षिप्त रूप में वर्णित है ।

२५६. **कथासरित्सागर** की रचना सोमदेव ने ग्यारहवीं शताब्दी में की थी । इसमें दो स्थलों पर राम-कथा का वर्णन किया गया है । चौदहवीं लंबक की तरंग १०७ के अन्तर्गत वनवास से लेकर रावणवध के बाद राम की अयोध्या-यात्रा तक की अत्यन्त संक्षिप्त कथा मिलती है (१२-२६)। इसमें वाल्मीकीय कथानक से कोई भिन्नता नहीं पाई जाती है, लेकिन **कथा-सरित्सागर** की अन्य राम-कथा में इसका एक सर्वथा नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है । अलंकारवती लंबक में कांचनप्रभा नामक विद्याधारी विरहव्याकुल नरवाहन को सान्त्वना देने के उद्देश्य से राम-कथा का वर्णन करती है (दे० निर्णय सागर प्रेस संस्करण, ६. ५१. ५८-११२)।

प्रारम्भ में विष्णु के अंशावतार राम के निर्वासन-सीताहरण तथ रावण-वध का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन है (दे० ५६ ६५)। अनन्तर धोबी वृत्तान्त से मिलती जुलती सीतात्याग की कथा दी गई है (६६-७१), जिसका वर्णन निबन्ध के बीसवें अध्याय में किया जाएगा (दे० अनु० ५५६)।

शेष वृत्तान्त की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :—

सीता की वाल्मीकि के आश्रम में परीक्षा, जिसमें पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को टिट्टिभसर के उस पार पहुँचाती हैं (दे० आगे अनु० ५०७)। लव के जन्म के बाद कुश के अलौकिक जन्म की कथा (दे० आगे अनु० ५७७)।

लव और कुश का राम-सेना से युद्ध (दे० आगे अनु० ५२१)

राम तथा सीता का सम्मिलन जिसके कारण यह राम-कथा सुखान्त है। (दे० आगे अनु० ५२६, ५८८)।

२५७. राम-कथा को लेकर पद्रहवीं शताब्दी के बाद एक विस्तृत चम्पू-साहित्य की सृष्टि की गई है, जिसकी अधिकांश सामग्री अप्रकाशित है। सबसे प्राचीन तथा सबसे प्रचलित राम-सम्बन्धी चम्पू की रचना ग्यारहवीं शताब्दी में विदर्भ राजा भोज द्वारा हुई थी। इस **चम्पूरामायण** का आधार वाल्मीकिकृत **रामायण** का दाक्षिणात्य पाठ है। और इसमें कहीं भी कथानक के दृष्टिकोण से परिवर्त्तन नहीं किया गया है। इसके केवल पांच कांड भोजकृत हैं, लक्ष्मण भट्ट ने युद्ध कांड रचकर इस ग्रंथ को समाप्त किया था।

बाद में उत्तरकांड की कथावस्तु को लेकर भी बहुत से **उत्तरकांडचम्पू उत्तररामायणचम्पू** आदि ग्रंथों की रचना की गई है।

२५८. वासुदेव ने सत्रहवीं शताब्दी ई० उत्तरार्द्ध में **राम-कथा** को लिखकर **वाल्मीकिरामायण** के प्रथम ६ कांडों की कथा संक्षिप्त रूप से गद्य में लिखी थी। इसमें **महाभारत** के रामोपाख्यान के अनुसार मंथरा एक दुंदुभी नामक गंधर्वी का अवतार है। कथानक वाल्मीकीय कथा से भिन्न नहीं है, लेकिन उसमें अहल्या के वास्तव में पत्थर बन जाने का उल्लेख किया गया है।

पिटर्सन की संस्कृत हस्तलिपियों की सूची में एक अन्य राम कथा-सम्बंधी गद्य रचना का नाम मिलता है— अनन्तभट्ट कृत **रामकल्पद्रम**।

परिशिष्ट

रामलिंगामृत की कथा-वस्तु

सर्ग १. उपोद्घात :

२५९. मंगलाचरण के बाद गोकुल की दो गोपिकाओं का संवाद उद्धृत है। दोनों में से एक का जन्म हुआ था, जिससे उसे राम कथा की विशेष जानकारी है। अपनी सखी के अनुरोध से वह

रघुवंशीय गोपिका राम चरित का वर्णन करती है (१-२४)। कथानक रावण-चरित से प्रारम्भ होता है। जय-विजय को भृगु द्वारा दिए हुए शाप के फल-स्वरूप दोनों राक्षसयोनि प्राप्त कर रावण तथा कुंभकर्ण बन जाते हैं। प्रह्लाद का विभीषण बन जाने का भी उल्लेख है। अनन्तर रावण तथा कुंभकर्ण की शिवाराधना और वरप्राप्ति तथा देवताओं द्वारा विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना का वर्णन मिलता है (२५-६४)।

सर्ग २. रामबाललीला (१-७०)।

रामादि भाइयों का जन्म, जातकर्म, स्तनपान, राम का अपनी माता को अपना विश्वरूप दिखलाना; बाललीला, वनक्रीडा, अध्ययन, यज्ञोपवीत-संस्कार, तथा विश्वामित्र के राम और लक्ष्मण को ले जाने का वर्णन।

सर्ग ३. रावणपराभव (१-६४)

दोनों भाइयों का विश्वामित्र के साथ सीतास्वयंवर मे पहुँचना, सीता-सखियों द्वारा राम के सौंदर्य का वर्णन, राजाओं, देवताओं तथा राक्षसों की उपस्थिति; रावण का धनुष को चढ़ाने का असफल प्रयत्न राम द्वारा धनुर्भंग।

सर्ग ४. सीतास्वयंवर (१-१०३)

दशरथ के कौशल्यादि के साथ आने के बाद विवाहोत्सव का वर्णन दिया गया है। स्त्रियों की राम को देखने की उत्सुकता के वर्णन में कालिदास आदि कवियों का अनुकरण किया गया है। उदाहरणार्थ एक शार्दूलविक्रीडित छन्द उद्धृत किया जाता है—

काचिन्मंगलघोषहृष्टहृदया गेहात्सखी संवृत्ता
व्यग्रा व्यस्तसमस्तभूषणगणान्सीघ्रं दधाराध्वगा
सीताराममुखारविंद-ज-रसोन्मत्ता गलन्मालती
केशे कंकतिका चलत्कुचयुगा द्वारोर्ध्वभागे स्थिता ॥८६॥

इन्द्र आदि देवगण के आगमन तथा इन्द्र की आज्ञा से विश्वकर्मा द्वारा निर्मित एक दिव्य नगर का उल्लेख है, जिनमें लक्ष्मी सीता को रामावतार का रहस्य बताती हैं।

सर्ग ५. रामारण्यगमनं (१-६३)

मिथिला से प्रस्थान तथा मार्ग में परशुराम तेजोभंग के वर्णन के बाद राम की अवस्था १५ वर्ष की तथा जानकी की ६ वर्ष की बताई जाती है, यद्यपि चौथे अध्याय में सीता की १६ वर्ष की अवस्था का उल्लेख हुआ था। अनन्तर वाल्मीकि के अनुसार राम के निर्वासन का वर्णन किया गया है (२५.६३)।

सर्ग ६. रामारण्यगमनं(७-८१)

इसमें **भगवान्मायामनुष्य हरि** (छन्द ४) के पचवटी में निवास का वर्णन है। जहाँ खग,मृग, व्याघ्र आदि अपना 'स्वभाव वैर' का परित्याग कर रहते थे (छन्द ५)।

अनन्तर शूर्पणखा के विरूपीकरण के उल्लेख के बाद नारद के रावण के पास जाकर सीता के सौन्दर्य के वर्णन करने की कथा मिलती है जिसके फल स्वरूप रावण मारीच की सहायता से सीता का हरण करता है। सीता की खोज के वर्णन में शिलामयी अहल्योद्धार तथा केवट के राम-चरण धोने के आग्रह की कथा दी गई है। कबंध-बध के उल्लेख के बाद राम की सीता को प्राप्त करने के लिए शिव पूजा का वर्णन किया गया है—

सीतासंगमनार्थाय रामो लिंगस्य पूजनं।
चक्रे तेन महादेवः सीता शुद्धिं चकार ह ॥७६॥

अन्त में राम के वानरों से सख्य कराने का उल्लेख मात्र मिलता है।

सर्ग ७. रामविभीषणदर्शन (१-६२)

इसमें हनुमान के सीता के पास जाकर उनको एक अँगूठी के अतिरिक्त राम का एक पत्र देने का वर्णन है। लंकादहन के उल्लेख के बाद हनुमान के राम को सीता का समाचार देने की कथा मिलती है। अनन्तर अङ्गद के दूतकार्य का वर्णन किया गया है; जिसमें **महानाटक** के रावण-अङ्गद-संवाद का अनुकरण स्पष्ट है। अन्त में सेतुबंध तथा विभीषणागमन का उल्लेख किया गया है।

सर्ग ८. युद्धकांड अष्टम सर्ग (१-६१)

इसमें राक्षसों की केलि के वर्णन के बाद अहीमहीरावण के राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाने का तथा हनुमान द्वारा मकरध्वज की सहायता से दोनों की मुक्ति का वृत्तान्त दिया गया है।

सर्ग के अन्त में कुम्भकर्ण-वध, लक्ष्मण को शक्ति लगने तथा लक्ष्मण इन्द्रजित्-युद्ध का उल्लेख मात्र मिलता है।

सर्ग ९. अहीरावणमहीरावणवधे नवम सर्ग (१-४५)

इस सर्ग की कथावस्तु शीर्षक के अनुसार नहीं है, इसमें सुलोचना की कथा तथा रावण के युद्ध के लिए प्रस्थान का वर्णन मिलता है।

सर्ग १०. शिवलिंग वर्णन (१. ८३)

रामक्षेत्र में राम को देखने पर रावण का एक विस्तृत भाषण दिया गया है (१-३५), जिसमे वह राम को राक्षसवंश का नाश करने के लिए विष्णु का अवतार मानता है, विष्णु द्वारा वध किए जाने के कारण अपने भाग्य की प्रशंसा करता है, राम द्वारा की हुई शिवपूजा को उनकी विजय का कारण मानता है और साथ साथ रामनाम की सामर्थ्य का वर्णन करता है जिसके स्मरण मात्र करने से वानरसेना समुद्र को पार करने में समर्थ हो सकी।

अनन्तर राम रावण को अपना शिव-रूप दिखलाते हैं तथा शिवलिंग का वर्णन करते हैं। रावण का सर्वत्र राम के रूप को देखने का भी उल्लेख हुआ है (६४)

सर्ग ११. रावणवध (१-८१)

रावण-वध के बाद सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं लेकिन रावणवध सुनकर सीता के आनन्द तथा मंदोदरी के विलाप का उल्लेख किया गया है; अनन्तर विभीषण के अभिषेक का वर्णन मिलता है।

सर्ग १२ रामराज्याभिषेक (१-७५)

प्रारम्भ में राम आदि की अयोध्या-यात्रा का और अनन्तर राम के आगमन से अयोध्यावासियों के आनन्द का वर्णन किया गया है। कैकेयी राम से मिलकर कहती है कि देवेन्द्र की प्रेरणा से मैंने आपको रावण का वध करने के लिए वन भेजा था। सर्ग के अन्त में राम का अभिषेक वर्णित है।

सर्ग १३. श्री जानकीरामक्रीडाहितक (१-२५)

राम और सीता के संभोगवर्णन के बाद (१-२०) प्रातः शृंगार, भोजन आदि का उल्लेख किया गया है। सभा में नारद राम की स्तुति करते हैं—

श्रीराम जगधातार ब्रह्मानंद सुखप्रद
त्वन्नामस्मरणेनैव तरिष्ये भवसागरं।

अन्त में गर्भवती सीता के दोहद का उल्लेख है।

सर्ग १४. इस ३८ छन्दों के सर्ग में (जिसका कोई नाम नहीं रखा गया है) वाल्मीकि आश्रम में कुश-लव के जन्म और शिक्षा का वर्णन है। (सीता त्याग का उल्लेख नहीं है)। नारद से समाचार पाकर राम सेना-सहित आश्रम जाते हैं तथा युद्ध के बाद सीता और कुश-लव के साथ अयोध्या लौटते हैं। (दे० आगे अनु० ५२२)

सर्ग १५. कुम्भगर्भवध (१.३४)

इसमें सीता द्वारा कुम्भकर्ण के पुत्र कुम्भगर्भ के वध का वर्णन किया गया है। (दे० आगे अनु० ५३३)

सर्ग १६. श्रीरंगवर्णन (१-४१)

इस सर्ग में श्री रंग-मूर्ति की कथा के अतिरिक्त उसके राम द्वारा पूजन वर्णन किया गया है।

सर्ग १७. श्रीरामस्य स्वरूपवर्णन (१-८०)

वसिष्ठ की आज्ञा से राम के अश्वमेध-यज्ञ का वर्णन किया है, जिसमें

देवता आकर राम तथा सीता की स्तुति करते हैं (१-३३)। अनन्तर सरयूतीर्थ माहात्म्य-सहित राम-सीता और अयोध्यासमाज का परलोकगमन वर्णित है (३४-५६)। अन्त में अद्वैतमंजरी मिलती है जिसमें जीव, ब्रह्म, ईश्वर, माया आदि का निरूपण किया गया है (५७-८०)

सर्ग १८-खिल (१-६०)

इसमें राम-कथा नहीं मिलती। रामपूजा विधि तथा रामकीर्ति के निरूपण के पश्चात् राम-शंकर की तथा राम-कृष्ण की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है।

अन्त में रचनाकाल (शक १५३०) ग्रन्थकार (अद्वैत) आदि का उल्लेख है।

बारहवां अध्याय

आधुनिक भारतीय भाषाओं में राम-कथा

क—द्राविड़ भाषाओं के साहित्य में राम-कथा

तामिल रामायण

२६० द्राविड़ भाषाओं का राम-कथा-सम्बन्धी सबसे प्राचीन काव्य ग्रथ कबन कृत **रामायण** है, जिसकी रचना दसवी शताब्दी ई० में हुई थी। इसमे वाल्मीकिकृत **रामायण** के प्रथम छः कांडों की समस्त कथा-वस्तु स्वतत्र रूप से वर्णित है और अनेक नये वृत्तान्त भी जोड़े गए हैं। ऐसा कहा जाता है कि कबन के पूर्व ओत्तकुथन ने तामिल भाषा में **रामायण** लिखा था, लेकिन कंबन की रचना सुनकर वे अपना काव्य नष्ट करने लगे। यह सुनकर कंबन उसके पास गए लेकिन वे उत्तरकांड ही बचा सके। इस विषय में इतना ही निश्चित है कि **तामिल रामायण** का उत्तरकाड कंबन-कृत नहीं है। इसकी रचना बाद में ओत्तकुथन द्वारा हुई थी[1]। तामिल उत्तरकांड में राम धोबी के कथन के कारण सीता का परित्याग करते हैं, शेष कथानक प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार है।

कबन की रचना के मंगलाचरण आदि से ज्ञात होता है कि वह शैव थे[2]। उन्होंने अपने काव्य के प्रारम्भ में कहा है कि मैं वाल्मीकि तथा दो अन्य कवियों के आधार पर लिख रहा हूँ। इन दोनों में से एक कुमारदास प्रतीत होते हैं क्योंकि अनेक **वाल्मीकीय रामायण** से भिन्न वृत्तान्त **जानकीहरण** (८वीं शताब्दी ई०) तथा **तामिल रामायण** दोनों मिलते हैं।

कथानक के दृष्टिकोण से **कम्बन-रामायण** की निम्नलिखित विशेषताये विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :

१. वी० एम० गोपाल कृष्णाचारियर, कबन रामायण बालकाड, पृ० ९।

२. एम० एस० पूर्णलिंग पिल्ले : तामिल लिटरेचर, पृ० २२३।

(१) **रघुवंश** तथा **जानकीहरण** की कथा की भाँति अहल्या वास्तव में शिला बन गई थी। (बालकांड, सर्ग ६)।

(२) राम-लक्ष्मण के विश्वामित्र के साथ मिथिला में प्रवेश का स्वतन्त्र वर्णन किया गया है। मिथिला नगर के विस्तृत वर्णन के पश्चात् राम और सीता के एक दूसरे को देखने का तथा फलस्वरूप रात में दोनों के विरह का भी चित्रण किया गया है (बालकाड, सर्ग १०)। इसके बाद जनक द्वारा राम का स्वागत तथा सीतास्वयवर में वर्णित है (सर्ग १२) यह प्रसग बहुत कुछ **जानकीहरण** के वृत्तान्त से मिलता जुलता है।

(३) कम्बन के बालकाड में दशरथ की मिथिला की यात्रा का पांच सर्गों में वर्णन किया गया है। दशरथ के साथ सेना, अतःपुर की रमणियां आदि भी हैं। उनके विलास का विस्तृत चित्रण किया गया है : पुष्पचयन, जलक्रीड़ा, आपानकेलि आदि। **जानकीहरण** में भी दशरथ का अपनी पत्नियों के साथ विहार विस्तारपूर्वक वर्णित है।

(४) सीताहरण के वृत्तान्त में रावण सीता को स्पर्श करने के भय से पृथ्वी खोद कर भूमिभाग के साथ साथ ले जाता है (अरण्यकाड, सर्ग ८) **तिब्बती रामायण** में भी ऐसी कथा मिलती है।

(५) युद्धकांड में नारायणावतार राम से युद्ध न करने का अनुरोध करते हुए विभीषण रावण को नृसिंहावतार की कथा सुनता है। किसी भी अन्य रामकथा में ऐसा वर्णन नहीं मिलता (सर्ग ३)।

(६) महोदर की आज्ञा से एक मरुत्त नामक राक्षस जनक का रूप धारण कर लेता है और रावण को पतिस्वरूप स्वीकार करने का सीता से अनुरोध करता है। इस मायाजनक का अन्यत्र उल्लेख नहीं है (सर्ग १६)।

(७) **सेतुबंधु** तथा **जानकीहरण** के अनुकरण पर युद्ध के पर्व राक्षस-राक्षसियों का संभोग भी वर्णित है (सर्ग २४)।

(८) रणभूमि में मन्दोदरी-वध का उल्लेख किया गया है (सर्ग ३४)

तेलगू रामायण

(अ) द्विपाद रामायण

२६१. तेलगू साहित्य की प्राचीनतम रामकथा-सम्बंधी रचना **द्विपाद-**

रामायण है, जिसकी रचना १२ वीं शताब्दी में बुद्धराजु द्वारा हुई थी। यह **रंगनाथ रामायण** के नाम से भी प्रसिद्ध है, क्योंकि बुद्धराजु ने अपनी रचना रंगनाथ नामक सामन्त को समर्पित की थी।

लोकप्रिय द्विपाद नामक छंद तथा सरल भाषा के कारण इस **रामायण** तेलगू जन साधारण में बहुत प्रचार है यद्यपि मोल्लाकृत **रामायण** इससे अधिक प्रचलित है। **द्विपाद रामायण** के छः कांडों में **वाल्मीकि रामायण** के प्रथम छः कांडों की कथावस्तु का वर्णन किया गया है। कथानक के दृष्टिकोण से निम्नलिखित परिवर्तन तथा परिवर्द्धन उल्लेखनीय हैं :

(१) सीतास्वयम्वर के अवसर पर जनक कहते हैं कि हल जोतते समय उन्होंने सीता को एक मंजूषा मे पाया था (बालकांड, २७)।[1]

(२)इन्द्र-शंबरासुर के युद्ध में कैकेयी धवलगिरि से सीखी हुई माया द्वारा शंबर की माया का नष्ट करने में समर्थ हुई थी (अयोध्याकांड, ३-५)।

(३) वन के लिए प्रस्थान करते समय लक्ष्मण निद्रा देवी से दो वर प्राप्त करते हैं—अपनी पत्नी उर्मिला के लिये चौदह वर्ष की नींद तथा अपने लिए वनवास के अन्त तक जागरण (अयोध्याकांड, ११)।

(४) जैन पउमचरिय के अनुसार लक्ष्मण शूर्पणखा के पुत्र जम्बुकुमार का सिर काट लेते हैं (आरण्यकांड,४-५)।

(५) सीता के अनुरोध से राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण कुटी के चारों ओर सात रेखाएँ खाचते हैं (वही,१४)।

(६) नागपाश के वृत्तांत के बाद, वाल्मीकि के पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुसार नारद के राम के पास आने का उल्लेख है (युद्धकांड ४४)।

(७)इन्द्रजीत की पत्नी सुलोचना का वृत्तांत का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है (वही, ६०-६१)।

(८) **वाल्मीकि रामायण** के गौडीय तथा पाश्चमोत्तराय पाठों के अनुसार हनुमान की यात्रा के वर्णन में कालनेमि की कथा मिलती है(वही, १०३-१०६)।

---

१. दे० रंगनाथ रामायण; वावित्ल रामस्वामी सरकरण।

(६) रावण के यज्ञ को भंग करने के उद्देश्य से मन्दोदरी-केश-ग्रहण का वृत्तांत दिया गया है जो वाल्मीकीय पश्चिमोत्तरीय पाठ में भी मिलता है (वही ११०-११२)।

(आ) अन्य रामायण

२६२. **रंगनाथ रामायण** में उत्तरकांड की कथावस्तु का अभाव है। अतः बुद्धराजु के पुत्रों, काचविभुदु तथा विट्ठलराजु ने द्विपाद छन्द में **उत्तर-रामायण** का रचना करके प्रचलित **रामायण** की कथा पूरी की थी।[1] बारहवीं शताब्दी के बाद तिक्कन यानी कृत उत्तर काड संबधी **निर्वचनोत्तर रामायण** (१३ वीं श०) तथा ~~कम्मकांति~~ पापराजुकृत **उत्तर-रामायण** नाम चम्पू का भी उल्लेख मिलता है।

२६३. चौदहवीं शताब्दी का **भास्कर रामायण** सबसे अधिक कलात्मक तथा साहित्यक माना जाता है। यह **वाल्मीकि रामायण** का संस्कृत-गर्भित तेलगू में स्वतन्त्र अनुवाद है। भास्कर के अतिरिक्त उनके पुत्र, मित्र, शिष्य आदि अनेक व्यक्तियों ने इस **रामायण** के कुछ अश लिखे हैं।

२६४. तेलगू जनसाधारण का सबसे लोकप्रिय रामायण **मोल्ला रामायण है**, जिसकी रचना सोलहवीं शताब्दी में एक मोल्ला नामक कुम्हारिन कुमारी द्वारा हुई थी। यह बहुत सक्षिप्त है और **वाल्मीकि रामायण** के कथानक से भिन्न नहीं प्रतीत होता है।

२६५. अठारहवीं शताब्दी का **गोपीनाथ रामायण**, जो चम्पू शैली में लिखा गया है, इस बात का प्रमाण है कि आगे चलकर भी राम-कथा तेलगू कवियों का प्रिय विषय रहा है।

मलयालम रामायण

२६६. यद्यपि मलयालम साहित्य की प्राचीनतम रचना रामचरित से सम्बंध रखती है, किन्तु मलयाली कवियों ने राम कथा के वर्णन में किसी मौलिकता का प्रदर्शन नहीं किया है। १७ वीं शताब्दी तक निम्नलिखित राम-सम्बंधी रचनाओं का उल्लेख मिलता है।

---

१. पी० चेंचिया : ए० हिस्टरी आव तैलगू लिटरेचर।

रामचरितम : दक्षिण ट्रावनकोर की एक सुसंस्कृत उपभाषा में लिखनेवाले राम नामक कवि ने चौदहवीं शताब्दी में **रामचरित** की रचना की थी, जो मलयालम साहित्य का प्राचीनतम सुरक्षित ग्रन्थ है। इस रचना का वास्तविक नाम है **इरामचरित**। एक दन्तकथा के अनुसार इसके रचयिता ट्रावनकोर के एक राजा थे, लेकिन इसके लिए कोई प्रमाण नहीं मिलता।[1] अपनी रचना के प्रारम्भ में वाल्मीकि का अक्षरशः अनुवाद भी किया है। इसकी कथावस्तु वाल्मीकि के केवल युद्धकांड से सम्बंध रखती है।

२६७. **कन्नास रामायण** : पन्द्रहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध की यह कन्नास पानिक्कर कृत रचना **वाल्मीकि रामायण** का अनुवाद मात्र है; कन्नास ने प्रचलित **रामायण** के अनेक अनावश्यक वृत्तांत छोड़ दिए हैं।

२६८. **अध्यात्म रामायण** : इसकी रचना १५७५ और १६५० के बीच में एजुथाच्चन द्वारा हुई थी। यह ग्रन्थ, जो संस्कृत **अध्यात्म रामायण** का अनुवाद है, मलयालियों में सब से अधिक लोकप्रिय रामायण है।

२६९. **केराल वर्मा रामायण** : राजा वीर केराल वर्मा की यह रचना भी **वाल्मीकि रामायण** का स्वतन्त्र अनुवाद है।

कन्नारी रामायण

२७०. (अ) **तोरावे रामायण** : ११ वीं शताब्दी से लेकर कन्नारी भाषा में एक विस्तृत जैन राम-कथा-साहित्य की सृष्टि हुई है, इसका उल्लेख निबन्ध के पांचवें अध्याय में किया गया है। जैन राम-साहित्य की अपेक्षा ब्राह्मण कन्नारी रामसाहित्य अर्वाचीन है। १६ वीं शताब्दी में तोरावे निवासी नरहरि ने अपना रामायण लिखा था जो **तोरावे रामायण** के नाम से प्रसिद्ध है।[2] इस रचना के अतिरिक्त नरहरिकृत **मैरावण कलग** का भी

---

१. दे० आर० नारायण पानिक्कर : भाषा साहित्य चरित्रम्, भाग १, पृ० १७२।

२. आर० नरसिंहाचार्य के अनुसार नरहरि १५०० ई० के लगभग जीवित थे (दे० कर्णाटक कवि चरिते, भाग २, पृ० १४२)। इ० पी० राइस के अनुसार तोरावे रामायण की रचना १५९० के लगभग हुई थी।

उल्लेख मिलता है, जिसकी ४ संधियों में हनुमान द्वारा मैरावण-वध की कथा मिलती है। **तोरावे रामायण** के ६ कांडों में बालकांड से लेकर युद्ध-कांड तक की वाल्मीकीय कथा का वर्णन किया गया है। कथानक में निम्नलिखित परिवर्तन उल्लेखनीय हैं :

(१) लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र शंबूक का वध (अरण्यकांड, संधि-३, दे० आगे अनु० ५२३)।

(२) सीताहरण के पहले अग्नि का सीता का आधा भाग अपने गढ में रखने के लिए ले जाना (अरण्यकांड, संधि ६)।

(३) अतिकाय का तुलसी-माला आदि पहने वैष्णव-भक्त के रूप में रण-क्षेत्र में आगमन (युद्धकांड, संधि ३४)।

(४) लक्ष्मण का १४ वर्ष तक उपवास और जागरण (युद्धकांड, संधि ४५)।

२७१. (अ) **अन्य रामायण: तोरावे रामायण** में वाल्मीकीय उत्तर-कांड की कथा नहीं मिलती; अतः १६५० के लगभग दो **उत्तर रामायण** नामक ग्रन्थों की रचना की गई है, एक तिरुमल वैद्य द्वारा और एक यागेन्द्र द्वारा। आगे चलकर समस्त राम-कथा को लेकर बहुत से काव्यों की सृष्टि की गई है, जिनका उल्लेख यहां अनावश्यक है।

आदिवासी कथाएं

२७२. बिहार प्रान्त के आदिवासियों का कोई अपना साहित्य सुरक्षित न रह सका, केवल उनकी कुछ दन्तकथाओं का वर्णन मिलता है। शरच्चंद्र राय कृत **दि विहोरस** में इस जाति में प्रचलित एक रामकथा उद्धृत है (पृ० ४०५-४२७), जिसमें भगवान के अवतार राम के जन्म से लेकर रावण तथा कुम्भकर्ण के वध तक का वृत्तान्त संक्षेप में वर्णित है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती हैं :

(१) दशरथ की सात पत्नियों का उल्लेख।

(२) दशरथ का पहले ब्राह्मण (अर्थात् विश्वामित्र) के साथ भरत शत्रुघ्न को भेज देना तथा ब्राह्मण का इस धोखे का पता लगना। यह वृत्तान्त मलय में भी मिलता है।

(३) सीता का आंगन को लीपने के लिए शिव का धनुष उठाना।

(४) लक्ष्मण के १२ वर्ष तक के उपवास का कुछ परिवर्तित रूप। इसके अनुसार लक्ष्मण केवल मिट्टी खाते थे।

(५) सीता हरण के पहले राम को सहायता करने जाते समय लक्ष्मण का सीता को राई के दाने देना, उनके द्वारा सीता का रावण को भस्मीभूत करना (दे० आगे अनु० ४४१)।

(६) सीता की खोज में राम का बेर वृक्ष तथा गिलहरी को वर प्रदान करना और बगुले को दंड देना।

(७) हनुमान का शुक के रूप में लंका में प्रवेश करना।

(८) राम लक्ष्मण का हनुमान के पुच्छ पर समुद्र पार करना (दे० आगे अनु० ५२७)।

(९) लक्ष्मण द्वारा रावण-वध।

(१०) रावण-वध के पश्चात् लक्ष्मण द्वारा कुम्भकर्ण के वध का उल्लेख।

२७३. मुण्डा जाति में एक दन्तकथा प्रचलित है जिसमें विहोर जाति की उपर्युक्त राम-कथा के अनुसार सीता की खोज का कुछ वर्णन किया गया है। बगुला राम की सहायता करने से इनकार करता है और राम दण्डस्वरूप उसकी गरदन खींचते हैं। बेर वृक्ष राम सीता की साड़ी के कुछ टुकड़े देता है और अमरत्व का वरदान प्राप्त करता है। गिलहरी सीता का मार्ग बताती है और राम उसकी पीठ पर तीन रेखाएं खींचते हैं।[1]

ख—आर्य भाषाओं के साहित्य में राम-कथा

२७४. आधुनिक आर्य भाषाओं के रामसाहित्य की रचना १५ वीं शताब्दी में प्रारम्भ होती है लेकिन अधिकांश इसके बाद ही हुई है, जब राम-भक्ति के आविर्भाव और प्रचार के साथ साथ राम-कथा का विकास भी अन्तिम परिणति पर पहुँच चुका था। अतः राम-कथा के दृष्टिकोण से

---

१. दे० एम० सी० मित्र : जर्नल आव डिपार्टमेंट आव लेटर्स, कलकत्ता, भाग ४ पृ० ३०३-३०४।

इस साहित्य का महत्व गौण है। फिर भी भिन्न भिन्न वृत्तान्तों की व्यापकता दिखलाने के उद्देश्य से इसका किंचित् निरूपण अपेक्षित है। पहले एक सिंहली वृत्तान्त और इसके बाद काश्मीरी रामायण का परिचय दिया जाता है, क्योंकि सम्भव है कि दोनों का आधार सिंहल द्वीप तथा काश्मीर में प्रचलित प्राचीन रामकथा हो। प्राचीनतम बंगाली रामायण १५ वीं शताब्दी का माना जाता है, अतः बंगाली राम-साहित्य का उल्लेख हिन्दी रामसाहित्य के पहले किया जाता है। अन्त में अन्य आर्य भाषाओं के साहित्य का भी महत्वानुसार वर्णन किया गया है। अधिकांश समालोचक केवल **वाल्मीकि रामायण** तथा अपने प्रान्तीय साहित्य की तुलना करके सर्वत्र मौलिकता देखते हैं। इस तरह श्री दिनेशचन्द्र सेन लक्ष्मण के १४ वर्ष तक के उपवास को एक मौलिक बंगाली वृत्तान्त मानते हैं[1]। वास्तव में ये वाल्मीकि से भिन्न अधिकांश कथाएँ पंद्रहवीं शताब्दी से पूर्व बहुत व्यापक रूप से प्रचलित थीं, और अनेक प्रान्तों तथा विदेश में भी किंचित् परिवर्तन सहित पाई जाती हैं।

सिंहली रामकथा

२७५. सिंहल द्वीप में एक कोहोम्बा 'यक्कम' नामक धार्मिक विधि है, जिसका सूत्रपात ५ वीं शताब्दी ई० पू० में माना जाता है लेकिन जिसका साहित्य में पहला वर्णन १५ वीं शताब्दी ई० का है[2]। इस विधि के समय काव्यात्मक कथाओं का पाठ होता है, जिनमें से सिंहल के प्रथम राजा विजय तथा नाग-राजकुमारी कुवेणी की और सीतात्याग की कथा, ये दो प्रधान हैं।

सिंहली रामकथा में वालि हनुमान का स्थान लेता है; वह लंका का दहन करके सीता को राम के पास ले जाता है। रावण-चित्र के कारण सीता त्याग के उल्लेख के बाद (दे० आगे अनु० ५६१) सीता के पुत्र के जन्म का उल्लेख तथा वाल्मीकि द्वारा दो बालकों की सृष्टि का वर्णन

---

१. दे० दिनेशचन्द्र सेन : वही, पृ० १७६; जहां इस उपवास के विषय में लिखा है—ए० प्युर्ली बंगाली टेल।

२. दे० ज० रो० सो० (१९४६, पृ० १४-२२; १८५-९१) तथा एलफाबेटिकल गाइड टु सिंगालीज फालक्लार (इ० ए० भाग ४५, सप्लेमेंट)।

किया गया है। अन्त में इन तीनों का राम सेना से युद्ध करने का भी उल्लेख मिलता है (दे० आगे अनु० ५७६ और ५२३)।

काश्मीरी रामायण

२७६. **काश्मीरी रामायण** की रचना १८ वीं शताब्दी के अन्त में दिवाकर प्रकाश भट्ट द्वारा हुई थी। यद्यपि इसका आधार कई शताब्दियों से चली आई हुई परम्परा हो सकती है, किन्तु आधुनिक काल में लिपि-बद्ध होने के कारण इसमें राम-कथा के विकास के अन्तिम सोपान के लक्षण स्पष्ट दिखलाई देते हैं। यह **काश्मीरी रामायण** की निम्नलिखित विशेषताओं से प्रतीत होता है :—

(१) समस्त काव्य का शिव-पार्वती संवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाना (दे० नं० २)।[१]

(२) अवतारवाद की व्यापकता : राम पूर्णावतार माने जाते हैं तथा लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमशः शेष, शंख और सुदर्शन के अवतार।

(३) अयोध्याकांड के वृत्तान्त के प्रारम्भ में नारद का राम के पास आकर राम को उनके अवतार होने का स्मरण दिलाना (दे० नं० २६)।

(४) मेघनाद-वध के पश्चात् रावण का शुक्र के परामर्श के अनुसार यज्ञ करना तथा अंगद द्वारा उसका भंग किया जाना (दे० नं० ४८)।

यद्यपि **काश्मीरी रामायण** में दशरथ-यज्ञ से लेकर सीता के भूमि-प्रवेश तथा राम के स्वर्गारोहण तक की समस्त कथा बहुत कुछ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार है, किन्तु इसमें बहुत से परिवर्त्तन तथा परिवर्द्धन भी किए गए हैं। कथानक के दृष्टि कोण से इनमें से चार वृत्तान्त अधिक महत्वपूर्ण हैं :

(१) मंदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म (नं० २४)।

(२) रावण के चित्र के कारण सीता का त्याग (नं० ६३)।

---

१. दे० दि काश्मीरी रामायण, जी० ए० ग्रियर्सन का संस्करण, कलकत्ता १९३०।

(३) वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि (न० ६६)।

(४) कुश-लव का राम-सेना से युद्ध (न० ७१)।

ये वृत्तान्त अन्यत्र भी पाये जाते हैं। इनके विकास का विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ भाग में किया जायगा (दे० आगे १४ वाँ और १५ वाँ अध्याय)। इनके अतिरिक्त **काश्मीरी रामायण** में कुछ और विशेषताये मिलती हैं, जिनका निरूपण महत्वानुसार चतुर्थ भाग में किया जायगा। इनका यहाँ उल्लेख मात्र पर्याप्त है :

(१) राम का दशरथ के लिए पिंडदान करना (न० १८)।

(२) वनवास के समय अहल्या से भेंट (न० १६)।

(३) सीता के कहने पर रावण का जटायु को पत्थर खिलाना (न०२४)।

(४) नारद का लंका में सीता की खोज करते हुए हनुमान को रावण-चरित का वर्णन सुनाना (न० २६)।

(५) नल की कथा जिसमें उसके फेंके हुए पत्थरों के पानी पर तैरने का कारण बताया गया है (न० ३६)।

बंगाली साहित्य में राम-कथा

(अ) कृत्तिवास रामायण

२७७. १५वीं श० ई० में कृत्तिवास ने बङ्गाली साहित्य के पहले रामायण की रचना पयारछंद में की थी। कृत्तिवासकृत **रामायण** का कोई प्रमाणिक संस्करण नहीं मिलता। श्री दिनेशचंद्र के अनुसार प्रचलित **कृत्तिवास रामायण** में न केवल बहुत से प्रक्षेप मिलते हैं किन्तु कृत्तिवास की भाषा भी लिपिकों के द्वारा बहुत कुछ बदल दी गई है[1]। इनका कहना है कि राक्षसों का रामभक्ति से सम्बन्ध रखनेवाले वृत्तान्तों की रचना १८वीं श० ई० में कविचन्द्र द्वारा हुई थी। वीरबाहु तथा तरणीसेन नामक राक्षसों की रामभक्ति का विशेष वर्णन किया गया है। रावण का पुत्र वीरबाहु राम के विष्णु-चिह्नों से आभूषित देखकर अपना धनुष फेंक देता है तथा राम के

---

१. दे० दिनेशचन्द्र सेन : हिस्टरी आव बंगाल लाग्वेज एंड लिटरेचर ; पृ० १७७।

स्तुति करने लगता है; तरणीसेन, जिसका शरीर राम नाम से अंकित है, वैष्णव तिलक आदि के साथ रण क्षेत्र में आता है तथा रावण स्वयं युद्ध के पहले बद्धांजलि होकर राम के अवतारवाद तथा उनकी दयालुता में विश्वास प्रकट करता है। कृष्ण भक्ति का भी प्रभाव प्रचलित **कृत्तिवास रामायण** पर पड़ा है। नागपाश के वृत्तांत में राम अपने आप को मुरलीधर के रूप में गरुड़ को दिखलाते हैं, जिस पर हनुमान अप्रसन्न होकर मुरली को राम के हाथ से छीनना चाहते हैं। रावणवध के पश्चात विश्वकर्मा राम और सीता के विहार के लिए अयोध्या में एक प्रमोदभवन की सृष्टि करते हैं।

वैष्णव भक्ति के इस प्रभाव के अतिरिक्त **कृत्तिवास रामायण** के बहुत स्थलों पर शाक्त सम्प्रदाय की गहरी छाप पाई जाती है। उदाहरणार्थ :

चामुंडा का हनुमान को लंका में प्रवेश करने से रोकना।

हर-पार्वती कलह : लंकावरोध के पश्चात् पार्वती का रावण की सहायता करने के लिए शिव से अनुरोध करना।

महीरावण तथा अहीरावण का वृत्तांत, जिसमें हनुमान काली की सहायता से राम और लक्ष्मण को छुड़ाते हैं।

राम की अकाल में देवी-पूजा, जिसके फलस्वरूप चंडी रावण को दिए हुए अभयदान का ध्यान न रखकर राम को विजय प्रदान कर देती है।

इन साम्प्रदायिक विशेषताओं के अतिरिक्त कथानक में निम्नलिखित वृत्तांत उल्लेखनीय हैं, जिनका तुलनात्मक विश्लेषण निबन्ध के चतुर्थ अंक में किया जायगा।

बालकांड के अन्तर्गत रत्नाकर दस्यु का वाल्मीकि बन जाने की कथा, हरिश्चन्द्र-उपाख्यान, कैकेयी के दो भिन्न अवसरों पर वर प्राप्त करने का वृत्तांत; बालकपन में राम तथा गुहक की मैत्री।

अरण्यकांड में राम की सहायता करने जाने के पहले लक्ष्मण का सीता की रक्षा के लिए कुटी के चारों ओर रेखा खींचने का वृत्तांत।

सुन्दरकांड में सेतुबन्ध के समय नल और हनुमान का झगड़ा, शिव प्रतिष्ठा तथा भस्मलोचन-वध।

युद्धकाड में लक्ष्मण का १४ वर्ष तक उपवास तथा उनका सागर के अनुरोध से सेतुबन्ध-भजन।

उत्तरकाड में रावण के चित्र के कारण सीतात्याग तथा कुश-लव का राम सेना से युद्ध।

(अ) अन्य बंगाली रामायण

२७८. सबसे अधिक लोकप्रिय कृत्तिवासकृत **रामायण** के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य राम कथा-सम्बन्धी बगाली रचनाएँ उल्लेखनीय हैं[1]—

चंद्रावती कृत रामायण (१६वीं श० उ०) : इसमें सीता त्याग की कथा भिन्न है। कैकेयी की पुत्री कुकुआ के अनुरोध से सीता रावण का चित्र खींचती है, जिसके कारण राम उनको वन भेज देते हैं।

२७९. **रामानंदकृत रामलीला** (१७ वी श०) : रामानन्द हनुमान को शिव के अवतार मानते हैं तथा बहुत से स्थलों पर काली की स्तुति करते हैं। विस्तृत बालकांड में अबरीष की पुत्री श्रीमती के स्वयवर का वर्णन, हरिश्चन्द्र की कथा आदि पाई जाती है।

२८०. **कविचंद्रकृत अगद रैवर** (१८ वी श०) : **अंगद रैवर** जिसमें अगद के दूतत्व का वर्णन किया गया है, **कृत्तिवास रामायण** के प्रचलित सस्करणों मे लंकाकाड के अन्तर्गत मिलता है। इसका उल्लेख ऊपर हुआ है कि **कृत्तिवास रामायण** के बहुत से प्रक्षेप कविचद्रकृत माने जाते हैं।

२८१. **रघुनंदन गोस्वामीकृत रामरसायन,** (१७५० ई० के लगभग) : **कृत्तिवास रामायण** को छोड़कर यह रचना साहित्यिक दृष्टिकोण से श्रेष्ठ माना जाता है। इसमे कृष्णलीला का स्पष्ट अनुकरण किया गया है।

२८२. **जगत् रामकृत रामायण** (१७६० ई०) : युद्धकांड तथा

---

१. दे० दिनेशचन्द्र सेन : दि बंगाली रामायण।

उत्तरकांड के बीच में एक पुष्करकांड मिलता है, जिसमें सहस्र स्कंध-रावण-वध का वर्णन किया गया है।

हिन्दी साहित्य में रामकथा

(अ) गोस्वामी तुलसीदास की रामकथा

२८३. गोस्वामी तुलसीदास की समस्त रचनायें उनके इष्टदेव राम से सम्बन्ध रखती हैं, लेकिन इनमें से **रामचरितमानस** सबसे अधिक लोकप्रिय प्रमाणित हुई है। इसी एक रचना के द्वारा हिन्दी प्रदेश मे रामभक्ति की धारा फैल गई और आज तक प्रवाहित होती रही। अतः रामभक्ति के विकास मे **रामचरितमानस** का महत्व अद्वितीय है।

रामकथा के विकास के दृष्टिकोण से **रामचरितमानस** तथा तुलसी दास की अन्य रचनाओं में कोई नये वृत्तान्त नहीं मिलते। ऐसा प्रतीत होता है कि तुलसीदास पहले **वाल्मीकि रामायण** से अधिक प्रभावित थे और अपनी बाद की रचनाओं में अन्य राम-कथा-साहित्य से भी। इसी तरह मिथिला की वाटिका मे राम और सीता के परस्पर दर्शन का उल्लेख **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **जानकी-मंगल** मे नहीं है, लेकिन वह **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** मे मिलता है। मिथिला में रावणदूत के आगमन का उल्लेख **रामाज्ञाप्रश्न** मे नहीं मिलता, लेकिन **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** में पाया जाता है। **रामाज्ञाप्रश्न, जानकी-मंगल** तथा **गीतावली** के अनुसार परशुराम तथा राम की भेंट बारात की वापसी मे होती है, किन्तु **रामचरितमानस** तथा **कवितावली** में परशुराम के मिथिला में आगमन का वर्णन किया गया है।

चित्रकूट में जनक के आगमन का वर्णन तथा सेतुबध के समय शिवप्रतिष्ठा का उल्लेख केवल **रामचरितमानस** में मिलते हैं, **ज्ञाप्रश्न** तथा **गीतावली** में नहीं।

सीतात्याग तथा लव-कुश-जन्म की कथा **रामाज्ञाप्रश्न** तथा **गीतावली** में दी गई है, जैसे **वाल्मीकि रामायण** में। **रामचरितमानस** में इसका उल्लेख नहीं मिलता।

गीतावली की समस्त रचना में कृष्ण-काव्य का प्रभाव अत्यंत स्पष्ट है।

इस कारण उत्तरकांड में राम सीता के दोलोत्सव, वसंतविहार आदि का वर्णन भी किया गया है। इस रचना में **वाल्मीकि रामायण** के गौडीय पाठ के अनुसार राम को शरण लेने के पूर्व विभीषण के अपने भाई कुबेर के पास जाने का वर्णन भी किया गया है।

अतः विषय निर्वाह मात्र के दृष्टिकोण से इन रचनाओं का क्रम इस प्रकार प्रतीत होता है: **रामाज्ञाप्रश्न, जानकीमंगल, गीतावली,[1] रामचरितमानस, कवितावली।**

२८४. हिंदी रामसाहित्य में **रामचरितमानस** सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण होने के कारण रामकथा के विकास के दृष्टिकोण से इसके कथानक की विशेषताओं का उल्लेख अपेक्षित है। आध्यात्मिक विचारों के दृष्टिकोण से इस पर **अध्यात्म-रामायण** का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा, लेकिन कथानक में भी **अध्यात्म रामायण** का प्रभाव स्पष्ट है। **अध्यात्म-रामायण** की भाँति **रामचरितमानस** शिवपार्वती के संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। **अध्यात्म -रामायण** की दार्शनिक व्याख्याएँ तथा भक्ति सम्बन्धी अंश (स्तोत्र आदि प्रायः सब के सब कुछ परिवर्त्तन सहित **रामचरितमानस** में भी मिलते हैं। अतर यह है कि **रामचरित मानस** मे शास्त्रीय प्रतिपादन को इतना स्थान नहीं दिया गया है। अतः **रामचरितमानस** का प्रधान आधार **अध्यात्म रामायण** सिद्ध होता है।

प्रस्तुत निबन्ध के दृष्टिकोण से **रामचरितमानस** के निम्नलिखत वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं :

(१) अवतारहेतु : जयविजय का कथा . जालधर की पत्नी वृन्दा का शाप; नारद-मोह, मनु-शतरूपा की तपस्या; प्रतापभानु की कथा। इन कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन १४ वे अध्याय में किया जायगा (दे० अ० ३४१-३४२)।

---

१. कालक्रम निर्धारित करने के लिए विषय-निर्वाह के अतिरिक्त शैली-वाहसाक्ष्य आदि का भी ध्यान रखना आवश्यक है। इस प्रकार के सर्वतोमुखी अध्ययन के पश्चात डा० माताप्रसाद गुप्त का विचार है कि गीतावली की रचना रामचरित मानस के बहुत बाद हुई थी।

(२) **अध्यात्म रामायण** के अनुसार राम का अपनी माता को अपना विराट रूप दिखलाना तथा उनकी बाललीला का कुछ वर्णन (दे० अध्यात्म रामायण १. ३. ४४-५३)।

(३) मिथिला की वाटिका में राम तथा सीता का परस्पर दर्शन, (दे० आगे अनु० ३६६)।

(४) राम के निर्वासन के लिए सरस्वती का अयोध्या भेजा जाना (दे० अध्यात्म रामायण २. १. ४४-४६)।

(५) केवट का वृत्तान्त : **अध्यात्म** तथा **आनन्द रामायण** दोनों में इसका उल्लेख अहल्योद्धार के अनन्तर हुआ है।

(६) चित्रकूट की यात्रा करते हुए राम की एक तापस के द्वारा वन्दना। श्री रामचन्द्र शुक्ल का अनुमान है कि इस ढग से कवि ने अपने को ही तापस रूप में पहुँचाया है[1]।

(७) भरत-राम-मिलाप के समय चित्रकूट में जनक का आगमन।

(८) माया-सीता का वृत्तान्त (दे० १६ वां अध्याय-सीताहरण)।

(९) सेतुबंध के समय शिवप्रतिष्ठा (दे० अध्यात्म रामायण ६-४)।

(१०) हनुमान की हिमालय-यात्रा के वर्णन में कालनेमि का तथा भरत से भेंट का वृत्तान्त (दोनों कथायें वाल्मीकिकृत रामायण के गौडीय पाठ में पाई जाती हैं)।

(११) रावण-होम की कथा (दे० अध्यात्म रामायण ६. १०)।

(१२) भुशुंडी, चरित। इसका आधार सम्भवतः **भुशुंडी रामायण** है (दे० आगे अनु० ३२२)।

(आ) अन्य हिंदी राम कथा साहित्य।

२८५. हिन्दी राम-कथा-साहित्य में गोस्वामी तुलसीदास का एक प्रकार से एकाधिकार है। तुलसी की प्रतिभा और काव्य-कला इतनी उत्कृष्ट

---

१. दे० हिन्दी-साहित्य का इतिहास, पृ० १४८।

प्रमाणित हुई कि उनके बाद किसी भी कवि का रामचरित सम्बधी रचना उनके मानस की समानता में प्रसिद्धि प्राप्त न कर सकी ..मानस के सामने कोई भी प्रबन्ध-काव्य आदर की दृष्टि से न देखा गया।[1] अतः अन्य कवियों के राम-काव्य का महत्व अपेक्षाकृत गौण है, इसका पूरा अध्ययन और विश्लेषण यहाँ अनावश्यक है।

२८६. **सूरसागर** के रामचरित में **वाल्मीकि रामायण** के क्रमानुसार कुछ घटनाओं को लेकर स्फुट पद पाये जाते हैं। इसमें केवट की कथा **अध्यात्म रामायण** की भाँति अहल्योद्धार के अनन्तर नहीं मिलती, वरन् घनवास के समय जैसे कि **रामचरितमानस** में। राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण के कुटी के चारों ओर रेखा खोचने का भी उल्लेख हुआ है[2]।

२८७. गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन केशवदास की **रामचंद्रिका** में भी कोई प्रबधात्मकता नहीं मिलती। कथानक के दृष्टिकोण से इसमे निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं,

(१) सीता-स्वयम्वर मे बाणासुर-रावण-सवाद, जो **प्रसन्नराघव** के आधार पर लिखा गया है।

(२) मिथिला मे परशुराम-राम भेंट।

(३) रावण-वध के पश्चात् अयोध्या मे लौटकर राम की विरक्ति तथा वसिष्ठ का समझाना (दे० २५ वाँ प्रकाश)। इस वृत्तान्त का आधार **योगवासिष्ठ** का राम-वैराग्य-वर्णन है।

(४) **महानाटक** के आधार पर अंगद के राम से वैर का उल्लेख। (दे० २६ वाँ प्रकाश)।

(५) **पद्मपुराण** तथा **जैमनीयअश्वमेध** के अनुसार सीता त्याग, लव-कुश का जन्म और राम-सेना से युद्ध (दे० आगे २० वाँ अध्याय)।

---

१. डा० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ० [illegible]। तुलसी के पश्चात् के रामसाहित्य का किंचित् निरूपण डा० रामकुमार के उपर्युक्त इतिहास मे मिलता है (पृ० ५३९-५५६) उसके तुलनात्मक अध्ययन की अपेक्षा है।

२. दे० सूरसागर : नागरी प्रचारिणी संस्करण ; दूसरा खड, नवम स्कध, पद ४६०-६१३

२८८. **रामचरितमानस** के बहुत से संस्करणों में प्रक्षेप मिलते हैं जिनमें से कथानक के दृष्टिकोण से निम्नलिखित वृत्तान्त उल्लेखनीय हैं :—

राम बालक तथा हनुमान की क्रीड़ा, सुलोचना की कथा, अहिरावण-वध तथा लव कुश कांड के अन्तर्गत सीतात्याग, लवकुश का जन्म तथा राम सेना से युद्ध।

अन्य आर्य भाषाओं में राम-कथा

उड़िया।

२८९. उड़िया साहित्य के सबसे प्रसिद्ध रामायण की रचना उत्कल-वाल्मीकि बलरामदास द्वारा १५ वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में अथवा १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई थी। इसके भिन्न भिन्न नाम प्रचलित हैं **जगन्मोहन रामायण** (रचयिता का दिया हुआ), **बलरामदास रामायण** और **दांडिरामायण** (छन्द के नाम पर)। इस रचना के सात कांडों में वाल्मीकि से कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया जाता है। अन्य अर्वाचीन रामायणों की भाँति यह शिव-पार्वती-सवाद के रूप में है।

२९०. **विलंका रामायण** की रचना १५ वीं शताब्दी में शारलादास द्वारा हुई थी। रचयिता का वास्तविक नाम सिद्धेश्वर परिड था, लेकिन अपना इष्टदेवी शरला चंडी के अनुसार उन्होंने अपना नाम शरलादास रखा था। इस रचना के पूर्व खंड में सहस्र-स्कंध-रावण वध का वर्णन किया गया है, तथा उत्तरखंड में लक्षस्कध-रावण-वध का (दे० आगे अनु० ५३२)।

२९१. विश्वनाथ खुंटिआ-कृत **विचित्ररामायण** में सीता-जन्म के विषय मे बेदवती-वृत्तान्त का एक नया रूप दिया गया है (दे० १४ वाँ अध्याय, सीता की जन्म-कथा)। यह रचना अपेक्षाकृत अर्वाचीन है।

मराठी

२९२. मराठी साहित्य के प्रचीनतम एकनाथ-कृत **भावार्थ रामायण** का अभी तक कोई संस्करण नहीं हुआ है। इसकी रचना १६ वीं शताब्दी में **वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म-रामायण** तथा **आनन्द रामायण** के आधार पर हुई थी। **भावार्थ रामायण** के अनुसार रावण सीता के

स्वयंवर में उपस्थित था तथा इसमें **आनन्द रामायण** के आधार पर ऐरावण तथा मैरावण की कथा भी मिलती है।[1]

एकनाथ के बाद १८ वी शताब्दी के दो कवियों ने राम कथा को लेकर काव्य की रचना की है श्रीधर तथा मोरोपत ने। श्रीधर की **राम विजय** नामक रचना बहुत लोकप्रिय है।

गुजराती

२९३. गुजराती साहित्य में राम कथा की अपेक्षा कृष्ण कथा को अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान मिल गया है। श्रीकृष्ण के चरित्र से सम्बन्धित **महाभारत** का अंश गुजरात के व्यावहारिक और कौतूहलप्रिय आत्मा को जितना खींच सका उतना **रामायण** खींच भी नहीं सका।[2]

कृष्ण-काव्य में प्रबन्धात्मकता का अभाव है। सभवतः इसके प्रभाव के कारण अधिकांश गुजराती राम-कथा-सबन्धी साहित्य भी आख्यान-शैली में लिखा गया है। उदाहरणार्थ : भालणकृत **रामविवाह** और **रामबालचरित** (१५ वीं शताब्दी), मत्रणा कर्मण कृत **सीताहरण** (१५ वीं श०) लावण्यसमयकृत **रावणमंदोरीसंवाद** (१६ वी श०) प्रेमानन्द कृत **रणयज्ञ** (१७ वी श०) तथा हरिदास कृत **सीताविरह** (१७ वीं श०) आदि।

भालण के पुत्रों उद्धव और विष्णुदास ने १६ वीं शताब्दी में समस्त रामायण की रचना की थी लेकिन वह अधिक प्रचलित नहीं हो सकी है; आजकल गुजरात में १६ वी शताब्दी का गिरधरदास-कृत **रामायण** सबसे श्रेष्ठ माना जाता है और सबसे लोकप्रिय भी है।

गुजरात प्रान्त में प्रचलित राम-कथा का निरूपण नर्मदकृत **रामायण सार** (१६ वीं श०) में मिलता है। इस रचना से पता चलता है कि **वाल्मीकि रामायण** तथा **अध्यात्मरामायण** के अतिरिक्त अन्य रचनाओं का भी गुजराती राम-साहित्य पर प्रभाव पड़ा, यद्यपि इन दोनों का प्रभाव प्रधान है। **रामायणसार** में सीतात्याग के दो कारण बतलाये जाते हैं—धोबी-वृत्तान्त तथा रावण-चित्र की कथा।

आसामी

२९४. गुजराती साहित्य की भाँति आसामी साहित्य में भी राम की

---

१. दे० महाराष्ट्रीय : श्री रामायण समालोचना, पृ० ४३६।

२. दे० प्रह्लाद चन्द्रशेखर दीवानजी : गुजरात में रामायण (कल्याण का रामायणांक पृ० ३९८)।

अपेक्षा कृष्ण को अधिक महत्व दिया गया है। फिर भी **रामायण** की उपेक्षा नहीं की गई है। माधव कंदलि ने १४ वीं शताब्दी में **वाल्मीकि रामायण** का आसामी पद्य में भावानुवाद किया था, जिसका बालकांड तथा उत्तरकांड अप्राप्त है। इसके अतिरिक्त उस समय के दुर्गावर नामक कवि ने **गीतिरामायण** की रचना की थी, जिसमें **रामायण** की कथा का गीतों में वर्णन किया गया है। आसामी साहित्यिक इतिहास के वैष्णव काल (१४५०-१६५० ई०) के सर्वोत्तम कवि शंकर देव कृष्ण भक्त थे। उनकी रचनाओं का आधार प्रायः **भागवत पुराण** है फिर भी उन्होंने **रामायण** के **उत्तरकांड** का भी पद्य में अनुवाद किया था तथा **राम विजय** नामक नाटक लिखा था। १६ वीं शताब्दी की निम्नलिखित अन्य राम-सम्बन्धी रचनाओं का उल्लेख मिलता है,

शंकरदेव के प्रसिद्ध शिष्य माधव देव का **रामायण आदिकांड**।
अनन्त आता कृत **रामायण** अथवा **रामकीर्तन**।
रघुनाथ कृत **कथा रामायण** जो गद्य में है[1]।

---

१. दे० वी. के बरुआ : असमीज़ लिट्रेचर।

तेरहवां अध्याय

विदेश में राम-कथा

२६५. पिछले तीन अध्यायों से भारतीय संस्कृति में रामकथा की व्यापकता का अनुमान किया जा सकता है। न केवल भारत में किन्तु निकटवर्त्ती देशों की संस्कृति तथा साहित्य में भी रामकथा एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी है, यह प्रस्तुत अध्याय से स्पष्ट होगा। रामकथा की एक धारा उत्तर की ओर फैल गई, इसका प्रमाण हमें **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायणों** में मिलता है। यह सामग्री अपेक्षाकृत प्राचीन है अतः इसका निरूपण प्रथम परिच्छेद में किया गया है। एक दूसरी धारा भारत से हिंदेशिया तक पहुँच गई थी और वहां हिन्द-चीन और इसके पश्चात् श्याम तक तथा श्याम से ब्रह्मदेश तक फैल गई थी। इसका वर्णन द्वितीय तथा तृतीय परिच्छेदों में किया गया है। अध्याय के अन्त मे पाश्चात्य वृत्तान्तों का भी किंचित् निरूपण किया जायगा।

क—तिब्बत-खोतान

तिब्बती रामायण

२६६. बौद्धरामकथा के निरूपण में **अनामकं जातकम्** तथा **दशरथ कथानम्** का उल्लेख हुआ है, जिनका क्रमशः तीसरी और पांचवीं शताब्दी ई० में चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था (दे० ऊपर अनु० ४२-४६), अतः रामकथा प्राचीन काल से उत्तर की ओर फैलने लगी थी। तिब्बती भाषा में भी अनेक हस्तलिपियां प्राप्त हैं, जिनमें रावण चरित से लेकर सीता-त्याग और राम-सीता-सम्मिलन तक की समस्त कथा मिलती है, जो सम्भवतः आठवीं अथवा नवीं शताब्दी की हो[1]। प्रारम्भ में रावणचरित का कुछ वर्णन किया गया है, अनन्तर विष्णु दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेने की प्रतिज्ञा

---

१. दे० एफ० डब्लू थोमस : द रामायण स्टोरी इन तिबतन, इंडिन स्टडिस पृ० १९३। एम्० लालू : जूर्नल आजियाटिक, १९३६, पृ० ५६०।

करते हैं। दशरथ की केवल दो पत्नियां हैं; विष्णु कनिष्ठा के गर्भ से जन्म लेते हैं और रामन कहलाते हैं, तीन दिन बाद विष्णु के पुत्र ज्येष्ठा से जन्म लेते हैं और उनका नाम लक्ष्मण रखा जाता है।

गुणभद्र के **उत्तरापुराण** की भांति इसमें भी सीता रावण की पुत्री मानी जाती है। दशग्रीव की पटरानी के एक कन्या उत्पन्न होती है जिसके जन्मपत्र में लिखा है कि वह अपने पिता का नाश करेगी। फलस्वरूप वह समुद्र में फेंकी जाती है और बचने पर भारत के कृषकों द्वारा पाली जाती है; इनका नाम लीलावती है। (लेकिन अन्य हस्तलिपियों में 'जीता' नाम का भी उल्लेख है)।

दो पुत्रों में से किसे राज्य दिया जाय, अपने पिता की इस प्रकार की किंकर्तव्यविमूढ़ता देखकर रामन स्वेच्छा से किसी आश्रम में तपस्या करने जाते हैं, और लक्ष्मण को राज्य दिलवाते हैं। कृषकों के अनुरोध से रामन तपस्या छोड़कर लीलावती (सीता) से विवाह करते हैं, और इसके बाद राज्य शासन ग्रहण करते हैं।

गुणभद्र में सीता का हरण राजधानी के पास के अशोकवन से होता है। **तिब्बती रामायण** में भी ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि इसका वर्णन वनवास के बाद मिलता है। इस वर्णन में विशेषता यह है कि रावण सीता का स्पर्श नहीं करता तथा जटायु को रक्त से सने पत्थर खिलाकर मार डालता है (दे० आगे अनु० ४४४ और ४५३)।

अनन्तर सीता की खोज, वानरों से मैत्री, हनुमान का प्रेषण आदि रावणवध तक का वर्णन मिलता है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती हैं:—बालि-सुग्रीव-द्वंद में माला के स्थान पर सुग्रीव की पुच्छ में दर्पण बांधा जाता है, हनुमान आदि एक दूसरे की पुच्छ पकड़ कर स्वयं-की गुफा में प्रवेश करते हैं; रावण का मर्मस्थान उसका अंगूठा बताया गया है।

उत्तरकांड से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री (धोबी के कारण सीता त्याग, कुश की वाल्मीकि द्वारा सृष्टि तथा अन्त में राम सीता सम्मिलन) **कथा-सरित्सागर** के अनुसार है, अन्तर यह है कि लव तथा कुश का जन्म सीता-त्याग के पूर्व होता है (दे० आगे २० वां अध्याय)।

तिब्बती रामायण गुणभद्र के **उत्तरपुराण** तथा **वृहत्कथा** से प्रभावित प्रतीत होता है। गुणाढ्य की रचना अप्राप्य है लेकिन इसकी संक्षिप्त कथा से जो **कथासरित्सागर** में सुरक्षित है, पता चलता है कि **तिब्बती रामायण** का उत्तररामचरित इस पर निर्भर है।

खोतानी रामायण

२६७. खोतान (पूर्वी तुर्किस्तान) की राम-कथा, जो नवी शताब्दी ई० की मानी जाती है, **तिब्बती रामायण** से बहुत कुछ मिलती जुलती है। फिर भी **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायण** एक दूसरे का एक मात्र आधार नहीं हो सकते हैं, क्योंकि एक ओर **तिब्बती रामायण** का उत्तररामचरित **खोतानी रामायण** में नहीं पाया जाता है और दूसरी ओर **खोतानी रामायण** में अनेक वृत्तान्त मिलते हैं, जिनका **तिब्बती रामायण** में अभाव है[1]।

तिब्बती तथा **खोतानी रामायण** की निम्नलिखित बातों में समानता पाई जाती है।

राम तथा लक्ष्मण, केवल दो भाइयों का उल्लेख।

सीता (दशग्रीव की पुत्री) की जन्म कथा।

वनवास के समय सीता का विवाह।

रावण का जटायु को रक्त से सने पत्थर खिलाने का वृत्तात।

द्वन्दयुद्ध के समय विजेता वानर की पुच्छ में दर्पण बांधे जाने की कथा।

रावण के मर्म स्थान का उल्लेख।

खोतानी रामायण की निम्नलिखित विशेषताएं **तिब्बती रामायण** में नहीं मिलतीं :

(१) बौद्धप्रभाव : प्रारम्भ में एक बौद्ध प्रस्तावना दी गई है, जिसमें शाक्यमुनि के बौद्ध धर्म का प्रचार करने का उल्लेख है। जातकों की शैली के अनुसार महात्मा बुद्ध वक्ता हैं तथा अन्त में रामकथा तथा बौद्ध इतिहास के पात्रों की अभिन्नता प्रगट करते हैं। राम-कथा के समय बुद्ध राम थे तथा

१. दे० बुलाटन स्कूल आव ओरियेन्टल स्टडिस भाग १०, पृ० ५५९।

मैत्रेय लक्ष्मण; अत. **खोतानी रामायण** में अवतारवाद का उल्लेख नहीं हुआ है। बौद्ध प्रभाव के कारण राम की चिकित्सा के लिए बौद्ध वैद्य जीवक को (जो जातकों में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं) बुलाया जाता है, तथा आहत रावण का वध नहीं किया जाता है।

(२) रावणचरित के बाद अर्जुन कार्त्तवीर्य सहस्रबाहु तथा परशुराम की कथा मिलती है, लेकिन इसमें राम दाशरथी तथा परशुराम की कथा भी मिलाई गई है। दशरथ का पुत्र सहस्रबाहु परशुराम के पिता की धेनु चुराते हैं, जिसके कारण परशुराम सहस्रबाहु को मारते हैं। सहस्रबाहु के दो पुत्र राम और लक्ष्मण होते हैं; उनकी माता दोनों को बारह वर्ष तक पृथ्वी में छिपाती है और इसके बाद राम परशुराम का वध करते हैं।

(३) राम और लक्ष्मण दोनों वन में वास करते हैं (निर्वासन का कारण नहीं दिया गया है) तथा दोनों सीता से विवाह करते हैं। यह उन देशों के बहुपतित्व की प्रथा का प्रभाव है।

(४) सीताहरण के वृत्तांत में सीता के रक्षणार्थ रेखाएं खींचे जाने का उल्लेख है।

(५) सेतुबन्ध के समय **काश्मीरी रामायण** से मिलता जुलता एक वृत्तान्त मिलता है, जिसमें नल के फेंके हुए पत्थरों के न डूबने का कारण बताया गया है।

(६) अन्त में सीता के विषय में लोकापवाद तथा सीता के भूमिप्रवेश का निर्देश मिलता है।

इन विशेषताओं के कारण **तिब्बती रामायण खोतानी रामायण** का आधार नहीं हो सकता है। **महानाटक** की रामकथा में भी सीता के रक्षणार्थ रेखाएँ खींचे जाने का तथा रावण के वैद्य सुषेण के बुलाए जाने का उल्लेख हुआ है तथा **काश्मीरी रामायण** में भी नल की कथा मिलती है। अतः **खोतानी रामायण** के अधिकांश वाल्मीकि से भिन्न वृत्तांत भारत में भी पाये जाते हैं। यह चतुर्थ भाग के विश्लेषण से और स्पष्ट होगा।

ख—हिन्देशिया

२६८. हिन्देशिया में रामकथा प्राचीन काल से विदित है, इसका

प्रमाण नवीं शताब्दी के एक शिव-मंदिर की पाषाण-चित्रलिपि से मिलता है। बाद में जावा तथा मलय में एक विस्तृत रामसाहित्य की रचना की गई है, जिसमें राम-कथा के दो भिन्न रूप मिलते हैं : (१) जावा के प्राचीन रामायण का रूप जो वाल्मीकीय कथा के अधिक निकट है तथा (२) अर्वाचीन रामकथा जिसमें वाल्मीकि से बहुत भिन्नता पाई जाती है। इन दोनों रूपों का प्रस्तुत परिच्छेद में अलग वर्णन किया जाता है। इनकी सामान्य विशेषता यह है कि इसमें रामभक्ति का भाव नहीं आया है। जावा के प्राचीनतम रामायण के रचयिता शैव थे तथा जिन दो मंदिरों में राम-कथा की विस्तृत चित्र-लिपि हैं वे भी दोनों शिव मंदिर हैं।

हिन्देशिया की प्राचीन रामकथा

२६६. हिन्देशिया की प्राचीनतम राम सम्बन्धी साहित्यिक रचना योगीश्वर-कृत **रामायण काकाविन** है, जो बारहवीं शताब्दी का माना जाता है। इसके डच अनुवाद[1] से पता चलता है कि योगीश्वर प्रधानतया **भट्टिकाव्य** से प्रभावित हुए थे[2]। ग्यारहवें अध्याय में **भट्टिकाव्य** के कथानक की जितनी विशेषताओं का उल्लेख हुआ है वे सब **रामायण काकाविन** में भी पाई जाती हैं। प्रारम्भिक बारह सर्गों का विभाजन **भट्टिकाव्य** के अनुसार हुआ है। अन्तर यह है कि **भट्टिकाव्य** का नवां अध्याय **रामायण काकाविन** के नवें तथा दसवें अध्याय में विभक्त किया गया है। युद्ध के वर्णन में योगीश्वर अधिक विस्तार में जाते हैं जिससे **भट्टिकाव्य** के २२ सर्गों की सामग्री २६ सर्गों में दी गई है। दोनों रचनाओं में युद्धकांड की कथा तक का वर्णन किया गया है। फिर भी **भट्टिकाव्य** योगीश्वर का एक मात्र आधार नहीं रहा है। **अभिषेक नाटक** तथा **महानाटक** के वृत्तान्त के अनुसार रावण सीता को निरुत्साहित करने के लिये राम तथा लक्ष्मण दोनों का मायामय शीश दिखलाता है। गुणभद्र में एक पत्र का उल्लेख हुआ है जिसे राम हनुमान द्वारा सीता के पास भेज देते हैं। **रामायण काकाविन** में सीता अभिज्ञान स्वरूप चूड़ामणि के अतिरिक्त एक पत्र भी

---

१. दे० डच ओरियेन्टल जर्नल, भाग ७३, ९४।

२. श्री मनमोहन घोष ने इसकी विशेषता की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया है। दे० जर्नल आव ग्रेटर इंडिया सोसाइटी भाग ३, पृ० ११३।

हनुमान को देती हैं। फिर भी पत्र की कल्पना इतनी स्वाभाविक है कि इसके कारण गुणभद्र का प्रभाव मानना अनावश्यक है। **काकाविन** की दो अन्य विशेषताएं अन्यत्र नहीं मिलतीं। शबरी राम से अपनी कथा सुनाते हुए कहती है कि विष्णु ने वराहावतार में मेरी माला खाई थी और मर गये थे, तब मैंने उनकी लाश खाई थी और फलस्वरूप मेरा मुख काला बन गया है। अनन्तर वह राम से अनुरोध करती है कि वह उसका मुख पोंछ कर उसे शुद्ध करें। इसके अतिरिक्त इन्द्रजित की सात पत्नियों का उल्लेख है, जो अपने पति के साथ युद्ध करती हैं और रणभूमि में मारी जाती हैं।

३००. जावा में एक प्राचीन **उत्तरकांड** भी मिलता है, जिसमें वाल्मीकीय उत्तरकांड की कथा का गद्य में वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त एक **चरित रामायण**[1] (अथवा कावी जानकी) भी पाया जाता है जिसके १०१ श्लोकों में **रामायण** के प्रथम छः कांडों की कथा के साथ व्याकरण के उदाहरण भी दिए गए हैं। अतः इस रचना पर भी **भट्टिकाव्य** का प्रभाव स्पष्ट है।

३०१. जावा का आधुनिक **सेरत राम** भी **रामायण काकाविन** की भांति वाल्मीकीय कथा से बहुत कुछ मिलता जुलता है। प्रारम्भ में रावण-चरित का वर्णन दिया गया है, जो **रामायण काकाविन** में नहीं पाया जाता है।

३०२. मध्य जावा के परमबनम् (परमब्रह्म) नामक स्थान पर नवीं शताब्दी ई० का एक शिव-मंदिर है। इस मंदिर के चारो ओर की ऊँची दीवारों पर **रामायण** की समस्त घटनाओं का पाषाण चित्र-लिपि में चित्रण किया गया है। इसमें जिस राम-कथा का वर्णन किया गया है वह बहुत कुछ वाल्मीकीय कथा से मिलती जुलती है। अनेक गौण बातों में अवश्य **रामायण काकाविन** से भिन्नता पाई जाती है, लेकिन हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा की अधिकांश विशेषताओं का इसमें निर्देश नहीं मिलता। रामायण से जो किंचित् विभिन्नता इसमें है इसका प्रायः भारत में भी उल्लेख पाया जाता है। उदाहरणार्थ :—

---

१. दे० संस्कृत टेक्स्टस फ्राम बाली पृ० ८९। गायकवाड ओरियेन्टल सीरिज।

जटायु का राम को सीता की अंगूठी देने का वृत्तान्त **महानाटक** में है।

मछलियों के सेतु नष्ट करने की कथा **सेतुबंध** तथा **बालरामायण** में भी पाई जाती हैं।

दशरथ की पुत्री (शान्ता) का उल्लेख **रामायण** के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ, भवभूति के **उत्तररामचरित** आदि में किया गया है।

लेकिन लक्ष्मण के तरकश में सुग्रीव के आंसुओं का पानी जमा होना तथा इस तरह सुग्रीव का पता लगाया जाना यह वृत्तान्त किसी प्राचीन भारतीय रचना में नहीं मिलता। उपर्युक्त अधिकांश विशेषताएं हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा में आ गई हैं।

३०३. पूर्व जावा के पनतरन नामक स्थान के चौदहवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के एक शिव मंदिर में भी रामकथा चित्र पाषाण-लिपि में अंकित की गई है। यह कथा प्राचीन **रामायण काकाविन** के कथानक से अभिन्न है, जिससे पता चलता है कि यद्यपि बाद में अर्वाचीन राम-कथा अधिक लोकप्रिय हुई फिर भी योगीश्वर की रचना का भी कुछ महत्त्व बना रहा।

हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा

सिंहावलोकन

३०४. **रामायण काकाविन** की प्राचीन परम्परा को छोड़कर हिन्देशिया में रामकथा का एक अर्वाचीन रूप भी प्रचलित है, जो अधिक लोकप्रिय है और जिसके आधार पर आधुनिक समय तक रामकथा-सम्बन्धी नाटकों का अभिनय होता है[1]। रामकथा का यह रूप हिन्देशिया से हिन्दचीन, श्याम ब्रह्मदेश तक फैल गया है।

हिन्देशिया की अर्वाचीन रामकथा के विस्तृत साहित्य की [illegible] का परिचय निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :

---

१. प्रस्तुत परिच्छेद में मुख्यतया दो रचनाओं से सहायता मिली है।

(१) टन्तु स्तुटरहाइम : राम लेगेन्डन उन्ड रामरेलिफ्स इन इंडोनेजिथन।

(२) ए० चार्मानिम : डी राम सागे बाई डेन मलाइयन।

(अ) मलयन अर्वाचीन रामकथा।

हिकायत सेरी राम के तीन साहित्यक पाठ[1] :

(१) गेरडा वान ऐसिंगा का संस्करण (१८४३)

(२) शेलाबेर का संस्करण।

(३) राफल्स मलय हस्तलिपि का पाठ।

इसके अतिरिक्त **सेरी राम** पर निर्भर अनेक कथाएं जनसाधारण में प्रचलित हैं। उदाहरणार्थः—

(१) **हिकायत महाराज रावण**[2]

(२) **श्री राम**[3]

(३) **राम कथा का पातानी पाठ**[4]

(क) जावा की अर्वाचीन रामकथा

(१) **रामकेलिंग**। इस रचना में मलयन **सेरी राम** से कोई महत्वपूर्ण वैभिन्नता नहीं मिलती।

(२) **सेरतकांड**

इसके अतिरिक्त जावा में और बहुत से **कांड** नामक कथाएं मिलती हैं लेकिन डा० स्टुटरहाइम **सेरत कांड** जावा की अर्वाचीन रामकथा का वास्तविक और अधिक प्रचलित रूप मानते हैं।

---

१. स्टुटरहाइम की रचना में (१) और (२) का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है। (३) का परिचय जर्नल एशियाटिक सोसाइटी १९०४ (पृ० ६६) में मिलता है। इसका कथानक (१) और (२) से बहुत भिन्न नहीं है। विशेषता यह है कि राम के आज्ञानुसार लक्ष्मण शूर्पणखा से विवाह करते हैं।

२. दे० ज० रा० ए० सो०, मलयन ब्रांच, भाग ११, इसका कथानक सेरी राम से बहुत मिलता जुलता है, विशेषता यह है कि इसमें रावण की एक पुत्री सीता होती हुई सीता के वक्षस्थल पर रावण का एक चित्र रख देती है और इसके कारण राम सीता को त्याग देते हैं (दे० आगे अनु० ५६०)।

३. दे० ज० रा० ए० सो० स्ट्रेट्स ब्रांच, १८८६-१८९७। इसमें हनुमान के जन्म से लेकर लंका में राम की विजय तक की कथा हिकायत सेरी राम के आधार पर दी गई है।

४. दे० रायल बतेवियन सोसाइटी का जयन्ती-ग्रन्थ, बतेविया, १९२९, पृ० ४२३।

इस साहित्य के रचनाकाल का ठीक निर्णय नहीं हुआ है। अधिकांश विशेषज्ञों का मत है कि इसकी रचना सोलहवीं शताब्दी में हुई थी। फिर भी सम्भव है इसके पहले **सेरी राम** आदि की कुछ सामग्री प्रचलित हुई हो। **सेरी राम** की प्राचीनतम हस्तलिपि १६३३ की है।

हिंदेशिया की अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य के इस सिंहावलोकन के पश्चात् मुख्य रचनाओं का परिचय दिया जाता है।

हिकायत सेरी राम

३०५. इस विस्तृत रचना में रावण-चरित से लेकर सीतात्याग के बाद राम-सीता-सम्मिलन तक की कथा वर्णित है। निबन्ध के अन्तिम भाग में वाल्मीकि से प्रधान भिन्नताओं का उल्लेख तथा तुलनात्मक अध्ययन किया जायगा। यहाँ सारी रचना का ढाँचा तथा प्रमुख विशेषताएं प्रस्तुत करनी हैं। **सेरी राम** का कथानक निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है।

रावण चरित।

दुराचार के कारण रावण अपने पिता द्वारा निर्वासित किया जाता है। रावण-निर्वासन के इस वर्णन में सिंहलद्वीप के विजय नामक प्रथम राजा की कथा का मिश्रण हुआ है (विजय की कथा **महावंश** के छठे सर्ग में मिलती है)। सिंहलद्वीप में पहुँच कर रावण तपस्या करके (नबी आदम के अनुरोध से) अल्लाह से चार लोकों में एक राज्य का अधिकार प्राप्त करता है। प्रत्येक लोक की किसी राजकुमारी से विवाह करके रावण अनेक पुत्रों को उत्पन्न करता है, जो बाद में राजा बन जाते हैं :

इन्द्रजित—देवलोक के राजा
महिरावण—पाताल के राजा
गंगा महासूरी—नागलोक के राजा

इसके बाद रावण पृथ्वी पर लौट कर लंकापुरी बनाता है और इसमें अपने भाइयों को कुम्भकर्ण, विभीषण, तथा शूर्पणखा के पति बेगा सिंह को क्रमशः सेनापति, ज्योतिषी तथा प्रधान गुप्तचर के पद पर नियुक्त करता है।

राम का जन्म

दशरथ के मंदुदरी तथा बलियादरी के साथ विवाह के वर्णन के बाद

उनके पुत्रेष्टि यज्ञ का उल्लेख है, जिसमें एक काक बलियादरी का पायस चुराकर उसे लंका ले जाता है (दे० अनु० ३३४)। अनन्तर अधमुनि-पुत्र-वध और (राम, लक्ष्मण, वर्दन, चित्रदन) चार पुत्रों तथा (किकुवी नामक) एक पुत्री का जन्म वर्णित है।

सीता का जन्म और विवाह

मंदुदरी के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रावण उसे दशरथ से मांगता है तथा एक माया-मंदुदरी को लंका ले जाता है, जिसके गर्भ से सीता उत्पन्न होती है (दे० आगे अनु ३८६)। अशुभ जन्मपत्र के कारण सीता समुद्र में फेकी जाती है तथा महारेसि (महर्षि) कलि द्वारा पाली जाती है। महारेसि कलि के यहाँ सीता के स्वयंवर में रावण और अन्य राजाओं के असफल प्रयत्नों के पश्चात् राम परीक्षा में सफल होकर सीता से विवाह करते हैं (दे० आगे अनु० ३६४)।

राम का वनवास

बलियादरी के अनुरोध से दशरथ, उसके पुत्र वर्दन (भरत) को राज्य देने का निश्चय करते हैं। राजा के सोते समय बलियादरी राम को बुलाकर दशरथ के इस निश्चय का समाचार सुनाती है। यह सुनकर राम प्रसन्न होकर ऋषि बनने के लिए सीता और लक्ष्मण के साथ वन को प्रस्थान करते हैं। वन में पहुँच कर और कुटी बनाकर राम कुश-घास से सात लड़कियों तथा पाँच लड़को की सृष्टि करते हैं। ये नौकर बन कर घर का काम करते हैं, जिससे राम, लक्ष्मण, सीता निश्चिन्त हो कर साधना कर सकते हैं।

रावण द्वारा शूर्पणखा के पति बेर्गा सिंह के वध के बाद उसका पुत्र देर्सा सिंह अलौकिक खंग सिद्ध करने के लिए तपस्या करने जाता है। अनन्तर वालि-रावण युद्ध और अगद का जन्म वर्णित है। इसके बाद अंजनी, वालि, सुग्रीव की जन्मकथा (तीनों गौतम की पत्नी के संतान हैं) व हनुमान की जन्मकथा का वर्णन किया गया है। इसके अनुसार हनुमान राम के वीर्य से उत्पन्न हुए है (दे० आगे अनु० ५४६)।

सीता का हरण और खोज

किसी दिन लक्ष्मण तपस्या करते हुए शूर्पणखा के पुत्र देर्सा सिंह

का सयोग से वध करते हैं (दे० २० आगे अनु० ५२३)। बाद में शूर्पणखा अपने पुत्र से मिलने आती है और लक्ष्मण द्वारा विरूपित होकर अपने भाई रावण के पास जाती है।

शेष कथानक बहुत कुछ वाल्मीकि के क्रम के अनुसार है।

युद्ध

युद्धकांड की सामग्री में वाल्मीकि से कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया जाता है। बगाली रामायण की भस्मलोचन की कथा तथा महिरावण की कथा दोनों यहाँ भी किंचित् परिवर्त्तन सहित दी गई हैं। इन्द्रजित् की पत्नी के सती बनने का तथा रावण के मर्मस्थान (दाहिने कान के पीछे उसका एक छोटा ग्यारहवाँ सिर) का भी उल्लेख किया गया है। युद्ध के बाद आहत रावण का शरीर सेरन्दीब पर्वत के तल में पड़ा रहता है और सारी सेना उसको देखने जाती है। अयोध्या में विभीषण (जो राम के मन्त्री बन जाते हैं) राम की बहन किकुवी देवी से विवाह करते हैं।

सीता-त्याग तथा राम-सीता सम्मिलन

इस अन्तिम भाग में रावण के चित्र के कारण सीता-त्याग का वर्णन मिलता है (दे० आगे अनु ५६०)। अनन्तर लव के जन्म तथा महर्षि कलि द्वारा कुश की सृष्टि की कथा दी गई है। कुश-लव के लक्ष्मण से युद्ध के बाद राम-सीता-सम्मिलन वर्णित है। अत में कुश और लव तथा वानर-सेना के अनेक सेनापतियों के राक्षसियों से विवाह करने का उल्लेख किया गया है।

पातानी राम-कथा

३०६. **पातानी रामकथा** में **सेरी राम** के अनेक पात्रों का महासेकुल नामक तपस्वी में एकीकरण हुआ है। प्रारम्भ में उनकी पत्नी की चार सन्तानों का वर्णन है : एक पुत्री, बालि, सुग्रीव और बिलो [illegible] अंश **सेरी राम** के अंजनी-बालि-सुग्रीव की जन्मकथा के आधार पर लिखा गया है)।

दूसरे भाग में महासिकुल को दत्तक पुत्री मंदुदकी की कथा दी गई है।

मंदुदकी रावण से विवाह करती है और उसके गर्भ से सीता का जन्म होता है। सीता के त्यक्त किये जाने पर महासिकुल उसे पुत्री-स्वरूप ग्रहण करते हैं। उनका एक और सेरावी नामक (राम) दत्तक पुत्र है जिसको महासिकुल सीता पर अनुरक्त होने के कारण घर से निकालते हैं।

अनन्तर सीता के स्वयवर का वर्णन दिया गया है जिसमे रावण भी आया था। शेष कथानक **सेरीराम** के अनुसार है। लेकिन इसमे केवल रावण-वध तक का वर्णन किया गया है।

जावा का सेरत कांड

३०७. **सेरतकांड** का राम-कथा **सेरी राम** से बहुत भिन्न नहीं है। इसमें विशेषता यह है कि इसकी विस्तृत भूमिका मे नबी आदम की कथा के बाद जावा के प्राचीन राजाओं की वशावली के वर्णन के अन्तर्गत देवताओं की अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती हैं।

अनन्तर रावण-चरित का वर्णन किया गया है, जिसमे वाल्मीकि उत्तरकांड का प्रभाव स्पष्ट है। क्रमानुसार निम्नलिखित विषय पाए जाते हैं—राक्षसवशावली के बाद रावण का जन्म, निर्वासन (सेरी राम के अनुसार), तप, वर प्राप्ति (सेरी राम के अनुसार) तथा वैश्रवण पर विजय। अपने पिता की पराजय के फलस्वरूप विल्मनरंज (विमान), वैश्रवण का पुत्र, रावण का वाहन बन जाता है।

अनन्तर रावण के विष्णु पर विजय प्राप्त करने तथा विष्णु के अनेक अवतारों से (परविजय, कार्तवीर्य आदि) युद्ध करने का वर्णन किया गया है। रामावतार का वर्णन इस प्रकार है। विष्णु, वासुकी तथा श्री अवतार लेने के उद्देश्य से पृथ्वी की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग में रावण उनसे युद्ध करता है; विष्णु तथा वासुकी भागकर दशरथ के पुत्रों के रूप में प्रकट होते हैं। रावण से डरकर श्री अपने को एक अडे में बदल देती है। रावण इसे खाता है और फलस्वरूप श्री मदोदरी के गर्भ से जन्म लेती है।

शेष कथानक बहुत कुछ **सेरी राम** की कथा से मिलता जुलता है। सीतात्याग (रावण-चित्र के कारण) के पश्चात् सीता के केवल एक

पुत्र बुतलव का उल्लेख है, जो लक्ष्मण आदि से युद्ध करता है। अनन्तर राम-सीता का सम्मिलन होता है। लव को राज्यभार सौंपकर राम (सीता लक्ष्मण आदि के साथ) तपस्या करने जाते हैं। अत में एक अनल नामक वानर अपने को अग्नि में बदल देता है और इसमें प्रवेश कर राम, सीता, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, अंगद आदि सब भस्मीभूत हो जाते हैं। हनुमान को आहत रावण पर पहरा देने का कार्य दिया गया था। अतः वह दूसरों के साथ अग्नि में प्रवेश नहीं करते।

ग—हिन्दचीन, श्याम, ब्रह्मदेश

हिन्दचीन

३०८. इतिहासज्ञों का अनुमान है कि पहली शताब्दी ई० से लेकर भारतीय व्यापारी अपने यहाँ की संस्कृति का प्रचार हिंदचीन में करने लगे थे। फलस्वरूप चम्पा राज्य की स्थापना हुई थी जिसके सातवीं शताब्दी के शिला-लेखों से पता चलता है कि **वाल्मीकि रामायण** का वहाँ पर्याप्त प्रचार हुआ होगा। राजा प्रकाशधर्म (६५३-६७८) के समय के एक वाल्मीकि मंदिर में वाल्मीकि की एक मूर्ति मिली है। इस मंदिर के एक शिलालेख में श्लोकोत्पत्ति तथा वाल्मीकि के विष्णु-अवतार होने का उल्लेख किया गया है[1] :—

यस्य शोकात् समुत्पन्नं श्लोकं ब्रह्मामिपूज(ति)
विष्णोः पुंसः पुराणस्य मानुषस्यात्मरूपिणं ॥

उस समय का कोई साहित्य सुरक्षित नहीं है। अनाम में अठारहवीं शताब्दी की एक संक्षिप्त रामकथा का प्रचार था, जिसका कथानक **वाल्मीकि रामायण** से बहुत भिन्न नहीं है। अन्तर यह है कि दशानन का राज्य अनाम के दक्षिण भाग में तथा दशरथ का राज्य अनाम के उत्तरीय भाग में माना जाता है और रावण सेना सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण कर सीता को हर लेता है[2]।

छठीं शताब्दी ई० में एक सामन्त ने चम्पा के राजा के विरुद्ध

---

१. दे० बुलटिन एकोल फ्रासेस एक्सट्रम ओरियन, भाग २८, पृ० १४७। लर्नल ओरियेन्टल रिसर्च, भाग ६, पृ० ११७।

२. दे० बुलटिन एकोल फ्रासेस, एक्सट्रेम ओरियन, भाग ५, पृ० १३८।

विद्रोह कर कम्बोदिया (ख्मेर) में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया था [1]। वहाँ सैकड़ों मंदिरों के खडहर मिलते हैं, जिनका काल नवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच का माना जाता है। प्राचीन राजधानी अंगकोरवाट के एक विशाल मंदिर में **रामायण,महाभारत** तथा **हरिवंश** की कथाओं को लेकर बहुत से पाषाण-चित्र अंकित किए गए हैं, जिनपर जावा की कला का प्रभाव स्पष्ट है। इस मंदिर का समय ११वीं – १२वीं श०ई० है।

३०६. ख्मेर भाषा के रामायण, **रेआम केर** (रामकीर्ति) का रचना काल अज्ञात है। यद्यपि इस पर हिन्देशिया की रामकथा का प्रभाव पड़ा है,[2] फिर भी **रेआम केर सेरी राम** की अपेक्षा वाल्मीकि के कथानक के अधिक निकट है। प्रारम्भ मे रावणचरित तथा रावण का दशरथ की पत्नी मंदुदरी को मांगने का वर्णन नहीं किया गया है और रावण की सीता-स्वयम्वर मे उपस्थिति का भी उल्लेख नहीं है।

सेरी राम में कैकेयी नाम का कोई उल्लेख नहीं है तथा राम स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करते हैं। **रेआम केर** के अनुसार कैकेसी (कैकेयी) के अनुरोध के कारण राम को निर्वासित किया गया है। **सेरी राम** में लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र के वध का वृत्तान्त मिलता है, जिसका उल्लेख **रेआम केर** में नहीं है। **ख्मेर रामायण** में सीता जनक की दत्तक पुत्री मानी जाती हैं, तथा सीता राम द्वारा त्यागी जाने पर वाल्मीकि के आश्रम मे निवास करती हैं। **सेरी राम** में सीता महारेसि कल की दत्तक पुत्री हैं तथा त्यक्त किए जाने पर उनके यहाँ रहती हैं।

रेआम केर के कथानक की अन्य विशेषतायें इस प्रकार हैं—

काव्य विश्वामित्र-यज्ञ के वर्णन से प्रारम्भ होता है। एक असुर के काक के रूप में उस यज्ञ को भंग करने का प्रयत्न करने पर विश्वामित्र राम तथा लक्ष्मण को उसे मारने के लिए धनुष-बाण देते हैं। (यह वृत्तान्त **सेरी राम** में भी इसी प्रकार है)।

१. दे० ए० फुशे : सर आशुतोष मुकर्जी वोल्युम, भाग ३, पृ० १ आदि।

२. दे० एस्० कार्पेलेज़ : इंडियन आर्ट एंड लेटर्स, भाग १, पृ० ३० तथा रेआम केर का सस्करण (१९३७) भूमिका पृ० २।

जनक यमुना के तीर पर हल चलाते हुए सीता को एक बेड़े पर देखते हैं और उनको प्राप्त कर उनका पुत्रीवत् पालन करते हैं।

सीताहरण के बाद रावण जटायु को सीता की अंगूठी से आहत करता है।

सुग्रीव को अपनी सामर्थ्य का विश्वास दिलाने के लिए राम सात तालों का एक ही बाण से भेदन करते हैं। ये सात ताल महानागराज की पीठ पर स्थित थे।

सेतुबंध के समय मछलियों का उल्लेख है जो सेतु को नष्ट करने का प्रयत्न करती हैं।

इन्द्रजित-वध के बाद हस्तलिपियों की अपूर्णता के कारण सीता-त्याग का वर्णन प्रारम्भ होता है।

सीतात्याग का कारण रावण का चित्र है, जिसे सीता ने अपने पंखे पर खींचा था।

सीता के एक पुत्र राम लक्ष्मण उत्पन्न होता है तथा वाल्मीकि जुपलक्ष्मण की सृष्टि करते हैं। बाद में दोनों राम-सेना से युद्ध करते हैं तथा राम के साथ राजधानी लौटते हैं।

अयोध्या लौटने से इनकार करते हुए सीता कहती हैं, मैं केवल राम की मृत्यु के बाद अंत्येष्टि के लिए लौटने का नाम लूंगी। यह जानकर राम हनुमान द्वारा अपनी मृत्यु का समाचार सीता के पास भेज देते हैं। सीता हनुमान के साथ आकर राम की चिता पर विलाप करती हैं और मूर्च्छित हो जाती हैं। राम उनको गोद में लेकर उनके अश्रु पोंछते हैं। चेतना प्राप्त करने पर सीता राम की भर्त्सना करके नागराजा मिरुण की शरण लेती हैं।

श्याम

१. राम कियेन

३१०. **राम कियेन** नामक श्याम रामायण के दो भिन्न संस्करण १८ वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में छापे गए हैं, तथा इसका एक दूसरा संस्करण नाटक के रूप में १९ वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में भी प्रकाशित हुआ था। हाल में **राम कियेन** का अंग्रेजी अनुवाद बांकोक के बिरला

ओरियेन्टल सीरीज़ में **राम-कीर्ति** के नाम से प्रकाशित किया गया है। इसी अंग्रेजी अनुवाद पर प्रस्तुत परिचय समाश्रित है।

विशेषज्ञों का मत है कि **राम कियेन** ख्मेर भाषा के **रेआम केर** पर निर्भर है।[1] वास्तव में **रेआम केर** की उपर्युक्त समस्त विशेषताएं **राम कियेन** मे भी पाई जाती हैं, यद्यपि **राम कियेन** में सीताजन्म की कथा कुछ भिन्न है तथा इसमें राम को सुग्रीव से मैत्री करने के पूर्व अपनी शक्ति का कोई प्रमाण नहीं देना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त **राम कियेन** के बहुत से वृत्तान्त प्रकाशित **रेआम केर** में नहीं मिलते, लेकिन **रेआम केर** की केवल अपूर्ण हस्तलिपियां प्राप्त हैं; अतः सभव है कि ये अधिकांश वृत्तान्त **रेआम केर** में भी विद्यमान थे।

राम कियेन के प्रारम्भ में रघुवश के कुछ इतिहास के साथ साथ राम तथा उनके भाइयों के जन्म का वर्णन किया गया है (अध्याय १-२) अनन्तर लंका की उत्पत्ति, रावण के कृत्य, तथा रामकथा के अनेक पात्रों की जन्मकथा मिलती है अर्थात् वालि, सुग्रीव, हनुमान, अंगद और सीता (अध्याय ३-११)। इसके बाद विश्वामित्र के यज्ञ से लेकर सीतात्याग के बाद राम-सीता सम्मिलन तक की समस्त कथा का वर्णन किया गया है (अध्याय १२-४५)।

राम कियेन की निम्नलिखित विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं:—

(१) लक्ष्मण का शूर्पणखा के पुत्र का वध करना (अध्याय १७)

(२) लक्ष्मण तथा हनुमान का युद्ध (अध्याय १६)

(३) सेतुबन्ध के पूर्व रावण का तपस्वी के रूप में राम के पास पहुँचना और युद्ध छोड़ देने के लिये उनसे अनुरोध करना (अध्याय २५)

(४) बेंजकाया, विभीषण की पुत्री का सीता का रूप धारण कर मृतवत् नदी के ऊपर बह जाना। (अध्याय २५)

(५) महीरावण का राम को पाताल ले जाना (अध्याय २७)

(६) भस्मलोचन की कथा का एक अन्य रूप (अध्याय ३१)

(७) रावण का ब्रह्मा के पास जाकर राम पर अभियोग करना। ब्रह्मा का

---

१. दे० एस० कार्पेलेज़ : एटुड असियाटिक, पृ० ३१५।

राम को बुलाना और बाद में सीता को भी । अन्त में ब्रह्मा का सीता को लौटाने की आज्ञा देना तथा रावण के इनकार करने पर ब्रह्मा का रावण को शाप देना (अध्याय ३२)।

(८) रावण-वध तथा राम के अयोध्या में प्रत्यागम के बाद रावण के एक पुत्र का विभीषण के विरुद्ध विद्रोह करना । भरत तथा शत्रुघ्न का राम-सेना के साथ लका की ओर प्रस्थान करना और रावण के पुत्र को पराजित कर विभीषण को पुनः राज्य दिलाना। इस युद्ध का विस्तृत वर्णन प्रथम युद्ध की पुनरावृत्ति मात्र है।

(९) समस्त युद्ध की उपर्युक्त पुनरावृत्ति के अतिरिक्त और बहुत से वृत्तांत दुहराए गए हैं। इन्द्रजित के यज्ञ-भङ्ग के अतिरिक्त **राम कियेन** में ऐसा वर्णन कुम्भकर्ण (अध्याय २८) रावण (अध्याय ३१) तथा मन्दोदरी (अध्याय ३४) के विषय में भी मिलता है।

(१०) **राम कियेन** की एक अन्तिम विशेषता यह है कि इसमें हनुमान की बहुत सी प्रेमलीलाओं का वर्णन किया गया है। स्वयं प्रभा (अध्याय २३), बेजकाया (अध्याय २५), नागकन्या सुवर्णमच्छा (अध्याय २६) अप्सरा वानरी (अध्याय ३१) के अतिरिक्त वह मदोदरी के साथ भी क्रीड़ा करते हैं। मदोदरी के सजीवन-यज्ञ को भङ्ग करने के लिए वह दशकंठ के रूप में मंदोदरी के पास पहुँच कर उसका आलिंगन करते हैं (अध्याय ३४)। एक अन्य अवसर पर वह रावण के पास पहुँचकर राम की भर्त्सना करते हैं, तथा रावण की ओर से युद्ध करने का प्रस्ताव करते हैं। वास्तव में वह एक दिन तक ऐसा करते हैं, और पुरस्कारस्वरूप इन्द्रजित् की समस्त सम्पति के अतिरिक्त मंदोदरी को भी रावण से प्राप्त कर, रात भर उसके साथ क्रीड़ा करते हैं (अध्याय ३५)।

२. रामजातक

३११. श्याम के उत्तरपूर्वीय प्रांतों में लाओ भाषा बोली जाती है। लाओ साहित्य के पंचतंत्र में दशरथ द्वारा अन्धमुनि-पुत्र-वध तथा राम के विभीषण को शरण में लेने का उल्लेख मिलता है।[1] इसके अतिरिक्त सोलहवीं शताब्दी में **राम जातक** की लाओ भाषा में रचना की गई है।[2] इस जातक के प्रारम्भ में राम तथा रावण चचेरे भाई माने गए हैं तथा राम

१. दे० बुलेटिन एकोल फ्रांसेज एक्सट्रेम ओरियन, भाग १७, पृ० १०१।

२. दे० दि राम-जातक: जर्नल श्याम सोसाइटी, भाग ३६, पृ० १।

के केवल एक भाई लक्ष्मण और एक बहन शांता का उल्लेख है (दे० आगे अनु० ३५७)। शेष कथानक **रामकियेन** से बहुत भिन्न नहीं है। इसकी एक विशेषता यह है कि राम सीता को खोज करते हुए दो बार विवाह करते हैं; सुग्रीव-बालि की बहन से, तथा बालि की विधवा पत्नी से। राम की ये दो पत्नियाँ अपने पुत्रों हनुमान तथा ख्वान थोआफा के साथ युद्ध में भाग लेती हैं। राम ने सीता से विवाह करने के पूर्व भी कई बार विवाह किया था तथा उनके उस समय के चार पुत्र भी उनके साथ रावण से युद्ध करते हैं।

अंत में जातक-शैली के अनुसार राम-बुद्ध, रावण-देवदत्त, दशरथ-शुद्धोधन, लक्ष्मण-आनन्द, सीता-उप्पलवण्णा (भिक्षुणी) आदि राम-कथा तथा बौद्ध इतिहास के पात्रों की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है।

ब्रह्म देश

३१२. ब्रह्मदेश का राम-कथा-साहित्य बहुत अर्वाचीन है।[1] ब्रह्मदेश के एक राजा ने १७६७ ई० में श्याम की राजधानी अयुतिया को नष्ट कर दिया था। इस विजय के बाद राजा ने श्याम के बहुत से कैदियों को अपने साथ ले लिया था, जो ब्रह्मदेश में श्याम के राम-नाटक का अभिनय करने लगे। इस तरह श्याम की राम-कथा ब्रह्मदेश में आई थी। इस कथा को लेकर यू तो ने १८०० ई० के लगभग **राम यागन** की रचना की थी, जो संभवतः ब्रह्मदेश का सबसे महत्त्वपूर्ण काव्य माना जाता हो। आजकल राम-नाटक, जिसे वहाँ की भाषा में **यामे प्वे** कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। इसकी एक विशेषता यह है, कि अभिनेता बहुमूल्य चेहरे पहनते हैं, और अभिनय के दिन इन चेहरों की पूजा भी करते हैं। श्याम के **राम कियेन** पर निर्भर होते हुए भी कथानक में कहीं-कहीं मौलिकता पाई जाती है। सीताहरण वहाँ के अभिनय का एक बहुत लोकप्रिय विषय भी है। इसमें शूर्पणखा (जिसका नाम गाम्बी रखा गया है) मृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाती है, और राम से आहत किये जाने पर अपने राक्षसी रूप में प्रकट होती है। लक्ष्मण के राम की सहायता करने जाने के पूर्व कुटी के चारों ओर तीन

---

१. दे० जी० पी० कानोर : दि रामायण इन बर्मा. जर्नल बर्मा रिसर्च सोसाइटी। भाग १५, पृ० ८०।
के० बी० ऐयर : याम-प्वे, त्रिवेणी, भाग १४ पृ० २३९ आदि।

रेखाएँ खींचने का भी उल्लेख किया गया है, जो भारत तथा हिंदेशिया आदि में भी मिलता है।

घ—पाश्चात्य वृत्तान्त

३१३. पंद्रहवीं शताब्दी से लेकर पाश्चात्य यात्रियों तथा मिशनरियों की भारत-सम्बन्धी रचनाओं में राम-कथा के विषय में बहुत कुछ सामग्री मिलती है। अर्वाचीनता तथा लेखकों की अपेक्षाकृत कम विद्वत्ता के कारण यह साहित्य महत्त्व-पूर्ण नहीं है, फिर भी उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। अतः इसका यहाँ बहुत संक्षेप में किंचित निरूपण किया गया है। चतुर्थ भाग में राम-कथा के भिन्न-भिन्न तथ्यों के तुलनात्मक अध्ययन में इन वृत्तान्तों का भी निम्नलिखित संख्याओं के अनुसार उल्लेख किया जायगा।

(१) जे० फेनिचियों (१६०६)

एक जेसुइट मिशनरी जे० फेनिचियो ने १६०६ में **लिब्रो डा सैटा** की रचना की थी, जिसमें दशावतार-निरूपण के अन्तर्गत दक्षिण की उस समय की एक रामकथा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।[1] दशरथ के यज्ञ से लेकर सीता की अग्निपरीक्षा के प्रारम्भ तक का वृत्तान्त इसमें मिलता है। इसके बाद हस्तलिपि के कई पन्ने खो जाने के कारण रामकथा का पूरा वर्णन नहीं हो पाया है। अधिकांश कथानक वाल्मीकि के अनुसार है फिर भी इसमें अनेक स्थलों पर वाल्मीकीय कथा से विभिन्नता पाई जाती है। इसकी एक विशेषता यह है कि रावणचरित का वर्णन अरण्यकांड की कथा के अंतर्गत किया गया है। अग्निजा सीता का वृत्तान्त तथा राम के स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करने की कथा वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न है।

(२) ए० रोजेरियुस (१७ वीं श० ई०)

ए० रोजेरियुस डच ईस्ट कम्पनी के पादड़ी की हैसियत से पुलिकत में ग्यारह वर्ष तक रहे (१६३१-४१)। उनकी रचना **दि ओपन डोर** का प्रकाशन १६५१ में हुआ था। अवतारवर्णन के अन्तर्गत रावणचरित से लेकर अयोध्या के प्रत्यागमन तक राम-कथा का वर्णन वाल्मीकि के अनुसार किया गया है।

---

१. दे० लिब्रो डा सैटा (उप्साला १९३३) पृ० ६९-१३३।

(३) पी० बलडेयुस (१७ वीं श० ई०)

बलडेयुस १६५८ ई० से लेकर छः वर्ष तक सिंहलद्वीप तथा दक्षिण भारत में रहे। उनकी उच्च भाषा की रचना, **आफगोडेरैय डर ओस्ट इंडिशे हाइडेनन**[1], जो अधिकांश उपर्युक्त वृत्तान्त न० १ पर निर्भर है, १६७२ में प्रकाशित हुआ था। रावण चरित से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक की कथा इसमें पाई जाती है। अग्निपरीक्षा के अतिरिक्त सीता की और अनेक परीक्षाओं का उल्लेख इस रचना की एक विशेषता है।

(४) ओ. डैप्पर (१७ वीं श० ई०)

डा० ओ० डैप्पर की रचना **असिया** वृत्तान्त न० २ और ३ पर निर्भर है। इसका प्रकाशन होलैंड में १७ वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में हुआ था।

(५) डे फ़रिया (१७ वीं श० ई०)

डे फ़रिया की स्पैनिश रचना **असियां पोर्तुगेसा** का प्रकाशन १६७४ में हुआ है। इसमें जो रामकथा मिलती है, वह उपर्युक्त वृत्तान्त न० १ पर निर्भर है।[2] इसमें रावण के चित्र के कारण सीता के त्यक्त किये जाने का वर्णन किया गया है।

(६) रलासियों डेस एरयर (१६४४ ई०)

फ्रेंच भाषा की यह रचना सभवतः डे नोबिलि के नोट्स के आधार पर लिखी गई हो।[3] इसकी राम-कथा (पृ०१२-७) बहुत सक्षिप्त है। इसमें धोबी के वृत्तान्त के कारण सीतात्याग का उल्लेख किया गया है।

(७) ला जानटिलिटे डु बेंगाल (१६६८ ई०)

फ्रेंच भाषा की इस रचना की राम-कथा एक पुर्त्तगाली वृत्तान्त (दे० न० ८) से बहुत भिन्न नहीं है। इसका रचयिता अज्ञात है।

(८) पुर्त्तगाली वृत्तान्त, क. (१६७० ई०)

डा० कालेंड ने तीन पुर्त्तगाली रचनाओं का प्रकाशन करके साथ-साथ इनका डच में अनुवाद भी किया है।[4] डा० कालेंड के अनुसार वृत्तान्त क. सम्भवतः १६७० ई० का है। इसकी राम-कथा में (पृ० १०-१६) उत्तरकाण्ड की सामग्री का भी वर्णन किया गया है।

१. दे० नया प्रकाशन, (दि हेग, १९१७) अध्याय ४।

२. दे० भाग २, पृ० ६६६ आदि।

३. इसका प्रकाशन वृत्तान्त न० ७ के साथ साथ डब्लू. कालेंड द्वारा १९२३ मे हुआ है।

४. दे० ट्री ओडे पार्तगेशे वरहैंडलिंगन. एमस्टरडम।

(९) **पुर्त्तगाली वृत्तान्त, ख.** (१७७४ ई०)

इस रचना की राम-कथा (पृ० ५६ ६४) की विशेषता यह है कि सीता अग्नि से उत्पन्न होती है। (दे० आगे अनु० ३२४)

(१०) **पुर्त्तगाली वृत्तान्त, ग.** (१७२३ के पूर्व)

इस रचना की राम-कथा फ्रेंच वृत्तान्त न० ६ पर निर्भर है।

(११) **जे० बी० टावर्निये** (१७ वीं श० ई०)

जे. बी. टावर्निये ने अपनी भारत की यात्रा का वर्णन १६७६ ई० में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित किया था,[1] जिसके अन्तर्गत एक संक्षिप्त राम-कथा मिलती है।

(१२) **एम० सोनेरा** (१८ वीं श० ई०)

एम्० सोनेरा ने अपनी रचना **वोयाज़ ओस इंड ओरियन्टाल** १७८२ में पैरिस में प्रकाशित की थी। इसमें एक अत्यन्त संक्षिप्त राम-कथा मिलती है (पृ० १६३), जिसकी विशेषता यह है कि राम १५ वर्ष की अवस्था में अयोध्या छोड़कर सीता तथा लक्ष्मण के साथ चित्रकूट में तपस्या करने जाते हैं।

(१३) **डे पोलिये** (१८ वीं श० ई०)

डे पोलिये की रचना **मिथोलोजी डेस इण्डू** १८०६ ई० में पैरिस में प्रकाशित हुई थी। इसमें एक विस्तृत राम-चरित (भाग १, पृ० २६०-३६४) मिलता है, जिसे डे पोलिये ने लखनऊ में १८ वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में विलियम जोन्स के भूतपूर्व पंडित से सुना था। इस रामचरित में बहुत सी कथाएँ पाई जाती हैं जो वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न हैं, लेकिन जो प्रायः अन्य अर्वाचीन वृत्तान्तों में भी मिलती हैं; उदाहरणार्थः—रत्नजा सीता की जन्मकथा, महिरावण के राम-लक्ष्मण को पाताल ले जाने की कथा आदि।

(१४) **जे० ए० डुब्वा** (१६ वीं श०)

जे. ए. डुब्वा की प्रसिद्ध रचना **हिन्दु मैनर्स, कस्टम्स, एंड सेरेमोनिस** में एक संक्षिप्त रामकथा मिलती है (पृ० ६१६-२४, तीसरा संस्करण) जो वाल्मीकीय कथा से अनेक स्थलों पर विभिन्न है, उदाहरणार्थः—कैकेयी

---

१. दे० जे० बी० टावर्निये : ट्रावल्स इन इंडिया। (लन्दन १८८९) भाग २,

राम से अनुरोध करती है कि वह भरत को राज्य पर अपना अधिकार प्रदान करें। हनुमान समुद्र की धारा पर चलकर लंका पहुँचते हैं, आदि।

निम्नलिखित रचनाओं में कोई पूर्ण राम-कथा नहीं पाई जाती, लेकिन इनमें रामचरित के किसी तत्व की ओर निर्देश किया गया है—

(१५) **बोले ले गोज़** (१७ वीं श० ई०)

बोले ले गोज़ की रचना में (एमस्टरडैम १६६०) सीताहरण तथा हनुमान के लंका से सीता को राम के पास ले आने की कथा मिलती है।

(१६) **पी० एफ० विनजेनजा मरिया** (१७ वीं श० ई०)

इनकी रचना **'इल वियाजियो अल इंडिये ओरियेन्टालि'** रोम में १६७२ ई० में प्रकाशित हुई थी। इसमें सीता का जन्म लंका में माना गया है।

(१७) **चीगेनबाल्ग** (१८ वीं श० पूर्वार्द्ध)

इनकी रचना का अंग्रेजी अनुवाद १८६६ में मद्रास में प्रकाशित किया गया है। मूल जर्मन, जो १८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गई थी, केवल १८६७ ई० में प्रकाश में आ सकी।

(१८) **एन० मानुच्ची**

इनकी **'स्टोरिया डी मोगोर'** (१६५३-१७०८) में धोबी के कारण सीतात्याग का उल्लेख किया गया है तथा राम परमेश्वरी के पुत्र माने गए हैं।

(१९) **लेटर्स एडिफ़ियन्ट**

यह जेसुइट मिशनरियों के पत्रों का संग्रह है, जो पैरिस में प्रकाशित किया गया है। १३ वें भाग (१७१८ ई०) में अग्निजा सीता का जन्मवृत्तान्त (पृ० १४०) तथा शूर्पणखा-पुत्र-वध का एक नया रूप (पृ० १७२) मिलता है।

चतुर्थ भाग

राम-कथा का विकास

१४—बालकांड

१५—अयोध्याकांड

१६—अरण्यकांड

१७—किष्किंधाकांड

१८—सुन्दरकांड

१९—युद्धकांड

२०—उत्तरकांड

२१—संहार

चौदहवां अध्याय

बालकांड

१

वाल्मीकीय बालकांड

३१४. क. बालकांड की कथा-वस्तु

(१) भूमिका (सर्ग १-४)

नारद का वाल्मीकि से अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक की राम-कथा का कथन (सर्ग १), श्लोकोत्पत्ति; नारद से सुनी हुई रामकथा को श्लोक-बद्ध करने की वाल्मीकि को ब्रह्मा की आज्ञा (सर्ग २), वाल्मीकि का कुश-लव को अपना काव्य सिखाना और उनका राम के सन्मुख उसे सुनाना (सर्ग ४)।

(२) दशरथयज्ञ (सर्ग ५-१७)

अयोध्या का वर्णन; राजा, नागरिक, मंत्री औ पुरोहितों का वर्णन (सर्ग ५-७)।

अश्वमेध-यज्ञ का संकल्प (सर्ग ८); ऋष्यशृंग की कथा (सर्ग ९-११); ऋष्यशृंग द्वारा अश्वमेध (सर्ग १२-१४)।

ऋष्यशृंग द्वारा पुत्रेष्टियज्ञ, देवताओं की विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना; पायस को प्राप्त कर दशरथ का उसे अपनी पत्नियों में बाँटना (सर्ग १५ ६); देवताओं का अप्सराओं और गंधर्वियो से वानरों की उत्पत्ति कराना (सर्ग १७)।

(३) राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कृत्य (सर्ग १८-३१)

राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म विश्वामित्र का आगमन

(सर्ग १८); यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र का दशरथ से राम-लक्ष्मण को माँगना (सर्ग १९-२१)।

राम-लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ गमन; सरयू तट पर विश्वामित्र द्वारा बला और अतिबला का प्राप्त करना (सर्ग २२)। गंगा-सरयू के संगम पर विश्वामित्र द्वारा काम-दहन की कथा (सर्ग २३); मलद और करूष की कथा (सर्ग २४)।

ताड़का की कथा (सर्ग २५); राम द्वारा उसका वध (सर्ग २६)। राम को दिए गय आयुधों की सूची (सर्ग २७-२८); सिद्धाश्रम पर वामनावतार की कथा (सर्ग २९); मारीच का समुद्र में निक्षेप और सुबाहु का वध (सर्ग ३०); मिथिला के लिए प्रस्थान (सर्ग ३१)।

(४) **पौराणिक कथाएं** (सर्ग ३२-६५)

विश्वामित्र के वंश की कथा (सर्ग ३२-३४)। हिमवान् की पुत्रियाँ; गंगा का स्वर्गारोहण, उमा का शिव से विवाह, कार्तिकेय जन्म (सर्ग ३५-३७)।

सगर-पुत्रों का पाताल में भस्म होना; भगीरथ द्वारा गंगावतरण; जह्नु द्वारा गंगा का पिया जाना और मुक्त होकर भगीरथ का अनुसरण करते हुए पाताल में सगर पुत्रों का उद्धार करना (सर्ग ३८-४४)।

समुद्रमंथन की कथा (सर्ग ४५-४७) गौतम द्वारा इन्द्र और अहल्या के शाप की कथा।

अहल्योद्धार (सर्ग ४८-४९), जनक द्वारा विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण का स्वागत (सर्ग ५०)।

विश्वामित्र की कथा : शतानन्द द्वारा विश्वामित्र के ब्राह्मण बनने की कथा, राजा विश्वामित्र का वसिष्ठ को परास्त न कर सकने के कारण ब्राह्मण बनने का निश्चय (सर्ग ५१-५६), उनका राजर्षि बनना, त्रिशंकु की कथा (सर्ग ५७-६०)। अंबरीष के यज्ञ में शुनःशेप का बलिदान; विश्वामित्र का ऋषि बनना, मेनका की सफलता और रंभा की असफलता और अंत में विश्वामित्र का ब्रह्मर्षि बनना (सर्ग ६१-६५)।

(५) राम विवाह (सर्ग ६६-७७)

धनुर्भंग. जनकद्वारा धनुष तथा सीता के अलौकिक जन्म की कथा, उनकी सीता-विवाह-विषयक प्रतिज्ञा। अनेक राजाओं की असफलता और उनका असफल आक्रमण (सर्ग ६६)। राम द्वारा धनुर्भंग। दशरथ का बुलावा और मिथिला में उनका आगमन। (सर्ग ६७-६९)

विवाह. वसिष्ठ द्वारा दशरथ के वंश का परिचय, जनक का अपना वंश-वर्णन। चारों भाइयों का विवाह (सर्ग ७०-७३)। परशुराम उत्तरीय पर्वतों पर विश्वामित्र का गमन। दशरथ के मार्ग में अपशकुन और परशुराम का आगमन। वैष्णव धनुष चढ़ाकर राम द्वारा परशुराम की पराजय (सर्ग ७४-७६) अयोध्यागमन; भरत और शत्रुघ्न का प्रस्थान; राम की लोकप्रियता (सर्ग ७७)।

ख. बालकांड का विश्लेषण

तीन पाठों में विभिन्नता

३१५. प्रचलित वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ में रामादि की जन्मतिथि (चैत्रे नावामिके तिथौ दे० १८, ८) तथा उसी अवसर पर राशियों के संगम का उल्लेख किया गया है, जो अन्य दोनों पाठों में नहीं मिलता [1]।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पौराणिक कथाएँ केवल दाक्षिणात्य पाठ में पाई जाती हैं :

कश्यप की तपस्या, जिसके फलस्वरूप उन्होंने वामनावतार में हरि को पुत्र स्वरूप प्राप्त किया था (२९,१०-१७)

जह्नु का गंगा-पान (४३,३४-४१)

विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत चुराना (४५,४०-४३)

विष्णु का कूर्मावतारवर्णन (४५,२७-३२)

---

१. यह पाँचवीं श० ई० अथवा इसके बाद का प्रक्षेप है। दे० क्वार्टर्ली जर्नल मिथिक सोसाइटी, भाग १२, पृ० ७३ ।

कथानक के दृष्टिकोण से पाठों की विस्तृत तुलना के लिए, दे० प्रस्तुत लेखक का निबन्ध: दि थ्री रिसन्शन्स आव दि रामायण। जर्नल ओरिएन्टल रिसर्च। भाग २७, पृ० १-३२।

उमा-शिव के विवाह का दाक्षिणात्य (३५,१६-२२) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (३२,२४-२६) में उल्लेख किया गया है, जो गौडीय पाठ में नहीं मिलता।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ में एक तीसरी अनुक्रमणिका पाई जाती है जिसमें रामायण के सात कांडों की कथावस्तु का और निर्देश किया गया है (गौ० रा० सर्ग ४, प० रा० सर्ग ३)। इसके अतिरिक्त इन दोनों पाठों में दो सर्ग मिलते हैं, जिनमें भरत और शत्रुघ्न की यात्रा तथा राजगृह में निवास का कुछ विस्तार सहित वर्णन किया गया है। (दे० गौ० रा० बालकाण्ड सर्ग ७६-८० तथा प० रा० अयोध्याकांड सर्ग १-२)। दाक्षिणात्य पाठ में इसका उल्लेख मात्र मिलता है।

बालकांड की उत्पत्ति

३१६. आठवें अध्याय में समस्त बालकांड के प्रक्षिप्त माने जाने के कारण दिए गए हैं; अतः बहुत सम्भव है कि वाल्मीकिकृत रचना में अयोध्या, दशरथ तथा उनके पुत्रों के परिचय के बाद अयोध्याकाड की कथावस्तु का वर्णन प्रारम्भ हुआ हो। **महाभारत** के द्रोणपर्व, **हरिवंश, विष्णु-पुराण** आदि के प्राचीन वृत्तांतों में भी वनवास से ही लेकर रावण-वध तक की राम-कथा का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत बालकांड के निरीक्षण से उसकी उत्पत्ति और विकास के भिन्न-भिन्न सोपानों का कुछ आभास मिलता है।

दो स्थलों को छोड़कर बालकांड में और कहीं भी अवतारवाद की ओर निर्देश नहीं किया गया है। यही नहीं, वरन् उसकी शेष सामग्री से भी स्पष्ट है कि मूल बालकांड के रचनाकाल में राम विष्णु के अवतार नहीं माने जाते थे; इसके प्रमाण आठवें अध्याय में दिये गए हैं। अतः ये दोनों स्थल (अर्थात् दशरथ के पुत्रेष्टियज्ञ तथा राम-परशुराम भेंट का वर्णन) बालकांड के अन्तिम विकास के समय जोड़ दिए गए होंगे। पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रक्षिप्त होने के स्पष्ट प्रमाण प्रचलित बालकांड में मिलते हैं।

सर्ग ८ में दशरथ सुतार्थ अश्वमेध यज्ञ करवाने का संकल्प करते हैं। सर्ग १३ और १४ में इस अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है। १४ वें सर्ग में ब्राह्मणों को दक्षिणा दिए जाने के उल्लेख के बाद ऋष्यशृङ्ग दशरथ को आश्वासन देते हैं कि उनके चार पुत्र उत्पन्न होंगे।

भविष्यंति सुता राजंश्चत्वारस्ते कुलोद्वहाः ॥ ५६ ॥

ऋष्यशृंग के इस आश्वासन के पश्चात् पुत्रेष्टि की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती है। फिर भी इसके अनन्तर पुत्रेष्टियज्ञ का वर्णन प्रारम्भ होता है (सर्ग १५-१७), जिसमें विष्णु के अवतार लेने का विस्तृत वर्णन किया गया है। यह होते हुए भी १८ वें सर्ग के प्रारम्भ में अश्वमेध ही की समाप्ति पर (**विवृत्ते तु क्रतो तस्मिन्हयमेधे**) देवताओं तथा राजाओं के प्रस्थान का उल्लेख किया गया है, जिससे स्पष्ट है कि पहले १४ वें सर्ग के पश्चात् १८ वां सर्ग ही आता था।

पौराणिक कथाओं का बाहुल्य बालकांड तथा उत्तरकांड की एक विशेषता है। गंगावतरण (सर्ग ३८-४४) एक स्वतन्त्र काव्य था जो बाद में अपने श्रवणफल सहित बालकांड को अन्य पौराणिक कथाओं के साथ रखा गया है।

विश्वामित्र की कथा (सर्ग ५७-६५) का अशुद्ध श्लोकों का बाहुल्य उसे एक स्वतन्त्र रचना सिद्ध करता है[1]। बालकांड की अन्य पौराणिक कथाएँ भी राम-कथा से कोई सम्बन्ध नहीं रखती हैं, अतः बहुत सम्भव है कि वे भी प्रारम्भिक बालकांड में विद्यमान नहीं थीं। ६ वें सर्ग से लेकर १२ वें तक में ऋष्यशृंग की पौराणिक कथा तथा ८ वें सर्ग की पुनरावृत्ति मात्र मिलती हैं।

३१७. उपर्युक्त प्रक्षेपों को हटाकर जो निम्नलिखित सामग्री रह जाती है इसे हम बालकांड का प्रारम्भिक रूप मान सकते हैं।

सर्ग १-४	भूमिका
सर्ग ५-७	अयोध्या का वर्णन
सर्ग ८,१३,१४	दशरथ के अश्वमेध का वर्णन।
सर्ग १८-२१	राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कार्य (ताड़का वध, विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा)
सर्ग ६६-७३	राम का विवाह।
सर्ग ७७	अयोध्या में प्रत्यागमन।

—:०:—

१. एच० याकोबीः डस रामायण, पृ० २६।

२

बालकांड का विकास

३१८. अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक की राम-कथा पर आदि कवि की छाप स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। घटनाएँ एक दूसरे से ऐसा सम्बन्ध रखती हैं कि आधिकारिक कथावस्तु की गति अबाध रूप से आगे बढ़ रही है। अतः बाद की रामकथाओं में इन कांडों के कथानक का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है। बालकांड तथा उत्तरकांड की परिस्थिति दूसरी है। प्रारम्भ ही से इनकी कथावस्तु की कोई विशेष एकता नहीं थी। फल-स्वरूप इन दोनों कांडों में सबसे अधिक परिवर्त्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है।

निम्नलिखित बालकांड-सम्बन्धी विषयों में इतनी विभिन्नता पाई जाती है अथवा इनके विकास का वर्णन इतना विस्तृत है कि तत्सम्बन्धी सामग्री अलग अलग परिच्छेदों में रखी गई है—अवतारवाद, दशरथ के विवाह और संतति, सीता की जन्म-कथा, राम-सीता-विवाह। बाद की राम-कथाओं में प्रायः बालकांड की पौराणिक कथाओं (दे० सर्ग ३२-६५) का अभाव है अतः इनका कोई विकास नहीं हो पाया है। यहाँ पर बालकांड की शेष कथावस्तु के विकास पर प्रकाश डालना है।

क. राम का जन्म तथा प्रारम्भिक कृत्य।

३१९. दाक्षिणात्य पाठ के एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रक्षेप में राम और उनके भाइयों की जन्मतिथि चैत्र की नवमी बताई गई है। आगे चलकर इस तिथि का प्रायः उल्लेख किया जाता है। उदाहरणार्थ : **पद्मपुराण** (उत्तरकांड, अध्याय २६६) **अध्यात्म रामायण** (१, ३) आदि।

रामजन्म के अवसर पर अलौकिक घटनाओं का वर्णन प्राचीन काल से चला आ रहा है। कालिदास ने अपने रघुवंश में लिखा है कि बालक के तेज से रात्रि का अंधकार नष्ट हो गया (दे० रघुवंश १०, ६६)। कालि-दास की उस समय की उपमाएं उल्लेखनीय हैं,

रघुवंशप्रदीपेन तेनाप्रतिमतेजसा
रक्षागृहगता दीपाः प्रत्यादिष्टा इवाभवन्॥ ६८॥

दशाननकिरीटेभ्यस्तत्क्षणं राक्षसश्रियः ।
मणिव्याजेन पर्यस्ताः पृथिव्यामश्रुबिन्दवः ॥ ७५ ॥

'उस अप्रतिम तेजस्वी रघूद्वह रूपी प्रदीप के कारण राक्षसगृह के प्रदीप मानो मद पड़ गए... । उस समय रावण के मुकुटों के कुछ मणि पृथ्वी पर गिर पड़े मानो राक्षसों की लक्ष्मी (अपने दुर्भाग्य पर) आंसू गिरा रही हो' अनेक रामकथाओं में बालक राम जन्म लेते ही अपनी माता कौशल्या को अपना विष्णु-रूप दिखलाते हैं। इस वर्णन का आधार **भागवत पुराण** है, जहाँ बालक कृष्ण वसुदेव तथा देवकी को अपना विष्णुरूप दिखलाते हैं (दे० स्कं १०, अध्याय ३) । राम के विषय में यह वर्णन सम्भवतः पहले पहल **अध्यात्म रामायण** में किया गया है । (दे० १. ३. १३-३५) । यह पद्मपुराण के उत्तरकांड में भी मिलता है (दे० अध्याय २६६), लेकिन यह उत्तरकांड केवल पन्द्रहवीं शताब्दी में अपना वर्त्तमान रूप प्राप्त कर सका । बाद की रचनाओं में इस घटना का प्रायः उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ : **आनन्द रामायण** (१, २) **रामचरितमानस, राम-लिंगामृत** (सर्ग २), **रामरहस्य** (सर्ग ३) ।

३२०. राम की बाललीला के वर्णन में भी **भागवत पुराण** की कृष्ण-बाललीला का अनुकरण किया गया है । **अध्यात्म रामायण** में राम की नटखटी, मक्खन की चोरी, बरतनों का फोड़ना आदि वर्णित हैं (दे० १. ३. ४७-५८), जो स्पष्टतया **भागवत पुराण** पर निर्भर है (दे० दशम स्कंध, ८वाँ अध्याय) । यह वर्णन **आनन्द रामायण** (१, २) **रामचरितमानस, रामरहस्य** (सर्ग ३) आदि में भी पाया जाता है ।

तुलसीदास ने अपनी **कवितावली** (१. १-७) तथा **गीतावली** (१. ७ आदि) में बाललीला का चित्रण करते हुए सूरसागर का अनुकरण किया है ।

३२१. कृष्ण बाललीला के अनुकरण पर कई रचनाओं में राम का राक्षसों को मारने का उल्लेख किया गया है, जो भिन्न भिन्न रूप धारण करके राम के पास आते हैं । **पद्मपुराण** के गौडीय पातालखंड में राम एक पुष्पनिर्मित धनु से एक राक्षस को मारते हैं, जो मृग के रूप में आया था । **पद्मपुराण** के एक अन्य स्थल पर राम बात्या में छिपे हुए राक्षस को मार डालते हैं (दे० ४. १००) । **कृत्तिवास** के रामायण में राम मृगया खेलते हुए मारीच को देखते हैं, जो अपने को मृग में बदलकर

जनक के राज्य में शरण के लिए दौड़ता है। **सत्योपाख्यान** में राम अनेक पशुओं को मारते हैं, जो वध किये जाने पर अपना दिव्य रूप पुनः प्राप्त करते हैं तथा अपने शाप की कथा सुनाते हैं (दे० अध्याय २५ आदि, और ३८-४६)। कृष्णलीला के अनुकरण पर राम की वनक्रीड़ा का भी उल्लेख किया गया है (दे० रामलिंगामृत सर्ग २)।

३२२. काक भुशुण्डी की कथा का पहले पहल **योगवासिष्ठ** में वर्णन किया गया है। इसमें काक भुशुण्डी और उसके २१ भाइयों का पिता चंद्र नामक काक (अलंबसा देवी का वाहन) है तथा उनकी माता हंसिनी (ब्रह्मानी का वाहन)। पिता के कहने से वे सुमेरु पर्वत पर निवास करने गए जहाँ भुशुण्डी के सब भाई मर गए लेकिन भुशुण्डी निर्विकार और चिरंजीव रहे (दे० निर्वाण-प्रकरण, अध्याय १३-२३)। योगवासिष्ठ के इस भुशुण्डी-उपाख्यान में कहीं भी उसके पूर्वजन्म अथवा उसकी राम-भक्ति का उल्लेख नहीं किया गया है। **रामचरितमानस** के उत्तरकांड में उसके पूर्वजन्मों की भी कथा दी गई है। पूर्व कल्प के एक कलियुग में वह अयोध्यावासी शूद्र था। गुरु का सत्कार न करने के कारण वह शिव-शाप से सर्प हो गया। बाद में गुरु तथा शिव की कृपा से सगुणरूप राम का उपासक ब्राह्मण बन गया और अंत में लोमश-ऋषि के शाप से उसे काक-योनि प्राप्त हुई।

रामचरितमानस के अनुसार काक भुशुण्डी तथा शिव दोनों मनुष्य के रूप में राम-नामकरण-उत्सव के उपलक्ष्य में अयोध्या गए थे (दे० १. १९५. ४)। **सत्योपाख्यान** में रामभक्त काक भुशुण्डी राम को शष्कुलि (एक प्रकार की पूरी) खाते देखकर उनके नारायणत्व पर संदेह करता है। परीक्षा करने के उद्देश्य से उसे वह राम के हाथ से छीन-कर भाग जाता है। लेकिन राम गरुड पर आरूढ होकर तीनों लोकों में उसका पीछा करते हैं। अंत में काक राम की शरण लेता है और निश्चल भक्ति का वरदान पाकर अपने आश्रम लौटता है। अनंतर शिव तथा भुशु-ण्डी दोनों के ब्राह्मण के वेश में, राम को देखने के लिए अयोध्या जाने का उल्लेख है (दे० २६वां अध्याय)।

३२३. **योगवासिष्ठ** में राम के १६ वर्ष की अवस्था में विरक्त हो जाने की कथा दी गई है (दे० वैराग्यप्रकरण, १ ला अध्याय); **उदार-राघव** में भी राम के इस वैराग्य का उल्लेख किया है (दे० २रा सर्ग)। अनेक वृत्तान्तों में राम तपस्या करने के लिए स्वेच्छा से वन के लिए

प्रस्थान करते हैं (दे० आगे अनु० ४०६) । इसमें **योगवासिष्ठ** को कथा का प्रभाव देखा जा सकता है ।

३२४. विश्वामित्र के राम तथा लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए मांगने की कथा का एक **वाल्मीकि रामायण** से किंचित भिन्न रूप हिदेशिया तथा आदिवासियों की राम कथाओं में मिलता है ।

आदिवासी कथा के अनुसार[1] एक ब्राह्मण (विश्वामित्र) दशरथ के ज्येष्ठ पुत्रों को मांगने आता है और दशरथ भरत तथा शत्रुघ्न को उसके साथ भेज देते हैं । ब्राह्मण इस धोखे का पता इस प्रकार लगाता है । वह भरत तथा शत्रुघ्न को दो मार्गों में से एक चुनने के लिए कहता है; पहला मार्ग सुगम है और सुन्दर नगर की ओर ले जाता है, दूसरा मार्ग भयकर वन की ओर जहा व्याघ्र, ऋक्ष आदि हिंसक पशु रहते हैं । भरत और शत्रुघ्न नगर का मार्ग चुनते हैं जिस पर ब्राह्मण लौट कर दशरथ से राम तथा लक्ष्मण को मांग लेता है । ये दोनों बाद में वन का रास्ता चुनते हैं । **सेरी राम** में भी ऐसी कथा पाई जाती है ।

३२५. वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ताडका को बाणों से विद्ध करते हैं, जिससे वह पृथ्वी पर गिर कर मर जाती है । **अध्यात्म रामायण (१,४) पद्म-पुराण** (उत्तरकांड, अध्याय २६६, १२१) **रामचरितमानस** आदि में ताडका के दिव्य रूप धारण कर स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान करने का उल्लेख किया गया है ।

ख—अहल्या का उद्धार

३२६. शतपथ-ब्राह्मण से लेकर वैदिक साहित्य की अनेक रचनाओं में अहल्या की कथा का बीज मिलता है क्योंकि इनमें इन्द्र को अहल्या-जार कहा गया है । टीकाकार इस कथा को ऐतिहासिक न मानकर उसे रूपक मात्र मानते चले आ रहे हैं[2] ।

१. दे० १२ वा अध्याय, अदिवासी कथाएँ, अनु० २७२

२. दे० मैकडानेल-कीथ वैदिक इंडेक्स; अहल्या । डा० धीरेन्द्र वर्मा ने अहल्या-उद्धार की कथा के विकास का अपनी 'विचार-धारा' (पृ० २९-३४) में वर्णन किया है । वाल्मीकि रामायण के अनुसार इन्द्र शापवश नपुंसक हो गए थे । बाद मे गौतम के शाप के फलस्वरूप इन्द्र के शरीर में सहस्र भग प्रकट हो जाने की कथा भी मिलती है । (दे० अध्यात्म रामायण १,५ : सहस्रभगवान् भवं) वाल्मीकि के उत्तरकाड में यह शाप मेघनाद द्वारा इन्द्र की पराजय का कारण भी बताया गया है (दे० रा० ७,३०) ।

अहल्या के दुराचार तथा उद्धार की कथा का वर्णन **वाल्मीकि रामायण** में दो बार किया गया है (बालकांड, सर्ग ४८-४९ और उत्तरकांड, सर्ग ३०)। इस वर्णन की विशेषता यह है कि अहल्या अपने पति के शाप के कारण शिला न बनकर केवल अदृश्य हो गई और पति के आज्ञानुसार राम के पहुँचने तक तपस्या करती रही—

वातभक्षा निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी।
अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन्वासिनी ॥ ३० ॥ (सर्ग ४८)

राम के आगमन से शाप की अवधि समाप्त हुई और वह अतिथियों का स्वागत करने बाहर निकली। अहल्या को देखकर राम और लक्ष्मण ने उसके पैर छुए[1]—

शापस्यान्तमुपागम्य तेषां दर्शनमागता ॥ १६ ॥
राघवौ तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा।

३२७. आगे चलकर अहल्योद्धार की कथा में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन किया गया है, वह शापवश शिला बनकर राम पद-रज के प्रसाद से मुक्त हो जाती है। अहल्या की कथा का यह रूप पहले पहल **रघुवंश** में पाया जाता है (दे० सर्ग ११,३४)। आगे चलकर पाषाणभूता अहल्या का राम-पद रज के प्रसाद से उद्धार अधिकांश राम-कथाओं मे वर्णित है, उदाहरणार्थ: **नृसिंह पुराण** (४७ वाँ अध्याय), **स्कंद पुराण** (रेवाखंड १३६ वाँ अध्याय, नागरखंड, २०३रा अध्याय), **पद्मपुराण** (गौडीय पातालखंड, १६ वाँ अध्याय), **आनन्द रामायण** (१,३,१६), तुलसीदास कृत **गीतावली** (१,५७), **सत्योपाख्यान** (२,५) आदि।

अध्यात्म रामायण में अहल्या के शिला बन जाने का उल्लेख नहीं मिलता। वह अदृश्य होकर शिला पर खड़ी हुई परमात्मा राम का ध्यान करती है। जब राम उस शिला को पैर से छूते हैं अहल्या शापमुक्त होकर राम की स्तुति करने लगती है। इस वृत्तान्त में अहल्या द्वारा भक्त [illegible] साक्षात् नारायण राम की स्तुति को सब से अधिक महत्त्व दिया गया है।

---

१. श्लोकों की गणना से स्पष्ट है कि जिस अर्द्धश्लोक मे कहा गया है कि अहल्या ने बदले में राम-लक्ष्मण के पैर छुए वह प्रक्षिप्त है (दे० श्लोक १७—स्मरंती गौतमवचः प्रतिजग्राह सा हि तौ)

रामचरितमानस में इतना अन्तर है, कि अहल्या वास्तव में शिला बन चुकी थी।

इस तरह 'अहल्या-उद्धार की यह प्रसिद्ध पौराणिक कथा ब्राह्मण-ग्रन्थों के अहल्याजार इन्द्र से प्रारम्भ होकर अनेक रूप धारण करने के उपरान्त अहल्या-तारक राम की भक्ति में लय हो जाती है।[1]

३२८. अनेक राम-कथाओं में राम के वनवास के समय अहल्योद्धार का वर्णन किया गया है। **महानाटक** में अगस्त्याश्रम मे चले जाने के उपरान्त राम अहल्या का उद्धार करते हैं (दे० अंक ३)। **रामलिंगामृत** में राम सीता की खोज करते हुए शिलामयी अहल्या को शाप से मुक्त कर देते हैं (दे० सर्ग ६)। **काश्मीरी रामायण** के अरण्यकांड के प्रारम्भ में राम सीता से अहल्या का परिचय कराते हैं। **आनन्द रामायण** में अहल्योद्धार के दो रूप दिए गए हैं—एक **अध्यात्म रामायण** के अनुसार राम के मिथिला जाते समय और दूसरा राम के वनवास के समय। इसमें अहल्या गौतम के शापवश जनस्थान में नदी हो गई थी:—

नदीरूपा जनस्थाने ऽहल्या गौतमशापतः
रामेण भ्रमतारण्ये स्वांघ्रिस्पर्शात्समुद्धृता ॥२३॥

(सारकांड, सर्ग ३)

स्कंदपुराण की कथा में शैव सम्प्रदाय का प्रभाव स्पष्ट है। इसके अनुसार राम ने हाथ से शिला का स्पर्श करके अहल्या का उद्धार किया और उसे भिन्न भिन्न तीर्थों की यात्रा करने का आदेश दिया। अहल्या ने ऐसा किया और अनेक तीर्थों में हरलिंग की स्थापना की (दे० नागरखंड, २०८वाँ अध्याय)।

नाटककारों ने राम-कथा को बदलने में कभी संकोच नहीं किया है। **जानकी-परिणय** में अहल्योद्धार की कथा इस प्रकार है। सीतास्वयंवर के लिए राक्षसों द्वारा निर्मित एक माया-सीता को प्राणसंकट में देखकर राम आत्महत्या करने के उद्देश्य से एक चट्टान पर से नीचे कूदना चाहते हैं। लेकिन राम के स्पर्श से इस चट्टान से प्रकट होकर अहल्या राम को राक्षसी माया का रहस्य बताती है।

---

१. दे० डा० धीरेंद्र वर्मा: विचार-धारा, पृ० ३४।

३२९. अहल्या की कथा का एक अन्य रूप भी मिलता है, जिसमें अंजनी गौतम तथा अहल्या की पुत्री मानी गई है। यह देखकर कि अंजनी अपनी मां के व्यभिचार को छिपाती है गौतम ने अंजनी को शाप दिया जिसके फलस्वरूप वह कुमारी होते हुए भी हनुमान को जन्म देती है[1]। हिंदेशिया में इस कथा का एक विकसित रूप मिलता है। गौतम की पत्नी के तीन संताने हैं—अजनी (गौतम की पुत्री), तथा दो पुत्र वालि और सुग्रीव, जो सूर्य से उत्पन्न हुए हैं। अंजनी अपनी मां के व्यभिचार का रहस्य प्रकट करती है और तपस्या करने जाती है। बाद में वह राम के वीर्य से हनुमान को उत्पन्न करती है। गौतम अपनी पत्नी को शिला बनने का शाप देता है। श्याम के **राम कियेन** में भी इससे मिलती जुलती कथा पाई जाती है। (दे० आगे अनु० ५४८)

ग—परशुराम

३३०. राम-परशुराम-भेंट के वृत्तान्त में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है। **महाभारत** के एक स्थल पर (दे० बम्बई सस्करण ३,९९, ३४ आदि) जो पूना के संस्करण के अनुसार प्रक्षिप्त है, परशुराम के तेजोभग का वर्णन किया गया है। इसमे राम परशुराम को भगवद्गीता के अनुकरण पर अपना विश्वरूप दिखलाते हैं। **अद्भुत रामायण** मे भी ऐसा वर्णन मिलता है (दे० सर्ग ९)। **नृसिंह पुराण** के वृत्तान्त के अनुसार परशुराम का वैष्णव तेज राम म प्रवेश करते हुए दिखलाई पड़ता है (दे० अध्याय ४७)।

हिंदेशिया के **सेरी राम** में राम-पुष्पराम की भेंट का वर्णन मिलता है। राम का बाण तीनों लोकों में भागते हुए पुष्पराम का पीछा करता है। अंत में पुष्पराम राम को महाविष्णु मानकर इससे मुक्ति पाते हैं। **खोतानी रामायण** में परशुराम राम-लक्ष्मण के पिता सहस्रबाहु का वध करते हैं। बारह वर्ष के पश्चात् राम परशुराम को मार डालते हैं।

आगे चलकर इस वृत्तान्त पर भी रामभक्ति का प्रभाव पड़ा और परशुराम की स्तुति को अधिक महत्त्व दिया गया है, जिसके अन्त में परशुराम राम-भक्ति की याचना करते हैं (दे० अध्यात्म रामायण १,७)।

वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण तथा अधिकांश प्राचीन

---

१. दे० मैकालिफ़ : दि सीख रेलिजन, भाग ६ पृ० ५२ टिप्पणी २। एन्टहोवन, फालक्लॉर आव गुजरात। इंडियन एंटिक्वेरी भाग ४०। सप्लेमेन्ट, पृ० ५४।

काव्यों में परशुराम रामविवाह के उपरान्त अयोध्या की वापसी में राम से मिलते हैं। **महावीरचरित** से लेकर अधिकांश राम-नाटकों में परशुराम के मिथिला ही में आगमन का वर्णन किया गया है, उदाहरणार्थः **बालरामायण, प्रसन्नराघव,** और **महानाटक**। गोस्वामी तुलसीदास ने भी इन नाटकों से प्रभावित होकर **रामचरितमानस** में राम-परशुराम-भेंट का वर्णन मिथिला में ही रखा है।

घ. न वी न सा म ग्री

३३१. वाल्मीकि के पश्चात् की रामकथाओं में बालकांड के कथानक के अंतर्गत बहुत कुछ सर्वथा नवीन सामग्री रखी गई है।

(१) भिन्न भिन्न प्रकार की भूमिकाओं के अतिरिक्त प्रायः अवतार के कारणों का विस्तृत निरूपण किया गया है, (दे० आगे अनु० ३४१-३४२)।

(२) दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप में उमा-शंकर-विवाह का उल्लेख मिलता है (दे० रा० १.३५.१६-२२) इसका भी आगे चलकर सती-व्यामोह-कामदहन आदि के साथ साथ अनेक रामायणों में वर्णन किया गया है (दे० रामचरितमानस, लोमस रामायण, चम्पू रामायण)।

(३) दशरथ के भिन्न भिन्न विवाहों का तथा अंध-मुनि-पुत्र-वध का भी प्रायः रामकथा के प्रारम्भ में किया जाता है (दे० आगे अनु ३४६-३५१ और ३६४)

(४) कृष्ण बाललीला के अनुकरण पर बहुधा राम की बाललीला का भी किंचित् वर्णन मिलता है। इसका उल्लेख ऊपर हुआ है।

(५) सीता स्वयंवर और साथ साथ वाटिका में राम और सीता के परस्पर दर्शन करने का भी प्रायः वर्णन किया जाता है, जो **वाल्मीकि रामायण** में नहीं मिलता (दे० आगे अनु० ३६६)।

(६) बालकांड की कथावस्तु के अंतर्गत आगे चलकर शृंगार-रस का भी प्रवेश हुआ है। **जानकीहरण** (सर्ग ८) और **महानाटक** (अंक २) में विवाह के उपरांत राम और सीता के संभोग का वर्णन किया गया है। **जानकीहरण** (सर्ग ३) तथा **कम्बन रामायण** (१,१३-१७) में दशरथ की क्रीड़ा का भी विस्तृत वर्णन मिलता है।

(७) कृत्तिवासकृत आदि **बंगाली रामायणों** में बालकांड के अन्तर्गत प्रायः हरिश्चंद्र की कथा दी जाती है।

३

अवतारवाद

क. द श र थ य ज्ञ

३३२. **वाल्मीकि रामायण** में दशरथ के पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन के अंतर्गत अवतारवाद का विस्तृत निरूपण किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद में उस पुत्रेष्टि यज्ञ का समस्त प्रसग प्रक्षिप्त होने के तर्क दिए गए हैं। पुत्रेष्टि-यज्ञ का विकास दिखलाने के पूर्व उन रचनाओं का उल्लेख करना है जहां दशरथ के यज्ञ का कोई निर्देश नहीं मिलता।

महाभारत के रामोपाख्यान में अवतारवाद का उल्लेख तो किया गया है लेकिन इसमें कहीं भी दशरथ के किसी भी यज्ञ का संकेत नहीं मिलता (दे० ३, २६०)। प्राचीन महापुराणों में अर्थात् **हरिवंश, विष्णुपुराण, वायुपुराण** तथा **भागवत पुराण** में जो सक्षिप्त राम-कथाएं मिलती हैं इनमें कहीं भी दशरथ-यज्ञ की ओर निर्देश नहीं किया गया है। पश्चिमोत्तरीय पाठ के एक प्रक्षिप्त स्थल के अनुसार देवताओं के लिए युद्ध करने के पश्चात् दशरथ ने एक वर प्राप्त किया था। उन्होंने देवताओं से एक पुत्र माँगा और देवताओं ने कहा कि तुम्हारे चार पुत्र होंगे (दे० प० रा० ६.६४ ४६-६८)।

बौद्ध तथा जैन राम-कथाओं में अवतारवाद का अभाव स्वाभाविक है; फलस्वरूप इन रचनाओं में दशरथ के किसी यज्ञ का निर्देश नहीं मिलता है।

वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख हुआ है कि पुत्रप्राप्ति के लिए तपस्या करते हुए भी दशरथ के कोई पुत्र नहीं था।

सुतार्थं तप्यमानस्य नासीद्वंशकरः सुतः ॥१॥

(बालकांड, सर्ग ८)

स्कंद पुराण के दो स्थलों पर दशरथ की इस तपस्या का वर्णन किया गया है। नागरखड में दशरथ के शनैश्चर से युद्ध करने के बाद इन्द्र उनसे कहते हैं कि **अपुत्रस्य गतिर्नास्ति**। इस पर दशरथ १०० वर्ष तक कार्तिकेयपुर

में तप करने जाते हैं। इसके अंत में जनार्दन प्रकट होते हैं और चाररूप धारण कर दशरथ के पुत्र बनने की प्रतिज्ञा करते हैं (**कृत्वा रूपचतुष्टयम्**)। बाद में दशरथ को चार पुत्र और एक पुत्री के प्राप्त होने का उल्लेख किया गया है (दे० अध्याय ६६-६८)। प्रभासखंड में भी दशरथ के पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रभास में तप करने तथा शिवलिंग स्थापित करने का निर्देश किया गया है (दे० अध्याय १७१)।

ग्रामगीतों में भी दशरथ के तपस्या करने तथा किसी योगी के प्रसाद-स्वरूप पुत्र प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है (दे० कविता कौमुदी, भाग ५, पृ० १४ और १६)। **बिहोर राम-कथा** के अनुसार किसी ब्राह्मण को अपने ज्येष्ठ पुत्र दे देने की प्रतिज्ञा करने के बाद दशरथ उसके जादू द्वारा चार पुत्र प्राप्त करते हैं।

जावा के **सेरत कांड, तिब्बती** तथा **खोतानी रामायणों** में भी दशरथ के किसी यज्ञ का उल्लेख नहीं किया गया है। **तिब्बती रामायण** के अनुसार दशरथ ने ५०० कैलास निवासी ऋषियों से पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना की थी। उन्होंने दशरथ को एक फूल दिया था जिसे उनकी दो पत्नियों ने खाया था। फलस्वरूप दोनों को गर्भ रह गया।

३३३. **बाल्मीकि रामायण** में दशरथ के दो यज्ञों का वर्णन किया गया है। सुमंत्र के परामर्श के अनुसार दशरथ ऋष्यशृंग को बुलवाते हैं और उसके द्वारा पुत्र प्राप्त करने के उद्देश्य से अश्वमेध-यज्ञ करवाते हैं (दे० सर्ग ८, १४)। अनन्तर **ऋष्यशृंग** पुत्रेष्टि-यज्ञ भी करते हैं। उस समय देवता विष्णु से रावण-वध करने के लिए अवतार लेने की प्रार्थना कर रहे थे। विष्णु दशरथ के पुत्र के रूप में रावण का वध करने की प्रतिज्ञा करते हैं और पुत्रेष्टि-यज्ञ की अग्नि में प्रकट होकर दशरथ को पायस प्रदान कर देते हैं। दशरथ उस पायस को अपनी तीन पत्नियों में बाँट देते हैं जिससे तीनों गर्भवती हो जाती हैं (सर्ग १५ १६)। अनन्तर विष्णु-अवतार राम की सहायता करने के लिए देवता ब्रह्मा की आज्ञानुसार अप्सराओं और गंधर्वियों से वानरों की उत्पत्ति करते हैं (सर्ग १७)। **बृहद्धर्मपुराण** में शिव उसी अवसर पर हनुमान के रूप में राम की सहायता करने की प्रतिज्ञा करते हैं (दे० पूर्वखंड, अध्याय १८)।

बाल्मीकि रामायण में पहले दशरथ के अश्वमेध यज्ञ ही का वर्णन किया गया था; बाद में पुत्रेष्टि-यज्ञ का वर्णन भी जोड़ दिया गया है।

बाद की राम-कथाओं में प्रायः केवल पुत्रेष्टि-यज्ञ का वर्णन किया गया है। निम्नलिखित राम-कथाओं में केवल पुत्रेष्टि-यज्ञ का उल्लेख किया गया है— **रघुवंश, भट्टिकाव्य, रामायण काकाविन्, जानकीहरण, सेरी राम, राम कियेन, पद्मपुराण** (पतालाखंड, अध्याय ११२ तथा उत्तरखंड, अध्याय २६६) । **अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस** आदि ।

भट्टिकाव्य तथा **रामायण काकाविन** में दशरथ की पुत्रेष्टि का तो वर्णन किया गया है लेकिन किसी दिव्य पुरुष के दिए हुए पायस का उल्लेख नहीं मिलता। **भट्टिकाव्य** में रानियां यज्ञ के पश्चात् पायस के स्थान पर **हुतोच्छिष्ट** का कुछ भाग खाती हैं (दे० सर्ग १) ।

३३४. आगे चलकर पुत्रेष्टि-यज्ञ के वर्णन में हनुमान-विभीषण अथवा सीता के जन्म की ओर भी निर्देश किया गया है। **आनन्द रामायण** के अनुसार एक गीध ने कैकेयी का पायस उसके हाथ से छीन लिया तथा उसे अंजनी पर्वत पर फेंक दिया; इस पर अन्य रानियों ने अपने पायस का कुछ भाग कैकेयी को दे दिया (दे० १, १) । अन्य रचनाओं में कहा जाता है कि कैकेयी को क्रोध हुआ था क्योंकि दशरथ ने सर्वप्रथम उसे पायस नहीं दिया था। वह मान कर रही थी कि एक चील ने आकर उसके हाथ से पायस को छीन लिया और उसे अंजनी के मुख में गिरा दिया फलतः अंजनी को गर्भ हुआ और उसने हनुमान जी को जन्म दिया[1] ।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में यज्ञ के पश्चात् ऋषि ने दशरथ से उनकी पत्नियों के नाम पूछे थे। भूल से दशरथ के मुंह से कैकषी (रावण की माता) का नाम निकला। इसपर ऋषि ने पायस के चार भागों के पाँच भाग बना दिये। अन्तर जब दशरथ अपनी पत्नियों के यहाँ गए थे एक काक ने पायस का एक भाग चुरा लिया और उसे कैकषी के पास लाया। उसे खाने के फलस्वरूप कैकषी ने विभीषण को जन्म दिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १) ।

सेरी राम तथा **राम कियेन** में सीता के जन्म का संबंध पुत्रेष्टि यज्ञ से स्थापित किया गया है। **सेरी राम** में एक काक पायस का श्रेष्ठ मांश चुराता है। इस पर याजक कहता है कि यह काक दशरथ की पत्नी के

---

१. दे० ई० मूर, दि हिन्दू पाथेयोन, पृ० ३१५ पी. थोमसः लिजन्ड्स आव इंडिया

पुत्र राम के द्वारा मारा जाएगा तथा जो इस पायस को खायगा उसके एक पुत्री उत्पन्न होगी जिसका विवाह राम के साथ होगा। बाद में रावण उस पायस को खाता है। **राम कियेन** के अनुसार दशरथ-यज्ञ के पायस की सुगंध लंका तक पहुँच गई थी। मंदोरी ने रावण से उसे मांगा। उसपर रावण ने काकना नामक राक्षसी को पायस चुराने का आदेश दिया था। राक्षसी ने काक का रूप धारण कर पायस का अष्टमांश चुराया और उसे मदोदरी को दे दिया। फलस्वरूप मदोदरी ने सीता को जन्म दिया था (दे० अध्याय १०)।

३३५. अर्वाचीन रचनाओं के पुत्रेष्टि यज्ञ वर्णन में अनेक गौण परिवर्त्तन भी किए गए हैं।

पद्मपुराण के गौडीय पातालखंड में शान्ता अपने पिता दशरथ के पास अपने पति की ऋष्यशृंग की शक्ति का वर्णन करती है। यह सुनकर दशरथ ऋष्यशृंग द्वारा पुत्रेष्टि-यज्ञ करने का संकल्प करते हैं (दे० अध्याय १४)। **पद्मपुराण** के एक अन्य स्थल पर नामदेव नामक साधु दशरथ को पुत्रेष्टि-यज्ञ की विधि बताते हैं (दे० पातालखंड-अध्याय ११२) **काश्मीरी रामायण** में नारायण दशरथ को एक स्वप्न में दर्शन देकर उनको उनके पुत्र बनने का निश्चय प्रकट करते हैं। वसिष्ठ से परामर्श लेकर दशरथ पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाते हैं।

ब्रह्मपुराण में श्रवणकुमार का वध करने के पश्चात् दशरथ वसिष्ठ के परामर्श से अश्वमेध-यज्ञ करवाते हैं। इसमें एक आकाशवाणी सुनाई पड़ती है कि राजा अपने ज्येष्ठ पुत्र के प्रसाद द्वारा पाप से मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे। इसके बाद दशरथ के किसी अन्य यज्ञ का उल्लेख नहीं हुआ। (दे० अध्याय १२३)। अन्य राम-कथाओं में भी दशरथ का यज्ञ, जिसके द्वारा उन्होंने रामादि पुत्रों को प्राप्त किया था, वास्तव में अंधमुनि-पुत्र-वध के प्रायश्चित् के लिए किया गया था[१]।

अनेक रामकथाओं में पुत्रेष्टि-यज्ञ की अग्नि में विष्णु के स्थान पर अग्नि देव प्रकट होकर पायस प्रदान करते हैं; उदाहरणार्थ: **नृसिंह-पुराण**

---

१. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न १ ई० मूर, वही
पी० थोमस, वही।

(अध्याय ४७),**अध्यात्म रामायण** (१,१), **आनन्द रामायण** (१,३), **रामचरितमानस** आदि ।

ख. अवतारवाद का विकास

३३६. अवतारवाद के प्रथम रूप के अनुसार विष्णु ने चार अंशों में अवतार धारण किया था। पायस के विभाजन में अवश्य पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती हैं फिर भी चारों भाई विष्णु ही के अंशावतार माने गए हैं। दाक्षिणात्य पाठ में कहा गया है कि पायस के विभाजन के समय कौशल्या को आधा भाग मिला था और सुमित्रा तथा कैकेयी को एक चतुर्थांश (दे० सर्ग १६, २६), फिर भी तीनों भाई भरत लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न आगे चलकर विष्णु के एकएक चतुर्थांश से समन्वित माने जाते हैं (दे० सर्ग १८, १३-१४)। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अंतिम रूप सबसे प्राचीन है और चारों भाई ही विष्णु के चतुर्थांश माने जाते थे। **हरिवंश, विष्णुपुराण, वायुपुराण** आदि में विष्णु के चार रूपों में प्रकट होने का उल्लेख मिलता है—

कृत्वात्मानं महाबाहुश्चतुर्धा प्रभुरीश्वरः ।
(हरिवंश, ४१,१२२)

फिर भी प्रारम्भ ही से राम को सब से अधिक महत्त्व दिया गया था तथा **महाभारत** में केवल विष्णु के राम-रूप में प्रकट होने का उल्लेख किया गया है।

३३७. अंशावतार का एक अन्य रूप भी मिलता है जिसमें पंचरात्र के एक सिद्धान्त का सहारा लिया है। इस सिद्धान्त के अनुसार नारायण चतुर्व्यूह के रूप में आविर्भूत हैं अर्थात् वासुदेव, सकर्षन, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध। **विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (अध्याय २१२) तथा **नारद पुराण** (उत्तरखंड, अध्याय ७५) के अनुसार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमशः उपर्युक्त चारों व्यूहों से अभिन्न हैं।

३३८. बाद की अधिकांश रचनाओं में राम विष्णु के पूर्णावतार माने गए हैं। प्रारम्भ में भरत तथा शत्रुघ्न को छोड़कर केवल लक्ष्मण के अवतारत्व का उल्लेख किया जाता है। **तिब्बती रामायण** में राम तथा लक्ष्मण क्रमशः विष्णु तथा विष्णु के पुत्र के अवतार माने गए हैं। अन्य रचनाओं में केवल राम तथा लक्ष्मण का उल्लेख है जो विष्णु तथा शेष के अवतार हैं; उदाहरणार्थ **नृसिंहपुराण** (अध्याय ४७) तथा जावा का **सेरत कांड**।

अधिकांश अर्वाचीन रचनाओं में चारों भाई राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न क्रमशः विष्णु, शेष, शंख और सुदर्शन के अवतार माने गए हैं। इसका प्रथम उल्लेख संभवतः १४ वीं शताब्दी के **उदारराघव** में किया गया हो (दे० सर्ग २)। बाद की राम कथाओं में इसका प्रायः उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थः **अध्यात्म रामायण** (१,४,१८ ३,२,१५,६) **पद्मपुराण** (उत्तरखंड, २६६,६४-६५) ,**आनन्द रामायण** (६,६), **सत्योपाख्यान, काश्मीरी रामायण, रामाकेयेन,** पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ और १३।

इन रचनाओं में विष्णु के अवतार होने के अतिरिक्त राम प्रायः परब्रह्म, निर्गुण ब्रह्म, मूलप्रकृति आदि भी माने जाते हैं (दे० अध्यात्म रामायण १,१,१, आदि ।

अद्भुत रामायण के अनुसार विष्णु तथा शेष ने राम तथा लक्ष्मण में अवतार धारण कर लिया था परन्तु विष्णु की दाहिनी तथा बाईं बांह क्रमशः भरत तथा शत्रुघ्न के रूप में प्रकट हुई थी (दे० सर्ग ४) ।

३३६. सीता का लक्ष्मीत्व राम के विष्णुत्व का एक स्वाभाविक विकास प्रतीत होता है। सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का उल्लेख **वाल्मीकि रामायण** के एक अपेक्षाकृत अर्वाचीन सर्ग में पाया जाता है, जिसमें अग्निपरीक्षा के अवसर पर देवता आकर राम की विष्णु-रूप में स्तुति करते हैं (दे० ६, सर्ग ११७,२७)। इस सर्ग में राम, कृष्ण तथा विष्णु तीनों की अभिन्नता का भी उल्लेख किया गया है। यह **वाल्मीकि रामायण** का एक मात्र स्थल है जहाँ कृष्ण का नाम आया है। उत्तरकांड में कुशध्वज की पुत्री वेदवती की कथा मिलती है जिसके अनुसार कुशवती सीता के रूप में प्रकट होती है (दे० सर्ग १७)। इस कथा की रचना उस समय की गई होगी जब सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की भावना व्यापक नहीं हो पाई थी।

सीता के लक्ष्मीत्व का उल्लेख दाक्षिणात्य पाठ के उत्तरकांड के २७ वें सर्ग के बाद के प्रक्षिप्त सर्गों में भी मिलता है, लेकिन ये सर्ग अन्य पाठों में नहीं पाये जाते (दे० ७, ३७ प्र० सर्ग ३ और ४)।

वायु, ब्रह्मांड और विष्णु जैसे प्राचीन महापुराणों में तथा **रघुवंश** में सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की ओर निर्देश नहीं किया गया है, यद्यपि इन रचनाओं में राम विष्णु के अवतार माने गये हैं। **हरिवंश** (अध्याय

४१), **भागवत पुराण** (६,१०) तथा अधिकांश अर्वाचीन रचनाओं के अनुसार सीता तथा लक्ष्मी अभिन्न ही हैं।

राम-तापनीय उपनिषद् में पहले पहल सीता तथा प्रकृति की अभिन्नता का उल्लेख किया गया है। बाद के साम्प्रदायिक साहित्य में लक्ष्मी के अतिरिक्त सीता मूलप्रकृति, योगमाया तथा परमशक्ति (दे० अध्या० रा० १,७,२७) भी मानी जाती हैं।

एषा सा जानकी लक्ष्मीर्योगमायेति विश्रुता ॥ ११ ॥

(अध्यात्म रामायण २,५)

मूल प्रकृतिरित्येके प्राहुर्मायेति केचन ॥ २२ ॥

(वही ३,३)

३४०. सीता के अवतारवाद के विषय में अन्य उल्लेख भी मिलते हैं। **सौर पुराण** में कहा गया है कि जनक ने तपस्या द्वारा पार्वती को संतोष दिया था और फलस्वरूप पार्वती उनकी पुत्री के रूप में प्रकट हुई।

पार्वत्यंशसमुद्भवा जनकेन पुरा गौरी तपसा तोषिता यतः

(अध्याय ३०,५१)

महाभागवत पुराण के अनुसार सीता और लक्ष्मी अभिन्न तो हैं, लेकिन लक्ष्मी स्वयं देवी के अंश से उत्पन्न मानी जाती हैं (दे० अध्याय ३६)। **स्कंद पुराण** के माहेश्वर खंड के अनुसार ब्रह्मविद्या सीता के रूप में अवतरित हुई (दे० अध्याय ८,६५)।

श्याम के **राम-जातक** में रावण ने इन्द्र का रूप धारण कर स्वर्ग की रानी को धोखा दिया। रावण से प्रतिकार लेने के लिये वह सीता के रूप में प्रकट होती है। इसके अनुसार इंद्राणी सीता में अवतरित हैं। **अद्भुत रामायण** आदि रचनाओं में अंबरीष की पुत्री श्रीमती सीता के रूप में प्रकट हुई (दे० अद्भुत रामायण, सर्ग २-४)।

ग—अवतार के कारण

३४१. प्रारम्भ से लेकर रावण-वध ही विष्णु के राम के रूप में प्रकट होने का उद्देश्य कहा गया है (दे० वाल्मीकि रामायण १, १६)। बाद में **भगवद्गीता** के अनुकरण पर रामावतार के विषय में विष्णु-अवतारों के सामान्य उद्देश्य का भी उल्लेख होने लगा—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

(भगवद्गीता, अध्याय ४)

राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् इसका भी प्रायः उल्लेख मिलता है कि अपने भक्तों को भवसागर के पार पहुँचाने अथवा उनको अपना सगुण रूप दिखलाने के उद्देश्य से निर्गुणब्रह्म राम के रूप में प्रकट हो जाते हैं।[1]

रामावतार के इस उद्देश्य के अतिरिक्त विष्णु के अवतार धारण करने के कई कारणों का उल्लेख मिलता है। इसके सम्बन्ध में अनेक वरों अथवा शापों की कथाएं पाई जाती हैं।

(अ) व र

३४२. **वाल्मीकि रामायण** के एक प्रक्षेप में जो केवल दाक्षिणात्य पाठ में मिलता है, कश्यप की तपस्या का उल्लेख किया गया है जिसके फलस्वरूप वह वामनावतार मे हरि को पुत्रवत् प्राप्त करते हैं (दे० १,२६, १०-१७) **भागवत पुराण** में सुतपावृश्नि क्रमशः कश्यप, अदिति तथा वसुदेव-देवकी के रूप में प्रकट होते हैं (दे० १०,३)।

अर्वाचीन राम-कथाओं में कश्यप तथा अदिति के क्रमशः दशरथ तथा कौशल्या के रूप में प्रकट होने का उल्लेख मिलता है; उदाहरणार्थः **अध्यात्म रामायण** (१,२,२५,१,४,१४,) **रामचरितमानस** (१,१८६,३,), **काश्मीरी रामायण** (अयोध्याकाड, न० १३)।

३४३. स्वायभू मनु की तपस्या की कथा का सर्वप्रथम उल्लेख **पद्मपुराण** के उत्तरखड में मिलता है। १००० वर्ष तक तपस्या करने के पश्चात् स्वयभू को विष्णु से एक वर मिला था। उस वर के बल पर उन्होंने तीन

---

१. अर्वाचीन राम-कथाओं मे प्रायः कहा गया है कि जय-विजय नामक विष्णु के द्वारपाल सनकादि के शाप के वशीभूत होकर रावण-कुम्भकर्ण के रूप में प्रकट हो गए थे। रामचरितमानस मे इसका भी उल्लेख मिलता है कि इन दोनों के हित के लिए भगवान ने राम का अवतार धारण कर लिया।

मुकुत न भए हते भगवाना । तीनि जन्म द्विज बचन प्रमाना ।
एक बार तिन्ह के हित लागी । धरेउ सरीर भगत अनुरागी ।

(बालकाड, १२२,१-२)

रावण-कुम्भकर्ण के पूर्वजन्म की अन्य कथाओं के लिए दे० आगे अनु० ५३७

जन्मों में विष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त किया था। इसके अनुसार स्वायंभू तथा उनकी पत्नी क्रमशः दशरथ, कौशल्या, वसुदेव देवकी तथा कलियुग में शंभलग्रामवासी ब्राह्मण हरिगुप्त तथा उनकी पत्नी देवप्रभा के रूप में प्रकट होते हैं (दे० उत्तरखंड, अध्याय २६६)। **रामरहस्य** में भी इस प्रकार की कथा पाई जाती है लेकिन हरिगुप्त के स्थान पर हरिव्रत का उल्लेख किया गया है (दे० १ ला सर्ग)। **रामचरितमानस** मे भी मनु,-शतरूपा तथा दशरथ कौशल्या का आमन्नता का निर्देश किया गया है (दे० १, १४१ आदि)

३४४. **स्कंदपुराण** के वैष्णव-खंड (अध्याय २४) तथा **आनन्द रामायण** (१,४,११७,१७०) में विष्णुभक्त धर्मदत्त तथा कलहा की कथा दी गई है, जिसके अनुसार दोनों क्रमशः दशरथ तथा कैकेयी के रूप में प्रकट हुए हैं।

(अ) शाप

३४५. भृगुशाप की कथा के प्राचीनतम रूप में किसी अवतार विशेष का उल्लेख नहीं किया गया है। **मत्स्यपुराण** में विष्णु के भृगु की पत्नी का वध करने पर भृगु उनको सात बार मनुष्यों में अवतार धारण कर लेने का शाप देते हैं,

तस्मात्त्वं सप्तकृत्वेह मानुषेषूपपत्स्यसे ॥

(अध्याय ४७,१०६)

वायु पुराण (अध्याय ६७) तथा **ब्रह्मांड पुराण** (अध्याय ७३) में भी ऐसी कथा मिलती है। **वाल्मीकि रामायण** के एक स्थल के अनुसार, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ में मिलता है, भृगु ने राम को बहुत वर्षों तक पत्नी-वियोग सहने का शाप दिया था। इस शाप के फलस्वरूप रामावतार में सीतात्याग की घटना हुई थी (दे० उत्तरकांड, सर्ग ५१)। **वह्निपुराण** में भृगुशाप रामावतार का कारण माना गया है (दे० पृ० १७०)। **योगवासिष्ठ** के अनुसार विष्णु ने पत्नी-वियोग के कारण व्याकुल भृगु का उपहास किया था, और इसपर भृगु ने शाप दिया कि तुम भी स्त्री के वियोग से व्याकुल हो जाओगे। इस शाप के वशीभूत विष्णु राम के रूप में प्रकट हुए (दे० वैराग्य-प्रकरण, अध्याय १)।

३४६. **योगवासिष्ठ** में दो अन्य शापों का भी उल्लेख किया गया है, जिनके कारण विष्णु को राम का अवतार धारण करना पड़ा। किसी दिन

विष्णु ब्रह्मपुरी गए थे, जहाँ सनत्कुमार को छोड़कर सबों ने उनका स्वागत किया था। इसपर विष्णु ने सनत्कुमार को कामातुर बन जाने का शाप दिया तथा प्रत्युत्तर में सनत्कुमार ने विष्णु को अज्ञानता-प्राप्त हो जाने का शाप दिया। एक अन्य अवसर पर विष्णु ने देवशर्मा की पत्नी को डराया था जिससे वह मर गई थी। इसपर देवशर्मा ने विष्णु को पत्नीवियोग भोगने का शाप दिया था (दे० योगवासिष्ठ, १,१)।

३४७. **स्कंदपुराण** (वैष्णवखंड, अध्याय २०-२१), **शिवमहापुराण** (रुद्रसंहिता, युद्धखंड, अध्याय २३) तथा **आनन्द रामायण** (१,४,२०-११२) में वृन्दा-शाप का वर्णन किया गया है। दैत्य जलंधर शिव से युद्ध करते हुए अपनी पत्नी वृन्दा के सतीत्व के कारण अजेय है। इसपर विष्णु ने जय-विजय की सहायता से वृन्दा का सतीत्व नष्ट कर दिया था। वृन्दा ने जय-विजय को, जिन्होंने उसे राक्षस के रूप में डराया था, राक्षस बन जाने का शाप दिया तथा विष्णु को, जिन्होंने उसे जलंधर के रूप में धोखा दिया था, यह शाप दिया कि तुम मनुष्य बनोगे और ये दोनों तुम्हारी पत्नी का हरण करेंगे।

रामचरितमानस में विष्णु के वृन्दा का सतीत्व नष्ट करने का उल्लेख मात्र किया गया है। कथा में इस प्रकार परिवर्तन किया गया है कि जलंधर ही रावण के रूप में प्रकट होकर और राम के हाथ से मरकर परमपद प्राप्त कर लेता है।

छल करि टारेउ तासु ब्रत, प्रभु सुर-कारज कीन्ह।
जब तेहि जानेउ मरम तब, श्राप कोप करि कीन्ह॥ १२३॥
तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना॥
तहाँ जलंधर रावन भयऊ। रन हति राम परम पद दयऊ॥
(बालकांड)

३४८. नारद के शाप की कथा **शिवपुराण** तथा **अद्भुत रामायण** में मिलती है[1]। **अद्भुत रामायण** में कथा इस प्रकार है। अंबरीष की

१. इस कथा का एक प्राचीन रूप महाभारत में सुरक्षित है। उसमें सृंजय की पुत्री को प्राप्त करने के उद्देश्य से नारद और पर्वत एक दूसरे को वानरमुख देते हैं। (दे० शांतिपर्व, अध्याय ३०-३१)।

पुत्री श्रीमती को देखकर नारद तथा पर्वत दोनों उसको अंबरीष से मांगते हैं। अंबरीष कहते हैं कि जिसको कन्या चुन लेगी वही उसका पति बन जायगा। इसपर नारद तथा पर्वत दोनों अलग अलग विष्णु के पास जाकर एक दूसरे को 'वानरमुख' दिलाते हैं। विष्णु हँसकर दोनों की प्रार्थना पूरी करते हैं। स्वयंवर के समय श्रीमती नारद तथा पर्वत को न देखकर केवल दो वानरों को तथा दोनो के बीच में सुन्दर युवक के रूप में विष्णु को देखती है। वह विष्णु के गले में माला डाल देती है और विष्णु उसे बैकुंठ ले जाते हैं। बाद में नारद तथा पर्वत विष्णु तथा श्रीमती को राम तथा सीता के रूप में प्रकट होने का शाप देते हैं (दे० सर्ग ३-४)। **शिवपुराण** में जो कथा मिलती है वह **रामचरितमानस** के वृत्तान्त के अधिक निकट है। श्रीमती को प्राप्त करने के लिए नारद ने विष्णु के पास जाकर हरिरूप मांगा। विष्णु ने उसे हरि अर्थात् वानर का मुख दिया और स्वय श्रीमती के स्वयवर में जाकर उसे प्राप्त किया। उस स्वयंवर में दो शिवगणों ने नारद का उपहास किया और नारद के शाप क वशीभूत वे रावण और कुंभकर्ण बन गए। नारद ने विष्णु को यों शाप दिया—तुम मनुष्य बनकर वानरों के साथ विरह का दुःख भोगो (**त्व मनुष्यो भूत्वा विरहिदुख वानरैः सहानुभव**। (दे० रूद्रसंहिता, सृष्टिखड, अध्याय ३-४)। **रामचरितमानस** में अंबरीष की पुत्री श्रीमती के स्थान पर शीलनिधि की पुत्री विश्वमोहिनी का उल्लेख किया गया है (दे० बालकांड १२३-५ आदि)।

४

दशरथ के विवाह और संतति

क. विवाह, कथाएँ

३४९. दशरथ के विवाहों के विषय में अनेक कथाएं मिलती हैं जिनका यहां संक्षेप में वर्णन किया जाता है।

आनन्द रामायण में दशरथ-कौशल्या-विवाह का विस्तृत वर्णन किया गया है। ब्रह्मा रावण के पास जाकर कहते हैं कि 'दशरथ तथा कौशल्या का विवाह शीघ्र ही होने वाला है, इन दोनों का पुत्र तुम्हारा वध करेगा।' इस पर रावण सरयू में दशरथ की नौका तोड़कर उनको पराजित करता है। दशरथ तथा सुमन्त्र एक नौकाखंड पर समुद्र की ओर बह जाते हैं। इतने में रावण कौशल्या को हर लेता है और उसे एक पेटिका में रखकर तिमिंगल नामक मत्स्य की रक्षा में छोड़ देता है। तिमिंगल उस पेटिका को एक द्वीप पर रख कर किसी अन्य मत्स्य से युद्ध करता है। दशरथ तथा सुमन्त्र उस द्वीप में पहुँचते हैं और पेटिका को देखकर उसे खोल देते हैं। इसपर दशरथ तथा कौशल्या गांधर्व विवाह करते हैं और तीनों पेटिका में छिप जाते हैं। अनन्तर रावण ब्रह्मा के सामने डींग मारता है कि उसकी भविष्यद्वाणी झूठी सिद्ध हुई। ब्रह्मा से यह सुनकर कि दोनों का विवाह हो चुका रावण पेटिका को मँगवाता है और उसे खोलकर कौशल्या, दशरथ तथा सुमंत्र को देखता है। ब्रह्मा रावण को तीनों का वध करने से रोक लेते हैं। अनन्तर पेटिका साकेत भेजी जाती है जहाँ दशरथ, सुमित्रा, कैकेयी तथा सात सौ अन्य स्त्रियों से भी विवाह करते हैं (दे० आनन्द रामायण १,१,३६-७४)। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३, **स्वायंभुव रामायण** तथा **रामचरितमानस** के कुछ संस्करणों के एक क्षेप में इस कथा का भी उल्लेख किया गया है।

३५०. **पउमचरिय** के अनुसार दशरथ तथा जनक दोनों रावण के भय से परदेश में यात्रा करते हैं। संयोग से वे कैकेयी के स्वयंवर में पहुचते हैं और कैकेयी दशरथ के गले में माला डाल देती है। बाद में अपनी राजधानी लौटने के पश्चात् दशरथ और तीन विवाह करते है (दे० पर्व २४)।

सत्योपाख्यान में कैकेयी तथा दशरथ का विवाह इस प्रकार वर्णित है। किसी दिन नारद दशरथ के पास पहुँचकर कैकय की पुत्री के सौंदर्य की प्रशंसा करते हैं तथा यह भी कहते हैं कि कैकेयी की हस्तरेखा से प्रतीत होता है कि उसके एक महान् पुत्र उत्पन्न होगा। बाद में दशरथ एक देवियोगिनी को भेज देते हैं जो कैकेयी से दशरथ की प्रशंसा करके उसमें दशरथ की पत्नी बनने की इच्छा उत्पन्न करती है। योगिनी के कहने पर कैकेयी उदासीन हो जाती है जिसपर उसकी माता, कारण जानकर, कैकय से दशरथ-कैकेयी का विवाह करवाने का अनुरोध करती है। बाद में कैकय दशरथ को बुलाकर उनको इस शर्त पर अपनी पुत्री देता है कि कैकेयी के पुत्र को राज्य दिया जाएगा (दे० सर्ग ५-७)।

३५१. (३) हिंदेशिया की राम-कथाओं में दशरथ के केवल दो विवाहों का उल्लेख किया गया है। **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण** में दशरथ एक नई राजधानी का निर्माण करते समय बांसों के समूह में सिंहासन पर बैठी हुई एक सुन्दर स्त्री को देखते हैं जिसका नाम मदु देवी है। दशरथ तथा मदु देवी के विवाहोत्सव में बलिया दरी नामक एक उपपत्नी टूटनेवाली पालकी को संभाल लेती है। इसपर दशरथ उसे अपनी धर्मपत्नी बनाकर उसके आगामी पुत्र को राज्य दिलाने की प्रतिज्ञा करते हैं।

जावा के **सेरत कांड** में दशरथ बांस के समूह में पहले बलियादरू नामक अप्सरा को देखकर उसके साथ विवाह करते हैं तथा बाद में उसी स्थान पर बांदोदरी को भी प्राप्त करते हैं। बांदोदरी अपना नाम देवी रागो में बदल लेती है। रावण के उसे प्राप्त करने के प्रयत्न का वर्णन सीता की जन्म-कथा के अन्तर्गत किया जाएगा (दे० आगे अनु० ३८६)।

ख. संतति

३५२. दशरथ की पत्नियों तथा संतति की संख्या के विषय में बहुत विभिन्नता पाई जाती है। **वाल्मीकि रामायण** में तीन पत्नियों तथा चार पुत्रों का उल्लेख किया गया है। अधिकांश राम-कथाओं में यही ऐसा कथन मिलता है। विदेश में केवल दो पत्नियों का प्रायः उल्लेख किया जाता है, फिर भी **रेआम** तथा **राम कियेन** के अनुसार दशरथ के चार पुत्र तथा तीन पत्नियां थीं।

गुणभद्रकृत जैन **उत्तरपुराण** में दशरथ की तीन पत्नियों का उल्लेख

किया गया है। राम की माता का नाम सुबाला है, लक्ष्मण की माता कैकेयी, और एक तीसरी पत्नी, जिसका नाम नहीं दिया गया है, भरत तथा शत्रुघ्न की माता है (दे० ६७, १४८ आदि)। मराठी **भावार्थ रामायण** में भी भरत तथा शत्रुघ्न सहोदर भाई माने जाते हैं।

३५३. **जैन पउमचरिय** तथा बौद्ध **दशरथ कथानम्** में पहले पहल दशरथ की चार पत्नियों का उल्लेख किया गया है, जिनके एक एक पुत्र उत्पन्न होता है। पुत्रों के नाम **वाल्मीकि रामायण** से भिन्न नहीं हैं लेकिन **पउमचरिय** के अनुसार कौशल्या का एक दूसरा नाम अपराजिता है तथा शत्रुघ्न की माता सुप्रभा मानी गई है (दे० पर्व २२)। **पद्म-पुराण** के एक स्थल पर दशरथ की चार पत्नियों का भी उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार भरत तथा शत्रुघ्न की माताएं क्रमशः सुरूपा तथा सुवेषा के नाम से पुकारी जाती थीं (दे० पाताल-खंड, अध्याय ११२)। एक पाश्चात्य वृत्तान्त (न० १४) में भी दशरथ की चार पत्नियों का निर्देश किया गया है लेकिन इसमें **दशरथ कथानम्** की भांति उनके नाम नहीं दिए गए हैं।

३५४. **वाल्मीकि रामायण** के दाक्षिणात्य पाठ में दशरथ तथा रोमपाद के किसी विशेष सम्बन्ध की ओर निर्देश किया गया है **(सख्यं संबंधकं चैव तदा तं प्रत्यपूजयत्** दे० १, ११, १७); फिर भी दशरथ तथा शान्ता के किसी संबंध का उल्लेख नहीं मिलता, अतः शान्ता रोमपाद की कन्या मानी गई है (दे० १, ६, १३)। गौडीय (सर्ग १०) तथा पश्चिमोत्तरीय (सर्ग ६) पाठों में इसका स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया गया है कि दशरथ ने निस्सन्तान लोमपाद को अपनी पुत्री शान्ता को दे दिया था—

कन्या चास्य महाभागा शान्ता नाम भविष्यति ॥ ३ ॥
अंगराजोऽनपत्यस्तु लोमपादो भविष्यति ।
स राजानं दशरथं प्रार्थयिष्यति भूमिपः ॥ ४ ॥
अनपत्याय मे कन्यां सखे दातुं त्वमर्हसि ।
शान्तां शान्तेन मनसा पुत्रार्थं वरवर्णिनीं ॥ ५ ॥
अनेन मे अनपत्याय दत्तेयं वरवर्णिनी ॥ २५ ॥

(गौ० रा० सर्ग १०)

भवभूति के **उत्तररामचरित** (दे० अंक १, प्रस्तावना), **स्कंद पुराण** (नागर खंड, अध्याय ६२), **पद्मपुराण** के गौडीय पाताल खंड (अध्याय १२) तथा श्याम देश के **रामजातक** में दशरथ की पुत्री शान्ता का उल्लेख मिलता है। हिंदेशिया के **सेरी राम** में शान्ता के स्थान पर किकुर्वी नाम पाया जाता है। चंद्रावती कृत **बंगाली रामायण** में कुकुआ नामक कैकेयी की एक पुत्री का उल्लेख किया गया है [१]। कहा जाता है कि **सुवर्चस रामायण** में शान्ता के प्रति सीता के शाप की तथा उसके पक्षी-योनि प्राप्त करने की कथा मिलती है [२]।

३५५. अधिकांश विदेशी राम-कथाओं में दशरथ की केवल दो पत्नियों का उल्लेख किया गया है। **तिब्बती रामायण** में दशरथ की दो पत्नियों के (जिनके नाम नहीं दिए गए हैं) एक एक पुत्र होता है (राम और लक्ष्मण)। **खोतानी रामायण** तथा **सेरी राम** की राफल्स हस्तलिपि में भी केवल राम तथा लक्ष्मण का उल्लेख किया गया है। **राम जातक** में भरत शत्रुघ्न का संकेत नहीं मिलता है, लेकिन इसमें राम-लक्ष्मण के अतिरिक्त शान्ता का उल्लेख पाया जाता है। जावा के **सेरत कांड** में दशरथ की दो पत्नियों के दो दो पुत्र होते हैं, ज्येष्ठा के राम तथा भरत और कनिष्ठा के लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न। **हिकायत महाराज रावण** में राम-लक्ष्मण कनिष्ठा के पुत्र माने जाते हैं और भरत-शत्रुघ्न ज्येष्ठा के पुत्र। **सेरी राम** में भी दशरथ की केवल दो पत्नियों का उल्लेख किया गया है; इसमें भी राम-लक्ष्मण सहोदर भाई माने जाते हैं तथा एक पुत्री का भी उल्लेख मिलता है, जो भरत-शत्रुघ्न की सहोदरी बहन है।

दशरथ जातक के अनुसार दशरथ की महिषी के तीन संतान थीं—राम, लक्ष्मण तथा सीता। इस महिषी की मृत्यु के बाद दशरथ ने एक दूसरी को महिषी के पद पर नियुक्त किया था और उसके भी एक पुत्र (भरत) उत्पन्न हुआ।

३५६. भरत तथा लक्ष्मण में से कौन ज्येष्ठ है इसके विषय में **वाल्मीकि रामायण** के पाठों में मतभेद है। **दशरथ जातक** की भांति उत्तरीय पाठ में भरत कनिष्ठ माने जाते हैं (दे० गौ० रा० १, १६, १०

---

१. दे० दिनेश चंद्रसेन : दि बंगाली रामायणस, पृ० १९७।

२. दे० रामदास गौड कृत हिंदुत्व (पृ० १४१) तथा ऊपर अनु० २१५।

आदि) लेकिन दाक्षिणात्य पाठ में लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न कनिष्ठ हैं। फिर भी दाक्षिणात्य पाठ के एक स्थल से ऐसी ध्वनि निकलती है कि भरत कनिष्ठ ही थे। युद्ध के बाद राम से मिलने के अनन्तर भरत ही लक्ष्मण का भी अभिवादन करते हैं—

ततो लक्ष्मणमासाद्य वैदेहीं च परंतपः।
अथाभ्यवादयत्प्रीतो भरतो नाम चाब्रवीत्॥ ४१॥
(६, १२७)

जैन **उत्तर पुराण, दशरथ जातक** तथा **प्रतिमानाटक** में भी (दे० अंक ३) भरत लक्ष्मण के अनुज माने गए हैं। फिर भी अधिकांश राम-कथाओं के अनुसार भरत लक्ष्मण के अग्रज हैं। **रघुवंश** में ऐसा ही है; इसके फलस्वरूप युद्ध के पश्चात् लक्ष्मण ही भरत का अभिवादन करते हैं (दे० १३, ७३)।

भरत तथा लक्ष्मण के विषय में उपर्युक्त विभिन्नता को लेकर **भरत-ज्यैष्ठ्यनिर्णय** की रचना की गई है, जिसमें भरत को ज्येष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है [1]।

ग वं शा व ली

३५७. वाल्मीकि रामायण की वंशावली तथा कालिदासकृत **रघुवंश** की वंशावली में बहुत अन्तर है। वाल्मीकि के अनुसार २३वाँ नाम दिलीप है, २६वाँ रघु, ३८वाँ अज तथा ३६ वाँ दशरथ (दे० १, ७०)। अधिकांश पुराणों में इससे मिलती जुलती वंशावली मिलती है। कालिदास के अनुसार दिलीप, रघु, अज, दशरथ में क्रमशः पिता-पुत्र का संबंध है। बाद की बहुत सी राम-कथाओं में कालिदास की वंशावली ही प्रमाणिक मानी गई है; उदाहरणार्थ - **प्रतिमानाटक, पद्मपुराण** का गौडीय पाताल-खंड, **उदारराघव, अग्निपुराण** आदि।

खोतानी रामायण में सहस्रबाहु दशरथ के पुत्र माने गए हैं तथा राम-लक्ष्मण सहस्रबाहु के ही पुत्र हैं। **सेरी राम** में नामावली इस प्रकार है नवी अदम, दशरथ रामन, दशरथ चक्रवर्ती तथा दशरथ। श्याम के **रामजातक** में दशरथ रावण के चाचा माने जाते हैं—दशरथ राज्य से

---

१. दे० मद्रास कैटालाग न० आर० ३४९२ सी।

वंचित होकर चले जाते हैं और एक नया राज्य स्थापित करते हैं (ऐसा प्रतीत होता है कि इस कथा में वैश्रवण तथा दशरथ का एकीकरण किया गया है)। दशरथ का भतीजा रावण भी एक नई राजधानी (लंका) का निर्माण करता है तथा दशरथ की पुत्री शांता को हर लेता है। बाद में, दशरथ के दो पुत्र राम तथा लक्ष्मण अपनी बहन शांता के अपहरण का प्रतिकार करने के लिए रावण को पराजित करते हैं। इस भूमिका के पश्चात् ही रामायण की कथा प्रारम्भ होती है जिसमें रावण द्वारा सीताहरण के कारण एक नये युद्ध का वर्णन किया गया है।

सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार लक्ष्मण, भाई न होकर, राम के सखा मात्र हैं तथा राम स्वयं विष्णु के सेनापति के पुत्र हैं। एक अन्य विकृत वृत्तान्त के अनुसार राम परमेश्वरी के पुत्र माने गए हैं[1]।

---

१. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १८, भाग ३, पृ० ३८३।

५

राम-सीता-विवाह

क. धनुर्भंग

३५८. प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** में राम द्वारा धनुर्भंग के पश्चात् चारों भाइयों के विवाह का वर्णन किया गया है। **महाभारत** के रामोपाख्यान में, जो रामायण के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है, न तो धनुर्भंग और न राम को छोड़कर अन्य भाइयों के विवाह का निर्देश किया गया है (दे० ३, २६१)। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में केवल राम-सीता-विवाह का उल्लेख मिलता था। धनुर्भंग तथा अन्य भाइयों का वृत्तान्त बाद में जोड़ दिया गया होगा। इस अनुमान की पुष्टि इस बात से होती है कि **वाल्मीकि रामायण** के अरण्यकांड में लक्ष्मण को स्पष्ट शब्दों में अविवाहित कहा गया है।

वाल्मीकि के कथानक का विकास दिखलाने के पूर्व उन रचनाओं का उल्लेख करना है जहाँ **महाभारत** की भांति धनुर्भंग का प्रसंग वर्णित नहीं है। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में विश्वामित्र के स्थान पर जनक ही दशरथ से राम तथा लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए मांगते हैं तथा राम को पुरस्कारस्वरूप अपनी दत्तक पुत्री सीता प्रदान करते हैं। **तिब्बती रामायण** के अनुसार सीता कृषकों द्वारा पाली जाती है; इन्हीं कृषकों के अनुरोध से वनवासी राम अपनी तपस्या छोड़कर सीता के साथ विवाह करते हैं। **खोतानी रामायण** में वनवास के समय राम तथा लक्ष्मण दोनों ही के सीता से विवाह करने का उल्लेख किया गया है। **दशरथ जातक** में राम वनवास के पश्चात् अपनी सहोदरी बहन के साथ विवाह करते हैं। दोनों अन्य बौद्ध कथाओं में राम के विवाह का उल्लेख नहीं किया गया है (दे० अनामक जातकम् तथा दशरथ कथानम्)।

३५९. **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार विश्वामित्र जनक के यज्ञ के अवसर पर राम-लक्ष्मण को मिथिला ले जाते हैं (सर्ग ३१) और वहाँ पहुंचकर जनक से शिव-धनुष दिखलाने की प्रार्थना करते हैं। इस पर जनक कहते हैं कि शिव ने मेरे पूर्वज देवरात को यह धनुष दे दिया था। सीता के भूमि से प्रकट होने के पश्चात् जनक ने प्रण किया था कि जो

शिवधनुष चढ़ा सके उसी को सीता पत्नीस्वरूप दी जाएंगी। बहुत से राजाओं ने प्रयत्न किया तथा असफल होने पर उन्होंने मिथिला का अवरोध किया। जनक ने देवताओं की भेजी हुई सेना से उनको पराजित किया (सर्ग ६६)। अनन्तर राम धनुष चढ़ाकर उसे तोड़ते हैं जिसपर दशरथ को बुलाया जाता है तथा राम के अतिरिक्त लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न भी क्रमशः उर्मिला, मांडवी तथा श्रुतकीर्ति से विवाह करते हैं (सर्ग ६७ ७३)।

राम-विवाह के इस वृत्तान्त में धनुर्भंग को एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। उपर्युक्त रचनाओं को छोड़कर सब राम कथाओं में धनुर्भंग का वर्णन प्रायः वाल्मीकि के अनुसार किया गया है। **महावीरचरित** के अनुसार विश्वामित्र के आश्रम में ही राम-लक्ष्मण सीता-उर्मिला को देखकर उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। उसी आश्रम में रावण एक दूत द्वारा सीता को मांगता है तथा राम द्वारा धनुर्भंग भी किया जाता है (दे० अंक १)। **अनर्घ-राघव** में भी रावणदूत शौष्कल, मिथिला में आकर रावण की ओर से सीता को मांगता है तथा धनुष-परीक्षा को रावण के अयोग्य बताता है। राम के धनुर्भंग के पश्चात् चारों भाइयों के विवाह के निश्चय हो जाने पर शौष्कल रावण के पास लौटता है (अंक ३)। **सत्योपाख्यान** में **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार सीता स्वयंवर का वर्णन किया गया है, जिसमें बहुत से राजा धनुष-परीक्षा में असफल होते हैं। लेकिन इसमें प्रहस्त के आगमन का भी उल्लेख किया गया है। उस स्वयंवर के पश्चात् ही वाल्मीकि के अनुसार राम द्वारा धनुर्भंग का वर्णन मिलता है (दे० उत्तरार्द्ध, सर्ग ३)।

उपर्युक्त वृत्तान्तों तथा **रघुवंश** आदि अधिकांश प्राचीन राम-कथाओं में वाल्मीकि के अनुसार धनुर्भंग के अवसर पर अन्य राजाओं की उपस्थिति का उल्लेख नहीं किया गया है तथा प्रायः चारों भाइयों के विवाह का निर्देश मिलता है। **भट्टिकाव्य, सेरी राम, रेआम केर** तथा **राम कियेन** में केवल राम-सीता के विवाह का उल्लेख मिलता है।

३६०. **वाल्मीकि रामायण** के बालकांड के अनुसार देवताओं ने देवरात को शिव का धनुष दे दिया था (दे० १,३१ तथा १,६६)। आगे चलकर सीता अनुसूया से कहती हैं कि देवरात से प्रसन्न होकर वरुण ने उसे एक धनुष प्रदान किया था (दे० २,११८,३६)। **भट्टिकाव्य, पद्मपुराण** के बंगीय उत्तरखंड [1] तथा **राम कियेन** आदि में ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि शिव ने उस धनुष से त्रिपुर को नष्ट किया था।

१. जे० ए० सो० बें० १८४२ पृ० ११२१।

सत्योपाख्यान में शिव, जनक को स्वप्न में दर्शन देकर कहते हैं कि सीता को धनुर्भग करने वाले को ही दिया जाना चाहिए (दे० उत्तरार्ध अं २)।

अनेक राम-कथाओं के अनुसार जनक ने ही उस धनुष को प्राप्त किया था। **पद्मपुराण** के पातालखंड के अनुसार जनक सोचते हैं कि राम के साथ सीता के विवाह का प्रबन्ध कैसा किया जाए तथा इसके विषय में शिव-पार्वती से प्रार्थना करते हैं। इस पर शिव ने उसे एक ऐसा धनुष दे दिया जिसे तोड़ने में राम ही समर्थ होंगे (दे० अध्याय ११२)। **काश्मीरी रामायण** के अनुसार शिव ने जनक को इस शर्त पर एक धनुष दिया था कि जो उसे चढ़ा सके वही सीता के साथ विवाह करे (दे० बालकांड-नं० ५)। जावा के **सेरत कांड** में भी सीता के पोष्य पिता के एक आकाश से गिरा हुआ धनुष प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है।

आनन्द रामायण में कहा गया है कि जो धनुष जनक के पास है, उससे परशुराम ने क्षत्रियों का २१ बार नाश किया था (दे० १-३)। जैन **पउम-चरिय** के अनुसार जनक के पास दो धनुष थे। राम ने वज्रावर्त को चढ़ाया तथा लक्ष्मण ने सागरावर्त को (दे० पर्व २८)। एक अन्य वृत्तान्त के अनुसार सीता धनुष के साथ साथ यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न हुई थी (दे० आगे अनु० ३८६)।

आनन्द रामायण (१,३) बिहोर राम-कथा पाश्चात्य, वृत्तान्त नं १३ आदि बहुत सी अर्वाचीन राम-कथाओं [1] के अनुसार सीता के शिव धनुष

---

१. दे० कविताकौमुदी ५ वा भाग, पृ० १४९। राम इकबाल सिंह राकेश कृत मैथिली लोकगीत पृ० १२३। डब्लू वार्ड, ए व्यू आव दि हिस्ट्री, लिटरेचर एंड मिथोलोजी आव दि हिन्दूस, भाग ३, पृ० १८०। शिवनन्दन सहायकृत श्री गोस्वामी तुलसीदास जी में सीता के धनुष उठाने की निम्नलिखित प्रचलित कथाओं का उल्लेख किया गया है (पृ० ४०६) —

क. सीता ने सखियों के संग खेलते समय उठा लिया।

ख. खेलते समय उनकी ओढनी में लग कर हट गया।

ग. यह समझ कर कि धनुष की पूजा के लिए पिताजी को दूर जाते कष्ट होता है सीताजी उसे घर उठा लाईं।

घ. माता के सावकाश नहीं रहने से धनुष के स्थान की पूजा के निमित्त एक दिन लीपने गईं और उसे हटा कर उन्होंने चौकोर चौका लगा दिया।

को उठा लेने के पश्चात् ही जनक ने प्रण किया था कि जो उस धनुष को तोड़ेगा उसी से सीता का विवाह होगा। **आनन्द रामायण** में कहा गया है कि सीता के उस कार्य से जनक ने सीता के लक्ष्मी-अवतार होने का रहस्य जान लिया।

ख. सीता स्वयंवर

३६१. **वाल्मीकि रामायण** में सीता के स्वयंवर का उल्लेख किया गया है, जिसके अवसर पर बहुत से राजा शिव-धनुष को चढ़ाने में असमर्थ ही रहे और अनन्तर उन्होंने मिथिला पर आक्रमण किया। उस घटना के बहुत काल के बाद (**सुदीर्घस्य तु कालस्य**) धनुष-परीक्षा में सफल होकर राम ने सीता से विवाह किया (दे० बालकांड, ६६ तथा अयोध्या-कांड ११८)।

बाद की राम-कथाओं में सीता स्वयंवर तथा राजाओं के आक्रमण दोनों घटनाओं का राम ही से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। सीता-स्वयंवर में रावणदूत अथवा रावण ही के आगमन का भी प्रायः उल्लेख मिलता है।

३६२. जैन **पउमचरिय** प्राचीनतम राम-कथा है जिसमें राम सीता स्वयंवर में धनुष चढ़ाते हैं (पर्व २८)। **नृसिंहपुराण** (अध्याय ४७), **भागवत-पुराण** (६,१०) कंबनकृत **तामिल रामायण** (१,१२) तेलगू **द्विपाद रामायण** (१,२८) **मैथिली-कल्याण, अध्यात्म रामायण** (१,६,२३) **रेयाम केर** आदि में राम अन्य राजाओं की उपस्थिति में धनुष को चढ़ाते हैं।

३६३. ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि **महावीरचरित, अनर्घराघव** तथा **सत्योपाख्यान** में रावणदूत के सीता को मांगने का उल्लेख किया गया है। निम्नलिखित रचनाओं के अनुसार राम स्वयंवर में ही धनुष चढ़ाते हैं और उस अवसर पर रावणदूत के आगमन का भी वर्णन मिलता है, **महानाटक** (अंक १), **पद्मपुराण** का पातालखंड (अध्याय ११२, जिसके अनुसार रावण का माया मारीच आया था), **श्रीमद्देवीभागवत** (३,२८), **रामरहस्य** (४,८५; रावणदूत का नाम शौष्कल है)।

अधिकांश अर्वाचीन रचनाओं में राम तथा रावण दोनों ही सीता के

स्वयंवर में विद्यमान् हैं। प्राचीनतम रचना जिसमें ऐसा वर्णन मिलता है, राजशेखरकृत **बालरामायण** है, इसके अनुसार रावण धनुष-परीक्षा अस्वीकृत करता है। **प्रसन्नराघव** में रावण तथा बाणासुर दोनों धनुष चढ़ाने का असफल प्रयत्न करते हैं जिसके बाद रावण सीता का अपहरण करने का संकल्प प्रकट करके चला जाता है। **रामचरित मानस, कवितावली** तथा **जानकीमंगल** मे गोस्वामी तुलसादास ने भी सीता-स्वयंवर में रावण तथा बाणासुर की उपस्थिति का उल्लेख किया है। **आनन्द रामायण, भावार्थ रामायण**-गुजराती **रणयज्ञ, रामलिंगामृत,** पाश्चात्य वृत्तान्त नं ३,४,७,८,१३ आदि में भी सीता स्वयवर के अवसर पर राम के अतिरिक्त रावण क आगमन का निर्देश मिलता है।

३६४. सुग्रीव द्वारा राम की परीक्षा का वृत्तान्त हिंदेशिया की राम-कथाओं मे सीतास्वयवर ही के अवसर पर रखा गया है। **सेरत कांड** के अनुसार सीता के पोष्य पिता रेसिकल ने एक आकाश से गिरा हुआ धनुष प्राप्त किया और संकल्प किया कि जो उस धनुष के चलाये हुए बाण से सात ताल वृक्ष विद्ध कर सकता है उसी को सीता पत्नीस्वरूप दी जाएगी। रावण केवल छः वृक्षों का छेदन कर सकता है। लक्ष्मण की सहायता से राम सफलता प्राप्त करते हैं; ये सात ताल एक सांप की पीठ पर चक्राकार खड़े हैं और लक्ष्मण ने उस साप को दबाकर उसे सीधा किया था। पातानी पाठ की कथा इस वृतान्त से मिलती जुलती है।

सेरी राम तथा **हिकायत महाराज रावण** में सात वृक्षों के स्थान पर चालीस का उल्लेख किया गया है, जिसमें रावण केवल ३८ छेदने में समर्थ है। **सेरी राम** में महारेसिकल राम की एक अन्य परीक्षा भी लेते हैं। सीता को मूर्तिवत् खड़ी रहने का आदेश देकर महारेसि कल उनको एक मंदिर में छिपाते हैं जहां एक सहस्र मूर्तियां हैं। राम सीता की खोज करते हुए मंदिर में पहुंचते हैं और मूर्तियों को गुदगुदा कर सीता का पता लगाते हैं।

३६५. **नृसिंह पुराण** (अध्याय ४७) से लेकर अनेक राम-कथाओं में सीता-स्वयंवर के पश्चात् अन्य राजाओं के आक्रमण का वर्णन किया है। अपने भाइयों की सहायता से राम उन राजाओं को पराजित करते हैं। **पद्म-पुराण** के पातालखँड (अध्याय ११२), **आनन्द रामायण** (१, ४) तथा मलय के **सेरी राम** में इस युद्ध का उल्लेख किया गया है।

३६६. आठवीं शताब्दी ई० से लेकर विवाह के पूर्व राम तथा सीता के पारस्परिक आकर्षण और प्रेम का उल्लेख किया गया है। **महावीर-चरित** में विश्वामित्र सीता तथा उर्मिला को अपने आश्रम में बुलाते हैं जहां राम तथा लक्ष्मण उनको देखकर आकर्षित हो जाते हैं (अंक १)। कुमारदासकृत **जानकीहरण** में विवाह के पहले राम-सीता के पारस्परिक आकर्षण तथा सीता के विरह का वर्णन किया गया है (दे० सर्ग ७)। कबनकृत **तामिल रामायण** के अनुसार राम मिथिला में प्रवेश करते ही सीता को देखते हैं और दोनों मे प्रेम उत्पन्न होता है। कबन ने दोनों के रात में विरह का विस्तृत वर्णन किया है (दे० १, १०)। **मैथिली-कल्याण** नाटक में सीता तथा राम के पूर्वानुराग का चार अकों मे चित्रण किया गया है। **प्रसन्नराघव** मे राम सीता को चंडिकायतन की ओर जाते हुए देखते हैं तथा छिपकर सीता और उनकी सखियो की बातचीत सुनते हैं (अक २)। **रामचरितमानस** तथा **गीतावली** में जनकपुर की वाटिका में राम-सीता के पारस्परिक दर्शन का वर्णन मिलता है। **राम कियेन** के अनुसार राम जनक की राजधानी में पहुँचकर सीता को महल के झरोखे में देखते हैं जिसके फलस्वरूप दोनों मे उसी क्षण पारस्परिक प्रेम उत्पन्न होता है। सीता के प्रति राम के प्रेम का रहस्य जानकर लक्ष्मण धनुष चढ़ाने मे समर्थ होते हुए भी उसे नहीं उठाते हैं। बाद में राम धनुष चढ़ाकर सीता से विवाह करते हैं।

३६७. विवाह के समय राम तथा सीता की अवस्था का संभवतः **आदिरामायण** में निर्देश नहीं किया गया हो। प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के आदिकांड के अन्त में तथा प्रक्षिप्त सीता-अनसूया-सवाद के अंतर्गत सीता की 'पतिसंयोगसुलभ' अवस्था का उल्लेख किया गया है (दे० २, ११८, ३४)। अरण्यकाड में रावण-सीता-संवाद के एक प्रक्षिप्त स्थल के अनुसार विवाह के पश्चात् सीता १२ वर्ष तक अयोध्या में रही थीं तथा राम-सीता की निर्वासन के समय की अवस्था क्रमशः २५ और १८ की थी (दे० अरण्यकाड, सर्ग ४७, १०-११)। इसका अर्थ यह है कि सीता विवाह के समय ६ वर्ष की थीं। अयोध्याकांड के एक अन्य स्थल के अनुसार निर्वासन के समय राम की अवस्था १७ वर्ष की थी (दे० सर्ग २०)।

आगे चलकर भी विभिन्न राम-कथाओं में राम-सीता की अवस्था

के विषय में मतैक्य नहीं पाया जाता है। अधिकांश रचनाओं तथा विशेष कर कालनिर्णय रामायणों में **स्कंदपुराण** के धर्मारण्यखंड (अध्याय ३०) तथा **पद्मपुराण** के पातालखंड (अध्याय ३६) के अनुसार राम-सीता की विवाह के समय की अवस्था क्रमशः १५ तथा ६ वर्ष मानी गई है। **आनन्द रामायण** में राम ने छः वर्ष की अवस्था के पूर्व ही विवाह किया था (दे० १, ४)।

६

सीता की जन्म-कथा

३६८. प्रारम्भिक राम-कथाओं में सीता के कुल परम्परा सम्बन्धी तथ्यों के अभाव के कारण नानाविध सर्वथा भिन्न कथाएं प्रचलित हो गई हैं। जनक, रावण और दशरथ तीनों सीता के पिता माने गए हैं। अतः राम-कथा के विकास में सीता-जन्म के वैभिन्न्य की एक अलग समस्या प्रतीत होती है। इसे सुलझाने के लिए उन भिन्न भिन्न रूपों की प्राचीनता और सापेक्षिक महत्त्व को ध्यान में न रखने के कारण अनेक विद्वानों ने बहुत चिंत्य प्रस्ताव किए हैं। इनके अनुसार सीता पहले दशरथ की पुत्री और राम की सहोदरी बहन मानी जाती थीं। इसके बाद वह रावण की पुत्री बनाई गई हैं और अंत में अयोनिजा सीता-जनक की दत्तक पुत्री की कल्पना कर ली गई है। प्रस्तुत परिच्छेद में इस जन्मकथा के भिन्न-भिन्न रूपों के संक्षिप्त वर्णन के साथ साथ इसके विकास की रूप-रेखा खींचने का भी प्रयत्न किया जाएगा। आरम्भ में उन कारणों का स्पष्टीकरण किया जाएगा जो इस विश्वास को पुष्ट करते हैं कि सीता पहले जनक की औरस पुत्री मानी जाती थीं; तदुपरान्त वाल्मीकि के अनुसार भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म का वर्णन किया जायगा। यह आख्यान सर्वाधिक प्रचलित तथा महत्त्वपूर्ण है और सीता की अर्वाचीन जन्मकथाओं का भी आधार प्रमाणित हुआ है। वाल्मीकि से भिन्न कथाओं में एक बात प्रायः सर्वत्र वर्णित है और वह यह है कि मिथिला में परित्यक्त होने के पूर्व सीता का सम्बन्ध लंका से भी स्थापित किया जाता है। अंत में दशरथ जातक तथा हिदेशिया की जन्मकथाओं का वर्णन किया जाएगा जिनमें दशरथ सीता के पिता माने गए हैं। इनके कम महत्त्व का कारण यह है कि शताब्दियों तक अज्ञात होने के कारण इन कथाओं का भारत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सका।

३६९. सीता की जन्म-कथा के भिन्न-भिन्न रूपों का परिचय निम्नलिखित तालिका में दिया जाता है—

(क) **जनकात्मजा**

महाभारत, हरिवंश, पउमचरिय, आदिरामायण ।

(ख) **भूमिजा**

१. **वाल्मीकि रामायण** तथा अधिकांश राम-कथाएँ ।
२. दशरथ तथा मेनका की मानसी पुत्री : **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरीय पाठ ।
३. वेदवती तथा लक्ष्मी के अवतार ।

ग—**सीता और लंका**

(अ) **रावणात्मजा**

१. गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (नवीं श० ई०), **महाभागवत पुराण** ।
२. **काश्मीरी रामायण**, पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १६ ।
३. **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायण** ।
४. **संरत काण्ड, सेरी राम** का पातानी पाठ ।
५. **राम कियेन**, (रेआम केर !)

(आ) **पद्मजा**

१. **दशावतार चरित** (११ वीं श० ई०)
२. गोविंदराज का **वाल्मीकि रामायण** का पाठ ।

(इ) **रक्तजा**

१. **अद्भुत रामायण** (१५ वीं श० ई०) ।
२. सिंहल द्वीप की रामकथा, विविध भारतीय वृत्तान्त ।

(ई) **अग्निजा**

१. **आनन्द रामायण** (१५ वीं श० ई०)
२. पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १६ ।
३. पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ ।

घ—**दशरथात्मजा**

१. **दशरथ जातक**
२. जावाके **राम केलिंग**, मलय के **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण**

क. जनकात्मजा सीता

३७०. बहुत सम्भव है कि राम-कथा-सम्बन्धी प्राचीन गाथाओं में तथा **आदि रामायण** में भी सीता जनक की औरस पुत्री मानी जाती थी। **महाभारत** में चार राम कथाएं पाई जाती हैं किन्तु अयोनिजा सीता के अलौकिक जन्म की ओर कहीं भी निर्देश नहीं किया गया है। सर्वत्र वह जनकात्मजा है। रामोपाख्यान के आरम्भ में लिखा है,

विदेहराजो जनकः सीता तस्यात्मजा विभो

(दे० ३, २५८, ९)

हरिवंश की राम-कथा में भी सीता की अलौकिक उत्पत्ति का तनिक भी उल्लेख नहीं मिलता (दे० अध्याय ४१)। प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** में भूमिजा सीता के जन्म का प्राचीनतम वर्णन पाया जाता है। प्रामाणिक कांडों में (२ ६) उसका उल्लेख केवल निम्नलिखित तीन स्थलों पर किया गया है—अनुसूया-सीता-संवाद, अशोकवन में सीता को देखने पर हनुमान का विलाप तथा अग्निपरीक्षा। अनुसूया-सीता संवाद तथा अग्निपरीक्षा, ये दो वृत्तान्त समुचित कारणों से प्रक्षिप्त माने जाते हैं (दे० आगे अनु० ३९२ और ५०६)। हनुमान का विलाप सुन्दरकाण्ड के १६ वें सर्ग में दिया गया है। इस सर्ग में हनुमान १५ वें सर्ग के विषय को ही दुहराते और विस्तार देते हैं अतः इस सर्ग को बाद का विकास मानने में कोई विशेष आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

उपर्युक्त विश्लेषण के अनुसार बहुत सम्भव है कि **आदि रामायण** में सीता मिथिला की राज कन्या और जनक की पुत्री के रूप में वर्णित थीं। **रामायण** के अनेकानेक स्थलों पर[1] इसका उल्लेख किया गया है कि सीता जनक के कुल में उत्पन्न हुई थीं। उदाहरणार्थ—

जनकस्य कुले जाता देवमायेव निर्मिता।
सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधू॥ २७॥

(बालकांड, सर्ग १)

जैन पउमचरिय के अनुसार जनक की पत्नी विदेहा से सीता अपने यमल भ्राता भामंडल के साथ उत्पन्न हुई थीं (पर्व २६)। जन्म होते ही

---

१. दे० १,१, २७; ५, १३, १४; २, २८, ३; ३, ४७, ३।

इस भामंडल को एक देवता ने उठा लिया था और किसी अन्य राजा के यहाँ छोड़ दिया था। **वाल्मीकि रामायण** में जनक के किसी पुत्र का कहीं उल्लेख नहीं है, किन्तु **विष्णुपुराण** (४.५. ३०) तथा **वायुपुराण** (२९. १२) आदि में भानुमान् जनक का पुत्र कहा गया है। अतः सम्भव है कि **पउमचरिय** के वृत्तान्त में ऐतिहासिक तत्व विद्यमान हो। **कालिका पुराण** में भी यज्ञ का क्षेत्र तैयार करते समय जनक को दो पुत्र तथा एक पुत्री प्राप्त होने का वर्णन किया गया है (दे० अध्याय ३८)।

ख. भूमिजा सीता

३७१. सीता की अलौकिक उत्पत्ति का वर्णन **वाल्मीकि रामायण** में दो बार कुछ विस्तारपूर्वक किया गया है। इसी ग्रंथ के कतिपय अन्य स्थलों पर भी इसके संकेत मिलते हैं [1]। एक दिन जब कि राजा जनक यज्ञ-भूमि तैयार करने के लिए हल चला रहे थे, एक छोटी सी कन्यका मिट्टी से निकली। उन्होंने उसे पुत्री-स्वरूप ग्रहण किया तथा उसका नाम सीता रखा। सीताजन्म का यह वृत्तान्त अधिकांश राम-कथाओं में मिलता है। **विष्णु पुराण** में यह भी कहा गया है कि जिस यज्ञ के लिए जनक भूमि तैयार कर रहे थे वह 'पुत्रार्थम' (पुत्र की प्राप्ति के लिए) था। जनक की उस पुत्रकामेष्टि का उल्लेख **पद्मपुराण** के उत्तरखंड के बंगीय पाठ में भी मिलता है। उस वृत्तान्त के अनुसार भूमि में एक सुवर्ण धनुष मिला था जिसे खोल देने पर जनक ने एक कन्यका को देखा तथा उसे सीता का नाम देकर स्वीकार किया।

सम्भव है कि भूमिजा सीता की अलौकिक जन्मकथा सीता नामक कृषि की अधिष्ठात्री देवी के प्रभाव से उत्पन्न हुई हो। कृषि की उस देवी से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री का वर्णन प्रस्तुत निबन्ध के प्रथम अध्याय में किया गया है। मैं यह नहीं कहता कि यह वैदिक देवी और रामायणीय सीता अभिन्न हैं। वैदिक सीता ऐतिहासिक न होकर सीता अर्थात् लांगल-पद्धति के मानवीकरण का परिणाम है। किन्तु यह असम्भव नहीं है कि सीता नामक राजकुमारी की किसी निश्चित कुलपरम्परा के अभाव में उनकी जन्मकथा की उत्पत्ति पर सीता, कृषि की अधिष्ठात्री देवी, के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा हो।

---

१. दे० १, ६६ तथा २, ११८ (वर्णन के लिए) और ५, १६; ६, ११६; ७, १७; ७, ९८, ७, ३७ प्र० ३, ५ (उल्लेख के लिए)।

साथ ही यह भी सर्वथा सम्भव प्रतीत होता है और ऐसा मानना निश्चय ही अधिक स्वाभाविक भी है कि 'सीता' नाम के कारण ही जिसका अर्थ ही लांगलपद्धति है (हल से खींची हुई रेखा), लोगों ने यह कल्पना आरम्भ कर दी कि यह लांगलपद्धति से निकली थी। ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं कि किसी का नाम उसकी जन्मकथा का कारण बन गया है। **तैत्तरीय ब्राह्मण** की सीता सावित्री की कथा से ज्ञात होता है कि प्राचीन वैदिक काल में ही कन्याओं के नामों में सीता भी एक नाम था (दे० ऊपर अनु० ८)।

३७२. **वाल्मीकि रामायण** के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में उपर्युक्त भूमिजा सीता की जन्मकथा का परिवर्द्धन किया गया है। तीनों पाठों में सीता स्वयं अत्रि की पत्नी अनसूया को अपनी जन्मकथा बताती हैं। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में यह वर्णन अधिक विस्तृत है[1]। कथा इस प्रकार है—

'राजा जनक के कोई सन्तान नहीं थी। एक दिन जब वह यज्ञ की भूमि में हल चला रहे थे उन्होंने आकाश में लावण्यमयी अप्सरा मेनका को देखा और मन में सन्तानार्थ उसके साहचर्य्य की अभिलाषा की। इसपर एक आकाशवाणी सुनाई दी जिससे उन्हें विश्वास दिलाया गया कि मेनका के द्वारा उन्हें एक पुत्री प्राप्त होगी जो सौंदर्य में अपनी माता मेनका के समकक्ष होगी। आगे बढ़कर जनक ने भूमि से निकली हुई सीता को देखा। पुनः आकाशवाणी सुनाई दी—**मेनकायाः समुत्पन्ना कन्येयं मानसी तव** मेनका से उत्पन्न यह कन्या तुम्हारी मानस पुत्री)।'

क्षेमेंद्रकृत **रामायण मंजरी** (दे० ३४४-३४६) को छोड़कर यह कथा अन्यत्र नहीं पाई जाती है। फिर भी यह कथा महत्त्वपूर्ण है ; इससे यह आभास मिलता है कि प्राचीन काल में सीता की समुत्पत्ति के विषय में कोई एक वृत्तान्त सर्वप्रामाणिक नहीं माना जाता था। ईस्वी की प्रारम्भिक शताब्दियों से लेकर **वाल्मीकि रामायण** की सीता-जन्म-कथा की अपूर्णता का अनुभव होने लगा था। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीयपाट का उपर्युक्त वृत्तान्त उस कथा को पूर्ण बनाने का प्रचीनतम प्रयत्न प्रतीत होता है।

३७३. **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकाँड की वेदवती की कथा भी उस

१. दे० गौ० रा० ३, ४; प० रा० ३,२।

समय उत्पन्न हुई। इस वृत्तान्त में सीता के पूर्व-जन्म का वर्णन किया गया है, अतः उसकी उत्पत्ति के समय सीता के लक्ष्मी के अवतार होने का सिद्धान्त प्रचलित नहीं था। कथा इस प्रकार है—

'ऋषि कुशध्वज की पुत्री वेदवती नारायण को पतिरूप में प्राप्त करने के उद्देश्य से हिमालय में तप करती है। उसके पिता की भी ऐसी ही अभिलाषा थी। किसी राजा को अपनी पुत्री प्रदान करने से इनकार करने पर कुशध्वज की उस राजा द्वारा वध किया गया था। किसी दिन रावण की दृष्टि उस कन्या पर पड़ती है। उसके रूप-लावण्य से विमोहित होकर वह उसे उसके केशों से पकड़ता है। अपना हाथ असि के रूप में बदलकर वेदवती उससे अपने केशों को काटकर अपने को विमुक्त करती है। अनन्तर वह रावण को शाप देकर भविष्यद्वाणी करती है कि मैं तुम्हारे नाश के लिए अयोनिजा के रूप में पुनः जन्म ग्रहण करूंगी। अत में वह अग्नि में प्रवेश करती है और बाद मे जनक की यज्ञभूमि में उत्पन्न होती है (दे० ७, १७)'

श्रीमद्देवी भागवत पुराण (९, १६) तथा **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** (प्रकृति खंड, अध्याय १४) में इस कथा में परिमार्जन किया गया है। कुशध्वज और उसकी पत्नी मालवती लक्ष्मी की उपासना करते हैं और उनसे उनको पुत्रीस्वरूप में प्राप्त करने का वर पाते हैं। जन्मग्रहण करते ही लक्ष्मी वैदिक मंत्रों का गान करती हैं; इस कारण उन्हें वेदवती का नाम दिया जाता है। कुछ समय के उपरान्त वह हरि को पति रूप में वरण करने के लिए तप करने लगती है तथा रावण द्वारा अपमानित हो जाने पर वे उसे शाप देती हैं और सीता के रूप में उत्पन्न होती हैं। यह स्पष्ट है कि सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता के विश्वास की प्रेरणा से वेदवती की कथा को यह नवीन रूप दिया गया है (सीता के लक्ष्मीत्व के लिए दे० ऊपर अनु० ३३९)।

कृत्तिवास रामायण के अनुसार वेदवती की मृत्यु मिथिला में ही हुई थी। उड़िया **विचित्र रामायण** में वेदवती की कथा में कुछ परिवर्द्धन किया गया है। रावण के लंका में लौटने के बाद नारद आकर उससे कहते हैं कि वेदवती की लाश अब तक पड़ी है, उसका नाश करो। रावण उसे ले जाकर मंदोदरी को रसोई करने के लिए देता है। जब भोजन तैयार होता

है रावण अपना मन बदल कर उस मांस को समुद्र में फेकवाता है। बाद में उस मांस से सीता उत्पन्न हुई और जनक को प्राप्त हुई।

पउमचरिय के अनुसार वेदवती, श्रीभूति पुरोहित की कन्या थी। शंभु ने उसे मांगा किन्तु श्रीभूति ने उसे देने से इनकार किया, जिसपर शंभु ने श्रीभूति की हत्या करके वेदवती का बलात्कार किया। वेदवती ने शम्भु को शाप दिया कि मैं तेरे नाश का कारण बनूंगी। अनेक जन्मों के बाद वेदवती तथा शम्भु क्रमशः सीता तथा दशमुख के रूप में प्रकट हुए (दे० पर्व १०३)।

ग. सीता और लंका

३७४. रामायण की अलौकिक सीता-जन्म-कथा में परिवर्द्धन किया जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। भूमि मे पड़ी हुई कन्यका आखिर आई कहाँ से? वह रावण के नाश का कारण क्यों सिद्ध हुई? वेदवती की कथा में इन प्रश्नों का उत्तर मिलता है। सीताहरण के पूर्व ही सीता-रावण-सम्बन्ध का इस कथा में प्राचीनतम उल्लेख मिलता है। बाद की बहुत सी राम-कथाओं में यह सम्बन्ध अधिक निकट हो जाता है। जनक द्वारा प्राप्त होने के पूर्व सीता का किसी न किसी तरह लंका से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। उपर्युक्त **विचित्र रामायण** के अतिरिक्त यह सम्बन्ध चार सर्वथा भिन्न रूप ग्रहण करता है। उनके साहित्य में उल्लेख के काल-क्रमानुसार इनका यहाँ निरूपण किया जाता है।

(अ) रावणात्मजा

३७५. सीता-जन्म की कथाओं में जिनका हमें यहाँ पर विश्लेषण करना है सर्वाधिक प्राचीन तथा प्रचलित यह है जिसमे सीता को रावण की पुत्री माना गया है। भारत, तिब्बत, खोतान (पूर्वी तुर्किस्तान), हिंदेशिया और श्याम में हमें यह कथा मिलती है। भारतवर्ष में इस कथा का प्राचीनतम रूप गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (नवीं श० ई०) में मिलता है, जहाँ यह इस प्रकार वर्णित है—'अलकापुरी के राजा अमितवेग की पुत्री राजकुमारी मणिमती विजयार्ध (विंध्य) पर्वत पर तप करती है। रावण उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। सिद्धि में विघ्न उत्पन्न होने के कारण मणिमती क्रुद्ध होकर निदान करती है कि मैं रावण की पुत्री बनकर उनको नष्ट करूंगी। बाद में वह मंदोदरी के गर्भ से उत्पन्न होती है।

उसके जन्म होते ही लंका में भूकम्प आदि अनेक अपशकुन होने लगते हैं। यह देखकर ज्योतिषियों ने कहा कि यह कन्या रावण के नाश का कारण होगी। इस पर रावण मारीच को यह आज्ञा देता है कि वह उसे किसी दूर देश में छोड़ दे। मंदोदरी कन्या को द्रव्य तथा परिचयात्मक पत्र के साथ साथ एक मंजूषा में रखता है। मारीच उसे मिथिला देश की भूमि में गाड़ देता है जहाँ वह उसी दिन कृषकों द्वारा पाई जाती है। कृषक उसे जनक के पास ले जाते हैं। मंजूषा को खोलकर जनक एक कन्या को देखते हैं तथा पुत्रवत् पालने का आदेश देकर अपनी पत्नी वसुधा को कन्यका सौंप देते हैं (दे० पर्व ६८)[1]।'

स्पष्ट है कि यह वृत्तान्त वेदवती की कथा पर आधारित है और सीता की धर्ममाता वसुधा का नाम यह भी सूचित करता है कि रचयिता वाल्मीकि की उस कथा से परिचित था जिसमें सीता को पृथ्वी की पुत्री माना गया है। **महाभागवत देवीपुराण** (१० अथवा ११ वीं श० ई०) में भी इसका उल्लेख है कि सीता मंदोदरी से उत्पन्न हुई थी और बाद में वह पृथ्वी से आविर्भूत हुई थी—

सीता मंदोदरीगर्भे संभूता चारुरूपिणी।
क्षेत्रजा तनयाप्यस्य रावणस्य रघूत्तम॥ ६२॥
(अध्याय ४२)

तेलगू **द्विपाद रामायण** (१,२७) तथा दक्षिण भारत की अन्य कथा में (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १७) भी सीता के एक मंजूषा में पाये जाने का उल्लेख किया गया है, यद्यपि उन रचनाओं में रावण का निर्देश नहीं है।

३७६. सीता की जन्मकथाओं का एक ऐसा वर्ग भी मिलता है जिसके अनुसार रावण की पुत्री जन्म के पश्चात् समुद्र अथवा नदी में फेंकी जाती है। **काश्मीरी रामायण** में कथा इस प्रकार है—'मंदोदरी रावण की

---

१. सोमदेव के जैन रामपुराण में पद्मचरित्र तथा उत्तरपुराण के वृत्तान्तों का समन्वय किया गया है। सीता रावण और मंदोदरी की पुत्री थी और मिथिला में गाड़ी गई। जिस दिन जनक की रानी में भामंडल उत्पन्न हुआ और एक देव द्वारा उठा लिया गया था उसी दिन एक कृषक ने जनक को यह मंजूषा दे दिया जिसमें सीता पड़ी थी।

अनुपस्थिति में एक पुत्री को जन्म देती है। जन्मपत्र से पता चलता है कि यह बालिका अपने पिता की मृत्यु का कारण बनेगी और यदि उसका विवाह हुआ तो वह वनवासिनी बनकर लंका का नाश करेगी। यह सुनकर मंदोदरी उसके गले में एक पत्थर बाँधकर उसे किसी नदी में फेंकवा देती है'। एक अन्य कथा के अनुसार रावण स्वयं उस कन्यका को मंजूषा में बंद कर समुद्र में फेकने की आज्ञा देता है और जनक उसे समुद्र-तट पर प्राप्त करते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १६)। उपर्युक्त कथा का निम्न-लिखित रूप भी मिलता है—'एक ब्राह्मण ने किसी बालिका के विषय में रावण से कहा था कि यह तुम्हारे निधन का कारण बनेगी। उस समय से रावण ने उसपर कड़ा पहरा लगा दिया। जब यह कन्यका केवल छः मास की थी किसी दिन इतने जोरों की वर्षा हुई कि उसके पास के समस्त व्यक्ति पानी में डूबकर मर गये किन्तु वह कन्यक मंजूषा में होने के कारण जलप्रवाह के द्वारा सिंहलद्वीप से दूर किसी राजा के पुलिन पर फेंकी गई। कहा जाता है कि इस कन्या ने बाद मे उस राम से विवाह कर लिया, जिसके द्वारा रावण की हत्या हुई'[1]।

३७७. भारत के निकटवर्ती देशों की राम-कथाओं में उससे मिलती जुलती कथाएं मिलती हैं। **तिब्बती और खोतानी रामायणों** में (जो सम्भवतः नवीं शताब्दी के हैं) रावण की पुत्री अपनी जन्मकुंडली के कारण परित्यक्त की जाती है और एक पेटिका में जल में फेंक दी जाती है। किन्तु जनक के स्थान पर तिब्बती ग्रथ के अनुसार कृषक तथा खोतानी ग्रथ के अनुसार एक ऋषि उस कन्या की रक्षा और भरण पोषण करते हैं।

३७८. जावा के **सेरत कांड** में भी रावण की महिषी एक पुत्री को जन्म देती है जो श्री का अवतार थी। माता को मालूम हुआ था कि यदि उसकी सतान पुत्री है तो वह भविष्य में रावण की प्रेमिका बनेगी। इस कारण माता अपनी पुत्री को एक पेटिका में बंद करके समुद्र में फेंकवाती है। बाद में मंतिलि निवासी कल नामक एक ऋषि उस शिशु को पाते हैं, उसे पालते हैं और उसका नाम सीता रखते हैं। 'मतिला' मिथिला का स्मरण दिलाता है और इस प्रकार हम रामायण की कथा के सन्निकट पहुँच जाते हैं। समुद्र में प्रक्षिप्त शिशु की स्थानपूर्ति के लिए चिवीसन (विभीषण) नामक

---

१. दे० सां० नीबुहर: वायाज अन अरावा, भाग २,पृ०२२

जादूगर बादलों से एक शिशु को खींच कर उसका नाम मेघनाद रखता है।

सेरी राम के पातानी पाठ के अनुसार रावण की महिषी एक कन्यका को जन्म देती है जिसके मुंह का तालू काला है। इस कारण ज्योतिषी कन्या को अशुभ कहते हैं जिससे वह समुद्र में फेंकी जाती है। एक मकर उसे डूबने से बचाता है और मरुतों से प्रार्थना करता है कि वह उसे उठा लें। इस पर मरुत उसे एक ऋषि की वाटिका में एक पद्म पर रख देते हैं। ऋषि उसे प्राप्त कर उसका पुत्रीवत् पालन करते हैं। इस वृत्तान्त पर पद्मजा सीता की कथा का भी प्रभाव पड़ा है।

३७६. कम्बोदिया के **रेआम केर** के अनुसार जनक यमुना के तीर पर हल चलाते हुए सीता को एक बेड़े पर देखते हैं और उसे प्राप्त करके पुत्री के रूप में स्वीकार करते हैं। इस कथा में इसका निर्देश नहीं किया गया है कि सीता कहाँ से आई किन्तु एक तो **रेआम केर** की हस्तलिपियाँ अपूर्ण हैं तथा दूसरे **राम कियेन** में, जो **रेआम केर** पर निर्भर माना जाता है, लंका का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। अतः **रेआम केर** की कथा भी सीता-जन्म-कथाओं के प्रस्तुत वर्ग के अंतर्गत रखी जा सकती है।

श्याम देश के **राम कियेन** में सीता की जन्म कथा का विस्तार सहित वर्णन किया गया है। दशरथ-यज्ञ के पायस का अष्टमाँश खाकर मंदोदरी एक कन्यका को जन्म देती है जो वास्तव में लक्ष्मी का अवतार है (दे० ऊपर अनु० ३३४)। विभीषण आदि ज्योतिषियों से यह जानकर कि यह कन्यका मेरे वंश का नाश करेगी रावण उसे विभीषण को देता है। विभीषण उसे एक घड़े में रखकर उसे नदी में फेंकवाता है। नदी में कमल उत्पन्न होता है जो घड़े का आधार बन जाता है। लक्ष्मी की दिव्य शक्ति से यह घड़ा जनक के पास पहुँचता है। जनक उस समय वन में नदी के किनारे पर तप करते हैं। घड़ा उठाकर वह उसे वन ले जाते हैं तथा एक पेड़ के नीचे खोदकर यों प्रार्थना करते हैं—'यदि यह कन्या राजा के रूप में नारायणावतार की रानी बनने वाली है तो इस स्थान पर एक कमल उत्पन्न हो जो उस घड़े को ग्रहण कर सके'। उसी क्षण एक कमल उत्पन्न होता है, जनक उस पर घड़ा रख कर और उसे मिट्टी से ढँककर पुनः तपस्या करने जाते हैं। इस तपस्या में संतोष न पाकर जनक १६ वर्ष के बाद अपनी राजधानी लौटने का निश्चय करते हैं किन्तु ढूँढने पर भी वह उस घड़े को कहीं

भी नहीं पाते हैं। सेना बुलाई जाती है लेकिन सैनिक भी खोज में असफल हैं। अंत में जनक हल चलाने जाते हैं जिस पर घड़ा अपने आपसे हलपद्धति में प्रकट होता है। इसमें एक अत्यन्त सुन्दर युवती पद्म पर बैठी हुई दिखाई पड़ती है। सीता से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम सीता रखा जाता है (दे० अध्याय १०)। इस मिश्रित वृत्तान्त मे गुणभद्रकृत **उत्तर-पुराण** तथा हिदेशिया की सीताजन्म की कथाओं के समन्वय का प्रयत्न किया गया है तथा साथ-साथ पद्मजा सीता के वृत्तान्त का भी सहारा लिया गया है।

उपर्युक्त कथाओं में से एक भी गुणभद्र के वृत्तान्त से प्राचीन नहीं है। गुणभद्र की कथा स्पष्टतया वेदवती के आख्यानक पर आधारित है। अतः यह मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये कि वेदवती की कथा से उन समस्त वृत्तान्तों की उत्पत्ति हुई है जिनमें सीता रावण की पुत्री मानी गई है।

(आ) पद्मजा सीता

३८०. क्षेमेंद्र-कृत **दशावतार-चरित** मे सीता के जन्म की एक सर्वथा भिन्न कथा वर्णित है। रामायण की भूमिजा सीता की कथा इसमें स्वीकृत है, साथ ही सीता और लक्ष्मी का अभेद भी। लक्ष्मी के अनेक नामों में एक नाम पद्मा है और इस नाम ने सम्भवतः पद्मजा सीता की कथा की आधारभूमि तैयार की हो।

रावण एक विशिष्ट स्थान पर बार बार जाता है; वह आरम्भ में वहाँ एक पर्वत देखता है, तत्पश्चात् नगर देखता है, फिर जंगल देखता है, उसके बाद एक विस्तृत गड्ढा और अंत मे एक कमलयुक्त सुन्दर सरोवर। वहाँ एक लिंग स्थापित कर रावण सरोवर के कमलों से शिव की उपासना करता है। एक कनकपद्म पर उसे एक कन्यका दृष्टिगत होती है जो लक्ष्मी ही है। वह उसे पुत्री के रूप में ग्रहण कर लंका ले आता है और मंदोदरी को दे देता है। नारद एक दिन मंदोदरी के यहाँ पहुंचते हैं और उसकी गोद में उस कन्यका को देखकर कहते हैं कि यह कन्या बाद में रावण की प्रेमपात्री बनेगी (**कन्या भविष्यति अभिलाषभूमि चपलेंद्रस्य**)। यह सुनकर मंदोदरी उस कन्यका को स्वर्ण पेटिका मे बंद करके किसी दूर देश में गाड़ आने का आदेश देती है। यज्ञ के लिए स्वर्ण हल चलाते हुए जनक उसे प्राप्त करते हैं (दे० ७० १०४)।

३८१. सीता की उत्पत्ति की यह कथा बहुत प्रचलित नहीं है। फिर भी **सेरी राम** के पातानी पाठ तथा **राम कियेन** के वृत्तान्तों पर इसका प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त **वाल्मीकि रामायण** के टीकाकार गोविंदराज के पाठ में भी यह पाई जाती है। उसके अनुसार वेदवती एक पद्म में पुनः उत्पन्न होती है। रावण उसे पद्म पर बैठे हुए देखता है और अपने यहाँ ले जाता है। एक लक्षणज्ञ मन्त्री उसे चेतावनी देता है कि वह कन्या उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। यह सुनकर रावण उसे समुद्र में फेंक देता है। कन्या बच जाती है और जनक द्वारा पाई जाती है।[1]

(इ) रक्तजा सीता

३८२. सीताजन्म की अनेक अर्वाचीन कथाओं में सीता ऋषियों के रक्त से उत्पन्न मानी जाती है। **अद्भुत रामायण** में इस कथा का प्रथम तथा विस्तृत वर्णन मिलता है (दे० सर्ग ८)।

रावण दिग्विजय करते करते दंडकारण्यवासी ऋषियों से राज कर लेता है। द्रव्य के अभाव में वे रावण को कुछ रक्त का बूंद प्रदान करते हैं जो ऋषि गृत्समद के पात्र में एकत्र किया जाता है। उस पात्र में कुश का किंचित् रस था जिसमें गृत्समद के मंत्रों के फलस्वरूप लक्ष्मी विद्यमान थी। रावण उस पात्र को लंका ले जाता है और मंदोदरी को उसे यह कह कर दे देता है 'इस में तीव्र विष भरा है'। कुछ समय बाद रावण दूसरी विजययात्रा के लिए चला जाता है। यह सुनकर कि रावण परस्त्रियों के साथ रमण करता है मंदोदरी आत्महत्या के विचार से उस रक्त का पान कर लेती है और गर्भवती हो जाती है। इस पर वह तीर्थयात्रा के लिए निकलती है और गर्भपात करके कुरुक्षेत्र में भ्रूण गाड़ देती है। बाद में जनक के यज्ञ के लिए वहाँ हल जोतते समय एक कन्या भूमि से निकलती है। जनक उसे पुत्रावत् ग्रहण कर उसका नाम सीता रखते हैं।

३८३. उपर्युक्त कथा का निर्देश सिंहल द्वीप की राम-कथा में भी मिलता है[2]। भारत में इसके भिन्न भिन्न रूप पाए जाते हैं। एक कथा के

---

१. दे० रामायणम्। गुजराती प्रिंटिंग प्रेस, उत्तर कांड, सर्ग १७, श्लोक ३३ के बाद का प्रक्षेप।

२. दे० इं० एं० भाग ४५, सप्लेमेंट।

अनुसार मंदोदरी केवल जिज्ञासा से प्रेरित होकर कतिपय रक्तबिंदुओं का पान कर लेती है और फलस्वरूप बाद में एक कन्या को जन्म देती है। रावण के कोप की आशंका से वह उस शिशु को उसी रक्त के पात्र में रखकर समुद्र में छोड़ देती है। जनक के राज्य मे पहुंचकर कन्या कृषकों द्वारा जनक के पास ले जाई जाती है [1]।

उत्तरभारत की एक अन्य कथा इस प्रकार है। जनक ने महादेव के धनुष के प्रभाव से रावण को कई बार पराजित किया था। **अद्भुत रामायण** के वृत्तान्त के अनुसार रावण राजस्व के स्थान पर ऋषियों का रक्त लेता है। इस पर ऋषि शाप देते हैं कि इस रक्त से तुम्हारा नाश होगा। रावण उस शाप की अवज्ञा करता है और उस रक्त को एक घड़े में रखकर उसे लंका ले जाता है। उस समय से लंका के राज्य में अनावृष्टि आदि अनिष्ट घटित होते हैं। शास्त्री रावण से कहते हैं कि जब तक यह रक्त लंका मे विद्यमान है विपत्तियों का अन्त नहीं होगा। यह सुनकर रावण जनक से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से उस घड़े को मिथिला में गड़वाता है। अब वहां भी वे ही अनिष्ट घटित होने लगते हैं। मंत्री राजा को रानी के साथ जाकर हल जोतने का परामर्श देते हैं। ऐसा करते हुए जनक उस घड़े को प्राप्त करते हैं जिसमें ऋषि रक्त से उत्पन्न सीता दिखलाई पड़ती है। इसके बाद सब अनर्थ शांत हुए (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १३)। अन्यत्र भी इसका उल्लेख किया गया है कि मिथिला में रक्त गाड़ा गया था कन्या नहीं।[2]

(ई) अग्निजा सीता

३८४. लंका के साथ सीता के सम्बन्ध का अंतिम रूप **आनन्द रामायण** में उपलब्ध है। सीता-जन्म का यह वृत्तान्त वेदवती की कथा पर आधारित प्रतीत होता है। कठोर तपस्या के उपरान्त राजा पद्मांक ने लक्ष्मी को पुत्रीरूप में प्राप्त किया था और उसका नाम पद्मा रखा था। पद्मा के स्वयंवर के अवसर पर युद्ध हुआ और उसका पिता पद्मांक मारा गया यह देखकर पद्मा ने अग्नि में प्रवेश किया। एक दिन वह अग्निकुंड से

---

१. दे० सेक्रेड बुक्स आव दि हिन्दूस, भाग २६, पृ० २३९।

२. दे० सेक्रेड बुक्स आव दि हिन्दूस, वही, दूसरी कथा। बिहार राम-कथा में भी उपर्युक्त कथा का निर्देश मिलता है क्योंकि इसमें कहा गया है कि अनावृष्टि के प्रशमन के लिए हल जोतते हुए जनक को सीता मिल गई थीं।

निकलकर रावण द्वारा देखी जाती है जिसपर वह शीघ्र ही अग्नि में प्रवेश करती है। किन्तु रावण अग्नि को बुझा देता है और उसकी राख में पांच दिव्य रत्न देखकर उन्हें एक पेटिका में रख देता है और लंका ले जाता है। लंका में कोई भी उस पेटिका को उठा नहीं सकता है। उसे खोला जाता है और उसमें एक कन्यका मिलती है। मंदोदरी के परामर्श से यह पेटिका मिथिला में गाड़ दी जाती है। बाद में उसे एक शूद्र पाता है जो एक ब्राह्मण के लिए खेती कर रहा था। वह ब्राह्मण जनक को वह पेटिका प्रदान करता है और उसे खोलकर तथा उसमें एक कन्या को देखकर जनक कन्या को पुत्रीरूप में स्वीकार करते हैं [1]।

३८५. दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार लक्ष्मी एक फल से उत्पन्न होती है और वेदमुनि नामक एक ऋषि द्वारा उसका पालन-पोषण होता है। उसका नाम सीता है और बाद में वह समुद्रतट पर तपस्या करने जाती है। उसके सौंदर्य के विषय में सुनकर रावण उसके पास पहुँचता है जिसपर वह अग्नि में प्रवेश कर भस्मीभूत हो जाती है। राख को एकत्र कर वेदमुनि उसे एक स्वर्णयष्टि में बंद कर देता है। बाद में यह यष्टि रावण के पास पहुँच जाती है जो उसे अपने कोषागार में रख देता है। कुछ समय के उपरांत उस यष्टि से आवाज सुनाई पड़ती है! उसे खोला जाता है और उसमें एक लघु कन्यका के रूप में परिणत सीता दिखाई देती है। ज्योतिषी कहते हैं कि यह कन्या सिंहल के नाश का कारण सिद्ध होगी इस कारण रावण उसे एक स्वर्ण मंजूषा में बंद करके समुद्र में फेंक देता है। यह मंजूषा लहरों पर तैरते हुए बंगाल की ओर बह गया और गंगा में प्रविष्ट होकर एक खेत तक पहुंच गया। वहां कृषकों ने उसे देखा और अपने राजा को दे दिया [2]।

इस कथा में वेदवती के वृत्तान्त का प्रभाव स्पष्ट है। जिस फल से सीता का जन्म माना गया है वह अवश्य सीता फल ही है।

३८६. दक्षिण भारत के एक अन्य वृत्तान्त में द्रौपदी की उत्पत्ति की कथा का अनुकरण किया गया है। **महाभारत** में द्रौपदी वेदी से उत्पन्न मानी गई है (दे० १, १५५, ४१, **कुमारी चापि पांचाली वेदिम-**

१. दे० आ० रा० १, ३, १८८-२७५। पाश्चात्य वृत्तान्त न० ९ मे भी वही कथा पाई जाती है लेकिन वह अपूर्ण रह गई।

२. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न १९, भाग १३, पृ० १३९।

ध्यात्समुत्थितत)। प्रस्तुत वृत्तान्त में सीता के विषय में भी ऐसा कथन मिलता है।

योगी का रूप धारण कर ईश्वर लंका में निवास करते हैं और उसमें अनेकानेक उत्पात करते हैं। बाद में वह नगर के एक फाटकपर पहरा देना स्वीकार करते हैं। वहाँ वह बहुत राख एकत्र करते हैं जिसमें से एक बहुत ऊँचा पेड़ उत्पन्न होता है। इसके बाद योगी चले जाते हैं और रावण उस पेड़ को चार टुकड़ों में काटकर समुद्र में बहा देने का आदेश देता है। एक टुकड़ा जनक के राज्य में पहुँचता है। मन्त्री उसे यज्ञ की अग्नि मे जलाने का परामर्श देते हैं। ऐसा किये जाने पर सीता एक धनुष के साथ-साथ अग्नि से उत्पन्न हो जाती हैं। धनुष में लिखा है—जो धनुष तोड़ेगा उसी के साथ इस कन्या का विवाह होगा (दे० पा० वृ० न० १)।

(उ) उपसंहार।

३८७. सीता-जन्म के ये समस्त विभिन्न रूप **वाल्मीकि रामायण** में वर्णित भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म की घटना को स्वीकार करते हैं। उन वृत्तान्तों पर वेदवती की कथा की प्रायः गहरी छाप पाई जाती है। जिनमें यह प्रभाव स्पष्ट नहीं है वे सीता तथा लक्ष्मी के अभेद को स्वीकार करते हैं और उनकी उत्पत्ति वाल्मीकि के बहुत बाद ही सम्भव हुई होगी। अतः **वाल्मीकि रामायण** में वर्णित भूमिजा सीता की जन्मकथा और वेदवती के वृत्तान्त को ही सबसे प्राचीन और अन्य जन्मकथाओं का बीज तथा आधार मानना सर्वथा युक्तिसंगत प्रतीत होता है। वेदवती का वृत्तान्त भूमिजा सीता की जन्मकथा की एक पूर्तिमात्र है। भूमिजा सीता के वृत्तान्त की सृष्टि सम्भवतः सीता की कुलपरम्परा-सम्बन्धी तथ्यों के अभाव को पूर्ति करने के उद्देश्य से की गई हो। सम्भव है कि सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी के व्यक्तित्व का प्रभाव भूमिजा सीता के वृत्तान्त पर पड़ा है। किन्तु अधिक सम्भव यह है कि सीता के नाम के कारण (उसका अर्थ लांगलपद्धति है) भूमिजा सीता का वृत्तान्त उत्पन्न हुआ है [१]।

---

१. यहाँ पर सिंहलद्वीप की एक कथा का उल्लेख करना है जिसके अनुसार एक देवी के वस्त्र स्नान करते समय चुरा लिये गये थे। राम ने उसे अन्य वस्त्र देकर उससे विवाह कर लिया। दे० इं० ए० भाग ४५, सप्लेमेंट।

(घ) द श र था त्म जा

३८८. **दशरथ जातक** में राम, लक्ष्मण और सीता दशरथ की महिषी की सन्तान हैं। उस महिषी के मरने के पश्चात् ही नवीन पटरानी भरत को जन्म देती है। सर्वप्रथम डा० ए० वेबर ने और उसके बाद बहुत विद्वानों ने **दशरथ जातक** को राम-कथा का प्राचीनतम रूप माना है। इस समस्या का पूरा विश्लेषण निबन्ध के छठे अध्याय में किया गया है। निष्कर्ष यह निकला है कि **दशरथ जातक** का कथानक या तो **रामायण** ही पर अथवा **रामायण** से मिलती जुलती किसी अन्य राम-कथा पर निर्भर है। प्रस्तुत विश्लेषण से स्पष्ट है कि सीता-जन्म-संबंधी कथाएँ जो **वाल्मीकि रामायण** से भिन्न हैं और विशेष रूप से वे कथाएँ जिनमें रावण सीता का पिता माना गया है इन सब कथाओं का आधार **वाल्मीकि रामायण** का वेदवती का वृत्तान्त ही है। अतः उन विद्वानों का यह मत जिसके अनुसार सीता प्रथम दशरथ की पुत्री, बाद में रावण की पुत्री और अंत में अयोनिजा मानी गई हैं सर्वथा निर्मूल सिद्ध होता है[1]।

३८९. अंत में सीता जन्म का एक अन्य रूप भी प्रस्तुत करना है जिसमें वह दशरथ की पुत्री मानी गई हैं। यह रूप हिंदेशिया की निम्न-लिखित राम-कथाओं में मिलता है : जावा का **राम केलिंग**, मलय का **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण**। इसका अन्यत्र कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है, कथा इस प्रकार है—

दशरथ की पटरानी मदोदरी के सौंदर्य का वर्णन सुनकर रावण दशरथ के पास जाता है और मंदोदरी की याचना करता है। मंदोदरी यह देखकर कि उसका पति उसे दे देने को समुद्यत सा हो रहा है अपने भवन में जाती है और जादू के द्वारा एक दूसरी मंदोदरी उत्पन्न करती है जिसे रावण ले जाता है। बाद में वास्तविक मंदोदरी से सच वृत्तान्त सुनकर दशरथ घबड़ाते हैं। यह नई मंदोदरी अक्षतयोनि है जिससे रावण को धोखे का [illegible]चलेगा। अनन्तर दशरथ लंका जाते हैं और छिपकर उस नवीन मंदोदरी से मिलते हैं। बाद में रावण-मंदोदरी का विवाह मनाया जाता है और मंदोदरी के एक पुत्री उत्पन्न होती है। उसकी जन्मकुंडली से पता

---

१. दे० डब्लू स्टुटरहाइमः राम-लेगेन्डन; उंड राम रेलिंप्स इन इंडीनेजियन, पृ० १०५। जे० चिलुस्की, इ० हि० क्वा० भाग १५, पृ० २८९।

चलता है कि उसका पति रावणहंता सिद्ध होगा, अतः पेट्टिका में बंद करके उसे समुद्र में फेंका जाता है। महर्षि कलि उसे पाते हैं और उसका भरणपोषण करते हैं।

ये महर्षि कलि जावा के **सेरत कांड** के ऋषिकल ही प्रतीत होते हैं, जिसको वहाँ मंतिलि (मिथिला) का निवासी बताया गया है। दशरथ की पत्नी के रूप में मंदोदरी का उल्लेख अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलता। यह असम्भव नहीं है कि ऐसी कल्पना **दशरथ जातक** के कारण उत्पन्न हुई हो जिसमें सीता को दशरथ की पुत्री माना गया है। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यह वृत्तान्त रावण के पार्वती के स्थान पर मंदोदरी को प्राप्त करने की कथा का विकृत रूप है (दे० आगे अनु० ५३६)।

इस कथा का उत्तरार्द्ध जावा के **सेरत कांड** से और उपर्युक्त अन्य कथाओं से मिलता-जुलता है, जिनमें सीता रावण-मदोदरी की पुत्री मानी गई हैं।

पन्द्रहवाँ अध्याय

अयोध्याकांड

१

वाल्मीकीय अयोध्याकांड

३६०. क. अ यो ध या कां ड की क था व स्तु

(१) **राम का निर्वासन** (सर्ग १-४४)।

पुनरावृत्ति : भरत और शत्रुघ्न का अश्वपति के यहाँ रहना, रा की लोकप्रियता और गुणकथन (सर्ग १, १-३४)।

राम के युवराज्याभिषेक की तैयारी (सर्ग १,३५ से सर्ग ६ तक)।

मंथरा-कैकेयी-संवाद—दो वर मांगने के विषय में मथरा की सफलता (सर्ग ७-६)।

दशरथ-कैकेयी-संवाद—दशरथ द्वारा दो वरों की स्वीकृति (सर्ग १०-१४)।

दशरथ के पास राम का आगमन—दशरथ के सम्मुख कैकेयी का समाचार-कथन (सर्ग १५-१६)।

राम-कौशल्या-संवाद—लक्ष्मण और कौशल्या द्वारा निर्वासन का विरोध राम, का समझाना, कौशल्या द्वारा बिदा और मगलाकांक्षा (सर्ग २०-२५)।

राम-सीता-संवाद—वन की भयकरता से राम का सीता को भयभीत करना; अंत में साथ चलने की स्वीकृति देना (सर्ग २६-३०)। लक्ष्मण का आग्रह और राम की साथ ले चलने की स्वीकृति (सर्ग ३१)।

प्रस्थान - दान-वितरण, राम का राजा के पास जाना (सर्ग ३२-३४), सुमत्र के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना (सर्ग ३५), दशरथ

का राम के साथ सेना भेजने का प्रस्ताव; कैकेयी की आपत्ति (सर्ग ३६)। कैकेयी द्वारा दिए हुए वल्कल का धारण करना (सर्ग ३७)। दशरथ द्वारा कैकेयी की भर्त्सना (सर्ग ३८)। सुमत्र का रथ लाना, कौशल्या द्वारा सीता को शिक्षा, विदा (सर्ग ३६-४०)। विलाप-कलाप, दशरथ की मूर्च्छा, कौशल्या का विलाप और सुमित्रा का सान्त्वना देना (सर्ग ४५-५६)।

(२) चित्रकूट की यात्रा (सर्ग ४५-५६)

अयोध्यानिवासी—उनका रथ के साथ जाना; तमसा के पास रात्रि-निवास; उनके सोते समय तीनों का सुमंत्र के साथ प्रस्थान (सर्ग ४५ ४६)। लोगों का विलाप और अयोध्या लौटना (सर्ग ४७-४८)।

गुह—वेदश्रुति और गोमती के पार गुह का मिलन (सर्ग ४६-५०)। लक्ष्मण और गुह का राम का गुणकथन करते हुए रात्रि व्यतीत करना (सर्ग ५१)। सुमत्र को विदा करके गुह की नौका पर गंगा पार करना (सर्ग ५२)।

भरद्वाज—राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना, यमुना और गंगा के संगम पर भरद्वाजाश्रम में जाना, भरद्वाज की चित्रकूट-निवास की मंत्रणा (सर्ग ५४)। यमुना को पार करना, चित्रकूट में पहुंचना, वाल्मीकि से मिलन, लक्ष्मण द्वारा एक पर्णशाला का निर्माण (सर्ग ५५-५६)।

(३) दशरथ-मरण (सर्ग ५७ ७८)

सुमंत्र का लौटना—सुमत्र से राम का संदेश सुनकर दशरथ की मूर्च्छा और विलाप। सुमंत्र द्वारा कौशल्या को सान्त्वना (सर्ग ५७-६०)।
दशरथ-मरण—कौशल्या की भर्त्सना से दशरथ का मूर्च्छित होना (सर्ग ६१-६२)। दशरथ द्वारा अंध-मुनि-पुत्र-वध की कथा, दशरथ-मरण, विलाप (सर्ग ६३ ६६)।

भरत का राज्य अस्वीकृत करना—भरत का बुलावा और अयोध्या-आगमन ; कैकेयी द्वारा राज्य-ग्रहण का अनुरोध। भरत की भर्त्सना

और मंत्रियों के सन्मुख राज्य को अस्वीकृत करना तथा उनका कौशल्या से अपने निरपराधी होने का आश्वासन (सर्ग ६७-७५)।

दशरथ की अंत्येष्टि—भरत द्वारा अंत्येष्टि-क्रिया और दान वितरण। भरत और शत्रुघ्न का विलाप, शत्रुघ्न द्वारा मंथरा की ताड़ना (सर्ग ७६-७८)।

(४) भरत की चित्रकूट-यात्रा (सर्ग ७९-११५)

प्रस्थान—भरत का पुनः राज्य को अस्वीकार करना और यात्रा की आज्ञा देना; सभा में वसिष्ठ का भरत को समझाना परन्तु उनका न मानना, प्रस्थान और शृंगवेरपुर आगमन (सर्ग ७९-८३)।

गुह और भरद्वाज—भरत द्वारा गुह का संदेह-निवारण, गुह का लक्ष्मण की वार्त्ता का उल्लेख करना तथा राम का शयन-स्थल दिखलाना (सर्ग ८४-८८), गंगा का पार करना। भरद्वाज का तपःशक्ति से आतिथ्य-सत्कार (सर्ग ८९-९२)।

चित्रकूट आगमन—चित्रकूट को देखकर भरत का सेना रोकना (सर्ग ९३)। राम द्वारा चित्रकूट और मंदाकिनी की शोभा का वर्णन; सेना को निकट आते देख लक्ष्मण का आक्रोश और राम का उनको शांत करना (सर्ग ९४-९७)। भरत और शत्रुघ्न का राम के निकट जाना; राम का कुशल-प्रश्न (सर्ग ९८-१००)।

राम द्वारा प्रत्यागमन की अस्वीकृति—भरत का दशरथ-मरण का समाचार देना और राम से राज्य-ग्रहण का अनुरोध। राम का अस्वीकार करना (सर्ग १०१-१०२)। राम का विलाप और दशरथ के लिए जल-क्रिया करना (सर्ग १०३)। माताओं का आना (सर्ग १०४)। सभा में भरत का अनुरोध और राम की अस्वीकृति (सर्ग १०५-१०७)। जाबाली-वृत्तान्त (सर्ग १०८-१०९) वसिष्ठ का आग्रह, भरत द्वारा प्रयोपवेशन की धमकी। लौटने पर राज्यग्रहण का राम द्वारा आश्वासन (सर्ग ११०-१११)। ऋषियों की आकाशवाणी सुनकर भरत का पादुकाएँ लेकर वापस जाना (सर्ग ११२)।

भरत का प्रत्यागमन—भरद्वाज से मिलकर भरत का शून्य अयोध्या में लौटना। राज्यसिंहासन पर पादुकाएँ स्थापित कर भरत का नन्दिग्राम में निवास (सर्ग ११३-११५)।

(५) राम का चित्रकूट से प्रस्थान

राक्षसों के उपद्रव से तपस्वियों का चित्रकूट-त्याग और राम से भी आग्रह; राम का अस्वीकार करना (सर्ग ११६)। बाद में चित्रकूट त्याग कर राम का अत्रि के आश्रम में जाना। सीता-अनसूया सवाद और सीता का अपना जीवन-वृत्तान्त कहना (सर्ग ११७-११८)। प्रस्थान (सर्ग ११६)।

ख. अ यो ध्या कां ड का वि श्ले ष ण

तीनों पाठों में विभिन्नता

३६१. कथानक के दृष्टिकोण से अयोध्याकांड के तीन पाठों में कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया जाता है। निम्नलिखित वृत्तान्त केवल दाक्षिणात्य पाठ में मिलते हैं।

(१) कैकेयी की माता के अपने पति द्वारा त्यक्त किये जाने की कथा (सर्ग ३५)।

(२) प्रातः राम को न देखकर अयोध्यावासियों का विलाप (सर्ग ४७)।

(३) राम, सीता तथा लक्ष्मण की वाल्मीकि से भेंट (सर्ग ५६, १६-१७)।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ का ६८वां सर्ग गौडीय पाठ में नहीं मिलता तथा १०६ वें सर्ग का पश्चिमोत्तरीय पाठ में अभाव है।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में एक ब्राह्मण द्वारा कैकेयी को शाप दिये जाने का उल्लेख है, जिसके फलस्वरूप **शापदोषमोहिता** कैकेयी ने मंथरा पर विश्वास किया था (गौ० रा० ८, ३३-३७ तथा प० रा० ११, ३७-४१)।

केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ में कैकेयी के विद्याबल प्राप्त करने की कथा मिलती है, जिससे वह दशरथ को बचाने में समर्थ हुई थी (प० रा० ११, ४२ आदि)।

प्रक्षेप

३६२. अयोध्याकांड का कोई बहुत महत्त्वपूर्ण कथांश प्रक्षिप्त नहीं है। निम्नलिखित प्रक्षेप उल्लेखनीय हैं।

(१) प्रथम सर्ग के प्रारम्भिक श्लोक (१-३५) बालकांड के अंतिम श्लोक की पुनरावृत्ति मात्र होने के कारण प्रक्षिप्त माने जाते हैं।

(२) डा० याकोबी का अनुमान है कि **आदिरामायण** में राम के प्रस्थान के अनन्तर उनकी चित्रकूट तक की यात्रा का वर्णन किया गया था। अतः सम्भव है कि सर्ग ४१-४६ प्रक्षिप्त हों।

(३) दशरथ की मृत्यु से लेकर भरत के चित्रकूट में आगमन तक की कथा (सर्ग ६६-६३) अपेक्षाकृत अधिक विस्तारपूर्वक वर्णित है तथा इसमें बहुत पुनरावृत्तियां भी पाई जाती हैं अतः बहुत सम्भव है कि यह अंश वाल्मीकिकृत **रामायण** में इतना विस्तृत नहीं था।

(४) १००वां सर्ग स्पष्टतया प्रक्षिप्त है। इसमें राम भरत से उनके राज्य के विषय में बहुत से प्रश्न पूछते हैं मानो भरत दीर्घकाल तक शासन कर चुके हैं; अनन्तर १०१ वें सर्ग के प्रारम्भिक श्लोक में कहा गया है कि राम प्रश्न पूछने लगे (**प्रष्टुं समुपचक्रमे**)। वास्तव में १००वें सर्ग की सामग्री **महाभारत** से उद्धृत की गई है (दे० सभापर्व, अध्याय ५०)।

(५) जाबाली का वृत्तान्त भी निश्चित रूप से प्रक्षिप्त है। राम के अयोध्या न लौटने के दृढ़ संकल्प—

प्रवेक्ष्ये दंडकारण्यमहमप्यविलम्बयन्।
आभ्यां तु सहितो वीर वैदेह्या लक्ष्मणेन च ॥ (१०७,१६)

के पश्चात् भरत के प्रत्युपवेशन का प्रसग आना चाहिए—

एवमुक्तेन रामेण भरत प्रत्यनन्तरम्।
उवाच विपुलोरस्कः सूतं परमदुर्मना ॥१२॥
इह तु स्थण्डिले शीघ्रं कुशानास्तर सारथे।
आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन्मे संप्रसीदति ॥१३॥
(सर्ग १११)

प्रचलित पाठों में राम के संकल्प के पश्चात् जाबाली लोकायत दर्शन का प्रतिपादन करने लगते हैं (सर्ग १०८)। राम जाबाली को प्रत्युत्तर देकर अपना सकल्प पुनः प्रकट करते हैं (सर्ग १०६, १-३६)। इसके उत्तर राम के प्रत्युत्तर का सारांश उपजाति छंदों में दोहराया जाता है (सर्ग १०६, ३०६)। इस अंश में जो केवल दाक्षिणात्य पाठ में मिलता है, राम बुद्ध को चोर और नास्तिक कहते हैं। यह समस्त १०६ वां सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ में नहीं मिलता। इसके अनन्तर वसिष्ठ राम की वंशावली सुनाकर राज्यभार स्वीकार करने के लिए राम से अनुरोध करते हैं (सर्ग ११०)।

(६) डाक्टर याकोबी के अनुसार चित्रकूट से प्रस्थान करने के पश्चात् राम आदि के अत्रि के आश्रम में जाने का वृत्तान्त प्रक्षिप्त है। प्रामाणिक **रामायण** में बालकांड की घटनाओं का निर्देश नहीं मिलता, लेकिन सीता-अनुसूया-संवाद के अंतर्गत लक्ष्मण-उर्मिला के विवाह का उल्लेख किया गया है यद्यपि अरण्यकांड में लक्ष्मण को अविवाहित कहा गया है। इसके अतिरिक्त इस अंश में अयोनिजा सीता का तथा दक्ष-यज्ञ के अवसर पर वरुण के देवरात को धनुष देने का उल्लेख मिलता है। अन्यत्र देवताओं द्वारा देवरात को धनुष-दान का उल्लेख किया गया है।

(७) उपर्युक्त प्रक्षेपों के अतिरिक्त अन्य स्थलों पर भी परस्पर विरोधी बातें पाई जाती हैं, जिससे स्पष्ट है कि आदि-कवि की रचना अपने मूल रूप में हमारे सामने नहीं है। उदाहरणार्थ, राम कौशल्या से कहते हैं कि वन में मांस का सेवन न करूंगा।

कन्दमूलफलैर्जीवन्हित्वा मुनिवदमिषम्

(सर्ग २०, २६)

लेकिन आगे चलकर राम के मांस खाने का कई स्थलों पर उल्लेख किया गया है। (दे० सर्ग ५२, १०२। सर्ग ६६, १-६, आदि)।

———

२

अयोध्याकांड का विकास

३९३. अयोध्याकांड के कथानक का कोई विशेष विकास नहीं हुआ है। इसकी प्रधान कथावस्तु राम का निर्वासन है; इससे सम्बन्ध रखने वाली सामग्री तीसरे परिच्छेद में रखी गई है। यहाँ पर अयोध्याकांड के कथानक के अन्य तत्वों पर विकास के दृष्टिकोण से विचार किया जाता है।

क. राम की चित्रकूट-यात्रा

पउमचरिय को छोड़कर जहाँ वन-भ्रमण का विस्तृत वर्णन किया गया है (पर्व ३३-४२) राम की यात्रा के वर्णन में इतना ही विकास हुआ है कि इसमें कई नई घटनाएं जोड़ दी गई हैं।

(१) राम के चरण धोने का अनुरोध करने वाले केवट का वृत्तान्त **सूरसागर, रामचरितमानस** तथा **कवितावली** में चित्रकूट-यात्रा-वर्णन में रखा गया है। इस वृत्तान्त का प्रथम उल्लेख **अध्यात्म रामायण** में मिलता है लेकिन उसमें इसका वर्णन शिलामयी अहल्या के उद्धार के अनन्तर किया गया है, जो अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है (दे० अध्यात्म रा० १,६)। **आनन्द रामायण** (१, ३, २४-२८) तथा **रामरहस्य** (सर्ग ४) में भी यह वृत्तान्त **अध्यात्म रामायण** के अनुसार रखा गया है। **रामलिंगामृत** में इसका वर्णन राम और लक्ष्मण के सीता की खोज करते समय किया गया है (सर्ग ६)। कहा जाता है कि **चान्द्र रामायण** में केवट के पूर्व-जन्म की कथा का वर्णन है (दे० ऊपर अनु० २११)।

(२) राम आदि के **वाल्मीकि** से मिलने जाने का वृत्तान्त दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप में मिलता है। **अध्यात्म रामायण** में वाल्मीकि इस अवसर पर रामनाम का महत्त्व दिखलाने के उद्देश्य से आत्मकथा का वर्णन करते हैं (दे० २,६,४२-८८)। **रामचरितमानस** में भी राम और वाल्मीकि की भेंट का वर्णन किया गया है।

(३) इसके अतिरिक्त तुलसीदास ने राम की चित्रकूट यात्रा के वर्णन में एक तापस द्वारा राम की वन्दना का उल्लेख किया है।

ख. अं ध-मु नि-पु त्र-व ध

३६४. बौद्ध **साम-जातक** में बनारस के राजा पिलियक द्वारा अंध दुकूलक तथा पारिका के पुत्र साम के वध का वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० ८४)। इसमें दशरथ का निर्देश नहीं मिलता जिससे प्रतीत होता है कि अंध-मुनि-पुत्र वध का वृत्तान्त राम-कथा से स्वतन्त्र रूप में प्रचलित था।

रामायण के दाक्षिणात्य पाठ में उस पुत्र के नाम का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन अन्य पाठों में उसका नाम यज्ञदत्त रखा गया है (दे० गौ० रा० ६६, ६ प० रा० ७०, ६)। आगे चलकर उसके दो अन्य नाम भी प्रचलित हो गए हैं। श्रवणकुमार (दे० ब्रह्मपुराण अध्याय १२३) अथवा श्रावण (दे० काश्मीरी रा० भावर्थ रा० आदि) तथा सिंधु (दे० पद्मपुराण, गौडीय पातालखंड, अध्याय १४, तथा कृत्तिवास का रामायण)।

वाल्मीक रामायण के तीनों पाठों के अनुसार उसकी माता शूद्रा है, केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ उसके पिता को ब्राह्मण मानते हैं— **ब्राह्मणेन त्वहं जातः शूद्रायां** (गौ० रा० ६५, ४३)। दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार इसका पिता वैश्य ही माना गया है। **शूद्रायां वैश्येन जातो नरवराधिप** (दा०रा० ६३, ४१)।

आगे चलकर इसका प्रायः उल्लेख किया गया है कि वह ब्राह्मण नहीं है—

द्विजेतरतपस्विसुत (रघुवंश, ६, ७६)।

न ब्रह्महा त्वं (उदारराघव, ६, सर्ग १)।

ब्रह्महत्या स्पृशेन्न त्वां वैश्योऽहं तपसि स्थितः (अ[illegible] रा० २, ७, २७)।

एक श्रवण-रामायण का उल्लेख मिलता है, जिसके विषय में कहा जाता है कि इसमें श्रवण-कुमार की मातृपितृ-भक्ति-वर्णन, श्रवण-विवाह तथा श्रवण-वध का वर्णन मिलता है (दे० ऊपर अनु० २१७)।

हिंदेशिया के **सेरी राम** में अंध-मुनि पुत्र-वध का निम्नलिखित रूप

पाया जाता है। एक वृद्ध तपस्वी बेर्मादेव (ब्रह्मदेव) ने दशरथ से कहा था कि एक सहस्र हाथियों का वध करने के पश्चात् तुम्हारे चार पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न होगी। इस कारण दशरथ निरन्तर आखेट करते हैं और १००० वें हाथी के स्थान पर भूल से एक अंधे ब्राह्मण के पुत्र का वध करते हैं।

श्याम की लाओ भाषा के **पंचतंत्र** में बिना विचार किए कार्य करने के दृष्टान्त के रूप में दशरथ की कथा पाई जाती है (दे० ऊपर अनु० ३११)। कथा इस प्रकार है। मृगया खेलते हुए दशरथ एक आश्रम में पहुंचते हैं जहाँ एक पुत्र अपने अंधे माता-पिता की सेवा में अपना जीवन बिताता है। दशरथ से प्रार्थना की जाती है कि वह हानिकर हाथियों से आश्रम की रक्षा करें। एक वृक्ष पर बैठकर दशरथ दिन रात हाथियों को मारते हैं। किसी रात वह सो गए थे और वृक्ष के नीचे की आवाज से जाग जाते हैं। पुत्र उस समय जल लेने जा रहा था। हाथी समझ कर दशरथ ने उसे बाण से मारा। अपने पुत्र की मृत्यु सुनकर दोनों वृद्ध शोक के कारण मर जाते हैं।

ग. भरत की चित्रकूट यात्रा

३९५. भरत की चित्रकूट-यात्रा के वृत्तान्त में आगे चलकर कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया गया है। **महावीरचरित** में भरत मिथिला में ही राम की पादुकाएं ग्रहण करते हैं, और राम वहाँ से वन के लिए प्रस्थान करते हैं; बाद में भरत की किसी वनयात्रा का उल्लेख नहीं है। **रामचरितमानस** में जनक के चित्रकूट में आगमन का विस्तृत वर्णन किया गया है। कहा जाता है कि **श्रवण-रामायण** के अनुसार भी जनक चित्रकूट गए थे (दे० ऊपर अनु० २१७)। इस घटना का अन्यत्र उल्लेख नहीं मिलता है।

३९६. **वाल्मीकि रामायण** में कौशल्या दशरथ के लिए राम द्वारा दिया हुआ पिंडदान (**इंगुदिपिण्याकं**; इंगुदी की खली) देखकर विलाप करने लगती हैं (सर्ग १०४)। आगे चलकर अनेक वृत्तान्तों में राम के पिंडदान का उल्लेख किया गया है। **ब्रह्मपुराण** के अनुसार दशरथ अपने निर्वासित पुत्रों को दर्शन देकर ब्रह्महत्या के कारण अपनी नरकयातना का वर्णन करते हैं और उनसे गौतमी तट पर पिंडदान करने की प्रार्थना करते हैं। अनन्तर राम द्वारा पिंडदान का उल्लेख है जिसके फलस्वरूप दशरथ नरक से मुक्ति प्राप्त करते हैं (दे० अध्याय १२३)।

स्कंद पुराण के प्रभासक्षेत्र-माहात्म्य में दशरथ राम को स्वप्न में दिखाई देते हैं। ब्राह्मणों से परामर्श कर राम उनके द्वारा पिंडदान की क्रिया करवाते हैं (दे० अध्याय १११)।

शिवपुराण में राम तथा लक्ष्मण दशरथ के श्राद्ध की सामग्री ले आने के लिए गाँव जाते हैं। विलम्ब होने पर सीता, श्राद्धकाल की किंचित् अवधि शेष समझ कर, स्वयं श्राद्ध की क्रिया करती हैं। अनन्तर दशरथ दर्शन देकर सीता से कहते हैं— 'मैं दशरथ हूं, तुम्हारे सफल श्राद्ध से मैं तृप्त हुआ'। (दे० ज्ञानसंहिता, अध्याय ३०)। **काश्मीरी रामायण** में भी उपर्युक्त ब्रह्मपुराण के वृत्तान्त के अनुसार दशरथ राम से अपनी नरकयातना का उल्लेख करते हैं। इसपर राम यमलोक में जाकर और तक्षक का वध करके दशरथ को पितृलोक में पहुँचाते हैं (दे० अयोध्याकांड, न० १२८)।

३६७. राम की पादुकाओं का वृत्तान्त **वाल्मीकि रामायण** के तीन पाठों में कुछ भिन्न है, जिससे यह आभास मिलता है कि यह तत्त्व सम्भवतः बाद में जोड़ दिया गया हो।

दाक्षिणात्य पाठ में भरत राम की हेमभूषित पादुकाएं ले जाने की राम से प्रार्थना करते हैं (दे० दा० रा० २, ११२, २१)। गौडीय पाठ में भरत के प्रस्थान के समय शरभग राम को कुशपादुकाओं का एक जोड़ा भेज देते हैं, और वसिष्ठ के अनुरोध से राम भरत को इन्हें प्रदान करते हैं।

पश्चिमोत्तरीय पाठ में न तो शरभग का और न कुशपादुकाओं का उल्लेख हुआ है, लेकिन वसिष्ठ के मांगने पर राम भरत को अपनी पादुकाएं देते हैं।

दशरथ जातक में कहा जाता है कि अमात्य राम की इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते हैं। अन्याय होते ही पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती हैं तथा ठीक निर्णय होने पर वे शान्त रहती हैं।

घ. राम का चित्रकूट में निवास।

३६८. दाक्षिणात्य पाठ में चित्रकूट की केवल एक पर्णशाला का उल्लेख है (दे० ५६, २०), लेकिन गौडीय (दे० ५६, २०) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (दे० ६०, २०) में लक्ष्मण के दो पर्णशालाओं को बनाने का उल्लेख किया गया है।

३९९. जावा के **सेरी राम** के अनुसार राम घास से सात लड़कियों तथा पांच लड़कों की सृष्टि करते हैं, जिससे राम, सीता, लक्ष्मण तीनों निश्चिंत होकर एकाग्रता से साधना कर सकते हैं।

४००. सुन्दरकांड में सीता अभिज्ञान-स्वरूप हनुमान को काक-वृत्तान्त सुनाती हैं। किसी दिन राम सीता की गोद में सो रहे थे कि एक काक (इंद्र का पुत्र) सीता के स्तनों पर आघात करने लगा। जागकर राम ने ब्रह्मास्त्र पर दर्भ रख कर उसे काक पर चलाया। कहीं भी शरण न पाकर काक राम के पास लौटा और एक आंख ब्रह्मास्त्र को देकर बच गया (दे० रा० ५, ३८)। हनुमान राम के पास लौट कर इसी वृत्तान्त को दोहराते हैं (दे० रा० ५, ६७)।

इस वृत्तान्त का **आदिरामायण** के अयोध्याकांड में उल्लेख नहीं था। दाक्षिणात्य पाठ के संस्करणों में सर्ग ६५ के बाद एक प्रक्षिप्त सर्ग रखा जाता है, जिसमें काक वृत्तान्त का किंचित् भिन्न रूप से वर्णन किया गया है। भोजन के बाद सीता कौवों को खिला रही थीं, कि एक काक उन्हें कष्ट देने लगा। इसपर राम ने इषीकास्त्र चलाकर काक को भगाया। अंत में काक ने राम की शरण ली और अस्त्र को एक आंख समर्पित कर बच गया। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में यह सर्ग प्रक्षिप्त नहीं माना गया है, तथा इसकी गणना अन्य सर्गों के साथ साथ हुई है (दे० गौ० रा० २,१०५, प० रा० २,१०६)।

वाल्मीकि रामायण में यह सर्ग भरत के चित्रकूट में आगमन के पूर्व रखा गया है; कालिदास ने काक-वृत्तान्त का वर्णन भरत के प्रस्थान के पश्चात् किया है (दे० रघुवंश, सर्ग १२)। फलस्वरूप बहुत रामकथाओं में इस घटना का उल्लेख कालिदास के क्रमानुसार किया जाता है, उदाहरणार्थ: **नृसिंहपुराण**, संध्याकरनन्दिकृत **रामचरित**, **पद्मपुराण** (उत्तरकांड अध्याय २६६), **रामचरितमानस**, **काश्मीरी रामायण**।

जयन्त स्थूलसिर के शाप के कारण काक बन गया था, ऐसा कथन **पद्मपुराण** के उत्तरकांड के गौडीय पाठ में मिलता है।[1] कनारी **तोरावे रामायण** के अनुसार अत्रि ने शाप द्वारा उसे काक बना दिया था (अयोध्या-कांड संधि ७)। कहा जाता है कि **देव-रामायण** में जयंत के काक-

१ दे० जर्नल एसियटिक सोसाइटी, बंगाल १८४२, पृ० ११२०।

परिवर्त्तन की कथा का विशेष वर्णन किया गया (**है दे० ऊपर अनु० २१६**) ।

अध्यात्म रामायण के अनुसार काक ने सीता के पैर के अंगूठे को फाड़ डाला था (**मत्पादांगुष्ठमारक्तं विददारामिषाशया, दे० ५,३, ५४**) । **आनन्द रामायण**(१,६,७,८६) तथा **रामचरितमानस** में भी ऐसा वर्णन है ।

हिंदेशिया के **सेरी राम** में काक-वृत्तान्त का एक परिवर्तित रूप मिलता है । स्वयंवर के अनन्तर महारेषि कलि, जिन्होंने सीता का पुत्रीवत् पालन किया था, राम से कहते हैं—'एक काक मेरा मधु और दूध चुराता है, उस पर बाण मारिये' । राम का बाण काक का सर्वत्र पीछा करता है । विवश होकर काक सुधार की प्रतिज्ञा करता है और बाण राम के पास लौटता है । **सेरत कांड** में भी इससे मिलता जुलता रूप पाया जाता है ।

ख्मेर भाषा के **रेआम केर** के अनुसार एक असुर काकनास अपने को काक में बदल कर विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डालता है । विश्वामित्र उसको मारने के लिए राम तथा लक्ष्मण को धनुष-बाण देते हैं । श्याम रामायण का काकानासुर का वृत्तान्त भी उसी प्रकार है । लेकिन इसमें काकानासुर और ताड़का की कथा का मिश्रण किया गया है क्योंकि काकानासुर के दो पुत्रों 'म्वाद' और 'मारिच' का भी उल्लेख मिलता है ।

४०१. **वाल्मीकिरामायण** में राम के चित्रकूट से प्रस्थान करने के दो कारण बताये गए हैं,

इह मे भरतो दृष्टो मातरश्च सनागराः ।
सा च मे स्मृतिरन्वेति तान्नित्यमनुशोचत : ॥ २ ॥
स्कंधावारनिवेशेन तेन तस्य महात्मन : ।
हयहास्तकरीषैश्च उपमर्दः कृतो मृशम् ॥ ३ ॥
(२,११७)

एक तो चित्रकूट को देखकर भरत आदि का स्मरण आता है, और दूसरे भरत की सेना ने उस स्थान को मैला कर दिया है । **महाभारत** के रामोपाख्यान में जो कारण दिया गया है इसका आगे चलकर अधिक उल्लेख है । राम इसलिए चित्रकूट को छोड़ देते हैं कि जनता पुनः उनके पास न आसके **पुनराशंक्य पौरजानपदागमम्** दे० ३,२६१,३६) । **अध्यात्म-रामायण, आनन्द रामायण** तथा **रामचरितमानस** में यही कारण दिया गया है ।

३

राम का निर्वासन

१२. अयोध्याकांड की प्रधान घटना राम का निर्वासन है। केवल कुछ रामकथाओं में इसका उल्लेख नहीं किया गया है। गुणभद्रकृत जैन **उत्तरपुराण** में रावण राजधानी के निकट के अशोकवन से सीता को हर लेता है, तथा अनाम की रामकथा में दशानन सेना सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण करके सीता को अपने साथ ले जाता है।

शेष रामकथाओं में राम के निर्वासन का बहुत कुछ **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार वर्णन किया गया है। फिर भी राम के वनवास के भिन्न भिन्न कारणों की कल्पना कर ली गई है। इसके अतिरिक्त कैकेयी को वरप्राप्ति की अनेक कथाएं प्रचलित हो गई हैं, तथा कैकेयी के दोष निवारण के लिए भी अनेक उपायों का सहारा लिया गया है। इन तथ्यों से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री पर अलग विचार किया जाएगा। इसके पहले यहाँ पर गौण परिवर्तनों की ओर निर्देश किया जाता है।

४०३. **महानाटक** के अनुसार निर्वासन के समय भरत अयोध्या में थे (अंक ३, ५), तथा **प्रतिमानाटक** में भरत शत्रुघ्न के बिना अपने ननिहाल गए थे (अक ३)। **अनामकम् जातकम्** तथा पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६ और ६ मे केवल राम और सीता के वनवास का उल्लेख है तथा **दशरथ कथानम्** में केवल राम और लक्ष्मण वन के लिए प्रस्थान करते हैं। **सिंहली राम-कथा** तथा **तिब्बती रामायण** में राम अकेले ही वन जाते हैं। **दशरथ जातक** में वनवास का स्थान हिमालय-प्रदेश है तथा इसकी अवधि १२ वर्ष की है।

अध्यात्म रामायण से लेकर अनेक रामकथाओं में नारद के आगमन का उल्लेख किया गया है, जो राज्य अस्वीकृत करने के लिए राम से अनुरोध करते हैं, तथा उनको अवतार के उद्देश्य का स्मरण दिलाते हैं (दे० २, १ और आनन्द रामायण १, ६; काश्मीरी रामायण; रामचरित-मानस के अनेक संस्करणों का क्षेपक)।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम के साथ वन जाने के लिए अनुरोध करते हुए सीता कहती हैं, कि ब्राह्मणों ने मेरा वनवास अनिवार्य बताया है (**वस्तव्यं किल मे वने** दे० सर्ग २६, ८)। आगे चलकर सीता यह भी कहती है कि मैंने जितने रामायण सुने हैं, इन सब में सीता राम के साथ वन जाती हैं (अध्यात्म रामायण २, ४, आनन्दरामायण १, ६, उदारराघव सर्ग ५)। इसके अतिरिक्त **आनन्द रामायण** में सीता ने स्वयंवर के समय राम को पतिस्वरूप प्राप्त करने के लिए १४ वर्ष तक वनवास का व्रत किया था। राम के साथ जाने के अनुरोध में वह इस व्रत का भी उल्लेख करती हैं। **वाल्मीकि रामायण** में राम के वनवास के कई अन्य परोक्ष कारणों का उल्लेख किया गया है—दशरथ द्वारा अध-मुनि-पुत्र-वध (दे० २, ६३, ११) और पूर्वजन्म में कौशल्या द्वारा गायों के स्तनों का काटना (दे० २, ४३, १७) तथा स्त्रियों को पुत्रहीन करना (दे० २, ५३, १६)।

क. वनवास के भिन्न भिन्न कारण

४०४. **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार कैकेयी ने अपने **दो वरों** के बल पर भरत के लिए राज्य तथा राम के लिए १४ वर्ष तक वनवास दशरथ से मांग लिया था। अतः रामके निर्वासन का यह कारण सबसे प्राचीन और बाद मे सबसे प्रचलित और प्रामाणिक माना गया है।

४०५. **दशरथ जातक** तथा **दशरथ कथानम्** में भरत की माता के केवल एक वर का उल्लेख है, जिसके बल पर वह भरत के लिए राज्य मांग लेती है। बाद में भरत की माता के षड्यंत्रों के भय से दशरथ अपने दो पुत्रों (राम और लक्ष्मण) को वन भेज देते हैं, और उनसे बारह वर्ष के पश्चात् लौटने को कहते हैं। अतः इन बौद्ध कथाओं के अनुसार सौतेली मां के षड्यन्त्रों का भय निर्वासन का कारण माना जाता है।

४०६. रामकथाओं का एक तीसरा वर्ग मिलता है, जिसमें राम स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करते हैं। इसी प्रकार के प्राचीनतम वृत्तान्त बौद्ध तथा जैन साहित्य में पाए जाते हैं।

अनाभक जातक में कथा इस प्रकार है। अपने मामा के आक्रमण की तैयारियों के विषय में सुनकर राजा (राम) संघर्ष के निवारण के लिए अपने आप से रानी के साथ पहाड़ी वन में जाकर निवास करने लगे।

जैन पउमचरिय के अनुसार भरत को राज्य दिए जाने का समाचार सुनकर राम स्वेच्छा से सीता तथा लक्ष्मण के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान करते हैं।

तिब्बती रामायण के अनुसार दोनों पुत्रों में से किसे राज्य दिया जाय, अपने पिता की इस प्रकार की किंकर्त्तव्यविमूढता के विषय में सुनकर राम स्वेच्छा से किसी आश्रम में जाकर तपस्या करने लगते हैं।

हिदेशिया के **सेरी राम** में मंथरा को ताड़ने के कारण राम की बदनामी हो चुकी थी। सीता-स्वयंवर के समय भरत को राज्य दिए जाने का समाचार सुनकर राम राजधानी न लौटकर सीता तथा लक्ष्मण के साथ सीधे वन के लिए प्रस्थान करते हैं।

सेरी राम के अन्य पाठ के अनुसार राम स्वयंवर के पश्चात् घर जाते हैं। बाद में, किसी परिचारिका के अनुरोध से भरत की माता दशरथ से अपने पुत्र के लिए राज्य मांग लेती है। दशरथ के सोते समय वह राम को बुलाती है, और उनको भरत के राजा बन जाने का समाचार सुनाती है। यह सुनकर राम बहुत प्रसन्न होते हैं और सीता तथा लक्ष्मण के साथ ऋषि बनने के लिए वन में तपस्या करने जाते हैं।

सिंहली राम-कथा में शनि की अशुभ दशा के दुष्परिणाम से बचने के उद्देश्य से राम सीता को राजधानी में छोड़ कर सात वर्ष तक वन में रहते हैं।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १ (दे० १३ वां अध्याय) के अनुसार राम ताड़का-वध के प्रायश्चित के लिए तपस्या करने जाते हैं। दशरथ उनसे १२ वर्ष के पश्चात् लौटने की प्रार्थना करते हैं। नागरिक राम के पीछे हो लेते हैं, लेकिन उनको लौटने का आदेश देकर राम केवल सीता और लक्ष्मण के साथ वन में प्रवेश करते हैं।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १२ में कहा गया है कि राम १५ वर्ष की अवस्था में सीता तथा लक्ष्मण के साथ तपस्या करने गए थे।

पाश्चात्य वृत्तान्त न० १४ के अनुसार राम को एक ब्राह्मण ने शाप दिया था। बाद में कैकेयी की प्रार्थना स्वीकार कर राम स्वेच्छा से वन के लिए प्रस्थान करते हैं।

ख. कै के यी की व र प्रा प्ति

४०७. कैकेयी के वरों की संख्या तथा उनको प्राप्त करने के ढंग के विषय में भी पर्याप्त मात्रा में विभिन्नता पाई जाती है।

दो वर—वाल्मीकि रामायण के अनुसार देवासुर-युद्ध में दशरथ, इन्द्र के लिए, शम्बरासुर के विरुद्ध युद्ध करते हैं; तथा आहत होकर कैकेयी द्वारा रणभूमि से हटाये जाते हैं। इसके लिए कैकेयी दशरथ से दो वर प्राप्त करती है, और बाद में इन दोनों वरों के बल पर भरत के लिए राज्य तथा राम के लिए वनवास मांग लेती है (दे० रा० २, ६, १५-१७)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ में कैकेयी की सामर्थ्य का कारण भी बताया गया है। उसने एक ब्राह्मण को प्रसन्न कर दिया था, और पुरस्कारस्वरूप उनसे विद्याबल पाया था, जिसके द्वारा वह अपने पति को बचाने में समर्थ हुई। तेलगू **द्विपाद रामायण** में कहा गया है कि शम्बर ने दशरथ से युद्ध करते हुए माया का सहारा लिया था, लेकिन धवलगिरि से सीखी हुई माया द्वारा कैकेयी ने शम्बर की माया का प्रभाव नष्ट करके दशरथ को बचाया था (दे० २, ३)।

बहुत ऐसे वृत्तान्त भी मिलते हैं, जिनके अनुसार कैकेयी ने देवासुर युद्ध में दशरथ-रथ का अक्ष टूटा हुआ देखकर उसमें अपना हाथ रख दिया था (दे० ब्रह्मपुराण, अध्याय १२३, पद्मपुराण[1], अध्यात्म रामायण २, १, ६६, आनन्द रामायण १, १, ८६ राम कियेन, अध्याय १४)।

बाद में कैकेयी के दो वरों के लिए दो भिन्न घटनाओं का उल्लेख किया गया है। **कृत्तिवास रामायण** में शम्बर-युद्ध के अवसर पर कैकेयी को एक वर मिला था और दूसरा वर उसे दशरथ की अंगुली के फोड़े की चिकित्सा करने के लिए मिला था[2]। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३ के अनुसार कैकेयी ने बिच्छू से डसे हुए दशरथ को स्वस्थ कर अपना दूसरा वर प्राप्त किया था।

---

१. दे० उत्तरकांड, बंगीय पाठ, जर्नल एसियटिक सोसाइटी, १८४२, पृ ११२२।

२. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३ में भी कैकेयी के दशरथ के अंगूठे की चिकित्सा करने का उल्लेख है। लोकगीतों में कैकेयी दशरथ के पैर से कांटा निकालकर वर प्राप्त करती हैं। (दे० कविता कौमुदी ५वां भाग, पृ० १०३)।

४०८. **एक वर—महाभारत** में (दे० ३, २६१, २१) तथा **पद्म-पुराण** के उत्तरकांड के गौडाय पाठ में [1] कैकेयी के केवल एक वर का उल्लेख किया गया है लेकिन इसी एक वर के बल पर वह भरत के लिए राज्य तथा राम के लिए वनवास माग लेती है।

दशरथ जातक तथा **दथरथ कथानक** दोनो में भरत की माता के केवल एक वर का उल्लेख है, जिसके बल पर वह भरत को राज्य दिलवाती है। **दशरथ जातक** में कहा गया है, कि भरत के जन्म के अवसर पर दशरथ ने इस वर को दिया था।

खेरी राम के अनुसार भरत की माता दशरथ तथा उनकी महिषी के विवाहोत्सव में उनकी पालकी को गिरने से बचाती है, इस पर दशरथ उनके पुत्र को राज्य दिलवाने की प्रतिज्ञा करते हैं। तीन दिन बाद वह दशरथ के कमर के एक फोड़े की चिकित्सा करती है जिसपर दशरथ अपनी प्रतिज्ञा दुहराते हैं। **हिकायत महाराज रावण** में इससे मिलता जुलता वृत्तान्त पाया जाता है।

४०९. **तीन वर—ब्रह्मपुराण** में देवासुर युद्ध में कैकेयी ने अपने हाथ से दशरथ के रथ का टूटा हुआ अक्ष संभाला था। दशरथ केवल वापसी में देखते हैं कि कैकेयी क्या कर रही है। इस पर प्रसन्न होकर दशरथ उनको तीन वर प्रदान कर देते हैं (दे० अध्याय १२३)।

ग. कैकेयी का दोषनिवारण

४१०. आदिकवि वाल्मीकि ने कैकेयी की दुष्टता और कुटिलता का स्पष्ट शब्दों में चित्रण किया है। चित्रकूट की यात्रा करते समय राम यह आशका भी करते हैं, कि कैकेयी भरत को राज्य दिलाने के लिए दशरथ के प्राण भी लेगी—

सा हि देवी महाराजं कैकेयी राज्यकारणात्।
अपि न च्यावयेत्प्राणान्दृष्ट्वा भरतमागतम्॥ ७॥

(रा० २, ५३)

चित्रकूट में जब भरत कैकेयी की भर्त्सना करते हैं, राम स्वयं कैकेयी का पक्ष लेकर भरत को स्मरण दिलाते हैं, कि दशरथ ने विवाह के अवसर पर कैकेया के पुत्र को राज्य देने की शुल्कस्वरूप प्रतिज्ञा की थी।

---

१. दे० पादटिप्पणी २।

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन्।
मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम्॥ ३॥

(रा० २, १०६)

कैकेयी को निर्दोष ठहराने के लिए दशरथ की प्रतिज्ञा के अतिरिक्त गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में ब्राह्मण-शाप का उल्लेख किया गया है। कैकेयी ने किसी की निंदा की थी और ब्राह्मण ने कैकेयी को शाप दिया था कि तुम्हारी भी निंदा की जायगी। इस कारण **शापदोषमोहिता** कैकेयी मथरा के जाल में फंस गई थी।

विमलसूरि की राम-कथा की परम्परा में कैकेयी ने भरत का वैराग्य दूर करने के उद्देश्य से उनके लिए राज्य माँगा था (दे० हेमचंद्रकृत जैन रामायण, सर्ग ४)।

जानकीहरण में कैकेयी की प्रशंसा इसीलिए की गई है कि उनके दोष के कारण राक्षसों का नाश हुआ था।

यस्या दोषोऽपि भुवनत्रयस्य रक्षोभयनाशाय हेतुर्बभूव

(सर्ग १, ४२)

प्रतिमानाटक में कैकेयी के दोषनिवारण के लिए एक अन्य मार्ग अपनाया गया है। ऋषि शाप के फलस्वरूप पुत्रवियोग के कारण दशरथ का मरण अनिवार्य जानकर कैकेयी ने उस शाप की रक्षा करने के लिए तथा राम को किसी और विकट विपत्ति से बचाने के लिए, वसिष्ठ, वामदेव आदि से परामर्श करने के पश्चात्, राम को वन भिजवाया था। यह सुनकर भरत उनसे पूछते हैं कि आपने १४ वर्ष का निर्वासन क्यों दिलाया है। इस पर कैकेयी उत्तर देती है कि मूल से १४ दिन 'के स्थान पर १४ वर्ष' मुंह से निकला था।

भवभूति के **महावीरचरित** तथा मुरारिकृत **अनर्घराघव** में कैकेयी के किसी दोष का प्रश्न नहीं उठता है। स्वयंवर के समय शूर्पणखा मथरा के वेश में मिथिला पहुँच कर दशरथ को कैकेयी का एक जाली पत्र देती है जिसमें वर के बल पर राम का निर्वासन माँगा गया था। फलस्वरूप राम, भरत को अपनी पादुकाएं देकर, मिथिला ही से वन के लिए प्रस्थान करते हैं (दे० अंक ४)।

बालरामायण में **महावीर चरित** के वृत्तान्त का किंचित् विकसित रूप पाया जाता है। दशरथ कैकेयी के साथ इंद्र से मिलने गए थे। इन दोनों की

अनुपस्थिति का अवसर पाकर मायामय, शूर्पणखा तथा एक परिचारिका क्रमानुसार दशरथ, कैकेयी तथा मंथरा का रूप धारण करती है और राम को निर्वासित करने में समर्थ होती हैं (दे० अंक ६)।

अध्यात्म रामायण में मंथरा तथा कैकेयी दोनों को मोहित करने के उद्देश्य से सरस्वती को अयोध्या भेजे जाने का उल्लेख किया गया है (दे० २, १, ४४-४६) **आनन्द रामायण** में भी कैकेयी का दोष सरस्वती पर लगाया गया है (दे० ८, २, ५२ आदि; रामचरित मानस)।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार चित्रकूट में कैकेयी मौन रहती है। आगे चलकर **अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण** (१, ६, ११२) तथा **रामचरित-मानस** में कैकेयी के इस अवसर पर पश्चात्ताप प्रकट करने का वर्णन किया गया है। **अध्यात्म रामायण** के अनुसार उस समय राम ने कैकेयी से कहा था, कि (निर्वासन के लिए अनुरोध करने वाली) वाणी मुझ से प्रेरित होकर आपके मुंह से निकली थी।

मयैव प्रेरिता वाणी तव वक्त्राद्विनिर्गता।

(३, ६, ५५)

...लिंगामृत में (दे० सर्ग १२) कैकेयी राम से कहती है कि देवेंद्र से प्रेरित होकर मैंने आपको वन भेज दिया था (दे० ऊपर अनु० २५६)।

घ. मंथरा

४११. मथरा के कैकेयी को उभाड़ने का **वाल्मीकि रामायण** में कोई विशेष कारण नहीं दिया गया है। अन्य वृत्तान्तों में इसके लिए भिन्न भिन्न कारण दिये गये हैं।

(१) **महाभारत** के रामोपाख्यान में जब राम की सहायता करने के लिये देवताओं द्वारा ऋक्षों तथा वानरों की स्त्रियों से पुत्र उत्पन्न करने का उल्लेख किया गया है, गंधर्वी दुंदुभी के मंथरा के रूप में प्रकट होने का भी उल्लेख है। **पद्मपुराण** के पातालखंड के गौडीय पाठ में (अध्याय १५) तथा **आनन्द रामायण** में भी (दे० १, २) ऐसा कथन पाया जाता है।

(२) बाद के अनेक वृत्तान्तो में मंथरा को मोहित करने के लिए सरस्वती के भेजे जाने का वर्णन मिलता है (दे० आनन्द रामायण २, १, ४४, राम चरित-मानस, काश्मीरी रामायण)।

(३) **वाल्मीकि रामायण** में शत्रुघ्न राम के निर्वासन के कारण मंथरा को ताड़ते हैं (दे० २, ७८) । बाद में राम का मथरा को ताड़ना वनवास का कारण बताया गया है ।

पादौ गृहीत्वा रामेण कर्षिता साऽपराधतः ।
तेन वैरेण सा रामं वनवासं च काङ्क्षति ॥ ८ ॥

(अग्निपुराण, अध्याय ५)

तेलगू **रंग नाथ रामायण** (२, ३) के अनुसार राम ने बचपन में मंथरा के एक पैर को तोड़ दिया था; **सेरी राम** और **राम कियेन** (अध्याय १४) के अनुसार राम ने उसके कुब्ज मे बाण चलाया था ।

(४) **सत्योपाख्यान** के अनुसार मथरा ने पूर्व जन्म के वैर के कारण राम को वनवास दिलाया था । वह दैत्य विरोचन की पुत्री थी और दैत्य-देवता-युद्ध में उसने देवताओं के विमान और वाहन पाशों से बाँधे थे । इसपर विष्णु की आज्ञा से इन्द्र ने उसे वज्र द्वारा मारा था (दे० अध्याय १०-१४) ।

मंथरा के अगले जन्म का भी उल्लेख किया गया है । **आनन्द रामायण** के अनुसार वह कृष्णावतार के समय पूतना के रूप में प्रकट होगी (दे० ६, ५) लेकिन इसी रचना के एक अन्य स्थल पर कहा गया है कि वह कंस के यहां कुब्जा के रूप में अवतार लेगी (दे० १, २) ।

सोलहवां अध्याय

अरण्यकांड

१

वाल्मीकीय अरण्यकांड

४१२. क. अरण्यकांड की कथा-वस्तु

(१) दण्डकारण्य-प्रवेश (सर्ग १-१६)

विराध—दंडकारण्य-निवासी ऋषियों का स्वागत (सर्ग १); विराध का सीता-अपहरण तथा राम-लक्ष्मण का उसे परास्त करना (सर्ग २-४)

शरभंग—राम को देख इन्द्र का आश्रम से प्रस्थान। शरभंग का राम को सुतीक्ष्ण के आश्रम भेजना। राम की राक्षसों के विरुद्ध सहायता देने की प्रतिज्ञा (सर्ग ५-६)।

सुतीक्ष्ण—सुतीक्ष्ण के आश्रम में रात्रि व्यतीत कर प्रस्थान (सर्ग ७-८)। सीता का अहिंसा का आग्रह; राम की राक्षसों के विरुद्ध सहायता करने की प्रतिज्ञा का उल्लेख (सर्ग ९-१०)।

अगस्त्य—पंचाप्सर-तड़ाग पर आगमन। राम का तड़ाग के चारों ओर के आश्रमों में दस वर्ष तक निवास। सुतीक्ष्ण से अगस्त्य-आश्रम का मार्ग पूछना। अगस्त्य द्वारा इल्वल और वातापि के वध की कथा का राम द्वारा उल्लेख। अगस्त्य का स्वागत और विष्णु-धनुष देना, उनका गोदावरी-तट पर स्थित पंचवटी का पथ-प्रदर्शन (सर्ग ११-१३)।

जटायु—दशरथ के मित्र और सम्पाति के भाई जटायु से मिलन (सर्ग १४)। पंचवटी में लक्ष्मण द्वारा पर्ण-कुटी-निर्माण। लक्ष्मण का कैकेयी को दोष देना। राम का उन्हें रोक कर भरत-गुण-कथन के लिए आग्रह (सर्ग १५-१६)।

(२) शूर्पणखा (सर्ग १७-३४)

शूर्पणखा का विरूपीकरण—राम और लक्ष्मण से प्रवंचित होकर शूर्पणखा का सीता की ओर झपटना। लक्ष्मण का उसके नाक-कान काटना (सर्ग १७-१८)। खर के भेजे हुए १४ राक्षसों का राम द्वारा वध (सर्ग १९ २०)।

खर-वध—खर के १४००० सेना लेकर पहुँचने पर सीता और लक्ष्मण का गुफा में जाना (सर्ग २१-२४)। राम द्वारा राक्षसों तथा दूषण, त्रिशिर, और खर का वध (सर्ग २५-३०)। अकंपन का रावण को समाचार देना और सीता-हरण के लिए प्रोत्साहित करना, मारीच से मंत्रणा (सर्ग ३१)।

शूर्पणखा-रावण-संवाद—शूर्पणखा का लंका जाकर रावण की भर्त्सना करना और सीता के सौंदर्य का वर्णन करना, रावण का सीताहरण का निश्चय (सर्ग ३२-३४)।

(३) **सीताहरण** (सर्ग ३५-५६)

रावण-मारीच-संवाद—रावण का मारीच के सन्मुख सीता-हरण का प्रस्ताव रखना। मारीच का समझाना; बाद में चेतावनी देकर स्वीकार करना (सर्ग ३५-४१)।

कनक-मृग—मारीच के कनक-मृग-रूप को देखकर सीता का उसके लिए प्रार्थना करना। सीता को लक्ष्मण की रक्षा में छोड़कर राम का मृग के लिए जाना। दूर जाने पर राम का मारीच को मारना। मरते समय उसका राक्षस रूप में 'सीता लक्ष्मण' शब्द करना; सीता की लांछना से लक्ष्मण का प्रस्थान (सर्ग ४२-४५)।

सीता-हरण—परिव्राजक के रूप में रावण का सीता से जीवन-वृत्त सुनना। प्रकट होकर रावण का बलपूर्वक सीता को अपने रथ पर ले चलना। सीता द्वारा पुकारे जाने पर जटायु का युद्ध करना और आहत होना (४६ ५१)। सीता के आभूषणों का गिरना; पांच बन्दरों की ओर सीता का आभूषण फेंकना; लंका में सीता का अशोकवन में राक्षसियों के नियंत्रण में रहना

(सर्ग ५२-५६) । (एक प्रक्षिप्त सर्ग: इन्द्र का सीता के लिए हवि ले आना) ।

(४) सीता की खोज (सर्ग ५७-७५)

शून्य पर्णशाला—लौटते समय राम का लक्ष्मण से मिलना और शंकाकुल होकर लक्ष्मण को दोष देना (सर्ग ५७-५६) । शून्य कुटी देखकर राम का विलाप और लक्ष्मण की सान्त्वना । गोदावरी-तट पर खोज । पुष्प तथा आभूषणों का मिलना, जटायु-युद्ध के चिह्न दिखाई देना (सर्ग ६०-६४) लक्ष्मण की सान्त्वना (सर्ग ६५-६६) ।

जटायु—मरण के पूर्व जटायु का रावण द्वारा सीता-हरण तथा दक्षिण की ओर प्रस्थान का उल्लेख (सर्ग ६७-६८) ।

कबंध—लक्ष्मण का अयोमुखी को विरूप करना । कबंध का बाहुविच्छेद; उसके विषय में स्थूलशिर तथा इन्द्र के शाप का उल्लेख, चिता के प्रज्वलित होने पर कबंध का दिव्य रूप में सुग्रीव के पास जाने की मंत्रणा देना (सर्ग ६६-७३) ।

शबरी—पम्पासर स्थित आश्रम में शबरी का स्वागत और उसका स्वर्गारोहण । पंपा वर्णन और राम का विलाप (सर्ग ७४-७५) ।

ख. अरण्यकांड का विश्लेषण

तीनों पाठों में विभिन्नता

४१३. दाक्षिणात्य पाठ के कई पूरे सर्ग अन्य पाठों में नहीं मिलते हैं—**सर्ग ३१**—अकंपन रावण के पास जाकर राम द्वारा खर के वध का समाचार सुनाता है, और सीता के सौंदर्य की प्रशंसा कर उनको हर लेने का परामर्श देता है । इसपर रावण मारीच के पास जाकर उनसे सहायता मांगता है, लेकिन मारीच राम की वीरता का वर्णन कर रावण को सीताहरण करने से रोकता है । यह सर्ग न तो गौडीय पाठ में मिलता है और न पश्चिमोत्तरीय पाठ में; दोनों में शूर्पणखा पहले पहल रावण को खरवध का समाचार सुनाती है ।

सर्ग ६०—सीता की खोज करते हुए राम वृक्षों तथा पशुओं को सम्बोधित करते हैं । यह सर्ग गौडीय पाठ में नहीं मिलता ।

सर्ग ६२—और ६३ में राम-विलाप तथा सर्ग ६० की पुनरावृत्ति मात्र मिलती है । ये दोनों सर्ग केवल दाक्षिणात्य पाठ में पाए जाते हैं ।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य पाठ में जो लक्ष्मण द्वारा राक्षसी अयोमुखी के वध का वृत्तान्त दिया गया है (दे० सर्ग ६६, ११-१८) वह अन्य पाठों में नहीं मिलता है। तीनों पाठों की शेष विभिन्नताएं गौण हैं।

प्रक्षेप

४१४. एच० याकोबी का अनुमान है कि **आदिरामायण** में चित्रकूट से प्रस्थान करने के बाद अरण्यकांड के ग्यारहवें सर्ग का प्रारम्भ (श्लोक १-५) मिलता था—

अग्रतः प्रययौ रामः सीता मध्ये शुशोभना।
पृष्ठतस्तु धनुष्पाणिर्लक्ष्मणोऽनुजगाम ह ॥ १ ॥

अनंतर पंचवटी में आगमन का वर्णन था (सर्ग १५)

इसके अनुसार विराध-वध, शरभंग, सुतीक्ष्ण अगस्त्य के आश्रमों में गमन तथा सीताहरण से पहले जटायु से भेंट, ये सब वृत्तान्त वाल्मीकिकृत काव्य में नहीं पाए जाते थे। वास्तव में इनका आधिकारिक कथावस्तु के दृष्टिकोण से कोई महत्त्व नहीं है। भरत के प्रस्थान के पश्चात् शूर्पणखा के आगमन तक की ११-१२ वर्ष की अवधि का कुछ वर्णन करने के उद्देश्य से उपर्युक्त वृत्तान्त यहां रखे गए होंगे। एच० याकोबी का यह अनुमान न्यायसंगत प्रतीत होता है।

वास्तव में अनेक ऐसी राम-कथाएँ भी मिलती हैं, जिनमें राम केवल सीताहरण के पश्चात् जटायु से मिलते हैं तथा रामायण से भी ऐसी ही ध्वनि निकलती है (दे० आगे अनु० ४२२)।

इसके अतिरिक्त परस्पर विरोधी बातों से पता चलता है कि अरण्यकांड का मूलरूप हमारे सामने नहीं है। सीता-रावण-संवाद में सीता अपनी कथा सुनाती हुई कहती हैं, कि मैंने १२ वर्ष अयोध्या में बिताये हैं, और राम के निर्वासन के समय मेरी अवस्था १८ वर्ष की थी। इसके अनुसार विवाह के समय सीता की अवस्था ६ वर्ष की थी (सर्ग ४७)। किंतु रामायण के कई अन्य स्थलों पर विवाह के समय सीता के उस समय पतिसंयोगसुलभं वयस का उल्लेख किया गया है।

जटायु राम से स्पष्ट शब्दों में कहता है कि रावण ने सीता का अपहरण किया है (सर्ग ६८), लेकिन आगे चलकर राम सीता के अपहर्ता के नाम से अनभिज्ञ हैं।

२

अरण्यकांड का विकास

४१५. अरण्यकांड की मुख्य कथा-वस्तु सीताहरण है, जिसके विकास की रूपरेखा अगले परिच्छेद में प्रस्तुत की जाएगी। शेष सामग्री में कोई विशेष परिवर्त्तन अथवा परिवर्द्धन नहीं किया गया है। वाल्मीकि के कथानक के क्रमानुसार कुछ गौण बातों की ओर निर्देश करना है।

क. दंडकारण्य प्रवेश (सर्ग १,१६)

पहले परिच्छेद में इसका उल्लेख किया गया है कि इस अंश की अधिकांश सामग्री सम्भवतः वाल्मीकिकृत रचना में न पाई जाती हो।

दाक्षिणात्य पाठ में विराध के वध के बाद उसके दिव्य रूप धारण करने का उल्लेख नहीं किया गया है। इसका उल्लेख गौडीय और पश्चिमोत्तरीय पाठ में (दे० गौ० रा० ३,८ प० रा० ३,५) तथा आगे चलकर भी प्रायः सब राम-कथाओं में मिलता है। इसके अतिरिक्त **अध्यात्म रामायण** में विराध राम से भक्ति की याचना करता है (दे० ३,१, ३६)। **वाल्मीकि रामायण** में वह वैश्रवण द्वारा शापित एक तुम्बुरु नामक गंधर्व है। **अध्यात्म रामायण** के अनुसार दुर्वासा ने उसे शाप दिया था।

हिंदेशिया के **सेरी राम** के अनुसार विराध एक रावण द्वारा भेजा हुआ राक्षस माना गया है, जो सीता का हरण करने आया था।

४१६. राम के भिन्न भिन्न आश्रमों मे जाकर तपस्वियों मे मिलने के वृत्तान्तों का इतना विकास हुआ है कि **वाल्मीकि रामायण** में राम का सत्कार केवल अतिथि के रूप में किया जाता है लेकिन अर्वाचीन रचनाओं में राम की विष्णु के रूप में स्तुति की जाती है। इस प्रकार के विकास के दो उदाहरण यहां पर पर्याप्त होंगे। शरभंग के आश्रम में पहुंचकर राम, पिता और लक्ष्मण शरभंग के पैरों का स्पर्श करते हैं,

तस्य पादौ च संगृह्य राम सीता च लक्ष्मणः।
निषेदुस्तदनुज्ञाता लब्धवासा निमंत्रिताः ॥२६॥

(सर्ग ५)

तथा शरभंग राम से कहते हैं, कि आपको दूर न जानकर आप जैसे प्रिय अतिथि को देखे बिना मैं ब्रह्म-लोक नहीं जाना चाहता था,

अहं ज्ञात्वा नरव्याघ्र वर्त्तमानमदूरतः।
ब्रह्मलोकं न गच्छामि, त्वामदृष्ट्वा प्रियातिथिम ॥ २६ ॥

अध्यात्म रामायण में शरभंग राम आदि को देखकर सहसा उठ खड़े हुए (**संभ्रमादुत्थित**, दे० ३,२, २) और आगे बढ़कर उन्होंने उनकी भली भांति पूजा की। राम ने शरभंग के पैर छुए, ऐसा कोई उल्लेख **अध्यात्म रामायण** में नहीं मिलता। चिता पर चढ़कर वह राम से प्रार्थना करते हैं- 'मेरे हृदय में सर्वदा अयोध्यापति राम विराजमान रहें'(दे० वही, श्लोक १०)।

अगस्त्य के पास पहुंचकर राम ने उनके पैर छुए, इसका उल्लेख **वाल्मीकि रामायण** में किया गया है—

जग्राहापततस्तस्य पादौ च रघुनन्दनः ॥ २४ ॥
(सर्ग १२)

अनन्तर अगस्त्य महान्, धर्मचारी और प्रभावशाली राजा तथा पूजनीय अतिथि के रूप में राम का स्वागत करते हैं—

राजा सर्वस्य लोकस्य धर्मचारी महारथः।
पूजनीयश्य मान्यश्ए भवान्प्राप्तः प्रियातिथिः ॥ ३० ॥

अध्यात्म रामायण के अनुसार अगस्त्य राम का आगमन सुनकर शीघ्र ही उठकर राम के पास पहुंचे (**स्वयमुत्थाय मुनिभिः सहितो द्रुतम्** दे० ३,३-११) और उनकी पूजा की (**सम्पुज्य पूजया बहुविस्तरम्** दे० वही, श्लोक १६)। राम की विस्तृत स्तुति करने के उपरान्त अगस्त्य प्रार्थना करते हैं कि मेरे हृदय में आपकी भक्ति सर्वदा बनी रहे और आपके भक्तों का सत्संग मुझे प्राप्त हो—

तस्माद्राघव सद्भक्तिस्त्वयि मे प्रेमलक्षणा ॥ ४१ ॥
सदा भूयाद्धरे संगस्त्वद्भक्तेषु विशेषतः।

ख. शूर्पणखा

४१७. अधिकांश राम-कथाओं में शूर्पणखा के विरूपण का वृत्तान्त **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार दिया गया है। केवल कुछ रचनाओं में गौण परिवर्त्तन पाए जाते हैं। **गरुड़ पुराण** (अध्याय १४३), **पद्मपुराण** के पातालखंड (अध्याय ३६) तथा उत्तरखंड (अध्याय २६६) और **श्रीमद्देवी भागवत पुराण** (३रा स्कंध, अध्याय २८) में राम द्वारा

शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख किया गया है। **नृसिंह पुराण** के अनुसार राम शूर्पणखा को लक्ष्मण के लिए एक पत्र देते हैं जिसमें उसकी नासिका काटने का आदेश दिया जाता है (**छिन्ध्यस्व नासिकम्** दे० अध्याय ४६)। इस पत्र का उल्लेख हिंदेशिया के **सेरी राम** तथा दक्षिण के एक वृत्तान्त में भी किया गया है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३, अध्याय ४)। **राम कियेन** के अनुसार लक्ष्मण ने नाक के अतिरिक्त शूर्पणखा के हाथ, पैर और कान भी काट लिए थे (दे० अध्याय १०)।

४१८. राम-नाटकों में शूर्पणखा मंथरा अथवा कैकेयी का रूप धारण कर राम के निर्वासन का कारण भी बन गई है। (दे० ऊपर अनु० ४१०)।

४१९. ब्रह्मदेश के राम नाटकों में गाम्बी नामक राक्षसी (अर्थात् शूर्पणखा) कनक-मृग बनकर सीता-हरण में रावण की सहायता करती है।

४२०. जैन राम-कथाओं में शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन इसके स्थान पर **पउमचरिय** में लक्ष्मण द्वारा चंद्रनखा के पुत्र शम्बूक के वध का वर्णन मिलता है (दे० आगे अनु० ५२२) तथा गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में रावण सीता के सतीत्व की परीक्षा करने के लिए चन्द्रनखा को वाराणसी भेज देता है (दे० ऊपर अनु० ६४)।

४२१. १६वीं शताब्दी के एक वृत्तान्त के अनुसार दक्षिण भारत में शूर्पणखा के विषय में ऐसी कथा प्रचलित थी कि विरूपण के बाद उसके स्तनों के रक्त से जोंक उत्पन्न हुए थे (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ० ८०)। नीलगिरि में उसकी अब तक पूजा की जाती है [1], तथा मलयाली नत्तु नामक जाति की स्त्रियाँ शूर्पणखा की सतति मानी जाती हैं [2]।

ग ज टा यु

४२२. **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार सीता की खोज करते हुए राम जटायु को देखकर, उसे गृध्र का रूप धारण करने वाला एक राक्षस समझते हैं, जिसने सीता को खाया है।

अनेन सीता वैदेही भक्षिता नात्र संशय :।
गृध्ररूपमिदं व्यक्तं रक्षो भ्रमति काननम्॥ ११॥
(सर्ग ६७)

---

१. दे० ओपर्ट, जर्मन एथनोलीजिकल जर्नल, भाग ३७, पृ० ७३४।

२. दे० अनन्त कृष्ण आयर, कोचिन ट्राइब्स एंड कस्टम, भाग १, पृ० २९।

इससे यह ध्वनि निकलती है कि सीताहरण से पहले राम जटायु से नहीं मिले थे। **भट्टिकाव्य** तथा जावा के प्राचीन **रामायण काकाविन** के अनुसार भी सीताहरण के पश्चात् राम पहले पहल जटायु से मिलते हैं (दे० सर्ग ५); **उदारराघव** में भी सीताहरण के पूर्व जटायु का उल्लेख नहीं किया गया है (दे० सर्ग ८)। अतः बहुत सम्भव है कि **आदि-रामायण** में भी राम केवल सीताहरण के बाद ही जटायु से मिले हों। फिर भी जटायु से भेंट तथा उसकी सीता के रक्षा करने की प्रतिज्ञा का उल्लेख तीनों प्रचलित पाठों मे किया गया है। गौडीय पाठ में सीताहरण के पूर्व जटायु अपने संबंधियों से मिलने की आज्ञा लेकर तथा लौटने की प्रतिज्ञा करके चला जाता है (दे० गौ० रा० २३, ३, १०)।

४२३. रावण-जटायु युद्ध के वर्णन मे तीनों पाठों में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। अर्वाचीन राम-कथाओं में इसमें किंचित परिवर्त्तन किया गया है।

काश्मीरी रामायण में सीता यह देखकर कि रावण जटायु को खग से मारनेवाला है रावण से कहती हैं—'उसे रक्त से सने पत्थर खिलाइए, वह उन्हे खाकर गिर जाएगा' रावण ऐसा करता है और जटायु पृथ्वी पर गिर पड़ता है। इससे मिलते जुलते अनेक वृत्तान्त पाए जाते हैं। **खोतानी** तथा **तिब्बती रामायणों** में रावण जटायु को रक्त से सने धातुओं के टुकड़े खिलाकर उसे मार डालता है। दक्षिण भारत की एक रामकथा में रावण जटायु को अपनी जांघ के रक्त से सना पत्थर खिलाता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ३)।

हिंदेशिया के **सेरी राम** के अनुसार रावण-जटायु-युद्ध का वर्णन इस प्रकार है। देर तक युद्ध करने के बाद दोनों एक दूसरे को अपना मर्मस्थान बताते हैं। रावण धोखा देकर अपने पैर का अंगूठा बताता है। इतने में सीता पक्षियों की बोली में जटायु से अपना मर्मस्थान न कहने के लिए अनुरोध करती हैं। लेकिन जटायु सीता की बात टालकर उसे (पंख का अग्रभाग) प्रकट करता है और रावण से मारा जाता है। जटायु के गिरने से पहले सीता अपनी अंगूठी उसके मुंह में रख देती हैं। बाद में सीता की खोज करते हुए राम किसी छोटी नदी का पानी पीते हैं और इसके स्वाद के बिगड़ने का कारण खोजते हैं। इस तरह जटायु का पता चलता है जो आहत होकर नदी के किनारे पर पड़ा हुआ था।

रेआम केर, राम कियेन और **रामजातक** में रावण सीता की अंगूठी छीनकर इससे जटायु को मारता है जिससे वह आहत होकर पृथ्वी पर गिर जाता है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में जटायु अपना मर्मस्थान पंख का अग्रभाग बताता है, तथा रावण धोखे से उससे अपनी दाहिनी पिंडली कहता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

जटायु के दिव्य रूप धारण कर स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान करने की **अध्यात्म रामायण** (३, ८) आदि रचनाओं की कथा **वाल्मीकि-रामायण** में नहीं मिलती।

घ. सीता की खोज

४२४. वाल्मीकि रामायण में जटायु से भेंट करने के बाद राम तथा लक्ष्मण सीता की खोज करते हुए कबंध तथा शबरी से मिलते हैं। इन दोनों वृत्तान्तों में राम-भक्ति के प्रभाव के अतिरिक्त अर्वाचीन रामकथाओं में कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया गया है। **महाभारत** के रामोपाख्यान में शबरी का वृत्तान्त नहीं मिलता।

४२५. खोतानी रामायण तथा **सेरी राम** में राम और लक्ष्मण सुग्रीव से मिलने के पूर्व १२ वर्ष तक सीता की खोज करते हैं। इस खोज के वर्णन में कुछ नवीन सामग्री भी जोड़ दी गई है। **सेरी राम** में एक पक्षी विरही राम का उपहास करता है और राम उसे अंधा बनाते हैं। एक अन्य पक्षी राम को सीता का समाचार देकर पुरस्कार स्वरूप लंबा ग्रीव प्राप्त करता है।

इस प्रकार की कथाओं का मूल-स्रोत भारतीय ही है क्योंकि वे आदिवासीय वृत्तान्तों में भी पाई जाती हैं।

मुंडा तथा बिहोर नामक आदिवासी जातियों की राम-कथा के अनुसार राम ने सीता की खोज करते एक बगुले से सीता का पता पूछा था। बगुले ने उनका अपमान करके कहा—'मुझे सीता से क्या। केवल पेट की चिंता है'। इस पर लक्ष्मण ने उसका ग्रीव खींच लिया और उस दिन से बगुला का लंबा ग्रीव होता है। एक गिलहरी ने सीता का मार्ग बताया और राम ने पुरस्कारस्वरूप उसकी पीठ पर तीन रेखाएं खींचकर कहा —'आकाश से (मुंडा कथा में, पेड़ से) गिर जाने पर भी तुमको चोट न

लगेगी [1]" बेर वृक्ष ने भी सीता का मार्ग बताया तथा उनकी साड़ी के कुछ टुकड़े दिए थे। इसपर राम ने कहा, 'तुम कभी नहीं मर सकते'। उस दिन से बेर वृक्ष इतना कठोर है।

४२६. सीता का रूप धारण कर सती के विरही राम की परीक्षा करने का प्रथम वृत्तान्त **शिवपुराण** में मिलता है। बाद में **आनन्द रामायण** (१,७) तथा **रामचरितमानस** की भूमिका में भी इसका वर्णन किया गया है।

४२७. पंपासरोवर में विरही राम से नारद के मिलने और भक्ति का वरदान प्राप्त करने का वृत्तान्त न तो **वाल्मीकि रामायण** में मिलता है और न **अध्यात्म रामायण** में। तुलसीदास ने इसका वर्णन **रामचरित-मानस** के अरण्यकांड के अंत में किया है।

---

१. अन्य रामकथाओं में सेतुबंध के वृत्तान्त मे गिलहरी का उल्लेख किया गया है दे० आगे अनु० ४९०।

३

सीताहरण

४२८. बौद्ध साहित्य की दो अपूर्ण राम-कथाएं मिलती हैं जिनमें सीताहरण का उल्लेख नहीं किया गया है—**दशरथ जातक** और **दशरथ कथानम्**। बोधिसत्व राम द्वारा रावण का वध किया जाना बौद्ध आदर्श के प्रतिकूल था; अतः सीताहरण और फलस्वरूप रावणवध का अभाव स्वाभाविक प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त **दशरथ जातक** के प्रसंग के अनुसार इसका उल्लेख अनावश्यक भी था (दे० ऊपर अनु०८१)। **महाभारत** के शांतिपर्व की रामकथा में भी सीताहरण का वर्णन नहीं किया गया है। इस अत्यन्त संक्षिप्त वृत्तान्त का प्रसंग है कि महान् राजा भी मर जाते हैं। अतः इस रामकथा में राम तथा उनकी महिमा का ही वर्णन किया गया है, फिर भी १४ वर्ष के वनवास का उल्लेख मिलता है जिससे स्पष्ट है कि लेखक पूर्ण राम-कथा से परिचित था।

इन तीनों को छोड़कर सीताहरण तथा फलस्वरूप राम-रावण-युद्ध सब अन्य रामकथाओं की मुख्य आधिकारिक कथावस्तु ही है। इसके वर्णन में पर्याप्त मात्रा में विभिन्नता आ गई है। प्रस्तुत परिच्छेद में पहले सीताहरण के भिन्न भिन्न कारण दिए गए हैं, अनन्तर इस घटना के विभिन्न रूपों का निरूपरण किया जायगा है, और अंत में सीतहरण के एक महत्त्वपूर्ण विकास की रूपरेखा अंकित करने का प्रयत्न किया जायगा।

क. सीताहरण के कारण

४२९. आदिकवि वाल्मीकि ने शूर्पणखा के विरूपण को सीताहरण का कारण माना है। विरूपित शूर्पणखा रावण के पास पहुंचकर सीता के सौंदर्य का वर्णन करती है, जिसमें रावण उनका हरण करने का संकल्प करता है। बाद की रामकथाओं में भी यह कारण सबसे व्यापक और प्रामाणिक रहा। फिर भी शूर्पणखा के विरूपण के अतिरिक्त और अनेक कारणों की कल्पना कर ली गई है।

४३०. विमलसूरिकृत **पउमचरिय** में शूर्पणखा के विरूपण का उल्लेख

नहीं किया गया है। इसके स्थान पर लक्ष्मण द्वारा चंद्रनखा के पुत्र शम्बूक के वध का वर्णन किया गया है। यह कथा तेलगू **रंगनाथ रामायण**, कनारी **तोरावे रामायण**, हिंदेशिया की अर्वाचीन राम-कथा, श्याम के **राम-कियेन** तथा **आनन्द रामायण** में भी मिलती है (दे० आगे अनु० ५२२-५२३)।

४३१. **महावीरचरित** से लेकर अनेक राम नाटकों तथा अन्य राम-कथाओं में रावण सीतास्वयंवर के समय से ही सीता को पत्नीस्वरूप चाहता है। वह दूत को भेजता है, अथवा स्वयं सीता के स्वयवर में आता है (दे० ऊपर अनु० ३६३)। इन रामकथाओं में प्रायः शूर्पणखा के विरूपण की कथा भी मिलती है, लेकिन ऐसे अनेक वृत्तान्त मिलते हैं जहाँ स्वयंवर का ही उल्लेख किया गया है, उदाहरणार्थ—**अनर्घराघव**, **बाल-रामायण**, **महानाटक**, पाश्चात्य वृत्तान्त नं ७ और ८। राजशेखर के **बाल-रामायण** में रावण का विरह ही प्रधान वर्ण्य विषय बन गया है। **आनन्द रामायण** में उपर्युक्त तीनों कारणों का उल्लेख है।

४३२. गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** की रामकथा में न तो शूर्पणखा के विरूपण का और न सीतास्वयवर के अवसर पर रावण का उल्लेख किया गया है। राम-सीता-विवाह के पश्चात् नारद रावण के पास जाकर सीता के अद्वितीय सौंदर्य का वर्णन करता है जिससे रावण सीता को हर लाने का संकल्प करता है।

रामलिंगामृत में शूर्पणखा के विरूपण के बाद ही नारद रावण से सीता के सौंदर्य की प्रशंसा करता है (दे० सर्ग ६)।

४३३. १८ वीं शताब्दी के एक वृत्तान्त के अनुसार सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट में पहुंचकर राम ने अपने बहुत से शिष्यों को पुनर्जन्म का सिद्धान्त सिखाया था। उन्होंने सिंहलद्वीप में भी अपने सिद्धांत का प्रचार करना चाहा, लेकिन रावण ने इसका विरोध किया और राम को पराजित कर सीता को उनसे छीन लिया। बाद में विभीषण की सहायता से राम ने, ब्रह्मा द्वारा भेजी हुई सेना से रावण को जीत लिया (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं १२)।

४३४. राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् सीताहरण का एक और कारण दिया जाता है, जिसका प्रथम उल्लेख सम्भवतः **राम तापनीय उपनिषद्** में किया गया। इसमें लिखा है कि रावण ने मोक्ष प्राप्त

करने के उद्देश्य से (स्वनिवृत्त्यर्थम्, दे० ४,१७) सीता का हरण किया था। सीताहरण के इस कारण का अर्वाचीन रामकथाओं में भी प्रायः उल्लेख मिलता है, उदारहणार्थः **अध्यात्म रामायण** (३,६,६०;७,४,१०); **आनन्द रामायण** (१,११,१४४) ; **पद्मपुराण** (उत्तरखंड, अध्याय २६६, २५५) ; प्रेमानन्दकृत **रणयज्ञ**; **रामचरितमानस** में भी यों लिखा है --

तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ
प्रभुसर प्रान तजें भव तरऊँ ॥ (३,२२,४)।

अध्यात्म रामायण (७,४,११) तथा **आनन्द रामायण** (१,१३,१४०) में यह कहा गया है कि रावण ने सीता का माता के समान पालन किया था—**'मातृवत् पालयामास'**। इन दोनों रचनाओं में रावण के सनत्कुमार से मिलने की कथा भी मिलती है। इसके के अनुसार रावण ने सनत्कुमार से पूछा था कि देवताओं में से कौन श्रेष्ठ है और उनके द्वारा मारे हुए राक्षस किस गति को प्राप्त करते हैं। यह सुनकर कि जो विष्णु के हाथ से मारे जाते हैं वे विष्णुपद ही प्राप्त कर लेते हैं, रावण ने विष्णु के अवतार से वैर करने का निश्चय किया (दे० अ० रा० ७,३,३७; आ० रा० १,१३,११६)। **शिवपुराण** के अनुसार रावण ने पाताल में विष्णु से प्रार्थना की थी, कि तेरे हाथ से मेरी मृत्यु हो—**त्वद्धस्ताद् भगवन् मृत्युर्ममास्तु** (धर्मसंहिता, अध्याय १३)। **अध्यात्म रामायण** में नारद देवताओं को रावण द्वारा सायुज्य मोक्ष की प्राप्ति का कारण यह बताते हैं कि रावण ने द्वेषभाव से निरंतर राम का हृदय में स्मरण किया था (दे० ६,११, ८० आदि)।

ख. सीताहरण का मूलरूप।

४३५. चिंतामण विनायक वैद्य का अनुमान है कि वाल्मीकिकृत **आदि रामायण** में सीताहरण के वृत्तान्त में कनक-मृग का कोई उल्लेख नहीं था। यह वृत्तान्त अद्भुत रस की लोकप्रियता के कारण बाद में **रामायण** में रखा गया है। उनका तर्क यह है, कि यदि कनक-मृग की घटना का वर्णन सचमुच **आदिरामायण** में था तो सीता-रावण-संवाद अस्वाभाविक प्रतीत होता है। यदि सीता राम के विषय में इतनी चिंतित थीं कि उन्होंने लक्ष्मण को अत्यन्त कटु शब्द सुनाकर उन्हें राम की सहायता

के लिए भेजा था तो इन्होंने रावण से राम के विषय में अपनी आशंका का उल्लेख क्यों नहीं किया था ? यदि उत्तर दिया जाय कि उनको रावण पर विश्वास नहीं था, इसका प्रत्युत्तर यह है कि यदि सीता रावण पर विश्वास नहीं करती थीं तो उन्होंने अपनी आत्मकथा विस्तारपूर्वक क्यों सुनाई थी। सीता-रावण-संवाद से ऐसा आभास मिलता है कि राम तथा लक्ष्मण सदा की भाँति मृगया खेलने गए थे [1]। सीता रावण से कहती हैं कि मेरे पति मृग, वराह आदि मारकर बहुत मांस लिए लौटने वाले हैं—

आगमिष्यति मे भर्ता वन्यमादाय पुष्कलम् ।
रुरून्गोधान्वराहांश्च हत्वाऽऽदायामिषं बहु ॥ २३ ॥
(सर्ग २३)

श्री वैद्य के तर्कों की पुष्टि के लिए इन थोड़ी सी रामकथाओं का भी सहारा लिया जा सकता है, जिनमे कनक-मृग का उल्लेख नहीं किया गया है।

अनामकं जातकम् (३री श० ई०) में ऐसी कथा मिलती है कि जब राजा फल लेने चले गए थे तब एक दुष्ट नाग ने रानी का अपहरण किया था। विमलसूरकृत **पउमचरिय** (४ थी श० ई०) के अनुसार लक्ष्मण खरदूषण की सेना का सामना करते हैं। रावण अपनी अवलोकनी विद्या से जानता है कि लक्ष्मण ने राम से कहा है कि आवश्यकता पड़ने पर मैं सिंहनाद करूंगा। रावण का सिंहनाद सुनकर राम लक्ष्मण की सहायता करने जाते हैं, और रावण जटायु को घायल कर सीता को पुष्पक में ले जाता है (दे० पर्व ४४)। **कूर्मपुराण** (नवीं श० ई०) में भी रावण द्वारा अकेली वन में टहलती हुई सीता के अपहरण का उल्लेख मिलता है—

चरंतीं विजने वने.....सीतां गृहीत्वा (उत्तर विभाग ३४)

उपर्युक्त अपेक्षाकृत प्राचीन वृत्तान्तों के अतिरिक्त अनेक विदेशी तथा पाश्चात्य वृत्तान्त मिलते हैं, जिनमें कनक-मृग का निर्देश नहीं पाया जाता है। सिंहली **राम-कथा** के अनुसार राम की अनुपस्थिति में सीता का हरण राजधानी से ही होता है। अनाम के **राम-चरित** में दशानन सेना-सहित दशरथ के राज्य पर आक्रमण करता है, और विजयी होकर सीता को अपने साथ ले जाता है।

---

१. दे० सी० वी० वैद्य : दि रिडल आव दि रामायण, पृ० १४४।

पाश्चात्य वृत्तान्तों नं० ६, ६, ११ तथा १५ में भी कनक-मृग का उल्लेख नहीं मिलता। वृत्तान्त नं० ११ के अनुसार राम एक पक्षी का शिकार करने गए थे और देर होने पर सीता ने लक्ष्मण को उनकी खोज में भेज दिया था। वृत्तान्त नं० १५ में कहा गया है कि जब राम अपने किसी उपद्रवी सामन्त से युद्ध करने गए थे तब भिखारी का रूप धारण कर रावण के नौकर ने सीता को अपने मालिक के लिए हर लिया था।

४३६. **महाभारत** के रामोपख्यान में न तो पुष्पक और न किसी रथ का निर्देश ही मिलता है। वाल्मीकिकृत **रामायण** के एक स्थल से यह आभास मिलता है कि सम्भवतः मूल-कथा में इसका उल्लेख नहीं किया गया है। किष्किंधा कांड मे सम्पाति अपने पुत्र सुपार्श्व का वृत्तान्त हनुमान आदि वानरों को सुनाता है। इसके अनुसार सुपार्श्व महेंद्र की घाटी को रोकते हुए (**महेंद्रस्य गिरेर्द्वारमावृत्य** दे० रा० ४, ५६, १२) नीचे के मार्ग पर पहरा दे रहा था। उस समय उसने किसी को देखा जो एक सुन्दर स्त्री को लिए जा रहा था। सुपार्श्वने उन दोनों को अपने पिता को देने का निश्चय किया लेकिन उस मनुष्य ने विनीत भाव से मार्ग मांगा और सुपार्श्व ने उसे जाने दिया।

तत्र कश्चिन्मया दृष्टः सूर्योदयसमप्रभाम्।
स्त्रियमादाय गच्छन्वै मिश्रांजनचयोपमः ॥१४॥
सोऽहमभ्यवहारार्थं तौ दृष्ट्वा कृतनिश्चयः
तेन साम्ना विनीतेन पंथानमनुयाचितः ॥१५॥

ग. क न क मृ ग

४३७. **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार मारीच कनक-मृग बनकर राम को दूर ले जाता है। लक्ष्मण सीता के बहुत अनुरोध करने पर राम की सहायता करने निकलते हैं। तब रावण परिव्राजक के रूप में सीता के पास पहुंचकर और उनको रथ पर रखकर लंका के लिए प्रस्थान करता है। कनक मृग का वृत्तान्त न केवल भारतीय राम-कथा साहित्य में सबसे प्रचलित है किन्तु विदेशों में भी। तिब्बत, खोतान, हिंदेशिया, हिंदचीन, श्याम और ब्रह्मदेश में यह कथा पाई जाती है।

महानाटक में राम तथा लक्ष्मण मृग का शिकार करने के लिए साथ साथ चले जाते हैं (दे० अंक ४)। ब्रह्मदेश में शूर्पणखा (जिसका नाम वहां गाम्बी है) स्वयं कनक-मृग बन जाती है। **सेरी राम** में रावण के

आज्ञानुसार दो राक्षस मृग का रूप धारण कर लेते हैं, एक सुवर्ण का और एक रजत का मृग बन जाता है।

४३८. कनकमृग का एक परिवर्त्तित रूप इस प्रकार है—राम और लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण आकर सीता को विश्वास दिलाता है कि अब अयोध्या जाना है। इसपर विश्वास करके सीता अपने आप रथ पर चढ़ती हैं। कथा का यह रूप **नृसिंह पुराण, बृहद्धर्मपुराण,** गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण, आश्चर्य-चुड़ामणि** नाटक तथा दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में पाया जाता है।

नृसिंह पुराण के अनुसार रावण सन्यासी के रूप में आकर सीता से कहता है—भरत आ गए हैं और उन्होंने आपको ले जाने के लिए मुझे भेजा है। राम भी मृग को फंसाकर अयोध्या जा रहे हैं। यह सुनकर सीता विमान पर चढ़ती हैं। इस वृत्तान्त में पाठक का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया गया है, कि रावण ने सीता का स्पर्श नहीं किया (दे० अध्याय ४६)। **बृहद्धर्मपुराण** में रावण भिक्षु के रूप में सीता के पास आकर कहता है कि कौशल्या आपको देखने के लिए उत्सुक हैं (दे० पूर्वखंड, अध्याय १६)। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में (१६०६ ई०) रावण ऋषि के वेष में एक रथ के साथ सीता के पास आता है। इस रथ पर अयोध्या के नागरिकों का रूप धारण करनेवाले राक्षस बैठते हैं। रावण कहता है, हम भरत की ओर से आए हैं। राम का राज्योभिषेक होनेवाला है और राम ने स्वयं अयोध्या के लिए प्रस्थान किया है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १, पृ०८५)। **आश्चर्य-चुड़ामणि** नाटक में राम और लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण और उसका सारथि क्रमशः राम[1] और लक्ष्मण का रूप धारण कर सीता के पास पहुंचते हैं। रथ को दिखलाकर लक्ष्मण (सारथि) राम (रावण) से कहता है—'भरत का राज्य संकट में है। उनकी सहायता करने के लिए तपस्वियों ने यह रथ भेजा है'। अनन्तर तीनों रथ पर चढ़ते हैं। इतने में शूर्पणखा, सीता के

१. परिव्राजक (भिक्षु, सन्यासी, ऋषि आदि) तथा राम के रूप के अतिरिक्त रावण के और छद्मरूप मिलते हैं। तिब्बती रामायण में रावण पहले हाथी का और इसके बाद घोड़े का रूप धारण कर लेता है। हिंदेशिया के एक वृत्तान्त में रावण पहले एक सुवर्ण अज के रूप में आता है। दे० ज० रो० ए० सो०, स्टेटस ब्रैंच० १९१०, पृ० १५।

वेष में, राम के साथ बातचीत कर रही है तथा मारीच, राम के वेश में, लक्ष्मण के साथ। गुणभद्रकृत जैन **उत्तरपुराण** में वनवास का उल्लेख नहीं मिलता। राम सीता के साथ बनारस में निवास करते हैं। नगर के पास ही चित्रकूट नामक उपवन से सीता का हरण होता है। इस वृत्तान्त की एक और विशेषता यह है कि इसमें लक्ष्मण का उल्लेख नहीं किया गया है। मृग को मारने के लिए राम के चले जाने के बाद रावण राम के रूप में सीता के पास आकर कहता है—'मैंने मृग को फंसाया है और इसे बनारस भेजा है। अब घर जाने का समय आ गया है'। यह सुनकर सीता पुष्पक पर बैठ जाती हैं। सीता को धोखा देने के लिए पुष्पक ने पालकी का रूप धारण कर लिया था।

४३९. भासकृत **प्रतिमानाटक** में एक सर्वथा नवीन कथानक पाया जाता है। दशरथ के वार्षिक श्राद्ध के एक दिन पूर्व राम और सीता सोच रहे थे कि श्राद्ध कैसे योग्य रीति से मनाया जाए। इसपर रावण परिव्राजक का रूप धारण कर आता है और अपना परिचय देकर भिन्न भिन्न शास्त्रों का उल्लेख करता है जिनका उसने अध्ययन किया है। इनमें से एक है **प्राचेतसं श्राद्धकल्पम्**। राम श्राद्ध के विषय में जिज्ञासा प्रकट करते हैं। तब रावण कहता है कि हिमालय में रहनेवाले कांचनपार्श्व मृग से पितृ विशेष रूप से प्रसन्न हो जाते हैं। उसी क्षण मारीच इस प्रकार का मृग बनकर दिखाई देता है। लक्ष्मण आश्रम के कुलपति का स्वागत करने गए थे। अतः सीता को रावण के पास छोड़कर राम मृग के पीछे चले जाते हैं। तब रावण अपना रूप धारण कर सीता को लंका ले जाता है (दे० अंक ५)।

४४०. दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में सीताहरण का वर्णन इस प्रकार है—रावण स्वयं दो सिरवाले मृग का रूप धारण कर लेता है। सीता उसे देखकर उसके चमड़े के लिए इच्छा प्रकट करती हैं। राम मृग के पीछे दूर तक निकलकर अंत में उसे मार डालते हैं। उसी क्षण रावण का जीव एक साधु के शरीर में प्रवेश करता है। वह साधु पर्णशाला के पास आकर लक्ष्मण से कहता है 'तुम्हारा भाई वैरियों से घिरा हुआ है, उसकी सहायता करने जाओ'। सीता के अनुरोध करनेपर लक्ष्मण जाते हैं और रावण सीता को लेकर लंका की ओर प्रस्थान करता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३ और ४)

४४१. **वाल्मीकि रामायण** में सीता को लक्ष्मण तथा जटायु की रक्षा

में छोड़कर राम मृग को मारने जाते हैं। ऊपर इसका उल्लेख किया गया है कि **अद्भुत रामायण** में सीताहरण के पूर्व सम्भवतः जटायु से भेंट नहीं हुई हो। आगे चलकर जटायु के अतिरिक्त सीता की रक्षा के प्रबन्ध के विषय में कुछ नवीन सामग्री रामकथाओं में आ गई है।

राम की सहायता करने जाने के पूर्व लक्ष्मण सीता की रक्षा के लिए कुटी के चारों ओर धनुष से रेखा खींचते हैं, और देवताओं की शपथ खाकर कहते हैं कि जो कोई इसके भीतर घुसेगा उसका सिर फट जाएगा। बाद में छद्मवेषी रावण के अनुरोध करने पर सीता उसे भोजन देने के लिए हाथ रेखा के बाहर बढ़ाती हैं और रावण उनको खींच लेता है। इस प्रकार की कथा **खोतानी रामायण, सेरी राम, हिकायत महाराज रावण,** ब्रह्मदेश की राम-कथा (तीन रेखाएँ), मधुसूदनकृत **महानाटक** (अंक ३,६५), तेलगू **द्विपाद रामायण** (सात रेखाएं), **कृत्तिवास रामायण, आनन्द रामायण** (१,७,६८) **सूरसागर** (नवां स्कंध, पद ५०३ नागरी सभा संस्करण), **रामचंद्रिका** (१२,१८) तथा पाश्चात्य वृत्तान्तों (नं ३,४ और १३) में पाई जाती है। पाश्चात्य वृत्तान्त नं १३ में कहा गया है कि जब रावण रेखा को पार करना चाहता है अग्नि की लपटें उठकर उसको भीतर घुसने से रोकती हैं।

बिहोर नामक आदिवासी जाति की रामकथा में लक्ष्मण जाने के पहले यह कहकर सीता को अभिमंत्रित राई के दाने देते हैं 'यदि कोई आए तो उसपर दाने फेंकना। एक दाना फेंकने से वह एक घटा तक मूर्च्छित रहेगा। दो दाने फेंकने से वह दो घटे तक मूर्च्छित रहेगा इत्यादि'। रावण के आने पर सीता ने एक दाना फेंक दिया और वह एक घटे तक मूर्च्छित रहा। इसके बाद सीता ने पुनः कई बार एक एक दाना फेंका। अंत में रावण ने कहा—'इतना कष्ट क्यों करती हो। सब दानें एक साथ फेंक दो जिससे मैं मर जाऊं'। सीता ने ऐसा ही किया और रावण भस्मीभूत हो गया। लेकिन भस्म से उठकर रावण सीता के बालों को पकड़कर उनको ले गया।

४४२. **वाल्मीकि रामायण** में मारीच राम के बाण से आहत होकर अपना राक्षस-रूप पुनः धारण कर लेता है तथा 'हा सीते लक्ष्मण' पुकार-कर मर जाता है। **अध्यात्म रामायण** आदि रचनाओं में राम-भक्ति के प्रभाव के कारण मारीच की सायुज्य-मुक्ति की प्राप्ति का प्रायः उल्लेख किया

जाता है। मारीच के शरीर से निकला हुआ तेज सब के देखते देखते राम ही में समा गया—

तद्देहादुत्थितं तेजः सर्वलोकस्य पश्यतः।
राममेवाविशत्.....॥ २० ॥

(अध्यात्म रामायण ३,७)

घ. मा या सी ता

४४३. **वाल्मीकि रामायण** में सीताहरण का जो चित्र खींचा जाता है वह किंचित् घृणाजनक कहा जा सकता है। रावण एक हाथ से सीता के बाल और दूसरे हाथ से उनकी जंघाओं को पकड़के उनको अपने रथ पर रख देता है—

अभिगम्य सुदुष्टात्मा राक्षसः काममोहितः।
जग्राह रावणः सीतां बुधः खे रोहिणीमिव ॥१६॥
वामेन सीतां पद्माक्षीं मूर्धजेषु करेण सः।
ऊर्वोस्तु दक्षिणेनैव परिजग्राह पाणिना ॥ १७ ॥

(अरण्यकांड, सर्ग ४९)

इस वर्णन की उग्रता का निवारण करने के लिए राम-कथा-साहित्य में दो मार्ग अपनाए गए हैं। सीताहरण के वृत्तान्तों का एक ऐसा समूह मिलता है जिसमें रावण सीता का हरण करते हुए भी उनका स्पर्श नहीं करता। दूसरा मार्ग यह है कि रावण वास्तविक सीता का हरण न करके सीता की एक छाया मात्र लंका ले जाता है।

४४४. **नृसिंह पुराण** तथा गुणभद्र के **उत्तरपुराण** में सीता का स्पर्श करने से बचने के लिए रावण ने एक ऐसा उपाय निकाला है, जिससे सीता अपने आप विमान पर चढ़ती हैं। इसका उल्लेख हो चुका है। गुणभद्र में यह भी कहा जाता है कि रावण ने अपनी आकाश-गामिनी विद्या खो बैठने के भय से ऐसा किया था।

कई अन्य वृत्तान्तों में सीता को रावण के स्पर्श से बचाने के लिए अलौकिकता का सहारा लिया गया है। **तिब्बती रामायण** (नवीं शताब्दी) कंबनकृत **तामिल रामायण** (१० वीं श०) तथा **अध्यात्म रामायण** तीनों में रावण पृथ्वी को खोद कर सीता को भूभाग के साथ साथ ले जाता है।

तामिल रामायण के अनुसार रावण ने पृथ्वी को एक योजन की गहराई तक खोद कर सीता तथा झोपड़ी को अपने रथ पर रख दिया। यह इसलिए हुआ कि उसको यों शाप दिया गया था, 'परस्त्री स्पर्श करने से तुम मर जाओगे'।

अध्यात्म रामायण में रावण केवल एक माया सीता का हरण करता है। फिर भी वह पृथ्वी को नखों से खोद कर उस सीता का भी स्पर्श नहीं करता।

ततो विदार्य धरणीं नखैरुद्धृत्य बाहुभिः ॥५७॥
लोलयित्वा रथे क्षिप्त्वा ययौ क्षिप्रं विहायसा।

(अरण्यकांड, सर्ग ७)

प्रसन्नराघव में (१४ वीं श०) गोदावरी अन्य नदियों तथा सागर को सीताहरण का वृत्तान्त सुनाती है। सागर पूछता है—**'अपि नाम मम वधूटिका स्पृष्टा निशाचरेण'**। इस पर गोदावरी उत्तर देती है—**'न स्पृष्टा'**। तब वह कहती है कि जब रावण ने सीता पर हाथ डालना चाहा तब अनसूया का दिया हुआ अगराग अग्नि के रूप में सीता का आवरण बन गया था। इसपर रावण ने वरुणमंत्र द्वारा बादल को बुलाया और उस बादलरूपी आंचल से सीता को ढक कर उसे ले गया (अंक ५)।

दक्षिण भारत के एक **नृसिंह पुराण** से मिलते जुलते वृत्तान्त में लिखा है कि रावण के रथ में तथा लंका में भी अग्नि सीता की रक्षा करता था। इस कारण रावण न तो सीता का स्पर्श कर पाता था और न उनको महल के भीतर ले जा सकता था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)। इसका उल्लेख **सेरी राम** के पातानी पाठ में भी हुआ है।

४४५. इसी तरह हम देखते हैं कि भिन्न भिन्न प्रकार से सीता को रावण के स्पर्श से बचाया गया है। फिर भी सीता रावण के वश में हुई हो यह विचार भक्ति-भावना के लिए असह्य और असम्भव सा प्रतीत हुआ। अतः एक मायामयी सीता को वास्तविक सीता का स्थान लेना पड़ा। राम-कथा के इस महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डालना है।

उस वृत्तान्त में दो तत्व आ जाते हैं। पहले, एक माया-सीता का हरण होता है और दूसरे वास्तविक सीता अग्नि में निवास करने जाती हैं। इन दोनों का सूत्रपात हम **वाल्मीकि रामायण** में देख सकते हैं।

लंकाकांड में सीता को विद्युज्जिह्व द्वारा निर्मित राम का एक मायामय सिर दिखलाया जाता है (सर्ग ३२) और बाद में इंद्रजित् वानर-सेना के सामने एक मायामयी सीता का सिर काटता है (सर्ग ८१), आगे चल कर राम-कथा-साहित्य में इस प्रयोजन का और स्थलों पर भी सहारा लिया जाता है । राजशेखर के **बालरामायण** में सीता और उनकी धात्रेयिका (दूध-बहन) सिंदूरिका की मूर्तियां बनवाकर और उनके मुँह में सारिकाएं स्थापित करके माल्यवान् विरही रावण का मन बहलाने का प्रयत्न करता है (अंक ५) । इसी नाटक में सेतुबंध के समय राम को निरुत्साह करने के लिए सीता का एक मायामय सिर समुद्र के तट पर फेंका जाता है । अतः माया-सीता की कल्पना प्राचीन काल से चली आ रही है[1] । इसके अतिरिक्त सम्भव है कि **वाल्मीकि रामायण** की निम्नलिखि उपमा भी माया सीता की कल्पना के लिए सहायक हो सकी हो, 'रावण ने सीता को लंका में रख दिया मानो मय ने अपने महल में आसुरी माया को'—

निदधे रावणः सीतां मयो मायामिवासुरीम् ।

(३,५४,१४)

टीकाकारों ने इस उपमा में मायासीता के वृत्तान्त का निर्देश देखा है । **रामायण तिलक** में लिखा है - **मायामिवासुरीमित्यनेन मायारूपैवैषा सीता या लंकामागतेति ध्वनितम् ।**

इस मायासीता के हरण के पहले वास्तविक सीता अग्नि में निवास करने जाती हैं । राम-कथा के विकास की पृष्ठभूमि पर यह भी अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है । **वाल्मीकि रामायण** में अग्निपरीक्षा के अवसर पर अग्नि सीता की रक्षा करके और उनके पातिव्रत्य का साक्ष्य देकर अन्य देवताओं से अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान लेते हैं । आगे चलकर सीताहरण के प्रसंग में भी अग्नि का उल्लेख होने लगा ।

---

१. अद्भुत रामायण संभवतः १५ वीं श० की है । इसमे वास्तविक हरण को अवास्तविक सिद्ध करने का तर्क दिया जाता है । हनुमान् राम को सान्त्वना देते हुए कहते है, जिस तरह विश्व आभास है उसी तरह सीताहरण भी आभास मात्र है ।

तव भार्या महाभाग रावणेन हृतेति यत् ।
विश्वं यथेदमाभाति तथेद प्रतिभाति मे ॥ ३ ॥

(सर्ग १६)

श्रीमद्देवीभागवतम् में सीता रावण का प्रस्ताव सुनकर गार्हपत्य (अर्थात् झोपड़ी में स्थापित अग्नि) की ओर शरण के लिए भाग जाती हैं (स्कंध ३,अध्याय २६)।

रंगनाथकृत तेलगु द्विपाद रामायण (१२वीं श०) में लक्ष्मण अग्नि देव से प्रार्थना करके और सीता को उनकी रक्षा में सौंपकर राम की सहायता करने जाते हैं (दे० अरण्यकांड १३)। उपर्युक्त दक्षिण भारत के वृत्तान्त के अनुसार भी अग्नि सीता की रक्षा करती है और उनको रावण के स्पर्श से बचाती है। इस वृत्तान्त के एक अन्य स्थल पर सीता अग्नि की पुत्री मानी गई हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १,पृ०१००)।

४४६. मायासीता के हरण का वृत्तान्त पहले पहल **कूर्म्मपुराण** के पतिव्रतोपाख्यान में मिलता है (७ वीं श०)। निर्जन वन में टहलती हुई सीता ने रावण को आते देखकर और उसका अभिप्राय समझकर घर की अग्नि की शरण ली (**जगाम शरण वह्निमावसथ्यम्**) तथा वह्न्यष्टक का जप किया (**वह्न्यष्टकं जप्त्वा**)।

इसपर आवसथ्य से प्रकट होकर अग्नि ने एक मायामयी सीता को बनाया और (**सीतामादाय रामेष्टाँ पावकोऽन्तरधीयत**) राम प्रिय सीताको ग्रहण कर उसको छिपाया। तब रावण मायामयी सीता को लंका ले गया। रावणवध के बाद राम ने उस मायासीता पर शंका की। फलस्वरूप वह अग्नि में प्रवेश कर जल गई। तब अग्नि ने प्रकट होकर वास्तविक सीता को दिखलाया और राम ने नतमस्तक होकर अग्नि को संतुष्ट कर दिया (**ननाम वह्निं शिरसा तोषयामास राघवः**)। इसपर अग्नि ने मायामयी सीता का रहस्य खोलकर राम से निष्कलंक सीता को ग्रहण करने का अनुरोध किया तथा उनको उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाया —

गृहाण चैतां विमलां जानकीं वचनात्मम।
पश्य नारायणं देवं स्वात्मानं प्रभवाव्ययम् [1] ॥

इस वृत्तान्त के अनुसार राम केवल अग्निपरीक्षा के समय जान जाते हैं

---

१. दे० कूर्म्मपुराण, उत्तरविभाग, अध्याय ३७ (कलकत्ता संस्करण, पृ० ६९६ आदि) नरहरिकृत कन्नड़ी रामायण (१५०० ई०) में लक्ष्मण के चले जाने के बाद अग्नि और अन्य देवता सीता का आधा भाग अग्नि के गढ़ में रखकर दूसरा आधा भाग पर्णशाला में छोड़ देते हैं (दे० अरण्यकाड, संधि ९)।

कि वास्तविक सीता का हरण नहीं हुआ था। **ब्रह्मवैवर्त्त पुराण** के रचयिता ने इसमें किंचित् परिवर्त्तन किया है। सीताहरण के पूर्व ही अग्निदेव, ब्राह्मण के वेश में, राम के पास आकर कहते हैं—'सीताहरण का समय आ गया। मुझे सीता को देकर उसकी छाया अपने पास रख लो। अग्निपरीक्षा के अवसर पर मैं उसे लौटा दूंगा। देवताओं ने मुझे भेजा है। मैं ब्राह्मण न होकर अग्नि हूं'। यह सुनकर राम सहमत हुए और अग्नि ने एक मायामयी सीता बनाकर उसे राम को दे दिया। तब इस रहस्य को किसी से भी न प्रकट करने का आदेश देकर अग्नि वास्तविक सीता के साथ चले गए। अग्निपरीक्षा के समय जब अग्नि ने वास्तविक सीता को लौटा दिया, तब माया सीता ने पूछा कि मैं अभी क्या करूं। इसपर अग्नि ने उसको पुष्कर भेज दिया। वहां तीन लाख वर्ष तक तपस्या करके मायामयी सीता भी लक्ष्मीपद प्राप्त कर सकी। **श्रीमद्देवीभागवत पुराण** में भी अग्नि राम के पास जाकर उनको एक छाया-सीता देते हैं और वास्तविक सीता को अग्नि परीक्षा के समय तक अपने साथ रखते हैं[1]।

अध्यात्म रामायण में हमें मायामयी सीता के वृत्तान्त का विकसित रूप मिलता है। लेखक ने राम की सर्वज्ञता पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है तथा सारे वृत्तान्त में अग्नि देव को जो प्रधानता मिली थी उसे राम और सीता को दे दी है। कथा इस प्रकार है (अरण्यकांड, सर्ग ७)—

रावण और मारीच का षड्यन्त्र जानकर राम ने एकान्त में सीता से कहा—'रावण तुम्हारे पास भिक्षु का रूप धारण कर आवेगा, इसलिए तुम अपनी छाया को कुटी में छोड़कर अग्नि में प्रवेश कर जाओ और मेरी आज्ञा से वहां अदृश्य रूप से एक वर्ष रहो'। सीता ने वैसा ही किया। मायामयी सीता को छोड़कर वह स्वयं अग्नि में अंतर्ध्यान हो गई (**मायासीतां बह्निः स्थाप्य स्वयमन्तर्दधेऽनले**)। रावण-वध के पश्चात् मायासीता अग्नि में प्रवेश करती है (युद्धकांड, सर्ग १२) तथा अग्नि राम को वास्तविक सीता को प्रदान करते हैं (सर्ग १३)।

---

१. दे० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, प्रकृति खंड, अध्याय १४। श्रीमद्देवीभागवत, स्कंध ९, अध्याय १६। दोनों रचनाओं में यह भी कहा गया है कि यह माया सीता आगे चलकर द्रौपदी के रूप में प्रकट हुई।

सीताहरण का यह रूप हिन्दी राम-कथा साहित्य, **रामचरित-मानस, रामचंद्रिका** आदि में मिलता है।

काश्मीरी रामायण (१८वीं शताब्दी) में अग्निपरीक्षा के समय माया सीता के प्रवेश करने के बाद अग्नि १४ दिनों तक जलती रहती है, तत्पश्चात् वास्तविक सीता उसमें से निकलती हैं।

आनन्द रामायण (अध्यात्म रामायण के बाद की रचना) में माया सीता के वृत्तान्त का एक परिवर्त्तित रूप मिलता है। खरादि-वध के पश्चात् राम सीता को तीन रूप में विभक्त हो जाने का आदेश देते हैं—रजोरूप से वह अग्नि में वास करेंगी, सत्वरूप से राम के वामांग में और तमोरूप से वन में।

> **सीते त्वं त्रिविधा भूत्वा रजोरूपा वसानले ॥ ६७ ॥**
> **वामांगे मे सत्वरूपा वस, छाया तमोमयी।**
> **पंचवट्यां दशास्यस्य मोहनार्थं वसात्र वै ॥ ६८ ॥**
> (सारकांड, सर्ग ७)

उपर्युक्त वृत्तान्त **आनन्द रामायण** को छोड़कर और कहीं नहीं मिलता। जिस तरह अन्य वृत्तान्तों में वास्तविक सीता का हरण नहीं होता इसी तरह इसमें सात्विक तथा रजोमयी सीता दोनों की रक्षा होती है और रावण केवल एक तमोमयी छाया हर लेता है।

४४७. मायासीता के इन सब वृत्तान्तों का अभिप्राय स्पष्ट है। उपास्य देवी की मर्यादा की रक्षा करने के लिए भक्ति-भावना ने सीता की एक छाया-मात्र का हरण स्वीकार किया और साथ साथ राम की सर्वज्ञता भी पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है।

अंत में युनानी साहित्य के एक समान विकास की ओर निर्देश करना है[1]। होमर के काव्य में हेलेन पतिता बनकर अपने अपहर्ता पैरिस के साथ स्वेच्छा से भाग निकलती है और युद्ध के बाद अपने पति मेनेलाउस को पुनः प्राप्त होती है। युनानी धार्मिक विकास में वही हेलन बाद में

---

१. दे० डब्लू प्रिंज़ : हेलन उंड सीता (याकोबी मेमोरियल वाल्युम; पृ० १०३-११३)।

देवी मानी गई। फलस्वरूप भक्तों ने होमर का वृत्तान्त इष्टदेवी की मर्यादा के प्रतिकूल समझकर उसे इस तरह बदल दिया कि पैरिस हेलेन की एक छाया (ऐडोलोन = मायामयी मूर्त्ति, छाया) अपने साथ ले जाता है। इसी तरह भक्ति-भावना ने दोनों देशों में एक ही उपाय का सहारा लिया है। फिर भी हेलेन तथा सीता की कथाओं में किंचित् भी पारस्परिक प्रभाव मानने की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार दोनों को स्वतन्त्र किन्तु समानान्तर विकास का एक प्रज्वलित उदाहरण कहा जा सकता है।

सत्रहवाँ अध्याय

किष्किंधाकांड

१

वाल्मीकीय किष्किंधाकांड

४४८. क. किष्किंधाकाँड की कथा वस्तु

(१) सुग्रीव से मैत्री (सर्ग १ १२)

हनुमान—पंपासर देखकर राम की विरह-व्यथा। सुग्रीव का हनुमान को भेजना। हनुमान का उनको सुग्रीव के पास ले जाना (सर्ग १-४)।

सुग्रीव—सुग्रीव का स्वागत तथा अपनी कथा बताना। राम द्वारा वालिवध की प्रतिज्ञा। सुग्रीव का राम को सहायता का वचन देना तथा सीता के आभरण दिखलाना (सर्ग ५-६)। सुग्रीव का पुनः सहायता के लिए वचन देना तथा अपनी कथा का उल्लेख करना (सर्ग ७-१०)।

राम की परीक्षा—सुग्रीव द्वारा वालि की शक्ति का वर्णन। राम द्वारा दुंदुभि के अस्थि-कंकाल का फेंका जाना, अनन्तर राम से सात साल तरुओं के एक बाण द्वारा भेदे जाने पर सुग्रीव का विश्वस्त होना। किष्किंधा जाकर सुग्रीव का वालि से प्रथम द्वन्द-युद्ध। राम का सुग्रीव को न पहचानना। ऋष्यमूक में लौटना (सर्ग ११-१२)।

(२) वालिवध (सर्ग १३-२८)

वालि का आहत होना—द्वितीय बार सुग्रीव का वालि को द्वन्दयुद्ध के लिए ललकारना (सर्ग १३-१४)। तारा द्वारा रोके जाने पर भी वालि का युद्ध के लिये जाना तथा राम के बाण से आहत होना (सर्ग १५-१६)।

वालि की भर्त्सना—इन्द्र माला के कारण वालि का जीवित रहना तथा राम को भर्त्सना देना; राम का प्रत्युत्तर (सर्ग १७-१८)।

तारा-विलाप—समाचार पाकर तारा का आना और विलाप करना (सर्ग १६-२०)। हनुमान् का तारा को सान्त्वना देना (सर्ग २१)।

वालि-मरण—वालि का सुग्रीव को अंगद को सौंपना। सुग्रीव के इन्द्र-माला उतार लेने पर उसका मरण, वानरों और तारा का विलाप (सर्ग २२-२३)। सुग्रीव का पश्चात्ताप और राम का सान्त्वना देना (सर्ग २४-२५)।

वर्षा-ऋतु—राम का प्रस्रवण पर्वत की एक गुफा में वर्षा-निवास। सुग्रीव का अभिषेक तथा अंगद का युवराज होना; राम द्वारा वर्षा-वर्णन तथा उनका विलाप (सर्ग २६-२८)।

(३) वानरों का प्रेषण (सर्ग २६-४४)

शरद-ऋतु—सुग्रीव का वानरसेना बुलाना, राम का शरद-ऋतु वर्णन तथा सुग्रीव की कृतघ्नता का उल्लेख, क्रुद्ध होकर लक्ष्मण का सुग्रीव के पास जाना (सर्ग २६-३२)।

लक्ष्मण-सुग्रीव-भेंट—तारा का लक्ष्मण को शांत करना। लक्ष्मण का सुग्रीव की भर्त्सना करना। तारा तथा सुग्रीव की क्षमा-प्रार्थना। सुग्रीव की आज्ञा से सेना का आगमन (सर्ग ३३-३७)।

दिग्वर्णन—सुग्रीव का सेना के साथ राम के पास पहुँचना (सर्ग ३८-३६)। दिशाओं का वर्णन करते हुए सुग्रीव का वानरसेना को चतुर्दिक् भेजना (सर्ग ४०-४३)। विश्वास-पात्र हनुमान् का दक्षिण-दिशा में भेजा जाना तथा राम का उन्हें अभिज्ञान रूप में अंगूठी देना (सर्ग ४४)।

(४) वानरों की खोज (सर्ग ४५-६७)

असफलता—वानरों का प्रस्थान तथा पूर्व, पश्चिम और उत्तर से वानरों का निराश लौटना (सर्ग ४५-४७)। हनुमान् और उनके साथियों की विंध्यपर्वत में व्यर्थ खोज (सर्ग ४८-५६)।

स्वयंप्रभा—उनका कंदरा में प्रवेश; स्वयंप्रभा द्वारा सत्कार तथा आँखे बंद करवाकर उनको गुफा के बाहर ले जाना (सर्ग ५०-५२)।

अंगद की निराशा—कंदरा से निकल कर विध्य-तल के सागर-तट पर उनका पहुँचना। अगद का प्रायोपवेशन के लिये प्रस्ताव। अंगद का सुग्रीव से भयभीत होना, सभी का दुःखी और निराश होना (सर्ग ५३-५५)।

संपाति—संपाति के सन्मुख अगद द्वारा जटायु-मृत्यु का उल्लेख। संपाति का वृत्तान्त पूछना और लंका की स्थिति बतलाना (सर्ग ५६-५८)। उसका अपने पुत्र सुपार्श्व द्वारा रावण को सीता ले जाते देखने का उल्लेख करना। ऋषि निशाकर के कथनानुसार संपाति के पखों का फिर से उग आना (सर्ग ५९-६३)।

सागर का तट—सागर के तट पर पहुँचकर अंगद की निराशा। जाम्बवान् द्वारा हनुमान् की कथा तथा सामर्थ्य-वर्णन। हनुमान् का महेंद्र पर्वत पर चढकर कूदने के लिए तत्पर होना (सर्ग ६४-६७)।

ख. किष्किंधाकांड का विश्लेषण

तीनों पाठों में विभिन्नता।

४४९. किष्किंधाकांड की आधिकारिक कथावस्तु, अर्थात् सुग्रीव से मैत्री, वालिवध और वानरों के प्रेषण तथा खोज में कोई विशेष अंतर नहीं पाया जाता है।

दाक्षिणात्य की निम्नलिखित सामग्री दोनों अन्य पाठों में नहीं मिलती—

सर्ग ३, २८-३८. राम द्वारा हनुमान के शुद्ध भाषा और व्याकरण के अध्ययन का उल्लेख।

सर्ग २४. वालिवध के पश्चात् सुग्रीव का पश्चात्ताप तथा राम द्वारा तारा की सान्त्वना।

सर्ग २७, ५-३०. प्रस्रवणगिरि का वर्णन

सर्ग ३०, २८-५७. शरद् का त्रिष्टुभ में वर्णन।

सर्ग ३३, २५-६२. तारा-लक्ष्मण-संवाद। क्रुद्ध लक्ष्मण को आते हुए देख कर सुग्रीव उनको शांत करने के लिए तारा को भेज देते हैं।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य २१ वां सर्ग (हनुमान द्वारा तारा की सान्त्वना तथा ३६ वां सर्ग वानर-सेना का आगमन) पश्चिमोत्तरीय पाठ में नहीं मिलते, यद्यपि दोनों गौडीय पाठ में विद्यमान हैं (दे० गौ० रा० ४, सर्ग २३ और ४३)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में दो वृत्तान्त मिलते हैं, जिनका दाक्षिणात्य पाठ में अभाव है—

सम्पाति का अपने पुत्र सुपार्श्व को बुलाना जो अगद को अपनी पीठ पर समुद्र के उस पार ले जाने का प्रस्ताव करता है (गौ० रा० ४-६२ तथा प० रा० ४, ५५)।

केसरी द्वारा दिग्गज धवल का वध, जिसके लिए उसने वरस्वरूप पुरुतविक्रम' पुत्र हनुमान को प्राप्त किया था (दे० गौ० रा० ५, ३ तथा प० रा० ४, ५८)।

प्रक्षेप

४५०. किष्किंधाकांड में गौण प्रक्षेपों को छोड़कर केवल दो अपेक्षाकृत विस्तृत स्थलों का उल्लेख करना है जो स्पष्टतया प्रक्षिप्त हैं।

(१) बाद के विकास में वालिवध के दोष से राम को बचाने के लिए जो मार्ग अपनाया गया है इसका वर्णन आगे किया जायगा। प्रारम्भ ही से **रामायण** के गायकों ने राम के इस कार्य को न्यायसंगत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है और **महाभारत** की रीति के अनुसार उन्होंने अभियोग (सर्ग १७) तथा प्रत्युत्तर (सर्ग १८) को शास्त्रीय ढंग से प्रस्तुत किया है[1]। इस प्रसंग में **मनुस्मृति** के दो श्लोकों का भी उद्धरण दिया गया है[2]।

---

१. दे० डबलू हाप्किन्स दि ग्रेट एपिक आव इंडिया, पृ० १९। एच० याकोबी, इस रामायण, पृ० १२८।

२. दे० रा० ४,१८, ३० और मनुस्मृति ८,२१८,३१६।

(२) वानरों के प्रेषण के विषय में ४४ वां सर्ग सब से प्राचीन है, जिसमें हनुमान् राम की अंगूठी लेकर प्रस्थान करते हैं। अनन्तर ४८ वा सर्ग आता था, जिसमें हनुमान और उनके साथियों का विंध्य में सीता की असफल खोज करने का वर्णन किया गया है। बाद में वानरों के प्रेषण के पहले भिन्न-भिन्न दिशाओं का जो विस्तृत वर्णन उद्धृत किया गया है इसका प्रारम्भ किष्किधा में न होकर उत्तर भारत में है[1]। दक्षिण दिशा के वर्णन में (सर्ग ४१) हनुमान् आदि का प्रेषण भी वर्णित है यद्यपि इसका ४४ वें सर्ग में पुनः वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट है कि यह दिग्वर्णन बाद में रामायण में रखा गया है (दे० सर्ग ४०-४३ और ४५-४७)।

२

किष्किंधाकांड का विकास

४५१. **वाल्मीकि-रामायण** के किष्किंधाकांड से संबंध रखनेवाली सामग्री में आगे चलकर अपेक्षाकृत कम परिवर्त्तन अथवा परिवर्द्धन किया गया है। अतः कथानक के क्रमानुसार कुछ गौण बातों का यहां पर उल्लेख किया जाता है।

क. सुग्रीव से मैत्री (सर्ग १-१२)

बंगाली राम-कथाओं में शिव-रामेर युद्ध का वर्णन किया गया है जिसके अनुसार लक्ष्मण शिव की वाटिका मे फल तोड़ने जाते हैं और द्वारपाल हनुमान् से युद्ध करते हैं। देर होने पर राम स्वयं आते हैं; इतने में शिव भी पहुँचे और राम से युद्ध करने लगते हैं। युद्ध के अंत में शिव राम को अपने द्वारपाल हनुमान् को समर्पित करते हैं और उस समय से हनुमान् शिव की सेवा छोड़कर राम भक्त हो गए[1]। उत्तरभारत के एक वृत्तान्त में राम के लिए फल तोड़ते समय लक्ष्मण के हनुमान् से युद्ध करने का वर्णन मिलता है। पराजित होकर और यह सुनकर कि लक्ष्मण राम के भाई हैं हनुमान् राम की शरण लेते हैं और राम-लक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले जाते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न १३, पृ० ३३७)।

सेरी राम में भी लक्ष्मण-हनुमान्-युद्ध का वर्णन पाया जाता है। इसके पातानी पाठ में हनुमान राम से युद्ध करते हैं तथा अंत में राम को पहचान कर उनके सहायक बन जाते हैं। श्याम के **राम-कियेन** में राम एक पेड़ के नीचे सोते हैं तथा लक्ष्मण पहरा दे रहे हैं। हनुमान् उसी वृक्ष पर बैठे हुए हैं और दोनों का ध्यान अकार्षित करने के लिए शाखाएं हिलाने लगते हैं। इसपर लक्ष्मण उनको भगाना चाहते हैं लेकिन हनुमान् उनका धनुष-बाण छीन लेते हैं। विवश होकर लक्ष्मण राम को जगाते हैं। अपनी माता के दिए हुए सकेत से हनुमान् राम को नारीयण मानकर

---

१. दे० डि० च० सेन : दि बंगाली रामायन्स, पृ० ४७

अपने को राम की सेवा में समर्पित करते हैं, और दोनो भाइयों को सुग्रीव के पास ले जाते हैं।

अद्भुत रामायण के अनुसार राम ने, हनुमान् से प्रथम बार मिलकर, उनको अपना विश्वरूप दिखलाया है (दे० सर्ग १०)।

४५२. हिंदेशिया की रामकथाओं में सुग्रीव की भेंट इस प्रकार वर्णित है। राम ने पहले हनुमान् से मिलकर उनको वालि के पास भेज दिया था। इसके बाद लक्ष्मण राम के लिए पानी लाए जिसे राम ने पीकर नमकीन पाया। दोनों ने इसके कारण का पता लगाकर सुग्रीव को देखा जिसके आंसुओं ने उस पानी को नमकीन कर दिया था। यह **सेरी राम** की कथा है; **सेरत कांड** तथा **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार वालि ने सुग्रीव को दूर वन में फेंक दिया था और वह अधमरा एक वृक्ष की शाखाओं पर गिर गया था। राम ने उसी वृक्ष के नीचे विश्राम किया और सुग्रीव के आंसू राम पर गिर गए।

वालि तथा सुग्रीव की जन्म-कथा का कोई विशेष विकास नहीं हुआ है। वे क्रमशः इन्द्र तथा सूर्य के पुत्र माने जाते हैं (दे० रा० १,१७)। उत्तरकांड के एक प्रक्षिप्त सर्ग के अनुसार इनकी उत्पत्ति ऋक्षरजा से इन्द्र तथा सूर्य के वीर्य द्वारा हुई थी (दे० ७,३७, प्र० १)। हिंदेशिया तथा श्याम में वे दोनों गौतम ऋषि की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं (दे० आगे अनु० ५४६)

४५३. **वाल्मीकि रामायण** में राम ने सुग्रीव को अपनी शक्ति का प्रमाण देने के लिए दुंदुभि राक्षस के अस्थि-कंकाल को दश योजन की दूरी तक फेंक दिया तथा सात ताल तरुओं का एक बाण से भेदन किया (दे० सर्ग ११)। **महाभारत** के रामोपाख्यान, गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण, राम कियेन** आदि में राम के इन दो कृत्यों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। शेष राम-कथाओं में इनका प्रायः वर्णन मिलता है। बहुत से वृत्तान्तों के अनुसार ये सात ताल एक सर्प अथवा नाग की पीठ पर चक्राकार स्थित हैं। लक्ष्मण उस सर्प को पैर से दबाकर सीधा कर देते हैं जिससे राम सात वृक्षों को एक ही बाण से विद्ध कर सकें, उदाहरणार्थ : **आनन्द रामायण** (१,८), **सेरी राम, रेआम केर**, पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १।

नृसिंह पुराण (अध्याय ५०), **आनंद रामायण** तथा पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३ के अनुसार पुराणज्ञों ने कहा था—जो इन सात तालों का एक साथ भेदन करेगा वह वालि को मारेगा। **आनन्द रामायण** में लिखा है कि एक सर्प ने वालि को ताल के सात फल एक गुफा में रखते हुए देखा। इसपर वालि ने उस सर्प को शाप दिया-तुम्हारे शरीर में सात वृक्ष उत्पन्न होंगे तथा सर्प ने वालि को शाप दिया कि इनको भेदने वाला तुमको मारेगा (**तान् छेता यस्ते हंता** दे० आ० रा० १,८,३८)।

पउमचरिय में सुग्रीव आदि वानर रावण से युद्ध करने से बहुत डरते हैं और लक्ष्मण इनको विश्वास दिलाने के लिए कोटिशिला उठाते हैं। इस कोटिशिला के विषय में भी एक भविष्यद्वाणी प्रसिद्ध थी कि जो कोटि-शिला उठा सकेगा उससे रावण की मृत्यु होगी।

ख. वा लि व ध

४५४. **महाभारत** के रामोपाख्यान तथा **नृसिंह पुराण** की राम-कथा में सुग्रीव-वालि के केवल एक द्वन्द्वयुद्ध का उल्लेख किया गया है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में वालि ने पहले द्वन्द्वयुद्ध के बाद सुग्रीव की छाती पर एक पर्वत रख दिया था जिसे राम ने उठा लिया। (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १)।

तिब्बती तथा **खोतानी रामायणों** में दूसरे द्वन्द्वयुद्ध के लिए सुग्रीव की पूँछ में एक दर्पण बांधा जाता है। **राम कियेन** में राम अपने वस्त्र का किनारा सुग्रीव की कमर में बांधते हैं। **सेरी राम** के अनुसार सुग्रीव को पहचानने के उद्देश्य से उसकी पूँछ के नीचे लाल रंग चढ़ाया जाता है।

सेरी राम के वृत्तान्त में वालि राम का वाण हाथ से पकड़ता है और बाद में राम के अनुरोध से उसे छोड़ देता है, जिसपर वाण अपने आप से वालि को आहत करता है। राम के निकट आने पर वालि राम का हाथ पकड़ता है जिससे वह जीवित रह सका। सुग्रीव की भर्त्सना करके तथा हनुमान् को अपना उत्तराधिकारी ठहराकर वालि राम का हाथ छोड़ देता है और मर जाता है। **राम कियेन** में भी वालि राम का वाण पकड़ कर राम की भर्त्सना करता है जिसपर राम अपना नारायण-रूप दिखलाकर

वालि को उसके पापों का स्मरण दिलाते हैं। अनन्तर वालि उस वाण को अपने हृदय में घुसाकर आत्महत्या करता है (दे० अध्याय २१)।

तिब्बती रामायण के अनुसार राम ने ऋषियों से एक ऐसा वर प्राप्त किया था कि उनके मारे हुए मनुष्य मरकर स्वर्ग में देव बन जाएं। अतः वालि भी देव बन गया। **रेआम केर** में भी वालि के स्वर्गगमन का उल्लेख किया गया है।

अधिकांश अर्वाचीन राम-कथाओं में वालि मरने के पूर्व राम को अवतार मानता है और स्वर्ग प्राप्त कर लेता है। उदाहरणार्थ—**अध्यात्म रामायण** (४,२,७१), **आनन्द रामायण** (१,८,६३), **रामचरितमानस**, पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १,१३; आदि।

४५५. वालि के पूर्व तथा आगामी जन्म का भी उल्लेख मिलता है। **आनन्द रामायण** में राम वालि से कहते हैं कि मैंने पूर्वजन्म के वैर से तुमको मारा है। द्वापर के अंत में वालि प्रभासवासी भील था और उसने राम का पैर वाण से छेदा था (दे० १,८,६६)। उत्तरभारत के एक वृत्तान्त में कहा गया है कि कृष्णावतार में वालि-वध के अन्याय का प्रतिकार किया जाएगा। उस समय वालि पुनर्जन्म लेकर कृष्ण का बध करेगा (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३,पृ०३४२। इसका उल्लेख **महानाटक** में भी पाया जाता है (दे० अंक १४,७५)।

वालि वध के एक अन्य परिणाम ,अंगद-वैर, का भी कई राम-कथाओं में वर्णन मिलता है। **महानाटक** में कहा गया है कि राम का दूत बनकर अंगद ने राम-रावण-युद्ध को देखने के उद्देश्य से रावण का अपमान किया था (अंक ८) तथा अयोध्या में लौटने के बाद अंगद ने राम को युद्ध के लिए ललकारा था (दे० अंक १४,७२ आदि)। **हिकायत महाराज रावण** में उस अवसर पर अंगद और राम के द्वंद्वयुद्ध का भी वर्णन मिलता है, जिसमें अंगद विजयी है।

राम-चंद्रिका में अंगद के वैर और उसके गर्व-निवारण का भी वर्णन मिलता है (दे० प्रकाश २६ और ३८)।

४५६. **अनामकं जातकम्** तथा जैन राम-कथाओं में राम वालि का वध नहीं करते। **अनामकं जातकम्** में वालि राम के धनुषसंधान को देखते ही भयभीत होकर भागता है और इसका आगे चलकर कोई उल्लेख नहीं होता।

पउमचरिय में वालि के स्थान पर एक मायामय सुग्रीव का वध होता है। साहसगति नामक विद्याधर ने सुग्रीव का रूप धारण कर उसकी पत्नी तथा राज्य को छीन लिया था। राम साहसगति को मार कर सुग्रीव सहायता प्राप्त करते हैं।

गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में वालि राम के पास संदेश भेजकर कहता है कि सुग्रीव और हनुमान रावण के विरुद्ध नहीं लड़ सकेंगे, लेकिन मैं रावण की हत्या करने में समर्थ हू। राम उसके प्रस्ताव का कटु शब्दों में उत्तर देकर वालि का महामेघ नमक हाथी मांगते हैं। वालि उसे देने से इनकार करता है, जिसपर दोनों सेनाओं में युद्ध होता है और अंत में लक्ष्मण वालि से द्वंदयुद्ध कर उसका वध करते हैं।

४५७. राम कथा सम्बन्धी नाटकों में पहले पहल राम द्वारा वालि-वध का एक ऐसा रूप मिलता है जिसमें **रामायण** में वर्णित राम के अक्षत्रिय आचरण का दोषनिवारण किया गया है।

महावीरचरित में माल्यवान् के उभाड़ने पर वालि राम और लक्ष्मण का मार्ग रोक लेता है और राम द्वारा द्वंदयुद्ध में मारा जाता है। (दे० अंक ५)। यशोवर्मा कृत **रामाभ्युदय** में भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। **अनर्घराघव** में लक्ष्मण दुंदुभि के अस्थि-कंकाल को फेंक देते हैं जिसे वालि ने एक वृक्ष पर रख दिया था। इसपर वालि आकर युद्ध के लिए ललकारता है और राम द्वंदयुद्ध में उसका वध करते हैं (अंक ५)। इस प्रकार का वर्णन **महानाटक** (अंक ५), **जानकी परिणय** (अंक ६) तथा दक्षिण भारत की एक राम-कथा (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त सं० ३) में भी पाया जाता है।

ग. वानरों का प्रेषण और खोज

४५८. **वाल्मीकि रामायण** में राम हनुमान् को अभिज्ञान के रूप में अपनी अंगूठी देते हैं (४, ४४); बाद में सीता हनुमान् को अपना चूड़ामणि देती हैं तथा काक-वृत्तान्त सुनाती हैं (५, ३८)।

इन अभिज्ञानों के विषय में कई राम-कथाओं में किंचित् विभिन्नता आ गई है। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में तथा **रामलिंगामृत** में राम अंगूठी के साथ एक पत्र भी देते हैं। अभिनन्दकृत **रामचरित** में राम एक मुद्रिका के

अतिरिक्त सीता का नूपुर और स्तनोत्तरीय देकर हनुमान् को अपनी वंशावली (दिलीप, रघु-अज, दशरथ) भी सिखलाते हैं (दे० सर्ग ८)।

आनन्द रामायण में राम हनुमान् को अंगूठी के साथ साथ अपना निज मंत्र भी देते हैं तथा चित्रकूट में सीता के भाल पर तिलक लगाने का वृत्तान्त सुनाते हैं। इस वृत्तान्त का प्रथम वर्णन **वाल्मीकि रामायण** के एक प्रक्षिप्त सर्ग में किया गया है, जो अयोध्याकांड के ९५ वें सर्ग के बाद रखा गया है। बंगीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में इस सर्ग की गणना अन्य सर्गों के साथ साथ की जाती है (दे० गौ० रा० २, सर्ग १०५. प० रा० २, १०९)। इस सर्ग में काक वृत्तान्त के अतिरिक्त राम के सीता के भाल पर तिलक लगाने का वर्णन किया गया है। उस समय सीता एक वानर से भयभीत होकर राम से लिपट गई जिससे सीता का तिलक राम के वक्षस्थल पर लग गया था। बलरामदासकृत **उड़िया रामायण** में राम हनुमान् को काक वृत्तान्त तथा तिलक का वृत्तान्त दोनों अभिज्ञान के रूप में सुनाते हैं। **राम कियेन** में हनुमान राम से एक मुद्रिका तथा सीता का उत्तरीय पाकर यह आपत्ति करते हैं कि इनसे सीता की आशंका दूर नहीं होगी क्योंकि शत्रु भी इनको प्राप्त कर सकता है। इसपर राम एक रहस्य प्रकट करते हैं; जब वह पहले पहल मिथिला में प्रवेश कर रहे थे सीता ने अपनी खिड़की से उनको देखा था और दोनों में प्रेम उत्पन्न हुआ था (दे० अध्याय २३)।

सीता के दिए हुए अभिज्ञानों के विषय में इतनी विभिन्नता हीं मिलती। प्रायः **वाल्मीकि रामायण** की कथा ही दी गई है। **महानाटक** में सीता हनुमान् को चूड़ामणि देकर काक-वृत्तान्त तथा तिलक की घटना दोनों का वर्णन करती हैं (दे० अंक ६)। प्राचीन **रामायण काकाविन** में सीता चूड़ामणि के साथ साथ एक पत्र भी देती हैं।

४५९. स्वयप्रभा के विभिन्न नाम मिलते हैं लेकिन कथा में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है (दे० रा० सर्ग ५०-५२)। **महाभारत** म इसका नाम प्रभावती है, **नृसिंह पुराण** में प्रभा; **अग्नि पुराण** में सुप्रभा; नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार** में बादरी तथा **रामकियेन** में पुष्पमाली। **रामायण काकाविन** में स्वयंप्रभा वानरों को भुलाने के लिए उनसे आँखों को हाथ से ढकने के लिए कहती है, क्योंकि वह दानवी है

और राक्षसों से मैत्री रखती है (दे० सर्ग ७)। **भट्टिकाव्य** के वृत्तान्त से भी यही ध्वनि निकलती है (दे० सर्ग ७,७१)। **तिब्बती रामायण** में भी श्री देवी की पुत्री वानरों को मोहित कर देती है जिससे उनको दिशाभ्रम हो जाता है। अभिनन्दकृत **रामचरित** में गुफा के प्रवेशद्वार पर एक दुर्दम नामक राक्षस का अंगद द्वारा वध किया जाता है तथा हनुमान् एक वानरवार**सुन्दरी** का प्रेमप्रस्ताव अस्वीकार करते हैं। **रामकियेन** में हनुमान् की बहुत सी प्रेम कथाएं मिलती हैं। प्रस्तुत वृत्तान्त में भी वह गुफा से चले जाने के पूर्व पुष्पमाली (स्वयप्रभा) के साथ क्रीड़ा करते हैं और उसके बाद उसे स्वर्ग भेज देते हैं (दे० अध्याय २३)।

अठारहवां अध्याय

सुन्दरकांड

१

वाल्मीकीय सुन्दरकांड

४६०. सुन्दर कांड की कथा वस्तु

(१) लंका में हनुमान का प्रवेश (सर्ग १-१८)

समुद्रलंघन—लंघन करते समय हनुमान से मैनाक का आग्रह। सुरसा का सम्मिलन, सिंहिका वध (सर्ग १)।

लंका वर्णन—बिडाल जितने आकार में हनुमान का लंका में प्रवेश; लका देवी को परास्त करना; नगर, महल, पुष्पक, शयनागार आदि का वर्णन; सीता का पता न मिलना (सर्ग २-१२)।

अशोक-वन—हताश होकर हनुमान् का अशोक-वन में प्रवेश और वहां राक्षसियों से घिरी हुई सीता को पाना (सर्ग १३-१७)।

(२) रावण सीता सवाद (सर्ग १८-२८)

रावण की प्रताड़ना—कामातुर रावण का सीता से अनुरोध तथा सीता की अस्वीकृति (सर्ग १८-२१)। रावण का भय दिखलाना और दो महीने की अवधि देना। सीता की भर्त्सना। सीता को समझाने के लिए रावण द्वारा राक्षसियों का नियुक्त किया जाना (सर्ग २२)।

राक्षसियों का प्रयास—राक्षसियों का प्रयास और सीता की अस्वीकृति तथा विलाप (सर्ग २३-२६)।

त्रिजटा का स्वप्न—त्रिजटा का राक्षस-पराजय-सूचक स्वप्न-वर्णन (सर्ग २७)। सीता विलाप (सर्ग २८)।

(३) हनुमान-सीता-संवाद

सीता को शकुन होना (सर्ग २६)। हनुमान का राम कथा-वर्णन (सर्ग ३०-३१)। सीता का भयभीत होना (सर्ग ३२)। हनुमान का प्रकट होना, सीता का संदेह; हनुमान् द्वारा राम का वर्णन; सीता का विश्वास करना (सर्ग ३३-३५)। हनुमान् का राम-मुद्रिका देना और शीघ्र छुटकारे का आश्वासन; हनुमान् की पीठ पर जाने से सीता का अस्वीकार करना। अभिज्ञान स्वरूप सीता का काक वृत्तान्त बताना तथा चूड़ामणि देना। विदा (सर्ग ३६-४०)।

(४) लंका-दहन (सर्ग ४१-५५)

अशोक वन-ध्वंस—हनुमान् द्वारा अशोक-वन और चैत्य का विध्वंस तथा प्रहस्त-पुत्र जंबुमाली और रावण-कुमार अक्ष का वध (सर्ग ४१-४७)।

हनुमान्-बंधन—ब्रह्मास्त्र से इन्द्रजित द्वारा बंधन। राम-दूत के रूप में हनुमान् का रावण से सीता मुक्ति का आग्रह। विभीषण द्वारा हनुमान् की रक्षा (सर्ग ४८-५२)।

लंका-दहन—दंड-रूप हनुमान् की पूंछ जलाई जाने की रावण द्वारा आज्ञा। हनुमान् द्वारा लंकादहन। सीता की रक्षा का हनुमान् को आश्वासन (सर्ग ५३-५५)।

(५) हनुमान् का प्रत्यावर्त्तन (सर्ग ५६-६८)

समुद्र-लंघन—हनुमान् का आकाशमार्ग से अपने साथियों के पास प्रत्यागमन और अपनी सफलता का वर्णन (सर्ग ५६-५६)। अंगद द्वारा सीता-मुक्ति का प्रस्ताव; जाम्बवान् का विरोध (सर्ग ६०)।

मधुवन—मधुवन में पहुँच कर हनुमान् आदि का उत्पात; दधिमुख का सुग्रीव को समाचार देना (सर्ग ६१-६३)।

सुखद समाचार—हनुमान् का राम से सीता के जीवित होने का समाचार कहना और अभिज्ञान देना (सर्ग ६४-६५); राम का विलाप (सर्ग ६६); हनुमान् का काक-वृत्तान्त कहना और सीता-संवाद का उल्लेख करना (सर्ग ६७-६८)।

ख. सुन्दरकांड का विश्लेषण

तीनों पाठों में विभिन्नता.

४६१. दाक्षिणात्य पाठ के दो वृत्तान्त अन्य पाठों में नहीं पाए जाते हैं– लंका मे प्रवेश करते समय हनुमान् का लंका देवी से युद्ध (सर्ग ३,२०५१) तथा हनुमान् द्वारा चैत्यप्रासाद का विध्वंस (सर्ग ४३)।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य २३ वा सर्ग, जिसमें सीता से अनुरोध करनेवाली राक्षसियों की नामावली मात्र दी गई है, पश्चिमोत्तरीय पाठ में (सर्ग १८) तो मिलता है लेकिन इसका गौडीय पाठ में अभाव है।

दाक्षिणात्य पाठ (सर्ग १३,५४-६७) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (सर्ग ८,६४-७७) के अनुसार, हनुमान् अशोकवन में प्रवेश करने के पहले देवताओं की स्तुति करते हैं। इसका उल्लेख गौडीय पाठ मे नहीं किया गया है।

गौडीय (सर्ग ५२) तथा पाश्चमोत्तरीय पाठ (सर्ग ५१) का सरमा-वाक्यम् नामक सर्ग, जिसमे सरमा सीता से लका दहन का वर्णन करता है दाक्षिणात्यपाठ मे नहीं मिलता।

प्रक्षेप

४६२. लका-वर्णन (सर्ग २-११) में बहुत कुछ पुनरावृत्ति तथा दीर्घ छन्दों के सर्ग भी पाए जाते हैं। आगे चलकर भी कुछ अनावश्यक सामग्री मिलती है; उदाहरणर्थ सर्ग २८,२९ (दीर्घ छंद) और ३३। अतः बहुत सम्भव है कि सुंदरकांड के पूर्वार्द्ध में प्रक्षिप्त सामग्री का अभाव न हो। फिर भी इसमें कथानक के दृष्टिकोण से कोई महत्त्वपूर्ण प्रक्षेप नहीं पाया जाता है। सुन्दरकांड के उत्तरार्द्ध की दशा नितान्त भिन्न है। ऐसा प्रतीत होता है, कि इसकी अधिकांश सामग्री प्रक्षिप्त मानी जानी चाहिए।

डा० एच० याकोबी के तर्कों पर विचार करने के पश्चात् लंकादहन (सर्ग ४१-५५) के प्रक्षिप्त होने में कोई भी सदेह नहीं रह जाता है।[1]

सीता द्वारा हनुमान की विदा का वर्णन सुन्दरकांड में तीन बार मिलता है : लंकादहन के पूर्व (सर्ग ३९), लकादहन के पश्चात् (सर्ग ५६) तथा

---

१. दे० डस रामायण, पृ० ३३-३५।

राम-हनुमान्-संवाद में (सर्ग ६८) । इसका मौलिक स्थान ३६ वां सर्ग है, क्योंकि इसमें सीता हनुमान् से एक दिन ठहरने के लिए जो अनुरोध करती है वह लंकादहन के पश्चात् स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है। लंका-दहन के पूर्व यह नितान्त स्वाभाविक प्रस्ताव प्रतीत होता है।

इस वर्णन की पुनरावृत्ति का कारण यह है कि लकादहन के विस्तृत प्रक्षेप के बाद मौलिक कथावस्तु से सम्बन्ध स्थापित करना था और इसका सब से सरल उपाय विदा का वर्णन दुहराना समझा गया है [१]।

हनुमान् दो बार सीता से भेंट का वर्णन करते हैं (दे० रा० ५,६५-६८ तथा ६,१२), लेकिन लकादहन का कोई उल्लेख नहीं करते। इसके अतिरिक्त लकावरोध के समय लका के सौंदर्य का वर्णन किया गया है, जिसमें कहीं भी उसके दहन का निर्देश मात्र भी नहीं मिलता (दे० रा० ६,३८-३६)।

लंकादहन के बाद भी अनावश्यक पुनरावृत्ति पाई जाती है। उदाहरणार्थ; सर्ग ५८,५६ तथा सर्ग ६६-६६ । इसके अतिरिक्त मधुवन में उत्पात का वर्णन आधिकारिक कथा-वस्तु की गति में बाधा उपस्थित करता है, और इसमें जो हास्यरस का प्राधान्य पाया जाता है, वह भी मूल रचना के अनुकूल नहीं है [२]। अतः बहुत सम्भव है कि सीता द्वारा हनुमान की विदा के पश्चात् हनुमान के अपने साथियों से मिलकर (सर्ग ५६-५७) राम के पास प्रत्यागमन का वर्णन मात्र आदिकाव्य में मिला हो।

---

१. गौडीय पाठ में विदा का पहला वर्णन (लंकादहन के पूर्व) सर्वथा हटाया गया है, जिससे पुनरावृत्ति के दोष का निवारण किया गया है।

२. दे० एच० याकोबी : वही, पृ० ३७।

२

सुन्दरकांड का विकास

४६३. वाल्मीकि के सुन्दरकांड से सम्बन्ध रखनेवाली सामग्री का अन्य कांडों की अपेक्षा कम परिवर्द्धन अथवा परिवर्त्तन हुआ है। कथानक के क्रमानुसार कुछ गौण बातों का प्रस्तुत परिच्छेद में उल्लेख किया जाता है।

क. समुद्र लंघन

श्याम के **रामजातक** में हनुमान् और अगद दोनों लंका में प्रवेश करते हैं, तथा **सिंहली राम-कथा** में वालि हनुमान के स्थान पर लंका जाता है। शेष राम-कथाओं में हनुमान ही समुद्र लांघकर सीता का पता लगाते हैं।

सेरी राम में हनुमान कोई दृढ़ आधार न पाकर अंत में राम की बाहु से ही लांघते हैं। इस कथा मे कहा गया है कि हनुमान का वीर्य समुद्र में गिर गया तथा मछलियों की रानी ने उसे खाया और गर्भवती हुई। **सेरी राम** के पातानी पाठ के अनुसार हनुमान राम के कंधे से लंका-तट पर कूदते हैं।

बिहोर नामक आदिवासी जाति की राम-कथा में हनुमान समुद्र के मध्य में राम द्वारा चलाये हुए बाण पर विश्राम करते हैं।

अनेक वृत्तान्तों में हनुमान अपने लक्ष्य को पार करके लंका से बहुत दूर पृथ्वी पर उतरते हैं (दे० सेरी राम, पाश्चात्य वृत्तान्त ८ और १३, रेआम केर, राम कियेन)। **राम कियेन** में हनुमान नारद के आश्रम के निकट पहुँचकर वहां रात को ठहरते हैं। **रेआम केर** में भी इससे मिलता जुलता वृत्तान्त मिलता है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार हनुमान मलय तक लांघकर वहां से सिंहल द्वीप तक कूदते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८)।

ख. हनुमान के छद्म वेष

४६४. **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार हनुमान ने विडाल के आकार के छोटे बन्दर का रूप धारण कर लंका में प्रवेश किया था।

सूर्ये चास्तं गते रात्रौ देहं संक्षिप्य मारुतिः।
वृषदंशकमात्रोऽथबभूवाद्भुतदर्शनः॥ ४७॥

(सुन्दरकांड सर्ग २)

बाद में इसका स्वाभाविक विकास यह हुआ कि हनुमान् वास्तव में मच्छर बनकर लंका में प्रवेश करते हैं। इसका उल्लेख अनेक राम-कथाओं में मिलता है, उदाहरणार्थ :

बृहद्धर्मपुराण (पूर्व खंड, अध्याय २० श्लोक २—**श्रोतु भूत्वा**)।

पद्मपुराण, बंगीय पाठ, (जर्नल रो० ए० सो० १८४२, पृ० ११२६)।

दक्षिण भारत की १७ वीं श० की दो रामकथाएं (पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ और ३)।

उत्तर भारत की एक राम-कथा (पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३)।

गुजराती नर्मदकृत **रामायणसार**।

४६५. **रामचरितमानस** में हनुमान् मशक सा छोटा रूप धारण कर लंका में प्रवेश करते हैं—

मसक समान रूप कपि धरी।
लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥ (५,३,१)

भिन्न भिन्न राम कथाओं में हनुमान् भिन्न भिन्न रूप धारण कर लंका में घुसते हैं। उदाहरणार्थ :

भ्रमर : गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** (दे० ६८, २६८), पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३ और १३।

मूषिका : वह्निपुराण (पृ० २६६ अ)।

ब्राह्मण : पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ और **सेरी राम**। **महानाटक** के अनुसार हनुमान् ब्राह्मण के रूप में अशोकवन नष्ट करते हैं।

शुक : बिहोर आदिवासी कथा।

काक : पंजाब का एक लोकगीत (दे० इं० ए० भाग ३८, पृ० १५०)।

भैंसा : हिंदेशिया (ज० रो० ऐ० सो० स्ट्रैटस ब्रेंच १६१०, पृ० २०)।

४६६. **अध्यात्म रामायण** में कहा गया है कि सीता के सामने आते समय हनुमान् ने चटक पक्षी के बराबर आकार वाले छोटे वानर का रूप

धारण किया (दे० ५, ३, २०)। **आनन्द रामायण** की एक कथा के अनुसार हनुमान् ने अपने को छोटे बालक के रूप मे सीता को दिखलाया (दे० ८, ७, २६) तथा **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार एक वृद्धा के रूप में।

अगले अध्याय मे हनुमान् के अन्य रूपों का उल्लेख किया जायगा जिन्हें उन्होने युद्ध के समय लका मे तथा महीरावण की नगरी में प्रवेश करने के लिए धारण किया था।

ग. लंकादेवी

४६७. वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षेप में, जो केवल दाक्षिणात्य पाठ मे मिलता है, लका-देवी राक्षसी के रूप म हनुमान् को रोक लेती है। हनुमान् से पराजित होकर वह कहती है कि स्वयभू ने उससे कहा था—तुम्हारी पराजय के बाद राक्षसों का नाश होगा (दे० ३, २० ५१)।

यह वृत्तान्त बाद की अधिकाश रामकथाओं मे मिलता है। यहां पर इसके दो अन्य रूपों का उल्लेख करना है।

४६८. पउमचरिय मे हनुमान लका मे प्रवेश करते समय वज्रमुख का वध करते हैं और इसके बाद उसकी पुत्री लकासुन्दरी से युद्ध करते हैं। अंत में दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित होकर रात भर प्रेमक्रीड़ा करते हैं। **पउमचरिय** में हनुमान रावण के मित्र माने जाते हैं, अतः हनुमान् को किसी छद्मवेश की आवश्यकता नहीं है (दे० पर्व ५२)।

४६९. रामकथाओं का एक वर्ग पाया जाता है जिसमें लंकादेवी के स्थान पर चंडिका का उल्लेख किया गया है।

वृहद्धर्मपुराण (अध्याय २०) **महाभागवत पुराण** (अध्याय ३६) के अनुसार हनुमान् शिव के अवतार हैं और देवी लका में निवास करती हैं। लका में पहुँचकर हनुमान् देवी के मंदिर में जाकर उनसे लका को त्याग देने की प्रार्थना करते हैं। सीता के अपमान के कारण रावण से अप्रसन्न होकर देवी लंका को छोड़ देती हैं।

कृत्तिवासीय रामायण में लिखा है कि शंकर ने चामुंडा को हनुमान् के आगमन तक लंका में निवास करने का शाप दिया था। गुजराती नर्मदकृत **रामायणसार** में भी हनुमान् का उग्रचंडिका से भेंट करने का उल्लेख किया गया है।

लंका की घटनाएं

४७०. विमलसूरिकृत **पउमचरिय** से लेकर बहुत रामकथाओं में हनुमान् के विभीषण से मिलने का वर्णन मिलता है।

पउमचरिय के अनुसार विभीषण ने लंका में हनुमान का स्वागत किया था, तथा सीता को लौटा देने के लिए रावण से आग्रह करने की प्रतिज्ञा भी की थी (दे० पर्व ५३)। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में हनुमान् सीता से मिलकर राम के पास लौटते हैं, और राम द्वारा पुनः लंका भेजे जाते हैं जहां वह पहले विभीषण से मिलते हैं। विभीषण रावण को समझाने की प्रतिज्ञा करता है और हनुमान् को रावण के पास ले जाता है। रावण सीता को लौटा देने से इनकार करता है और हनुमान् राम के पास वापस आते हैं।

अर्वाचीन राम-कथाओं में विभीषण राम भक्त माना जाता है। **आनन्द रामायण** में लिखा है कि रात को सीता की खोज करते हुए हनुमान् ने रामकीर्तन में संलग्न विभीषण को देख लिया (दे० १,८, २६)। **रामचरितमानस**, गुजराती **रामायणसार** तथा उत्तरभारत के एक वृत्तान्त (पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३) में भी इस प्रकार का वर्णन मिलता है। **रामचारतमानस** के अनुसार विभीषण ने हनुमान् से बताया कि सीता कहां हैं। उपर्युक्त पाश्चात्य वृत्तान्त में विभीषण स्वयं हनुमान् को सीता के पास ले जाता है।

४७१. अनेक अर्वाचीन रामकथाओं में हनुमान् रात को लंका में सीता की खोज करते हुए भिन्न भिन्न प्रकार के उत्पात करते हैं।

आनन्द रामायण में हनुमान् रावण के वस्त्र विभीषण के पलंग पर रख देते हैं तथा राक्षस के वस्त्र मंदोदरी के पलंग पर (दे० १-६)। दक्षिण भारत की एक राम-कथा में हनुमान् मंदोदरी के बाल पलंग के खंभे में बाँधते हैं, उसके आभरण चुराते हैं, रावण की छाती पर पैर जमाते हैं तथा दीपक बुझाकर चले जाते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ पृ० ६६)। **रामजातक** में हनुमान् रावण तथा मंदोदरी के बाल साथ साथ बाँधते हैं और मंत्र पढ़कर लिखते हैं कि जब तक मंदोदरी रावण के सिर में थप्पड़ न मारे कोई भी गांठ नहीं खोल सकेगा। इस प्रकार के उत्पातों का उल्लेख **राम कियेन** तथा **सेरी राम** के अतानी

पाठ में मिलते हैं जब हनुमान् युद्ध के समय छिपकर लंका में प्रवेश करते हैं (दे० नीचे अनु० ४६७)।

४७२. बिहोर आदिवासियों की रामकथा में सीता ने रावण के बलात्कार से बचने के लिए जादू द्वारा अपने शरीर में भयंकर फोड़े उत्पन्न किये थे। **सेरी राम** के पातानी पाठ तथा दक्षिण भारत के वृत्तान्त में अग्नि सीता की लंका में रक्षा करती है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)।

सेरी राम में हनुमान् के भेजे जाने के पहले एक ज्योतिषी राम से कहता है कि सीता आत्महत्या करने का विचार कर रही हैं। **वाल्मीकि रामायण** में भी सीता के आत्महत्याविचार का उल्लेख किया गया है, जहां सीता वेणी से फांसी लगाना चाहती हैं (दे० ५, २८,१७)। **राम कियेन** में सीता ऐसा ही करती हैं और हनुमान् ठीक समय पर पहुंचकर गांठ खोल देते हैं (दे० अध्याय २४)। **प्रसन्नराघव** तथा **आश्चर्य-चूडामणि** में हनुमान् के पहुंचते समय सीता पानी में कूदने के लिए तैयार थीं। **रामचरितमानस** मे सीता उस समय त्रिजटा से चिता तैयार करने के लिए अनुरोध कर रही थीं। उत्तरभारत के एक वृत्तान्त में सीता ने एक वर्ष के बाद रावण की पत्नी बनने का वचन दिया था और हनुमान् के पहुंचने के समय आत्महत्या का विचार कर रही थी (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३, पृ० ३५८)।

४७३. **रामतापनीय उपनिषद्** में वानरों को भेजते हुए सुग्रीव उन्हें सीता को ले आने का आदेश देते हैं (दे० ४, २४)। आगे चलकर कई वृत्तान्तों में युद्ध के पूर्व ही हनुमान् सीता को लेकर राम के पास लौटते हैं। ऐसा वर्णन सिंहल द्वीप की रामकथा तथा कई पाश्चात्य वृत्तान्तों में मिलता है (दे० पा० वृ० नं० ६, १० और १५)।

—:०:—

उन्नीसवाँ अध्याय

युद्धकांड

१

वाल्मीकीय युद्धकांड

४७४. क. युद्धकांड की कथावस्तु

(१) लंका का अभियान (सर्ग १-४१)

समुद्र की ओर प्रस्थान—समुद्र की बाधा के विचार से राम की निराशा तथा सुग्रीव द्वारा सेतुबंध का प्रस्ताव (सर्ग १-२) । हनुमान् द्वारा लंका का वर्णन (सर्ग ३) । समुद्र तक पहुँचना तथा राम की निराशा (सर्ग ४-५) ।

रावण-सभा—सभासदों द्वारा रावण को विजय का आश्वासन तथा विभीषण की सीता को लौटा देने की मंत्रणा (सर्ग ६-९) । दूसरे दिन विभीषण द्वारा चेतावनी, कुंभकर्ण का जगकर रावण को दोष देना लेकिन सहायता की प्रतिज्ञा करना (सर्ग १० १२) । पुंजिकस्थला के कारण पितामह के शाप का रावण द्वारा उल्लेख (सर्ग १३) । इन्द्रजित् तथा रावण द्वारा निंदित होकर विभीषण का रावण को छोड़कर जाना (सर्ग १४-१६) ।

विभीषण की शरणागति—सुग्रीवादि के विरोध करने पर भी हनुमान् तथा राम के आग्रह के कारण विभीषण को शरण मिलना; राम द्वारा विभीषण का अभिषेक; प्रायोपवेशन द्वारा समुद्र को विवश करने की विभीषण की मंत्रणा (सर्ग १७-१९) । शार्दूल द्वारा रावण को राम-सेना की सूचना मिलना; सुग्रीव

को अपनी ओर मिलाने के लिए रावण द्वारा शुक का भेजा जाना; शुक का बधन और राम द्वारा मुक्ति (सर्ग २०)।

सेतुबंध—तीन दिन के प्रायोपवेशन के बाद राम का समुद्र पर ब्रह्मास्त्र प्रयोग के लिए तत्पर होना। समुद्र की विनय तथा द्रुमकुल्य का ब्रह्मास्त्र द्वारा विध्वंस। सागर के कथन से नल द्वारा सेतुबध और सेना का संतरण (सर्ग २१-२२)। लंका में अपशकुन तथा शुक का रावण का समाचार देना (सर्ग २३-२४)।

शुक-सारण-शार्दूल—रावण-गुप्तचर शुक और सारण का विभीषण द्वारा बधन और राम द्वारा मुक्ति। उनका रावण को समाचार देना। शार्दूल का रावण द्वारा भेजा जाना, उसका बधन, मुक्ति और समाचार देना (सर्ग २५-३०)।

राम का मायामयशीश—विद्युज्जिह्व द्वारा निर्मित राम के मायामय शीश का सीता को दिखलाया जाना। सीता का विलाप तथा सरमा द्वारा रहस्योद्घाटन (सर्ग ३१-३३)। सरमा द्वारा सीता को रावण सभा का समाचार मिलना (सर्ग ३४)। माल्यवान् का रावण को समझाना, अपशकुन होने पर भी रावण का दृढ़ निश्चय होकर नगर के प्रवेश-द्वारों की रक्षा की आज्ञा देना (सर्ग ३५-३६)।

लंका का अवरोध—सुवेल पर्वत से राम का लंका-दर्शन (सर्ग ३७-३९)। सुग्रीव रावण-द्वन्द (सर्ग ४०)। लंका-वरोध तथा अंगद का दूत-कार्य (सर्ग ४१)

(२) युद्ध-प्रकरण (सर्ग ४२-११२)

शरपाश—रात्रि तक दोनों सेनाओं का युद्ध। अंगद द्वारा इंद्रजित् की पराजय। अदृश्य इन्द्रजित् द्वारा राम-लक्ष्मण का शरपाश में बधन (सर्ग ४२-४५)। रावण का सीता को पुष्पक

से भेजकर आहत राम-लक्ष्मण को दिखलाना। सीता-विलाप, त्रिजटा की सान्त्वना (सर्ग ४६-४८)। जगकर राम का लक्ष्मण के लिए विलाप। हनुमान द्वारा विशल्य-औषधि को लाने के लिए सुषेण का प्रस्ताव। गरुड का राम-लक्ष्मण को स्वस्थ करना (सर्ग ४९-५०)।

द्वन्द्व-युद्ध—धूम्राक्ष, वज्रदंष्ट्र, अकंपन तथा प्रहस्त का वध। रावण-लक्ष्मण द्वन्द्व युद्ध, लक्ष्मण का आहत होना, मुष्टिप्रहार से हनुमान् का रावण को मूर्च्छित करना। राम-रावण-युद्ध, रावण की पराजय और लज्जित होकर लौटना (सर्ग ५१-५९)।

कुंभकर्ण वध—कुंभकर्ण का जागरण (सर्ग ६०); विभीषण द्वारा राम से कुम्भकर्ण निद्रा की कथा का उल्लेख (सर्ग ६१)। कुंभकर्ण की रावण को भर्त्सना। कुंभकर्ण-सुग्रीव-द्वन्द्व। राम द्वारा कुंभकर्ण-वध। रावण-विलाप (सर्ग ६२-६८)।

द्वन्द्व-युद्ध—रावण के चार पुत्रों का (नरांतक, देवान्तक, त्रिशिर, अतिकाय) तथा दो भाइयों का (महोदर और महापार्श्व) वध। रावण-विलाप; इन्द्रजित् का अदृश्य होकर युद्ध करना तथा राम और लक्ष्मण को व्यथित करना (सर्ग ६९-७३)।

लंकादहन—हनुमान् का औषधिपर्वत लाकर आहतों तथा राम लक्ष्मण को स्वस्थ करना (सर्ग ७४)। रात्रि में वानरों द्वारा लंकादहन (सर्ग ७५)। कम्पन, कुंभ, निकुंभ तथा मकराक्ष का वध (सर्ग ७६-७९)।

इन्द्रजित्-वध—यज्ञ करके इन्द्रजित् का युद्धारम्भ (सर्ग ८०)। मायामय सीता का वानर सेना के सन्मुख वध। राम-विलाप तथा लक्ष्मण द्वारा सान्त्वना (सर्ग ८१-८३)। विभीषण द्वारा मायामय सीता का रहस्योद्घाटन तथा निकुंभिला में इन्द्रजित-यज्ञ-ध्वंस का परामर्श; सेना सहित लक्ष्मण का यज्ञ-ध्वंस तथा इन्द्रजित-वध करना (सर्ग ८४-९०)। सुषेण द्वारा लक्ष्मण की चिकित्सा

(सर्ग ९१)। रावण-विलाप, सुग्रीव का रावण को सीता-वध से रोकना (सर्ग ९२)।

विभिन्न युद्ध—विरूपाक्ष, महोदर तथा महापार्श्व का वध (सर्ग ९३-९८) राक्षसियों का विलाप (सर्ग ९४)।

रावण-वध—रावण द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लगना तथा हनुमान् द्वारा महोदय पर्वत से औषध लाना (सर्ग ९९-१०१)। इन्द्र-रथ का मातलि सहित भेजा जाना; राम-रावण-युद्ध का आरम्भ (सर्ग १०२-१०४)। अगस्त्य का राम को आदित्यहृदय नामक स्तोत्र सिखाना (सर्ग १०५); सात दिन के युद्ध के बाद ब्रह्मास्त्र से रावण-वध (सर्ग १०६-१०८)। विभीषणादि का विलाप; रावण की अन्त्येष्टि (सर्ग १०९-१११)। विभीषण का अभिषेक तथा राम का सीता को बुला भेजना (सर्ग ११२)।

(३) अयोध्या का प्रत्यावर्त्तन(सर्ग ११३-१२८)।

अग्निपरीक्षा—राम का सीता को अस्वीकार करना (सर्ग ११३-११५)। लक्ष्मण द्वारा निर्मित चिता में सीता का प्रवेश (सर्ग ११६)। देवताओं द्वारा राम की विष्णुरूप में पूजा (सर्ग ११७)। अग्नि द्वारा सीता का राम को समर्पण (सर्ग ११८)। शिव द्वारा प्रशंसा; दशरथ की शिक्षा। मृत वानरों का इन्द्र द्वारा जीवित किया जाना। विभीषण का यात्रा के लिए पुष्पक प्रस्तुत करना। वानरों को दान दिया जाना (११९-१२२)।

वापसी यात्रा—आकाशमार्ग से राम का विभिन्न स्थानों का वर्णन करना। किष्किंधा में वानर-पत्नियों का साथ लेना। भरद्वाज से भेंट (सर्ग १२३-१२४)। हनुमान् द्वारा गुह और भरत को आगमन का समाचार देना (सर्ग १२५-१२६)।

अयोध्या-प्रवेश—अयोध्यावासियों सहित भरत और शत्रुघ्न का राम से मिलन; सब का पुष्पक पर चढ़ना; नन्दिग्राम में भरत का राम को शासन सौंपना; पुष्पक का कुबेर

के पास लौटाया जाना (सर्ग १२७)। रामाभिषेक; राम-राज्य-वर्णन; फलस्तुति (सर्ग १२८)।

ख. युद्ध कांड का विश्लेषण

तीनों पाठों में विभिन्नता

४७५. अन्य कांडों की अपेक्षा युद्धकांड के तीनों पाठों में कहीं अधिक अन्तर पाया जाता है। दाक्षिणात्य पाठ की निम्नलिखित सामग्री का गौडीय में नितान्त अभाव है,

(१) **सर्ग १०-१५**—रावण की दूसरी सभा की घटनाओं का वर्णन। इसकी कुछ सामग्री (अर्थात् सर्ग १०-१४ और १५) पश्चिमोत्तरीय पाठ में मिलती है (दे० प० रा० ५, सर्ग ७६, ८७ और ८६)।

(२) **सर्ग २० और २४**—गुप्तचरों शार्दूल तथा शुक का वृत्तान्त जो २५ वें सर्ग के वृत्तान्त के अनुकरण पर लिखा गया है। ये सर्ग पश्चिमोत्तरीय पाठ में भी नहीं मिलते हैं।

(३) **सर्ग २२**—द्रुमकुल्य का ब्रह्मास्त्र द्वारा विध्वंस। यह वृत्तान्त पश्चिमोत्तरीय पाठ में भी मिलता है (दे० प० रा० ५, ६६)। शेष निम्नलिखित सामग्री गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय दोनों पाठों में नहीं मिलती है,

(४) **सर्ग २३**—युद्ध के पूर्व लंका में अपशकुन (**निमित्तानि**)।

(५) **सर्ग ४० तथा ४१, १-१०**—सुग्रीव-रावण-द्वन्द।

(६) **सर्ग ५३-५४**—अंगद-वज्रदंष्ट्र-युद्ध।

(७) **सर्ग ६०, ८-१२**—रावण के विरुद्ध अनारण्य, वेदवती, उमा नन्दीश्वर, रंभा तथा पंजिकस्थला के शापों का उल्लेख।

(८) **सर्ग १०५**—अगस्त्य का राम को आदित्यहृदय स्तोत्र सिखाना।

(९) **सर्ग १२३, २०**—सेतु पर शिव-प्रतिष्ठा का निर्देश।

(१०) **सर्ग १२३, २३-३८**—सीता के अनुरोध से किष्किंधा में वानर-पत्नियों का पुष्पक में साथ लेना।

४७६. इससे स्पष्ट है कि उदीच्य पाठ से अलग हो जाने के पश्चात् दाक्षिणात्य पाठ में पर्याप्त मात्रा में प्रक्षेप किए गए हैं। दूसरी ओर अन्य पाठों में बहुत सी सामग्री मिलती है जिसका उल्लेख दाक्षिणात्य पाठ में नहीं किया गया है। निम्नलिखित वृत्तान्त केवल गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ में मिलते हैं—

(१) **निकषा-वाक्यम्**—निकषा अपने पुत्र विभीषण से अनुरोध करती है कि वह रावण को समझावे (दे० गौ० रा० ५, ७६ तथा प० रा० ५, ७५)।

(२) **रावण-सभा**—केवल एक बार होती है लेकिन इसके वर्णन में गौडीय पाठ मे सात नए सर्ग जोड़ दिए गए हैं। रावण का विभीषण पर पादप्रहार करने का भी उल्लेख किया गया है (दे० गौ० रा० ५, सर्ग ८१-८७ तथा प० रा० ५, सर्ग ८१-८६, ८६ और ६०, १-२८)।

(३) **दशरथ-सागर की मैत्री का वर्णन**—(दे० गौ० रा० ५, ६४, २१-२२ तथा प० रा० ५, ६६, ४६ ६८)।

(४) **रावण-मंदोदरी-संवाद**—प्रहस्त-वध के पश्चात् मदोदरी रावण से अनुरोध करती है कि वह युद्ध न करे क्योंकि राम मनुष्य नहीं हैं (दे० गौ० रा० ६, ३३ तथा प० रा० ६, ३५)।

(५) **रावण-कुंभकर्ण-संवाद**—नारद ने कुंभकर्ण से विष्णु द्वारा रावण-वध का रहस्य प्रकट किया था। नारद के इस कथन का उल्लेख कर कुंभकर्ण रावण से युद्ध न करने का अनुरोध करता है। रावण विष्णु द्वारा अपना वध तथा फलस्वरूप परम पद प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करता है (दे० गौ० रा० सर्ग ४०-४१ तथा प० रा० सर्ग ४१-४२)।

(६) **कालनेमि-वृत्तान्त**—हिमालय यात्रा के वर्णन के अन्तर्गत हनुमान् द्वारा कालनेमि-वध, गंधर्वों से युद्ध तथा रावण के भेजे हुए राक्षसों का वध (दे० गौ० रा० सर्ग ८२, १४२ आदि; सर्ग ८३ और ८४; प० रा० सर्ग ८१)।

४७७. दो वृत्तान्त केवल गौडीय पाठ में ही पाए जाते हैं--

(१) **विभीषण की कैलास-यात्रा**—विभीषण रावण से अगल होने के बाद पहले कैलास पर अपने भाई वैश्रवण से मिलने जाता है। वहा वैश्रवण तथा शिव दोनों विभीषण को राम की शरण लेने का परामर्श देते हैं (दे० गौ० रा० ५, ८६, ५-४२)।

(२) **हनुमान-भरत-संवाद**--भरत हिमलाय की यात्रा करने वाले हनुमान् पर बाण चलाने के लिए तत्पर हैं, लेकिन हनुमान् अपना परिचय देने के बाद लका का समाचार सुनाते हैं (गौ० रा० ६, ८२, ६० आदि)।

४७८. अंत में उस सामग्री का उल्लेख करना है जो केवल पश्चिमोत्तरीय पाठ में मिलती है—

(१) **विभीषण-निकषा-संवाद**—रावण से अलग होने के बाद विभीषण अपनी माता के यहाँ जाकर सभा में घटी हुई बातों का वर्णन करता है (दे० प० रा० ५, ६१, ४ ६२)। गौडीय पाठ मे विभीषण की निकषा से भेंट का उल्लेख मात्र किया गया है (दे० गौ० रा० ५, ८६, ४)।

(२) **समुद्र**—का राम और लक्ष्मण को एक कवच और अस्त्र प्रदान करना। रावण के मंत्रियों का रावण को विजय का आश्वासन देना (दे० प० रा० ५, सर्ग ६६ और १००)।

(३) **नारद-वाक्य**—नागपाश के अवसर पर नारद का आना और राम को उनके नारायणत्व का स्मरण दिलाना (दे० प० रा० ६, २७, ७-४१)।

(४) **कुंभकर्ण-वाक्य**—रणभूमि में विभीषण से मिलकर कुंभकर्ण उसकी राम की शरण लेने की दूरदर्शिता की प्रशंसा करता है (दे० प० रा० ६, ४६, ८२-९१)।

(५) **केश-ग्रहण**—विभीषण के कहने पर वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुँचकर उसका ध्यान भग करने में असमर्थ हैं। इस पर अगद मदोदरी के केशों को खींच कर उसे रावण के पास ले आता है, जिससे रावण उत्तेजित हो जाता है और फलस्वरूप उसका यज्ञ समाप्त नहीं हो पाता है (दे० प० रा० ६, ८२)।

प्रक्षेप.

४७९. तीनों पाठों की उपर्युक्त विभिन्नता में गायकों की प्रक्षेप जोड़ने की प्रवृत्ति का ज्वलंत उदाहरण मिलता है। इन भिन्न-भिन्न पाठों के प्रक्षेपों के अतिरिक्त जो सामग्री तीनों पाठों में मिलती है इसका भी बहुत कुछ अंश प्रक्षिप्त है। यहाँ पर कथानक के दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण प्रक्षेपों का उल्लेख किया जाता है।

सर्ग २३ ४०—**आदिरामायण** में सेतुबध के बाद अंगद के दूतकार्य का वर्णन मिलता था, डा० याकोबी का यह अनुमान निर्मूल नहीं कहा जा सकता है[१]। २३ वें सर्ग के कुछ श्लोक (२-१३) ४१ वें सर्ग में दुहराए जाते हैं (११-२२)। यदि इन दोनों के बीच की सामग्री हटा दी जाए तो आधिकारिक कथा-वस्तु के किसी आवश्यक अश का अभाव नहीं प्रतीत होता। इन सर्गों में गुप्तचरों के वृत्तान्त की पुनरावृत्ति पाई जाती है तथा राम के मायामय शीश की कथा भी ८१ वे सर्ग के मायामय सीता-वध का अनुकरण मात्र ही है।

---

१. दे० एच० याकोबी: इस रामायण पृ० ४३।

४८०. **गरुड का आगमन**—४६ वें सर्ग में शरपाश में बद्ध राम के जगने का उल्लेख किया गया है। अतः ५० वें सर्ग का वृत्तान्त अनावश्यक है। इसके अनुसार राम-लक्ष्मण दोनों मूर्च्छित होकर पड़े हुए हैं, और गरुड के आगमन से पाश से मुक्त किए जाते हैं।

४८१. **रावण का लक्ष्मण तथा राम से युद्ध**—५६ वां सर्ग अनेक कारणों से प्रक्षिप्त माना जाता है।

अकंपन तथा नरांतक के वध का उल्लेख, क्रमशः ५६ वें तथा ५८ वें सर्ग में किया गया है, फिर भी प्रस्तुत सर्ग में दोनों को जीवित कहा गया है। लक्ष्मण के शक्ति लगने का वृत्तान्त १०० वें सर्ग का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त इसमें राम रावण से युद्ध करते हैं, यद्यपि आगे चलकर राम के प्रथम बार रावण से युद्ध करने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है (दे० सर्ग १००, ४६-५२)।

४८२. **हनुमान् की हिमालय-यात्रा**—५०वें सर्ग में सुषेण हनुमान् को औषधि ले आने के लिए हिमालय भेज देने का प्रस्ताव करता है। लेकिन गरुड के आगमन से इसकी आवश्यकता नहीं होती। इस स्थल के अतिरिक्त हनुमान् की यात्रा का दो बार वर्णन किया गया है, १०१ वें तथा ७४वें सर्ग में। ये दोनों सर्ग प्रक्षिप्त हैं।

१०१ वें सर्ग को हटाने से, १०० वा सर्ग सुगमता से १०२ वें सर्ग से मेल खाता है[1]। इसके अतिरिक्त १०० वें सर्ग के कुछ श्लोक १०२ वें सर्ग में दुहराए जाते हैं जो १०१ वें सर्ग के प्रक्षिप्त होने का निर्देश माना जा सकता है। ७४ वें सर्ग के कुछ अंश त्रिष्टुभ छंद में लिखे गए हैं।

लेकिन इन दोनों सर्गों के प्रक्षिप्त होने का सब से महत्त्वपूर्ण तर्क हनुमान् के समुद्रलंघन का वर्णन है (दे० रा० ५, १)। हिमालय की यात्रा इस लंघन से कहीं अधिक असाधारण है, फिर भी इस कार्य की कठिनाई का कुछ भी वर्णन नहीं किया गया है। यदि समुद्रलंघन तथा हिमालय-यात्रा का वर्णन दोनों एक के ही द्वारा रचित होते तो हिमालय-यात्रा को अधिक महत्त्व दिया जाता।

---

१. १००, ५५ के बाद १०२ वां सर्ग आना चाहिए। दे० एच० याकोबी: वही, पृ० ४५।

४८३. सर्ग ११६, ११९, १२०

सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन बाद में स्पष्टतया बहुत कुछ बढ़ाया गया है। राम द्वारा अस्वीकृत किये जाने पर सीता लक्ष्मण से चिता को तैयार करने के लिए कहती हैं, तथा शपथ खाकर अग्नि में प्रवेश करती हैं (सर्ग ११६)। अनन्तर देवता आकर राम की विष्णु रूप में स्तुति करते हैं (सर्ग ११७)। इस समस्त सर्ग में अग्निपरीक्षा का निर्देश मात्र भी नहीं किया गया है। अगले सर्ग में अग्निपरीक्षा का पुनः वर्णन मिलता है। अग्नि प्रकट होकर सीता के पातिव्रत्य का साक्ष्य देते हैं, तथा राम सीता को स्वीकार करते हैं (सर्ग ११८)। इसके बाद के दो सर्ग (११९,१२०) अनावश्यक प्रतीत होते हैं, और प्रायः प्रक्षिप्त माने जाते हैं[1]।

४८४. अग्निपरीक्षा (सर्ग ११६-११८)

ऐसा प्रतीत होता है कि **आदि रामायण** में सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं पाया जाता था। इस अनुमान का आधार मुख्यतया अन्य रामकथाओं में मिलता है, अतः इसका विश्लेषण अगले परिच्छेद में किया गया है (दे० अनु० ५०६)।

४४५. साठ से अधिक सर्गों में जो युद्धों तथा द्वन्द्वयुद्धों का विस्तृत वर्णन किया गया है इसमें इतनी पुनरावृत्ति और नीरसता पाई जाती है, कि यह समस्त सामग्री वाल्मीकि जैसे महान् कवि की रचना नहीं हो सकता है। इसके अतिरिक्त इसमें कई स्थलों पर विरोध भी मिलता है। सर्ग ९३-९८ में विरूपाक्ष, महापार्श्व तथा महोदय के युद्ध का वर्णन किया गया है, लेकिन ४३ वें सर्ग में विरूपाक्ष के वध का तथा ७० वें सर्ग में महापार्श्व और महोदर के वध का उल्लेख किया गया था।

---

१. दे० महाराष्ट्रीय : श्री रामायण समालोचना, भाग १, पृ० २३९ आदि।

२

युद्धकांड का विकास

४८६. **वाल्मीकि रामायण** के युद्धकांड से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री में आगे चलकर बहुत कुछ परिवर्द्धन किया गया है, तथा सर्वथा नवीन सामग्री भी जोड़ दी गई है। फिर भी आधिकारिक कथा-वस्तु का कोई विकास नहीं हुआ है। अधिकांश परिवर्द्धन पुनरावृत्ति मात्र ही है और इसमें बहुत उपेक्ष्य सामग्री भी मिलती है। अतः यहाँ पर कुछ अपेक्षाकृत महत्त्व-पूर्ण तथा रोचक वृत्तान्तों का कथानक के क्रमानुसार उल्लेख किया जाता है।

क. वि भी ष ण की श र ण ग ति

कंबनकृत **तामिल रामायण** में विभीषण रावण से नारायणावतार राम युद्ध न करने का अनुरोध करता है तथा इसी प्रसंग में नृसिंहावतार की कथा सुनाता है (६-१)।

जावा के **रामायण काकाविन** में विभीषण शंकर की पूजा कर रहा था और इसलिए देर से रावण की सभा में पहुँचता है। **सेरी राम** के पातानी पाठ में बाँधा हुआ विभीषण रावण की आज्ञानुसार समुद्र में फेंका जाता है, और मकर द्वारा बचाया जाकर हनुमान् से राम के पास लाया जाता है।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में विभीषण काक का रूप धारण कर राम की शरण में आता है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)। **रामायण काकाविन** में वह अपनी सेना के साथ राम के पास आता है। ऊपर इसका उल्लेख किया गया है कि **वाल्मीकि रामायण** के गौडीय पाठ में रावण से रुष्ट होने के बाद विभीषण पहले अपने भाई वैश्रवण से परामर्श करने के लिए कैलास जाता है।

ख. से तु बं ध

४८७. ऐसी अनेक रामकथाएं मिलती हैं जिनमें सेतु का उल्लेख नहीं किया गया है।

विमलसूरिकृत **पउमचरिय में** समुद्र नामक राजा नल द्वारा पराजित किया जाता है, अनन्तर सुवेल राजा की पराजय का भी वर्णन किया गया है (दे० पर्व ५४) । हेमचंद्रकृत **जैन रामायण** में राम लक्ष्मण सेनासहित आकाश मार्ग से लंका के पास पहुंचते हैं और नल-नील समुद्र तथा सेतु नामक राजाओं को पराजित करते हैं (सर्ग ७) । गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में भी राम और लक्ष्मण विमान से ही जाकर सेनासहित लंका के पास उतरते हैं (पर्व ६८,५२२) ।

अभिषेक नाटक के अनुसार जब राम बाण चलाने के लिए तैयार हैं उस समय वरुण दिखलाई देते हैं और समुद्र विभक्त हो जाता है जिससे राम की सेना समुद्रतल से पार उतरती है ।

पद्मपुराण के अनुसार राम ने समुद्र के तट पर शिव से सहायता के लिए प्रार्थना की । प्रसन्न होकर शिव ने अजगवधनुष को दे दिया । राम ने उस धनुष को समुद्र में फेंक दिया और उसी पर समस्त सेना ने समुद्र को पार किया (पातालखंड, अध्याय ११२) ।

बिहोर रामकथा में हनुमान् अपनी पूंछ बढ़ाते हैं और राम तथा लक्ष्मण उसी पर समुद्र पार करते हैं । **राम कियेन** के अनुसार सीता की खोज में हनुमान् ने इसी तरह अपने साथियों को एक नदी के उस पार उतारा था (अध्याय २३) । सेतु के स्थान पर हनुमान् की पूंछ का उल्लेख पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ और १३ में भी मिलता है; तथा कम्बोदिया में इसके विषय में एक चित्र भी सुरक्षित है[1] ।

४८८. **वाल्मीकि रामायण** के तीनों पाठों में राम तीन दिनों तक प्रायोपवेशन करने के पश्चात् समुद्र में बाण चलाते हैं, और समुद्र प्रकट होकर नल द्वारा सेतु बनवाने का उपाय बताता है । दाक्षिणात्य तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में समुद्र के प्रकट होने के पहले राम ब्रह्मास्त्र भी धनुष पर रखते हैं और बाद में इससे द्रुमकुल्य को नष्ट कर देते हैं । इसका उल्लेख **अध्यात्म रामायण** में भी मिलता है (दे० ६, ३, ८१) ।

पद्मपुराण के अनुसार राम अपने बाणों से समुद्र को सोख लेते हैं तथा सागर के विनय करने पर वारुणास्त्र से पुनः जल भर देते हैं (उत्तर-खंड, २६६) । दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में भी रामबाण के कारण समुद्र

१. दे० बुलटिन एकोल फ्रांज़े एक्सट्रेम ओरियन : भाग १२ पृ० ४७ ।

के सूख जाने का उल्लेख है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)। **रामायण काकाविन** के अनुसार राम बाण के कारण करोड़ों मछलियाँ मर जाती हैं तथा समुद्र के विनय करने पर राम उन्हें पुनः जिलाते हैं (दे० सर्ग १५)।

महाभारत के रामोपाख्यान में राम समुद्र में बाण नहीं चलाते हैं। सागर राम को स्वप्न में दिखाई देता है तथा नल द्वारा फेंके हुए पदार्थ न डूबने देने की प्रतिज्ञा करता है (दे० ३, २६७, ३२ आदि)। **स्कंदपुराण** के सेतुमाहात्म्य में भी इस प्रकार का वर्णन मिला है (दे० २ रा अध्याय)। **भागवत पुराण** में तीन दिनों तक उपवास करने के बाद राम समुद्र पर कोप प्रकट करते हैं तथा समुद्र राम की क्रोधपूर्ण दृष्टि से भयभीत होकर दिखलाई देता है (दे० ६,१०,१३)। **महानाटक** में भी राम के बाण चलाने का उल्लेख नहीं है (अंक ७)।

अद्भुत रामायण में लक्ष्मण क्रोध में आकर समुद्र में कूद पड़ते हैं तथा उनके शरीर के ताप से समुद्र सूख जाता है। अनन्तर राम सीता के लिए आँसू बहाकर समुद्र पुनः भर देते हैं (दे० सर्ग १६)।

४८६. **वाल्मीकि रामायण** मे समुद्र नल द्वारा प्राप्त किए हुए वर का उल्लेख करता है। (**पित्रादत्तवरः** दे० ६, २२, ४१) और नल स्वयं राम से कहता है कि मुझे अपने पिता विश्वकर्मा की सामर्थ्य प्राप्त है, इसलिए मैं समुद्र में सेतु बाँध सकता हू। विश्वकर्मा ने नल की माता को यह कहकर वर दिया है कि तुम्हारा पुत्र मेरे समान ही होगा—

मया तु सदृशः पुत्रस्तव देवि भविष्यति ॥४७॥
(सर्ग २२)

काश्मीरी रामायण, खोतानी रामायण तथा उत्तर भारत के एक वृत्तान्त मे वर के स्थान पर शाप का उल्लेख किया गया है। **काश्मीरी-रामायण** के अनुसार बल (नल) नामक वानर ने ऋषियों के कपड़े धोने अथवा पहनने के लिए किसी धोबी से अनुरोध किया था। धोबी के इनकार करने पर बल ने उसका पत्थर पानी में फेंक दिया। इस पर धोबी ऋषि के पास गया और ऋषि ने कहा कि जो कुछ नल पानी में फेंकेगा वह नाव के समान पानी पर तैरता रहेगा। वरुण ने राम को यह कथा सुना कर अंत में कहा कि यह वानर आपकी सेना में है (दे० युद्धकाड, नं० ३६ तथा पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३)। उत्तरभारत के एक वृत्तान्त के अनुसार वरुण के एक सामन्त ने प्रकट होकर कहा कि सुग्रीव की सेना में दो सेनापति विद्यमान

हैं जो शापवश न तो समुद्र के तल तक पहुँचने में समर्थ हैं और न उनके द्वारा फेंकी हुई वस्तुएं डूब सकती हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३)।

खोतानी रामायण में नंद नामक वानर राम से अपनी शाप की कथा सुनाता है। एक ब्राह्मण ने उसे शाप दिया था कि तुम पानी में मर जाओगे। अन्य ब्राह्मणों के अनुरोध करने पर उसने अपना शाप इस प्रकार बदल दिया—जो कुछ तुम पानी में फेंकोगे वह नहीं डूबेगा और तुम भी नहीं। **रामचरितमानस** में समुद्र ब्राह्मण के वेश में प्रकट होकर कहता है—

नाथ नील नल कपि दोउ भाई।
लरिकाई रिषि आसिप पाई॥
तिन्ह के परस किएं गिरि भारे।
तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥

(सुन्दरकांड, ५६, १-२)।

४६०. सेतु-निर्माण के समय की अनेक घटनाओं का उल्लेख बाद की राम-कथाओं में किया गया है। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में कार्य को शीघ्र ही समाप्त करने के लिए नल राम की आज्ञा से चार हाथ प्राप्त करता है (दे० पा० वृ० नं० १)। उस समय हनुमान् और नल के झगड़ा करने का भी बहुत से वृत्तान्तों में वर्णन मिलता है। **कृत्तिवास के रामायण** में झगड़े का कारण यह है कि नल हनुमान् द्वारा लाया हुआ पर्वत बायें हाथ से पकड़ता है। क्रुद्ध होकर हनुमान् एक ही बार में चार पर्वत ले आते हैं और नल इन्हें नहीं पकड़ सकता है; इसपर दोनों एक दूसरे पर अभियोग लगाने के लिए राम के पास जाते हैं।

सेरी राम के पातानी पाठ में कलह का कारण यह बताया गया है कि पेनिकर (नल) ने हनुमान् द्वारा लाये हुए पर्वत पैर से स्थान पर ढकेलता है। **तिब्बती रामायण** तथा श्याम के **राम कियेन** में भी इस झगड़े का उल्लेख किया गया है। एक अन्य वृत्तान्त में हनुमान् के जितने शरीर पर बाल हैं उतने पत्थर लाकर अकेले ही सेतु का निर्माण करते हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १४)। पंजाब में गिलहरी रामचंद्र की भक्त मानी जाती है। सेतु-बध के समय उसने पूंछ को हिलाकर बालू के कुछ कण सेतु पर फेंक दिए और पुरस्कार स्वरूप राम ने उसकी पीठ पर तीन रेखाएं खींचीं [1]। दक्षिण भारत की एक राम-कथा में गिलहरी समुद्र में डुबकी लगाकर और बालू में लुढ़क कर बालू सेतु पर ले जाती है (दे०

१. डब्लू क्रुक : पोपुलर रलिजियन ऐंड फोलक्लोर, भाग २, पृ० २४२।

पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १)। सीता की खोज के समय की गिलहरी के विषय में एक अन्य कथा का १६ वें अध्याय में उल्लेख किया गया है (दे० ऊपर अनु० ४२५)।

आनन्द रामायण में तथा अन्यत्र[1] भी ऐसा कथन मिलता है कि सेतु के पत्थर राम नाम के दो अक्षरों से ही अंकित किए गए थे जिससे पत्थरों का दृढ संयोग उत्पन्न हुआ था (दे० आ० रा० १, १०, १६६)।

४६१. सेतु-निर्माण की बाधाओं का भी वर्णन किया गया है। **सेतुबंध** (दे० सर्ग ७, ८) तथा **बालरामायण** (दे० अक, ८, ५२) में भी इसका उल्लेख किया गया है कि सेतु के पर्वत मछलियों द्वारा खाए जाते थे। हिंदेशिया, कम्बोदिया तथा श्याम के रामायणों में इसके विषय में अनेक कथाओं की कल्पना कर ली गई है।

सेरी राम में रावण का पुत्र गंगा महासुर (जो समुद्र की रानी गंगा महादेवी के गर्भ से उत्पन्न माना जाता है) मछलियों को सेतु नष्ट करने का आदेश देता है। इसपर हनुमान् समुद्र में अपनी पूँछ हिलाते हैं जिससे कीचड़ पंकिल हो जाने पर मछलियां ऊपर आ जाती हैं और वानरों द्वारा फंसाई जाती हैं। उस समय एक केकड़ा हनुमान् की पूँछ पकड़ना चाहता है लेकिन हनुमान् उसे पृथ्वी पर फेंक देते हैं। केकड़ा इतना बड़ा था कि समस्त सेना उसे खाकर तृप्त हुई। इसका उल्लेख **हिकायत महाराज रावण** में भी मिलता है।

सेरी राम के पातानी पाठ में सेतु-निर्माण के समय मछलियाँ अपनी रानी की आज्ञा से सेतु को नष्ट करने लगती हैं। हनुमान् रानी के पास जाकर उससे सेतु को पुनः बनवाते हैं तथा उसके पति की अनुपस्थिति में उससे पुत्र भी उत्पन्न करते हैं। **राम-कियेन** में रावण अपनी नागकन्या सुवर्णमच्छा को सेतु नष्ट करने के लिए भेजता है। सुवर्णमच्छा अपनी सेना के साथ ऐसा करती है। इसपर हनुमान् जाकर उससे सेतु पुनः बनवाते हैं तथा उससे एक पुत्र मच्छानु को भी उत्पन्न करते हैं। **राम जातक** में नागकन्याएं सेतु नष्ट करती हैं तथा हनुमान् आदि द्वारा लुभाए जाने पर उनके साथ क्रीड़ा करती हैं।

४६२. दाक्षिणात्य पाठ के अनुसार राम वापसी यात्रा में सीता को सेतु दिखला कर कहते हैं कि महादेव ने यहाँ मुझ पर अनुग्रह किया था—

---

१. दे० ई० मूर : दि हिन्दू पथेयोन, लन्दन १९१०, पृ० १९३।

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।

(दे० रा० ६, १२३, २०)

शिव-प्रतिष्ठा का यह निर्देश अन्य पाठो में नहीं पाया जाता है। बाद की राम-कथाओं में सेतुबंध के समय शिवप्रतिष्ठा का प्रायः उल्लेख किया गया है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि पहले राम द्वारा शिवप्रतिष्ठा युद्ध के पश्चात् ही मानी जाती थी। **नृसिंहपुराण** (अध्याय ५२), **कूर्मपुराण** (अध्याय २१), **सौर पुराण** (अध्याय ३०), **बृहद्धर्मपुराण** (पूर्वखंड, अध्याय २२) तथा **पद्मपुराण** (पाताल खंड, ११२, २२२) में केवल युद्ध के पश्चात् ही राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख किया गया है। **स्कंदपुराण** के सेतुमाहात्म्य और **कृत्तिवास के रामायण** में सेतुबंध के समय तथा युद्ध के पश्चात् दोनों बार इसका वर्णन किया गया है (अध्याय ७ और ४४)। युद्ध के बाद की शिवप्रतिष्ठा के साथ साथ हनुमान् के गर्व-निवारण का भी सेतुमाहात्म्य में वर्णन किया गया है। युद्ध के पश्चात् गंधमादन पर्वत पर जाकर राम दंडकारण्य से आए हुए मुनियों से पूछते हैं कि रावणवध का प्रायश्चित् किस तरह किया जाय। वे रामेश्वर लिंग की स्थापना का परामर्श देते हैं। इस पर राम हनुमान् को शिवलिंग ले आने के लिए कैलास भेज देते हैं। वहां पहुंचकर हनुमान को उसे प्राप्त करने के लिए तपस्या करनी पड़ती है। मुहूर्त्त बीत जाने के भय से मुनि सैकत लिंग स्थापित करने का अनुरोध करते हैं। प्रतिष्ठा के पश्चात् पहुँचकर हनुमान अत्यन्त दुःखित हैं। राम हनुमान् को स्थापित लिंग उठाने की आज्ञा देते हैं लेकिन हनुमान् इसमे असमर्थ हैं और मूर्च्छित होकर गिर जाते हैं। बाद में हनुमान् अपने लाए हुए लिंग को रामेश्वरलिंग के उत्तर में स्थापित करते हैं। इस प्रकार की कथा **आनन्द रामायण** में भी मिलती है, लेकिन इसमें इसका वर्णन युद्ध के पूर्व ही रखा गया है (दे० आ० रा० १, १०)।

अर्वाचीन रामकथाओं में शिव-प्रतिष्ठा का वर्णन प्रायः सेतुबंध के अवसर पर ही रखा गया है (दे० अध्यात्म रामायण, रामचरित-मानस आदि)।

४६३. **खोतानी रामायण** में सेना के पार होने के बाद सेतु को नष्ट किया जाता है जिससे कोई भी युद्ध छोड़कर भाग न सके। **स्कंद पुराण** के दो स्थलों पर विभीषण को सेतु को भग करने की राम से प्रार्थना

का उल्लेख किया गया है। सेतुमाहात्म्य में विभीषण का कहना है कि सम्भवतः अन्य राजा भी आकर लंका का अवरोध करेंगे (दे० अध्याय ३०)। नागरखंड में विभीषण कहता है—'जिज्ञासा से प्रेरित होकर मनुष्य लंका देखने आएंगे और मेरी आज्ञा का तिरस्कार करके राक्षस उन्हें खा जाएंगे' (दे० अध्याय १०१)। विभीषण की प्रार्थना सुनकर राम ने धनुष की कोटि से सेतु को भंग कर दिया। इसका निर्देश **आनन्द रामायण** में भी मिलता है (दे० १, १२, ४८)। **कृत्तिवास के रामायण** में सागर युद्ध के पश्चात् राम से प्रार्थना करता है कि मेरा बंधन अब तोड़ दिया जाए। राम की आज्ञा से लक्ष्मण सेतु का भंजन करते हैं। **पद्म पुराण** के सृष्टिखंड में भी सेतुभंग का उल्लेख है (दे० अध्याय ३८)।

महानाटक (१४, ६६), **राम कियेन** तथा कई रामकथाओं में (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० २, ३ और ४) राम सेतु होकर पैदल ही अयोध्या लौट जाते हैं। पार करने के बाद राम सेतु को भंग कर देते हैं कि राक्षस उनका पीछा न कर सकें (पा० वृ० नं० २)। सेतुभंग के एक अन्य कारण की भी कल्पना की गई है। राम ने इसी लिए ऐसा किया कि कोई भी लंका से सोना न चुरा सके (दे० पा० वृ० नं० ४)।

ग. राम का मायाशीश

४६४. युद्धकांड के प्रक्षेपों पर विचार करते समय इसका उल्लेख किया गया है कि राम के मायामय शीश का वृत्तान्त मायामय सीता-वध का अनुकरण मात्र प्रतीत होता है और सम्भवतः इसका वर्णन **आदि रामायण** में न हो। **महाभारत** के रामोपाख्यान से लेकर **अध्यात्म रामायण** और **राम चरितमानस** तक बहुत सी राम-कथाओं में इस वृत्तान्त का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता है।

वाल्मीकि रामायण में रावण की आज्ञा से विद्युज्जिह्व राम का एक मायामय शीश तथा धनुष बनाता है। उन्हें देखकर सीता विलाप करने लगती है और सरमा उसका रहस्योद्घाटन करती है (दे० रा० ६, ३१-३३)।

अभिषेक नाटक (अंक ५), **महानाटक** (अंक १०), जावा के **रामायण काकाविन** (सर्ग १७) तथा **रामरहस्य** में सीता को राम तथा लक्ष्मण दोनों के मायामय शीश दिखालाए जाते हैं। **महानाटक** में

रावण इसके अन्तर एक अन्य प्रयोग करता है। अपने दस सिर हाथ में रखकर वह रामके रूप में सीता के पास आता है। हिंदेशिया के **सेरी राम** में इस वृत्तान्त का किंचित् परिवर्तित रूप मिलता है। रावण के निरन्तर आग्रह करने से विवश होकर सीता इस शर्त पर उसकी पत्नी बन जाने का वचन देती हैं कि रावण राम तथा लक्ष्मण को मार कर उनके शीश दिखला सके। इसपर रावण दो नौकरों को बुलाकर उनके सिर काटता है और इनपर मुकुट रखकर दोनों को सीता के पास ले जाता है। सीता हताश होकर रावण से कहती है कि मेरे स्नान के बाद आओ। अनन्तर वह कटार से आत्महत्या करना चाहती है, लेकिन त्रिजटा रहस्य का उद्घाटन करती है और सीता को विश्वास दिलाने के लिए राम के पास जाकर उनके कपड़े का एक टुकड़ा सीता के पास ले आती है।

घ. हनुमान् का ओषधि पर्वत ले आना

४६५. राम के मायामय शीश के वृत्तान्त की भाँति हनुमान् की औषध ले आने के लिए हिमालय-यात्रा का वर्णन भी सम्भवतः **आदि रामायण** में विद्यमान न था। इसका उल्लेख प्रस्तुत अध्याय के प्रथम परिच्छेद में किया गया है। **महाभारत** के रामोपाख्यान में भी इस वृत्तान्त का निर्देश नहीं मिलता। राम तथा लक्ष्मण एक बार इंद्रजित् के शरपाश द्वारा बाँधे जाते हैं तथा विभीषण प्रज्ञास्त्र से दोनों की चिकित्सा करता है (दे० २७३)। रामोपाख्यान में लक्ष्मण को शक्ति लगने का वृत्तान्त भी नहीं पाया जाता है।

प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** में राम तथा लक्ष्मण के इन्द्रजित् के शरपाश द्वारा बध जाने पर सुषेण औषध ले आने के लिये हनुमान् को हिमालय भेजने का प्रस्ताव करता है लेकिन गरुड के आगमन से हनुमान् के जाने की आवश्यकता नहीं होती (दे० सर्ग ५०)।

कुंभकर्ण-बध के बाद अदृश्य होकर इंद्रजित् पुनः राम-लक्ष्मण को आहत करता है तथा बहुतों का बध भी करता है। जाम्बवान् के कहने पर हनुमान् रात को हिमालय जाकर ओषधिपर्वत ले आते हैं और बाद में पुनः ले जाते हैं (दे० सर्ग ७४)।

इंद्रजित् बध के पश्चात् रावण लक्ष्मण को शक्ति से आहत करता है जिसपर हनुमान् पुनः हिमालय जाकर महोदय पर्वत ले आते हैं (सर्ग

१०१)। इस यात्रा के वर्णन में गौडीय पाठ में भरत-हनुमान्-संवाद दिया गया है (दे० गौ० रा० ६, ८२, ६० आदि) और गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय दोनों पाठों में कालनेमि-वृत्तान्त का वर्णन किया है, जिससे **रामचरित मानस** के पाठक भलीभाँति परिचित हैं। यह **अध्यात्म रामायण,** तेलगू **द्विपाद रामायण,** और बँगाली **कृत्तिवास कृत रामायण** में भी मिलता है।

४६६. **वाल्मीकि रामायण** की उपर्युक्त सामग्री की अन्य रामकथाओं में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है। शरपाश के विषय में कई वृत्तान्तों की विशेषता यह है कि राम इससे नहीं बाँधे जाते हैं, उदाहरणार्थ : **पउमचरिय,** कम्बनकृत **तामिल रामायण** तथा **राम कियेन**।

भरत-हनुमान संवाद का उल्लेख **महानाटक** (अंक १३), **कृत्तिवास रामायण, काश्मीरी रामायण** (नं० ४५), **सूरसागर, गीतावली, रामरहस्य** आदि में किया गया है। **काश्मीरी रामायण** मे भरत हनुमान् को एक बाण से नीचे गिराते हैं और बाद मे हनुमान् तथा पर्वत को अपने बाण पर रखकर लंका भेज देते हैं।

पउमचरिय म विशल्यौषधि का मानवीकरण किया गया है। लक्ष्मण को शक्ति लगने के बाद एक विद्याधर राम से कहता है कि द्रोणमेघ की कन्या विशल्या के स्नान-जल से ही लक्ष्मण की चिकित्सा हो सकती है। इस पर हनुमान्, भामडल तथा अंगद अयोध्या जाकर भरत को सीताहरण तथा युद्ध का समाचार सुनाते हैं तथा विशल्या के साथ लंका लौट आते हैं। विशल्या की चिकित्सा से स्वस्थ होकर लक्ष्मण उसके साथ विवाह भी करते हैं (दे० पर्व ६४-६५)।

महानाटक (अंक १३) तथा उत्तरभारत के एक वृत्तान्त में (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३)। हनुमान् रावण की शक्ति रोक लेते हैं, इस पर ब्रह्मा रावण के अनुरोध से नारद को हनुमान् का ध्यान आकर्षित करने के लिए रणभूमि में भेज देते हैं। सूर्योदय के पहले लंका में पहुँचने के लिए हनुमान् का सूर्य को अपनी कांख में रखने का भी उल्लेख मिलता है (दे० कृत्तिवास रामायण)।

वाल्मीकि रामायण में सुषेण एक वानर-सेनापति है, जो वैद्य भी है (दे० सर्ग ५०, ६१ और १०१)। **महानाटक** में सुषेण रावण का वैद्य

माना गया है, जो लंका से बुलाया जाता है (दे० अंक १३) । उत्तरभारत के एक वृत्तान्त के अनुसार भी लंका के एक वैद्य ने ओषधि-पर्वत को ले आने का परामर्श दिया था (दे० पा० वृ० नं० १३, पृ० ३७७)। **खोतानी-रामायण** में जीवक, जातक के प्रसिद्ध बौद्ध वैद्य को बुलाया जाता है ।

४६७. हिंदेशिया की राम-कथा के अनुसार औषध तैयार करने के लिए एक चौके की आवश्यकता थी, जो रावण के पास था। **सेरी राम** में हनुमान् हरा भ्रमर बनकर उसे रावण के महल से ले आते हैं। **सेरी राम** के पातानी पाठ के अनुसार हनुमान् पिस्सू बनकर एक दासी की साड़ी पर बैठकर रावण के महल में प्रवेश करते हैं। वहाँ रावण तथा मंदोदरी के बाल एक गांठ में बाँध कर वह पत्थर लेकर राम-सेना के पास लौटते हैं ।

राम-कियेन में हनुमान तीन बार ओषधि-पर्वत ले आते हैं। प्रथम बार कुंभकर्ण की शक्ति से आहत लक्ष्मण रणभूमि में मुर्च्छित होकर गिर जाते हैं। उनकी चिकित्सा के लिए औषध के अतिरिक्त पाँच नदियों के जल की भी आवश्यकता होती है, जो भरत के पास है। हनुमान् ओषधि-पर्वत और जल दोनों को ले आते हैं। इसके बाद लक्ष्मण और दो बार आहत किये जाते हैं, एक बार इंद्रजित् द्वारा और दूसरी बार रावण द्वारा। अंतिम बार औषध के अतिरिक्त औषध तैयार करने के लिए निम्न-लिखित वस्तुएं आवश्यक मानी जाती हैं और हनुमान् उन्हें ले आते हैं— ईश्वर की धेनु का गोबर, कालनाग का चौका और रावण का बेलन। रावण का बेलन ले आते समय हनुमान् रावण और मंदोदरी के बाल एक गांठ में बाँध देते हैं। **राम जातक** मे हनुमान सीता की खोज में इस प्रकार का उत्पात करते हैं (दे० ऊपर अनु० ४७१) ।

ङ. कुंभकर्ण-वध

४६८. युद्धकांड के प्रारम्भ में कुंभकर्ण द्वारा सीता को लौटा देने के परामर्श का वृत्तान्त **महाभारत** के रामोपाख्यान में नहीं मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि पहिले **रामायण** में भी इसका उल्लेख नहीं किया गया था, क्योंकि कुंभकर्ण के जागरण के बाद यूपाक्ष उसको सीताहरण, लंका-दहन, लंकावरोध आदि का समाचार देता है ।

राम किरोन में कुंभकर्ण अपने मोक्ष्वशक्ति नामक भाले की शक्ति को जगाने के लिए एक यज्ञ करता है, जिसे हनुमान् तथा अंगद भंग कर देने में सफल होते हैं (दे० अध्याय २८) ।

महाभारत के रामोपाख्यान (दे० अध्याय २७९), **स्कंदपुराण** के सेतुमाहात्म्य (दे० अध्याय ४४) तथा **बिहोर राम-कथा** में लक्ष्मण कुंभकर्ण का वध करते हैं। **पद्मपुराण** (दे० पातालखंड, अध्याय ११२) तथा **बिहोर राम-कथा** में रावण-वध के पश्चात् ही कुंभकर्ण मारा जाता है।

कनारी **तोरावे रामायण** में कुंभकर्ण जीव-रत्न पहनता है जिससे वह अजेय बना है। विभीषण के कहने पर राम उस जीव-रत्न को छीनकर कुंभकर्ण का वध करते हैं (दे० युद्धकांड २८)।

महानाटक में हनुमान् कुंभकर्ण के शीश पर ऐसा प्रहार करते हैं कि वह हिमालय पर जाकर गिरता है। अनन्तर हनुमान् उसका कबंध पूंछ में लपेटकर आकाश में दूर तक फेंक देते हैं (दे० अंक ११)। कंबनकृत **तामिल रामायण** में राम स्वयं कुंभकर्ण का शीश समुद्र में फेंक देते हैं (दे० ६,१५)।

च. इंद्रजित् युद्ध

४६. **वाल्मीकि रामायण** में इंद्रजित् पाँच बार युद्ध करने आता है (दे० सर्ग ४४,७३,८०,८१-८४)। इन युद्धों में वह राम तथा लक्ष्मण को दो बार आहत करता है, राम-सेना के सामने एक माया सीता का शीश काटता है और निकुंभिला में अपने यज्ञ के भंग होने के बाद वह अंतिम युद्ध में लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है। मायासीता के वृत्तान्त को छोड़कर इंद्रजित् के युद्धों के वर्णन में कोई परिवर्त्तन नहीं किया गया है। **महानाटक** में लक्ष्मण इंद्रजित् का शीश राम के हाथों में फेंक देते हैं तथा **सेरी राम** में राम स्वयं इंद्रजित् का वध करते हैं। मायासीता-वध का वृत्तान्त **महाभारत** के रामोपाख्यान में नहीं पाया जाता है। गुणभद्रकृत जैन **उत्तरपुराण** (दे० ६८,६१२) तथा **आनन्द रामायण** (दे० १,११) में रावण स्वयं एक मायामय सीता का वध करता है। अन्यत्र **रामायण** के वृत्तान्त का ही अनुकरण किया गया है। **राम कियेन** में इस घटना का वर्णन इस प्रकार है। युद्ध से भाग जाने के कारण शुकसार को प्राणदंड की आज्ञा मिली थी। रावण ने उसे सीता का रूप धारण कर इंद्रजित् के रथ पर चढ़ने का आदेश दिया। रणभूमि में पहुँचकर इंद्रजित् ने लक्ष्मण का सामना किया, लेकिन सीता को देखकर लक्ष्मण को बाण चलाने का साहस

नहीं हुआ। इस पर इंद्रजित् ने लक्ष्मण से कहा कि युद्ध के मूलकारण सीता को ले जाओ और लंका को छोड़ दो। सीता को भेज देने के लिए लक्ष्मण के कहने पर इंद्रजित् ने कहा कि स्वयं सीता को तुम्हारे पास ले आना मेरे गौरव के विरुद्ध है और उसने हंसकर मायासीता का शीश काटकर उसे लक्ष्मण की ओर फेंक दिया। बाद में विभीषण ने रहस्य को प्रकट किया। शुकसार **वाल्मीकि रामायण** के गुप्तचरों शुक और सारण के नामों का विकृत रूप मात्र है। **अध्यात्म रामायण** में शुक के पूर्वजन्म की भी कथा दी गई है (दे० ६,५,३-२४)।

इंद्रजित्-वध के विषय में बाद की रामकथाओं में दो नवीन वृत्तान्तों का प्रायः उल्लेख किया जाता है, अर्थात् लक्ष्मण के उपवास का तथा सुलोचना इंद्रजित् की पत्नी का वृत्तान्त।

५००. **अध्यात्म रामायण** में सम्भवतः लक्ष्मण के बारह वर्ष तक उपवास और जागरण का प्राचीनतम उल्लेख किया गया हो (दे० अ० रा० ३, ४, १२-१३)। इंद्रजित् के विषय में विभीषण ने राम से कहा कि जिसने बारह वर्ष तक आहार और निद्रा को छोड़ दिया हो उसी के हाथ से ब्रह्मा ने इंद्रजित् की मृत्यु निश्चित की है—

यस्तु द्वादश वर्षाणि निद्राहारविवर्जित : ॥६४॥
तेनैव मृत्युर्निर्दिष्टो ब्रह्मणास्य दुरात्मन :।

(अध्यात्म रामायण ६, ८)

लक्ष्मण के इस उपवास का उल्लेख **कृत्तिवास रामायण, आनन्द रामायण** (१, ११), **बिहोर राम-कथा**, कनारी **तोरावे रामायण, सेरी राम** तथा अन्य राम-कथाओं में भी किया गया है (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ और १३)।

सेरी राम के अनुसार सीताहरण के पश्चात् राम लक्ष्मण की गोद में उदासीन होकर लेटते हैं। लक्ष्मण के प्रार्थना करने पर आकाशवाणी हुई कि राम-सीता के १२ वर्ष के वियोग के अंत तक तुमको खाना, नींद और प्रेम छोड़ देना चाहिए। **बिहोर कथा** में लक्ष्मण को भोजन देते समय सीता कहती हैं—'लो, यह तुम्हारा हिस्सा है' सीता इसे खाने के लिए नहीं कहती हैं। इसलिए लक्ष्मण केवल मिट्टी खाते रहे। **कनारी रामायण** में लक्ष्मण राम के भोजन देने पर ही खाने का संकल्प करते हैं और राम के न देने से वह १४ वर्ष तक उपवास करते हैं।

लक्ष्मण के जागरण का तेलगू **द्विपाद रामायण** में एक अन्य वर्णन दिया गया है। वन को ओर प्रस्थान करते समय लक्ष्मण निद्रा देवी से प्रार्थना करते हैं कि आप मुझे छोड़कर चौदह वर्ष तक मेरी पत्नी उर्मिला को अपनी शरण में लीजिए। परिणाम यह हुआ कि लक्ष्मण के लौटने तक उर्मिला सोती ही रही और लक्ष्मण जागते रहे।

५०१. **वाल्मीकि रामायण** में इंद्रजित्-वध के पश्चात् विलाप करते हुए रावण इंद्रजित् की पत्नी का बिना नाम लिए उल्लेख करता है (दे० ६, ९२)। जावा के **रामायण काकाविन** में इंद्रजित् की सात पत्नियाँ अपने पति के साथ युद्ध करके रणभूमि में मारी जाती हैं। सुलोचना की कथा का प्रथम वर्णन तेलगू **द्विपाद रामायण** में मिलता है। अपने पति का वध सुनकर सुलोचना रणभूमि में जाकर राम से इंद्रजित् की लाश प्राप्त कर लेती है। बाद में चिता पर चढ़कर वह सती हो जाती है (दे० युद्ध-कांड ८०-८२)।

आनन्द रामायण में इस वृत्तान्त का विकसित रूप पाया जाता है। हनुमान् ने इंद्रजित् की बाहु लंका में फेंक दी थी। सुलोचना के निकट आनेपर वह बाहु लिखने लगी—'शेष द्वारा मारे जाकर मैंने मुक्ति पाई है। राम के पास जाकर मेरा शीश मांग लो और उसके साथ अग्नि में प्रवेश कर मेरे पास आओ'। सुलोचना ने ऐसा करके अपने पति के साथ स्वर्ग में प्रवेश किया। इस वृत्तान्त से मिलती जुलती कथाएं अन्यत्र भी पाई जाती हैं (दे० सेरी राम, जगत राम कृत बंगाली रामायण, रामलिंगामृत, पाश्चात्य वृत्तान्त न० ८)।

छ. रावण वध

५०२. **खोतानी रामायण** में राम द्वारा आहत होकर दशग्रीव राजकर देने की प्रतिज्ञा करता है और फलस्वरूप उसका वध नहीं किया जाता है। जैन राम कथाओं तथा **बिहोर राम-कथा** में लक्ष्मण ही रावण का वध करते हैं। शेष राम-कथाओं में रावण का वध राम द्वारा किया जाता है। कबनकृत **रामायण** में मंदोदरी भी रणभूमि में मारी जाती है (दे० ३, ३४)। **महाभारत** के रामोपाख्यान के अनुसार राम का ब्रह्मास्त्र रावण को मारकर उसे इस तरह जलाता है कि राख भी शेष नहीं रहती (दे० ३, २७४, ३१)।

५०३. **वाल्मीकि रामायण** के पश्चिमोत्तरीय पाठ में इंद्रजित्-वध के पश्चात् रावण होम करने जाता है। विभीषण राम से कहते हैं कि इस यज्ञ को भंग करने की परमावश्यकता है, नहीं तो शिव के प्रसाद से रावण अजेय हो जायगा। लेकिन हनुमान् आदि वानर रावण के यज्ञस्थल पर पहुंचकर उसका ध्यान भग करने में असमर्थ हैं। इसपर हनुमान् की आज्ञा से अगद मदोदरी के केशों को खींचकर उसे रावण के पास ले आता है जिससे रावण उत्तेजित होकर यज्ञ को अपूर्ण छोड़ देता है और अंगद के साथ लड़ने लगता है (दे० प० रा० ६, ८२)।

इस घटना का वर्णन सम्भवतः पहले पहल **पउमचरिय** में किया गया हो। वहा रावण बहुरूपिणी विद्या की साधना करने जाता है। वानर आकर मदोदरी के अपमान आदि उपायों से उसका ध्यान भग करने में असमर्थ हैं, और रावण अपनी साधना मे सफलता प्राप्त करता है (दे० पर्व ६८ आदि)। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** मे रावण की असफल विद्या-साधना का उल्लेख किया गया है (दे० ६८, ५१६)। बाद की राम-कथाओं में पश्चिमोत्तरीय पाठ के अनुकरण पर रावण अपना यज्ञ नहीं समाप्त कर पाता है। रावणयज्ञ-भग के वर्णन मे मदोदरी के केश-ग्रहण का भी प्रायः उल्लेख किया गया है। रावण के असफल यज्ञ के वृत्तान्त की व्यापकता असदिग्ध है। इसका वर्णन निम्नलिखित रचनाओं मे मिलता है—

खोतनी रामायण, तेलगू **द्विपाद रामायण**, **अध्यात्म रामायण** (६, १०), **आनन्द रामायण** (६, ४८) **पद्मपुराण** (उत्तरखड अ० २६६) **रामचरितमानस**, कनारी **तोरावे रामायण** (६, ४२) नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार**, **काश्मीरी रामायण**, **सेरी राम**, **रेआम केर**, **राम कियेन**, पश्चात्य वृत्तान्त न० ३, आदि।

५०४. बहुत सी अर्वाचीन राम कथाओं में रावण के मर्मस्थान का उल्लेख किया गया है। **सेरी राम** के अनुसार जटायु से युद्ध करते हुए रावण ने धोखा देकर पैर के अगूठे को अपना मर्मस्थान बताया था। **पद्मपुराण** (पातालखड अध्याय ११२), **खोतानी** तथा **तिब्बती** रामायण में वहां रावण का वास्तविक मर्मस्थान माना गया है[1]। दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में अगस्त्य राम से कहते हैं कि रावण का हसनेवाला

---

१. ई० मूर कृत दि हिन्दू पैंथियोन में भी इसका उल्लेख किया गया है।

शीश उसका वास्तविक शीश है, जिसके कट जाने से रावण निस्सहाय हो जाता है[1]।

सेरी राम के अनुसार रावण का मर्मस्थान उसके कान के पीछे का एक छोटा सा शीश है जिसके कट जाने पर रावण रणभूमि में पराजित होकर गिर जाता है। रावण के मर्मस्थान के विषय में पंजाब में उसकी गर्दन का उल्लेख मिलता है[2]।

अध्यात्म रामायण के अनुसार रावण के नाभि-प्रदेश में अमृत रखा हुआ है। विभीषण के कहने पर, राम उस अमृत को आग्नेयास्त्र से सुखाकर रावण पर विजय प्राप्त करने में समर्थ होते हैं (दे० अध्यात्म रामायण ६, ११, ५३)। रावण के शरीर में स्थित अमृत का उल्लेख अन्य रामकथाओं में भी किया गया है, उदाहरणार्थ: **आनन्द रामायण** (१,११) **पद्मपुराण** के उत्तरकांड का गौडीय पाठ[3], नर्मदकृत **रामायणसार,** पाश्चात्य वृत्तान्त न० ६, ८ और १०।

बिहोर राम-कथा के अनुसार रावण का जीव उसके महल के भीतर एक मंजूषा में सुरक्षित है। हनुमान् तथा लक्ष्मण दोनों लंका में प्रवेश कर उस मंजूषा को खोलकर रावण का जीव मुक्त कर देते हैं। श्याम के **रामाकियेन** में भी इससे मिलता जुलता वृत्तान्त पाया जाता है; रावण का जीव गोपुत्र नामक गुरु के यहाँ एक मंजूषा में रखा हुआ है और हनुमान् उस मंजूषा को छल से प्राप्त कर लेते हैं।

५०५. **आनन्द रामायण** के अनुसार रावण-वध के बहुत काल बाद अयोध्या में रात को एक आवाज़ सुनाई पड़ती है जिसका रहस्य वसिष्ठ प्रकट करते हैं—'रावण का शरीर अब तक जल रहा है और हनुमान् निरन्तर चिता के लिए लकड़ी ले जाते हैं। रावण के पापों के समाप्त होने पर उसका शरीर भस्मीभूत हो जाएगा' (दे० राज्यकांड, सर्ग २०)। हिंदेशिया के **सेरी राम** में रावण राम द्वारा पराजित और आहत होकर

---

१. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त न० १। अन्य रचनाओं में रावण के चित्र मिलते हैं जिनमें दस साधारण सिरों के ऊपर गधे का एक सिर भी चित्रित किया गया है। दे० पा० वृ० ३ और ४ तथा रोड, उवर रलिगियोंज विल्डिंग।

२. दे० ई० ए० भाग १०, पृ० २८९।

३. दे० ज० ए० सो० बं० १८४२, पृ० ११२२।

नहीं मरता है। उसका शरीर तो दो भागों में कट गया है, फिर भी वह जीवित रहता है। **हिकायत महाराज रावण** में कहा गया है कि रावण जीवित है और कल्प के अंत में पुनः भगवान् के शत्रु के रूप में प्रकट होगा।

अर्वाचीन राम-कथाओं के अनुसार रावण सायुज्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है और उसका जीव ज्योतिस्वरूप राम के शरीर में प्रवेश करता है (दे० अध्यात्म रामायण ६,११,७८, आनन्द रामायण १,११, आदि)।

ज. अग्नि परीक्षा

५०६. अनेक विशेषज्ञों का अनुमान है, कि **आदिरामायण** में सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन नहीं किया गया था [1]। इस अनुमान के लिये प्रायः दो तर्क दिए जाते हैं। एक तो **महाभारत** के रामोपाख्यान में जो **आदि रामायण** पर निर्भर है, अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं मिलता। राम सीता की शपथ तथा देवताओं के साक्ष्य से संतुष्ट होकर सीता को ग्रहण करते हैं (दे० ३, २७५)। दूसरे, उत्तरकांड में दो स्थलों पर राम सीता की निर्दोषता के प्रमाण का उल्लेख करते हैं, फिर भी सब से महत्त्वपूर्ण प्रमाण अर्थात् अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं करते हैं। राम सीता की देवताओं के सामने की शपथ का वाल्मीकि से उल्लेख करते हैं—

प्रत्ययश्च पुरा वृत्तो वैदेह्याः सुसंनिधौ।
शपथश्च कृतस्तत्र तेन वैश्मं प्रवेशिता ॥ ३ ॥
(उत्तरकांड, सर्ग ९७)।

गौडीय पाठ में सीता का त्याग करते समय भी राम लक्ष्मण से केवल देवताओं के साक्ष्य का उल्लेख करते हैं—

प्रत्यक्षं तव सौमित्र देवानां हव्यवाहनः।
अपापां मैथिलीमाह वायुश्चाकाशगोचरः[2] ॥ ६ ॥
(उत्तरकांड, सर्ग ४८)

---

१. दे० ल० वेबर : आन दि रामायण पृ० ६५। डब्लू प्रिंज, याकोबी मेमोरियल वोल्यूम, पृ० १०८।

२. दाक्षिणात्य पाठ में यहां पर एक सीता की अग्निपरीक्षा-विषयक श्लोक जोड दिया गया है—

प्रत्ययार्थं ततः सीता विवेश ज्वलनं तदा
(७, ४५, ७)

उपर्युक्त तर्कों के अतिरिक्त अन्य राम-कथाओं का भी सहारा लिया जा सकता है, जहाँ सीता की अग्निपरीक्षा का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

बौद्ध **अनामकं जातक** तथा श्याम के **राम जातक** में सीता की अग्निपरीक्षा का कहीं भी निर्देश नहीं किया गया है। विमलसूरिकृत **पउमचरिय** में केवल सीतात्याग के पश्चात् ही सीता के भूमि-प्रवेश के स्थान पर अग्निपरीक्षा का वर्णन किया गया है। गुणभद्रकृत जैन **उत्तरपुराण** में कहीं भी सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं मिलता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन महापुराणों तथा उपपुराणों में इसका निर्देश नहीं पाया जाता है, उदाहरणार्थ : **हरिवंश, विष्णुपुराण, वायुपुराण, भागवत पुराण, नृसिंह पुराण। कथासरित्सागर, खोतानी** और **तिब्बती रामायण** में भी सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं किया गया है।

इन रचनाओं में सीता की अग्निपरीक्षा के अभाव के कारण यह अनुमान दृढ़ हो जाता है, कि संभवतः **आदिरामायण** में भी इसका वर्णन न किया गया हो।

५०७. **कथासरित्सागर** में सीता की राम द्वारा परीक्षा का तो उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन त्याग के पश्चात् वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचकर सीता की परीक्षा का निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है। आश्रम के अन्य ऋषि सीता के सतीत्व पर संदेह करते हैं और अपने चले जाने का संकल्प वाल्मीकि से प्रकट करते हैं। यह सुनकर सीता स्वयं कोई भी परीक्षा लेने का प्रस्ताव करती हैं। इस पर ऋषि टीटिमा की कथा सुनाते हैं, जिसके सतीत्व को प्रमाणित करने के लिए लोकपालों ने टीटिमसरोवर का निर्माण किया था। उस टीटिमसरोवर के तट पर जाकर सीता अपने सतीत्व की शपथ खाकर जल में प्रवेश करती हैं। इस पर पृथ्वी देवी प्रकट होकर सीता को अपनी गोद में लेती हैं, और सरोवर के उस पार पहुँचाती हैं (दे० ६, ५१)। यह देखकर ऋषि राम को शाप देना चाहते हैं, किंतु सीता के अनुरोध करने पर ऐसा नहीं करते।

पउमचरिय में त्याग तथा अपने पुत्रों के रामसेना से युद्ध करने के पश्चात् सीता राम की राजधानी लौट जाती हैं और अपने सतीत्व का प्रमाण देने के लिए अग्निकुंड में प्रवेश करती हैं। इस पर अग्निकुंड तालाब के रूप में बदल जाता है और उसका जल चारों ओर बढ़ने लगता है। जब पानी लोगों के कान तक पहुँच जाता है, वे सीता से प्रार्थना करने लगते

हैं और पानी कम हो जाता है। इस पर राम आदि सब सीता से क्षमाप्रार्थना करते हैं। यह कहकर कि मुझे किसी पर क्रोध नहीं है, सीता अपने बाल कटवाकर राम के सामने फेंक देती हैं और पृथ्वीमती आर्यका की दीक्षा लेने जाती हैं।

अन्य वृत्तान्तों मे सीता की निम्नलिखित परीक्षाओं का उल्लेख मिलता है—विषैले सांपों से भरे हुए घड़े में हाथ डालना ; मस्त हाथियों के सामने फेंका जाना ; सिंह और व्याघ्र के वन में त्याग किया जाना ; अत्यन्त तप्त लोहे पर चलना (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त ३ और १३)।

कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा सपादित **भोजपुरी ग्रामगीत** में सीता की अन्य परीक्षाओं का भी वर्णन किया गया है। उस सग्रह के एक गीत के अनुसार सीता ने,

(१) अग्नि को हाथ में लिया तब वह बिल्कुल ठढी हो गई।

(२) सूर्य को अपने हाथ में उठा लिया और वह हाथ में उठाते ही अस्त हो गया।

(३) सर्प को अपने हाथ में लिया तब वह फन फैलाकर बैठ गया।

(४) गगा को हाथ में लिया, तब गंगा बिल्कुल सूख गईं।

(५) तुलसी को अपने हाथ में लिया तब तुलसी जी बिल्कुल ही सूख गई (दे० पृ० १३७)।

ग्र. न वी न सा म ग्री

५०८. उपर्युक्त विश्लेषणों में उस नवीन सामग्री का निरूपण हुआ है, जिनका सम्बन्ध वाल्मीकि के कथानक से प्रत्यक्ष है। तृतीय भाग के अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य के सिंहावलोकन में भी बहुत से वृत्तान्तों का उल्लेख हुआ है, जो केवल एक ही राम-कथा में पाए जाते हैं, इनका यहाँ पुनः उल्लेख नहीं किया जाएगा। इसके अतिरिक्त युद्ध के समय के बहुत से गौण वृत्तान्त भी बाद की राम-कथाओं में पाए जाते हैं, जिनका निरूपण अनावश्यक है। यहाँ केवल उस अपेक्षाकृत कम उपेक्ष्य सामग्री की ओर निर्देश किया जाता है जिसका अनेक रामकथाओं में वर्णन किया गया है।

५०९. **सेतुबंध** के अनुकरण पर बहुत से महाकाव्यों में युद्ध के पूर्व

राक्षस, राक्षसियों का संभोग-वर्णन किया जाता है। **सेतुबंध** (सर्ग १०) के अतिरिक्त निम्नलिखित रचनाओं में तत्सम्बन्धी सामग्री मिलती है।

भट्टिकाव्य (सर्ग ११), **रामायण काकाविन** (सर्ग १२), **जानकी-हरण** (सर्ग १६), अभिनन्दकृत **रामचरित** (सर्ग १८), **कम्बन रामायण** (६, २४), **रामलिंगामृत** (सर्ग ८)।

५१०. **महाभागवत पुराण, श्रीमद्देवीभागवत, बृहद्धर्म पुराण, कृत्तिवास रामायण** आदि रचनाओं में देवताओं तथा राम द्वारा देवी की पूजा का वर्णन किया गया है, जिसके फलस्वरूप राम रावण का वध करने में समर्थ हो जाते हैं।

५११. **बालरामायण** में सेतुबंध के समय सीता का एक मायामय शीश समुद्र के तट पर माल्यवान द्वारा फेंकवाया जाता है (दे० अंक ७)। श्याम के **राम-जातक** में एक बनावटी सीता राम-सेना की छावनी के पास की नदी की धारा में बहती हुई दिखलाई पड़ती है। बाद में पता चलता है कि वास्तव में यह एक केला वृक्ष का धड़ है जिसे रावण ने सीता के रूप में बनवाया था।

राम कियेन में इस वृत्तान्त का विकसित रूप मिलता है। रावण की आज्ञा से बेजकाया, विभीषण की पुत्री, सीता के रूप में नदी पर मृतवत् बहती हुई दिखलाई पड़ती है। राम उसे देखकर निराश हो जाते हैं, लेकिन हनुमान् के सदेह प्रकट करने पर बनावटी सीता प्रज्वलित चिता पर रखी जाती है। बेजकाया चिल्लाकर अपने रूप मे प्रकट हो जाती है। सुग्रीव द्वारा कोड़ों से मारी जाने पर वह अपने को विभीषण की पुत्री कहती है। इस पर राम विभीषण को उसको उचित दंड देने का आदेश देते हैं। विभीषण के अपनी पुत्री को प्राणदंड की आज्ञा देने पर राम उसकी निष्पक्षता से प्रसन्न होकर बेजकाया को हनुमान् के साथ लंका भेज देते हैं। लंका पहुँचने के पहले बेजकाया को लुभाकर हनुमान् उससे एक पुत्र उत्पन्न करते हैं (दे० अध्याय २५)।

५१२. भस्मलोचन की कथा **कृत्तिवास रामायण** में इस प्रकार है— भस्मलोचन नामक राक्षस की दृष्टि जिस पर पड़ती है, वह उसी क्षण भस्मीभूत हो जाता है। रावण उसे राम-सेना की ओर भेज देता है। विभीषण के परामर्श से भस्मलोचन के सामने एक दर्पण रखा जाता है जिस

पर दृष्टि डालकर वह जल जाता है (दे० किष्किंधाकांड का अंत)। **सेरी राम** में रावण अपने पुत्र बलबिस को पाताल से बुलाकर उसे राम-सेना का नाश करने का आदेश देता है। विभीषण बलबिस की दृष्टि का प्रभाव जानता है और उसके कहने पर एक विस्तृत दर्पण बनाया जाता है जिसे हनुमान् अपनी पूंछ से बलबिस के सामने रख देते हैं। बलबिस उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखकर भस्मीभूत हो जाता है।

राम कियेन में सांग आदित्य का उल्लेख किया गया है जिसका एक आश्चर्यजनक दर्पण है। भस्मलोचन की दृष्टि की भाँति उस दर्पण का प्रतिबिंबित प्रकाश भी जिसपर पड़ जाता है उसे नष्ट कर देता है। यह दर्पण ब्रह्मा की रक्षा में था। यह जानकर कि रावण ने सांग आदित्य को बुलाया है, अंगद सांग आदित्य के गुरु के रूप में ब्रह्मा के पास जाकर उस दर्पण को प्राप्त कर लेता है। राम कियेन में सहस्रतेज नामक राक्षस का भी उल्लेख किया गया है। भस्मलोचन की दृष्टि तथा सांग आदित्य के दर्पण की भाँति उस राक्षस की गदा के अग्रभाग से जिसकी ओर इशारा किया जाता है, वह मर जाता है। हनुमान् सूक्ष्म रूप धारण कर उस गदा को छीन लेते हैं और सहस्रतेज के सहस्र शीश काटकर उसका वध करते हैं (दे० अध्याय ३१)।

५१३. महीरावण की कथा के बहुत से रूप मिलते हैं। **जैमिनी भारत** के मैरावणचरित के अनुसार रावण का सखा मैरावण राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाता है और हनुमान् अपने पुत्र मत्स्यराज की सहायता से मैरावण का वध करने के पश्चात् दोनों को मुक्त कर देते हैं। **कृत्तिवास के रामायण** में महीरावण रावण का पुत्र माना जाता है। वह राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाकर काली को दोनों को समर्पित करना चाहता है। हनुमान् महीरावण, उसकी पत्नी तथा उसके पुत्र अहीरावण को मार कर राम तथा लक्ष्मण को छुड़ाते हैं। इस कथा में हनुमान् के पुत्र का उल्लेख नहीं किया गया है। **आनन्द रामायण** के अनुसार अश्विनीकुमार, शापवश राक्षसयोनि प्राप्त कर ऐरावण तथा मैरावण के रूप में प्रकट हुए। वे राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाते हैं, तथा हनुमान् अपने पुत्र मकरध्वज की सहायता से दोनों को मुक्त कर देते हैं (दे० १,११ तथा ७,१४)। इससे मिलते जुलते वृत्तान्त एकनाथकृत मराठी **भावार्थ रामायण**, नरहरीकृत **कनारी मैरावण कलग**, गुजराती **नर्मकथाकोष** (पृ० २२३)

तथा **रामलिंगामृत** में भी पाए जाते हैं। इस अंतिम रचना में अहीमहीरावण राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाता है। (दे० सर्ग ८)। पाश्चात्य वृत्तान्तों (नं० १ और १३) में, कृत्तिवास के अनुसार, हनुमान के पुत्र का उल्लेख नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ में रावण स्वयं राम तथा लक्ष्मण को पाताल ले जाता है।

सेरी राम, राम कियेन, राम जातक, पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ७ तथा कम्बोदिया के एक प्राचीन चित्र में[1] केवल राम का पाताल ले जाने का उल्लेख दिया गया है। इन कथाओं में भी हनुमान् अपने पुत्र की सहायता से उनको मुक्त करते हैं। **बिहोर राम-कथा** में कुंभकर्ण राम तथा लक्ष्मण दोनों को ले जाकर उनका काली के सामने वध करना चाहता है, लेकिन इसके पहले लक्ष्मण कुंभकर्ण को मार डालते हैं।

५१४. महीरावण की कथा में प्रायः हनुमान् के एक पुत्र का उल्लेख किया जाता है। उस पुत्र की उत्पत्ति के विषय में भिन्न भिन्न वृत्तान्त मिलते हैं। **जैमिनी भारत,** गुजराती **नर्मकथाकोश** आदि के अनुसार लंकादहन के पश्चात् जब हनुमान् समुद्र में नहाने गए थे, तब एक मछली (अथवा मकरी) ने उसका स्वेद पान कर लिया जिसके कारण वह गर्भवती हो गई। **आनन्द रामायण** के अनुसार उस अवसर पर हनुमान् का श्लेष्मा एक मकरी के द्वारा खाया गया था और फलस्वरूप उसके एक पुत्र मकरध्वज उत्पन्न हुआ। अन्य रामकथाओं के अनुसार लंका की वापसी में हनुमान् ने मकरी के साथ संभोग किया था (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं ७ और ८)।

सेरी राम में कहा गया है कि समुद्रलंघन के समय हनुमान् का वीर्य गिर गया था और मछलियों की रानी उसे खाकर गर्भवती हो गई। **सेरी राम** के पातानी पाठ तथा **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार सेतुबंध के समय मछलियाँ अपनी रानी के आज्ञानुसार सेतु को नष्ट करने लगती हैं। इसपर हनुमान् उसके पास जाकर और सेतु को पुनः बनवाकर उससे पुत्र उत्पन्न करते हैं। **राम कियेन** में रावण अपनी पुत्री नागकन्या सुवर्णमच्छा को सेतु नष्ट करने भेज देता है। हनुमान् उससे भी एक पुत्र मच्छानु उत्पन्न करते हैं जो बाद में राम को पाताल से मुक्त करने में अपने पिता हनुमान् की सहायता करता है।

---

१. बुलटिन एकोल फ्रांज़स एक्सट्रेम ओरियन, भाग १२, पृ० ४७।

बीसवाँ अध्याय

उत्तरकांड

१

वाल्मीकि रामायण का उत्तरकांड

५१५. क. उ त्त र कां ड की क था व स्तु

(१) रावण-चरित (सर्ग १-३६)

(उत्तरकांड का यह भाग अगस्त्य द्वारा कथित है)

वैश्रवण—विश्रवा तथा देववर्णिनी के पुत्र वैश्रवण का चतुर्थ लोकपाल तथा धनेश बनना और उनका पुष्पक प्राप्त कर लंका-निवास (सर्ग १-३)।

राक्षस-वंश—प्रहेति तथा हेति के वश में उत्पन्न राक्षसों का लका-निवास तथा विष्णु द्वारा पराजित होने पर उनका पाताल-प्रवेश (सर्ग ४-८)।

रावण का जन्म—विश्रवा तथा सुमाली की पुत्री कैकसी से दशग्रीव, कुंभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म। वैश्रवण से ईर्ष्या होने के कारण तीनों भाइयों की तपस्या तथा ब्रह्मा से वरप्राप्ति (सग ९-१०)। रावण की आशका से वैश्रवण का लंका-त्याग तथा कैलास पर निवास; राक्षसों का लंका में प्रवेश। रावण का मय-सुता मंदोदरी से विवाह (सर्ग ११-१२)।

रावण की प्रथम विजय-यात्रा—वैश्रवण को पराजित कर रावण का पुष्पक को प्राप्त करना (सर्ग १३-१५)। रावण को नन्दि-शाप। रावण का कैलास को उठाना तथा शिव से 'रावण' नाम तथा चद्रहास खंग को प्राप्त करना (सर्ग १६)। बेदवती का रावण को शाप देना (सर्ग १७)। रावण द्वारा अनेक राजाओं की पराजय तथा राजा 'अनारण्य' का उसे शाप देना (सर्ग १८-१९)। नारद की प्रेरणा से रावण का यम पर आक्रमण तथा ब्रह्मा द्वारा यम से रावण की रक्षा (सर्ग २०-२२)। शूर्पणखा के पति विद्युज्जिह्व का रावण द्वारा वध और वरुण-पुत्रों की पराजय (सर्ग २३)।

(पाँच प्रक्षिप्त सर्ग : रावण की बलि से भेंट, सूर्य तथा चन्द्र-लोक की यात्रा और कपिल से भेंट)।

रावण के अन्य युद्ध—रावण द्वारा अनेक कन्याओं और पत्नियों का हरण और शूर्पणखा को खर तथा दूषण के साथ दंडकारण्य भेज देना। कुंभनसी के द्वारा मधु की रक्षा। नलकूबर का शाप (सर्ग २४-२६)। मेघनाद द्वारा इन्द्रबंधन तथा देवताओं की प्रार्थना से मुक्ति। देवताओं से मेघनाद की वरप्राप्ति—किसी भी युद्ध के पूर्व यज्ञ कर लेने पर वह अजय होगा (सर्ग २७-३०)। अर्जुन कार्त्तवीर्य तथा बालि द्वारा रावण की पराजय (सर्ग ३१-३४)।

हनुमान्-कथा—हनुमान् की जन्म-कथा तथा चरित-वर्णन (सर्ग ३५-३६)।

(२) सीतात्याग (सर्ग ३७-८२)

अतिथियों का प्रस्थान—अभिषेक के दूसरे दिन राम का ऋषियों, राजाओं, वानरों तथा राक्षसों द्वारा अभिवादन (सर्ग ३७)।

(पाँच प्रक्षिप्त सर्ग : बालि और सुग्रीव की जन्म-कथा, रावण का मुक्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से सीताहरण का निश्चय, रावण की श्वेतद्वीप में स्त्रियों द्वारा पराजय)।

जनक-केकय तथा प्रतार्दन का प्रस्थान। दो मास पश्चात् सुग्रीव, अंगद, हनुमान्, विभीषण तथा वानरों, राक्षसों और ऋक्षों के प्रस्थान (सर्ग ३८-४०)। राम का पुष्पक को वैश्रवण को भेज देना (सर्ग ४१)।

सीतात्याग—सीता का आश्रमों को देखने जाने का दोहद। लोकापवाद के कारण राम की लक्ष्मण को वाल्मीकि आश्रम में सीता छोड़ने की आज्ञा (सर्ग ४२-४५)। गंगा के उस पार लक्ष्मण का सीता को त्याग का समाचार देना, सीता का विलाप (सर्ग ४६-४८)। वाल्मीकि का सीता को आश्रय देना (सर्ग ४९)। सुमंत्र का लक्ष्मण को सीता-त्याग का कारण बतलाना (सर्ग ५०-५२)।

नृग, निमि और ययाति की कथाएँ—राम द्वारा लक्ष्मण को नृग, निमि तथा ययाति की कथाओं का सुनाया जाना (सर्ग ५३-५९)।

(तीन प्रक्षिप्त सर्ग : श्वान् की राम से न्याय मांगने की कथा, गृध तथा उलूक की कथा)

शत्रुघ्न-चरित—च्यवन के आग्रह से राम का लवण का वध करने के लिए शत्रुघ्न को भेजना (सर्ग ६०-६४)। शत्रुघ्न का वाल्मीकि आश्रम में रात्रि व्यतीत करना तथा उसी रात्रि में कुश-लव का जन्म (सर्ग ६५-६६)। शत्रुघ्न द्वारा लवण-वध और मधुपुरी का बसाया जाना। बारह वर्ष बाद राम के पास लौटते समय वाल्मीकि के आश्रम में शत्रुघ्न का रामायण-गान सुनना। राम से मिलकर उनका अपने राज्य में वापस जाना (सर्ग ६७-७२)।

शम्बूक-वध—ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु पर नारद का शूद्र की तपस्या को उसका कारण बताना। राम का दक्षिण जाकर शम्बूक-वध करना; अनन्तर अगस्त्य से दण्डकारण्य की कथा सुनना (सर्ग ७३-८२)।

(३) अश्वमेध (सर्ग ८३-१११)

अश्वमेध-माहात्म्य—राजसूय-यज्ञ का भरत द्वारा विरोध। लक्ष्मण का अश्वमेध का प्रस्ताव तथा इसके माहात्म्य में इन्द्र की ब्रह्महत्या से अश्वमेध द्वारा शुद्धि की कथा कहना (सर्ग ८३ ८६)। राम द्वारा इला के अश्वमेध से पुरुषत्व प्राप्त करने की कथा का उल्लेख (सर्ग ८६ ९०)।

अश्वमेध में सीता का पृथ्वी-प्रवेश—नैमिष वन में अश्वमेध के अवसर पर कुश-लव का सभा के सामने रामायण-गान करना (सर्ग ९१-९४)। कुश-लव को सीता-पुत्र सुनकर राम का वाल्मीकि के पास संदेश भेजकर सभा के सन्मुख अपनी शुद्धि का साक्ष्य देने के लिए सीता से अनुरोध करना (सर्ग ९५)। सीता की शपथ; पृथ्वी का सीता को अपने साथ ले जाना; राम का उनसे सीता को लौटा देने का व्यर्थ अनुरोध (९६-९८)। कुश-लव द्वारा उत्तरकांड का गान, सभा-विसर्जन, माताओं की मृत्यु (सर्ग ९९)।

विजय-यात्राएँ—भरत के पुत्रों (तक्ष-पुष्कल) का तक्षशिला तथा पुष्कलवती में राज्य-स्थापन (सर्ग १००-१०१)। लक्ष्मण के पुत्रों (अंगद-चंद्रकेतु) का अंगदीप और चंद्रकान्त में राज्य स्थापन।

लक्ष्मण-मृत्यु—काल का राम को अपना विष्णुरूप प्राप्त करने का स्मरण दिलाना। दुर्वासा के आग्रह से लक्ष्मण का राम तथा काल के पास जाना और इसके कारण लक्ष्मण का सरयू-प्रवेश (१०२-१०६)।

स्वर्गगमन—राम का कुश को कुशवती में और लव को श्रावस्ती में राज्य देना। अपने पुत्रों (सुबाहु और शत्रुघातिन्) को राज्य देकर शत्रुघ्न का अयोध्या आना। सुग्रीव और वानरों का आना। विभीषण और हनुमान् को अमरत्व का वरदान (१०७-१०८)। राम का अपने भाइयों के साथ विष्णुरूप में तथा वानरों का अंशानुसार देवताओं में प्रवेश। नागरिकों की स्वर्गप्राप्ति। फलस्तुति (सर्ग १०९-१११)।

ख. उत्तरकांड का विश्लेषण

तीनों पाठों में विभिन्नता

५१६. तीनों पाठों के उत्तरकांड में इतनी ही विभिन्नता पाई जाती है, कि दाक्षिणात्य पाठ में सीतात्याग का कारण भृगु द्वारा विष्णु का शाप बताया गया है। इतनी कम विभिन्नता से पता चलता है कि उत्तरकांड की रचना अन्य कांडों के बाद हुई है। इसका उल्लेख दूसरे अध्याय में किया गया है (दे० अनु० २२)।

दाक्षिणात्य पाठ के संस्करणों में उत्तरकांड के २३ वें सर्ग, ३७ वें सर्ग तथा ५९ वें सर्ग के पश्चात् क्रमशः पांच, पांच तथा तीन प्रक्षिप्त सर्ग उद्धृत किए जाते हैं, जिनकी गणना अन्य सर्गों के साथ साथ नहीं की गई है। इनकी अधिकांश सामग्री अन्य पाठों में नहीं मिलती।

उत्तर कांड की उत्पत्ति

५१७. समस्त उत्तरकांड प्रक्षिप्त है। इसके प्रमाण आठवें अध्याय में दिए गए हैं (दे० अनु० ११५-१२०)। उत्तरकांड की सामग्री का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि इसकी रचना भिन्न भिन्न कवियों के द्वारा हुई है। प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** में केवल दो अंश मिलते हैं, जिनमें अशुद्ध श्लोकों का बाहुल्य पाया जाता है, अर्थात् विश्वामित्र की कथा (बालकांड) तथा रावण-चरित (उत्तरकांड, सर्ग १-३६)। यह विशेषता दोनों वृत्तान्तों को प्रक्षेप सिद्ध करती है[1]।

रावणचरित के बाद राम के अभिषेक के लिए आए हुए अतिथियों की विदाई का पुनः वर्णन किया गया है (सर्ग ३७-४०); इसका प्रथम वर्णन

---

१. दे० एच याकोबी: डस रामायण, पृ० २६।

युद्धकांड के अंत में हुआ था। रावणचरित जैसे विस्तृत प्रक्षेप जोड़ने के पश्चात् आधिकारिक कथावस्तु से संबंध स्थापित करने के लिए इसकी यहां पुनरावृत्ति की गई है। अतः उत्तरकांड का मूल-रूप सीतात्याग के वर्णन से प्रारम्भ हुआ होगा (सर्ग ४२-५२)। बाद की सामग्री से पौराणिक कथाओं को तथा शम्बूक-वध की कथा[1] को हटाने पर जो वृत्तान्त रह जाता है, वह सम्भवतः उत्तरकांड के प्रारम्भिक रूप में पाया गया हो, अर्थात् शत्रुघ्न चरित तथा कुश-लव-जन्म, राम का अश्वमेध तथा कुश-लव द्वारा रामायण-गान, सीता का भूमि-प्रवेश, रामादि के पुत्रों की राज्यस्थापना, लक्ष्मण की मृत्यु तथा राम का स्वर्गारोहण।

—:०:—

१. शम्बूक-वध एक स्वतन्त्र कथा प्रतीत होती है, जो बाद मे जोड़दी गई है।

२

उत्तरकांड का विकास

५१८. उत्तरकांड के प्रथम ३६ सर्गों में रामायण की आधिकारिक कथा-वस्तु से भिन्न एक स्वतन्त्र कथानक का वर्णन किया गया है। तत्संबंधी सामग्री दो अलग परिच्छेदों में रखी गई है (दे० नीचे ३, रावण-चरित और ४ हनुमान की जन्म-कथा)। सीतात्याग तथा कुशलव-चरित का विकास अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है। अतः इन दोनों वृत्तान्तों का वर्णन अलग किया गया है (दे० परिच्छेद ५ और ६)। राम-कथा की समाप्ति अनेक रूपों में वर्णित है। इस महत्त्वपूर्ण विषय का विश्लेषण 'राम-कथा का निर्वहण' नामक अंतिम परिच्छेद में किया जाएगा। प्रस्तुत परिच्छेद में उत्तरकांड की शेष कथा-वस्तु से सम्बन्ध रखनेवाली गौण सामग्री का वर्णन करना है। उत्तरकांड की नृग, निमि आदि विषयक पौराणिक कथाओं का राम-कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है और इनका अर्वाचीन राम-कथाओं में अभाव है। शत्रुघ्न-चरित का भी कोई विकास अथवा उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं पाया जाता है।

क. शम्बूक वध

५१९. शम्बूक-वध के वृत्तान्तों के दो सर्वथा भिन्न वर्ग मिलते हैं। एक **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकांड पर निर्भर है और दूसरा **पउमचरिय** के वृत्तान्त पर।

(अ) उत्तरकांड की कथा

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड में शम्बूक-वध का विस्तृत वर्णन किया गया है (दे० सर्ग ७३-८२)। नारद से यह जानकर कि एक शूद्र की तपस्या किसी ब्राह्मणपुत्र की अकाल मृत्यु का कारण है, राम पुष्पक पर चढ़कर तथा उस शूद्र का पता लगाकर उसका वध करते हैं। तत्पश्चात् देवता प्रकट होकर राम की प्रशंसा करते हैं और राम को वर देकर इसका स्पष्ट उल्लेख करते हैं कि राम के कार्य से वह शूद्र स्वर्ग पर अधिकार प्राप्त न कर सका—

स्वर्गमाड्. नहि शूद्रोऽयं त्वत्कृते रघुनन्दन ॥८॥

(सर्ग ७६)

इस पर राम देवताओं से उस ब्राह्मणपुत्र के पुनर्जीवन का वरदान पाकर तथा अगस्त्य से मिलकर अयोध्या लौटते हैं।

५२०. **महाभारत** के एक श्लोक में शम्बूक-वध का उल्लेख किया गया है जिसमें ब्राह्मणपुत्र देवताओं के वरदान से नहीं किन्तु राम के धर्म से पुनर्जीवित माना गया है—

श्रूयते शम्बु के शूद्रे हते ब्राह्मणदारकः ।
जीवितो धर्ममासाध्य रामात्सत्यपराक्रमात् ॥६७॥

(शांतिपर्व, अध्याय १५२)।

५२१. कालिदास के **रघुवंश** तथा भवभूति के **उत्तररामचरित** के अनुसार शम्बूक-वध के द्वारा ही ब्राह्मण-पुत्र पुनर्जीवन प्राप्त करता है तथा समस्त वृत्तान्त शम्बूक पर केंद्रीभूत हो जाता है—

रघुवंश में इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राजा के द्वारा दंड दिये जाने के कारण वह शूद्र मुक्ति प्राप्त कर सका है।

कृत्तदंडः स्वयं राज्ञा लेभे शूद्रः सतां गतिम्[1] ।
तपसा दुश्चरेणापि न स्वमार्गविलंघिना ॥५३॥

(१५ वाँ सर्ग)

उत्तर रामचरित के द्वितीय अंक में शम्बूक अपने वध के अनन्तर दिव्य पुरुष के रूप में प्रकट होकर राम से कहता है कि मैं आपके प्रसाद ही से शाश्वत पद प्राप्त करूँगा।

आगे चलकर भी देवताओं के वरदान का उल्लेख नहीं है। किन्तु राम द्वारा शम्बूकवध की क्रिया ही ब्राह्मणपुत्र के पुनर्जीवन तथा शम्बूक की

---

१. रामायण के एक प्रक्षिप्त सर्ग में एक श्लोक पाया जाता है जिसमें राजा द्वारा दंडितों के स्वर्ग-प्राप्ति का उल्लेख है।

राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवाः ।
निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ॥ ३१ ॥
(किष्किंधाकांड, सर्ग १८)

यह श्लोक मनुस्मृति (८,३१८) में भी मिलता है।

स्वर्गप्राप्ति दोनों घटनाओं का कारण माना गया है (दे० अध्यात्म रामायण ७, ४)[1]।

(अ) पउमचरिय की कथा

५२२. **पउमचरिय** के अनुसार खरदूषण, रावण का भाई न होकर, किसी अन्य विद्याधरवंश का राजकुमार है, जिसने रावण की बहन चंद्रनखा से विवाह किया है। उन दोनों का पुत्र शम्बूक सूर्यहास नामक खंग प्राप्त करने के उद्देश्य से साधना करता है। १२ वर्ष की तपस्या के पश्चात खंग प्रकट होता है। संयोग से लक्ष्मण, जो राम तथा सीता के साथ वन में निवास करते हैं, वहाँ पहुँचते हैं। खग को देखकर वह उसे उठाते हैं और पास के बाँस को काटकर शम्बूक का सिर भी काट लेते हैं। चंद्रनखा अपने पुत्र से मिलने आया करती है। उसे मरा हुआ देखकर वह विलाप करते करते वन में फिरने लगती है और राम तथा लक्ष्मण के पास पहुंचती है। उन दोनों पर आसक्त होकर तथा दोनों से अस्वीकृत होकर वह अपने पति खरदूषण तथा रावण को लक्ष्मण द्वारा शम्बूक-वध की सूचना देती है। इस प्रकार शम्बूक-वध राम-रावण-युद्ध तथा सीता-हरण का कारण बन गया है।

५२३. **पउमचरिय** का यह वृत्तान्त किंचित् परिवर्तन सहित अनेक राम-कथाओं में पाया जाता है। तेलगू **द्विपाद रामायण** में शूर्पणखा का पति रावण के विरुद्ध विद्रोह करने के कारण रावण द्वारा मारा जाता है। बाद में उसका पुत्र जम्बुमाली अथवा जम्बुकुमार अपनी माता शूर्पणखा से समस्त वृत्तान्त सुनकर रावण से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से एक दिव्य खंग की साधना करने जाता है। खंग प्रकट होने पर लक्ष्मण उसे देखते हैं और बांस में तपस्या करते हुए जम्बुकुमार का वध करते हैं (दे० अरण्य-कांड ४-५)।

आनन्द रामायण में भी शूर्पणखा के पुत्र सांब राक्षस का उल्लेख है, जो ब्रह्मा से एक दिव्य खग प्राप्त कर उसी खंग से लक्ष्मण द्वारा मारा जाता है (दे० १, ७, ४१-४३)। कनारी **तोरावे रामायण** में प्रस्तुत वृत्तान्त का परिवर्तित रूप मिलता है। शम्बूक राक्षस इन्द्रपद प्राप्त करने के लिए वन में इतने काल से तपस्या कर रहा था कि एक वल्मीक उसके

---

१. दे० डब्लू प्रिज़: राम उंड शम्बूक, जर्मन जर्नल आव इन्डोलोगी एंड इरानिस्टिक, भाग ५, पृ० २४१।

शरीर के चारों ओर बन गया था। इन्द्र और नारद व्याध के रूप में लक्ष्मण के पास आकर उनको मृगया खेलने का निमत्रण देते हैं। लक्ष्मण के चले जाने के बाद इंद्र एक वराह की सृष्टि करते हैं जो इन्द्र की प्रेरणा से शम्बूक के वल्मीक की ओर जाता है। लक्ष्मण उसे देखकर एक बाण से वराह तथा शम्बूक दोनों का वध करते हैं (दे० अरण्यकांड, संधि ३)।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार शूर्पणखा का पुत्र किसी तपस्वी के आश्रम में जाकर पेड़ो के फल खाने लगा। तपस्वी ने उसे पेड़ बन जानेका शाप दिया। शूर्पणखा के बहुत विनय करने पर तपस्वी ने शाप इस प्रकार बदल दिया कि जब विष्णु राम के रूप में आकर उस वृक्ष की एक शाखा काट लेंगे तब शूर्पणखा का पुत्र मुक्ति प्राप्त करेगा (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १६, भाग १३, पृ० १७२)।

जावा के **सेरतकांड** में एक बाण द्वारा सुरपंदकी के पुत्र के वध का उल्लेख मिलता है तथा मलय के **सेरी राम** में इस वृत्तान्त का पूरा वर्णन किया गया है। रावण अपने बहनोई बेर्गा सिंह की रक्षा में लंकापुरी छोड़कर किसी दिन सूर्य से युद्ध करने जाता है। बेर्गा सिंह अपनी जीभ नगर के चारों ओर लपेट कर सोता है। लौटते समय रावण यह समझ कर कि एक सर्प लंका का अवरोध कर रहा है, बेर्गा सिंह की जीभ काटता है जिससे वह मर जाता है। बेर्गा सिंह की विधवा तथा रावण की बहन सुरपंदकी बाद मे एक पुत्र देर्सा सिंह को जन्म देती है जो दिव्य खग प्राप्त करने के लिए १२ वर्ष तक साधना करता है और उपर्युक्त कथाओं के अनुसार लक्ष्मण द्वारा उसका वध किया जाता है।

श्याम के **राम कियेन** में **सेरी राम** से मिलता जुलता वृत्तान्त मिलता है। अतर यह है कि सदा की भाँति **राम कियेन** में **रामायण** की कथा का प्रभाव अधिक स्पष्ट है। रावण की बहन का नाम सम्मनक्खा है, जिसका पति जिह्व (रामायण में विद्युज्जिह्व) तथा पुत्र कुंभकश है। कुंभकश ने गोदावरी के तट पर एक दिव्य खग की प्राप्त के लिए साधना की थी जिसपर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उस खग को कुंभकश के सामने गिराया था। ब्रह्मा ने प्रकट होकर कुंभकश को यह खंग हाथ में नहीं दिया इस कारण कुंभकश उसे नहीं ग्रहण कर सका। बाद में लक्ष्मण वहां आकर उसे उठाते हैं। यह देखकर कुंभकश लक्ष्मण से युद्ध करने लगता है और मारा

जाता है। अनन्तर रावण द्वारा जिह्व के वध का भी **सेरी राम** के अनुसार वर्णन किया जाता है (दे० अध्याय १७)।

ख. राम का अश्वमेध

५२४. युद्धकांड के अन्त में इसका उल्लेख किया गया है कि राम ने दस अश्वमेध किये थे (दे० ६,१२२,६५)। उत्तरकांड में राम के प्रथम अश्वमेध का विस्तृत वर्णन किया गया है (सर्ग ८४,६६)। इस यज्ञ के अवसर पर **कुशलव ने रामायण** का गान किया था तथा सीता ने अपने सतीत्व का प्रमाण देकर भूमि में प्रवेश किया था। बाद में राम ने और बहुत से यज्ञ किये थे जिनके लिए एक कांचनी जानकी का निर्माण हुआ, क्योंकि राम ने सीता के भूमि-प्रवेश के पश्चात् अन्य विवाह नहीं किया (दे० सर्ग ६६,७-८)।

५२५. वाल्मीकि रामायण में कहीं भी राम द्वारा ब्रह्महत्या-दोष का निर्देश नहीं मिलता, किन्तु पौराणिक साहित्य में इसका उल्लेख किया गया है कि रावण-वध के कारण राम को ब्रह्महत्या का दोष लगा था और उसी दोष के प्रायश्चित-स्वरूप उन्होंने अश्वमेध किया था।

स्कंद पुराण में सम्भवतः पहले पहल राम की ब्रह्महत्या का उल्लेख किया गया हो। सेतुमाहात्म्य के अनुसार ब्रह्महत्या से विमोक्ष प्राप्त करने के लिए कोटितीर्थ मे (अध्याय २७) तथा गधमादन मे (अध्याय ४४) राम ने शिवलिंग की स्थापना की थी। ब्राह्मखंड में राम वसिष्ठ से कहते हैं कि मेरे द्वारा बहुत से ब्रह्मराक्षसों की हत्या हुई है, इस पाप की शुद्धि के लिए कौन तीर्थ श्रेष्ठ माना जाता है :

मया तु सीताहरणे निहता ब्रह्मराक्षसाः।
तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं वद तीर्थोत्तमम् ॥२॥

इस पर वसिष्ठ धर्मारण्य का निर्देश करते हैं और राम वहाँ जाकर उस तीर्थ का जीर्णोद्धार करते हैं (दे० धर्मारण्य खंड, अध्याय ३१)।

जैमिनीय अश्वमेध में इसका प्रथम उल्लेख किया गया है कि राम ने ब्रह्महत्या के प्रायश्चित्-स्वरूप अश्वमेध करने का सकल्प किया था (दे० अध्याय २६)।

पद्मपुराण के पातालखंड में राम के अश्वमेध का विस्तृत वर्णन

मिलता है (दे० अध्याय १६८)। इस वर्णन के अंतर्गत राम अपने को ब्रह्महत्या का दोषी मानकर वसिष्ठ से अनुरोध करते हैं कि वह उस पाप के प्रायश्चित का उपाय बता दें। इस पर वसिष्ठ राम को अश्वमेध करने का परामर्श देते हैं (दे० अध्याय ८)। केशवदास कृत **रामचंद्रिका** के अनुसार राम ने सीतात्याग के पाप के प्रायश्चित् के लिए अश्वमेध किया था (दे० ३५ वां प्रकाश)।

ग. न वी न सा म ग्री

५२६. बालकाड की भांति उत्तरकांड के कथानक के अंतर्गत भी बाद की राम-कथाओं मे पर्याप्त मात्रा में सर्वथा नवीन सामग्री का समावेश हुआ है। सीतात्याग, कुशलवचरित तथा राम-कथा के निर्वहण से संबध रखने वाली नवीन सामग्री का निरूपण प्रस्तुत अध्याय के स्वतंत्र परिच्छेदों में किया जाएगा। शेष नवीन सामग्री का किंचित् वर्णन नीचे दिया जाता है।

राम का विभीषण से मिलना

५२७. अनेक पुराणों में अयोध्या लौटने के बाद राम के विभीषण से मिलने के लिए दक्षिण की यात्रा करने का वर्णन मिलता है। **नृसिंहपुराण** के अनुसार राम ने उस अवसर पर लंका मे पुण्यारण्यं की स्थापना की थी (दे० अध्याय २७)। **स्कंदपुराण** के नागरखड (अध्याय १००) तथा **पद्मपुराण** के सृष्टिखड (अध्याय ३८) में राम अपनी मृत्यु के पहले विभीषण से मिलकर उसको धर्मोपदेश देते हैं। इसी अवसर पर दोनों पुराणों में सेतुभंग का भी उल्लेख होता है।

५२८. **नारद पुराण** (पूर्वखड, अध्याय ७६) तथा **पद्मपुराण** के पातालखंड (अध्याय १००) में विभीषण के द्रविडों द्वारा बंदीगृह में बंद किए जाने का उल्लेख किया गया है। **पद्मपुराण** के अनुसार इसका कारण यह है कि विभीषण ने एक ब्राह्मण की हत्या की थी। राम विभीषण को मुक्त कर देते हैं। **रामकियेन** में रावण का पुत्र विभीषण के विरुद्ध विद्रोह करके उसे कारागार में रखवाता है। इस पर भरत और शत्रुघ्न राम सेना के साथ लंका जाकर विभीषण को पुनः राज्य दिलाते हैं (अध्याय ३६)। उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त **आनन्द रामायण** के अनुसार विभीषण शतस्कंध रावण द्वारा भी लंका से भगाया गया था (दे० नीचे अनु० ५३१)।

राम की तीर्थयात्राएं तथा विलास-क्रीडाएं

५२९. **आनन्द रामायण** में रावण-वध के बाद राम की तीर्थयात्राओं के वर्णन के अतिरिक्त (दे० यात्राकांड) कृष्ण-कथा-साहित्य के अनुकरण पर राम-सीता की जलक्रीड़ा, वन-विहार आदि का चित्रण मिलता है (दे० विलासकांड)। अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य में राम की रासलीला आदि का भी वर्णन किया गया है। प्रस्तुत निबन्ध के अंतिम अध्याय में राम-कथा-साहित्य पर कृष्ण-भक्ति के इस प्रभाव का उल्लेख किया जाएगा।

सीता द्वारा रावण-वध

५३०. बहुत सी अर्वाचीन राम-कथाओं में सीता द्वारा सहस्र अथवा शत अथवा लक्ष-स्कंध रावण के वध का वर्णन मिलता है। जिनमें से सहस्र स्कंध-रावण की कथा अधिक प्रचलित है।

सहस्र-स्कंध रावण का वृत्तान्त **अद्भुत रामायण** में विस्तार से वर्णित है (दे० सग १७-२७)। सहस्र-स्कंध रावण विश्रवा तथा कैकषी का पुत्र है जो पुष्कर में राज्य करता है। किसी दिन विश्वामित्र आदि मुनि अयोध्या आकर रावण-वध के कारण राम की प्रशंसा करते हैं। इस पर सीता मुस्कुरा कर सहस्र स्कंध रावण की कथा सुनाती हैं, जिसने इन्द्र आदि देवताओं को पुष्कर में कारागार में रख दिया है। यह सुनकर राम सीता तथा सेना के साथ पुष्कर जाते हैं। रावण वायव्य शर से समस्त सेना अयोध्या तक उड़ाता है तथा द्वन्द्वयुद्ध में राम का वध करता है। तब देवी का महाविकट रूप धारण कर सीता सहस्र-स्कंध रावण तथा उसके योद्धाओं का भी सिर काटकर नाचने लगती हैं जिससे समस्त सृष्टि संकट में पड़ जाती है (**ननर्त जानकी देवी घोरकालीमहाबला** २३.६३)। ब्रह्मा आदि देव आकर सीता से रुकने का अनुरोध करते हैं। सीता इनकार करती हैं, क्योंकि राम मारे गए हैं। इस पर ब्रह्मा राम को पुनर्जीवित करते हैं और राम परम-शक्ति के रूप में सीता की स्तुति करके उनसे उनके ईश्वर-रूप छोड़ देने का अनुरोध करते हैं। बाद में सीता अपना साधारण रूप धारण कर लेती हैं और राम तथा सीता पुष्पक में अयोध्या लौट जाते हैं।

अद्भुत रामायण के अतिरिक्त सहस्र-स्कंध-रावण-वध की कथा **जैमिनि-भारत** के आश्रमपर्व में भी **सहस्र-मुखरावणचरित्र** के नाम से मिलती है (दे० मद्रास कैटालाग नं० डी० २०६८)। इसका वर्णन जगतराम के **बंगाली रामायण** के पुष्करखंड में भी किया गया है।

५३१. **आनन्द रामायण** में एक शतस्कंध रावण का उल्लेख मिलता है, जो पहले मायापुर में निवास करता था। दशस्कंध-रावण-वध के पश्चात् वह पौंड्क (निकुंभ के पुत्र) के साथ विभीषण को भगाकर लंका में राज्य करता है। विभीषण के विनय करने पर राम उससे लड़ने जाते हैं। राम की पराजय के बाद सीता शत-स्कंध-रावण तथा पौंड्क दोनों का वध करती हैं (दे० ७,६-८० आदि)। शतस्कंध रावण की कथा अन्य रचनाओं में भी मिलती है, उदाहरणार्थ—

सीताविजय (मद्रास कैटालाग नं० आर० १४८ और ६६४)।

शतमुखरावणचरित्र (वही नं० आर० ६४७)।

राममोहन वन्द्योपाध्याय का रामायण।

५३२. उड़िया **विलंका रामायण** में प्रस्तुत वृत्तान्त का एक अन्य रूप मिलता है। इस रचना के पूर्व-खंड में सहस्रस्कंध रावण का वध वर्णित है। सहस्रस्कंध रावण के राम, लक्ष्मण तथा हनुमान् को परास्त करने के पश्चात् सीता मंगला देवी से पुष्प-धनु तथा पाँच शर प्राप्त कर युद्ध भूमि में पहुँचती हैं। रावण को अपना यौवन दिखला कर वह पुष्पधनु के पाँच शर उस पर चलाती हैं। अनन्तर राम कामातुर रावण के सिर काट लेते हैं। उत्तरखंड में सीता के काली के रूप में लक्षशीश रावण का वध करने का वर्णन किया गया है।

५३३. **आनन्द रामायण** में सीता द्वारा कुंभकर्ण के पुत्र मूलकासुर के वध का भी वर्णन किया गया है (दे० ७,४-८८ आदि)। **रामलिंगामृत** के १५ वें सर्ग में सीता के कुंभकर्ण के पुत्र कुंभगर्भ का वध करने का उल्लेख मिलता है।

३

रावण-चरित

५३४. उत्तरकांड के प्रारम्भ में रावण-चरित का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस रावणचरित के भिन्न भिन्न तथ्यों में आगे चलकर किंचित परिवर्तन भी किया गया है, किन्तु इसका सूक्ष्म विश्लेषण अनावश्यक है। यहां पर केवल कुछ अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों की ओर निर्देश करना है। प्रस्तुत निबन्ध के सातवें अध्याय में यह दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि रामचरित से अलग रावण के विषय में प्राचीन स्वतन्त्र काव्य का कहीं भी निर्देश नहीं मिलता (दे० अनु० १०२)। वैदिक साहित्य में रावण, कुबेर, विश्रवा, वैश्रवण आदि का संकेत नहीं किया गया है। पाली **जातकट्ठवण्णना** में वेस्सवण, यक्खों के राजा, का बहुत से स्थलों पर उल्लेख किया गया है; रावण का कहीं भी नहीं। **महाभारत** में रावण का उल्लेख केवल राम-कथा के प्रसंग में आया है, किन्तु धनेश, कुबेर, वैश्रवण आदि का उल्लेख स्वतन्त्र रूप से असंख्य स्थलों पर किया गया है। इससे यह अनुमान दृढ़ हो जाता है कि वैश्रवण अथवा कुबेर रावण-कथा से पूर्व ही प्रसिद्ध हो चुके थे!

संस्कृत हस्तलिपियों की सूचियों में रावण के नाम बहुत सी अर्वाचीन रचनाओं का उल्लेख मिलता है, उदाहरणार्थः—**अर्कप्रकाश** (वैद्य) **कुमारतंत्र** (वैद्य) **इंद्रजाल** (उड्डीय) **प्राकृतकामधेनु, प्राकृतलंकेश्वर, ऋग्वेदभाष्य, रावणभैंट** (यजुर्वेद), आदि।

५३५. रावणचरित भिन्न भिन्न रामकथाओं में विभिन्न स्थलों पर रखा गया है। **रामायण** के अनुसार वह प्रायः उत्तरकांड में मिलता है, फिर भी **महाभारत** का भी बहुत सी रचनाओं में अनुकरण किया गया है। **महाभारत** में रावणचरित का संक्षिप्त वर्णन रामोपाख्यान के प्रारम्भ में रखा गया है। जैन **पउमचरिय** राक्षस तथा वानरवंश के इतिहास से प्रारम्भ होता है तथा निम्नलिखित रामकथाओं में भी रावणचरित का कुछ वर्णन भूमिका में ही किया गया है। **तिब्बती** तथा **खोतानी रामायण, हिंदेशिया** के **सेरी राम** तथा **सेरत कांड, श्याम** के **रामकियेन** तथा **रामजातक**।

काश्मीरी रामायण में प्रस्तुत सामग्री सुन्दरकांड के अंतर्गत रखी गयी है। लंका में सीता की खोज करते हुए हनुमान् नारद से मिलते हैं और नारद हनुमान् को लंका की सृष्टि तथा रावणवंश की कथा सुनाते हैं।

दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त के अनुसार अगस्त्य ने सीताहरण के पूर्व वनवासी राम से रावण-चरित का वर्णन किया था (दे० पाश्चात्य वृ० नं० १)।

५३६. रावण की वंशावली के विषय में प्रारम्भ ही से मतभेद पाया जाता है। **महाभारत** में पुलस्त्य वैश्रवण का पिता माना जाता है, किंतु **रामायण** के अनुसार पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा ने देववर्णिनी से वैश्रवण उत्पन्न किया था। **महाभारत** के रामोपाख्यान में पुलस्त्य विश्रवा का पिता न होकर स्वयं विश्रवा बन जाता है तथा विभिन्न पत्नियों से रावणादि को उत्पन्न करता है—

पुष्पोत्कटा से कुंभकर्ण तथा रावण को,
मालिनी से विभीषण को,
राका से खर तथा शूर्पणखा को।

रामायण के उत्तरकांड के अनुसार विश्रवा (वैश्रवण के जन्म के बाद) सुमाली की पुत्री कैकसी से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण को उत्पन्न करता है। रामायण के अन्य स्थलों पर रावण विमाता से उत्पन्न अपने भ्राता खर का भी उल्लेख करता है जिसका सेनापति दूषण है (७,२४, ३६-३६); और शूर्पणखा खर तथा दूषण दोनों को भाई कहती है। (**भ्रातरौ खरदूषणौ**—दे० ३,१७,२३)। गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में रावण तथा विभीषण की माता का नाम निकषा भी माना गया है (दे० गौ० रा० ५,७६; प० रा० ५,७५)।

भारतीय हिन्दू रामकथाओं में रावण की वंशावली प्रायः **रामायण** अथवा **महाभारत** के अनुसार दी गई है। फिर भी कई रचनाओं में भिन्न वंशावली का भी वर्णन किया गया है। **कूर्म पुराण** के अनुसार विश्रवा ने

देववर्णिनी से वैश्रवण को,
कैकसी से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण को,
पुष्पोत्कटा से महोदर, प्रहस्त, महापार्श्व, खर तथा कुंभीनसी को,

वाका से त्रिशिर, दूषण तथा विद्युज्जिह्व को उत्पन्न किया था (दे० पूर्वविभाग, अध्याय १६)।

सौर पुराण में रावण की वंशावली **कूर्मपुराण** के अनुसार है। अंतर यह है कि इसमें पुष्पोत्कटा के पुत्र खर का उल्लेख नहीं मिलता (दे० अध्याय ३०)।

क्षेमेंद्रकृत **दशावतार-चरित** में रावणादि विश्रवा तथा पुष्पोत्कटा की संतति माने गए हैं। **आनन्द रामायण** में विश्रवा तथा कैकसी के तीन पुत्रों तथा तीन पुत्रियों का उल्लेख किया गया है—रावण कुंभकर्ण, कौंची, शूर्पणखा, कुंभनसी तथा विभीषण। **काश्मीरी रामायण** में रावण, खर, शूर्पणखा, कुंभकर्ण, विभीषण तथा वैश्रवण ये सब सहोदर भाई-बहन होकर उपर्युक्त क्रम से उत्पन्न माने जाते हैं (दे० सुन्दरकांड, नं० ३०)।

इतनी विभिन्नता देखकर स्पष्ट है कि प्राचीन काल से कोई एक प्रामाणिक राक्षसवंशावली प्रचलित नहीं है। जैन तथा विदेशी राम-कथाओं में और अधिक विभिन्नता पाई जाती है। **पउमचरिय** के अनुसार सुमाली का पुत्र रत्नश्रवा कैकसी से रावण, कुंभकर्ण, विभीषण तथा चंद्रणखा को उत्पन्न करता है; विश्रवा कैकसी की बहन कैशी से वैश्रवण को उत्पन्न करता है। गुणभद्र के **उत्तरपुराण** में रावण के पूर्वजों की नामावली इस प्रकार है—सहस्रग्रीव, शतग्रीव, पंचासद्ग्रीव, पुलस्त्य, रावण। हिदेशिया के **सेरी राम** में वंशावली यों है—बर्मा राजा (ब्रह्मा), बदानुल, चित्रबाहा। चित्रबाहा की चार सन्तानों का उल्लेख है—रावण, कुंभकर्ण, बिबुसनम (विभीषण) तथा सुरपंदकी (शूर्पणखा)। **सेरत कांड** में चित्रबाहा नी इद्रतनी से रावण को उत्पन्न करता है तथा सुकैशी से अंबकर्ण (कुंभकर्ण), सर्पणखा (शूर्पणखा) तथा विभीषण को। इस वृत्तान्त में कुंभकर्ण तथा शूर्पणखा यमल हैं। श्याम के **राम कियेन** में चतुरबक्त का पुत्र लस्तियेन (= पुलस्त्य) की पाँच पत्नियों का उल्लेख किया गया है—

श्री सुनन्दा—कुबेर की माता
चित्रमाली—देवनासुर की माता
सुवर्णमाला—अशधाता की माता
वरप्रभा—मारण की माता

रजता—दशकंठ, कुंभकर्ण, बिभेक (विभीषण), दूषण, खर तथा सम्मनक्खा (शूर्पणखा) की माता (दे० अध्याय ३)।

५३७. महाभारत तथा **रामायण** में रावण-कुंभकर्ण के पूर्वजन्म अथवा उनकी शापवश राक्षस-योनि-प्राप्ति का कहीं भी उल्लेख नहीं है : इसके विषय में अर्वाचीन रामकथाओं का सबसे व्यापक वृत्तान्त यह है कि विष्णु के द्वारपाल जय-विजय रावण कुंभकर्ण के रूप में प्रकट हुए थे। जय-विजय को शाप दिये जाने के प्राचीनतम वृत्तान्त में रावण-कुंभकर्ण का उल्लेख नहीं किया गया है। **भागवत पुराण** में सनकादि विष्णु के द्वारपालों जय-विजय को असुरयोनि प्राप्त होने का शाप देते हैं। विष्णु इस शाप को स्वीकार करते हुए कहते हैं—ये मेरा ध्यान करते रहेंगे और शीघ्र ही मुक्त होकर मेरे पास लौटेंगे। इसके बाद जय-विजय के हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु के रूप में जन्म लेने का वर्णन किया गया है (दे० ३, १५-१७)।

बाद में जय-विजय को दिया हुआ शाप इस तरह परिवर्त्तित किया गया है, कि दोनों को तीन बार जन्म लेना पड़ता है। **पद्मपुराण** में हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु तथा रावण-कुंभकर्ण की अभिन्नता का उल्लेख मिलता है (दे० उत्तरखंड, अध्याय २६६)। **आनन्द रामायण** में जय-विजय द्वारा बैकुंठ में प्रवेश करने से रोके जाने पर अश्विनी कुमार दोनों को इस प्रकार शाप देते हैं, कि वे क्रमशः हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु, रावण-कुंभकर्ण तथा शिशुपाल दंतवक्र के रूप में जन्म लेते हैं। इस पर जय-विजय भी अश्विनी-कुमारों को ऐरावण-महीरावण बन जाने का शाप देते हैं (दे० आनन्द-रामायण ७, १४)।

जलन्धर की पत्नी वृन्दा की कथा के प्रसंग में जय-विजय का भी उल्लेख मिलता है। विष्णु को सहायता देने के कारण वृन्दा जय-विजय को भी शाप देती है जिसके फलस्वरूप दोनों रावण, कुंभकर्ण के रूप में प्रकट होते हैं (दे० ऊपर अनु० ३४७)।

शिव पुराण में यह कहा गया है कि दो शिवगण नारद के शाप के कारण रावण तथा कुंभकर्ण बन गए (दे० ऊपर अनु० ३४८)।

वह्नि पुराण के अनुसार मधुकैटभ शापवश पहले हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु तथा बाद में रावण-कुंभकर्ण के रूप में जन्म लेते हैं (दे० पृ० १७१)। **रामचरितमानस** में रावण जलन्धर का अवतार माना गया है तथा रावण, कुंभकर्ण, विभीषण क्रमशः प्रतापभानु-अरिमर्दन-धर्मरुचि के।

जैन राम कथाओं में राम, लक्ष्मण, सीता, रावण आदि के पूर्वजन्मों की विस्तृत सूचिका दी गई है[1]। जहाँ तक यह नामावली अन्य राम कथाओं से सम्बन्ध रखती है, इसका उल्लेख सीता-जन्म-कथा के विकास के अन्तर्गत किया गया है (दे० ऊपर अनु० ३७३, ३७५)।

राम कियेन के अनुसार नन्दक पहले कैलास पर्वत पर ईश्वर के गणों में से एक था, जिसने ईश्वर से यह वरदान प्राप्त किया था कि जिसकी ओर मैं उंगली से इशारा करूँ वह मर जाए। तदनन्तर नन्दक ने बहुत से देवताओं को मारा। अंत में नारायण अप्सरा का रूप धारण कर नन्दक को नृत्य सिखलाने लगे, जिसमें नन्दक उंगली से अपने शरीर की ओर इशारा कर मर गया। बाद में वह दशग्रीव के रूप में प्रकट हुआ (अध्याय ४)। इस प्रकार की कथा **राम-जातक** में भी मिलती है (पृ० ६)।

५३८. रामायण तथा **महाभारत** में रावण और उसके भाई तपस्या करके ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करते हैं। इस तपस्या में रावण ने अपने नौ सिर ब्रह्मा को समर्पित किये थे (दे० उत्तरकांड, सर्ग १०)। जैन **पउमचरिय** में किसी वरदाता का उल्लेख नहीं है। रावणादि मौसेरे भाई का विभव देखकर विद्याएं सिद्ध करने के लिए साधना करने लगते हैं।

बाद की बहुत सी रचनाओं में शिव के रावण को देवताओं से अवधत्व का वरदान देने का वर्णन किया गया है। **रामायण** के उत्तरकांड के अनुसार भी रावण ने शिव से चंद्रहास खंग प्राप्त किया था (सर्ग १६)। एक अन्य स्थल पर रावण की शिवलिंग-पूजा का वर्णन किया गया है तथा इसका उल्लेख भी मिलता है कि रावण सदा एक सुवर्ण लिंग अपने पास रखता था,

यत्र यत्र च याति रावणो राक्षसेश्वरः।
जाम्बूनदमयं लिंगं तत्र तत्र स्म नीयते॥ ४२॥
(सर्ग ३१)

रघुवंश तथा **दशावतारचरित** के अनुसार रावण ने अपने नौ सिर शिव को समर्पित किए थे, किन्तु ब्रह्मा ने वरदान दिया था (दे० रघुवंश सर्ग १०)। **स्कंदपुराण** के माहेश्वरखंड (दे० अध्याय ८), **पद्मपुराण**

---

१. दे० पउमचरिय पर्व १०३;
गुणभद्रकृत उत्तरपुराण, पर्व ६७, ८९ आदि तथा पर्व ६८, १ आदि।

के उत्तरखंड (अध्याय २६६) पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३, आदि में शिव के रावण तथा उसके भाइयों को वरदान देने का उल्लेख किया गया है।

हिंदेशिया की रामकथा में मुसलमानी प्रभाव के कारण रावण नबी आदम द्वारा अल्लाह से वरदान प्राप्त करता है। **रामकियेन** के अनुसार रावण ने एक यज्ञ किया था जिसके फलस्वरूप वह अवध्य बन गया क्योंकि उस दिन से उसका जीव शरीर से अलग होकर उसके गुरु की रक्षा में रहने लगा (दे० अध्याय ६)।

५३६. रावण तथा मदोदरी के विवाह के विषय में एक **वाल्मीकि रामायण** से सर्वथा भिन्न कथा का अनेक अर्वाचीन रचनाओं में वर्णन किया गया है।

आनन्द रामायण के अनुसार रावण ने अपने शरीर से एक वीणा बनाकर शिव की स्तुति गाई थी, जिसपर शिव ने उसको वर दिया था। उस वर के बल पर रावण ने आत्मलिंग तथा पार्वती को प्राप्त किया। शिव ने उससे कहा था कि लिंग को पृथ्वी पर रख देने से वह अटल हो जायगा। बाद में विष्णु ने विप्र का रूप धारण कर रावण से कहा कि शिव ने धोखा देकर वास्तविक पार्वती को पाताल में मय के घर में छिपाया है। यह सुनकर रावण ने वास्तविक पार्वती को छोड़ दिया तथा आत्मलिंग विष्णु के हाथ सौंपकर पाताल में प्रवेश किया। विष्णु ने लिंग को गोकर्ण में भूमि पर रख दिया तथा रावण ने मय के घर में विष्णु द्वारा निर्मित मदोदरी को प्राप्त किया (दे० १, सर्ग ६ और १३)।

दक्षिण भारत की एक रामकथा में इससे मिलता जुलता वृत्तान्त मिलता है। अंतर यह है कि नारद विष्णु का भाग लेकर रावण से कहते हैं कि वास्तविक पार्वती एक तालाब में छिपी हुई है। इसपर वह मदोदरी को तालाब से निकाल कर उसे लंका ले जाता है। उस वृत्तान्त के अनुसार मंडोदरी (मंदोदरी) वास्तव में एक मछूक है, जिसने नारी का रूप धारण किया था (दे० पाश्चात्य वृ० नं० १, अध्याय ४)। **काश्मीरी रामायण** में भी रावण के शिवलिंग को खो बैठने की कथा मिलती है[1]।

---

१. दे० युद्धकाड नं० ४७। रावण के पार्वती के स्थान पर मंदोदरी को प्राप्त करने की उपर्युक्त कथा अन्यत्र भी पाई जाती है। दे० पाश्चात्य वृत्तान्त १६, पृ० २९१ तथा पी० थोमस, एपिक्स मिथ्स एंड लेजेन्डस आव इंडिया, पृ० ५२।

राम कियेन में मंडोदरी की कथा का एक अन्य रूप मिलता है। किसी मंडूक ने चार ऋषियों का जीवन बचाया था और पुरस्कार-स्वरूप ऋषियों ने उसे मंडो नामक एक अत्यन्त सुंदर युवती में बदल कर उसे ईश्वर को समर्पित किया। ईश्वर ने उसे उमा को दिया। बाद में ईश्वर के दिए हुए वर के बल पर रावण ने उमा को प्राप्त किया। इसपर नारायण ने माली का रूप धारण कर रावण के देखने में एक वृक्ष उलटे ढंग से रोपने का प्रयत्न किया। रावण उसकी मूर्खता की टिप्पणी करने लगा, जिसपर नारायण ने कहा कि जिसने मंडो को छोड़कर उमा को चुन लिया वह मुझसे अधिक मूर्ख है। यह सुनकर रावण ईश्वर के पास गया और उसने उमा को लौटाकर मंडो को ले लिया (दे० अध्याय ५)।

हिंदेशिया की रामकथाओं में रावण दशरथ के पास जाकर वास्तविक मंदोदरी के स्थान पर जादू द्वारा निर्मित एक अन्य मंदोदरी को ले जाता है (दे० ऊपर अनु० ३८८)। यह कथा उपर्युक्त वृत्तान्त का विकृत रूप मात्र प्रतीत होता है।

४

हनुमान् की जन्म-कथा

५४०. रावणचरित के अंत में हनुमान् के बालचरित का भी दो सर्गों में वर्णन किया गया है, जिसमें इनकी जन्म-कथा, इन्द्र द्वारा आहत किए जाने तथा ऋषियों द्वारा अपनी शक्ति न जानने के शाप का उल्लेख है (दे० सर्ग ३५-३६)। उपर्युक्त सामग्री किष्किंधाकांड में भी मिलती है, लेकिन वहाँ ऋषियों के शाप का निर्देश नहीं है (दे० सर्ग ६६)। जन्मकथा को छोड़कर उपर्युक्त वृत्तान्त का आगे चलकर कोई विशेष विकास नहीं हुआ है।

हनमान् का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सीता का पता लगाना है, जिसका वर्णन सुन्दरकांड की आधिकारिक कथावस्तु है। इसका विश्लेषण १८ वें अध्याय में किया गया है। हनुमान् के अन्य प्रसिद्ध कृत्य (लंकादहन तथा ओषधिपर्वत का ले आना) समीचीन कारणों से बाद का विकास माने जाते हैं (दे० उपर अनु० ४६२, ४८२)। महीरावण की कथा के प्रसंग में हनुमान् के पुत्रों के विषय में विभिन्न कथाएं पाई जाती हैं, जिनका उल्लेख भी यथास्थान किया गया है (दे० ऊपर अनु० ५१४)। हनुमान् की अत्यन्त लोकप्रियता के कारण अनेक विद्वानों ने यह अनुमान किया है कि हनुमान् की कथा रामायण के पूर्व ही स्वतन्त्र रूप से प्रचलित थी। इस मत का विश्लेषण तथा खंडन निबन्ध के सातवें अध्याय में किया गया है (दे० अनु० १०३)। अतः प्रस्तुत परिच्छेद में केवल हनुमान् की जन्म-कथा से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री का निरूपण किया जाएगा।

क. वायु के पुत्र

५४१. **वाल्मीकि रामायण** के अनुसार पुंजिकस्थला[1] नामक अप्सरा ने शापवश वानरयोनि प्राप्त की थी। वह अंजना नामक कुंजर की पुत्री थी

१. तेलगू द्विपाद रामायण के अनुसार अग्नि ने पुंजिकस्थला को शाप दिया था। दे० ४, ३। दाक्षिणात्य रामायण के दो स्थलों पर जो अन्य पाठों में नहीं मिलते इसका उल्लेख किया गया है कि रावण को पुंजिकस्थला के कारण शाप दिया गया था। दे० युद्धकांड, सर्ग १३ और ६०।

रूप में प्रकट हुई और केसरी ने उससे विवाह किया। बाद में वायु ने अंजना पर अनुरक्त होकर हनुमान् को उत्पन्न किया (दे० ४, ६६ और ७, ३५)। बालकांड में भी इसका उल्लेख किया गया है कि वायु हनुमान् के जन्मदाता हैं (दे० सर्ग १७)।

५४२. गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में हनुमान् अपने जन्म का वर्णन करते हुए अपने पिता द्वारा प्राप्त किए हुए वरदान का उल्लेख करते हैं। केसरी ने धवल नामक दिग्गज का वध किया था जो ऋषियों को कष्ट दिया करता था। उन ऋषियों से वर पाकर केसरी ने एक 'मारुतविक्रम, कामरूपी तथा अव्यय' पुत्र को मांगा। इस प्रार्थना के फलस्वरूप अंजना ने बाद में वायु की सहायता से हनुमान् को जन्म दिया (दे० गौ० रा० ५,३ तथा प० रा० ४, ५८)।

५४३. जैन राम कथाओं में हनुमान् की रामायणीय जन्मकथा का विकृत रूप पाया जाता है। **पउमचरिय** के अनुसार आदित्यपुर के राजकुमार पवनंजय (अथवा वायुकुमार) ने महेंद्रपुर की राजकुमारी अंजनी से विवाह किया था। रावण की ओर से वरुण से युद्ध करते हुए वह किसी रात को लौट कर छिपके अपनी पत्नी से मिलता है और पुनः युद्ध करने जाता है। पति की अनुपस्थिति में गर्भ होने के कारण अंजनी बाद में ससुराल तथा मैके से बहिष्कृत की जाती है और एक गुफा में पुत्र को जन्म देती है। प्रतिसूर्य नामक राजा माता तथा पुत्र को देख कर दोनों को हनूरुहपुर ले आता है, जिससे अंजनी के पुत्र का नाम हनुमान् रखा गया है। युद्ध से लौट कर पवनंजय अपनी पत्नी के सतीत्व का प्रमाण देता है और अंजनी ससुराल लौटती है (दे० पर्व १५-१८)। गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में हनुमान् का एक अन्य नाम अमितवेग है। उस रचना में वह राजा प्रभंजन तथा अंजनादेवी का पुत्र माना गया है (दे० पर्व ६६, २७५)।

ख. शिव के अवतार

५४४. अनेक शैव तथा शाक्त पुराणों में तथा अन्य रचनाओं में भी हनुमान् शिव के अवतार माने जाते हैं। प्रारम्भ में उनके रुद्रावतार होने का उल्लेख मात्र मिलता है, किन्तु बाद में इसके विषय में अनेक कथाओं की भी कल्पना कर ली गई है। **स्कंदपुराण** के अवंतीखंड (अध्याय ७६) तथा रेवाखंड में (अध्याय ८४) हनुमान् को रुद्रांश बताया गया है; **महानाटक** में भी इसका उल्लेख मिलता है (दे० अंक ६, २)।

महाभागवत (देवी) पुराण (अध्याय ३७) तथा **बृहद्धर्म पुराण** (अध्याय १८) में विष्णु के अवतार धारण करने की प्रतिज्ञा करते समय शिव विष्णु से कहते हैं कि मैं वायु का पुत्र बन कर वानर के रूप में तुम्हारी सहायता करूंगा—**अहं वानररूपेण संभूय पवनात्मजः साहाय्यं ते करिष्यामि** (दे० महाभागवत पुराण, अध्याय ३७)।

आनन्द रामायण (१, ११), राममोहन वंद्योपाध्याय कृत **रामायण** आदि रचनाओं में भी हनुमान् रुद्रावतार माने गए हैं[1]। **राम कियेन** के वृत्तान्त से भी ऐसी ध्वनि निकलती है (दे० नीचे अनु० ५५०)।

५४५. **शिव पुराण** की शतरुद्रसंहिता के अनुसार विष्णु का मोहिनीरूप देखकर शिव का वीर्य पतन हुआ था। सप्तर्षियों ने उस वीर्य को गौतम की पुत्री अंजना के कान मे रख दिया था। बाद में अंजना ने हनुमान् को जन्म दिया (दे० अध्याय २०)। इससे मिलती जुलती कथाएं अन्यत्र भी मिलती हैं[2]।

५४६. दक्षिण भारत के एक वृत्तान्त में हनुमान् शिव तथा पार्वती के पुत्र माने जाते हैं। कथा इस प्रकार है—

किसी दिन ईश्वर तथा परमेश्वरी ने देवताओं को अपना नृत्य देखने का निमंत्रण दिया था। जब अतिथि आने लगे परमेश्वरी ने दो वानरों को क्रीड़ा करते हुए देखा और ईश्वर से वानर-वनारी के रूप में क्रीड़ा करने की प्रार्थना की। ईश्वर ने इस प्रार्थना को स्वीकार किया, जिसके फलस्वरूप परमेश्वरी को गर्भ हुआ। इतने में देवताओं ने वायु को दोनों की खोज में भेज दिया। एक वानर को जन्म देने के भय से परमेश्वरी ने वायु से विनय की कि वह भ्रूण को किसी अन्य स्त्री को दे दें। इस पर वायु ने भ्रूण को अंजना के गर्भ में पहुँचाया, जिसने बाद में एक वानर को जन्म दिया[3]। हिंदेशिया की हनुमान् की जन्मकथा उपर्युक्त वृत्तान्त का विकृत रूप है,

---

१. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३ (भाग १ पृ० ३३६), डब्लू वार्ड० : ए व्यू आव दि हिस्ट्री... भाग ३, पृ० १९७; और गुजरात की एक कथा (दे० नीचे अनु० ५४२)।

२. दे० एशियाटिक रिसर्चस भाग ११ पृ०१४१; आर० सी० टेम्पल, इ० ए० भाग ११ (१८८८), डब्लू क्रूकः ट्रायबस एंड कास्टस भाग १, पृ० २६९; एच० ए० रोस० ग्लोसरी आव दि ट्रायबस ... भाग २, पृ० ३९१।

३. दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १ (पृ० ४२-४४), नं० ३, ५ और १६।

जिसमें ईश्वर, परमेश्वरी के स्थान पर राम-सीता का उल्लेख किया गया है (दे० आगे अनु० ५४६)।

ग. विष्णु के अंशावतार

५४७. अनेक रामकथाओं से ऐसी ध्वनि निकलती है कि हनुमान् विष्णु के अंशावतार हैं, यद्यपि इसका कहीं भी स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। **आनन्द रामायण** में कहा गया है कि दशरथ-यज्ञ के अवसर पर एक गीध ने कैकेयी का पायस छीन कर उसे अजनी-पर्वत पर फेंक दिया था (दे० १, १)। उसी रामायण के एक अन्य स्थल के अनुसार अजनी उस पायस को खाकर गर्भवती हो गई थी (दे० १, १३)। गुजरात की एक दंतकथा के अनुसार भी गीध ने पायस को अंजनी के हाथ में गिराया था।

एक अन्य कथा के अनुसार अंजनी नामक ब्राह्मणी शिव से संतति का वरदान प्राप्त कर तथा उनके कथनानुसार चील का गिराया हुआ पायस खाकर गर्भवती हुई और हनुमान् की माता बन गई [1]।

घ. राम के पुत्र

५४८. हिंदेशिया की राम-कथाओं में हनुमान् राम तथा सीता के पुत्र माने जाते हैं। यह वृत्तान्त दो भारतीय कथाओं के मिश्रण से उत्पन्न हुआ है। **शिवपुराण** के उपर्युक्त वृत्तान्त के अनुसार अजना गौतम ऋषि की पुत्री है। पंजाब तथा गुजरात में भी अंजना का गौतम ऋषि की पुत्री के रूप में उल्लेख मिलता है। गुजरात की कथा के अनुसार गौतम की पुत्री अंजनी ने अहल्या तथा इंद्र के व्यभिचार को छिपाने में सहायता की थी, जिस पर गौतम ने अंजनी को गर्भवती हो जाने का शाप दिया था। इस पर अंजनी शिव से वरदान प्राप्त करने के लिए तपस्या करने लगी। शिव की आज्ञा से नारद ने अंजनी के कान में मंत्र कह दिया जिसके फलस्वरूप उसने हनुमान् को जन्म दिया। उसका पुत्र इसलिए वानर के रूप में प्रकट हुआ कि अंजनी मंत्र ग्रहण करते समय कैशी नामक वानर की ओर देख रही थी [2]।

---

१. ई० मूर, वही, पृ० ३१६; पी० थोमस की लेजन्डस आव इंडिया में इससे मिलती जुलती कथा पाई जाती है, दे० पृ० ८०।

२. आर० ई० एन्टहोवन, फालक्लोर आव गुजरात। इं० ए०, भाग ४०, सप्लेमेंट पृ० ५४।

पंजाब की कथा के अनुसार गौतम ने गंगास्नान से लौटकर अपनी पुत्री अंजनी से पूछा कि घर में कौन है, अंजनी ने उत्तर दिया—मार्जार, जिसके दो अर्थ हैं, मार्जार (विडाल) तथा मा का यार। इस द्वयर्थता के कारण गौतम ने अपनी पुत्री को गर्भवती हो जाने का शाप दिया। फलस्वरूप उसने हनुमान् को जन्म दिया[1]। इस कथा का प्राचीनतम रूप **कथासरित्सागर** में सुरक्षित है जिसमें गौतम की पुत्री का उल्लेख नहीं किया गया है। दिव्य ज्ञान द्वारा अपनी पत्नी का व्यभिचार जान कर गौतम ऋषि अकस्मात् घर पहुँचे, जिसपर इंद्र ने मार्जार का रूप धारण कर लिया। गौतम के पूछने पर अहल्या ने प्राकृत में इस प्रकार उत्तर दिया—एसो ठिओ खु मज्जारो (एषः स्थितः खलु मार्जारः)। मज्जारो के दो अर्थ हैं—मार्जार अथवा मेरा जार। तदन्तर गौतम ने दोनों को शाप दिया—अहल्या को शिला बनने का तथा इंद्र को सहस्रयोनि बनने का (दे० ३,१७)।

गौतम की पुत्री अंजनी की कथा तथा उपर्युक्त ईश्वर परमेश्वरी के वानर, वानरी के रूप में हनुमान् को उत्पन्न करने की कथा के मिश्रण से हिंदेशिया का निम्नलिखित वृत्तान्त उत्पन्न हुआ है।

५४६. गौतम ऋषि की पत्नी के तीन संतानें थीं। अंजनी (गौतम की पुत्री) और दो पुत्र बालि तथा सुग्रीव (सूर्य के पुत्र)। **सेरत कांड** के अनुसार अंजनी अपनी माता का व्यभिचार प्रकट करने के बाद तपस्या करने जाती है। **सेरी राम** के अनुसार गौतम अपनी पुत्री को १०० वर्ष तक सूई की नोक पर खड़ी रहने का शाप देते हैं। इसके बाद अंजनी के हनुमान् की माता बन जाने की कथा दो प्रकार से दी जाती है। **सेरी राम** के एक पाठ के अनुसार राम तथा सीता वनवास के समय एक तालाब में नहाकर वानर-वानरी बन जाते हैं और वृक्षों में क्रीड़ा करते हैं, जिसके फलस्वरूप सीता को गर्भ होता है। लक्ष्मण दोनों को फंसाकर एक दूसरे तालाब में डुबाते हैं, जिससे वे पुनः मनुष्य बन जाते हैं। राम बाद में सीता का भ्रूण निकालते हैं तथा वायु देव उसे सूई की नोक पर खड़ी हुई अंजनी के मुंह में डाल देते हैं। **सेरी राम** के एक अन्य पाठ के अनुसार सीता हनुमान् की माता नहीं हैं। राम अंजनी को देखकर अनुरक्त हो जाते हैं और वीर्यपतन होने पर उस वीर्य को एक पत्ते में लपेटकर वायु के द्वारा अंजनी के मुंह में रखवाते हैं।

---

१. मैकालिफः दि सीख रेलिजन, भाग ६, पृ० ५२।

हिंदेशिया की सभी अन्य अर्वाचीन राम-कथाओं में भी हनुमान् को राम का पुत्र माना गया है।

५५०. श्याम के **राम कियेन** में अंजनी का नाम स्वाहा है। वह अपने पिता गौतम से अपनी माता का व्यभिचार प्रकट करती है। इस पर उसकी माता उसे वानर को जन्म देने तक एक पैर पर खड़ी रहने का शाप देती है। बाद में शिव स्वाहा की दशा देखकर उसपर दया करते हैं और वायु को अपनी शक्ति तथा अपने अस्त्रों की शक्ति के साथ स्वाहा के पास भेज कर उन्हें स्वाहा के मुंह में रख देने की आज्ञा देते हैं। फलस्वरूप तीस महीने के बाद हनुमान् स्वाहा के मुंह से वानर के रूप में निकलते हैं (दे० अध्याय ६-७)। श्याम के **राम जातक** में राम सीता की खोज करते हुए एक फल खाते हैं, जिससे वह तीन वर्ष के लिए वानर ही बन जाते हैं। फायेंगसी (अंजनी-स्वाहा) ने भी उस फल को खाया था। दोनों वानर-वानरी के रूप में मिलकर हनुमान् को उत्पन्न करते हैं।

५

सीता-त्याग

५५१. प्रस्तुत परिच्छेद में सीतात्याग के विकास की रूपरेखा अंकित करने का प्रयत्न किया जाएगा। प्रथम उन रचनाओं का उल्लेख होगा जिनमें सीतात्याग का अभाव है। तत्पश्चात साहित्य में उनके आगमन के कालक्रमानुसार सीतात्याग के भिन्न भिन्न कारणों का निरूपण किया जायगा। अंत में इस वृत्तान्त की चरम सीमा का वर्णन होगा, जिसके अनुसार रामचरित्र का आदर्श सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सीतात्याग अवास्तविक बताया गया है।

निम्नलिखित तालिका से प्रस्तुत वृत्तान्त के विकास के भिन्न भिन्न सोपान स्पष्ट होंगे—

(क) सीतात्याग का अभाव

(१) आदि रामायण; महाभारत; प्राचीन पुराण--हरिवंश, वायु पुराण, विष्णु पुराण और नृसिंह पुराण।

(२) अनामकं जातकं; गुणभद्रकृत उत्तरपुराण

ख) सीतात्याग के भिन्न भिन्न कारण

(अ) लोकापवाद

(१) वाल्मीकि रामायण का उत्तरकांड, रघुवंश, उत्तररामचरित, कुन्दमाला, दशावतारचरित इत्यादि।

(२) पउमचरिय, पद्मचरित

(आ) धोबी की कथा

(१) बृहत्कथा, कथासरित्सागर, भागवत पुराण

(२) जैमिनीय अश्वमेध, पद्मपुराण आदि

(३) तिब्बती रामायण

(इ) रावण का चित्र

(१) हेमचंद्रकृत जैन रामायण (१२वीं श० ई०)।

(२) कृत्तिवास तथा चंद्रावती के **बंगाली रामायण सेरी-राम, काश्मीरी रामायण, लोकगीत, गुजराती रामायणसार सेरत कांड, आनन्द रामायण हिकायत महाराज रावण।**

(३) सिंहलद्वीप की **रामकथा**
काम्बोदिया का **रेआम केर।**
श्याम का **राम कियेन** और **राम-जातक**

(ई) परोक्ष कारण

(१) भृगु का शाप— **वाल्मीकि रामायण**
(२) शुकी का शाप—**पद्मपुराण**
(३) तारा का शाप—**विलंका रामायण।**

(ग) अवास्तविक सीतात्याग

(१) **गीतावली**
(२) **अध्यात्म रामायण**
(३) **आनन्द रामायण**

क. सी ता त्या ग का अ भा व

५५२. विशेषज्ञों की सर्वसम्मति के अनुसार प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** का उत्तरकांड प्रक्षिप्त माना जाता है, अतः वाल्मीकिकृत **आदि रामायण** में राम-कथा राम के अभिषेक तथा उनके सुखद राज्य के संक्षिप्त वर्णन पर समाप्त होती थी और इसमें सीतात्याग का उल्लेख नहीं था (दे० ऊपर अनु० १२१-१२३)। इस निर्णय की पुष्टि **महाभारत** से प्राप्त होती है जिसमें सीतात्याग की ओर कहीं भी निर्देश नहीं किया गया है, विस्तृत रामोपाख्यान में भी नहीं जो **रामायण** के किसी प्राचीन रूप पर निर्भर है। प्राचीन पुराणों में, जहां राम-कथा मिलती है, सीतात्याग का संकेत मात्र भी नहीं किया गया है; उदाहरणार्थ—**हरिवंश** (अध्याय ४१) **वायुपुराण** (अध्याय ८८), **विष्णुपुराण** (४,४) तथा **नृसिंह पुराण** अध्याय ४७-५२)।

५५३. बौद्ध **अनामकं जातकम्** का अनुवाद २५१ ई० में चीनी भाषा में हुआ था। इसमें तो सीता-त्याग का वर्णन नहीं किया गया है,

फिर भी अयोध्या लौटने के बाद सीता के विषय में लोकापवाद का उल्लेख मिलता है। सम्भव है लोकापवाद के कारण सीतात्याग के वृत्तान्त का पूर्व रूप **अनामकं जातकम्** की निम्नलिखित कथा में सुरक्षित हो।

'राजा ने रानी से कहा—पति से अलग दूसरे के घर में निवास करने के कारण स्त्री के चरित्र पर संदेह किया जाता है। तुम्हें स्वीकार करने में परम्परा के अनुसार कहां तक औचित्य है।

रानी ने उत्तर दिया—मैं एक नीच की गुफा में थी, किन्तु फिर भी मैं उसमें पंकज की तरह रही थी। यदि मुझमें सतीत्व हो तो पृथ्वी फट जाए।

पृथ्वी फट गई और रानी ने कहा—मेरा सतीत्व प्रमाणित हुआ। इसके बाद राजा और रानी सुख के साथ रहने लगे और सब वर्ण अपने अपने धर्म का पालन करते रहे।'

गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में लंका से अयोध्या लौटने के बाद सीता के आठ पुत्र उत्पन्न होते हैं और सीतात्याग की ओर कहीं भी निर्देश नहीं किया गया है।

ख. सीतात्याग के भिन्न भिन्न कारण

५५४. राम-कथा के अधिकांश लेखकों ने प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकांड के अनुकरण पर सीतात्याग का वर्णन किया है। परित्याग के भिन्न भिन्न कारणों के अनुसार ये वृत्तान्त तीन वर्गों में विभक्त किये जा सकते हैं।

अ. लोकापवाद

वालमीकिकृत युद्धकांड में रावणवध के पश्चात् जब सीता राम के सामने लाई जाती हैं, राम के हृदय में जनवाद[1] के भय से परस्पर-विरोधी भाव उत्पन्न होते हैं,

पश्यतस्तां तु रामस्य समीपे हृदयप्रियां।
जनवादभयाद् राज्ञो बभूव हृदयं द्विधा॥ ११॥

(सर्ग ११५)

---

१. गौडीय पाठ में राम के कटु शब्द तो मिलते हैं लेकिन जनवाद का उल्लेख नहीं है।

इसपर राम सीता से कहते हैं, 'जो अपमान रावण ने किया था उसका प्रतिकार हुआ। अब तुम जहां चाहो जाओ। मैं तुम पर संदेह करता हूं। रावण ने अवश्य तुम्हारा सतीत्व नष्ट कर दिया है। जिस स्त्री ने दूसरे के घर में निवास किया है उसे कौन पुरुष ग्रहण कर सकता है। मैं कुल पर कलंक लगाकर तुमको कैसे ग्रहण करूं'।

प्राप्तचारित्रसंदेहा मम प्रतिमुखे स्थिता ॥ १७ ॥
कः पुमांस्तु कुले जातः स्त्रियं परगृहोषिताम्।
तेजस्वी पुनरादद्यात् सुहृल्लोभेन चेतसा ॥ १६ ॥
रावणांकपरिक्लिष्टां दुष्टां दुष्टेन चक्षुषा।
कथं त्वां पुनरादद्यां कुलं व्यपदिशन्महत् ॥१०॥

राम के ये कठोर शब्द सुनकर सीता लक्ष्मण से चिता तैयार करने को कहती हैं और अग्नि में प्रवेश कर अपने सतीत्व का प्रमाण देती हैं।

उद्धृत श्लोकों में कुलमर्यादा, लोकापवाद, सीता के सतीत्व और निर्दोषता पर संदेह का उल्लेख है। इस सामग्री से उत्तरकांड का सीतात्याग का प्राचीनतम वृत्तान्त स्वाभाविक रीति से उत्पन्न माना जा सकता है। संक्षेप में इसका रूप इस प्रकार है—

गर्भवती सीता किसी दिन राम से तपोवन देखने की इच्छा प्रकट करती हैं। उनको अगले दिन भेज देने की प्रतिज्ञा करके राम अपने मित्रों के साथ बैठकर परिहास की कहानियां सुनते हैं (**कथा बहुविधा : परिहाससमन्विताः**)। संयोगवश राम भद्र से पूछते हैं—'मेरे, सीता तथा भरत आदि के विषय में लोग क्या कहते हैं'। इसपर भद्र सीता के कारण लोकापवाद और इसके जनता के आचरण पर कुप्रभाव का उल्लेख करता है। लोग कहते हैं—'हमको भी अपनी स्त्रियों का ऐसा आचरण सहना होगा'।

अस्माकमपि दारेषु सहनीयं भविष्यति।
यथा हि कुरुते राजा प्रजास्तमनुवर्तन्ते ॥ १६ ॥
(सर्ग ४३)

यह सुनकर राम लक्ष्मण को बुलाते हैं और सीता को गंगा के उस पार छोड़ आने का आदेश देते हैं। तपोवन देखने के बहाने लक्ष्मण सीता को रथ

पर ले जाते हैं और वाल्मीकि के आश्रम के समीप छोड़ देते हैं (दे० उत्तर-कांड सर्ग ४२ आदि)।

उपर्युक्त कथा कालिदास के **रघुवंश** में भी मिलती है; अंतर यह है कि इसमें भद्र मित्र न होकर गुप्तचर बताया गया है (दे० १४ वां सर्ग)। **उत्तररामचरित, कुन्दमाला, दशावतारचरित** आदि प्राचीन रचनाओं में इस प्रकार का वर्णन किया गया है। **उत्तररामचरित** में गुप्तचर का नाम दुर्मुख है (दे० अंक १)।

५५५. विमल सूरि कृत जैन **पउमचरिय** में सीतात्याग का विस्तृत तथा किंचित परिवर्द्धित वर्णन किया गया है।

राम स्वयं गर्भवती सीता को वन में विभिन्न जैन चैत्यालय दिखला रहे थे कि राजधानी के नागरिक उनके पास आए और अभयदान पाकर उन्होंने अपने आने का कारण बताया। पहले वे सर्वसाधारण के दुष्ट स्वभाव का वर्णन करते हैं, जिसके निम्नलिखित अवगुण होते हैं –

पावमोहित्यमई (पापमोहितमति)
परदोसग्गहणरउ (परदोषग्रहणरत)
सहाववंको (स्वभाव-कुटिल)
सठसीलो (शठशील)

ऐसी जनता में सीता के अपवाद को छोड़कर किसी और बात की चर्चा नहीं होती। नागरिकों का यह भाषण सुनकर राम सेनापति कृतान्तवक्त्र को बुलाकर सीता को जिनमंदिर दिखलाने के बहाने उनको गंगा के पार भयानक वन (निमानुष वन) में छोड़ देने का आदेश देते हैं।

आगे का वर्णन उत्तरकांड से बहुत भिन्न है, क्योंकि पुंडरीकपुर के राजा वज्रजंघ सीता का विलाप सुनकर उनको अपने महल में ले जाते हैं, जहां सीता के दो पुत्र उत्पन्न होते हैं (दे० पर्व ९३)।

पउमचरिय के इस वृत्तान्त का संस्कृत अनुवाद रविषेण के **पद्म-चरित** में भी मिलता है। इसमें राम के सीता को ग्रहण करने के दुष्परिणाम के वर्णन में परिवर्द्धन किया गया है। समस्त प्रजा मर्यादा-रहित बताई जाती है। स्त्रियों का हरण हुआ करता है और बाद में वे पुनः अपने अपने घर लौट कर स्वीकृत की जाती है।

प्रजाधुनाखिला जाता मर्यादारहितात्मिका ॥ ४० ॥
स्वभावादेव लोकोऽयं महाकुटिलमानस : ।
प्रकटं प्राप्य दृष्टांतं न किंचितस्य दुष्करम् ॥ ४२ ॥

(अध्याय ६६)

आ. धोबी का वृत्तान्त

५५६. सीता-त्याग की कथाओं का एक दूसरा वर्ग मिलता है जिसमें लोकापवाद का एक विशेष उदाहरण त्याग का कारण बताया गया है। एक पुरुष (बाद में यह धोबी कहा जाता है) अपनी पत्नी को, जो घर से निकली थी, वापस लेने से इनकार करते हुए, कहता है—मैं राम की तरह नहीं हू जिन्होंने दीर्घकाल तक दूसरे के घर में रहने के पश्चात् सीता को ग्रहण किया।

इस वृत्तान्त का सर्वप्रथम वर्णन सम्भवतः आजकल अप्राप्य गुणाढ्यकृत **बृहत्कथा** में विद्यमान था और अब सोमदेवकृत **कथासरित्सागर** में सुरक्षित है। कथा इस प्रकार है :—

'एक दिन अपने नगर में गुप्तवेश में घूमते हुए राजा ने देखा कि एक पुरुष अपनी स्त्री को हाथ से पकड़कर अपने घर से निकाल रहा है और यह दोष दे रहा है कि तू दूसरे के घर गयी थी। इसपर वह स्त्री कहती है—'राम ने सीता को राक्षस के घर रहने पर भी नही छोड़ा; यह मेरा पति राम से बढ़कर है, जो मुझे बंधु के गृह जाने पर निकाले देता है। यह सुनकर राम को बहुत दुःख हुआ और उन्होंने लोकापवाद के भय से गर्भवती सीता को वन में छोड़ दिया' (दे० ६, ५१)।

भागवत पुराण में जो वृत्तान्त मिलता है वह **कथासरित्सागर** की उपर्युक्त कथा से बहुत कुछ मिलता जुलता है (दे० ६, ११)।

५५७. जैमिनीय अश्वमेध (अध्याय २५) तथा **पद्मपुराण** (४, ५५) की सीतात्याग की कथाओं का मूलस्रोत एक ही प्रतीत होता है, क्योंकि दोनों में शाब्दिक समानता के अतिरिक्त एक नया तत्व मिलता है—जिस पुरुष ने अपनी पत्नी को निकाला वह धोबी कहा जाता है।

आगे चलकर धोबी की यह कथा व्यापक हो गई है। **तामिल रामायण** का उत्तरकांड (७,७), नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार, राम-**

चरितमानस के प्रक्षिप्त लवकुशकांड आदि में इसका वर्णन किया गया है [1]।

५५८. तिब्बती रामायण का वृत्तान्त **कथासरित्सागर** तथा **भागवत पुराण** की कथा से विकसित प्रतीत होता है। उसमें जनश्रुति का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। राम किसी पुरुष [2] को अपनी व्यभिचारिणी पत्नी से झगड़ा करते सुनते हैं। पति कहता है—'तुम अन्य स्त्रियों की तरह नहीं हो'। इस पर पत्नी उत्तर देती है—'तुम स्त्रियों के विषय में क्या जानते हो। सीता को देख लो; एक लाख वर्ष तक वह दशग्रीव के साथ रही, फिर भी राम ने उसे ग्रहण कर लिया'।

यह सुनकर राम को सीता के विषय में संदेह उत्पन्न होता है और वह छिपकर उस स्त्री से मिलते हैं। स्त्रियों का स्वभाव समझाते हुए वह राम से यों कहती है—

'ज्वर-पीड़ित मनुष्य जिस प्रकार शीतल सरिता का निरन्तर स्मरण करता है,

ऐसे ही निरन्तर काम पीड़िता स्त्री रूपवान् पुरुष का स्मरण करती रहती है।

जब तक उसे कोई देखता अथवा सुनता हो वह निंदनीय आचरण नहीं करती,

लेकिन एकान्त में, बंधन से मुक्त होकर, वह परपुरुष के साथ भी अपनी कामपीड़ा शान्त कर लेती है।'

---

१. पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ७, ८ तथा १३ और लोकगीतों में भी धोबी की कथा का निर्देश मिलता है। दे० दुर्गाप्रसाद सिंह द्वारा संकलित भोजपुरी लोकगीत पृ० ११०। पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १८ के अनुसार राम धोबी के शब्द सुनने के बाद सीता को महल ही में त्यागकर साधू बन जाते हैं और दुनियाँ भर घूमते फिरते हैं (भाग ३, पृ० १४)।
पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १४ के अनुसार राम लक्ष्मण को बुलाकर सीता को ले जाने तथा मार डालने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण अपने बाण पर किसी वृक्ष का लाल रंग चढ़ाकर राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता का वध हुआ है (दे० पृ० ६१९)।

२. डा० एफ०डब्लू० थो० स का अनुमान है कि यह सम्भवतः एक लिच्छवी रजक है।

यह सुनकर राम के मन में सीता पर शंका सुदृढ़ हो जाती है। घर जाकर वह सीता को कहीं भी चले जाने की आज्ञा देते हैं। इस पर सीता अपने दो पुत्रों के साथ किसी आश्रम की ओर प्रस्थान करती हैं।

इस वृत्तान्त में उस पुरुष के आक्षेप के अतिरिक्त एक नया कारण भी प्रस्तुत किया गया है : राम की सीता पर शंका। आगे चलकर राम की इस शंका को अधिक युक्तिसंगत बना देने के लिए एक सर्वथा नवीन वस्तु की कल्पना कर ली गई है, अर्थात् सीता के पास रावण का चित्र।

इ. रावण का चित्र

५५६. रावण के चित्र का वृत्तान्त, जनसाधारण के मनोविज्ञान के अनुकूल होने के कारण, बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। गुजरात से लेकर बंगाल तक, और काश्मीर से सिंहलद्वीप तक समस्त भारतवर्ष में फैलकर वह हिंदेशिया, कम्बोदिया तथा श्याम में भी पाया जाता है।

इस कथा की प्राचीनता संदिग्ध है। भारत में इसका सबसे प्राचीन उल्लेख गुजरात निवासी हेमचन्द्र के **जैन रामायण** में मिलता है, जिसकी रचना १२ वीं शताब्दी में हुई थी। विदेशी रामकथाएं, जिनमें रावण के चित्र का उल्लेख किया गया है, १५ वीं शताब्दी के बाद की हैं। संक्षेप में हेमचंद्र की कथा इस प्रकार है—

सीता के गर्भवती हो जाने के बाद उनकी तीन सपत्नियाँ उनसे पहले से अधिक ईर्ष्या करने लगीं। इन तीनों के अनुरोध से विवश होकर सीता ने यह कहकर रावण के चरणों का चित्र खींच दिया—मैंने रावण की ओर कभी दृष्टिपात नहीं किया। तदुपरांत सपत्नियों ने राम को यह चित्र दिखलाया और उसका समाचार दासियों द्वारा जनता में फैला दिया[1]। इसके थोड़े समय बाद नागरिकों ने राम के पास आकर सीता के विषय में लोकापवाद का वर्णन किया। उसी रात को राम गुप्त वेश धारण कर नगर में घूमने गए और उन्होंने सीता के कारण अपनी निन्दा सुन ली। फल-स्वरूप उन्होंने अगले दिन सीता को वन में छोड़ देने का आदेश दिया।

---

१. देवविजयगणि (१५९६ ई०) के जैन रामायण में स्त्रियां राम से कहती हैं कि सीता रावण के चरणों की पूजा करती है—स्वामिन् एषा सीता रावणे मोहिता रावणांघ्री भूमौ लिखित्वा पुष्पादिभिः पूजयति।

इस वृत्तान्त में रावण के चित्र को प्रधानता नहीं मिली है, यह केवल जनता में अपवाद का कारण माना गया है। आगे चलकर यह चित्र सीतात्याग का प्रधान कारण बन गया है।

५६०. १५ वीं शताब्दी के कृत्तिवास कृत **बंगाली रामायण** में सीता की सखियाँ जिज्ञासा से प्रेरित होकर सीता से रावण का चित्र खींचने का अनुरोध करती हैं। सीता अपने शयनागार के फर्श पर रावण का चित्र खींच लेती हैं और सखियों के चले जाने के बाद वह थकित होकर उस चित्र के पास सो जाती हैं। राम आकर यह देखते हैं और सीता पर शंका करके उनको त्याग देते हैं। चन्द्रावती के **बंगाली रामायण** (१६ वीं श० ई०) तथा मलय के **सेरी राम** मे कुकुआ (मलय में किकुवी), कैकयी की पुत्री, के बहकाने में आकर सीता अपने छोटे पंखे पर रावण का चित्र खींचती है। बाद में कुकुआ सोती हुई सीता की छाती पर रावण के इस चित्र को रख देती है और राम को बुलाती है। **सेरी राम** में इसका भी उल्लेख किया गया है कि सीता के निर्वासन के १२ वर्ष तक किकुवी देवी तथा सब पशु गूंगे रह गए।

काश्मीरी रामायण में कुकुआ के स्थान पर राम की एक सहोदरी बहन का उल्लेख किया गया है। लोकगीतों में भी सीता की ननद उनसे रावण का चित्र खिचवाती है[1]। नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार** के अनुसार राम सीता को रावण का चित्र खींचते हुए और अपनी दासी से रावण का वर्णन करते हुए सुनते हैं।

जावा के **सेरतकांड** मे कैकेयी स्वय सीता के पखे पर रावण का चित्र खींचती है और सोती हुई सीता के पलग पर रख देती है। **आनन्द रामायण** में भी कैकेयी सीता से रावण का चित्र खींचने की प्रार्थना करती है। 'मैंने केवल उसके दाहिने पैर का अंगूठा देखा है' यह कहकर सीता दीवाल पर इसी का चित्र अंकित करती है। बाद मे कैकेयी इसपर रावण का पूरा

---

१. दे० दुर्गाशकर प्रसाद सिंह: भोजपुरी लोकगीत, पृ० २७।

कृष्णदेव उपाध्याय: भोजपुरी ग्रामगीत, पृ० ५९।

रामदास गौड कृत हिंदुत्व में कहा गया है (पृ० १४१) कि सुवर्चस रामायण में रावण के चित्र के कारण शांता की चुगली, शांता के प्रति सीता का शाप, उसकी पक्षीयोनि की प्राप्ति आदि विषय पाये जाते है।

चित्र बनाती है और राम को बुलाकर स्त्रीचरित्र की आलोचना करते हुए कहती है —

यत्र यत्र मनोलग्नं स्मर्यते हृदि तत्सदा।
स्त्रियाश्चरित्रं को वेत्ति शिवाद्या मोहिताः स्त्रिया॥ ४६॥
(५ वां कांड, सर्ग १)

ह सुनकर राम कैकेयी को विश्वास दिलाते हैं कि कल लक्ष्मण सीता न में छोड़ देंगे और उसकी दाहिनी बाहु को काटकर अयोध्या ले आएंगे।

हिदेशिया के **सेरी राम** तथा **सेरत कांड** का उल्लेख ऊपर हो चुका है। वहां के **हिकायत महाराज रावण** में रावण के चित्र के वृत्तान्त का एक किंचित परिवर्त्तित रूप मिलता है। रावणवध के बाद राम को लंका में रहते हुए ७ महीने हो गए हैं। रावण की एक पुत्री के पास उसके प्रिय पिता का एक चित्र है जिसे वह सोती हुई सीता की छाती पर रख देती है। राम के आने पर सीता नींद मे इस चित्र का चुम्बन कर रही है। क्रोध में आकर राम सीता को कोड़ों से मारते हैं, उनके बाल काटते हैं और लक्ष्मण को बुलाकर सीता को मार डालने और प्रमाण स्वरूप उसका हृदय ले आने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण सीता के साथ चले जाते हैं। वह सीता को नैहर भेज देते हैं और एक बकरी मारकर राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता को मारा गया है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत वृत्तान्त का इतना उग्र रूप केवल वहां सम्भव है जहां राम चरित्र का आदर्श क्षीण हो गया है।

५६१. रावण-चित्र सम्बन्धी कथाओं का एक अंतिम रूप मिलता है, जिसमें अलौकिकता आ गई है। सिंहलद्वीप की रामकथा में उमा सीता के यहां आकर उनसे केले के पत्ते पर रावण का चित्र खिंचवाती हैं। राम के अचानक दोनों के पास आने पर सीता इस चित्र को पलंग के नीचे फेंक देती हैं। राम उस पलंग पर बैठ जाते हैं और पलग कांपने लगता है। कारण का पता लगा कर राम अत्यन्त क्रुद्ध हो जाते हैं और अपने भाई को सीता की हत्या करने की आज्ञा देते हैं। वन में अपना खंग किसी पशु के रक्त से रंग कर लक्ष्मण वापस आते हैं और राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता मर गई हैं।

रेआम केर में एक यक्षिणी सीता को एक सखी का रूप धारण कर उनसे

रावण का चित्र खिचवाती है और तत्पश्चात् इस चित्र में अवतार लेती है, जिसके फलस्वरूप सीता प्रयत्न करने पर भी इस चित्र को नहीं मिटा सकतीं। निराश होकर सीता इसे पलग के नीचे छिपाती है। बाद में राम के इसपर लेट जाने पर उनको तीव्र ज्वर उत्पन्न होता है। जब चित्र का पता लगता है राम सीता को मार डालने और प्रमाणस्वरूप उसका कलेजा ले आने को कहते हैं। **राम जातक** तथा **राम कियेन** में उपर्युक्त **रेआम केर** की कथा से मिलता जुलता वृत्तान्त पाया जाता है। **राम कियेन** के अनुसार अदुल नामक सूर्पणखा की पुत्री सीता से रावण का चित्र खिचवाती है और बाद में इसी चित्र में प्रवेश करती है, जिससे सीता उसे मिटा देने में असमर्थ हैं। बाद में लक्ष्मण राम के पास एक कुत्ते का हृदय ले आकर उनको सीता-वध का विश्वास दिलाते हैं (दे० अध्याय ४०)[1]।

ई. परोक्ष कारण

५६२. रामायण के उत्तरकाड में सीतात्याग का परोक्ष कारण भी उल्लिखित है। सीतात्याग के पश्चात् लक्ष्मण को सान्त्वना देते हुए सुमंत्र दुर्वासा-दशरथ-सवाद उद्धृत करता है। दुर्वासा ने दशरथ से कहा था कि विष्णु ने भृगु-पत्नी की हत्या की थी, फलस्वरूप भृगु ने विष्णु को शाप दिया था कि तुमको भी मनुष्य बन कर पत्नी वियोग का दुख भोगना पड़ेगा—

तस्मात्त्वं मानुषे लोके जनिष्यसि जनार्दन ॥१४॥
तत्र पत्नीवियोगं त्वं प्राप्स्यसे बहुवार्षिकम्।

सीतात्याग के इस परोक्ष कारण का उल्लेख **रामायण** के गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में नहीं मिलता। भृगु शाप अथवा भृगु पत्नी वध का उल्लेख न तो वैदिक साहित्य मे पाया जाता है और न **महाभारत** में। **वाल्मीकि रामायण** के बालकांड में ताड़कावध के अवसर पर भृगु-पत्नी-वध की ओर निर्देश किया गया है, किन्तु वहाँ किसी शाप का संकेत नही है। पौराणिक साहित्य में भृगु-शाप विष्णु के अवतार धारण कर लेने का कारण बताया गया है (दे० ऊपर अनु० ३४५)।

५६३. पद्मपुराण में सीतात्याग के एक अन्य परोक्ष कारण का वर्णन

---

१. पाश्चात्य वृत्तान्त नं ३ के अनुसार सीता ने एक तख्ते पर रावण की छाया का चित्र खींच लिया था। पा० वृ० नं० ५ में यह भी कहा गया है कि जब राम उस तख्ते पर बैठ गए, वह तख्ता काँपने लगा था।

मिलता है। किसी दिन अविवाहित सीता शुकों के एक जोड़े से राम-कथा सुनती हैं। इस कथा को विस्तार से सुनने की इच्छा से प्रेरित होकर वह दोनों पक्षियों को फसाती हैं। जिस पर दोनों भावी रामायण का गान करते हैं जिसे उन्होंने वाल्मीकि-आश्रम में रह कर सीख लिया था। कथा समाप्त होने पर सीता अपना परिचय देकर उनसे कहती हैं कि जब तक राम मुझे ले जाने नहीं आते, मैं तुम दोनों को यहाँ बदकर रख लूंगी। पक्षी विनयपूर्वक मुक्त होने की प्रार्थना करते हैं, विशेष कर इसलिए कि शुकी गर्भवती है। फिर भी सीता केवल नरपक्षी को मुक्त कर देती हैं। बाद में शुकी पिंजड़े में यह शाप देकर मर जाती है,

यथा त्वं पतिना सार्धं वियोजयसि मामितः।
तथा त्वमपि रामेण विमुक्ता भव गर्भिणी॥

... शाप के परोक्ष प्रभाव के कारण राम ने धोबी का वृत्तान्त सुनकर सीता को निर्वासित किया था[1] (दे० पातालखंड, अध्याय ५७)।

५६४. उड़िया **विलंका रामायण** में वालिवध के पश्चात् तारा का मेशाप सीता-त्याग का परोक्ष कारण माना गया है।

ग. अवास्तविक सीतात्याग।

५६५. रामचरित्र का आदर्श सुरक्षित रखने के उद्देश्य से अनेक अर्वाचीन राम-कथाओं में सीतात्याग के वृत्तान्त को एक अन्य रूप देने का प्रयत्न किया गया है। यहाँ तक कि विकास की परिणति पर सीता का त्याग वास्तविक नहीं है।

तुलसीकृत **गीतावली** में राम के आज्ञानुसार लक्ष्मण सीता को वन में न छोड़कर उनको वाल्मीकि के हाथों में सौंप देते हैं। इस वृत्तान्त में त्याग का कारण इस प्रकार है—दशरथ अपनी आयु के पूर्ण होने के पहले स्वर्गवासी हो गए थे और राम को उनकी शेष आयु मिली थी। परन्तु सीता के साथ पिता की आयु भोगना अनुचित समझ कर राम ने अपनी आयु के समाप्त होने पर सीता का निर्वासन किया (दे० ७, २५ आदि)।

५६६. **अध्यात्म रामायण** में सीतात्याग वास्तविक नहीं रहा है।

---

१. 'हिन्दूत्व' में कहा गया है कि सौर्य्य रामायण में निम्नलिखित विषयों का वर्णन किया गया है—शुक-चरित, शुक के रजक होने के कारण. उसके द्वारा जानकी निस्सारण (दे० पृ० १४१)।

इसके अनुसार देवताओं ने सीता के पास आकर कहा—'यदि तुम पहले बैकुंठ चली जाओ तो श्री रघुनाथ भी वहां आकर हमें सनाथ करेंगे'। सीता से देवताओं की प्रार्थना सुनकर राम ने कहा—"मैं यह सब जानता हूं। मैं लोकापवाद के मिस तुम्हें त्याग दूंगा। वाल्मीकि के आश्रम में तुम्हारे दो पुत्र होंगे। बाद में तुम मेरे पास आकर लोगों को विश्वास दिलाने के लिए शपथ करोगी और पृथ्वी में प्रवेश करके बैकुंठ चलोगी' (दे० ७,२)।

५६७. आनन्द रामायण के सीतात्याग का वृत्तान्त मिश्रित है। इसमें अन्य पूर्वोक्त तीन प्रसिद्ध कारण के साथ साथ एक नवीन कारण का भी उल्लेख हुआ है, अर्थात् राम की गर्भवती सीता के प्रति कामपीड़ा। किन्तु इस वृत्तान्त की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें वास्तविक सीता का त्याग नहीं होता। कथा इस प्रकार है—

'गर्भवती सीता के सीमन्तोन्नयन के लिए जनक और उनकी पत्नी सुमेधा दोनों अयोध्या आकर वहाँ कुछ काल तक रह जाते हैं। किसी दिन दोनों को बुलाकर राम अपनी कामपीड़ा समझाते हुए कहते हैं—सीता को अपने समीप न देखकर मैं विरह के कारण विह्वल हो जाता हूं और उनके पास काम मुझे पीड़ित करता है—

आत्मानं विह्वलं दृष्ट्वा सीतासान्निध्यमाश्रये ॥ ३५ ॥
अधुना जानकीं दृष्ट्वा कामो मेऽतीव बाधते।
पंचमासोर्ध्वतः संगं गर्हयन्ति मुनीश्वराः ॥ ३६ ॥

यदि मैं सीता को मिथिला भेज दूं तो मैं भी अवश्य मिथिला आ जाऊंगा। अतः एकमात्र उपाय यह है कि मैं लोकापवाद और धोबी के कथन के कारण सीता को वाल्मीकि के आश्रम में त्याग दूं। आप भी सीता के साथ वाल्मीकि के यहां निवास कीजिए।'

तदनन्तर जनक मिथिला में एक मन्त्री को नियुक्त करके अपनी पत्नी और एकाध परिजनों के साथ वाल्मीकि के आश्रम में जाते हैं। बाद में राम परिस्थिति को समझा कर सीता से कहते हैं—'तुम पाच वर्ष तक वाल्मीकि के यहां रहोगी, तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होंगे और अंत में तुम यहां आकर जनता को विश्वास दिलाने के लिए शपथ करोगी और पृथ्वी देवी से सतीत्व का प्रमाण पाओगी। हरण के समय की भांति तुम सत्वगुण से मेरे साथ रहोगी और अन्य दो गुणों से समन्वित चली जाओगी।'

इस पर सीता रजस्तमोमयी स्वकीय छाया बनकर अपने सत्वगुण से अदृश्य रूप से राम के वामांग में निवास करने लगती हैं :—

रजस्तमोमयीं स्वीयो छायां निर्माय सादरम् ॥ १७ ॥
श्रीराघवस्य वामांगे सत्वरूपालयं ययौ ।

तत्पश्चात् राम विजय नामक मित्र से लोकापवाद और धोबी की कथा नते हैं। इतने में सीता कैकेयी के अनुरोध से रावण के अगूठे का चित्र ींच लेती हैं, जैसे ऊपर इसका वर्णन हुआ है। अगले दिन सीता लक्ष्मण के साथ वाल्मीकि-आश्रम की ओर प्रस्थान करती हैं (दे० ५, सर्ग २ और ३)।

उपसंहार

५६८. सीतात्याग की उपर्युक्त कथाओं में बहुत अन्तर पाया जाता है। फिर भी राम-कथा-साहित्य में इस वृत्तान्त के विकास की रूपरेखा स्पष्ट दिख लाई पड़ती है। यद्यपि आदि कवि वाल्मीकि ने इस घटना का वर्णन नहीं किया है, किन्तु इसका बीज युद्धकांड के उस स्थल में विद्यमान है, जहां लोकापवाद का उल्लेख होता है और राम सीता-चरित्र पर संदेह प्रकट करते हैं।

आगे चलकर उत्तरकांड के अनुकरण पर सीतात्याग का प्रायः वर्णन किया गया है। इस त्याग के तीन बहुत व्यापक कारण माने गए हैं और उन तीनों कारणों में क्रमिक विकास भी देखा जा सकता है। सामान्य लोकापवाद के बाद इसका एक विशेष उदाहरण (धोबी की कथा) प्रस्तुत किया गया है। **वाल्मीकि रामायण** तथा **तिब्बती रामायण** में राम के सीता-चरित्र पर संदेह का उल्लेख है। बाद की रचनाओं में इस शंका को युक्ति संगत बना देने के लिए रावण के चित्र की कथा की कल्पना कर ली गई है। चित्र की कथा का उद्गम तो भारतवर्ष में हुआ, लेकिन इसका उग्र रूप विदेश में मिलता है। कालक्रम के अनुसार भी उपर्युक्त विकास की पुष्टि होती है। साथ साथ सीतात्याग के परोक्ष कारणों का भी वर्णन किया गया है।

सीताहरण की भांति जिसके विषय में अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य में कहा जाता है कि सीता की एक छाया-मात्र का हरण हुआ था, सीतात्याग के विकास की परिणति यह है कि सात्विकी सीता अदृश्य रूप से राम के वामांग में निवास करती हैं और केवल उनकी रजस्तमोमयी छाया का परित्याग होता है।

६

कुश-लव-चरित

क. कुश लव चरित का विकास

५६६ ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीनतम राम-कथाओं में कुश-लव, सम्बन्धी सामग्री का नितान्त अभाव था।

वाल्मीकीय युद्धकाड के अत में राम के १०,०००वर्ष के राज्यकाल का और उनके पुत्रों तथा भाइयों के साथ बहुत से यज्ञ करने का उल्लेख भी किया गया है (**ईजे बहुविधैर्यज्ञैः ससुतभ्रातृबान्धवः** दे० सर्ग १२८, ६७), किन्तु कुश-लव का सकेत मात्र भी नहीं पाया जाता है। इसी तरह **वाल्मीकि रामायण** के प्रामाणिक काडों में (२,६) कहीं भी कुश-लव का निर्देश नहीं किया गया है।

महाभारत की चारों रामकथाओं में तथा **हरिवंश, ब्रह्मपुराण, नृसिंह पुराण** में भी कुश-लव का उल्लेख नहीं हुआ है; यद्यपि रामोपाख्यान को छोड़कर इन रचनाओं में राम की मृत्यु स्पष्ट शब्दों में उल्लिखित है।

५७०. बालकांड के चौथे सर्ग में **कुशीलवौ भ्रातरौ राजपुत्रौ** की कथा का प्रथम रूप मिलता है। राम के अयोध्या लौटने के पश्चात वाल्मीकि ने समस्त रामचरित के विषय में काव्यरचना की थी और उसे दो **कुशीलव** राजपुत्रों को सिखाया। बाद में ये दोनों जाकर सभाओं में **रामायण** का गान करने लगे (**ऋषीणां च द्विजातीनां साधूनां च समागमे**)। किसी दिन राम ने दोनों को अयोध्या के राजमार्ग में देखा और महल ले जाकर भरत आदि भाइयों के साथ **रामायण** का गान सुना।

इस सर्ग में कहीं भी कुश तथा लव का अलग उल्लेख नहीं है; केवल दो भाइयों का वर्णन है जो राजपुत्र तथा कुशीलव अर्थात् गायक हैं। **रामायण** के तीनों पाठों में तो ये दोनों राम के पुत्र माने गए हैं, लेकिन जिस श्लोक में इसका उल्लेख किया गया है, वह तीनों पाठों में भिन्न है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि यह तथ्य बाद में स्वतन्त्र रूप से तीनों पाठों

में जोड़ दिया गया है। उपर्युक्त वृत्तान्त के उत्तरार्द्ध में, जहां राम दोनों का गान सुनते हैं कहीं भी इसका निर्देश नहीं किया गया है कि ये उनके पुत्र हैं। इससे यह अनुमान दृढ़ हो जाता है कि पहले इन दोनों 'कुशीलवों' तथा राम के पिता-पुत्र-सम्बन्ध का उल्लेख नहीं किया गया था)।[1]

५७१. उत्तरकांड में सीता के वाल्मीकि के आश्रम में दो पुत्रों को जन्म देने का वर्णन मिलता है, जिनका नाम वाल्मीकि ने कुश और लव रखा था (दे० सर्ग ६६)। बाद में दोनों वाल्मीकि के शिष्य बन जाते हैं और राम के अश्वमेध के अवसर पर **रामायण** का गान करते हैं। तत्पश्चात् राम दोनों का परिचय प्राप्त कर सीता को बुला भेजते हैं। सीता के भूमि प्रवेश करने के बाद कुश-लव **रामायण** का उत्तरकाड भी सुनाते हैं (दे० सर्ग ९३-९९)। **रामायण** के अन्त में कुश को कोशल देश तथा राजधानी कुशावती और लव को उत्तरकोसल तथा श्रावस्ती को दिए जाने का उल्लेख किया गया है (दे० सर्ग १०७-१०८)।

५७२. रघुवंश के अनुसार कुश ने अयोध्या का जीर्णोद्धार किया था यद्यपि **रामायण** के अनुसार यह कार्य ऋषभ के विषय में कहा गया है (दे० सर्ग १-११)।

बाद की रामकथाओं में कुश तथा लव के विवाहों का भी वर्णन मिलता है। **रघुवंश** (सर्ग १६) तथा संध्याकरनंदि कृत **रामचरित** (सर्ग ४) में कुश तथा कुमुद्वती के विवाह का उल्लेख मिलता है। **आनन्द रामायण** में दोनों के कई विवाहों का वर्णन किया गया है (दे० विवाहकांड)। किन्तु सब से महत्त्वपूर्ण तथा प्रचलित नवीन सामग्री कुश-लव के जन्म तथा दोनों के राम-सेना से युद्ध करने से सम्बन्ध रखती है। इसका निरूपण अगले दो परिच्छेदों में किया जाएगा।

ख. कुश लव की जन्म कथा

अ. यमल कुश-लव

५७३. कुश-लव की जन्म-कथा का प्राचीनतम रूप **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकांड में प्रस्तुत है। राम द्वारा परित्यक्त किये जाने के पश्चात्

---

१ डा० ए० वेबर का मत है कि गायकों ने अपने नाम कुशीलव की व्युत्पत्ति को (कु-शील) बदलने के उद्देश्य से उपर्युक्त कथा की कल्पना की है। दे० आन दि रामायण, पृ० ९६।

सीता वाल्मीकि के आश्रम में शरण पाकर वहां दो यमल पुत्रों को जन्म देती हैं।

वाल्मीकि ने अग्रज को कुश से मिलने की आज्ञा दी थी तथा अनुज को लव[1] से, जिससे उनका नाम क्रमशः कुश और लव रखा गया था—

यस्तयोः पूर्वजो जातः स कुशैर्मन्त्रसत्कृतैः।
निर्मार्जनीयस्तु तदा कुश इत्यस्य नाम तत् ॥ ७ ॥
यश्चावरो भवेत्ताभ्यां लवेन सुसमाहितः।
निर्मार्जनीयो वृद्धाभिर्लवेति च स नामतः ॥ ८ ॥

(सर्ग ६६)

५७४. उत्तरकांड की उपर्युक्त कथा सबसे प्रामाणिक मानी गई है। इसका वर्णन अधिकांश रामकथाओं में मिलता है। जैन **पउमचरिय** के अनुसार राजा वज्रजघ परित्यक्त सीता को वन में देखकर उनको अपने महल ले आया, जहाँ सीता ने लवण तथा अंकुश को जन्म दिया। हेमचंद्र के **जैन रामायण** में दोनों का नाम अनगलवण तथा मदनांकुश माना गया है।

५७५. भवभूति के **उत्तरामचरित** में कुश-लव-जन्म का किंचित् परिवर्तित रूप मिलता है। लक्ष्मण के चले जाने के बाद परित्यक्त सीता वन में प्रसवपीड़ा का अनुभव करने लगीं। उस पीड़ा से निराश होकर वह आत्महत्या के विचार से गंगा में कूद पड़ीं। जल ही में उन्होंने दो पुत्रों को जन्म दिया। तदुपरान्त पृथिवी तथा गंगा देवियां सीता को पुत्रों के साथ पाताल ले गईं। स्तन-त्याग के पश्चात् गंगा ने दोनों पुत्रों को शिक्षा के लिए वाल्मीकि के हाथों सौंप दिया। इस वर्णन के अनुसार कुश तथा लव अपने माता-पिता के विषय में कुछ नहीं जानते हैं।

५७६. गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** में सीता के विजयराम आदि आठ पुत्रों

---

१. टीकाकारों के अनुसार काटा हुआ कुश का अग्रभाग कुश है तथा इसका अधोभाग लव। रघुवंश में लिखा है,

स तौ कुशलवोन्मृष्टगर्भक्लेदौ तदाख्यया।
कविः कुशलवावेव चकार किल नामतः ॥ ३२ ॥
(सर्ग १५)

रघुवंश के टीकाकारों ने लव का अर्थ गोपुच्छलोम बताया है।

का उल्लेख किया गया है, जिनमें से कनिष्ठ अजितंजय युवराज पद पर नियुक्त किया जाता है। इस कथा में सीतात्याग का निर्देश नहीं है।[1]

आ. वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि।

५७७. तिब्बती रामायण प्राचीनतम रचना है जिसमें वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि का वृत्तान्त सुरक्षित है। यह वृत्तान्त **कथासरित्सागर** में भी पाया जाता है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि इसका गुणाढ्यकृत **बृहत्कथा** में पहले पहल वर्णन किया गया था। इस कथा के अनुसार वाल्मीकि ने कुश घास से ही कुश की सृष्टि की थी, जिससे स्पष्ट है कि कुल नाम के कारण इस कथा की कल्पना कर ली गई है।

कथासरित्सागर का वृत्तान्त इस प्रकार है। सीता ने वाल्मीकि के आश्रम में एक पुत्र को जन्म दिया था, जिसका नाम वाल्मीकि ने लव रखा। एक दिन सीता लव को लेकर नदी में स्नान करने गईं। कुछ देर बाद वाल्मीकि कुटी में लौटे। यह जानकर कि सीता स्नान करते समय लव को झोपड़ी में छोड़ दिया करती हैं, वाल्मीकि को भय हुआ कि कोई हिंस्र पशु बालक को उठा न ले गया हो। इसपर उन्होंने तपोबल द्वारा कुश से एक बालक की सृष्टि की। लौटने पर सीता ने उस बालक को पुत्रवत् ग्रहण किया। इस प्रकार सीता के लव तथा कुश दो पुत्र हो गए।

उपर्युक्त वृत्तान्त ज्यों का त्यों **काश्मीरी रामायण** (नं०६६) और पाश्चात्य वृत्तान्तों (नं० ८ और १७) में भी मिलता है। **काश्मीरी रामायण** में लव का जन्म भी अपने ढंग का है। दशरथ, राम को स्वप्न में दर्शन देकर संतान न होने के कारण उनकी भर्त्सना करते हैं। इसपर राम वसिष्ठ से परामर्श करने के बाद अश्वमेध यज्ञ करते हैं, जिसके अंत में सीता को प्रसाद दिया जाता है। फलस्वरूप सीता गर्भवती हुईं और बाद में वाल्मीकि के आश्रम में लव को जन्म दिया।

तिब्बती रामायण में लव-कुश के जन्म का वर्णन सीतात्याग के पूर्व पाया गया है। राम किसी विद्रोही सामन्त से युद्ध करने गए थे। बहुत

---

१. जावा के सेरत काड तथा पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३ में सीता के केवल एक पुत्र का उल्लेख किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये वृत्तान्त कुश-लव की जन्म-कथा के द्वितीय वर्ग में रखने चाहिए, जिसमें सीता केवल एक पुत्र को जन्म देती हैं।

समय बीत जाने पर सीता ने उनकी खोज में निकलकर मार्ग में अपने पुत्र लव को ऋषियों की रक्षा में छोड़ दिया। लव छिपके अपनी माता के पीछे चला गया, जिसपर ऋषियों ने कुश से एक नये बालक की सृष्टि की जिसे सीता ने वापसी में ग्रहण किया।

५७८. उपर्युक्त कथा का एक ऐसा रूप भी मिलता है, जिसमें सीता अपने पुत्र को वाल्मीकि की रक्षा में छोड़कर मार्ग में वानरियों से मिलने के कारण लौटती हैं और वाल्मीकि से कुछ न कहकर अपने पुत्र को अपने साथ ले जाती हैं। **आनन्द रामायण** मे सीता ने मार्ग में एक वानरी को पांच बालक ढोते हुए देखकर अपने एक पुत्र का स्मरण किया। इस पर वह लौटीं और अपने पुत्र को साथ लेकर स्नान करने गईं (दे० ५, ४)। **रेआम केर** तथा **राम कियेन** में भी सीता के वानरियों से मिलने का वृत्तान्त दिया गया है। **राम कियेन** में सीता वानरियों को अपने बच्चों के साथ साथ एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर कूदते हुए देखती हैं और बच्चों की समुचित रक्षा न करने के कारण उनकी भर्त्सना करती हैं। इसपर वानरियों ने उत्तर दिया कि तुम अपने पुत्र को ध्यानमग्न ऋषि के पास छोड़कर कहीं अधिक असावधान हो। यह सुनकर सीता अपने पुत्र को ले आने के लिए लौटीं (दे० अध्याय ४१)। एक अन्य वृत्तान्त के अनुसार सुग्रीव की सेना के वानर वन में सीता की सेवा करते हैं तथा उनके पुत्र को भी टहलने के लिए ले जाते हैं। किसी दिन एक वानरी सीता के सोते समय उनके पुत्र को ले गई थी (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं. ७)। इन सब कथाओं में वाल्मीकि एक दूसरे बालक की सृष्टि करते हैं।

५७९. हिंदेशिया के **सेरी राम** तथा **हिकायत महाराज रावण** में महर्षि कल बालक के साथ नहाने जाते हैं। ऋषि के डुबकी लगाते समय बालक अपनी माता के पास लौट जाता है, जिसपर ऋषि एक नये बालक की सृष्टि करते हैं। **सिंहली राम-कथा** के अनुसार वाल्मीकि ने सीता के पुत्र को न देखकर तालाब के एक कमल से एक दूसरे बालक को बनाया। बाद में सीता को विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने वाल्मीकि से एक तीसरे बालक की सृष्टि करने का अनुरोध किया। वाल्मीकि ने पहले इनकार किया। अंत में सीता के बालक को अपनी उंगली से दूध पिलाने की प्रतिज्ञा करने के बाद वाल्मीकि ने कुश से एक तीसरे बालक की सृष्टि की।

ग. कुश लव युद्ध

५८०. **वाल्मीकि रामायण** में राम के अश्वमेध की यज्ञभूमि में कुश-लव **रामायण** का गान करते हैं और इस तरह राम अपने पुत्रों का परिचय प्राप्त करते हैं। बहुत राम-कथाओं में कुश-लव के राम की सेना तथा राम से भी युद्ध करने का वर्णन किया गया है। उस युद्ध के भिन्न भिन्न कारण बताए जाते हैं, किन्तु सब से प्रचलित कारण यह है कि कुश-लव ने राम के अश्वमेध घोड़े को बांध लिया था।

विमलसूरि के **पउमचरिय** प्राचीनतम सुरक्षित रचना है जिसमें सीता के पुत्रों के युद्ध का वर्णन किया गया है। उसके अनुसार लवण तथा अंकुश अपनी माता के साथ पुंडरीकपुर के राजा वज्रजंघ के यहां रहते हैं। उनके विवाह तथा दिग्विजय के पश्चात् नारद उनके पास आकर उनसे उनकी माता के परित्याग की कथा सुनाते हैं। इसपर राम तथा लक्ष्मण से प्रतिकार लेने के उद्देश्य से दोनों सेना लेकर अयोध्या पर आक्रमण करते हैं। लवण राम से युद्ध करते हैं तथा अंकुश लक्ष्मण से। युद्ध के अनिश्चित होने पर एक सिद्धार्थ लवण तथा अंकुश का परिचय राम-लक्ष्मण से प्रकट करते हैं। इसपर राम अपने पुत्रों से मिलकर दोनों को अपने पास रखते हैं। बाद में सीता की अग्निपरीक्षा का वर्णन मिलता है (दे० पर्व ९८-१००)।

कुश-लव-युद्ध का यह रूप केवल जैन साहित्य में ही मिलता है। **रामलिंगामृत** में नारद राम के पास जाकर कुश-लव के पराक्रम का वर्णन करते हैं, जिससे राम सेना लेकर दोनों के पास पहुँचते हैं (सर्ग १४)। नारद का यह उल्लेख **पउमचरिय** का प्रभाव सूचित करता है।

५८१. **कथासरित्सागर** (और इसलिए सम्भवतः **बृहत्कथा**) में उस युद्ध का वर्णन इस प्रकार है। कुश तथा लव किसी दिन वाल्मीकि द्वारा पूजित शिवलिंग से खेलते हैं। प्रायश्चित् के लिए वाल्मीकि लव को कुबेर के सरोवर से स्वर्ण कमल तथा उनकी वाटिका से मंदार फूल ले आने और उनसे लिंगपूजा करने की आज्ञा देते हैं। लक्ष्मण उस समय राम के पुरुषमेध के लिए एक शुभलक्षणसंपन्न पुरुष की खोज कर रहे थे। उन्होंने लव को कुबेर के यहाँ से लौटते देखा और उसे कारागार में बंद कर दिया। इसपर वाल्मीकि ने कुश को अयोध्या भेज दिया। वाल्मीकि के दिव्य अस्त्रों

से कुश ने लक्ष्मण को और इसके बाद राम को भी पराजित किया। इसके बाद राम ने अपने पुत्रों का परिचय प्राप्त कर दोनों को अपने साथ रखा तथा सीता को भी वाल्मीकि के आश्रम से बुला भेजा (दे० ६, ५१)।

आनन्द रामायण का वृत्तान्त उपर्युक्त कथा से प्रभावित प्रतीत होता है, यद्यपि इसमें भवभूति के अनुसार रामाश्वमेध के घोड़े का भी उल्लेख किया गया है। वाल्मीकि के आश्रम में अपने पुत्रों के साथ रहनेवाली सीता नौ दिन तक सयोगकरणव्रत करना चाहती हैं। इस व्रत के लिए अयोध्या के सरोवर के स्वर्ण कमलों की आवश्यकता हैं। लव उन्हें प्रतिदिन छिपकर ले आता है। आठवें दिन वह पहरेदारों को परास्त करके उनसे कहता है कि मैं वाल्मीकि के आज्ञानुसार ये कमल ले जाता हू। नवें दिन लव १००० रक्षकों को पराजित करता है और सीता अपना व्रत पूरा करने में समर्थ होती हैं। तदुपरान्त राम वाल्मीकि को अपने वीर शिष्य के साथ अश्वमेध के लिए निमंत्रण भेज देते हैं। वाल्मीकि सीता तथा कुश-लव के साथ जाकर यज्ञभूमि के दो कोस की दूरी पर डेरा डालते हैं। इतने में यज्ञाश्व वहां पहुचता है और लव उसे बांध लेता है। लक्ष्मण लव को पराजित कर उसे ले जाते हैं। इसपर कुश लव को मुक्त करने के लिए जाकर, देर तक राम से युद्ध करता है, किन्तु युद्ध में किसी की भी जीत नहीं होती। राम के वाल्मीकि से पूछने पर कि ये दोनों कौन हैं, वाल्मीकि उत्तर देते हैं कि कल यह रहस्य खुलेगा। दूसरे दिन कुश तथा लव **आनन्द रामायण** का जन्मकांड गाकर अपना परिचय देते हैं। इसपर सीता को भी बुलाया जाता है और सतीत्व का साक्ष्य देने के पश्चात् वह राम तथा कुश-लव के साथ अयोध्या में निवास करती हैं (दे० ५, सर्ग ६, ८)।

५८२. भवभूति का **उत्तररामचरित** प्राचीनतम रचना है जिसमें राम के यज्ञाश्व के कारण सीता के पुत्रों के युद्ध का उल्लेख किया गया है। सम्भव है कि उपर्युक्त **कथासरित्सागर** की कथा अधिक प्राचीन हो और भवभूति ने बृहत्कथा के तथा उत्तरकाड के वृत्तान्तों का समन्वय करने का प्रयत्न किया हो।

उत्तररामचरित में लव पहले यज्ञाश्व की रक्षा करनेवाली रामसेना से तथा बाद में लक्ष्मण के पुत्र चंद्रकेतु से युद्ध करता है। राम पहुंचकर लव-चंद्रकेतु का युद्ध रोकते हैं और लव तथा कुश से मिलकर उनका

परिचय प्राप्त करते हैं; अंत में वह सीता को पुनः ग्रहण करते हैं (दे० अंक ५-७)।

बाद की रचनाओं में कुश-लव-युद्ध का विस्तृत तथा परिवर्द्धित वर्णन किया गया है। **जैमिनीय अश्वमेध** में इस प्रकार का प्राचीनतम वृत्तान्त मिलता है। लव राम के यज्ञाश्व को बांधकर तथा बहुत सैनिकों का वध करके शत्रुघ्न द्वारा पराजित किया जाता है। इसपर कुश शत्रुघ्न को पराजित करता है। बाद में कुश-लव लक्ष्मण-हनुमान् तथा भरत पर विजय प्राप्त करते हैं तथा अंत में राम को भी आहत करते हैं। तदनन्तर वाल्मीकि राम की समस्त सेना अमृत जल से पुनर्जीवित करते हैं (दे० अध्याय २६-३६)।

निम्नलिखित रचनाओं में राम के यज्ञाश्व को लेकर कुश-लव-युद्ध का गौण परिवर्त्तनों के साथ वर्णन किया गया है—

पद्मपुराण का पातालखंड (अध्याय ५४, ६४)।
कृत्तिवास का **बंगाली रामायण**।
केशवदासकृत **रामचंद्रिका** (प्रकाश ३३-३६) तथा **रामचरितमानस** का प्रक्षिप्त लव-कुश-कांड।
नर्मदकृत गुजराती **रामायणसार**
काश्मीरी रामायण
काम्बोडिया का **रेआम केर** तथा श्याम का **राम कियेन**।
पाश्चात्य वृत्तान्त नं ७, ८ तथा १४।

५८३. अन्य रचनाओं में कुश-लव के राम से युद्ध करने का उल्लेख किया गया है, लेकिन इनमें राम के यज्ञाश्व का संकेत नहीं मिलता। उदाहरणार्थ – **सिंहली रामकथा**, हिंदेशिया का **सेरी राम** तथा **सेरत कांड**, श्याम का **रामजातक**, पाश्चात्य वृत्तान्त नं ६ और १७। इन रचनाओं में युद्ध के जो भिन्न भिन्न कारण दिए गए हैं, इनमें से कोई भी मौलिक नहीं हो पाया है; अतः इनका यहां अलग वर्णन आवश्यक नहीं है।

७

रामकथा का निर्वहण

क. प्राचीन सुखांत राम कथा

५८४. प्रस्तुत निबन्ध के कई स्थलों पर इसका उल्लेख किया गया है कि वाल्मीकिकृत **आदि-रामायण** राम के अभिषेक तथा उनके ऐश्वर्यशाली तथा सुखद राज्य के संक्षिप्त वर्णन पर समाप्त होता था। सीतात्याग के विकास के निरूपण में उन प्राचीन रचनाओं की नामावली दी गई है, जिनमें न तो सीतात्याग और न सीता के भूमिप्रवेश की ओर संकेत किया गया है। अतः राम द्वारा रावण की पराजय तथा सीता को पुनः प्राप्ति उन समस्त रामकथाओं का अंतिम वर्ण्य विषय है (दे० ऊपर अनु० ५५२)।

गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** की राम कथा में भी सीतात्याग का उल्लेख नहीं है, लेकिन कथा का निर्वहण जैन परम्परा के अनुकूल है जिसमें नारायण के मर जाने पर बलदेव जैन दीक्षा लेते हैं। अतः लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् राम विरक्त होकर दीक्षा लेते हैं तथा मोक्ष प्राप्त करते हैं। सीता भी राम की अन्य पत्नियों के साथ आर्यका बनकर अच्युत स्वर्ग प्राप्त कर लेती हैं।

ख. दुःखान्त राम कथा

५८५. वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड की राम-कथा दुखांत है। लोकापवाद के कारण अपनी निर्दोष पत्नी को त्याग देने के पश्चात् राम अश्वमेध के अवसर पर अपने पुत्रों को देखकर सीता को भी बुला भेजते हैं। वाल्मीकि सीता के साथ सभा में पहुँच कर सीता के सतीत्व का साक्ष्य देते हैं। तदनन्तर राम जनता को विश्वास दिलाने के उद्देश्य से सीता से अनुरोध करते हैं कि वह अपने सतीत्व का प्रमाण दे। इसपर सीता शपथ खाती हैं,

> **यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिंतये।**
> **तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति॥ १४॥**

मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्चये ।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१५॥
यथैतत्सत्यमुक्तं मे वेद्मि रामात्परं न च ।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥ १६ ॥ (सर्ग ७)

पृथ्वी देवी एक दिव्य सिंहासन पर बैठी हुई भूमि से प्रकट हो जाती हैं और सीता को अपनी शरण में लेकर पुनः भूमि में प्रवेश करती हैं। राम विलाप करते हैं तथा पृथ्वी देवी से सीता को लौटा देने का अनुरोध करते हुए समस्त पृथ्वी को प्लावित करने की भी धमकी देते हैं। इसपर ब्रह्मा स्वर्ग में पुनर्मिलन का आश्वासन देकर राम को सान्त्वना देते हैं (दे० सर्ग ९५-९८)। बाद में लक्ष्मण की मृत्यु तथा राम के स्वर्गगमन का वर्णन किया गया है।

राम कथा का उपर्युक्त निर्वहण **रघुवंश, भागवत-पुराण, अध्यात्म रामायण** आदि अधिकांश रामकथाओं में पाया जाता है। विमलसूरि के **पउमचरिय** में सीता अपने पुत्रों के युद्ध के पश्चात् अयोध्या लौटती हैं और अग्निपरीक्षा में अपने सतीत्व का प्रमाण देकर जैन दीक्षा लेने जाती हैं। लक्ष्मण की मृत्यु के पश्चात् राम भी दीक्षा लेते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं।

उत्तर भारत की एक रामकथा के अनुसार राम सीता का परित्याग करने के बाद उनको अपने एकमात्र पुत्र के जन्म के पश्चात् पुनः ग्रहण करते हैं। बाद में सीता महल की स्त्रियों से रावण के १० सिरों तथा २० बाहुओं का वर्णन करते हुए दीवाल पर रावण का चित्र खींचती हैं। यह देखकर राम सीता के सतीत्व पर संदेह प्रकट करते हैं, जिसपर सीता क्रोध में आती हैं और शपथ खाकर भूमि में प्रवेश करती हैं (दे० पाश्चात्य वृत्तान्त नं० १३)। **ब्रह्मपुराण** के अनुसार अंगद तथा हनुमान् राम के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर अयोध्या पहुँचकर तथा सीता-त्याग का वृत्तान्त सुनकर गोदावरी की ओर प्रस्थान करते हैं। इसपर राम भी सीता का स्मरण करके अयोध्यावासियों के साथ गोदावरी के तट पर तपस्या करने जाते हैं (दे० अध्याय १५४)। इस तपस्या का उल्लेख जैन राम-कथाओं का प्रभाव प्रतीत होता है।

ग. अर्वाचीन सुखांत रामकथा

५८६. अधिकांश रामकथाओं में सीतात्याग के साथ साथ सीता के

भूमिप्रवेश की कथा का भी वर्णन किया गया है, जिससे राम कथा प्रायः दुःखांत रह गई है। फिर भी बहुत सी राम कथाओं में सीतात्याग का वर्णन होते हुए कथा को सुखांत बना दिया गया है।

भवभूति ने **उत्तररामचरित** के अंतिम सम्मेलन नामक अंक में राम-सीता के सम्मिलन का विस्तृत वर्णन किया है। इसके अनुसार वाल्मीकि ने अपने एक नाटक का अभिनय देखने का राम तथा अयोध्यावासियों को निमंत्रण दिया था। उस नाटक का वर्ण्य-विषय त्याग के पश्चात् सीता का चरित तथा उनके दो पुत्रों का जन्म है। उस करुणात्मक कथा का अभिनय देखकर समस्त सभा सीता के सतीत्व पर विश्वास करती है और राम अपने पुत्रों तथा सीता के साथ अयोध्या लौट जाते हैं।

राम-कथा के इस सुखान्त निर्वहण के मूलस्रोत के विषय में मतभेद है। **कथासरित्सागर** में सुखान्त राम-कथा का वर्णन मिलता है। क्षेमेंद्रकृत **बृहत्कथामंजरी** में भी एक अत्यन्त संक्षिप्त राम चरित्र पाया जाता है जिसका निर्वहण सुखान्त है,

पुत्रौ कुशलवाभिख्यौ उक्तौ वाल्मीकिना स्वयं।
तौ प्राप्य रामो दयितां विशुद्धामानिनाय ताम्॥

अतः **बृहत्कथामंजरी** (तथा) **कथासरित्सागर** दोनों में रामकथा सुखान्त है, जिससे यह अनुमान दृढ हो जाता है कि मूल **बृहत्कथा** में भी इस प्रकार का निर्वहण पाया जाता था। सम्भव है कि भवभूति ने **बृहत्कथा** की सुखान्त रामकथा को अपनी रचना में एक काव्यात्मक रूप दिया हो।

५८७. कुन्दमाला के अन्तिम अंक में सीता अपनी निर्दोषता की शपथ खाकर पृथ्वी से प्रार्थना करती हैं कि वह प्रकट होकर साक्ष्य देने की कृपा करें। इसपर पृथ्वी देवी प्रकट होती हैं और सीता के सतीत्व का साक्ष्य देकर लुप्त हो जाती हैं। तदुपरान्त राम सीता और पुत्रों के साथ अयोध्या लौटते हैं।

आनन्द रामायण में उत्तरकांड के वृत्तान्त को किंचित बदलकर उसे सुखान्त बना दिया गया है। जब पृथ्वी देवी सीता के साथ भूमि में प्रवेश कर रही थी, राम ने असफल विनय करने के पश्चात् धनुष पर बाण रखकर समस्त सृष्टि का संहार करना प्रारम्भ किया। यह देखकर भयभीत पृथ्वी देवी ने सीता को लौटा दिया (दे० ५,८)।

५८८. **कथासरित्सागर**, **जैमिनीय अश्वमेध** (अध्याय ३६), **पद्मपुराण** (पातालखंड, अध्याय ६७), **रामचंद्रिका** (प्रकाश ३६), **रामलिंगामृत** (सर्ग १४), **रामजातक**, **सिंहली रामकथा** तथा एक पाश्चात्य वृत्तान्त (नं० १७) में कुश-लव के युद्ध के अवसर पर सीता राम से मिलकर उनके साथ अयोध्या लौट जाती हैं। इन राम-कथाओं में सीता के पुनः सतीत्व का प्रमाण देने का उल्लेख नहीं किया गया है।

तिब्बती रामायण के अनुसार हनुमान् अन्य वानरों के साथ अयोध्या आने का निमंत्रण पाकर राम से मिलते हैं। सीतात्याग का वृत्तान्त सुनकर वह वर्णन करते हैं कि किस परिस्थिति में उन्होंने सीता को लंका में देखा था। हनुमान् का प्रमाण स्वीकार करके राम सीता को बुला भेजते हैं, जिसपर सीता अपने पुत्रों के साथ लौटती हैं।

हिंदेशिया के **सेरतकांड** तथा **सेरी राम** में भी सीतात्याग के पश्चात् राम-सीता-सम्मिलन का वर्णन किया गया है। बाद में दोनों के तपस्या करने का भी उल्लेख मिलता है। **सेरत कांड** में अनल नामक वानर अपने को अग्नि में बदलता है और राम,लक्ष्मण,सीता इसमें प्रवेश कर स्वर्ग लौट जाते हैं। राम-सीता की तपस्या का उल्लेख जैन राम-कथाओं का प्रभाव माना जा सकता है।

५८९ **रेआम केर** तथा **राम कियेन** में उपर्युक्त सुखान्त राम-कथा तथा **रामायण** के उत्तरकांड की कथा का समन्वय किया गया है। प्रस्तुत निबन्ध में कई बार इसका उल्लेख किया गया है कि **रेआम केर** तथा **राम कियेन** हिंदेशिया की राम-कथा पर निर्भर होते हुए भी यथासंभव **वाल्मीकि रामायण** का वृत्तान्त भी स्वीकार करते हैं।

राम कियेन का वर्णन इस प्रकार है—सीता अपने पुत्रों के युद्ध के पश्चात् दोनों को राम के हाथों सौंप कर स्वयं अयोध्या लौटने से इनकार करती हैं। बाद में राम अपने पुत्रों को सीता के पास भेजकर उनसे लौटने का अनुरोध करते हैं। इसपर सीता कहती हैं कि मैं केवल राम की अंत्येष्टि के लिए अयोध्या आऊंगी। यह सुनकर राम हनुमान् द्वारा अपनी मृत्यु का मिथ्या समाचार सीता के पास भेज देते हैं। सीता लौटकर राम के मृत शरीर के पास विलाप करती हैं। इसपर राम प्रकट हो जाते हैं तथा सीता को सान्त्वना देने लगते हैं। राम को देखकर सीता उनको भर्त्सना देती हैं और नागराज विरुण (कम्बोदिया में मिरुण) की शरण लेकर पृथ्वी में प्रवेश

करती हैं। तदनन्तर हनुमान् पाताल जाकर सीता से लौटने का अनुरोध करते हैं, किन्तु सीता उनको वापस भेज देती हैं।[1] राम विभीषण के परामर्श के अनुसार एक वर्ष तक वन में राक्षसों का वध करके अयोध्या लौटते हैं। उस समय देवताओं की सभा में इंद्र राम के विरह का वर्णन करते हैं, जिसपर ईश्वर राम तथा सीता दोनों को कैलास आने का निमन्त्रण देते हैं। वहां राम सीता से क्षमाप्रार्थना करते हैं तथा ईश्वर भी सीता से राम के पास लौटने का अनुरोध करते हैं। ईश्वर के अनुरोध के कारण सीता अपने पति के साथ अयोध्या लौट जाती हैं।

---

१. रेआम केर की अपूर्ण हस्तलिपियों में सीता के हनुमान् को वापस भेजने के बाद और कुछ सामग्री नहीं मिलती।

एक्कीसवाँ अध्याय

संहार

५६०. निबंध के प्रथम तथा तृतीय भागों में क्रमशः प्राचीन तथा अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य का निरूपण किया गया है। द्वितीय भाग में राम-कथा की उत्पत्ति तथा प्रारंभिक विकास की रूपरेखा अंकित की गई है और चतुर्थ भाग में राम-कथा के विभिन्न कथाओं का क्रमिक विकास दिखलाया गया है। प्रथम और विशेष कर तृतीय भाग की सामग्री से राम-कथा की अद्वितीय व्यापकता प्रमाणित होती है। इस व्यापक प्रसार के साथ साथ कथानक में परिवर्द्धन तथा परिवर्त्तन भी होते रहे हैं जिसके फलस्वरूप विविध राम-कथाओं की उत्पत्ति हुई जो सर्वथा भिन्न प्रतीत होती हैं। इन विभिन्न राम-कथाओं की मौलिक एकता हमारे अध्ययन का संभवतः सबसे महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष है। अतः प्रस्तुत सहार में पहले राम-कथा की व्यापकता और तदनन्तर समस्त राम-कथाओं की मौलिक एकता पर विचार किया जाएगा। विभिन्न राम-कथाओं में जो मुख्य परिवर्त्तन तथा परिवर्द्धन किए गए हैं उनकी सामान्य विशेषताओं का तीसरे परिच्छेद मे निरूपण किया जाएगा। अवतारवाद तथा राम-भक्ति के अतिरिक्त राम-कथा के विकास पर कुछ अन्य बहिरंग तत्त्वों का भी प्रभाव पड़ा है, इनका चौथे परिच्छेद में वर्णन किया जाएगा। अंतिम परिच्छेद में राम-कथा के समस्त विकास की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाएगा।

क. रा म क था की व्या प क ता

५६१. आदि-कवि वाल्मीकि के पूर्व की राम-कथा-विषयक गाथाओं तथा आख्यान-काव्य की लोकप्रियता तथा व्यापकता निर्धारित करना असंभव है। **बौद्ध तिपिटक** में जो एकाध राम-कथा-संबंधी गाथाए मिलती हैं और संभवतः **महाभारत** के द्रोण तथा शांतिपर्व में जो संक्षिप्त राम-कथा पाई जाती है वह उन प्राचीन गाथाओं पर समाश्रित है (दे० ऊपर अनु० १४५, ३५, ३६)। इस सामग्री की अल्पता का ध्यान रखकर यह अनुमान दृढ हो जाता है कि जिस दिन वाल्मीकि ने इस प्राचीन गाथा-साहित्य को एक ही कथासूत्र में ग्रथित कर **आदि रामायण** की सृष्टि की थी उसी

दिन से राम-कथा की दिग्विजय प्रारंभ हुई। काव्योपजीवी कुशीलव समस्त देश में जाकर चारों ओर आदि-काव्य का प्रचार करने लगे। प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के बालकांड तथा उत्तरकांड में ऐसा आभास मिलता है। इसके अनुसार वाल्मीकि ने अपने शिष्यों को **रामायण** सिखलाकर उसे राजाओं, ऋषियों तथा जनसाधारण को सुनाने का आदेश दिया है—

कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायतां परया मुदा ॥ ४ ॥
ऋषिवाटेषु पुण्येषु ब्राह्मणावसथेषु च।
रथ्यासु राजमार्गेषु पार्थिवानां गृहेषु च ॥ ५ ॥

(उत्तरकाण्ड, सर्ग ९३)

इस प्रकार राम-कथा की लोकप्रियता तथा व्यापकता दिनों दिन बढ़ती जा रही थी। **महाभारत** के रामोपाख्यान में, जो स्पष्टतया **आदिरामायण** पर निर्भर है, इस व्यापक प्रचार का निर्देश मिलता है। हरिवंश से पता चलता है कि प्राचीन काल से **रामायण** के कथानक को लेकर नाटकों का अभिनय भी हुआ करता था—

रामायणं महाकाव्यमुद्देश्य नाटकीकृतम्।
जन्मविष्णोरमेयस्य राक्षसेंद्र वधेप्सया ॥ ६ ॥

(विष्णुपर्व, अध्याय ९३)

ये नाटक अप्राप्य हैं किंतु **हरिवंश** के इस उद्धरण से राम-कथा की उत्तरोत्तर लोकप्रियता स्पष्ट है। इतने में रामावतार की भावना दृढ हो गई (दे० ऊपर अनु० १५६) और बौद्धों तथा जैनियों ने भी राम-कथा को अपनाया। बौद्धों ने ईसवी सन् के कई शताब्दियों पहले राम को बोधि-सत्त्व मानकर राम-कथा को अपने जातक-साहित्य में स्थान दिया था। आगे चलकर बौद्धों में राम-कथा की लोकप्रियता घटने लगी; अर्वाचीन बौद्ध साहित्य में राम कथा का उल्लेख नहीं मिलता है (दे० ऊपर अनु० ५०)। बौद्धों के बाद जैनियों ने राम-कथा को अपनाया, लेकिन जैन साहित्य में इसकी लोकप्रियता शताब्दियों तक बनी रही जिसके फलस्वरूप जैन कथा-ग्रंथों में एक अत्यन्त विस्तृत राम-कथा-साहित्य पाया जाता है। इसमें राम, लक्ष्मण तथा रावण न केवल जैन-धर्मावलंबी माने जाते हैं किंतु तीनों को जैनियों के त्रिषष्टि महापुरुषों में रखा गया है (दे० ऊपर अनु० ५१)। अतः राम-कथा भारतीय संस्कृति में इतनी व्यापक हो गई कि राम को इस समय के तीन प्रचलित धर्मों में एक निश्चित स्थान प्राप्त

हुआ—ब्राह्मण धर्म में विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म में बोधिसत्त्व तथा जैन धर्म में आठवें बलदेव के रूप में। आगे चल कर संस्कृत धार्मिक साहित्य में, सस्कृत ललित साहित्य की प्रत्येक शाखा में, अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में और भारत के निकटवर्ती देशों के साहित्य में भी राम-कथा एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकी है। इस अत्यन्त विस्तृत राम-कथा-साहित्य से राम-कथा की व्यापकता तथा लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है। वास्तव में उस समय समस्त भारतीय संस्कृति इतनी राममय बन गई थी कि इन विभिन्न राम-कथाओं की वंशावली निर्धारित करना नितान्त असंभव हो गया है। अतः निबध के तृतीय भाग में राम-कथा-विषयक सामग्री का भाषा तथा साहित्य के विविध भागों के अनुसार वर्गीकरण किया गया है।

५६२. संस्कृत धार्मिक साहित्य में राम कथा का स्थान अपेक्षाकृत कम व्यापक है। कारण यह है कि एक तो वैदिक साहित्य के निर्माणकाल में राम-कथा प्रचलित नहीं थी। दूसरे राम-भक्ति की उत्पत्ति के पूर्व जनसाधारण के धार्मिक जीवन में राम-कथा के लिए विशेष स्थान नहीं था। वैदिक साहित्य में राम-कथा का नितान्त अभाव है (दे० ऊपर अनु० २०)। **हरिवंश** तथा प्राचीनतम महापुरुषों में विष्णु के अन्य अवतारों के साथ-साथ राम का नाम भी लिया गया है और इनमें जो संक्षिप्त राम-कथा मिलती है वह **आदि रामायण** पर समाश्रित प्रतीत होती है (दे० ऊपर अनु० १६३ आदि)। बाद के महापुराणों तथा उपपुराणों में राम-कथा-विषयक सामग्री बढ़ने लगी, विशेष कर **स्कंदपुराण, पद्मपुराण** तथा **महा भागवत (देवी) पुराण** में (दे० ऊपर अनु० १७३, १७४ और १८१)। राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात् असंख्य साम्प्रदायिक रामायण तथा संहिताएँ प्रचलित होने लगीं जिनमें से **अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण** और विभिन्न कालनिर्णय रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं (दे० ऊपर अनु० १८५-२१६)।

५६३. संस्कृत ललित साहित्य के स्वर्ण-काल में प्रायः समस्त कवियों ने राम-कथा को लेकर अमर रचनाओं की सृष्टि की है। निम्नलिखित महाकाव्य तथा नाटक उल्लेखनीय हैं—**रघुवंश, रावणवह, भट्टिकाव्य, महावीर चरित, उत्तररामचरित, जानकीहरण, कुन्दमाला, अनर्घ-राघव, बालरामायण, महानाटक**। बाद में संस्कृत साहित्य बहुत कुछ

निर्जीव कृत्रिमता की शृंखलाओं में बंध गया; किंतु राम-कथा विषयक श्लेष-काव्य, विलोमकाव्य, चित्रकाव्य, शृंगारिक खंडकाव्य आदि इस बात का प्रमाण देते हैं कि राम-कथा की लोकप्रियता अक्षुण्ण रही। पंद्रहवीं शताब्दी के पश्चात् के बहुत से राम-कथा संबंधी महाकाव्यों तथा नाटकों का उल्लेख मिलता है। किंतु यह सामग्री अधिकांश अप्रकाशित है (दे० ऊपर अनु० २२६ और २४८)।

५६४. आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य में राम-कथा की व्यापकता अद्वितीय है। इन सब भाषाओं का सर्वप्रथम महाकाव्य प्रायः कोई **रामायण** है तथा बाद की बहुत सी रचनाओं की कथा-वस्तु भी राम-कथा से संबंध रखती है। इसके अतिरिक्त इन भाषाओं का सब से लोकप्रिय काव्य-ग्रंथ प्रायः **रामायण** ही है। निबंध के बारहवें अध्याय में इस विस्तृत साहित्य का किंचित् निरूपण किया गया है। यहाँ पर केवल मुख्य रचनाओं के नाम दिए जाते हैं—कंबनकृत **तामिल रामायण** (१० वीं श० ई०), तेलगू **द्विपाद रामायण** (१२ वीं श० ई०), मलयालम **रामचरितम्** (१४ वीं श० ई०), कनारी **तोरावे रामायण** (१६ वीं श० ई०), बंगाली **कृत्तिवासीय रामायण** (१५ वीं श० ई०), हिन्दी **रामचरित मानस** (१६ वीं श० ई०), उड़िया **बलरामदास रामायण** (१५ वीं श० ई०) और मराठी **भावार्थ रामायण** (१६ वीं श० ई०)।

५६५. भारतीय साहित्य में राम-कथा की व्यापकता की अपेक्षा विदेश में उसकी लोकप्रियता एक प्रकार से और आश्चर्यजनक है। बौद्धों ने पहले पहल राम-कथा का प्रचार विदेश में किया था। **अनामकं जातकम्** तथा **दशरथ कथानम्** का क्रमशः तीसरी तथा पाँचवीं श० ई० में चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था। इसके बाद राम कथा की एक अन्य धारा उत्तर की ओर फैलने लगी थी। इसका प्रमाण नवीं श० ई० के **तिब्बी** तथा **खोतानी रामायणों** में मिलता है जिनकी कथावस्तु ब्राह्मण राम-कथा पर आधारित है, यद्यपि **खोतानी रामायण** पर बौद्ध प्रभाव भी स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। दोनों रचनाएँ एक दूसरे से बहुत कुछ मिलती जुलती हैं और इनका बृहत्कथा, गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** तथा **काश्मीरी रामायण** से संबंध असंदिग्ध है (दे० ऊपर अनु० २६७ २-७)।

हिंदेशिया तथा हिंदचीन में **वाल्मीकि रामायण** प्राचीन काल से ज्ञात है। चम्पा राज्य के सातवीं श० ई० के एक शिलालेख में वाल्मीकि

द्वारा श्लोकोत्पत्ति का उल्लेख मिलता है (दे० ऊपर अनु० ३०८) तथा जावा के नवीं शताब्दी के एक शिव मंदिर में **रामायण** की समस्त घटनाओं का पाषाण-चित्र-लिपि में वर्णन किया गया है (दे० अनु० ३०२)। इस प्राचीन काल का कोई साहित्य सुरक्षित न रह सका किंतु बाद में जावा तथा मलय में विस्तृत राम-कथा-साहित्य की रचना हुई है। इसमें राम कथा के दो भिन्न रूप मिलते हैं—(१) जावा के १२ वीं श० ई० के **रामायण काकाविन** का रूप जिसका प्रधान आधार **भट्टिकाव्य** है (दे० अनु० २९९) तथा (२) अर्वाचीन **सेरी राम** का रूप जो वाल्मीकीय कथा से बहुत भिन्न है। फिर भी **सेरी राम** की आधिकारिक कथा वस्तु में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन अथवा परिवर्द्धन नहीं मिलता जो भारत की राम-कथाओं में विद्यमान न हो। राम-कथा का यह अर्वाचीन रूप हिंदेशिया में अधिक लोकप्रिय है और इसके आधार पर आधुनिकतम समय तक राम-कथा-विषयक नाटकों का अभिनय होता रहा। **सेरी राम** हिंदचीन, श्याम तथा ब्रह्मदेश में प्रचलित राम-कथाओं का मुख्य आधार है। फिर भी कांबोदिया के **रेआम केर** तथा श्याम के **राम कियेन** की एक विशेषता यह है कि इन दोनों में **काश्मीरी रामायण** तथा **सेरी राम** का समन्वय करने की अनेक स्थलों पर प्रयत्न किया गया है (दे० ऊपर अनु० ३०९-३१०)। १८ वीं शताब्दी ई० में ब्रह्मदेश के एक राजा ने श्याम की राजधानी अयुतिया को नष्ट कर बहुत से कैदियों को अपने साथ ले लिया था, जो ब्रह्मदेश में श्याम के राम-नाटक का अभिनय करने लगे। इस तरह श्याम की राम-कथा ब्रह्मदेश में फैल गई जिसके फलस्वरूप राम-नाटक वहाँ आज तक बहुत लोकप्रिय है (दे० अनु० ३१२)।

५९६. प्रस्तुत सिंहावलोकन की सामग्री से स्पष्ट है कि राम-कथा न केवल भारतीय किंतु एशियाई संस्कृति का भी एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व बन गई है। राम-कथा की इस व्यापकता तथा लोकप्रियता का श्रेय **वाल्मीकिकृत रामायण** को है। यह अगले परिच्छेद से और स्पष्ट होगा। अतः हम निस्संकोच कह सकते हैं कि विश्वसाहित्य के इतिहास में संभवतः ही किसी कवि का प्रादुर्भाव हुआ हो जो प्रभाव के दृष्टिकोण से भारत के आदिकवि वाल्मीकि की तुलना कर सके।

ख. विभिन्न रामकथाओं की मौलिकएकता

५९७. निबंध के द्वितीय भाग में राम-कथा के मूलस्रोत के विषय में

विविध मतों का विश्लेषण किया गया है। डॉ० वेबर के अनुसार राम-कथा का मूलरूप बौद्ध **दशरथ-जातक** के गद्य में सुरक्षित है। इस जातक में सीताहरण तथा युद्ध-वर्णन का अभाव है अतः इन दोनों का आधार संभवतः होमर के काव्य में ढूँढना चाहिए। श्री दिनेशचंद्र सेन की धारणा है कि वाल्मीकि ने पहले पहल (दशरथ, रावण तथा हनुमान्-संबंधी) तीन नितान्त स्वतंत्र वृत्तान्त मिलाकर राम-कथा की सृष्टि की है। डॉ० याकोबी के अनुसार **रामायण** की कथावस्तु के स्पष्टतया दो स्वतंत्र भाग हैं— प्रथम भाग अयोध्या से संबंध रखता है और ऐतिहासिक घटनाओं पर निर्भर है; द्वितीय भाग की आधिकारिक कथावस्तु (सीताहरण तथा रावणवध) का मूलरूप वैदिक साहित्य में विद्यमान है। सीता, राम तथा रावण का व्यक्तित्व क्रमशः वैदिक सीता (कृषि की अधिष्ठात्री देवी), इंद्र तथा वृत्रासुर से विकसित हुआ है। सीताहरण का मूलस्रोत पणियों द्वारा गायों का अपहरण है तथा रावणवध वृत्रासुर-वध का विकसित रूपमात्र है।

उपर्युक्त मतों की सामान्य विशेषता यह है कि राम-कथा का मूलस्रोत निर्धारित करने के लिए दो अथवा तीन स्वतंत्र वृत्तान्तों की कल्पना की जाती है। **दशरथ-जातक** के विषय में डॉ० वेबर का मत ही इस प्रवृत्ति का मूल-कारण प्रतीत होता है। **दशरथ-जातक** की राम कथा वाल्मीकि के शताब्दियों बाद सिंहलद्वीप में मौखिक परम्परा के आधार पर लिखी गई है (दे० ऊपर अनु० ६६)। इस बौद्ध वृत्तान्त के विश्लेषण से स्पष्ट है कि यह ब्राह्मण राम-कथा का विकृत रूप है (दे० अनु० ८०-८१)। राम-कथा के पूर्व रावण अथवा हनुमान् के विषय में स्वतंत्र आख्यान-काव्य प्रचलित था, श्री दिनेशचंद्र सेन के इस मत के लिए कोई भी आधार नहीं है (दे० अनु० १०२-१०३)। अंतरंग समीक्षा के आधार पर **रामायण** के (एक ऐतिहासिक तथा एक अलौकिक) दो स्वतंत्र भाग मानना अनावश्यक है। एक और दूसरे भाग की घटनाओं का मूलरूप वैदिक साहित्य में सुरक्षित हो इसके लिए कोई समीचीन प्रमाण नहीं दिया जाता है (दे० अनु० ६६)। दूसरी ओर इस भाग की प्रधान कथावस्तु (स्त्रीहरण तथा इसके कारण युद्ध) असाधारण तथा अलौकिक नहीं कही जा सकती है (दे० अनु० १०४)। राम के निर्वासन की भाँति सीताहरण तथा रावणवध अर्थात् राम-कथा की समस्त आधिकारिक कथा-वस्तु का ऐतिहासिक आधार मानना अधिक स्वाभाविक प्रतीत होता है (दे० अनु० १०५)।

अतः राम-कथा के दो अथवा तीन स्वतंत्र भागों की कल्पना का कहीं भी समीचीन आधार नहीं मिलता। इस तरह राम-कथा-विषयक आख्यान-काव्य का एक ही मूल-स्रोत रह जाता है अर्थात् एक ऐतिहासिक घटना। इस प्राचीन आख्यान-काव्य के आधार पर वाल्मीकि ने **रामायण** की रचना की है (दे० अनु० १४५)।

५६८. **बौद्ध तिपिटक** की एकाध गाथाएँ और संभवतः **महाभारत** के द्रोण तथा शांतिपर्व की अत्यन्त संक्षिप्त राम-कथाएँ वाल्मीकि के पूर्व के राम-कथा-संबंधी आख्यान काव्य पर निर्भर हैं। बौद्ध राम-कथाओं के केवल पाली अथवा चीनी भाषाओं में सुरक्षित रहने के कारण इनका राम-कथा के विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सका। इनका मूलस्रोत ब्राह्मण राम कथा ही है; किंतु एक तो वे अत्यन्त संक्षिप्त हैं, दूसरे ये गद्य में लिखी हैं, इससे इनपर **वाल्मीकि रामायण** की छाप स्पष्ट नहीं है। इनका आधार प्राचीन आख्यान-काव्य हो सकता है। शेष प्राचीन राम-कथा साहित्य **रामायण** पर समाश्रित है। **महाभारत** का रामोपाख्यान वाल्मीकि कृत **आदिरामायण** पर निर्भर है (दे० अनु० ३८)। जैन राम कथा के में न केवल मिथ्या ब्राह्मण राम-कथा का उल्लेख है (दे० अनु०५३) किंतु इनके कथानक के निरीक्षण से स्पष्ट है कि जैन कवि **वाल्मीकि रामायण** से भली भाँति परिचित थे तथा उन्होंने इसकी कथावस्तु के कई प्रसंगों को जान बूझकर बदलकर एक नया रूप दिया है। उदाहरणार्थ—वज्रमुख की कन्या लंका देवी का वृत्तान्त (दे० अनु० ४६८); समुद्र, सेतु तथा सुबेल नामक राजाओं का नल द्वारा पराजय (दे० अनु० ४८७); द्रोणमेघ की कन्या विशल्या के लक्ष्मण की चिकित्सा करने का प्रसंग (दे० अनु० ४६६)। संस्कृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य पर वाल्मीकि के प्रभाव के विषय में किसी संदेह का अवकाश नहीं रह जाता। विदेशी राम-कथा-साहित्य का मूल-स्रोत वाल्मीकीय राम कथा ही है। इसकी रचना आदि **रामायण** के शताब्दियों बाद हुई थी जब राम-कथा समस्त भारतीय संस्कृति में व्यापक रूप से फैल गई थी तथा उसमें विकास भी हुआ था। फलस्वरूप विदेशी राम कथाओं में वाल्मीकि से पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है; फिर भी इसमें कहीं कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं किया गया है, जिसका सूत्रपात भारतीय साहित्य में विद्यमान न हो।

५६९. अत्यन्त विस्तृत भारतीय तथा विदेशी राम-कथा साहित्य में कहीं

कहीं परस्पर विरोधी बातें मिलती हैं। इस विरोध का साम्प्रदायिक साहित्य में इस प्रकार समन्वय किया गया है कि विभिन्न कल्पों में कोटि कोटि रामावतार प्रकट हुए हैं और इन असंख्य अवतारों के कारण राम-चरित में विभिन्नता आ गई है—

पुनः पुनः कल्पभेदाज्जातः श्रीराघवस्य च।
अवतारः कोटिशोऽत्र तेषु भेदः क्वचित्क्वचित्॥ २६॥

(आनन्द रामायण, पूर्ण काण्ड, सर्ग ७)

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि को इन विभिन्न रामकथाओं का रचयिता कहा गया है। **अद्भुत रामायण** (दे० सर्ग १), **आनद रामायण** (दे० राजाकाण्ड, सर्ग १) आदि में एक वाल्मीकिकृत **शतकोटिश्लोक रामायण** का उल्लेख मिलता है, जिसके विभाजन से विभिन्न **रामायणों** की उत्पत्ति मानी गई है। इस प्रकार साम्प्रदायिक साहित्य में राम-कथाओं का मूलस्रोत एक ही **शतकोटिश्लोक रामायण** माना गया है। फिर भी विभिन्न अवतारों के कारण रामकथाओं मे मौलिक भेद स्वीकार किया गया है। कई आधुनिक समालोचकों की भी यह धारणा है कि प्राचीन काल से अनेक सर्वथा स्वतंत्र राम-कथाएँ प्रचलित थी। किंतु एक ओर इस प्रकार की रामकथाओं के अस्तित्व के बहिरंग प्रमाण नही दिए जा सकते हैं; दूसरी ओर प्रस्तुत निबंध में जो अत्यंत विस्तृत राम-कथा साहित्य की समस्त विभिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है इससे स्पष्ट है कि **वाल्मीकिकृत रामायण** के तत्त्वों को लेकर इनका धीरे धीरे क्रमिक विकास हुआ है। इस प्रकार प्राचीन काल से प्रचलित स्वतंत्र राम-कथा के अस्तित्व के अंतरंग प्रमाण भी नहीं मिलते। अतः **वाल्मीकि कृत रामायण** ही समस्त प्रचलित राम-कथा-साहित्य का मूलस्रोत प्रमाणित होता है।

६००. **रामायण** के प्रमाणिक काण्डों (अर्थात् अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्ध काण्ड तक) के कथानक पर आदिकवि की छाप इतनी स्पष्ट है तथा विभिन्न कथाओं के वस्तु विन्यास में आधिकारिक कथावस्तु की गति इस प्रकार अबाध रूप से आगे बढ़ रही है कि बाद की राम-कथाओं में इन काण्डों के कथानक का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है। अर्वाचीन राम-कथा-साहित्य में वास्तविक सीता के स्थान पर एक माया-सीता का हरण वर्णित है, किन्तु इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का कारण स्पष्टतया आदर्शवाद

तथा भक्ति-भावना है। इसके अतिरिक्त माया-सीता के इस वृत्तान्त का क्रमिक विकास देखकर किसी स्वतन्त्र रामकथा की कल्पना नितान्त निर्मूल सिद्ध हो जाती है (दे० ऊपर अनु० ४४३-४४७)।

रामायण के प्रक्षिप्त काण्डों (अर्थात् बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड) की कथावस्तु की अर्वाचीन राम-कथाओं में अवश्य बहुत कुछ विभिन्नता पाई जाती है। विशेषकर सीताजन्म, हनुमान की जन्मकथा, सीतात्याग, कुशलव-चरित तथा राम-कथा के निर्वहण में। किंतु इन प्रसंगों से संबंध रखनेवाली सामग्री के अध्ययन से यह भावना दृढ़ हो जाती है कि वाल्मीकीय कथा को लेकर ही इनका क्रमिक विकास हुआ है।

६०१. सीताजन्म विषयक नानाविध सर्वथा भिन्न कथाएँ प्रचलित हो गई हैं। जनक, रावण और दशरथ, तीनों सीता के पिता माने गए हैं। विभिन्न रामकथाओं के प्राचीनता को ध्यान न रखने के कारण अनेक विद्वानों ने इस समस्या को सुलझाने के लिए बहुत चिंत्य मत प्रस्तुत किए हैं। इनके अनुसार सीता पहले दशरथ की पुत्री, इसके बाद रावण की पुत्री मानी गई हैं, और अंत में अयोनिजा सीता की कल्पना की गई है।

दशरथ-जातक के अनुसार सीता दशरथ की औरस पुत्री तथा राम-लक्ष्मण की सहोदरी बहन हैं। इस जातक की समस्या का पूरा विश्लेषण प्रस्तुत निबंध के छठे अध्याय में किया गया है। इससे स्पष्ट है कि **दशरथ-जातक** की राम-कथा न केवल ब्राह्मण राम-कथा का विकृत रूप है, किंतु इसका रचनाकाल वाल्मीकि के बहुत शताब्दियों बाद ही माना जाना चाहिए। सीता की जन्म-कथाओं का एक अन्य वर्ग मिलता है जिसमें सीता या तो रावणात्मजा मानी गई है या जनक को प्राप्त होने के पूर्व इनका किसी न किसी तरह लंका से संबंध स्थापित किया गया है। इन जन्मकथाओं पर **रामायण** के उत्तरकाण्ड में वर्णित वेदवती के वृत्तान्त की गहरी छाप प्रायः स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। इसके अतिरिक्त ये सभी जन्मकथाएँ **रामायण** के भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म-वृत्तान्त को स्वीकार करती हैं। अतः वाल्मीकि रामायण की सामग्री से सीता की विभिन्न जन्मकथाओं का क्रमिक विकास सिद्ध होता है (दे० ऊपर अनु० ३६८-३८६)।

६०२. हनुमान् के जन्म के विषय में भी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं जो सर्वथा भिन्न प्रतीत होती हैं, किंतु कालक्रमानुसार तुलना करने पर इनका क्रमिक विकास स्पष्ट हो जाता है। हनुमान् की जन्म-कथा का प्राचीनतम

तथा सब से व्यापक रूप **वाल्मीकि रामायण** में सुरक्षित है; इसके अनुसार वह वायु तथा अजना के पुत्र हैं। संभवतः आठवीं शताब्दी और निश्चित रूप से दसवीं शताब्दी से लेकर हनुमान् शिव के अवतार माने जाने लगे। इस कथा की उत्पत्ति अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होती है। **रामायण** की आधिकारिक कथावस्तु में शिव के लिए कोई स्थान नहीं थ। राम-कथा की लोकप्रियता को देखकर शैव इसकी अवहेलना न कर सके, अतः उन्होंने हनुमान् को शिव का अवतार मान लिया। हनुमान् की इस जन्मकथा का प्रारंभिक रूप **रामायण** के वृत्तान्त से सीधा संबंध रखता है, लेकिन आगे चलकर शिवद्वारा हनुमान् के उत्पन्न होने की किंचित् भिन्न कथाओं की कल्पना कर ली गई है। यद्यपि इनमें अजना तथा प्रायः वायु का भी उल्लेख किया गया है। एक भारतीय कथा के अनुसार शिव तथा पार्वती ने वानर-वानरी के रूप में हनुमान् को उत्पन्न किया था। इस कथा में शिव-पार्वती के स्थान पर राम-सीता को रखा गया है जिससे हिंदेशिया तथा श्याम की कथाएँ विकसित हुई हैं, जिनमें राम को हनुमान् का पिता माना गया है। हनुमान्, जन्म वृत्तान्त के जो दशरथ यज्ञ के पायस से संबंध रखते हैं, अर्वाचीन तथा बहुत कम प्रचलित हैं।

उपर्युक्त समस्त जन्म कथाओं में हनुमान् की माता अजना (अजनी) है और एकाध कथाओं को छोड़कर वायु उनकी उत्पत्ति में सहायक माने जाते हैं (दे० ऊपर अनु० ५४१-५५०)। अतः हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि हनुमान् की कोई ऐसी जन्मकथा नहीं मिलती जो **वाल्मीकि रामायण** की कथा से अलग, स्वतंत्र रूप से विकसित हुई हो।

६०३. सीतात्याग की कथाओं में पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है, किंतु इनके विकास की रूपरेखा स्पष्ट होने के कारण इनके लिए स्वतंत्र राम-कथाओं का आश्रय लेना नितान्त अनावश्यक है। यद्यपि आदि-कवि वाल्मीकि ने सीतात्याग का वर्णन नहीं किया था, किंतु इसका बीज युद्ध-काण्ड के उस स्थल में विद्यमान है जहाँ लोकापवाद का उल्लेख है और राम सीता के चरित्र पर संदेह प्रकट करते हैं। आगे चलकर प्रक्षिप्त उत्तरकांड के अनुकरण पर राम-कथाओं में सीतात्याग का प्रायः वर्णन किया गया है। इस त्याग के तीन व्यापक कारण माने गए हैं और इन तीनों कारणों में विकास देखा जा सकता है। सामान्य लोकापवाद के बाद इसका एक विशेष उदाहरण (धोबी की कथा) प्रस्तुत किया गया है। बाद की अनेक राम-कथाओं में जनसाधारण के मनोविज्ञान के अनुकूल एक नई कथा की

कल्पना कर ली गई है, अर्थात् सीता के पास रावण का चित्र। सीताहरण के अंतिम रूप में केवल एक माया-सीता का हरण होता है; इसी तरह सीता-त्याग की कथा की परिणति भी यह है कि सावित्री सीता अदृश्य रूप से राम के वामांग में निवास करती हैं और केवल इनकी रजस्तमोमयी छाया का परित्याग होता है (दे० ऊपर अनु० ५५१-५६८)।

६०४. कुश-लव-चरित तथा राम-कथा के निर्वहण में जो विभिन्नता पाई जाती है वह भी स्वाभाविक विकास का परिणाम माना जा सकता है। 'कुश' शब्द के कारण ही वाल्मीकि के कुश घास से कुश की सृष्टि करने की कथा उत्पन्न हुई होगी (दे० ऊपर अनु० ५७०-५७६)। उत्तरकाण्ड के अनुसार कुश-लव वाल्मीकि के साथ राम के अश्वमेध की यज्ञभूमि में पहुँचकर **रामायण** का गान करते हैं। इनके वहाँ पहुँचने का कोई विशेष कारण नहीं बताया जाता है। बाद की राम-कथाओं में कुश-लव को वीरता दिखलाने के उद्देश्य से रामाश्वमेध के पूर्व इनके राम सेना से युद्ध करने का वर्णन किया गया है (दे० ऊपर अनु० ५८०-५८३)।

वाल्मीकिकृत **आदि रामायण** राम के अभिषेक तथा उनके ऐश्वर्यशाली राज्य के वर्णन पर समाप्त होता था। इस सुखांत कथावस्तु में आगे चलकर उत्तरकाण्ड जोड़ दिया गया जिससे प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** दुःखांत हो गया। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि बाद की कई राम-कथाओं को पुनः सुखांत बना देने का प्रयत्न किया गया है (दे० ऊपर अनु० ५८६-५८६)।

अतः अत्यन्त विस्तृत राम-कथा-साहित्य में जो वैभिन्न्य आ गया है वह वाल्मीकिकृत **रामायण** के विकास तथा उसके कथानक पर विभिन्न प्रभावों का परिणाम माना जा सकता है। **वाल्मीकि रामायण** से स्वतन्त्र प्राचीन काल से जनसाधारण में प्रचलित सर्वथा भिन्न-कथाओं का अस्तित्व मानने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

ग—प्रक्षिप्त सामग्री की सामान्य विशेषताएँ

६०५. निबंध के द्वितीय भाग में प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के मुख्य प्रक्षेपों का उल्लेख तथा उनकी सामान्य विशेषताओं का वर्गीकरण किया गया है (दे० ऊपर अनु० १५३)। यह प्रक्षिप्त सामग्री राम-कथा के प्रारंभिक विकास पर प्रकाश डालती है।

तीनों पाठों के मुख्य प्रक्षेप निम्नलिखित हैं—

(१) समस्त बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड (दे० अनु० ११५-१२३)।

(२) रामावतार-विषयक सामग्री (दे० अनु० १२४-१४३)।

(३) अयोध्याकाण्ड में—निर्वासितों की अत्रि से भेंट; क्वचित्सर्ग; जाबाली-वृत्तान्त (दे० अनु० ३६२)।

(४) अरण्यकाण्ड में—विराधवध; निर्वासितों का शरभंग, सुतीक्ष्ण तथा अगस्त्य से मिलना; सीताहरण के पूर्व जटायु से भेंट (दे० अनु० ४१४); कनक-मृग का वृत्तान्त (दे० अनु० ४३५)।

(५) किष्किधाकाण्ड मे—वालिवध के विषय में राम का दोष-निवारण; दिग्वर्णन (दे० अनु० ४५०)।

(६) सुन्दरकाण्ड में—लंकादहन; मधुवन में वानरों का उत्पात (दे० अनु० ४६२)।

(७) युद्धकाण्ड में—राम के मायाशीश का वृत्तान्त (दे० अनु० ४७६); हनुमान् की हिमालय-यात्रा (दे० ४८२); अग्निपरीक्षा (दे० अनु० ५५६)।

इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य में—राम की जन्मतिथि (दे० अनु० ३१५) तथा निर्वासितों का वाल्मीकि से मिलना (दे० अनु० ३६१)।

गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में—कालनेमि का वृत्तान्त (दे० अनु० ४७६)।

गौडीय पाठ में—हिमालय-यात्रा के अवसर पर हनुमान्-भरत संवाद (दे० अनु० ४७७)।

पश्चिमोत्तरीय पाठ में—मंदोदरी केशग्रहण (दे० अनु० ४७८)।

६०६. निबंध के चतुर्थ भाग में राम-कथा की समस्त विभिन्नताओं का निरूपण किया गया है। प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** की कथावस्तु के दृष्टिकोण से निम्नलिखित परिवर्तन तथा परिवर्द्धन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

बालकाण्ड

दशरथ के विवाहों के विषय में विविध कथाएँ (दे० अनु० ३४६)।

कृष्ण की बाललीला के अनुकरण पर राम-जन्म के अवसर पर अलौकिक घटनाओं का उल्लेख और राम की बाललीला का वर्णन (दे० अनु० ३१६-३२१)।

अहल्योद्धार का विकास (दे० अनु० ३२६-३२६)।

सीतास्वयंवर का नवीन रूप जिसके अनुसार राम अन्य राजाओं की उपस्थिति में (तथा आगे चलकर रावण की उपस्थिति में) धनुष चढ़ाते हैं (दे० अनु० ३७१-३६३)।

राम-सीता के पूर्वानुराग का वर्णन (दे० अनु० ३६६)।

सीता-जन्म-विषयक बहुत सी अत्यन्त विभिन्न कथाएँ (दे० अनु०-३६८-३८६)।

अयोध्याकाण्ड

राम के निर्वासन के विभिन्न कारण (दे० अनु० ४०४-४०६)।
कैकेया की वरप्राप्ति की एकाध कथाएँ (दे० अनु० ४०७-४०६)।
कैकेयी का दोष-निवारण (दे० अनु० ४१०)।

अरण्यकाण्ड

वास्तविक सीता के स्थान पर माया-सीता का हरण (दे० अनु०-४४३-४४७)।

किष्किंधाकाण्ड

वालिवध का नवीन रूप जिसके अनुसार वालि राम से द्वन्द्वयुद्ध करता है (दे० अनु० ४५७)

सुन्दरकांड

इसकी कथावस्तु में कहीं उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं किया गया है।

युद्धकांड

(१) सेतुबंध के वर्णन में बहुत से गौण परिवर्तन तथा परिवर्द्धन (दे० अनु० ४८७-४६३)।

(२) इंद्रजित्-वध के प्रसंग में लक्ष्मण के १२ वर्ष तक उपवास तथा जागरण का उल्लेख और इंद्रजित् की पत्नी सुलोचना की कथा (दे० अनु० ५००-५०१)।

(३) रावण के मर्मस्थान की कल्पना (दे० अनु० ५०४)।

(४) भस्मलोचन (दे० अनु० ५१२) तथा महीरावण (दे० अनु० ५१३) के वृत्तान्त।

उत्तरकांड

(१) रावण के पूर्व-जन्म की कथाएँ तथा उसको राक्षस-योनि प्राप्त होने के अनेक वृत्तान्त (दे० अनु० ५३७)।

(२) हनुमान् की जन्मकथाएँ (दे० अनु० ५४१) तथा उनके पुत्र की उत्पत्ति के विषय में विविध वृत्तान्त (दे० अनु० ५१९-५२१)।

(३) शम्बूक-वध की कथा का विकास (दे० अनु० ५१९-५२३)।

(४) सीतात्याग के विभिन्न कारण तथा इस वृत्तान्त का क्रमिक विकास (दे० अनु० ५५१-५६८)।

(५) कुश-लव के जन्म तथा दोनों के राम-सेना से युद्ध करने के वृत्तान्त (दे० अनु० ५६९-५८३)।

(६) राम-कथा को सुखांत बना देने के विभिन्न मार्ग (दे० अनु० ५८६-५८९)।

(७) सीता द्वारा सहस्रस्कंधरावण-वध की कथाएँ (दे० अनु० ५३० ५३३)।

६०७. **वाल्मीकि रामायण** के अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक की कथावस्तु में जो प्रक्षेप किए गए हैं, वे (कनकमृग की कथा, लंकादहन तथा अग्निपरीक्षा को छोड़कर) अधिकांश पुनरुक्ति मात्र हैं। बाद की राम-कथाओं में भी माया-सीता-हरण को छोड़कर इस सामग्री में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं मिलता। अतः प्रक्षिप्त सामग्री की पहली विशेषता यह है कि एक ओर कथानक के विभिन्न अंगों के चुस्त विन्यास के कारण **आदि रामायण** के प्रामाणिक कांडों की कथावस्तु में अपेक्षाकृत कम परिवर्तन तथा परिवर्द्धन किया गया है। दूसरी ओर बालकांड तथा उत्तरकांड के कथानक का अत्यधिक विकास हुआ है। इन प्रक्षिप्त कांडों की प्रारंभ से ही कोई विशेष एकता नहीं थी, फलस्वरूप इन दोनों कांडों की कथावस्तु का प्रचुर मात्रा में परिवर्द्धन किया गया है।

६०८. एक ओर अतिशयोक्ति का अभाव, संतुलन तथा स्वाभाविकता वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** का विशेष गुण है। दूसरी ओर नवीन सामग्री में कृत्रिमता, अद्भुत रस की प्रधानता तथा अलौकिक घटनाओं का बाहुल्य पाया जाता है। उदाहरणार्थ प्रचलित **रामायण** के निम्नलिखित

प्रक्षेप—कनकमृग का वृत्तान्त; हनुमान् का लंकादेवी से युद्ध; लंकादहन; हनुमान् की हिमालय-यात्रा; सीता की अग्निपरीक्षा; और ब द की रामकथाओं में—राम-जन्म के अवसर पर की अलौकिक घटनाएँ; लक्ष्मण का बारह वर्ष तक उपवास तथा जागरण; रावण के मर्मस्थान की कल्पना; भस्मलोचन तथा महीरावण की कथाएँ; वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि; सीता द्वारा सहस्रस्कंध-रावण-वध; नाटकों में विविध पात्रों का अन्य पात्रों का रूप धारण कर लेना (दे० ऊपर अनु० २३२) ; **आश्चर्य-चूडामणि, अद्भुत दर्पण, मायापुष्पक** आदि अद्भुत रस-प्रधान नाटक ।

६०६. नवीन सामग्री की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें कथा-वस्तु की विभिन्न घटनाओं का कारण निर्देश करने का प्रयत्न किया जाता है । उदाहरणार्थ—कैकेयी देवासुर-युद्ध में दशरथ को बचाने में समर्थ हुई थी, इसका कारण समझाने के लिये एक कथा की कल्पना की गई है जिसमें बताया जाता है कि कैकेयी ने किस प्रकार विद्याबल प्राप्त किया था (दे० अनु० ३६१); सीता के कारण रावण का वध हुआ था, इसका मूल कारण समझाने के लिए हरण के पूर्व ही सीता का अनेक प्रकार से लंका से सबंध स्थापित किया गया है (दे० अनु० ३७४-३८७) । कारण-निर्देश की यह प्रवृत्ति निम्नलिखित सामग्री में भी स्पष्ट है—पात्रों के पूर्वजन्म की कथाएँ; वरों तथा शापों के विषय में विविध वृत्तान्त; पात्रों के नामों पर आधारित जन्म-कथाएँ । उदाहरणार्थ, मथरा अपने पूर्वजन्म में विरोचन की पुत्री है और इस पूर्वजन्म के वैर से प्रेरित होकर वह राम का विरोध करती है (दे० अनु० ४११) । इसी प्रकार काकभुशुण्डी (दे० अनु० ३२२), सीता (दे० अनु० ३७३, वेदवती की कथा), वालि (दे० अनु० ४५५), रावण कुंभकर्ण (दे० अनु० ५३७, हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु), दशरथ-कौशल्या (दे० अनु० ३४२-३४४, कश्यप अदिति), आदि पात्रों के पूर्वजन्म की भी कथाएँ हैं । रामावतार का कारण समझाने के लिए विविध वरों तथा शापों की कल्पना कर ली गई है; उदाहरणार्थ—कश्यप (दे० अनु० ३४२), स्वायंभू मनु (दे० अनु० ३४३), धर्मदत्त (दे० अनु० ३४४, तथा दशरथ (दे० अनु० ३३२) द्वारा वर-प्राप्ति और भृगु, सनत्कुमार, देवशर्मा, वृन्दा तथा नारद द्वारा दिए हुए शाप (दे० अनु० ३४५-३४८) । हनुमान् की जन्मकथाओं में केसरी द्वारा वर-प्राप्ति (दे० अनु० ५४२) तथा गौतम ऋषि के शाप का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ५४८) । अर्वाचीन रामकथाओं के अनुसार जय-विजय ने अथवा मधु-कैटभ ने शापवश

राक्षस-योनि प्राप्त की थी और वे रावण-कुंभकर्ण के रूप में प्रकट हुए (दे० अनु० ५२७) । सीतात्याग का परोक्ष कारण भृगु-शाप (दे० अनु० ५६२) अथवा शुक्री का शाप (दे० अनु० ५६२) बताया गया है । इसके अतिरिक्त कैकेयी (दे० अनु० ३६१), नल (दे० अनु० ४८६) आदि पात्रों को दिए हुए शापों का उल्लेख मिलता है ।

६१०. विश्व भर के कथा-साहित्य में पात्रों के नामों पर आधारित विविध वृत्तान्त मिलते हैं जिनमें नाम का कारण-निर्देश किया जाता है (एटिमोलोजिकल लेजेंड्स) । नाम पहले ही प्रसिद्ध हो जाता है, कथा की कल्पना बाद में की जाती है । अतः वास्तव में कथा नाम का कारण नहीं होती, प्रत्युत् नाम कथा का कारण हो जाता है । सीता की विभिन्न जन्म कथाओं में इस प्रवृत्ति के अनेक उदाहरण मिलते हैं । 'सीता' शब्द का अर्थ है लांगलपद्धति; भूमिजा सीता के अलौकिक जन्म की कथा इस अर्थ पर आधारित प्रतीत होती है (दे० अनु० ३७१) । 'सीताफल' के आधार पर एक कथा की कल्पना की गई है जिसके अनुसार सीता एक फल से उत्पन्न हुई थीं (दे० अनु० ३८५) । अवतारवाद के विकास में लक्ष्मी सीता के रूप में अवतरित मानी गई हैं, अतः पद्मा (लक्ष्मी का एक नाम) के कारण पद्मजा सीता की कथा उत्पन्न हुई है (दे० अनु० ३८०) । वेदवती की कथा के प्राचीनतम रूप में इसके नाम का कोई कारण नहीं दिया गया था; बाद में एक कथा मिलती है जिसके अनुसार वह जन्म लेते ही वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करने लगी थी (दे० अनु० ३७३) ।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड में 'रावण' नाम पर आधारित निम्नलिखित कथा पाई जाती है । कैलास के ऊपर पुष्पक के रुक जाने पर रावण उतर कर कैलास को अपनी भुजाओं से उठाने लगा । इसपर शिव ने अपने पैर के अंगूठे से पर्वत को दबा दिया, जिससे रावण क्रोध तथा पीड़ा से व्याकुल होकर चिल्ला उठा । एक सहस्र वर्ष के पश्चात् शिव रावण की स्तुति से सन्तुष्ट हुए और उन्होंने उसकी भुजाओं को यह कहकर मुक्त कर दिया—'कैलास पर्वत से आक्रान्त होकर तुमने जो भीषण चीत्कार (रावः सुदारुणः) किया था इसके कारण तुम्हारा नाम रावण होगा' (उत्तरकांड, सर्ग १६, श्लोक ३६,३७ ।)

'कुशीलव' शब्द से, जिसका अर्थ गायक है, कुश-लव के नामों की व्युत्पत्ति में संदेह नहीं है । फिर भी कुश-लव की जन्मकथाओं में इन नामों के अन्य कारणों का निर्देश किया गया है । वाल्मीकि ने अग्रज को कुश

से तथा अनुज को लव से मलने की आज्ञा दी थी, जिससे इनके नाम कुश तथा लव रखे गए थे (दे० अनु० ५७३)। और आगे चलकर 'कुश' शब्द के आधार पर एक कथा की कल्पना कर ली गई है जिसके अनुसार वाल्मीकि ने कुश (घास) से कुश की सृष्टि की थी (दे० अनु० ५७७)।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में वालि-सुग्रीव की एक जन्मकथा पाई जाती है, जिसकी कल्पना स्पष्टतया इनके नामों के आधार पर की गई है। इंद्र तथा आदित्य दोनों ऋक्षरजा को आकाशमार्ग से देखकर आसक्त हो गए। फलस्वरूप इंद्र का वीर्य्य ऋक्षरजा के बालों पर गिरा जिससे उसने वालि को जन्म दिया (**वालेष पतितं वीजं वाली नाम बभूव सः,** दे० सर्ग ३७, प्र० १, श्लोक ३७)। इसी प्रकार सूर्य का वीर्य्य ऋक्षरजा की ग्रीवा पर गिरा जिससे सुग्रीव उत्पन्न हुआ (**ग्रीवायां पतितं बीजं सुग्रीवः समजायत,** दे० वही, श्लोक ३६)।

वाल्मीकि रामायण में हनुमान् की जो जन्मकथा मिलती है वह भी 'वायु-पुत्र' शब्द पर आधारित प्रतीत होती है। **वैदिक साहित्य** तथा **बौद्ध तिपिटक** में सुरक्षित प्राचीन पाली गाथाओं में हनुमान् का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है ! अतः हम मान सकते हैं कि हनुमान् **रामायण** के कारण प्रसिद्ध हो सके हैं (दे० अनु० १०३)। दूसरी ओर **रामायण** के पूर्व ही 'वायुपुत्र' शब्द एक निश्चित अर्थ में प्रचलित था। **सुमग्ग जातक** में एक 'वायुस्स पुत्त' नामक विद्याधर की कथा मिलती है जो जादूगर है। इसके सम्बन्ध में न तो हनुमान् का उल्लेख किया गया है और न किसी अन्य वानर का। इसके अतिरिक्त 'वायुस्स पुत्त' का अर्थ अन्यत्र भी विद्याधर अथवा जादूगर है तथा **महाभारत** में 'वातिक' का अर्थ जादूगर ही है [1]। रामायण में हनुमान् समुद्र लाँघते हैं, सीता का पता लगाते हैं और अन्य वानरों की अपेक्षा बुद्धिमान् तथा कार्यकुशल माने जाते हैं। हनुमान् के इन अद्भुत कार्यों का ध्यान रखकर उनको संभव है 'वायु पुत्र' अर्थात् जादूगर (विद्याधर) की उपाधि दी गई हो। बाद में 'वायु पुत्र' के नाम से ही प्रचलित जन्म-कथा विकसित हुई होगी जिसके अनुसार वायु ने वानर-योनि-प्राप्ता अप्सरा से हनुमान् को उत्पन्न किया था।

अध्यात्म रामायण का वृतान्त भी जिसके अनुसार वाल्मीकि एक वल्मीक से निकले थे, कथाओं के प्रस्तुत वर्ग के अंतर्गत रचना चाहिए (दे० ऊपर अनु० २६)।

१. दे० जर्मन ओरियेंटल जर्नल, भाग ९३, पृ० ८९।

६११. **आदि रामायण** के वक्ता वाल्मीकि ही हैं। फिर भी प्रचलित बालकांड के प्रथम सर्ग के अनुसार नारद ने वाल्मीकि को राम-कथा का संक्षिप्त वर्णन सुनाया था और इसके आधार पर वाल्मीकि ने **रामायण** की रचना की थी। बाद की राम-कथाएँ प्रायः संवाद के रूप में दी गई हैं। महात्मा बुद्ध जातकों के वक्ता हैं (दे० अनु० ४७)। रामोपाख्यान मार्कण्डेय द्वारा युधिष्ठिर को सुनाया गया था (दे० अनु० ३७) और जैन **पउमचरिय** सेणिय-गोयम संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है (दे० अनु० ५६)। इसी तरह साम्प्रदायिक संस्कृत रामायण तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रामायण प्रायः संवाद तथा उप संवाद के रूप मे लिए गए हैं। उदाहरणार्थ **योगवासिष्ठ** (दे० अनु० १८५), **अध्यात्म रामायण** (दे० अनु० १८६), **अद्भुत रामायण** (दे० अनु० १८७), **आनन्द रामायण** (दे० अनु० १८८), **सत्योपाख्यन** (दे० अनु० १६८), 'हिदुत्व' में उल्लखित **रामायण** (दे० अनु० २०१-२ १६), **काश्मीरी रामायण** (दे० अनु० २७६), **रामचरित मानस** (दे० अनु० २८४), उड़िया **बलराम-दास रामायण** (दे० अनु० २८६)।

घ—विविध प्रभाव

(१) जैन राम कथा ओं का प्र भा व

६१२. जैन राम-कथाओं का आधार स्पष्टतया प्रचालत **वाल्मीकि रामायण है**, किंतु जैन कवियों ने ब्रह्मण राम कथा को अपनाकर इसमें बहुत से पारवर्तन किए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैनयों द्वारा किए हुए पारवर्तन आगे चलकर अन्य राम-कथाओ म भी आ गए हैं। निम्नलिखित वृत्तान्त, जो आर्वाचीन राम-कथाओं में व्यापक रूप स पाए जाते ह, पहले पहल विमलसूरिकृत **पउमचरिय** म वर्णित हैं।

(१) सीतास्वयंवर के अवसर पर अन्य राजाओं की उपस्थिति में राम द्वारा धनुर्भग (दे० अनु० ३६२)।

(२) लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के पुत्र शम्बूक का वध (दे० अनु० ५२२-५२३)।

(३) कुश लव का राम सेना से युद्ध (दे० अनु० ५८०)।

इसके अतिरिक्त गुणभद्रकृत **उत्तरपुराण** प्राचीनतम रचना है जिसमें सीता रावण की पुत्री मानी गई है (दे० अनु० ३७५) और हेमचद्रकृत **जैन रामायण** में पहले पहल सीतात्याग के वृत्तान्त में रावण के चित्र का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० ५५६)।

(२) शैव प्रभाव

६१३. **वाल्मीकि रामायण** के युद्धकांड में राम द्वारा सेतु पर शिव-प्रतिष्ठा का जो निर्देश किया गया है वह केवल दाक्षिणात्य पाठ में मिलता है और इसलिए प्रक्षिप्त माना जाता है (दे० अनु० ४६२) । उत्तरकांड में रावण के शिव-भक्त होने का उल्लेख है, किंतु इसके प्रारंभिक रूप में इस उल्लेख का संभवतः अभाव था क्योंकि रावण तथा उसके भाइयों की तपस्या के फलस्वरूप ब्रह्मा से वरदान प्राप्त होने का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५३८) । अतः **रामायण** में पहले शिव का कोई उल्लेख नहीं था किंतु उत्तरकांड के अंतिम रूप से राम कथा के विकास पर शैव प्रभाव दिखाई देने लगता है । आगे चल कर यह प्रभाव विशेष रूप से निम्नलिखित प्रसंगों में प्रकट होता है—रावण का ब्रह्मा के स्थान पर शिव से वरदान प्राप्त करना; राम द्वारा सेतु पर शिव प्रतिष्ठा; शिव का हनुमान् के रूप में अवतरित होना ।

प्रचलित उत्तरकांड तथा **महाभारत** के रामोपाख्यान के अनुसार रावण तथा उसके भाई तपस्या करने के बाद ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करते हैं । इस तपस्या के वर्णन में रावण के अपने नौ सिर ब्रह्मा को समर्पित करने का उल्लेख किया गया है । फिर भी उत्तरकांड के अन्य स्थलों पर रावण के शिव-भक्त होने का निर्देश मिलता है—१६ वें सर्ग के अनुसार रावण ने शिव से चंद्रहास नामक खड्ग प्राप्त किया था और ३१ वें सर्ग में कहा गया है कि रावण सदा एक सुवर्ण शिवलिंग अपने पास रखता था । **रघुवंश** से लेकर बाद की राम-कथाओं में रावणादि भाइयों के ब्रह्मा के स्थान पर शिव से वरदान प्राप्त करने तथा रावण के शिव को अपने नौ सिर समर्पित करने का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५३८) । **आनन्द रामायण** आदि अर्वाचीन राम-कथाओं में रावण मंदोदरी-विवाह के विषय में एक वृत्तान्त मिलता है, जिसके अनुसार रावण ने एक वर के बल पर शिव से पार्वती को प्राप्त किया था और बाद में विष्णु के धोखे में पड़कर उनके स्थान पर मंदोदरी से विवाह किया (दे० अनु० ५३६) ।

वाल्मीकि रामायण के दाक्षिणात्य पाठ के एक प्रक्षेप के अनुसार राम वापसी यात्रा में सीता को सेतु दिखलाकर कहते हैं कि महादेव ने यहाँ मुझपर अनुग्रह किया था (**अत्र पूर्वं महादेव प्रसादमकरोन्मम**) बाद की रामा-कथाओं में पहले युद्ध के पश्चात् शिवप्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता

है, उदाहरणार्थ **नृसिंह पुराण**, **कूर्मपुराण** आदि में। आगे चलकर प्रायः सेतु निर्माण के अवसर पर शिवप्रतिष्ठा का वर्णन किया गया है जैसे **अध्यात्मरामायण** आदि में (दे० अनु० ४६२)।

शैव पुराणों में पहले पहल हनुमान् के शिव के अवतार होने का निर्देश मिलता है। किन्तु बाद में इसका बहुत सी अन्य राम-कथाओं में भी वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५४४-५४६)।

६१४. उपर्युक्त तीन व्यापक प्रसगों के अतिरिक्त शैव प्रभाव से संबंध रखने वाली अन्य कम प्रचलित सामग्री का भी उल्लेख करना है। अहल्या (दे० अनु० ३२८), दशरथ (दे० अनु० २२४ तथा **रामायण काकाविन** सर्ग १)। विभीषण (दे० अनु० ४८६) आदि पात्रों के शैव होने अथवा शिवलिंगपूजा करने के निर्देश के अतिरिक्त राम की शिवभक्ति तथा शिव की सहायता से रावण पर विजय प्राप्त करने के विषय में अनेक नए वृत्तान्तों की कल्पना करली गई है। **शिवपुराण** के अनुसार विष्णु ने शिव की आज्ञा से अवतार लिया था (अनु० दे० १७६); **सत्योपाख्यान** में राम शिव से शिव-भक्ति का वरदान मांगते हैं (दे० उत्तरार्द्ध, अध्याय १६); **शिवमहापुराण** के अनुसार राम ने गोदावरी के तट पर शिवलिंग स्थापित कर चार महीने तक उसकी आराधना की थी, जिसपर शिव ने उनको अपना धनुष दे दिया था (दे० शतरुद्रसंहिता, अध्याय ३८)। **पद्मपुराण** के अनुसार राम ने समुद्र के तट पर शिव से विनती कर उनसे अजगवधनुष प्राप्त किया था और उस धनुष पर समस्त सेना ने समुद्र को पार किया (दे० अनु० ५८७)। **रामलिंगामृत** में रावण का कहना है कि शिव की पूजा करने के पुरस्कार-स्वरूप राम विजय प्राप्त करने में समर्थ हुए (दे० सर्ग १०)। **आनन्द रामायण** (दे० मनोहरकांड, सर्ग १२), **पद्मपुराण** [1] तथा **रामलिंगामृत** (दे० सर्ग १६) में राम तथा शिव की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है और **रामलिंगामृत** के अनुसार राम ने युद्ध के पूर्व अपना शिव-रूप दिखलाया था (दे० सर्ग १०)। इसके अतिरिक्त **सरपुराण** में कहा गया है कि राम ने शकर के प्रसाद से अपना विष्णुपद पुनः प्राप्त किया था (दे० अध्याय ३०)।

---

१. राम शिव से कहते हैं—आवयोरन्तर नास्ति मूढाः पश्यंति दुर्धियः ; दे० पातालखंड, अध्याय ४६. श्लोक २०।

(३) शाक्त प्रभाव

६१५. शैव प्रभाव की अपेक्षा राम-कथा पर शाक्त प्रभाव कम प्राचीन और व्यापक है। तत्संबधी निम्नलिखित प्रसंग उल्लेखनीय हैं—लंका देवी (चंडिका) के प्रसाद से राम की रावण पर विजय; सीता-पार्वती की अभिन्नता; सीता द्वारा सहस्र-स्कंध-रावण का वध।

वाल्मीकि रामायण के एक प्रक्षेप में हनुमान् के लंकादेवी से युद्ध करने का वर्णन किया गया है। लंकादेवी राक्षसों के रूप में हनुमान् को लंका में प्रवेश करने से रोक लेती है तथा हनुमान् द्वारा पराजित होकर कहती कि स्वयंभू ने मुझसे कहा था—तुम्हारी पराजय के बाद राक्षसों का नाश होगा (दे० अनु० ४६७)। **बृहद्धर्मपुराण** तथा **महाभागवत पुराण** में प्रस्तुत वृत्तान्त को एक शैव रूप दिया गया है। हनुमान् शिव के अवतार हैं और देवी (चंडिका) लंका में निवास करती हैं जिससे रावण अजेय है। हनुमान् लंका में पहुँचकर देवी के मंदिर जाते हैं और उनसे लंका को त्याग देने की प्रार्थना करते हैं। सीता के अपमान के कारण देवी रावण से अप्रसन्न हैं और लंका छोड़ देती हैं (दे० अनु० ५६६)। इन दोनों पुराणों में तथा **कालिका पुराण** में ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा राम की विजय के लिए देवी-पूजा का उल्लेख किया गया है (दे० अनु० १८१, १८२, १८४)। अन्यत्र राम की देवी-पूजा का वर्णन मिलता है। **श्रीमद्देवीभागवत-पुराण** के अनुसार राम ने भागवती का नवरात्रोपवास किया था, जिसके अंत में सिंहारूढ़ा देवी ने राम को दर्शन देकर उन्हें रावण पर विजय का आश्वासन दिया था (दे० अनु० १८०)। **कृतिवासीय रामायण** में राम द्वारा देवी-पूजा का विस्तृत वर्णन पाया जाता है। इस पूजा के लिए १०० कमलों की आवश्यकता थी जिनमें से देवी ने एक चुरा लिया था। इसके स्थान पर राम के अपनी आँख समर्पित करने के लिए उद्यत होने पर देवी प्रसन्न होकर राम को विजय का आश्वासन देती हैं (दे० अनु० २७७)[1]।

सौर पुराण में सीता-जन्म के विषय में कहा गया है कि जनक ने तपस्या द्वारा पार्वती को संतुष्ट किया था जिसके फलस्वरूप पार्वती अंशतः

---

१. पाश्चात्य वृत्तान्त नं० ३ मे रावण की महादेव-पूजा के विषय में इस प्रकार की कथा मिलती है।

उनकी पुत्री के रूप में प्रकट हुईं। **महाभागवत पुराण** में सीता तथा लक्ष्मी को अभिन्नता स्वीकृत है, लेकिन लक्ष्मी स्वय देवी के अंश से उत्पन्न मानी जाती हैं (दे० अनु० ३४०)। **महारामायण** में जो सीता की ३३ शक्तियों की नामावली तथा कार्यवर्णन मिलता है, इसमें भी शाक्त प्रभाव देखा जा सकता है (दे० अनु० १६१)।

उपर्युक्त सामग्री की अपेक्षा सहस्र-स्कंध-रावण-वध का वृत्तान्त अधिक प्रचलित है। पुष्कर-निवासी सहस्र-स्कंध रावण समस्त राम-सेना पराजित कर द्वन्द्व-युद्ध में राम का वध करता है। इसपर सीता काली का महा-विकट रूप धारण कर लेती हैं और रावण तथा उसके योद्धाओं का सिर काटकर नाचने लगती हैं जिसमें समस्त सृष्टि संकट में पड़ जाती है। ब्रह्मा के राम को पुनर्जीवित करने के पश्चात् राम सीता की (परमशक्ति के रूप में) स्तुति करते हैं और उनसे 'ऐश्वर रूप' छोड़ देने का अनुरोध करते हैं। इस वृत्तान्त का **अद्भुत रामायण** में विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त यह **जैमिनी भारत** के आश्रमपर्व तथा जगत राम कृत **बंगाली रामायण** में भी मिलता है (दे० अनु० ५३०)। सहस्र-स्कंध रावण के स्थान पर शत स्कंध अथवा लक्ष-स्कंध रावण का भी उल्लेख पाया जाता है। सीता द्वारा शत स्कंध-रावण-वध की कथा **आनन्द रामायण** तथा कतिपय अन्य रचनाओं में भी मिलती है (दे० अनु० ५३१)। उड़िया **बिलंका रामायण** के पूर्वखंड में सहस्र-स्कंध रावण-वध को एक नया रूप दिया गया है तथा उत्तर खंड मे सीता द्वारा लक्ष-शीश-रावण- वध का वर्णन किया गया है (दे० अनु० ५३२)। **आनन्द रामायण** तथा **लिंगामृत** में सीता द्वारा कुभंकर्ण के पुत्र का वध भी वर्णित है (दे० अनु० ५३३)।

(४) कृष्ण-भक्ति का प्रभाव

६१६. राम कथा के विकास में दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व आ गए हैं जिनके कारण कथा का समस्त वातावरण धीरे धीरे बदलने लगा—अवतार-वाद तथा भक्ति। कृष्णावतार तथा कृष्णभक्ति के अनुकरण पर ही इन दोनों का राम-कथा में प्रवेश हुआ। अवतारवाद का सूत्रपात वैदिक साहित्य में हुआ था, किंतु उस समय न तो अवतारवाद में विष्णु का प्राधान्य था और न अवतारों की कोई विशेष पूजा की जाती थी। कृष्णावतार के कारण अवतारवाद की भावना विष्णु में केंद्रीभूत होने लगी तथा जनता की धार्मिक

चेतना में इसका महत्त्व बढ़ने लगा। बाद में राम कृष्ण की भाँति विष्णु के अवतार माने जाने लगे (दे० अनु० १५५-१५६)। अवतारवाद की तरह भक्तिमार्ग भी कृष्ण को लेकर विकसित तथा पल्लवित हुआ। बहुत बाद में राम-भक्ति का आविर्भाव हुआ और जिन रचनाओं मे इसका प्रारंभिक शास्त्रीय प्रतिपादन किया गया वे प्रायः कृष्ण-भक्ति-संबधी भक्तिशास्त्रों, संहिताओं तथा उपनिषदों के आधार पर लिखी गई हैं (दे० अनु० १५८-१६०)।

६१७. कृष्ण-भक्ति के इस सामान्य तथा परोक्ष प्रभाव के अतिरिक्त रामचरित की कथावस्तु पर कृष्ण चरित का अनेक प्रकार से प्रत्यक्ष प्रभाव भी पड़ा है। **अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, रामचरितमानस** आदि बहुत सी अर्वाचीन राम कथाओं में राम की बाललीला के वर्णन में **भागवत पुराण** की कृष्ण बाल-लीला का स्पष्ट अनुकरण किया गया है। **पद्मपुराण** आदि कई ग्रंथों में राम के राक्षसों को मारने का उल्लेख भी मिलता है, जो विविध रूप धारण कर राम के पास आते हैं (दे० ऊपर अनु० ३२० ३२७)।

बाललीला के अतिरिक्त कृष्ण की विलास-क्रीड़ाओं का तथा उनकी रासलीला का भी कतिपय रचनाओं में अनुकरण किया गया है। राम-कथा-साहित्य मे (विशेषकर पउमचरिय, महाकाव्यों तथा नाटकों मे) शृंगार-रस की सामग्री प्राचीन काल से बढ़ने लगी थी (दे० आगे अनु० ६१६)। आगे चलकर इस शृंगारिक वर्णन में कृष्ण लीला का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देने लगा। **आनन्द रामायण** के विलासखंड में राम-सीता की जल-क्रीड़ा, वनविहार आदि का वर्णन किया गया है। **सन्योपाख्यान** के उत्तरार्द्ध में वनविहार तथा जलक्रीडा के अतिरिक्त होलिका तथा सीता की मानलीला का भी चित्रण मिलता है (दे० अध्याय २०, २७)। गोस्वामी तुलसीदास-कृत **गीतावली** के राम-हिंडोला (दे० ७, १८), **वसन्त-विहार** (दे० ७, २१-२२) आदि में कृष्ण लीला का प्रभाव स्पष्ट है। कहा जाता है कि **हरायण मणिरत्न** में राम के मिथिला तथा अयोध्या में वसंतोत्सव आदि मनाने का वर्णन मिलता है (दे० अनु० २०६)। अनेक रचनाओं में कृष्ण-लीला का यह अनुकरण और बढ़ाया गया है और राम की रासलीला का भी विस्तृत वर्णन किया गया है; उदाहरणार्थ–**हनुमत्संहिता** (दे० अनु० १६६), **बृहत्कोशल खंड** (दे० अनु० २०००), **चित्रकूटमाहात्म्य** (दे० अनु० १६०), **महारामायण** (दे० अनु० १६१)।

कृष्ण-चरित के बहुत से पात्रों का रामावतार से भी संबंध स्थापित किया गया है। **गर्ग-संहिता** के गोलोकखंड (दे० अध्याय ४) तथा **आनन्द-रामायण** के राज्यकाण्ड में (दे० शतनारीवरप्रदानम्, द्विजकान्याचतुष्टय-वरदानम्, षोडशसहस्र-स्त्री-वरदानम्) राम बहुत सी स्त्रियों को आगामी कृष्णावतार में अपने साथ रासक्रीड़ा कर की प्रतिज्ञा देते हैं। **श्रीहरिभक्ति-रसामृतसिंधु** (पूर्व भाग. २, ८४) तथा **कृष्णोपनिषद्** (रामचंद्रस्य-कृष्णावतारप्रतिज्ञा श्लो० २) में राम कामातुर महर्षियों को भी गोपी बन जाने का आश्वासन देते हैं। **आनन्द रामायण** के विलासकाण्ड में १६००० कामपीडिता देवपत्नियों को, गुणवती तथा पिंगला को क्रमशः गोपियाँ, सत्यभामा तथा कुब्जा बनने का राम द्वारा वर दिया जाता है। इस रचना के राज्यकाण्ड के अनुसार राम की एक दासी ने पीकदान के अभाव में अपना हाथ बढ़ाया था तथा राम का ताम्बुल-रस खाया भी था। इसपर राम ने उसे अगले जन्म में राधा बनने का पुरस्कार दिया था (दे० अनु० १८८)। इस प्रकार **सत्योपाख्यान** के पूर्वार्द्ध में रत्नालका तथा उसके पति को अगले जन्म में यशोदा तथा नंद के रूप में प्रकट होने का आश्वासन दिया जाता है (दे० अनु० १९८)।

ङ—विकास का सिंहावलोकन

६१८. वैदिक काल के बाद इक्ष्वाकु-वंश के सूतों द्वारा राम-कथा-संबंधी **आख्यान-काव्य** की सृष्टि होने लगी थी, जो चौथी शताब्दी ई० पू० के अंत तक कुछ प्रचलित हो चुका था (दे० अनु १४६)। उस समय वाल्मीकि ने इस स्फुट **आख्यान-काव्य** के आधार पर राम-कथा विषयक एक विस्तृत प्रबंध-काव्य की रचना की। इस वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** में अयोध्याकांड से लेकर युद्धकांड तक की कथावस्तु का वर्णन था (दे० अनु० ११५-१२३) तथा बौद्ध **अभिधर्म महाविभाषा** के अनुसार इसका विस्तार केवल १२००० श्लोक था (दे० अनु० ७८)। आजकल **वाल्मीकि रामायण** के तीन पाठ प्रचलित हैं—दाक्षिणात्य, गौडीय तथा पश्चिमोत्तरीय। यद्यपि इन तीनों पाठों में कथानक के दृष्टिकोण से बहुत अंतर नहीं है, किन्तु जो श्लोक तीनों पाठों में पाए जाते हैं वे एक तिहाई से भी कम हैं; इसके अतिरिक्त इनका पाठ भी पूर्णतया एक नहीं है (दे० अनु० १२-२६)। इसका कारण यह है कि वाल्मीकिकृत **आदिरामायण** का कोई एक लिखित रूप प्रामाणिक नहीं माना गया है। वह कई शताब्दियों

तक मौलिक रूप से प्रचलित था जिससे उसका पाठ स्थिर न रह सका। काव्योपजीवी कुशीलव अपने श्रोताओं की रुचि का ध्यान रखकर लोकप्रिय अंश बढ़ाते भी थे। इस प्रकार **आदिरामायण** का कलेवर बीच के प्रक्षेपों के कारण बढ़ने लगा। इसके अतिरिक्त, राम कौन थे? सीता कौन थीं? इनका जन्म तथा विवाह कब और किस प्रकार मनाया गया? रावण कौन था? रावण-वध के बाद राम-सीता का जीवन कैसे बीता? उनके कौन सतति उत्पन्न हुई? आदि, ये अत्यन्त स्वाभाविक प्रश्न थे। जनसाधारण की इस जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए बालकांड तथा उत्तरकांड के प्रारंभिक रूप की रचना करली गई। अतः विकास का प्रथम सोपान यह है कि राम-कथा की कथावस्तु **रामायण** (राम + अयन अर्थात् राम का पर्यटन) न रहकर पूर्ण राम-चरित के रूप में विकसित हुई। इस समय तक **रामायण** नर-काव्य ही रहा और राम आदर्श क्षत्रिय के रूप में भारतीय जन-साधारण के सामने प्रस्तुत किए गए थे। इसका आभास **मगवद्गीता** के उस स्थल से मिलता है जहाँ कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शस्त्र धारण करने वालों में मैं राम हूँ—**रामः शस्त्रभृतामहम्** (दे० १०, ३१)।

६१६. भागवतों के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण संभवतः तीसरी शताब्दी ई० पू० से विष्णु के अवतार माने जाने लगे थे, जिससे अवतारवाद की भावना को बहुत प्रोत्साहन मिला था (दे० अनु० १५५)। दूसरी ओर **रामायण** की लोकप्रियता के साथ साथ राम का महत्त्व भी बढ़ने लगा था; उनकी वीरता के वर्णन में अलौकिकता भी आ गई थी। इस प्रवृत्ति की स्वाभाविक परिणति यह हुई कि कृष्ण की भाँति राम भी संभवतः पहली शताब्दी ई० पू० से विष्णु के अवतार के रूप में स्वीकृत होने लगे (दे० अनु० १५६)। फलस्वरूप प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के कई स्थलों पर रामावतार विषयक सामग्री प्रक्षिप्त की गई है। इसके अतिरिक्त बालकांड तथा उत्तरकांड में बहुत सी पौराणिक कथाएँ भी जोड़ दी गई हैं जिनमें ब्राह्मणों का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है, विशेषकर ऋष्यशृंग तथा विश्वामित्र के वृत्तान्तों और शम्बूक-वध, रामाश्वमेध आदि प्रसंगों में (दे० अनु० १४६)। किंतु उस समय का सब से महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन यह हुआ कि राम विष्णु के अवतार माने जाने लगे। यह रामकथा के विकास का द्वितीय सोपान है—आदर्श क्षत्रिय राम का चरित्र मात्र न रहकर रामकथा विष्णु की अवतार-लीला के रूप में परिणत हुई। बौद्ध तथा जैन साहित्य को छोड़कर राम-कथा का यह स्वरूप सर्वत्र स्वीकृत होने लगा।

फिर भी ध्यान देने योग्य बात यह है कि राम-कथा के विकास के इस द्वितीय सोपान में जनसाधारण की धार्मिक चेतना में न तो राम के लिए कोई विशेष स्थान था और न राम के प्रति भक्ति का आविर्भाव हुआ था। राम की भाँति उनके भाई भी विष्णु के अंशावतार माने जाते थे, यद्यपि प्रधान नायक होने के कारण राम को अधिक महत्त्व दिया जाता था। अतः एक ओर उस समय के धार्मिक साहित्य में रामकथा का स्थान अपेक्षा कृत गौण है। दूसरी ओर तत्कालीन ललित साहित्य में इसकी व्यापकता तथा लोकप्रियता अद्वितीय है (दे० ऊपर अनु० ५९२-५९३)।

अवतारवाद के कारण कथावस्तु में अलौकिकता की मात्रा अवश्य धीरे धीरे बढ़ने लगी, फिर भी रामकथा का मुख्य दृष्टिकोण धार्मिक न बनकर शताब्दियों तक साहित्यिक ही रहा। यह संस्कृत ललित साहित्य के स्वर्ण-काल के महाकाव्यों तथा नाटकों से स्पष्ट है। राम-भक्ति के आविर्भाव के पूर्व राम-कथा का यह साहित्यिक रूप विदेश में फैल गया और बाद में वहाँ रामभक्ति का प्रभाव न पड़ सका। फलस्वरूप समस्त विदेशी राम-कथा-साहित्य में रामभक्ति का नितान्त अभाव है।

प्रचलित **वाल्मीकि रामायण** के उत्तरकांड में राम के अशोकवन का वर्णन मिलता है और राम-सीता के विहार का उल्लेख भी किया गया है (**सीतां ... मधुरैकं ... पाययामास** (दे० सर्ग ४२)। आगे चलकर इस प्रकार के शृंगारिक वर्णनों को अधिक स्थान दिया गया है। वास्तव में शृंगार-रस की बढ़ती हुई व्यापकता विकास के द्वितीय सोपान के रामकथा-साहित्य की विशेषता है। तत्संबंधी निम्नलिखित प्रसंग अपेक्षाकृत अधिक व्यापक हैं—युद्ध के पूर्व राक्षसों की केलि; राम-सीता का पूर्वानुराग तथा संभोगवर्णन। इसके अतिरिक्त **जानकीहरण, कंबन-रामायण** तथा चक्र कवि कृत **जानकीपरिणय** में दशरथ की क्रीडाओं का भी विस्तृत वर्णन किया गया है और **बालरामायण** की कथावस्तु का मुख्य दृष्टिकोण रावण का विरह है।

रामकथा-साहित्य में पहले पहल राक्षसों के विषय में शृंगारिक वर्णन बढ़ाया गया है। सेतुबंध तथा भट्टिकाव्य में युद्ध के पूर्व राक्षसों की केलि का विस्तृत तथा अश्लील वर्णन मिलता है। **जानकीहरण**, अभिनन्दकृत **रामचरित, कम्बन-रामायण, रामायण काकाविन, रामलिंगामृत** आदि

में भी सेतुबध तथा भट्टिकाव्य का इसके संबंध में अनुकरण किया गया है।

आगे चलकर राम-सीता के विषय में भी शृंगार-रस की सामग्री बढ़ने लगी। आठवीं शताब्दी से लेकर दोनो के पूर्वानुराग का चित्रण होने लगा, विशेषकर **महावीरचरित, जानकीहरण, कम्बन-रामायण, मैथिली-कल्याण, प्रसन्नराघव** तथा **रामकियेन** में (दे० अनु० ३६६)। **जानकी-हरण, महानाटक** आदि में राम-सीता के संभोग का वर्णन मिलता है, जो अश्लीलता की सीमा तक पहुँच गया है। इसके अतिरिक्त गीतगोविंद तथा मेघदूत के अनुकरण पर भी राम-कथा-विषयक शृंगारिक खंडकाव्य की रचना की गई है (दे० अनु० २५२ २५३)।

६२०. भारतीय भक्तिमार्ग का बीजारोपण वैदिक साहित्य में हुआ था, किन्तु वह शताब्दियों के पश्चात् भागवतधर्म में पल्लवित हो सका। आगे चलकर भागवतों के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण विष्णु के अवतार माने जाने लगे जिसके फलस्वरूप भक्ति-भावना इन्हीं विष्णु-वासुदेव-कृष्ण में केंद्राभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी। इसके पश्चात् राम भी विष्णु के अवतार माने गए, किंतु राम भक्ति का आविर्भाव केवल शताब्दियों बाद हो सका। तामिल अल्वारों की रचनाओं में प्रौढ़ रामभक्ति के प्राचीनतम उद्गार सुरक्षित हैं। बाद में १२ वीं शताब्दी ई० से लेकर रामानुज-सम्प्रदाय में राम-भक्ति तथा रामोपासना-विषयक संहिताओं तथा उपनिषदों की रचना होने लगी। आगे चलकर रामानन्द तथा रामावत सम्प्रदाय द्वारा राम-भक्ति जनसाधारण की धार्मिक चेतना का केंद्र बन गई। उस समय बहुत से साम्प्रदायिक रामायणों की रचना हुई, जिनमें **अध्यात्म रामायण** निर्विवाद रूप से सबसे महत्त्वपूर्ण है (दे० अनु० १५८-१६१)। १४ वीं शताब्दी से लेकर समस्त भारतीय राम-कथा-साहित्य भक्ति भाव से ओत-प्रोत है, जिसके फलस्वरूप इसका समस्त वातावरण बदलने लगा। राम विष्णु के अंशावतार न रहकर परब्रह्म के पूर्णावतार माने जाने लगे; **रामायण** की आधिकारिक कथावस्तु अर्थात् सीताहरण तथा रावण-वध को एक नया रूप दिया गया और कथानक के अन्य गौण प्रसंगों का दृष्टिकोण भी बदलने लगा (उदाहरणार्थ दे० शरभंग तथा अगस्त्य के वृत्तान्त; अनु० ४१६)।

रामायण, हरिवंश, विष्णुपुराण, वायुपुराण आदि के अनुसार राम भरत आदि चारों भाई विष्णु के एक एक चतुर्थांश से समन्वित हैं।

भक्ति-भाव के पल्लवित होने के पश्चात् राम परब्रह्म के पूर्णावतार माने जाने लगे और लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न क्रमशः शेष, शख तथा सुदर्शन के अवतार। अवतारवाद का यह नवीन रूप **उदारराघव, अध्यात्म रामायण** तथा **आनन्द रामायण** में पहले पहल पाया जाता है (दे० अनु० ३३६, ३३८)। प्राचीन महापुराणों मे सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का निर्देश नहीं मिलता है। आगे चलकर लक्ष्मी सीता के रूप में अवतरित मानी गई हैं, किंतु राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के पश्चात् सीता परमभक्ति अथवा मूल-प्रकृति के रूप में स्वीकृत होने लगी।

भक्ति-भाव के कारण राम-कथा को आधिकारिक कथावस्तु में भी महत्त्व-पूर्ण परिवर्त्तन होने लगे। सीता राक्षस रावण के वश हुई थीं, यह विचार भक्तों को असह्य और असभव सा प्रतीत होने लगा। अतः उपास्य देवी की मर्य्यादा की रक्षा के लिए भक्ति-भाव ने सीता की एक छाया मात्र का हरण स्वीकार किया (दे० अनु० ४४३-४४७)। इसी तरह सीतात्याग को भी अवास्तविक बना दिया गया है (दे० अनु० ५६५-५६७)। मूल राम-कथा में रावण ने कामवासना से प्रेरित होकर सीता का हरण किया था और दण्डस्वरूप राम द्वारा पराजित होकर मारा गया। राम-कथा के विकास के द्वितीय सोपान मे भी दुष्ट राक्षस रावण का नाश ही रामावतार का मुख्य उद्देश्य है। राम-भक्ति के पल्लवित होने के साथ यह भावना उत्पन्न हुई कि वैर से क्यों न हो, राम का स्मरण मात्र ही मुक्ति प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त जो कोई राम द्वारा मारा जाता है वह राम का पद प्राप्त कर लेता है। अतः यह माना गया कि रावण ने मोक्ष पाने के उद्देश्य से सीता का अपहरण किया था तथा राम के हाथ से मर कर सायुज्य मुक्ति प्राप्त की थी (दे० अनु० ४३४)। इसी तरह राम द्वारा वध किए हुए अन्य पात्रों के भी स्वर्ग अथवा मुक्ति प्राप्त करने का वर्णन किया गया है; उदाहरणार्थ— ताड़का (दे० अनु० ३२५), मारीच (दे० अनु० ४४२), बालि (दे० अनु० ४५४)।

ऊपर इसका उल्लेख हुआ है कि राम-कथा का मुख्य दृष्टिकोण शताब्दियों तक साहित्यिक ही रहा था। प्रस्तुत निरूपण से स्पष्ट है कि १४ वीं शताब्दी से इसका समस्त वातावरण धार्मिक है। राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के बाद राम-कथा की संपूर्ण कथावस्तु का वर्णन एक नवीन दृष्टिकोण से किया गया है। यह इसके विकास का तृतीय सोपान है—विष्णु की अवतार-

लीला मात्र न रहकर, राम-कथा भक्त-वत्सल भगवान् राम के गुण-कीर्त्तन में लीन हो जाती है।

६२१. इस प्रकार राम-कथा अनेक रूप धारण करते हुए शनैः शनैः सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में व्याप्त हो गई है। उसकी अद्वितीय लोकप्रियता निरंतर अक्षुण्ण ही नहीं वरन् शताब्दियों तक बढ़ती रही है। कारण स्पष्ट है—मानव हृदय को आकर्षित करने की जो शक्ति राम-कथा में विद्यमान है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इसके अतिरिक्त राम-कथा के कला तथा आदर्श के समन्वय ने आदर्शप्रिय भारतीय जनता को सदा प्रभावित किया है।

भारतीय साहित्य में राम-कथा के इस आदर्शवाद का बहुधा उल्लेख किया गया है। **जैमिनीय अश्वमेध** में रामचरित स्वच्छ मनोवृत्ति प्रदान करने वाला माना गया है—**रामचरित सन्मनोवृत्तिप्रदम्** (दे० अध्याय ३६, ४४)। **बृहद्धर्म-पुराण** में कहा गया है कि राम-कथा में वर्णाश्रम के अनुसार सबों के कर्त्तव्य का स्पष्टीकरण किया जाता है—**सर्वे धर्म्माः समुद्दिष्टा वर्णाश्रमविभागतः** (दे० अध्याय २६, १,)। **पद्मपुराण** के पातालखंड के अनुसार रामचरित में पातिव्रत्य, भ्रातृस्नेह, गुरुभक्ति, स्वामिसेवा आदि साक्षात् आदर्श प्रस्तुत हैं—

यस्मिन्धर्मविधिः साक्षात्पातिव्रत्यं तु यत्स्थितम्।
भ्रातृस्नेहो महान्यत्र गुरुभक्ति स्तथैव च ॥ १२८ ॥
स्वामिसेवकयोर्यत्र नीतिर्मूर्त्तिमती किल।
अधर्मकरशास्तिर्वै यत्र साक्षाद्विधूद्दहात् ॥ १२९ ॥
(अध्याय ६६)

लोकसंग्रह का भाव एक प्रकार से राम-कथा का सर्वस्व है, जिससे समस्त कवि प्रभावित हुए हैं। अत्यन्त विस्तृत राम-कथा-साहित्य में कथावस्तु का पर्याप्त मात्रा में परिवर्द्धन तथा परिवर्त्तन हुआ है, किंतु सीता का पातिव्रत्य, राम का आज्ञापालन, भरत तथा लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम, दशरथ की सत्यसंधता, कौशल्या का वात्सल्य आदि ये आदर्श समस्त रामकथाओं में विद्यमान हैं। इन जीते जागते आदर्शों के जनसाधारण पर कल्याणकारी प्रभाव की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है[1]। फलस्वरूप काव्य की कथावस्तु मात्र न

१. दे० रामचरितमानस में अनुसूया का यह कहना—"सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं" (अरण्यकाण्ड, सो० ५)।

रहकर, राम-कथा आदर्श जीवन का दर्पण सिद्ध हुई, जिसे भारतीय प्रतिभा शताब्दियों तक परिष्कृत करती चली आ रही है। राम कथा के विकास पर इस आदर्शवाद की भावना का गहरा प्रभाव पड़ा है। उदाहरणार्थ, वाल्मीकि कृत **रामायण** में कैकेयी की कुटिलता का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया गया है। आगे चलकर कैकेयी को निर्दोष ठहराने के लिए अनेक उपायों का सहारा लिया गया है (दे० अनु० ४१०)। वालिवध को न्यायसगत सिद्ध करने का **रामायण** के दो प्रक्षिप्त सर्गों में प्रयत्न किया गया है (दे० अनु० ४५०)। आगे चलकर भी राम के दोषनिवारण के लिए **महावीर चरित, अनर्घराघव** आदि नाटकों में वालिवध को एक नया रूप दिया गया है। इसके अनुसार वालि राम को ललकारता है तथा राम से द्वन्द्वयुद्ध करके मारा जाता है (दे० अनु० ४५७)। राम-भक्ति के प्रादुर्भाव के पश्चात् राम-कथा का समस्त वातावरण बदल दिया गया तथा विभिन्न पात्रों की उग्रता तथा कुटिलता राम भक्ति में लीन कर दी गई है। यहाँ तक कि **रामायण** का दुष्ट राक्षस रावण भी पतितपावन राम के प्रभाव से पवित्र हो जाता है[1]। इस प्रकार भारत की समस्त आदर्श-भावनाएँ राम-कथा में, विशेष कर मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा पतिव्रता सीता के चरित्रचित्रण में, केंद्रीभूत हो गई हैं। फलस्वरूप राम-कथा भारतीय सस्कृति के आदर्शवाद का उज्वलतम प्रतीक बन गई है।

॥ इति ॥

---

१. "कल्याण" (दे० सितंबर १९३८, पृ० ९३६) में म० म० गंगानाथ झा ने एक छंद उद्धृत किया था, जिसमें रावण कुंभकर्ण से कहता है कि सीता को विचलित करने के उद्देश्य से मैंने तो राम का रूप धारण किया था, किंतु ऐसा करने पर मन में पापबुद्धि नहीं रह जाती—

अह्नाय प्रतिबुध्यतां किमभवद्रामांगना चाहृता।
भुक्ता नैव कुतो यतो न भजते रामात्परं जानकी॥
रामः किल भवान् यतः सुरुचिरं तालीदलस्यामलं।
रामार्कं भजतो ममापि कलुषो भावो न संजायते॥

इससे मिलते जुलते एक अन्य छंद के लिए, दे० कल्याण, जुलाई १९३८, पृ० १५८३।

परिशिष्ट

राम-कथा-साहित्य की तालिका

(मोटे टाइप में छपी रचनाओं का समस्त कथानक राम-कथा से संबंध रखता है)

काल		
५०० ई० पू० ?	राम-कथा-विषयक आख्यान-काव्य	
४००-३०० ई० पू०		
३०० ई० पू० ?	वाल्मीकिकृत **आदि-रामायण**	
१०० ई० पू०-१०० ई०	**रामोपाख्यान बालकाण्ड**	
२००-३०० ई०	**उत्तरकाण्ड**	
३००-४०० ई०	**प्रतिमा-नाटक (?)** **अभिषेक-नाटक (?)**	ब्रह्माण्ड-पुराण विष्णु-पुराण
४०० ५०० ई०	**रघुवंश**, बृहत्कथा (?)	हरिवंश, वायु-पुराण नृसिंह-पुराण
५००-७०० ई०	**रावणवह** (सेतुबध) **भट्टिकाव्य**	मत्स्य-पुराण भागवत-पुराण विष्णुधर्मोत्तर-पुराण, कूर्म-पुराण

काल	३. आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४. बौद्ध तथा जैन साहित्य	५. विदेशी साहित्य
४००-३०० ई० पू०		दशरथ-जातक की गाथाएँ	
१००ई०पू-१००ई०		अनामकं जातकम्	
२००-४०० ई०		पउमचरिय दशरथ-कथानम्	
४००-५०० ई०		दशरथ-जातक का गद्य	
५००-७०० ई०		पद्मचरित	

काल	१. संस्कृत ललित साहित्य	२. संस्कृत धार्मिक साहित्य
७००-८०० ई०	**महावीर चरित** **उत्तररामचरित**	
८००-९०० ई०	**जानकी हरण** **रामचरित** (अभिनंद) **कुन्दमाला**	अग्निपुराण स्कंधपुराण
९००-१००० ई०	**अनर्घ-राघव** **बाल रामायण** **आश्चर्य चूडामणि** (?)	नारदीय पुराण गरुड पुराण ब्रह्म पुराण
१०००-११०० ई०	**महानाटक** **रामायणमंजरी** **दशावतारचरित** **कथासरित्सागर** **चम्पूरामायण**	महाभागवत (देवी) पुराण श्रीमद्देवीभागवत पुराण बृहद्धर्मपुराण सौर पुराण कालिका पुराण
११००-१२०० ई०	**रामचरित**(संध्याकरनदि) **राघव-पाण्डवीय** **प्रसन्नराघव**	पद्मपुराण का पातालखंड जैमिनीय अश्वमेध योगवासिष्ठ
१२००-१३०० ई०	**हंस संदेश** **दूतांगद** **मैथिली-कल्याण**	**मैरावणचरित** अगस्त्य संहिता रामतापनीय उपनिषद्

काल	३. आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४. बौद्ध तथा जैन साहित्य	५. विदेशी साहित्य
७००-८०० ई०		**पउमचरिय** (स्वयंभूदेव)	
८००-९०० ई०		उत्तरपुराण	**तिब्बती रामायण खोतानी रामायण**
९००-१००० ई०	**कंबन-रामायण** (तामिल)	तिसट्ठी महापुरिस त्रिषष्टिशलाका महापुरुष (कनारी)	
१०००-११०० ई०		**पंपरामायण** (कनारी)	
११००-१२०० ई०	**द्विपाद रामायण** (तेलगू)	**जैन रामायण**	**रामायण काकाविन** (जावा)
१२०० १३०० ई०	**निर्वचनोत्तर रामायण** (तेलगू) **उत्तररामायण** (तेलगू)	**कुमुदेंदु-रामायण** (कनारी) **जीवनसंबोधन** (कनारी)	

काल	१. संस्कृत ललित साहित्य	२. संस्कृत धार्मिक साहित्य
१३००-१४०० ई०	उदारराघव उन्मत्तराघव	अध्यात्म रामायण अद्भुत रामायण सहस्रमुख रावण चरित
१४००-१५०० ई०	रामाभ्युदय	आनन्द रामायण पद्मपुराण का उत्तरकांड शिवपुराण वह्निपुराण
१५००-१६०० ई०	राघवनैषधीय रामकृष्णविलोमकाव्य	ब्रह्मवैवर्त-पुराण अग्निवेश-रामायण सत्योपाख्यान भुशुण्डी रामायण महारामायण हनुमत्संहिता बृहत्कोशलखंड
१६००-१७०० ई०	जानकीहरण (चक्रकवि) रामलिंगामृत रामरहस्य अद्भुतदर्पण जानकीपरिणय (रामभद्र दीक्षित) राघवपाण्डवराघवीय यादवराघवीय राम-कथा (वासुदेव)	

काल	३. आधुनिक भारतीय भाषाएँ	४. बौद्ध तथा जैन साहित्य	५. विदेशी साहित्य
१३०० १४४० ई०	**भास्कररामायण** (तेलगू) **रामचरित** (मलयालम) **रामायण** (आसामी) **गीति रामायण** (आसामी)	पुण्याश्रवकथा-कोष पुण्याश्वकथा-सार (कनारी)	
१४००-१५०० ई०	सिंहली **राम-कथा** **कृत्तिवासीय रामायण** उड़िया— **बालरामदास रामायण** **विलंकारामायण** मलयालम— **कन्नास रामायण** गुजराती— **राम-विरह** **रामबालचरित** **सीताहरण**	**रामपुराण**	**सेरीराम** (मलय)
१५००-१६०० ई०	तेलगू **मोल्ला रामायण** कनारा— **तोगवे रामायण** **भैरावण कलग**	**रामचरित** (पद्मदेवविजयगणि) **रामचरित** (सोमसेन)	जावा— **रामकेलिंग** **सेरत-कांड** कांबोदिया— **रेआम केर**

	मलयालम— **अध्यात्म रामायण** मराठी— **भावार्थ रामायण** आसामी— **राम विजय** **राम कीर्तन** **कथा रामायण** बंगाली— **कृत्तिवासीय रामायण** गुजराती— **रावणमंदोदरी विवाह** हिंदी— **रामचरितमानस**	**पुण्यचंद्रोदय** (पुराण) **रामविजय-चरित** (कनारी)	श्याम— **राम-कियेन** **राम-जातक**
१६००-१७००-ई०	हिंदी— **रामचंद्रिका** कनारी— **उत्तर रामायण** बंगाली— **रामलीला** गुजराती— **रणयज्ञ** **सीताविरह**		पाश्चात्य वृत्तान्त

सहायक ग्रंथ-सूचि

(क) प्राचीन ग्रंथ

— वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदें, कल्पसूत्र, महाभारत, पुराण, उपपुराण

— वाल्मीकि रामायण के तीनों पाठ

(१) दाक्षिणात्य पाठ । गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बंबई)

(२) गौडीय पाठ । गोरेसियो का सस्करण (पैरिस)

(३) पश्चिमोत्तरीय पाठ । दयानद महाविद्यालय (लाहौर)

— रामकथा विषयक महाकाव्य, नाटक, खडकाव्य, विविध रामायण आदि दे० अनुक्रमणिका ।

(ख) भारतीय भाषाओं के आधुनिक ग्रंथ

कृष्णदेव उपाध्याय । भोजपुरी ग्रामगीत । प्रयाग स० २००० ।

क्षेमकरणदास द्विवेदी । अथर्ववेदभाष्य । प्रयाग स१९८२ ।

जयदेवजी शर्मा । अथर्ववेदसहिता । अजमेर स०१९८५ ।

दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह । भोजपुरी लोकगीत । प्रयाग सं० २००१ ।

धीरेंद्र वर्मा । अहल्या-उद्धार की कथा । विचारधारा, पृ० २९-३४, । इलाहाबाद स० २००१ ।

नरसिंहाचार्य आर० । कर्णाटक कवि चरिते ।

नाथूराम प्रेमी । जैन साहित्य और इतिहास । बंबई सन् १९४१ ।

पानिक्कर आर० एन० । भाषा-साहित्य-चरित्रम् ।

प्रह्लाद चद्रशेखर दीवान जी । गुजरात में रामायण । "कल्याण" रामायणांक, पृ० ३९८ ।

बलदेवप्रसाद मिश्र । तुलसीदर्शन । प्रयाग सन् १९४२ ।

बेनीप्रसाद । हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता । प्रयाग सन् १९३१

महाराष्ट्रीय । श्री रामायण समालोचना । पूना सन् १९२७ ।

माताप्रसाद गुप्त । तुलसीदास । प्रयाग सन् १९४२ ।

राम इकबाल सिंह राकेश । मैथिली लोकगीत । प्रयाग सं० १९९९ ।

रामकुमार वर्मा । हिन्दी साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास । प्रयाग सन् १९३८

रामगोविन्द द्विवेदी । ऋग्वेसहिता । सुलतानगंज सं० १९९२
रामचन्द्र शुक्ल । हिन्दी साहित्य का इतिहास । काशी सं० १९९९
रामदास गौड़ । हिंदुत्व । काशी स० १९९५
रामनरेश त्रिपाठी । ग्रामगीत । प्रयाग (कविता कौमुदी भाग ५)
शिवनन्दन सहाय । श्री गोस्वामी तुलसीदास । खड्गविलास प्रेस सन् १९१९
हृदयनारायण सिंह । क्या उत्तरकाण्ड वाल्मीकि-रचित है ? नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका, भाग १७, पृ० २५९-२८९

(ग) विदेशी भाषाओं के ग्रंथ

Abbreviations

A B A Abhandlungen der koenigl. Akademie der wiss. zu Berlin.
A B O R I Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute.
B E F E O Bulletin de l' Ecole Francaise d' Extreme Orient.
B S O S Bulletin of the School of Oriental Studies
E R E Encyclopaedia of Religion and Ethics.
H O S Harvard Oriental Series
I A Indian Antiquary
I C Indian Culture
I H Q Indian Historical Quarterly
J A Journal Asiatique
J A O S Journal of the American Oriental Society
J R A S Journal of the Royal Asiatic Society
J O R Journal of Oriental Research
N G G Nachrichten v. d. koenigl. Gesellschaft der Wiss. zu Goettingen. Phil.-Hist. Klasse
N I A New Indian Antiquary
S B A Sitzungsberichte der Berliner Akademie
W Z K M Wiener Zeitschrift fuer die Kunde des Morgenlandes.
Z D M G Zeitschrift der Deutschen Morgenlaendiedschen Gesellschaft.

AIYAR, ß. V. KAMESVAR. Solar Signs in indian Literature. Quarterly Journal of the Mythic Society, Vol 12, p. 73 ff.

BAILEY, H. W. The Ramastory in Khotanese. J A O S Vol 59, pp. 460-68
On Ramayana and Rama in Khotanese. B S O S. Vol 10, p. 365 ff, 559 ff.

BALDAEUS, PH. Afgoderey der Oost-Indische Heydenen. Ed. Dr. A. J. De Jong. The Hague 1917

BARNETT, L. D. Alphabetical Guide to Sinhalese Folklore from Ballad Sources. Suppl. I A. Vol 44ff

BARTH, A. Bulletin des Religions de l' Inde. Paris 1894

BARUA, B. K. Assamese Literature. Bombay 1941

BAUMGARTNER, A. Das Ramayana und die Rama-Literaturder Inder. Freiburg 1894

BELVALKAR, S. K. Uttararamacarita. H O S. Vol 21. Cambridge Mass. 1915

BHANDARKAR, R. G. Vaisnavism, Saivism and minor religious systems. Strassburg 1913

BHATTACHARYA, Harisatya. Narayanas, Pratinarayanas and Balabhadras. The Jain Antiquary. Vol 8. p. 8 ff.

BLOOMFILD, M. The Kaucika-Sutra of tha Atharva-Veda. J A O S. Vol. 14 (1890) p. 381 ff.

BOULAYE LE GOUZ, Fr de La. Reyze en Opteekeningh. Amsterdam 1660

BUEHLER, G. Alberuni's India. I A. Vol 19 (1890), p. 381 ff.

BULCKE, C. The Three Recensions of the Ramayana. J O R vol 17, p. I ff

BURLINGAME, E. W. Buddhists Legends. H O R. Vol 28-30 Cambridge Mass. 1921

CALAND, W. Twee oude Fransche „Verhandelingen over het Hindoeisme (Relation des Erreurs ; La Gentilite du Bengale). Amsterdam 1923

— Drie oude Portugeesche Verhandelingen over het Hindoeisme. Amsterdam 1915

CHAKRAVARTI, A. Budbhistic and Jain versions of the Story of Rama. The Jaina Gazette. vol 22 (1926), p. 117 ff.

CHAKRAVARTI, Chintaharan. Tradition about Vanaras and Raksasas. I H Q. vol I (1925), p. 779 ff.

CHARPENTIER, J. Studien ueber die Indische Erzaehlungsliteratur. Z D M G. Vol 62 (1908), p. 725 ff.

— Zur Geschichte des Cariyapitaka. W Z K M. Vol 24 (1910), p. 397ff.

CHAUDHURY, H. Ray. Early History of the Vaisnava Sect. Calcutta 1920

CHENCHIAH, A. A History of Telugu Literature. Heritage of india Series. Calcutta. s. a.

CONNOR, J. P. The Ramayana in Burma. Journal of Burma Research Society. Vol 15 (1915), p. 80 ff.

COWELL, E. B. The Buddhacarita of Asvaghosa. oxford 1893

— The Jataka. Vol I-VI. Cambridge 1895-1907

CROOKE, W. Tribes and Castes of N.W. Provinces and oudh. Calcutta 1896

— The Popular Religion and Folklore of Northern India. Westminster 1896

DAPPER, O. Asia. Amsterdam 1672

DARMESTETER, J. Etudes Iraniennes. Paris 1883

— Le Zend Avesta. Paris 1893

DASGUPTA, S. N. History of Indian Philosophy. Vol . II . Calcutta 1932

DEUSSEN, P. Sechzig Upanisads des Veda. Leipzig 1897

— The Original Ramayana. J A O S .Vol 46(1926), pp. 202-219

— Pragathikani. J A O S .Vol 17,pp.23-92

— Allusions to the Ramastory in the Mahabharata. J A O S. Vol 50(1930),pp.85-103

HUBER Ed. La legende du Ramayana en Annam. B E F E O Vol 5, p. 168 ff.

Etudes de literature bouddhique. B E F E O 1904 p. 698 ff.

IBBETSON,D. A Story of Valmiki. I A .Vol 24,p.220

IYER,K.B. Yama-Pwe or the Ramayana Play in Burma. Triveni (Bangalore). Vol 14, pp.239-45

IYER, L. K Ananthakrishna. The Cochin Tribes and Castes. Vol I-II. Madras 1909-12

JACOBI H Das Ramayana. Bonn 1893

— war das Epos und die profane Literatur Indieans urspruenglich in Prakrit abgefasst. Z D M G .Vol 48(1894),pp. 407-417

— Brahmanism. E R E Vol II

— Incaranation. E R E Vol VII

JOHNSTON,E H. Buddhacarita. Calcutta 1935

KANE,P V. History of Dharmasastra. I-II Poona 1930 41

KANGA,E.M.F. The Age of Yasts. A Volume of Eastern and Indian Studies. Bombay 1939. pp. 134-40

KARPELES,S. The influence of Indian Civilsation in Further India. Indian Art and Letters. Vol I,pp. 30-39

— Un episode du Ramayana Siamois. Etudes Asiatiques. Paris 1925. p.315 ff.

KEITH, A. B. The age of the Ramayana. J R A S. 1915, 218-28

— Sanskrit Literature. oxford 1928

— Sanskrit Drama. oxford 1924

— Indian Epic Poetry. I A. Vol 23, p. 52 ff.

KERN, H. Manual of Indian Buddhism. Strassburg 1896

KIBE, M. V. Ravana's Lanka located in Central India. I H Q Vol IV (1928), pp. 693-702

LALOU, M, L. Histoire de Rama en Tibetain. J A. 1936, p. 560 ff.

LASSEN, C. Indische Alterthumskunde. Vol. I-II. Leipzig 1847-72

— On Weber's Dissertation on the Ramayana. I A. Vol III, pp. 102-3

LESNY, V. Ueber das Purana-artige Gepraege des Balakanda. Z D M G. Vol 27, pp. 497-500

LETTRES EDIFIANTES. Vol XIII. Paris 1718

LEVI , S Le Theatre Indien. Paris 1890

... Sanskrit Texts from Bali. Gaekwar Oriental Series Vol 67. Baroda 1933

... Pour l' histoire du Ramayana. J A . 1918, pp. 1—160

... La legende de Rama dans un avadan chinois Album Kern, p. 279 ff.

LUDWIG, A. Der Rigveda I—VI . Prag 1876—88

LUEDERS,H. Die Jatakas und die Epik. Z D M G. Vol 58 (1904), p. 687 ff.

... Die Vidyadharas in der Buddhistischen Literatur und Kunst. Z D M G. Vol 93 (1939), p. 89 ff.

... Die Sage von Rsyasringa. N G G. 1897 ,pp. 87-135

MACAULIFFE,M.A. The Sikh Religion. Oxford 1909

MACDONELL A.A. Sanskrit Literature. London 1928

MACDONELL A.A.—Keith A·B. Vedic Index. London 1912

MANUCCI,N. Storia do Mogor. Engl. Trs. London 1907—08

MAXWELL,W.E. Sri Rama. J R A S Straits Branch. 1886,p. 85 ff.

MITRA,S.C. The Munda Legend about Sita and Sitali. Journ. of the Department of Letters. Calcutta. Vol IV, pp. 303—304

— The Original Ramayana. J A O S .Vol 46(1926), pp. 202-219

— Pragathikani. J A O S .Vol 17,pp.23-92

— Allusions to the Ramastory in the Mahabharata. J A O S. Vol 50(1930),pp.85-103

HUBER,Ed. La legende du Ramayana en Annam. B E F E O Vol 5, p. 168 ff.

— Etudes de litterature bouddhique. B E F E O 1904 p. 698 ff.

IBBETSON,D. A Story of Valmiki. I A .Vol 24,p.220

IYER,K.B. Yama-Pwe or the Ramayana Play in Burma. Triveni (Bangalore). Vol 14, pp.239-45

IYER, L. K. Ananthakrishna. The Cochin Tribes and Castes. Vol I-II. Madras 1909-12

JACOBI,H. Das Ramayana. Bonn 1893

— war das Epos und die profane Literatur Indiens urspruenglich in Prakrit abgefasst. Z D M G .Vol 48(1894),pp. 407-417

— Brahmanism. E R E Vol II

— Incaranation. E R E Vol VII

JOHNSTON,E H. Buddhacarita. Calcutta 1935

KANE,P.V. History of Dharmasastra. I-II Poona 1930 41

KANGA,E M.F. The Age of Yasts. A Volume of Eastern and Indian Studies. Bombay 1939. pp. 134-40

KARPELES,S. The influence of Indian Civilsation in Further India. Indian Art and Letters. Vol I,pp. 30-39

— Un episode du Ramayana Siamois. Etudes Asiatiques Paris 1925. p.315 ff.

KEITH, A. B. The age of the Ramayana. J R A S. 1915, 218-28

— Sanskrit Literature. oxford 1928

— Sanskrit Drama. oxford 1924

— Indian Epic Poetry. I A. Vol 23, p. 52 ff.

KERN, H. Manual of Indian Buddhism. Strassburg 1896

KIBE, M. V. Ravana's Lanka located in Central India. I H Q Vol IV (1928), pp. 693-702

LALOU, M, L. Histoire de Rama en Tibetain. J A. 1936, p. 560 ff.

LASSEN, C. Indische Alterthumskunde. Vol. I-II. Leipzig 1847-72

— On Weber's Dissertation on the Ramayana. I A. Vol III, pp. 102-3

LESNY, V. Ueber das Purana-artige Gepraege des Balakanda. Z D M G. Vol 27, pp. 497-500

LETTRES EDIFIANTES. Vol XIII. Paris 1718

LEVI , S Le Theatre Indien. Paris 1890

... Sanskrit Texts from Bali. Gaekwar Oriental Series Vol 67. Baroda 1933

... Pour l' histoire du Ramayana. J A . 1918, pp. 1—160

... La legende de Rama dans un avadan chinois Album Kern, p. 279 ff.

LUDWIG, A. Der Rigveda I—VI . Prag 1876—88

LUEDERS,H. Die Jatakas und die Epik. Z D M G. Vol 58 (1904), p. 687 ff.

... Die Vidyadharas in der Buddhistischen Literatur und Kunst. Z D M G. Vol 93 (1939), p 89 ff.

... Die Sage von Rsyasringa. N G G. 1897 ,pp. 87-135

MACAULIFFE,M.A. The Sikh Religion. Oxford 1909

MACDONELL A.A. Sanskrit Literature. London 1928

MACDONELL A.A.—Keith A·B. Vedic Index. London 1912

MANUCCI,N. Storia do Mogor. Engl. Trs. London 1907—08

MAXWELL,W.E. Sri Rama. J R A S Straits Branch. 1886,p. 85 ff.

MITRA,S.C. The Munda Legend about Sita and Sitali. Journ. of the Department of Letters. Calcutta. Vol IV, pp. 303—304

MOJUMDAR, A. K. The Ramayana. A criticism. I A. Vol 31, pp. 351—53

MONIER-WILLIAMS, M. Indian Epic Poetry, London 1863

... Indian Wisdom. London 1893

... Brahmanism and Hinduism. London 1891

MOOR, E. The Hindu Pantheon. London 1910

MORET, A. Histoire de L'Orient. Paris 1936

MUIR, J. Original Sanskrit Texts Vol. IV (2nd Ed.). London 1873

NARASIMHACAR, D.L. The Jaina Ramayanas I H Q. Vol 15 (1939), pp. 574—94

NEGELEIN, J.v. Eine epische Idee im Veda. W Z K M. Vol 16, p 226 ff

NIEBUHR, C. Voyage en Arabie et en d' autres pays circonvoisins. I—II Amsterdam 1776-80

NORMAN, H.C. Commentary on Dhammapada. I-V. Pali Text Society. London 1906-15

OLDENBERG, H. Die Religion dos Veda. Berlin 1894

... Jatakastudien. N G G. 1918, p. 456 ff.

... Das Mahabharata. Goettingen 1922

OVERBECK, H. Hikayat Maharaja Ravana. J R A S, Malayan Branch Vol XI (1933, Pt. ii)

PARGITER, F.E. Vrsakapi and hanumant. J R A S 1911, p. 803 ff.; 1913, p. 397 ff.

PICKFORD, J. Mahavira Carita. London 1871

PILLAI, M S. Purnalinga. Tamil Literature.

POLIER, M.E. de. Mythologie des Hindous I—II. Paris 1809

PRINTZ, W. Rama und Sambuka. Zeitschrift fuer Indologie und Iranistik. Vol 5, p. 241 ff.

— Helen und Sita. Beitrage zur Literaturwissenschaft und Geistesgeschichte Indiens. Festgabe Jacobi. Bonn 1926 pp. 103-123

PRZYLUSKI, J. Epic Studies. I H Q Vol 15, pp. 289-99

PURI,Swami Satyananda. Rama-Kirti (Ramakien) Birla Oriental Series. Bangkok 1940

PUSALKER,A.D. Twenty-five years of Epic and Puranic Studies. Progress of Indic Studies. Poona 1942, pp.101-151

RAGHAVAN,V. Music in the Abdhuta Ramayana. Journal Music Academy. Vol 16, p.66 ff.

... Date of Yogavasistha J O R. Vol. 13, pp. 100-28

RAGHUVIR,Dr. The Ramayana in China. Lahore 1938

RAO,T.A. Gopinatha. History of the Sri-Vaishnavas. Madras 1914

RATNAM,M. Venkata. Rama, the greatest Pharaoh of Egypt. Rajamahendri 1934

RAVENSHAW,E C. The Avatars of Vishnoo. An abstract translation from the Padma Pooran. Journ. of the Asiatic Society of Bengal 1842,pp. 11 2 30

REAMKER. Text and French summary. Introd. by S. Karpeles. FASC. 1-10,75-80. Phnom—Penh. 1937

RHYS DAVIDS,W. Buddhist India. London 1903

ROGERIUS,A. De open Deure tot het verborgen Heydendom. Ed. W. Caland. The Hague 1915

ROSE,H.A. A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and the North West Frontier Province. I-III. Lahore 1919

ROY,S.C. The Birhors. Ranchi 1925

RUBEN,W. Studien zur Text Geschichte des Ramayana. Stuttgart 1936

SASTRI,K.A. Nilakantha. The Ramayana in Greater India. JOR. Vol VI (1932), p. 117 ff.

SCHLEGEL,W. Zeitschrift fuer die Kunde des Morgenlandes. 111,p. 379

[illegible]. Introduction to the Panchatantra and the Ahirbudhnya Samhita. Madras 1916

SEN,D.C. The Bengali Ramayans. Calcutta. 1920

— History of Bengali Language and Literature. Calcutta 1921

SHASTRI,M. Narayana. On the Indian Epics. I A .Vol 29,pp. 8—27

SHASTRI, Raghuvar Mitthulal. The authorship of the Adhyatma Ramayana. Journ. G.N. Jha Research Institute. Vol I, pp.215—39

SMITH,H. Sutta—Nipata Commentary. Pali Text Society. London 1916

SONNERAT,P. Voyage aux Indes Orientales et a la Chine. I-II.Paris 1872

SORENSEN,S. Index to the names of the Mahabharata. London 1904

SRIKANTHIA,B.M. Tragic Ravana. Mysore University Magazine. Vol VII

STUTTERHEIM,W. Rama—Legenden und Rama-Reliefs in Indonesien. Muenchen 1924

SUKTHANKAR, B. M. The Rama-Episode (Ramopakhyana) and the Ramayana. Kane Comm. Volume. Poona 1941, pp. 422-88

— The Nala-Episode and the Ramayana. A Volume of Eastern and Indian Studies. Bombay 1939, pp. 294-303

— The Borgus and the Mahabharata. A B O R I. Vol 18, pp. 1-76

SUZUKI, D T. Studies in the Lankavatara Sutra. London 1930

TAVERNIER, J. B. Travels in India. Oxford Un. Press 1925

TELANG, K. T. Was Ramayana copied from Homer. Bombay 1873

TEMPLE, R. C. A Popular Legend about Valmiki. I A. Vol 27, p. 112

— A Punjab Legend. I A Vol 11, pp. 281-91

— The Legends of the Punjab. Bombay 1884

THOMAS, E. W. A Ramayana Story in Tibetan from Chinese Turkestan. Indian Studies (Lanman Comm. Vol.) 1929, pp. 193-91

THOMAS, P. Epics, Mytns and Legends of India. Bomcay s. a.

UNGNAD, A. Babylonian-Assyrian Dictionary.

UTGIKAR, N. B. The Story of the Dasarath- Jataka and of the Ramayana. J R A S Cent. Suppl. 1914. pp. 203-221

VAIDYA, C. V. The Riddle of the Ramayana. Bombay 1906.

VANDIER, J. La Religion egyptienne. Paris 1944

VARADACARI, K.C. Sri Kulasekhara's Philosophy of Devotion. Journ. Sri Venkatesvara Oriental Institute. Vol III, pp. 1-22

VIGNANANANDA. The Srimaddevi Bhagavatam. Sacred Books of the Hindus. Vol 26

VIGOUROUX, F. Dictionaire de la Bible. Paris 1895

VINCENZO MARIA di Caterina da Siena, P. F 11 Viaggio all Indie Orientali. Roma 1672

WARD, W. A View of the History, Literature and Religion of the Hindoos. I-III. London 1877

WATANABE, K. The Oldest Record of the Ramayana in a Chinese Buddhist Writsng. J R A S 1907, p.99 ff

WEBER, A Ueber das Ramayana. A B A. Berlin 1870, pp. 1-80 Engl. Trs by Rev. D. C. Boyd. Bombay 1873

— History of Indin Literature. London 1890

— Die Rama-Tapaniya-Upanisada. A B A. 1864, p. 279 ff

— Episches im Vedischen Ritual. S B A. 1861

— Die pali-Legende von der Entstehung des Sakya- und Lohya-geschlechtes. Indische Studien. Vol V (Berlin 1862), p. 412 ff.

— Ramayana und Vedica. S B A. 1891, p. 818ff

— Zwei vedische Texte ueber Omina und Portenta. A B A, 1858, p. 368 ff

WHEELER, J. Talboys. History of India. Vol II. London 1869

WHITNEY, W. D. Atharva-veda-Samhita. H O S. Vol 7-8. Cambridge Mass 1905

WILSON, H. H. Rig-veda-Samhita. London 1854

WINSTEDT, R O. A Patani version of the Ramayana. Royal Batavian Society Feestbundel. Batavia 1929

— An undescribed Malay version of the Ramayana. J R A S. 1944, p. 66 ff.

WINTERNITZ, M. A History of Indian Literature. I-II. Calcutta 1927

— Jataka Gathas and Jataka Commentary. I H Q. Vol IV, p. 1 ff.

WOOLNER, A C The date of Kundamala. A B O R I. Vol 15, p. 236 ff.

ZIEGENBALG, B. Genealogy of South Indian Gods. Engl. Trs. Madras 1869

ZIESENISS, A. Die Rama-Sage bei den Malaien. Hamburg 1928

अनुक्रमणिका

(ग्रंथ; ग्रंथकार; विषय)

सूचना (१) अंक अनुच्छेद के सूचक हैं।

(२) ग्रंथो के नाम मोटे टाइप में छपे हैं।

(३) वाल्मीकि, वाल्मीकिकृत रामायण तथा विदेशी भाषाओं के आधुनिक ग्रंथों को छोड़कर, अन्य लेखकों तथा रचनाओं के समस्त उल्लेख निर्दिष्ट हैं।

(४) राम-कथा के प्रमुख पात्रों से संबंध रखनेवाले उल्लेखनीय विषय ही उनके नाम के साथ निर्दिष्ट हैं।

अगकोरवर (मंदिर) ३०८
अगद (राम से वैर) २४०,२८७
अंगद रैवर २८०
अजना (अंजनी) ३२६,३३४, ५४१,५४३,५४५-५५०
अंधमुनि-पुत्र-वध ८४,३६४
अगत्स्य ४१६
अगत्स्य-रामायण २०४
अगत्स्य-संहिता १६०
अग्नि ४४४ ४४६
अग्निपरीक्षा ५०६-५०७
अग्निपुराण १६६,३५७,४५६
अग्निवेश-रामायण १८६
अथर्ववेद २,१३;टि० में ४,७,१७,१८
अथर्ववेद-भाष्यम् १३ टि०
अद्भुत दर्पण २३२,२४८,६०८
अद्भुत ब्राह्मण १८
अद्भुत रामायण १८७; १६७, ३३०,३३८,३४०,३४८,३६६, ३८२,३८३,४४५ टि०, ४५१, ४८८,५३०,५६२,५६६,६११, ६१५
अद्वैत कवि २३०
अध्यात्म रामायण १८६;२६,३०, १६०,१६१,१६२,१८८,१८८, २३१,२८४,२८६,२६२,२६३, ३१६,३२०,३२५,३२६ टि०, ३२७,३३०,३३३,३३५,३३८, ३३६,३४२,३६२,३६३,४००, ४०१,४०३,४०७,४१०,४१५, ४१६,४२३,४२७,४३४,४४२, ४४४,४४६,४५४,४६६,४८८, ४६२,४६४,४६५,४६६,५००, ५०३,५०४,५०५,५२१,५५१,

५६६,५८५,५६२,६१०,६११,
६१३,६१७,६२०

अध्यात्म रामायण (मलयालम) २६८

अनन्त आता २६४

अनन्त कृष्ण आयर ४२१ टि०

अनन्त भट्ट २५८

अनर्घ राघव २३८; १२०,२३२, २४३,३५६,३६३,४१०,४३१, ४५७,६२१

अनाम (हिंदचान) ३०८,४०२, ४३५

अनामकं जातकम् ४८; ७८ टि०, २६६,३५८,४०२,४०६,४३५, ४५६,५०६,५५१,५५३,५६५,

अनुराधपुर ६६

अब्द-रामायण १८६

अभिधर्म महाविभाषा १६,७७, ७६,१४६,६१८

अभिनन्द २२६; दे० रामचरित

अभिनव राघव २४२

अभिषेक नाटक २३४;१२०,२३३, २४०,२६६,४८७,४६४

अमरावती ८४,१७१

अयुतिया (श्याम) ३१२,५६५

अर्क प्रकाश ५३४

अलवाराडो ११२

अल्वार १५६,६२०

अवतारवाद

(१) उत्पत्ति १५५-१५६

(२) रामावतार २६,१२४-१४३, १५६,३०७,३१६,३३२-३४८, ६१६

अवेस्ता ६६

अश्वघोष ७७,७८,१४७

अश्वमेध (राम का) ५२४,५२५

असिया (पा० वृ० नं० ४) ३१३,३६३,४४०,४४१,४६३

असिया पोर्तुगेसा (पा० वृ० नं ५) ३१३,५४६, ५६१ टि०

अहल्योद्धार ३२६-३२६

अहिमहिरावण २५६,५१३

अहिरावण (अहारावण) १८८, २७७,२८८,२६२;५१३,५३७

आख्यान-काव्य १४४-१४६,५६१, ५६७,६१८

अग्निवेश्य-गृह्यसूत्र १६

आदि पुराण ५१,६२

आदि-रामायण १६२, १६०

आदिवासी राम-कथाएँ २७२-२७३,३२३,४२५

आनन्द रामायण १८८; ३०,१६२, १८६,१६०,२३२,२६२,३१६, ३२०,३२७,३२८,३३४,३३५, ३३८,३४४,३४७,३४६,३६०, ३६३,३६५,३६७,३६६,३८४, ३६३,४००,४०१,४०३,४०७, ४१०,४११,४२६,४३०,४३१, ४३४,४४१,४४६,४५३,४५४, ४५५,४५८,४६६,४७०,४७१, ४६०,४६३,४६६,५००,५०१

५०३,५०४,५०५,५१३,५१४,
५२३,५२८,५२६,५३१,५३३,
५३६,५३७,५३६,५४४,५४७,
५५१,५६०,५६७,५७२,५७८,
५८१,५८७,५६२,५६६,६११,
६१३,६१४,६१५,६१७,६२०
आपस्तम्ब गृह्यसूत्र १६ टि०
आफगोडेरैय डर ओस्ट इंडिशे हाइडनन (पा० वृ० नं० ३) ३१३,३६३,४०७ टि०,४१७,
४२३,४४०,४४१,४५७,
४६४,४६५,४६३,५०३,५०७,
५३८,५४६,५६१टि०,
६१५ टि०
आर्यसूर ५०
आर्यारामायण २५४
आशाधर ६३ टि०
आश्चर्य-चूडामणि २४१;२३२,
२३३ टि० ४३८,४७१,६०८
आश्वलायन गृह्य सूत्र १७ टि०
आसामी राम-कथा २६४
इंद्र ६४,६६,६७,१४३,५४८
इंद्रजाल (उड्डीय) ५३४
इंद्रजित युद्ध ४६६-५०१
इंद्राणी ३४०
इल बियाजियो अल इंडिये ओरियेन्टालि (पा०वृ० नं० १६) ३१३,
६०,३६६,३७६,५३६टि०,५४६
उगड ए० १००टि०
उड़िया राम-कथा २८६-२६२
उत्गिकार एन० वी० ६७टि०
उत्तरकाण्ड (आसामी) २६४
उत्तरकाण्ड (जावा) ३००
उत्तरकांड चम्पू २५७
उत्तरपुराण ६४;५१,६२,६३,
२६६,३५२,३५६,३५८,३६६,
३७५,३७६,४०२,४२०,४३२,
४३८,४४४,४५३,४५६,४५८,
४६५,४७०,४८७,४६६,५०३
५०१,५३६,५३७टि०,५४३,५५१
५५३,५७६,५८४,५६५,६१२
उत्तररामचरित २३६;१०,१०६,
२३२,२३५,२३७,२४२,३०२,
३५४,५२१,५५१,५५४,५७५,
५८२,५८६,५६३
उत्तररामायण (तेलगू) २६२
उत्तररामायण (कनारी) २७१
उत्तररामायणचम्पू २५७
उदात्तराघव २४२
उदारराघव २२८;३२३,३३८,३५७,
४०३,४२२,६२०
उद्धव (कवि) २६३
उन्मत्तराघव २४६
उर्मिला (१४ वर्ष तक निद्रित) २६१
ऊराओ (आदिवासी) ११० टि०
ऋग्वेद १टि०,२,३,४,७,८,११,१२,
१७ टि०,१६,२०,१४४,१४५
ऋग्वेद-भाष्य ५३४
एंटहोवन आर० ई० टि० में—
३२६,५४७,५४८
एकनाथ १८६,१८८ दे० **भावार्थ रामायण**
एजुथाचन २६८

एस्टलेर ए० २१० टि०
ऐतरेय ब्राह्मण ४,८
ऐयर के० वा० ३१२ टि०
ऐरावण दे० अहिरावण
ओत्तकुथन २६०
ओपर्ट ४२१ टि०
ओल्डेनबेर्ग एच० टि० में—३८, ८४,६६
कंबन-रामायण २६०;१२०,२२३, २२६,३३१,३६२,३६६,४४४, ४८६,४६६,४६८,५०२,५०६, ५५७,५६१,६१६
कबोदिया ३०८,३७६,४८७, ४६१,५१३,५५१,५५६,५८२, ५८६
कथाकोष (जैन) ५५
कथा रामायण २६४
कथासरित्सागर २५६;५२,१५०, २३२,२५५,२६६,५०६,५०७, ५४८,५५१,५५६,५५८,५७७, ५८१,५८२,५८६,५८८
कनक-मृग ४३७-४४२
कनारी रामायण २७०-२७१
कन्नास पानिक्कर २६७
कन्नास रामायण २६७
कपिदूत २५२
कपिष्ठल संहिता ७ टि०, १४ टि०
कर्णाटक कवि चरिते २७० टि०
कलिसंतरण उपनिषद १६०
कल्पद्रुम अवदान ५०
कल्पनामंडितिका ७६
कल्याण (पत्रिका) ६२१ टि०
कविचद्र २७७,२८०
कविताकौमुदी ३३२,३६० टि०, ४०७ टि०
कवितावली २८३,३२०,३६३,३६३
कविमल्ल २२८
कश्यप ३४२
कांग-सेंग-हुई ४८
कांगा ई० एम० ६६ टि०
कॉनोर जी० पी० ३१२ टि०
काक-वृत्तान्त ४००,४५८
काकाविन (रामायण) २६६;१२०, २२३,२३४,३०१,३०२,३०३, ३०४,३३३,४२२,४५८,४५६, ४८६,४८८,४-४,५०६,५६५, ६१४,६१६
कार्चविभुदु २६२
काठक गृह्यसूत्र १३,१६,१७
काठक संहिता १,१५५; टि० में—४,७,१४
कादम्बरी २५५
काने पी० वी० १५५ टि०, १५६ टि०
कामकांती पापराजु २६२
कार्पेलेज़ एम० ३०६ टि०, ३१० टि०
कालनिर्णय रामायण १८६,३६७, ५६२
कालनेमि-वृत्तान्त ४६५;२३, २६१,२८४,४७६
कालिका पुराण १८४,३७०,५१८
कालिदास २७,१७४,२२२,२३३, २५६,३१६,४००,५२१,५५४
कालिराघव-संहिता १६०
कालेंद,डब्लू ३१३ टि०

कावेल ई० बी० ७८ टि०, १४७ टि०
काश्मीरी रामायण २७६;२७४, २६७,३२८,३३८,३४२,३६०, ३६६,३७६,३६०,३६६,४००, ४०३,४११,४२३,४४६,४८६ ४६६,५०३,५३५,५३६,५३६, ५५१,५६०,५७७,५८२,५६५, ६११
काथ ए० बी० २७; टि० मे— १७,५४,७८,७६,६३,१०६, १५०,२२०,३२६
कीबे एम० बी० ११३ टि०
कुन्दमाला २३७;२३२,५५१,५५४, ५८७.५६३
कुंभकर्ण ३४८,४७८,४६८,५३७
णाल जातक ७४,८१
प्पुस्वामी शास्त्री २३३ टि०
वेर ५३४
ारतत्र ५३४
कुमारदास १२०,२२१,२२५, २६०,३६६
कुमुदेंदु ५५
कुलशेखर (अल्वार) १५६
कुश ५६६-५८३,६०४,६१०
कुशीलव १५६,६१०
कूचिभट्टारक ६२
ूर्म—ण १६४,१६८,४३५,४४६ ४६२,५३६,६१३
कृत्तिवास रामायण २७७;३०, १४७ टि०, २८०,२८१,३२१, ३३१,३७३,३६४,४०७,४४१, ४६६,४६०,४६२,४६३,४६५, ४६६,५०७,५१०,५१२,५१३, ५५१,५६०,५८२,५६४,६१५
कृत्यारावण २४२
कृष्ण (१) अवतार १५५ (२) भक्ति १५८,६१६ ६१७
कृष्ण कवि ६३
कृष्णचन्द्र तर्कालंकार २५२
कृष्णदेव उपाध्याय ५०७,५६०टि०
कृष्णमोहन २५१
कृष्णोपनिषद् १६०,६१७
केराल वर्मा रामायण २६६
केर्न एच० ७६ टि०
केवट-वृत्तान्त ३६३;२११,२५६, २८४,२८६
केशवदास २८७; दे० **राम चंद्रिका**
केसरी की वर-प्राप्ति २३,४४६, ५४२,६०६
कैकेयी (१) स्वयंवर ३५०
(२) वर-प्राप्ति ४०७-४०६
(३) दोष-निवारण ४१०,२३३
कोकिल संदेश २५२
कौशिक सूत्र ४ टि०,१७,१८
कौषीतकी उपनिषद् ६
कौषीतकी गृह्य सूत्र १७ टि०
कौषीतकी ब्राह्मण ८
कूक डब्लू० ३० टि०, ४६०, ५४५ टि०
क्षीरस्वामी २४२
क्षेमकरणदास द्विवेदी ७३ टि०
क्षेमेंद्र २२७,२५५,३७२,३८०, ५३६,५८६

खदिर गृह्य-सूत्र १६ टि०
खुद्दक निकाय ६६
खोतान ५०,३७५ ४३७
खोतानी रामायण २६७;२६५,३३०, ३३२,३५५,३५७,३५८,३६६, ३७७,४२३,४२५,४४१,४५४, ४८६,४६३,४६६,५०२,५०३, ५०४,५०६,५३५,५६५
ख्मेर रामायण दे० **रंआमकेर**
गंगाधर महाड़कर २४६
गंगानाथ झा ६२१ टि०
गंगावतरण ३१६
गरुड का आगमन ४८०
गरुडपुराण १७२,४१७
गर्गसंहिता ६१७
गर्नर सी० डब्लू० ७८ टि०
गाथाएँ दे० आख्यान-काव्य
गिरधरदास २६३
गिलहरी का वृत्तान्त ४२५;२७२, २७३,४६०
गीतगोविन्द २५२,२५३,६१६
गीताराघव २५३
गीतावली २८३,३२०,३२७, ३६६,४६६,५५१,५६५,६१७
गीति रामायण २६४
गुजराती राम-कथा २६३
गुणभद्र ५३,६२,दे० **उत्तरपुराण**
गुणभद्र (अनुवादक) १०२
गुणाढ्य २५५,२६६,५५६,५७७
गोपाल कृष्णाचारियर वी० एम्० २६० टि०
गोपालोत्तर-तापनीय उपनिषद् १६०
गोपीनाथ टी० ए० १५६ टि०
गोपीनाथ रामायण २६५
गोभिल गृह्यसूत्र १७ टि०
गोरेसियो २२,२७
गोविन्ददास ३६६,३८१
गौतम ऋषि ३२६ ३२६, ५४८-५५०
ग्रासमैन १२ टि०
ग्रियर्सन जी० ए० टि० में—६५, १८७,२७६
घोष, मनमोहन २६६ टि०
चंद्रदूत २५२
चंद्रलाल १६२
चंद्रसागर वर्णी ५५
चंद्रावती रामायण २७८,३५४, ५५१,५६०
चम्पा राज्य ३०८.५६५
चम्पू रामायण २५७,३३१
चक्र कवि २२६
चक्रवर्ती, ए० ५२ टि०
चक्रवर्ती, सी० ११२ टि०
चरित्र रामायण ३००
चरियपिटक ८४,८५ टि०
चांद्र-रामायण २११,३६३
चामुण्डराय ६२,६३
चिंतामणि विनायक वैद्य २७, ८०,११०,११२,४३५; टि० में—६५,८१,१५५
चिंताहरण चक्रवर्ती ११२ टि०

चित्रकूट रामायण १६०,६१७
चित्रबंधरामायण २५१
चिदंबर २४६
चिलुस्की जे० ६५ टि०,३८८ टि०
चांगनवाला वी० ३१३; दे० ५१० वृ० न० १७
चार्सनिस ए० ३०४ टि०
चेचया पी० २६२ टि०
च्यवन २६,३०,१४७
छलित रामायण २४२
छांदोग्य उपनिषद् ५,१४४
जगतराम-रामायण २८२,५०१, ५३०,६१५
जगन्मोहन-रामायण २८६
जयु ४२२ ४२३
जैन (वैदक साहित्य में) ६,२०
जयन्त ४००
जयदेव (गीतगोविंद) २५३
जयदेव (प्रसन्नराघव) २४३
जयदेव जी शर्मा १३ टि०
जयद्दिस जातक ८३
जय-विजय ३४१ टि०,३४७,५३७
जलाक्या ६८,८८
जह्नु का गंगापान २६,३१५
जातक-साहित्य ४६-४६
जातकट्ठ-कथा ६६ टि०
जातकवर्णना ४७,६५,६६,६८, ७३,७५ टि०,७७,८१,८३,८४ ८५ टि०,५३७
जातकमाला ५०
जानकीगीता २५३
जानकीपरिणय (चक्र कवि) २२६, ६१६
जानकीपरिणय (नाटक) २४८,३२८ ४५०
जानकीमंगल २८३,३६३
जानकीहरण २२५;१२०,२२३, २६०,३३१,३३३,३६६,४१०, ५०६,५६३,६१६
जान्स्टन ए० ७८ टि०, १४७ टि०
जाबाली-वृत्तान्त ८६,३६२
जावा २६८-३०७
जिनदास ५५
जिनरामायण ५५
जिनसेन ५१,६२,६३ टि०
जीवनसंबोधन ६३
ज़ेंद अवेस्ता ६६
जैनेआलोजी ऑव सौथ इंडियन गोड्स (पा० वृ० न० १७) ३१३, ३७५,५१७,५८३,५८८
जैन राम कथा ५१-६४,५६८; ३३२,५०२,५३७,५८८,५६१, ६१२
जैन रामायण ५५,४१०,४८७, ५५१,५५६,५७४,६१२
जैन साहित्य और इतिहास ५४, ६२ टि०
जैमिनी गृह्यसूत्र १६ टि०
जैमिनी ब्राह्मण ६
जैमिनी भारत १६५-१६७,५१३, ५१४,५३०,६१५
जैमिनी रामायण ३०० टि०

जैमिनीय अश्वमेध १९५; २३२, २८७,५२५,५५१,५५७,५८२, ५८८,६२१
जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण ४
जोन्स डब्लू ३१३
टार्वान्ये जे० बां० २१३; दे० पा० वृ० नं० ११
टेम्पल आर० सी० ३० टि०, ५४५ टि०
ट्रावल्स इन इंडिया (पा० वृ० नं० ११) ३१३,४३५
डारमेस्टेटर ६६ टि०
डुब्वा जे० ए० ३१३
डुमो आर० १०० टि०
डे पोलिये ३० टि०, ३१३
डे फरिया ३१३
डैप्पर ओ० ३१३
ताडका-वध ३२५
तामिल रामायण २६०
तारा सार उपनिषद् १६०
तिक्कन यार्म्बी २६२
तिपिटक ६६,८२,८८,८६,१०३, २४५,१४६ ५६१,५६८,६१०
तिब्बत ३७५,४३७
तिब्बती रामायण २६६;६२,२६०, २६५,२६७,३३२,३३८,३५५, ३५८,३६६,३७७,४०३,४०६, ४२३,४३८,टि०,४४४,४५४, ४५६,४६०,५०४,५०६,५३५, ५५१,५५८,५६८,५७७,५८८, ५६५
तिलोयपण्णति ५१
तिसट्ठी-महापुरिस-गुणालंकार ६३
तुर्किस्तान २६७
तुलसीदर्शन १५८ टि०
तुलसीदास, गोस्वामी २००,३३० २८५,२८७,५६४; दे० **रामचरितमानस**
तेलांग चे० टी० ६२टि०
तेलगू रामायण २६१-२६५
तैत्तरीय आरण्यक ४,१५,१६, ५५
तैत्तरीय प्रातिशाख्य २८
तैत्तरीय ब्राह्मण ४टि०,६,७८,१०, २० टि०, १५५,३७१
तैत्तरीय संहिता ४टि०,७टि०,८,१४टि०
तोरावे रामायण २७०;४००,४३०, ४४६टि०, ४६८,५००,५०३, ५२३,५६४
त्रिपाद विभूति महारामायण-उपनिषद् १६०
त्रिषष्टिलक्षण-महापुराण ५१,६२
त्रिषष्टि शलाका-पुरुष-पुराण ६१
त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्रम् ६३टि०
त्सा-पौ-त्सुंग-किंग ४६
थोमस, एफ़० डब्लू० २६६ टि०, ५५८टि०
थोमस,पा०; टि० मे—३३४,३३५, ५३६,५४७
दयसन पा० १६०टि०
दशकुमारचरित २५५
दशरथ (१) वेद में ३,२०,२३
(२) विवाह ३४६-३५१
(३) यज्ञ ३१६,३३२-३३५

(४) संतति ३५२-३५५
दशरथ-कथानम् ४६;७७,३५३, ३५८,४०३,४०५,४०८,४२८, ५६५
दशरथ-जातक ४७,६५-८१;४६, ८२,८६ ६२,१०१,१०४,१४५, २६६,३५५,३५६,३५८,३६८, ३६६,३८८,३८६,३६७,४०३, ४०५,४०८ ४२८,५६७ ६०१
दशावतार चरित २२७,३६६, ३८०,५३६,५३८,५५१,५५४
दांडि रामायण २८६
दामोदर मिश्र २४०
दासगुप्त एस० एन० १८५
दि ओपन डोरे (पा० वृ० न० २) ३१३,४६३
दिग्वर्णन ४५०
दिङ्नाग २३७
दिनेशचंद्र सेन ६५,७६,७७, ८८,८६,१०१-१०३,१०८, २७४,२७७,५६७; टि० में—३,८४ २७८,३५४, ४५१,५४४
दिवाकर प्रकाश भट्ट २७६
दिव्यावदान ५०
दीपवंश १०२,११३
दुर्मुख (गधर्वी) ४०,२५८,४११
दुरंत रामायण २१८
दुर्गावर २६४
दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह ५५७ टि०, ५६० टि०
दूतांगद २४५
देवचंद्र ५५
देवधम्म-जातक ७३ टि०
देवपाल (भाष्यकर) १७
देवरामायण २१६,४००
देवविजयगणि ५५,५५६ टि०
देवी (चंद्रिका) १८०, १८१, १८२,१८४ २७७,४६६,६१५
दौलतराम ५४
द्वाविंशति अवदान ५०
द्विपाद रामायण २६१; १२०, २६२,३६२,३७५,४०७,४११, ४३०,४४१,४४५,४६५,५०१ ५०३,५२३,५४१ टि०, ५६४
धनजय (कवि) २४६
धनराज शास्त्री १६४
धनुर्भंग ३५८ ३६१
धम्मपद ७३,७५
धर्मकीर्ति १०१
धर्मपरीक्षा ५५
धीरनाग २३७
धीरेंद्र वर्मा ३२६ टि०, ३२७ टि०
नंदिमुनीश्वर ६२
नतु (मलयालम जाति) ४२१
नरसिंहाचार डी० ए० ६५ टि०
नरसिंहाचार्य आर० २७० टि०
नरहरि (कवि) २७०, ४४६ टि०, ५१३
नर्मकथाकोष ५१३,५१४
नर्मद २६३,४५६,४६४,४६६, ५०३,५०४,५५१,५६०,५८२
नल ४८६,४६०
नलोपाख्यान ३१,३२

नागचंद्र ५५
नागराज ६३
नाथूराम प्रेमा ५४,६२
नारद ३४८,४०३,४२७,४७८
नारदपुराण १७०,५२८
नारदीय पुराण १७०
नारदीय भक्तिसूत्र १५८
नारायण शास्त्री १०५ टि०
नार्मन, एच० सी० ७३ टि०
नालयिर प्रबंध १५६
निम्बार्क १५८
निमि जातक ८८ टि०
निर्वचनोत्तर रामायण २६२
नीबुहर, सी० ३७६ टि०
नृसिंहपुराण १७७; १८२, ३२७, ३३०,३३५,३३८,३६२,३६५, ४००,४१७,४३८,४४४,४५३, ४५४,४५६ ४६२,५०६,५२७, ५५१,५५२,५६६,६१३
पंचतंत्र(लाओं भाषा में) ३११,३६४
पंचरात्र १५६,३३७
पंपरामायण ५५
पउमचरिय (विमलसूरि) ५६-६१; ५१,५४,५५,२६१,३५०,३५३, ३६०,३६२,३६६,३७०,२७३, ३७५ टि०,३६३,४०६,४२०, ४३०,४३५,४५३,४५६,४६८, ४७०,४८७,४६६,५०३,५०६, ५०७,५१६,५२२,५२३,५३५, ५३६,५३७ टि०.५३८,५४३, ५५१,५५५,५७४,५८०,५८५, ६११,६१२,६१७
पउमचरिय (स्वयंभूदेव) ५५
पद्मचरित ५४,५५,५५१,५५५,
पद्मदेवविजयगणि ५५,५५६ टि०
पद्मपुराण (जैन) ५४ टि०, ५५
पद्मपुराण १७४;६,१०,१६ टि०, १८६,२३२,२८७,३१६,३२१, ३२५,३२७,३३३,३३५,३३८, ३४२,३५३,३५४,३५७,३६०, ३६३,३६५,३६७,३७१,३६४, ४००,४०७,४०८,४११,४१७, ४३४,४६४,४८४,४८८,४६२, ४६३,४६८,५०३,५०४,५२५, ५२७,५२८,५३७,५३८,५५१, ५५७,५६३,५८२,५८८,५६२, ६१४,६१७,६२१
पनतरन (मंदिर) ३०३
परमत्थजोतिका ७३ टि०
परमवनम् (मंदिर) ३०२
परमेश्वर (कवि) ६२
परशुराम ३३०;१२५
पाणिनी २७,३१
पातानी राम-कथा ३०६;३०४, ३५७,३६४,३६६ ३७८,३८१, ४४१,४५१,४६३,४७१,४७२, ४८६,४६०,४६७,५१४
पानिक्कर आर० एन० २६६ टि०
पादुकाओं का वृत्तान्त ३६७
पारस्कर गृह्य-सूत्र १७
पार्गीटर एफ० ई० ६६ टि०,१०३टि०
पार्वती (सीता में अवतरित) ३४०
पाश्चात्य वृत्तान्त ३१३
पिंडदान ३६६

पिक्फर्ड जे० १०६ टि०
पुण्यचंद्रोदय पुराण ६३
पुण्याश्रवकथाकोष ५५
पुण्याश्रवकथासार ६३
पुत्रेष्टि-यज्ञ ३३२-३३५;१२५,३१६
पुर्त्तगाली वृत्तान्त क (पा० वृ० नं० ८) ३१३,३६३,४३१,४६३, ५०१,५०४,५१४,५५७ टि०, ५७७,५८२
पुर्त्तगाली वृत्तान्त ख (पा० वृ० नं० ९) ३१३,३८४ टि०, ४०३,४३५
पुर्त्तगाली वृत्तान्त ग (पा० वृ० नं० १०) ३१३, ४७३, ५०४
पूर्णलिंग पिल्लै एम्० एस्० २६० टि०
पेटर्सन २५८
पौराणिक साहित्य १६३-१८४
प्रकाशधर्म ३०८
प्रतिमा नाटक २३३,२३२,३५६, ३५७, ४०३, ४१०, ४३९
प्रभाकर २५३
प्रवरसेन २२३
प्रसन्नराघव २५३; २४०,२३२; २८७,३३०,३६३,३६६,४४४, ४७२,६१९
प्रह्लाद शेखर दीवानी जा २९३ टि०
प्राकृतकामधेनु ५३४
प्राकृतलंकेश्वर ५३४
प्रिंज़, डब्लू;टि०में—४४७,५०६,५२१
प्रेमानन्द २९३,४३४
फॉसबाल वी० ४७ टि०, ६७ टि०
फुशे ए० ३०८ टि०
फेनिचियो जे० ३१३
बंगाली राम-कथा २७७-२८२, ३३१,४५१,५५९
बधुवर्मा ६३
बरुआ बी० के० २९४ टि०
बर्लिनगेम, ई० डब्लू ७३ टि०
बलडेयुस पी० ३१३
बलदेवप्रसाद मिश्र १५८ टि०
बलरामदास रामायण २८९,४५८ ५९४,६११
बार्थ ए० १५० टि०
बालरामायण २३९;१२०,२३२, ३०२,३३०,३६३,४१०,४३१, ४४५,४९१,५११,५९३,६१९
बिहोर राम-कथा २७२,३३२, ६६०,३८३ टि०, ४२५,४४१, ४६३,४६५,४७२,४८७,४९८, ५००,५०२, ५०४,५१३
बुद्ध (सिद्धार्थ) ३८२,४६,४७, ५०,५१,७४,७८,८१,८९,१०१, १०२,१५६,२९७,३११,६११
बुद्धघोष ७३,७५ट०, ९२
बुद्धचरित ७८,१४७
बुद्धराजु २६१,२६२
बुद्धस्वामी २५५
बुल्के सी० २२ टि०, ३१५ टि०
बूलर जी० १७६ टि०
बृहत्कथा २५५;५२,२९६,५५१, ५५६,५७७,५८१,५८२,५८६, ५९५

बृहत्कथामंजरी २५५,५८६

बृहत्कथाश्लोकमंजरी २५५

बृहत्कोशलखंड २००,१६२,६१७

बृहत्संहिता ११३

बृहदारण्यक उपनिषद् ६

बृहद्धर्मपुराण १८२,२२०,३३३, ४३८,४६४,४६६,४६२,५१०, ५४४,६१५,६२१

बृहद्राघव-संहिता १६०

बेजकाया का वृत्तान्त ५११

बेनीप्रसाद ११ टि०

बेलवलकर एस० के० ६३ टि०, १०५ टि०, १०६

बोधायन गृह्यसूत्र १६

बोले ले गोंज ३१३

बौद्ध राम-कथा ४६-५०,६५-६०, ५६८

ब्रह्मदेश की राम कथा ३१२, ४१६,४३७,४४१

ब्रह्मपुराण १७१;३३५,३६४, ३६६,४०७,४०८,५६६,५८५

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण १७५,३७३,४४६

ब्रह्माण्डपुराण १५६,१६४,३३६, ३४५

ब्लुमफील्ड १८ टि०

भँडारकार दे० रामगोपाल

भक्तमाल ३० टि०

भक्ति (१) कृष्णभक्ति १५८,६१६-६१७

(२) रामभक्ति १५६-१६२,६२०

भक्तिसूत्र १५८

भगवद्गीता ७० ३३०,३४१,६१८

भट्टिकाव्य २२४;१२०,२२१,२६६, ३००,३३३,३५६,३६०,४२२, ४५६,५०६,५६३,५६५,६१६

भरत (१) शंखावतार ३३८

(२) ज्यैष्ठ्य ३५३ २३३

(३) चित्रकूट-यात्रा ३१५

भरतज्यैष्ठ्यनिर्णय ३५६

भवभूति ११३,२३६; दे० **उत्तररामचरित, महावीरचरित**

भविष्यपुराण १६६

भस्मलोचन का वृत्तान्त ५१२;२७७, ३०५,३१०

भागवत पुराण १६७;१६४,१८६, १६५,२४६,२६४,३१६,३२०, ३३२,३३६,३४२,३६२,४८८, ५०६,५३७,५५१,५५६,५५८, ५८५

भारद्वाज गृह्य-सूत्र १६ टि०

भार्गव (कवि) २८,२६,३१,१४७

भालण २६३

भावार्थ रामायण २६२;३६३, ३६४,५१३,५६४

भाषा साहित्य चरित्रम् २६६ टि०

भास १२०,२३३,४३६

भास्कर भट्ट २४६

भास्कर रामायण २६३

भीम (कवि) २२६

भुसण्डी ३२२; १८१,१६०,१६५, २०७,२८४

भुसण्डी रामायण १६०,२८४

भृगु-शाप ३४५,५६२
भोज (राजा) २५७
भोजदेव २३७
भोजपुरी ग्रामगीत ५०७,५६० टि०
भोजपुरी लोकगीत ५५७ टि०, ५६० टि०
भ्रमरदूत २५२
भ्रमरसंदेश २५२
मंजुल रामायण २०५
मंत्ररामायण १६२
मत्रणा कर्मण २६३
मंथरा ४११;२५८
मदोदरी (१) विवाह ५३६
(२) केशग्रहण २५,२६१, ४७८,५०३
(३) वध ५०२
मनखादेव जातक ८८ टि०
मत्स्यपुराण १५६,१६४,३४५
मधु-कैटभ ५३७
मधुवन-ध्वंस ४६२
मधुसूदन २४०,४४१
मध्वाचार्य १५८
मनमोहन घोष २६६ टि०
मनुस्मृति ४५०,५२१ टि०
मराठी रामायण २६२
मलय की राम-कथा २६८ ३०५
मलयालम रामायण २६६ २६६
मल्लियाचार्य (मल्लाचार्य) २२८
मल्लिषेण ६३ टि०
महाजनक जातक ८८ टि०
महादेव (कवि) २४६
महानाटक (हनुमन्नाटक) २४०; २३१,२३२,२३४.२५६,२८७, २६७,२६६,३०२,३२८,३३०, ३३१,३६३,४०३,४३१,४३७, ४४१,४५५,४५७,४५८,४६४, ४८८,४६३,४६४,४६६,४६८, ४६६,५४४,५६३,६१६
महापुराण (मल्लिषेण) ६३ टि०
महाभागवत (देवी) पुराण १८१; १८२,३४०,३६६,३७५,४६६, ५१०,५४४,५६२,६१५
महाभारत ३१-४५; ४,६,१०,१६, २१,२७,२८,२६,५१,५२,७०, ७१,७६,६०,१०६,१४६,१४७, १५५,१५६,१५७,१५६,१७२, १८२,२२०,२४६,२६३,३०८, ३१६,३३०,३४८ टि०,३६६, ३७०,३८६,४०८,४२८,४५०, ४५६,५२०,५३५,५३६,५३७, ५३८,५५१,५५२,५६२,५६६, ५६१,५६८,६१०; दे० **रामोपाख्यान**
महारामायण १६१,२०१,६१५,६१७
महाराष्ट्रीय टि० में—१२४,१७४, १८८,२६२,४८३
महावंश ६२,१०२,३०५
महावस्तु ८४
महावीरचरित २३५;१०,२३२, २३८,२४०,३३०,३५६,३६३, ३६६,३६५,४१०,४३१,४५७, ५६३,६१६,६२१
महासुतसोम जातक ८७,८८
महीरावण ५१३,५३७

माताप्रसाद गुप्त २८३ टि०
माधवकंदलि २६४
माधवदेव २६४
माधवभट्ट २६४
मानवगृह्य सूत्र १७
मानुची एन० ३१३
मायापुष्पक २४२,६०८
मायुराज २४२
मारीच ४४२
मार्कण्डेय पुराण १६४
मितन्नि ३
मिथोलोजी डेस इंदु (पा० वृ० न० १३) ३१३,३३८,३६३, ३८३,४०७,४४१,४५१,४५३, ४५४,४५५,४६३,४६४,४६५, ४७०,४८७,४८६,४६६,५००, ५०७,५१३,५८५; टि० में— ५४४,५५७,५७६
मिलिंद पान्ह ८५ टि०
मुंडा (आदिवासी) २७३,४२५
मिस्र १०६
मुक्ति उपनिषद् ११० टि०, १६०
मुरारि ११३,१२०,२३८,२४३,४१०
मूर ई० १०८; टि० में—३३४,३३५, ४६०,५०४,५४७
मुद्गलभट्ट २५४
मूलरामायण १६०
मेक्सिको ११२
मेघदूत २५२,६१६
मेनका (सीता की माता) ३७२
मैंद रामायण २१२
मैकडोनेल ए० ए० २७;टि० में— ६२,६३,१०७,३२६
मैकालिफ़ एम०ए० ३२६टि०,५४६,टि०
मैकेंजी १६०
मैत्रायणि संहिता ८,१४,टि०
मैथिली कल्याण २४४;२३२,३६२, ३६६,६१६
मैथिली लोकगीत ३६० टि०
मैरावण दे० महीरावण
मैरावण-कलह २७०,५१३
मैरावण-चरित १६६,५१३
मोनिये विलियम्स २७, टि० में— १०,६५,६२,१०५,१५५,२५३
मोरे ए० १०६ टि०
मोरोपन्त २६२
मोल्ला २६१,२६४
मोल्ला रामायण २६४
मोहनस्वामी २३१
म्यूर जे० १२४ टि०
यजुर्वेद १टि०,६,७टि०,८,१३, १४,१५,१६,१७
यदातीरे सुब्बराव १०८
यशोवर्मा २४२,४५७
याकोबी एच० ६३ ६६;२७,२८, ३८,५४,६५,७१,६७,६६,१०१ १०५,१२१,१३१,१५०,१५१, ३६२,४१४,४६२,४७६,५६७; टि० में—२२,७०,८०,८६,६२, १०७,११३,११४,१२४,१५२, १५५,३१६,४५०,४८२,५१७, ५६७

यादवराघवीय २५०
याम प्वे ३१२
यास्क १२,१३ टि०
यू तो (कवि) ३१२
योगवासिष्ठ १८५;२८७ ३२२,३२३,३४५,३४६,६११
योगीश्वर २६६,३०३
योगेंद्र २७१
रंगरामायण दे० द्विपाद रामायण
रघुनदन गोस्वामी २८१
रघुनाथ (कवि) २६४
रघुवंश २२२;८४,१७४,२६०,३१६, ३२७,३३३,३३६,३५६,३५७, ३५६,४००,५२१,५३८,५५१, ५५४,५७२,५७३ टि०, ५८५, ५६३,६१३
रघुविलास २४२
रणयज्ञ २६३,३६३,४३४
रत्नाकर ३०,१४७ टि०,२७७
रत्नावदान-माला ५०
रमसस १०६
रमेशचंद्र दत्त ६३ टि०,१०६टि०
रलासियोडेस एरयर (पा०वृ०न० ६)३१३,४०३,४३५,४७३,५०४, ५८३
रविषेण ५४,५५,५५५
राक्षस ५२,११०,१११
राघवन वां० १८५,१८७ टि०
राघवनैषधीय २४६
राघवपांडवयादवीय २४६
राघवयादवीय २५०
राघवविलास २५४
राघवाभ्युदय २४२
राघवीयसंहिता १६०
राजशेखर ११३,दे०**बालरामायण**
राजेंद्र लाल मित्र ५५टि०,१६०, १६२,१८६,१६६,२००
राजेंद्र हाजरा १६४,१६६,१८१; टि० में—१५६,१६३,१७०, १७१,१७२,१७३,१७४,१७५, १७७,१८०,१८३
राधा ६१७
राफल्स ३०४,३५५
राम (दाशरथि)
(१)रामचंद्र १०
(२) वंशावली ३५७
(३) अवतार दे० अवतारवाद, भक्ति
(४) जन्मतिथि २६,३१५,३१६
(५) बाललीला ३१६-३२२, ३३१
(६) वैराग्य ३२३,२८७
(७) पूर्वानुराग २२५,३३१ ३६६,६१६
(८) विवाह ३१८-३६७
(६) निर्वासन ४०२-४०६
(१०) चित्रकूट मे निवास ३६८ ४०१
(११) का मायामय शीश ४६४, ४०६
(१२) अश्वमेध ५२४-५२५,५८२
राम (ऋग्वेद का राजा) ४
राम (कोलिय वंश का राजा)७४
राम (कवि) २६६

राम आपतस्विनी ४,२०
राम इकबाल सिंह राकेश ३६० टि०
राम क्रातुजातेय ४,२०
राम भार्गवेय ४,२०
राम हुवास्त्र ६६
राम-कथा
(१) मूलस्रोत ६१ १०४,१४६, ५६७ ६०४
(२) ऐतिहासिकता १०५-१०६
(३) भूगोल ११३
(४) निर्वहण ५८४ ५८६;६०४
(५) विकास ६०५-६२०
(६) व्यापकता १५७,५६१ ५६६
(७) आदर्शवाद
राम-कथा (वासुदेवकृत) २५८
रामकथावतार ५५
रामकल्पद्रुम २५८
राम-कियेन ३१०,३१२ ३२६, ३३३,३३४,३३८,३५०,३५६, ३६०,३६६,३६६,३७६,३८१, ४००,४०७,४१७,४२३ ४३०, ४५१,४५३,४५४,५५८ ४१६, ४६३,४७१,४७२,४८७,४६०. ४६१,४६३,४६६,४६७,४६८, ४६६,५०३,५०४,५११,५१३, ५१४,५२३,५२८ ५३१,५३६, ५३७,५३८,५३६,५४४,५५०, ५५१,५६१,५७८,५८२,५८६, ५६५,६१६
राम-कीर्त्तन २६४
राम कीर्त्ति दे० रे ग्राम कैर, राम
राम कुमार वर्मा २८५
रामकृष्ण विलोमकाव्य २५०
राम-कलिंग ३०४,३६६,३८६
रामगीतगोविन्द २५३
रामगोपाल भंडारकार ५५ टि०,१५६
रामगोविन्द द्विवेदी १२ टि०
रामचंद्र (कवि) २४२
रामचंद्र ममुच्च ५५
रामचंद्र शुक्ल २८४
रामचंद्रिका २८७;४४१,४४६, ४५५,५२५,५८२,५८८
रामचरित (अभिनन्दकृत)२२६; १२०,२२३,४५८,४५६,१०६, ६१६
रामचरित (पद्मदेवविजयगणिकृत ५५,५५६टि०
रामचरित (माहनस्वामिकृत) २३
रामचरित (संध्याकरनंदिकृत) २४६,४००,५७२
रामचरितम् (मलयालम) २६६, ५६४
रामचरितमानस २८३-२८४,६, १११,१८६,२८६,२८८,३१६, ३००,३०२,३२५,३२७,३३०, ३३१,३३३,३३५,३४१टि०, ३४२,३४३,३४७,३४८ ३६३, ३६६,३६३,३६५,४०१,४०१, ४०३,४१०,४११,४२६,४२७, ४३४,४४६,४५४,४६५,४७०, ४७१,४८६,४६२,४६४,४६५, ५०३,५३७,५५७,५८२,५६४, ६११ ६१७ ६२१ टि०

राम-जातक ३११;५०,३४०,३५४, ३५५,३५७,४२३,४६३,४७१, ४६१,४६७,५०६,५११,५१३, ५३५,५३७,५५०,५५१,५६१, ५८३,५८८
राम-जातकम् १८६
रामतापनीय उपनिषद् १६०, ३३६ ४३४,४७३
रामदास गौड १६१,१६४,३५४ टि०,५६०टि०
रामपुराण ५५,३७५ टि०
रामपूजाप्रद्धति १६०
रामपूर्वतापनीय उपनिषद् १६०
रामवा नचरित २८३
राममोहन बन्द्योपाध्याय ५३१, ५४४
रामभद्र दीक्षित २४८
रामयामन ३१२
रामरसायन २८१
रामरहस्य २३१; ३१६,३२०, ३४३,३६३,३६३,४६४,४६६
रामरहस्योपनिषद् १६०
रामलिंगामृत २३०,२५६;३१६, ३२१,३२८,३६३,३६३,४१०, ४३२,४५८,५०१,५०६,५१३, ५३३ ५८०,५८८,६१४,६१५, ६१६
रामलीला २७६
रामलीलामृत २५१
रामविजय (आसामी) २६४
रामविजय (मराठी) २६२
रामविरह २६३
रामविलास २५३
रामशतक २५५
रामहृदय १८६
रामाज्ञा-प्रश्न २८३
रामानन्द (आचार्य) १६१,१८६, ६२०
रामानन्द (कवि) २८६
रामानुज १५८,१६० १६१.६२०
रामाभ्युदय (यशोवर्माकृत) २४२, ४५७
रामाभ्युदय (व्यासमिश्रदेवकृत) २४७
रामायण (वाल्मीकिकृत)
(१) रचनाकाल २७
(२) विस्तार ७६,११७,१४८
(३) तीन पाठ २२-२६,३१५, ३६१,४१३,४४६,४६१, ४७५-७८,५१६,६१८
(४) प्रक्षेप ११४-१४३; १५२ १५६,३१६,३६२,४१४, ४५०,४६२,४७६-४८५,५१७, ६०५
(५) अनुक्रमणिकाएँ २३, ११७,१२१,३१५
(६) फलस्तुति ११६,१३७
(७) उत्पत्ति १४७-१५१; १८२,१८८,२२०
(८) विकास १५२-१५६, ६१८
(६) बौद्ध प्रभाव ८६
रामायण-आदिकांड (आसामी) २६४

रामायण काकाविन दे० **काकाविन**
रामायणचम्पू २१६
रामायणतात्पर्यदीपिका १८६
रामायणमंजरी २२७,३७३
रामायण मणिरत्न २०६,६१७
रामायण-महामाला २०७
रामायण-रहस्य १८६
रामायण-संग्रह १८६
रामायण-सार १८६
रामायण-सार (गुजराती) २६३; ४७६,४६४,४६६,४८०,५०३, ५०४,५५१ ५५७,५६०,५८२
रामार्चनचंद्रिका १६०
रामार्चनपद्धति १६१
रामार्चनसोपान १६०
रामावत सम्प्रदाय १६१,६२०
रामावतारकालनिर्णयसूचिका १८६
रामोत्तरतापनीय उपनिषद् १६०
रामोपाख्यान ३७-४५,३१,३२,३३, ३६,१२०,२५८,३३४,३५८, ३७०,४०१,४११ ४२४,४३६, ४५३,४५४,४८८,४६०,४६५, ४६८,४६६,५०२,५०६,५३५, ५३६,५५२,५६६,५६१,५६८, ६११,६१३
रावण
(१)—सबंधी आख्यान-काव्य १०१-१०२
(२)—चरित ५३४-५३६,१२०
(३)—वंश ५३६
(४)—अवतार कारण ५३७;३४१ टि०,३४८
(५) शिव-भक्त ५३८,६१३
(६) सीता-स्वयंवर में ३६१,३६३
(७) मर्मस्थान ५०४;२०५,४२३
(८) वध ५०२-५०५
(९) दशग्रीव ११२,५६
(१०) सहस्र-स्कंध ५३०-५३२
रावण-भेंट ५३४
रावण-मंदोदरी-संवाद २६३
रावणवध दे० **भट्टिकाव्य**
रावणवह (सेतुबंध) २२३; १२०, २२१,२२५,२६० ३०२,४६१, ५०६,५६३,६१६
रिसडेविज, टी० डब्लू० ६६ टि०
रुद्रवाचस्पति २५२
रूबन, डब्लू० १४६
रेआम केर ३०६;३१०,३५२,३५६, ३६२,३६६,३७६,४००,४०३, ४५३,४५४,४६३,५०३,५५१, ५६१,५७८,५८२,५८६,५६५
रैज़ एन ओपटकर्निंग (पा० बु० नं० १५) ३१३,४३५,४७३
रैम ई० पो० २७० टि०
रोरडा वान ऐंसिगा ३०४
रोजेनियुस ए० ३१३
रोस एच० ए० ५४५ टि०
लंकादेवी ४६७-४६६,४६१
लंका ११३
लंकादहन ४६२
लंकावतार-सूत्र ५०,१०१,१०२, १०४
लक्ष्मण (१) शेषावतार ३३८
(२) विवाह १२३,३६२

(३) अनशन तथा जागरण ५००,१८६,२६१,२७० २७२
लक्ष्मणभट्ट २५७
लक्ष्मी (सीता में अवतरित) ३३६; १३५,१३६,१५६,१६७
लव ५६६ ५८३,७०४,७१०
लावण्यसमय २६३
ला जानटिलिटे डु बेंगाल (पा० वृ० न० ७) ३१३,३६३,४३१, ५१३,५१४,५७८,५८२, ५५७ टि०
लालू एम्० २६६ टि०
लिंग पुराण १६६
लियेऊ तू-त्सी-किंग ४८
लिब्रो डा सैंटा (पा० वृ० न० १) ३१३,३३४,३३५ टि०, ३३८ ३६६,३८६,४०६,४२०,४२३, ४३८,४४४,४४५,४५३,४५४, ४६४,४६५,४७१,४७२,४८६, ४८७,४८८,४६०,५००,५०४ टि०, ५१३,५३५,५३६,५४६ टि०
लुडर्स एच०; टि० में—५२,६७,७०, ७१
लुड्विग ए० ४ टि०,१२ टि०, ३८
लेम्स एडिफियन्ट (पा० वृ० न० १६) ३१३,३६६,३८५ टि०, ५२३
लेवि एस० २३; टि० में—४६,७६, २३२
लेस्नी वां० १२२ टि०
लैस्सन सी० ६५ टि०, १४८ टि०
लोमस रामायण २०३,३३१
वराहमिहिर ११३
वल्लभाचार्य १५८
वसुबंधु ७६
वह्निपुराण १७८,३४५,४६५,५३७
वाजसनेयि संहिता १४
वातानबे के० ७६ टि०
वान्डिये जे० १०६ टि०
वान ग्लाजनैप ५१ टि०
वान नेगेलैन ६६ टि०, ६८
वान फ्रूग-हाइमेनडार्फ ११० टि०
वानर ५२,११०
वामन पुराण १६६
वायुपुराण १६६; ६,१५६,३३२, ३३६,३३६,३४५,३७०,५०६, ५५१,५५२,६२०
वाराह गृह्यसूत्र १६ टि०
वार्ड डब्लू० ३६० टि०, ५४४ टि०
वालि ४५४-४५७,४५२,३२६,६१०
वाल्मीकि २८-३०;१४७;३१,३०८
वासिष्ठोत्तररामायण १६७
वासवदत्ता २५५
वासुदेव (भ्रमरसदेश) २५२
वासुदेव (राम-कथा) २५८
विटरनित्स एम्० २७,७०,१८५; टि० में—३१,३८,५१,५५,६५,६६, ७८,७६,८४,८५,८८,८६.६४, ६८,१०२,१४४,१६५,२२०
विक्रमोर्वशीय २४६
विगुरु एफ० १०० टि०
विनत्ज़ेनज़ो मर्चिया, पी० एफ० ३१३

विचित्र रामायण २६१,३७३,३७४
विजय (सिंहल का राजा) २७५,३०५
विट्ठलराजू २६२
विदेशी राम-कथा २६५-३१३,५६५
विद्याधर ५२,६१०
विनयपिटक ६६
विभीषण ४८६,५२७-५२८;३३४, ४७०,१७७,४७८,४६३,५३७
विमलसूरि ५३,६२,४१०; दे० **पउमचरिय**
विराध-वध ४१५
विलंका रामायण २६०; ५३२, ५५१,५६४,६१५
विल्सन एच० एच० १२ टि०
विश्वनाथ २५४
विश्वनाथ खुंटिया २६१
विश्वनाथ सिंह २५३
विश्वामित्र की कथा ३१६
विष्णु दे० अवतारवाद
विष्णुधर्मोत्तरपुराण १७६
विष्णुपुराण १६५; १५६,१६४, १६६,३१६,३३२,३३६,३३६, ३७०,३७१,५०६,५५१,५५२, ६२०
वीरकेराल वर्मा २६६
वीरनाग २३७
वूलनर ए० सी० ५४ टि०, २३७ टि०
वृन्दा-शाप ३४७;१७६,१८८,२७३, २८४,५३७
वृषा कवि ६६ टि०,१०३
वेंकटदेशिक २५२
वेंकटध्वारिन् २५०
वेंकटनाथ २५२
वेंकटरत्नम् एम० १०६
वेंकटाचार्य २५२
वेंकटेश २५१
वेदवती ३७३; ११६,३३६,६०१, ६१०
वेदान्त रामायण १६३
वेदान्ताचार्य २५२
वेबर ए० ४,१०,२७,३८,६५,७३, ७५,७७,८६,६२,६३,१०१, १०४,१०६,१०७,५६७;टि० में—१८,२८,१६०,५०६ ५७०
वेस्सन्तर जातक ८३,८५,८८
वैखानस गृह्यसूत्र १६ टि०
वैदिक साहित्य १-२०
वैद्य सी० वी० दे० चिन्तमणि विनायक
वैश्रवण ५३४
वैष्णव-मताब्ज-भास्कर १६१
वोयाज ओफ इंड ओरियन्टाल (पा० वृ० न० १२) ३१३,४०६,४३३
व्यास १८६
व्यासमिश्रदेव २४७
शम्बरदेव २६४
शम्बूक-वध ५१६-५२३
शक्तिभद्र २४१
शतकोटिश्लोकरामायण १८८, ५६६
शतपथ ब्राह्मण ४,५,६,१४,१५५, ३२६; टि० में—७,१५,१४४
शतमुखरावणचरित्रम् १६७, ५३१

शत्रुंजयमाहात्म्य ५५
शत्रुघ्न (सुदर्शावतार) ३३८
शबरी २९९
शरच्चंद्र राय २७२
शरभंग १४३,४१६
शांख्यायन आरण्यक ६
शांख्यायन गृह्यसूत्र टि० में—
१७,३१,१४४
शांडिल्य १९०
शांडिल्य भक्तिसूत्र १५८
शांता ३५४-३५५;१७३ २१५,३५७,
५६० टि०
शाक्त प्रभाव ६१५
शारलादास २९०
शार्पेटिये जे० ६६ टि०,८४ टि०
शैव (१) हनुमान् में अवतरित ५४४-
५४६
(२) शिव प्रतिष्ठा ४९२
(३) शिवभक्ति ६१३-६१४
शिवनन्दन सहाय ११० टि०,३६० टि०
शिवपुराण १७९;३४८,३९६,४२६,
४३४,५४५,५४८,६१४
शिवमहापुराण १७९,३४७,६१४
शिवरामेर युद्ध ४५१
शूर्पणखा ४१७-४२१,५२२-५२३
शृंगार प्रकाश २३७
शेलाबेर ३०४
श्याम की राम-कथा ३१० ३११
श्यामकजातक ८४
श्रवण-रामायण २१७,३९४,३९५
श्राद्ध १५९,१६० टि०
श्रावण ३९४;३३५,८४
श्रीकंठिया वी० एम्० ५५ टि०
श्रीगोस्वामी तुलसीदास (शिव-
नन्दन सहाय) ११० टि०,
३६० टि०
श्रीधर २९२
श्रीनिवासराघव १८९
श्रीभाष्य १६०
श्रीमद्देवीभागवत पुराण १८०;
१७५,३६३,३७३,४१७,४४५,
४४६,५१०,६१५
श्रीराम ३०४
श्रीरामायणसमालोचना टि० में—
१२४,१७४,१८८,२९२,४८३
श्रीरामार्चनपद्धति १६१
श्रीवेदान्त देशिक २५२
श्रीहरिभक्तिरसामृतसिंधु ६१७
श्रीहर्ष्याचार्य २५३
संकष्टनाशनस्तोत्र २४९
संगीतरघुनन्दन २५३
संध्याकरनंदि २४९,४००,५७२
संबुला जातक ८६,८८
संवृत्त रामायण २०२
संस्कृत धार्मिक साहित्य १५८-२१९,
५९२
संस्कृत ललित साहित्य २२०-२५९
५९३
सती-व्यामोह ३३१,४२६
सत्योपाख्यान १९८;१६२,३२१,
३२२,३२७,३३८,३५०,३५९,
३६०,३६३,४१९,६११,६१४,
६१७

सद्धर्मस्मृत्युपाख्यान ७६
समयनिरूपण रामायण १८६
समयादर्श रामायण १८६
सरस्वती ४१०,४११
सर्वसिद्धान्त १६०
सहस्रमुखरावण चरित्रम् १६७, ५३०
साँची ८४
साम्प्रदायिक रामायण १८५-१६४
साकल्यमल्ल २२८
सामजातक ८४,८८,३६४
सामवेद १६ टि०, १७ टि०
सायण ८,१२,६४
सिंहलद्वीप ८६,११३
सिंहली राम-कथा २७५;३६६, ३८३,३८७ टि०, ४०३,४०६, ४३५,४६३,४७३,५५१,५६१, ५७६ ५८३,५८८
सिद्धेश्वर परिड २६०
सीता (वैदेही)
(१) जन्मकथा ३३८-३८६; ६०१ ६१०
(२) अवतार ३३६ ३४०
(३) स्वयंवर ३६१-३६७
(४) हरण ४२८-४४७
(५) अग्निपरीक्षा ५०६-५०७
(६) त्याग ५५१-५६८,६०३
(७) भूमिप्रवेश ५८५
(८) मायासीता ४४३-४४७, ५११,५६७
(६) शक्तिरूपा ५३०-५३३
सीता (कृषि की अधिष्ठात्री देवी) ७, १०-२०,६३ ६७ १०६,३७१, ३८७
सीता सावित्री ८-१०,११,३७१
सीता-विजय १६७,५३१
सीता-विरह २६३
सीता-हरण २६१
सुक्थांकर बी० एम० ३१ टि०, ३८
सुग्रीव ४५१-४५३;३२६,६१०
सुजुकि डी० टी० १०२
सुत्तनिपात-टीका ७३,७५
सुत्तपिटक ६६
सुनीति कुमार चटर्जी ६६ टि०
सुब्रह्म रामायण २१४
सुभट्ट २४५
सुमग्ग-जातक १०३,६१०
सुलोचना की कथा ५०१
सुवण्णसामचरियम् ८४
सुवर्चस-रामायण २१५,३५४, ५६० टि०
सुशील कुमार दे २२३; टि० में— २२०,२३७,२४०,२४१
सूरसागर २८६,३१०,३६७,४४१, ४६६
सूर्यदेव (कवि) २५०
सेतु-निर्माण ४८७-४६३
सेतु बंध दे० रावण वह
सेरत कांड ३०७; ३०४,३३२, ३३८,३५१,३५५,३६०,३६४; ३६६,३७८,३८६,४५१,५२३, ५३५,५३६,५४६,५५१,५६०, ५७६टि०,५८३,५८८
सेरतराम ३०१

सेरी राम ३०५; २३४,३०४,३०६, ३०७,३०६,३३०,३३३,३३४, ३५१,३५४,३५५,३५७,३५६, ३६४,३६५,३६६,३७८,३८१, ३८६,३६४,३६६,४००,४०६, ४०८,४११,४१५,४१७,४२३, ४२५, ३७,४४१,४४४,४५१, ४५२,४५३,४५४,४६३,४६५, ४७१,४७२,४८६,४६०,४६१, ४६४,४६७,४६६,५००,५०१, ५०३,५०४,५०५,५१२,५१३, ५१४,५२३,५२५,५३६,५४६, ५५१,५६०,५७६,५८३,५८८, ५६५
सोनेरा एम०३१३
सोमदेव २५६,५५६
सोमसेन ५५,३७५ टि०
सोमेश्वर २५४
सोरेन्सेन एम० ३१ टि०
सौन्दरनन्द ७८
सौपद्म रामायण २०६
सौर पुराण १८३,३४०,४६२,५३६; ६१४,६१५
सौर्य्य रामायण २१०,५६३ टि०
सौहार्द रामायण २०८
स्कंद पुराण १७३;१७६,१८६,३२७, ३२८,३३२,३४०,३४४,३४७, ३५४,३६७,३६६,४८८,४६२, ४६३,४६८,५२५,५२७,५३८, ५४४,५६२
स्टोरिया डी मोगोर (पा०वृ० नं० १८) ३१३,३५७टि०,५५७टि०
स्मिथ एच० ७३ टि०
स्वप्न-दशानन २४२
स्वयंभूदेव ५५
स्वयंप्रभा-वृत्तान्त ४५६
स्वायंभू मनु ३४३
स्वायंभू-रामायण २१३,३४६
हंसदूत २५२
हससंदेश २५२
हनुमत्संहिता १६६;१६२,२००,६१७
हनुमद्विजय १६६
हनुमन्नाटक दे० **महानाटक**
हनुमान
(१) वैदिक साहित्य में ६५,६६
(२)—विषयक आख्यान-काव्य १०१,१०३
(३) जन्म-कथा ५४०-५५०, ६०२,७१०
(४) लक्ष्मण से युद्ध ४५१
(५) समुद्रलघन ४६३,११२,४८२
(६) छद्मवेष ४६४ ४६६
(७) नल से युद्ध ४६०
(८) महीरावण से युद्ध ५१३
(६) गर्वनिवारण ४६२
(१०) हिमालय-यात्रा ४६५-४६७, ४७७,४८२
(११)—का पुत्र ५१४
हरदत्तसूरि २४६
हरप्रसाद शास्त्री २५१,२५२,२५३
हरिदास २६३
हरिनाथ २५३
हरिवंश १६३;१६,७१,१४५,१५६, १५७.१६५.१७१.१७२.२३२.

३०८,३१६,३३२,३३६,३३६,
३६६,३७०,५०६,५५१,५५२,
५६६,५६१,५६२,६२०
हरिशंकर २५३
हरिश्चंद्र-वृत्तान्त ३३१;२७७,२७६
हरिषेण ५५
हरिसत्य भट्टाचार्य ५१ टि०
हर्षचरित २५५
हस्तिमल्ल २४४
हाजरा दे० राजेंद्र हाजरा
हाप्किन्स, ई० डब्लू० ३८,६७; टि०
में—३१,३२,६६,१०७,१२४,
४५०
हिटैट १०६
हिदचीन की राम-कथा ३०८-३०६
हिंदी राम-कथा २८३-२८८
हिंदी साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास २८५ टि०
हिंदी साहित्य का इतिहास
२८४ टि०
हिंदुत्व १६१,१६४,३५४टि०,
५६०टि०
हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता
११ टि०
हिंदू मैनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरेमोनिस (पा० वृ० न० १४)
३१३,४०६,४६०,५५७टि०,
५८२
हिंदेशिया की राम-कथा २६४-३०७;
३२६,५४८
हिकायत सेरी राम दे० सेरी राम
हिकायत महाराज रावण ३०४;
३५१,३५५,३६४,३६६,३८६,
४०८,४४१,४५१,४५५,४६६,
४६१,५०५,५१४,५५१,५६०,
५७६
हिटैट १०६
हिरण्यकेशिन् गृह्य सूत्र १६ टि०
हीरालाल झा ११३ टि०
हृदयनारायण सिंह ११४ टि०
हेमचंद्र ५५,१०१,२४२; दे० **जैन रामायण**
हेमचंद्र राय चौधुरी १५५,१५८
टि०
हेर्टेल जे ६६ टि०
होमर ७५,६२,४४७,५६७
ह्विटनी डब्लू० १३ टि०
ह्वूलर जे० टे० २७,८६,१०८

शुद्धिपत्र

अवश्य शुद्ध कीजिए

पृ०	पं	अशुद्ध	शुद्ध
८६	३	भाई-बहन के साथ	भाई-बहन के विवाह के साथ
११५	६	समीचीन प्रतीत होता है	समीचीन नहीं प्रतीत होता है
१५२	अंतिम	रामलीला	रासलीला
१६२	२३	मिथिला ही से	मिथिला ही में
३७२	१२	प्रसन्नराघव तथा आश्चर्यचूडामणि में	आश्चर्य-चूडामणि में
३७२	१४	रामचरितमानस में	प्रसन्नराघव तथा रामचरितमानस में
४६१	१६	काश्मीरी रामायण	वाल्मीकि रामायण
४६५	१०	कृत्तिवासीय रामायण	चंद्रावतीकृत रामायण

राम-कथा साहित्य की तालिका में कथासरित्सागर (पृ० ४६१) तथा जीवनसंबोधन (पृ० ४६२) भूल से मोटे टाइप में छपे हैं।

बढ़ाइए

पृ० ५७ टि०—"हिन्दी अनुवाद : दे० नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ५४ अंक ४ पृ० २८६-२८६ ।

पृ० १३७ टि० १—"विष्णुपुराण में वाल्मीकि को भार्गव माना गया है। दे० ३ अध्याय २ ।"

पृ० १६४ टि० २—"कलकत्ता संस्कृत सिरीज, भाग ११, भूमिका

पृ० ३५४ अंतिम पं० के बाद—सर्ग २८, १४-५२। वर्षा-ऋतु का त्रिष्टुभ में वर्णन।

पृ० ४७३ पं० २८ के बाद—'हनुमान' नाम के आधार पर भी **वाल्मीकि रामायण** में एक कथा मिलती है जिसका यहाँ पर उल्लेख करना है। हनुमान की सामर्थ्य का वर्णन करते हुए जाम्बवान् हनुमान् से कहते हैं कि जन्म लेने के बाद ही तुमने बालसूर्य को देखकर उसे एक फल समझ लिया था। अतः सूर्य को छीनने की इच्छा से तुम कूदकर आकाश में पहुँच गए। यह देखकर इंद्र अत्यंत क्रुद्ध हुए और उन्होंने तुमपर वज्र मारा था। फल-स्वरूप तुम पर्वत के शिखर पर गिरे तथा तुम्हारी बाँई ठोड़ी (हनु) टूट गई। तभी से तुम्हारा नाम हनुमान् पड़ा (किष्किंधाकाण्ड, सर्ग ६६,२४)

पृ० ४७४ पं० २२ के बाद—"लंका में हनुमान् की विभीषण से भेंट (दे० अनु० ४७०)।"

पृ० ५१७ वाराह पुराण १६६

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
६	४	(३) राम क्रातुजातेय	(४) राम क्रातुजातेय
६	८	शास्यायनि	शाट्यायनि
६	६	ब्रा ३७.३२.४.६.१.१) ।	ब्रा० ३,७,३,२;४,६,१,१) ।
७	१२, १७, २८	गांवों	गायों
८	१०	आश्वतपस्वि	आश्वतरास्वि
८	१७	एक सहस्र	मैं एक सहस्र
६	१२	धनुर्वेर ब्रह्मं जनकैरभिपूजितम्	धनुर्वरब्रह्मज्ञनकैरभिपूजितम्
११	३	तेतीस	तैंतीस
११	१६	षड्होतृ	षड्ढोतृ
१२	१	ाड्होतृ	षड्ढोतृ
१५	टि०	ज० अ० ऑ० ओ०	ज० अ० ऑ० सो०
१६	११	हमारे मधुयुक्त	हमारे लिये मधुयुक्त
१६	टि	इंद्रः सीतां सीलाधारकाष्ठां	इंद्रः सीतां सीताधारकाष्ठां
१८	५	असंगो	असन्नो
१८	११	अच्छा फल	अच्छा फाल
१८	२२	औषधियाँ	ओषधियाँ
१६	२	चक्रथः	चक्रथुः
१६	१२	पयसाभ्या...	पयसाभ्या...
२०	१५	औषधियाँ	ओषधियाँ
२०	२४	उपर्यृक्त	उपयुक्त
२३	८	समा	सभा
२३	१२	होने पर यजमानब्राह्मणों को	होने पर ब्राह्मणों को
२३	टि० २	काठक गृ० सू० :७. ७१.७	काठक गृ० सू० : ७१. ७
२३	टि ४	त्वनपायनी	त्वनपायिनी
२५	७	उर्वी	उर्वी
२५	६	हरिण्यमि...	हरिण्यभि...
२५	२०	क्षेत्रसारधिमिः	क्षेत्रसारथिभिः
२६	२७	ऽ मिशिखामिव	ऽ ग्निशिखामिव
२६	२८	सौवर्णी	सौवर्णी
३०	५	अनु० ३५, ३६,१४५	अनु० ३४, ३५, १४५
३०	७	रचाना'	रचना

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३२	६	मैनका	मेनका
३२	१४	प० रा० ४, ५२	प० रा० ४, ५८
३३	१२	पश्चिमोत्तर	पश्चिमोत्तरीय
३४	१३	दा० रा० १, १२, २	दा० रा० १, १८, ८
३६	२१	अनु० २२	अनु० ८२
३७	१६	सीता	सीता
३७	टि० १	पृ० २१८, २८	पृ० ३१८-३२८
४१	२२	गुणश्लाघ्यौ	गुणश्लाघ्यो
४२	४	ग्रीयते	गीयते
४२	१५	भार्गवे	भार्गवेण
४२	१७	प्रममं...भार्या	प्रथम...भार्यां
४२	२०	भार्यप्यराजके	भार्याप्यराजके
४२	२१	चान्यतः	चान्यत्कुतः
४२	२३	अनु० ३२	अनु० ३८
४	१६	(१२.२२.५१-६२)	(१२,२८,५१-६२)
५	१	दाशरथिवीरो	दाशरथिर्वीरो
५	३	३. १७७. २२	३, १४७, २८
४८	२	अध्याय २५२	अध्याय २५८
५१	२	भस्माष्यदृरयत	भस्माष्यदृश्यत
५३	१३	बानाणसी	वाराणसी
५३	१७	उपेसि	ठपेसि
५४	२३	परिहन्णन्ति	परिहणन्ति
५६	२६	देवी	दैवो
५७	१३	शांति	क्षांति
५८	२०	मांगो	मांगी
६०	२२	पृ० २२०	पृ० २८०
. .	२४	पउमचरिय ११२, १०३	पउमचरिय ११८, १०३
६४	१२	पप्पयरामायण	पम्परामायण
६४	१५	रामकथावतार(१२ वीं श०)	रामकथावतार (१८ वीं श० ई०)
६७	२	करके और राम को	करके और इस प्रकार राम को

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
६८	२२	तथा ६६ वें पर्व में	तथा ६८ वें पर्व में
७६	टि	भाग ३, पृ० १००२ ३	भाग ३, पृ० १०२-३
७७	टि	ओरियेंरल जर्नल पृ० ६८७	ओरियेंटल जर्नल भाग ५८,पृ० ६८७
७८	११,१४	अर्दगाथा	अर्द्धगाथा
७६	२	विञ्जु	विञ्जू
८०	१२	तायर्यति	तापयति
८१	१६	मृताञ्ननुशोचांति	मृताञ्जानुशोचंति
८१	१७	ब्रह्मश्रृष्टम्	ब्रह्मसृष्टम्
८१	१६	सहस्राति	सहस्राणि
८१	२७	केवल गाथा पाँचवीं रामायण में मिलती है	केवल गाथा ५ मिलती है
८२	२४	पतिर्मूत्वा	पतिर्भूत्वा
८४	२२	उपसि	ठपसि
८८	३	७२. अश्वघोष	७८. अश्वघोष
८८	टि० ३	फल्ला	फुल्ला
८६	१	सौन्दरानन्द	सौन्दरनन्द
	८	सुमित्र	सुमंत्र
	१०	पवि	पथि
६१	१८	लिपिवद्ध	लिपिबद्ध
६२	७	यह भूल में	यह इस भूल में
६३	४,५	सोत्यानं	सोत्थान
६४	११	सेवा-सुश्रुषा	सेवा-शुश्रूषा
६५	२	वृद्धो	वृद्धौ
६५	७	प्रियमिवातियिम्	प्रियमिवातिथिम्
६६	२	कुटी वर्णन	कुटी का वर्णन
६६	७	मा	मां
६६	८	वाहमास्यास्ये	वाहमास्थास्ये
६६	६	रा० २. २६. ३१	रा० २,२६, २१
६६	टि०१	नेनक-नामक मखादेय	जनक-नामक मखादेव
१०४	११	इश	इस
१०५	८	रहकर एक वृत्र का	रहकर वृत्र का

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१०५	११	ऋग्वेद २. १०	ऋग्वेद २, १२
१०६	१८	मिन्न	भिन्न
१०८	४	पुरुरवा	पुरूरवा
१०८	५	सीता सौन्दर्य	सीता के सौन्दर्य
११२	१०	अनु० ४२२	अनु० ४८२
११४	२१	१८८	१२८
११६	६	देखने के कोई समीचीन	देखने के लिए कोई समीचीन
११६	२०,२३	हिरैर	हिटैट
११६	टि०२	पेवैयान	पाँथियोन
११७	टि२	पृ० ४२६	पृ० ४१३
११६	५	तम्बपत्रि	तम्बपम्नि
२१	२	यत्किंचिद्रामस्य	यत्किंचिद्रामस्य
२१	७	चतुर्विंशत् श्लोकानायुक्तवान्	चतुर्विंशत् श्लोकानामुक्तवान्
१२१	८	तया	तथा
१२१	१८	इससे अधिक श्लोक औरअधिक सर्ग	इससे अधिक सर्ग
१२१	२६	निभि, पयाति	निमि, ययाति
१२३	१७	बाल एत	बाल एव
१२४	१६	त्वा	त्वया
१२५	४	ब्रह्मलोक	ब्रह्मलोकं
१२५	११	तया	तथा
१२५	१२	सुमहातयाः	सुमहातपाः
१२५	१७	देवैरुदीर्णस्य	देवैरुदीर्णस्य
१२५	१८	अथितो	अर्थितो
१२६	६	(दा० रा० ३,७४,१२८)	(दा० रा० ३,७४,१२)
१२७	८	वध	वधं
१२७	१४	गरुडाधिष्टितावितावुभौ	गरुडाधिष्ठितावेतावुभौ
१२७	२८	मायामि	मायाभिः
१२८	३	प्रतीतर्किताम्	प्रतिनर्किताम्
१२६	१	प्रियते	प्रीयते
१२६	८	पहुँचकर उनके	पहुँचकर उनके
१३०	२०	वद्धा	बध्दा

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१३०	२५	समारूह्य	समारुह्य
१३१	१६	जन्मत्रि	जन्मनि
१३२	११	अभिक्रप्य सौमित्रिरभिवाघ	अभिक्रम्य सौमित्रिरभिवाद्य,
१३२	२२	तस्यौ	तस्थौ
१३३	७	कृतार्थमनमचिराद्	कृतार्थमेनमचिराद्
१३५	२	निबद्धतत्वार्था महात्म्य	निबद्धतत्वार्था माहात्म्यं
१३५	१०	इश्वाकूलामिदं	इक्ष्वाकूणामिदं
१३६	१४	भृगोमहर्षेः ऽमूच्चयवनो	भृगोर्महर्षेः ऽभूच्चवनो
१३६	१७	मार्गवेन	भार्गवेण
१३७	७	एक कथा	एक कथा में
१३७	२१	लिखे जाने में भिन्न-भिन्न	लिखे जाने में जो भिन्नभिन्न
१४१	७	भक्तत्या	भक्त्या
१४१	८	वामास्त्रविष्टये	वामस्त्रिविष्टपे
१४२	३	औषधपर्वत	ओषधिपर्वत
१४४	५	वसुंधरा	वसुंधरां
१४६	१०	महाकाव्यमुद्देश्ये	महाकाव्यमुद्देश्य
१४६	१७	एक नये रूप राम को	एक नये रूप में राम को
१५१	८	कालिराघव	कलिराघव
१५३	६	तथा वाल्मीकि	तथा एक अन्य स्थल पर वाल्मीकि
१५४	७	अध्याय २८	अध्याय ८८
१५६	११	गरुण पुराण	गरुड पुराण
१५७	१६	अनु० १२६	अनु० १८६
१५६	१६	उत्तरकाण्ड में रामरक्षास्त्रोत्र	उत्तरकाण्ड में जालंधरोपाख्यान (अ० ३-१६,१०३-१०७), कलहोयाख्यान (अ० १०८-१०६), रामरक्षास्त्रोत्र
१६०	५	देववती	वेदवती
१६२	४	अध्याय ५०	अध्याय ५७
१७१	६	रामक्रीड़ा	रासक्रीड़ा
१७०	१२	भरत-अति-संवाद	इसमें भरत-अत्रि-संवाद

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१७३	२६	होने के बाद	होने के उल्लेख के बाद
१७४	१५	संवत १५१५	संवत १७१५
१७६	३	विस्तार	विस्तार-१२०,००० श्लोक
१७६	६	महाभारताख्यातामितिहासं	महाभारताख्यातमितिहासं
१७६	२४	आवकाश	अवकाश
१८०	३	नर	नट
१८०	१२	दोष	दोषः
१८३	६	गया है लेकिन	गया है। यद्यपि केवल राम के विवाह का वर्णन किया गया है, लेकिन
१७४	१४	दे० सर्ग २३,२७	दे० सर्ग २३,८७
१८४	२७	अनु० ३२०	अनु० ३८०
१८६	टि० २	यह टिप्पणी पृ० २०४ पर रखिए	
१६०	७	जानीह	जानीहि
१६१	२३	दिग्नाग	दिङ्नाग
१६२	६	अपने वल	अपने तपोबल
२०३	१	अनु० ५२१	अनु० ५८१
२०३	२६	जन्म हुआ	जन्म रघुकुल में हुआ
२०५	२०	कराने	करने
२०७	१२	सीता के	सीता की
२१०	१६	पृथ्वी	उनको पृथ्वी
२१०	१६	सुनता	सुनाता
२१५	१७	बेर वृद्ध राम	बेर वृद्ध राम को
२१८	१२	चरित का वर्णन सुनाता	चरित सुनाता
२२३	१३	तापस रूप में पहुँचाता	तापस रूप में राम के पास पहुँचाता
२२५	१७	शरला...शरलादास	शारला...शारलादास
२४०	१८	ब्रह्माभिपूज(ति)	ब्रह्माभिपूज (ति)
२४०	१६	आत्मरूपिणं	आत्मरूपिणः
२४२	२२	मिरुण	भिरुण
२४७	६	सीता की ओर	सीता की ओर

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२५३	२०	करानाा (सर्ग २७)	करना (सर्ग २७)
२५७	६	क्रतो	क्रतौ
२६०	६	ब्रह्मानी	ब्रह्माणी
२६०	१६	बाद में गुरु	बाद में वह गुरु
२६३	१६	स्पर्शात	स्पर्शात्
२६८	१६	दक्षिर्ण	दक्षिण
२६८	२२	अन्तर	अनन्तर
२६६	१२	पास अपने	पास आकर अपने
२७३	२१	सर्वप्रथम उल्लेख पद्मपुराण	सर्व प्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण (१, ८, १, ७) में पाया जाता है परन्तु इसके फलस्वरूप विष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त करने का प्रथम वर्णन पद्म पुराण
२७४	६	रामायण (१,४,११७,१७०)	रामायण (१, ४, ११७-१४०) तथा में पद्मपुराण (उत्तरखंड, अ० १०८ ११२) में
२७४	१७	मानुषेषूपपत्स्यसे	मानुषेषूपपत्स्यसे
२७५	८	तथा आनंद रामायण (१,४, २०-११२) में,	आनद रामायण (१, ४, ८०-११२) तथा पद्मपुराण (उत्तरखड, अ० १६ और १०३) में
२७८	२,७,८	कैकय	केकय
२७८	२७	रेआम	रेआम केर
२८५	टि	स्थान की पूजा	स्थान को पूजा
२८६	२७	माया मारीच	मामा मारीच
२६३	४	(२६, १२)	(८६, १२)
२६५	७	कुशध्वज की	कुशध्वज का
२६७	१६	भारत की अन्य	भारत की एक
२६८	१२	कन्यक	कन्यका
३०८	७	(सर्ग ४५-५६)	(सर्ग ४१-४४
३०६	२५	प्रयोपवेशन	प्रायोपवेशन
३१०	४	अमि	अत्रि

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३१०	३०	श्लोक की	श्लोकों की
३११	१६	परमदुर्मना	परमदुर्मनाः
३११	२७	(सर्ग १०६, ३०६)	(सर्ग १०६, ३०-३६)
३१४	१३	भावर्थ	भावार्थ
३१४	२३	उक्सरराघव, ६, सर्ग १	उदाररराघव, सर्ग १
३१८	५	(१, ६, ७, ८६)	(१, ६, ८६)
३१८	२४	मृशम्	भृशम्
३२१	११	सेरी राम के अन्य	सेरी राम के एक अन्य
३२३	टि०	दे० पादटिप्पणी २	दे० पृ० ३२२ टि० १
३२४	६	किसी की निन्दा	किसी ब्राह्मण की निंदा
३२५	२६	(दे० आनन्द)	(दे० अध्यात्म रा०, आनन्द
३२६	७	विराध का	विराध द्वारा
३२६	२६	सर्ग ६२ और ६३ में	सर्ग ६२ और ६३ ।इनमें
३३१	२५	राम	रामः
३३२	२	प्रियातिथिम	प्रियातिथिम्
३३२	४	सभ्रमादुत्थित	सभ्रमादुत्थितः
३३२	१५	पूजनीयश्य मान्यश्ए	पूजनीयश्च मान्यश्च
३३५	४	धोखे से उससे	धोखे से उसे
३३५	१६	लंबा ग्रीव	लबी ग्रीवा
३३५	२७	का लबा ग्रीव होता है	की लवी ग्रीवा होती है
३३६	६	तर्ज	तर्जे
३४२	६	वराहाश्च	वराहांश्च
३४१	१८	मिन्नांजन	भिन्नांजन
३४१	१६	ऽहमभ्यवहारर्थ	ऽहमभ्यवहारार्थ
३४४	२४	दानें	दाने
३४६	२५	बह्निः	वहिः
३५५	टि० २	८,२७८,३१६	८,३१८.३१६
३५६	७	छेता	छेत्ता
३६०	१०	रामचरितमानस,	पद्मपुराण (पातालखंड, अ० ११२), रामचरितमानस
३६७	६	तथा ६, १२	तथा ६, १२६

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३६६	१३	मश्क	मशक
३७६	१६	राम का समर्पण	राम को समर्पण
३८६	२५	हनुमान् के जितने शरीर पर बाल हैं	हनुमान् अपने शरीर पर जितने बाल हैं
३६१	७	सामग्री की	सामग्री का
३६५	१६	मारे जाकर	मारा जाकर
३६६	२७	दे० ३, ३४	दे० ६, ३४
३६८	१६	वैश्मं	वेश्म
३६६	२०	टीटिमा	टीटिभा
३६६	२१,२२	टीटिमंसरोवर	टीटिभसरोवर
४१०	१	स्वर्गमाङ्	स्वर्गभाङ्
४१७	१६	उड्डीय	उड्डीश
४१६	१५	रत्रेश्रवा	रत्नश्रवा
४१६	१६	कैशी	कैशकी
४१६	२७	चतुरबक्त	चतुरबक्त्र
४२०	१६	दतवक्र	दंतवक्त्र
४२८	४	द्वयर्थता	द्व्यर्थता
४३३	७	पुरगृहोषिताम्	परगृहोषिताम्
४३३	६	दुष्टा	दुष्टां
४३४	१६	कृतान्तवक्र	कृतान्तवक्त्र
४३५	३	किंचितस्य	किंचित्तस्य
४४०	१६	वहुवार्षिकम्	बहुवार्षिकम् (सर्ग ५१)
४४२	८	कारण को	कारणों के
४४२	१६	पंचममोर्ध्वंतः	पंचमामोर्ध्वतः
४४३	१	बनकर	बनाकर
४४७	६	कुल	'कुश'
४४६	७	अश्वमेध घोड़े	अश्वमेध के घोड़े
४५३	४	(सर्ग ७ '	(सर्ग ६७)
४५५	अंतिम	भिरुए	भिरुए
४५८	७	ऋषिवारेषु... ब्राह्मणावसचेषु	ऋषिवाटेषु...ब्राह्मणावसथेषु

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
४५८	१८	आ प्राय्य	अप्राप्य
४६३	१५	रामकथा के में	रामकथा में
४६४	२३	प्रभाणित	प्रमाणित
४६६	१५	हनुमान जन्म वृत्तान्त के	हनुमान के जन्म-वृत्तान्त
४६८	१६	अनु० ५५६	अनु० ५०६
४७५	३०	पूर्व महादेव	पूर्व महादेवः
४७६	२४	आभिन्नाता	अभिन्नता
४७६	२६	सरपुराण	सौर पुराण
४७७	१५	अनु० ५६६	अनु० ४६६
४०८	१०	जिसमें	जिससे
४८१	१	मौलिक	मौखिक
४८४	७	परमभक्ति	परमशक्ति
४८५	१२	राम चरित	राम चरित
४८५	२१	रघूद्वहात्	रघूद्वहात्
४८६	टि०	रामाकं	रामांकं
४६४	५	पुण्याश्रवकथासार	पुण्याश्रवकथासार
४६७	३२	Morgenlaen-diedschen	Morgenlaendischen
४६८	२४	Bloomfild	Bloomfield
५००	६	Bubois	Dubois
५०२	२०	Incaranation	Incarnation
५०६	२२	BORGUS	BHRIGUS
५०७	३०	LOLIYA	KOLIYA
५११		अर्यारामायण	आर्यारामायण
५११		इंद्रजाल (उड्डीय)	इंद्रजाल (उड्डीश)
५१२		कालिराघव	कलिराघव
५१२	काठक संहिता	१,१५५,	८,१५५,
५१५		चीगनबाला	चीगनबाल्ग
५१६	तैतरीय आरण्यक	१६,५५	१६,१५५
५१८	पउमचरिय	३७०,२७३	३७०,३७३
५१८	पद्मपुराण	४६४,४८४	४६४,४८७

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
५१६	विहोंर राम-कथा	३३२,६६०	३३२,३६०
५२०	भरत (३)	३१५	३६५
५२०	भुशुण्डी	१६०,१६५	१५०,१६८
५२२	माधवभट्ट	२६४	२४६
५२३	राम (११)	४०६	४७६
५२४	रामकथा (७)	—	६२१

———

प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद्

के

अन्य प्रकाशन

तुलसीदास

लेखक डॉ० माता प्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०, रीडर, प्रयाग-विश्वविद्यालय, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या ६११, चित्र-संख्या १३, मूल्य ८)

यह ग्रंथ लेखक के प्रयाग-विश्वविद्यालय के डी० लिट्० थीसिस का परिवर्द्धित हिन्दी रूपांतर है। तुलसीदास की जीवनी, ग्रंथ-रचना तथा आलोचना से संबंध रखने वाली नवीनतम प्रामाणिक सामग्री के लिए यह ग्रन्थ हिंदी अध्यापकों तथा उच्च कक्षा के हिंदी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है।

सूरदास

लेखक डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, एम० ए०, डी० फ़िल्०, प्रयाग-विश्वविद्यालय, संशोधित एवं परिवर्धित द्वितीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५४८, मूल्य ८)

यह ग्रन्थ लेखक का प्रयाग-विश्वविद्यालय के डी० फ़िल्० का थीसिस है, और महाकवि सूरदास की जीवनी तथा काव्य का प्रथम वैज्ञानिक अध्ययन कहा जा सकता है। लेखक ने इसमें हिन्दी के इस महाकवि से संबंध रखने वाली समस्त उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया है, और इस सामग्री के वैज्ञानिक विश्लेषण से जो भी निष्कर्ष निकलते हैं, उन्हें विस्तार के साथ क्रमबद्ध रूप में दिया है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य

(१८५०—१९०० ई०)

लेखक डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, एम० ए०, डी० फ़िल्०, डी० लिट्०, प्रयाग-विश्वविद्यालय, संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४०६, मूल्य ६)

यह ग्रंथ लेखक के प्रयाग-विश्वविद्यालय के डी० फ़िल्० के लिए स्वीकृत थीसिस के आधार पर लिखा गया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की लगभग

एक शताब्दी का यह प्रथम विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन है, जिसमें समस्त उपलब्ध सामग्री की परीक्षा के उपरांत सुयोग्य लेखक ने अपने मौलिक तथा नवीन विचारों का प्रतिपादन किया है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास

(१६००—१६२५ ई०)

लेखक डॉ० श्रीकृष्ण लाल, एम० ए०, डी० फ़िल्०; हिंदू विश्वविद्यालय, काशी, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४१४, मूल्य ६)

प्रयाग विश्वविद्यालय के डी० फिल्० के लिए स्वीकृत लेखक के थीसिस का यह हिन्दी रूपांतर है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास का क्रमबद्ध, सूक्ष्म तथा आलोचनात्मक अध्ययन इस ग्रंथ में हिंदी पाठकों को प्रथम बार प्राप्त होगा। आधुनिक हिन्दी साहित्य के वास्तविक ज्ञान के लिए इस ग्रंथ का अध्ययन नितांत आवश्यक है।

कवित्त रत्नाकर

मूल लेखक सेनापति, सपादक पं० उमाशंकर शुक्ल, एम० ए०, प्रयाग-विश्वविद्यालय, पृष्ठ-संख्या २५३, तृतीय सस्करण, मूल्य ३॥)

हिन्दी के साहित्य-रसिकों को सेनापति की इस रचना का आस्वादन कराने के लिए विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने अनेक प्राचीन प्रतियों की सहायता से इसका संपादन कराया था। उसी संपादन के अनुसार प्रस्तुत पाठ प्रकाशित किया गया है। संपादक ने एक विस्तृत समालोचनात्मक भूमिका और टिप्पणी देकर इस सम्पादन की उपादेयता बहुत बढ़ा दी है।

अर्द्धकथा

मूल लेखक बनारसीदास जैन, संपादक डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०, रीडर, प्रयाग-विश्वविद्यालय, पृष्ठ-सख्या ७२, मूल्य १)

साहित्य की परंपराओं से मुक्त, प्रयासरहित पर सजीव शैली में स० १६६८ में लिखी गई यह आत्मकथा हमारे साहित्य की जो खोज अभी तक हुई है उसके अनुसार हिन्दी की पहली आत्मकथा है, और कदाचित् समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषा साहित्य में इससे पूर्व की कोई आत्मकथा नहीं है। आत्मवृत्त-लेखन कला की दृष्टि से भी यह आदर्श है, और तत्कालीन उत्तर भारत की सामाजिक और राजनैतिक दशा पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती

है। डॉ० गुप्त ने एक गवेषणापूर्ण भूमिका देकर संस्करण का महत्त्व और भी बढ़ा दिया है।

सूचना—(१) उपर्युक्त पुस्तकें केवल वी० पी० द्वारा ही भेजी जा सकेंगी।

(२) १) से २५) तक की पुस्तकों पर ६¼ प्रतिशत, २५) से ऊपर ५०) तक की पुस्तकों पर १२½ प्रतिशत और ५०) से ऊपर की पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता :—**कोषाध्यक्ष,**

हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय

प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रकाशन

नंददास

संपादक पं० उमाशंकर शुक्ल, एम० ए०; दो जिल्दों में, मूल्य ६)

यह अष्टछाप के प्रसिद्ध महाकवि नंददास जी के समस्त काव्य-ग्रंथों का प्रथम सुसंपादित संस्करण है। विस्तृत भूमिका और अनेक परिशिष्टों तथा टिप्पणी आदि के कारण पुस्तक की उपादेयता विशेष रूप से बढ़ गई है।

फ़ोर्ट विलियम कॉलेज

(१८००—१८५४ ई०)

लेखक डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, एम० ए०, डी० फ़िल्, डी० लिट्०, मूल्य ६)

इस पुस्तक में पाठक फ़ोर्ट विलियम कॉलेज का इतिहास, खड़ी बोली, हिन्दी भाषा और साहित्य संबधी ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति, और हिन्दी-उर्दू के तत्कालीन संघर्ष के विषय में केवल प्रामाणिक सूत्रों के आधार पर किया हुआ पूर्ण अध्ययन पाएँगे। भारतीय साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ है।

सूचना—प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रकाशन मूल्य प्राप्त हो जाने पर ही भेजे जा सकेंगे।

मिलने का पता :— रजिस्ट्रार, प्रयाग-विश्वविद्यालय, प्रयाग

अथवा

कोषाध्यक्ष, हिन्दी परिषद्, प्रयाग-विश्वविद्यालय

भारतीय हिंदी परिषद् के प्रकाशन

हिंदी अनुशीलन

यह भारतीय हिंदी परिषद् का मुखपत्र है। हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति-विषयक गंभीर समालोचना और अन्वेषणों की संपूर्ण गति-विधि का परिचय हिंदी जगत् को कराने के लिए भारतीय हिंदी परिषद् इस त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन करता है। इसमें मुख्यतः विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए निबंध-लेखादि रहते हैं, और हिंदी के विविध विषयों पर विभिन्न विश्व-विद्यालयों और साहित्यिक संस्थाओं में जो कार्य होता रहता है, उसका विवरण रहता है। प्रत्येक हिंदी प्रेमी को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। वार्षिक शुल्क ३)।

अंग्रेजी-हिंदी वैज्ञानिक कोष

प्रधान सम्पादक–डा० सत्यप्रकाश, डी. एस-सी.

विशेष सम्पादक

भौतिक—डा० निहालकरण सेठी, डी. एस-सी., आगरा कालेज, आगरा
रसायन—प्रो० फूलदेव सहाय वर्मा, एम. एस-सी., हिंदू विश्वविद्यालय काशी
गणित—डा० ब्रजमोहन, डी. एस-सी., हिंदू विश्वविद्यालय काशी
ज्योतिष्—श्री महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, विज्ञान परिषद्, प्रयाग
जीव विज्ञान, **वनस्पति विज्ञान**—श्री ज्ञानप्रकाश दुबे, एम. एस-सी., श्री कृष्णबहादुर, एम. एस-सी., तथा डा० सत्यप्रकाश, प्रयाग-विश्वविद्यालय

इस कोष में बी एस-सी., और एम. एस-सी. कक्षा के अध्ययन-अध्यापन में प्रयुक्त होने वाले उपर्युक्त विषयों के लगभग ३०,००० पारिभाषिक शब्दों के हिंदी रूपांतर दिए गए हैं। हिंदी प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों में शिक्षा और परीक्षा का माध्यम हिंदी होने जा रही है। भारतीय हिंदी परिषद् ने इसी लक्ष्य से हिंदी प्रदेश के विश्वविद्यालयों के अध्यापकों के सहयोग से गत छः वर्षों में इस कोष का निर्माण कराया है। प्रत्येक कालेज, विश्वविद्यालय, और विज्ञान प्रेमी भारतीय को इस कोष को अवश्य रखना चाहिए। यह खंडशः प्रकाशित हो रहा है। ५१२ पृष्ठों के प्रथम द्वो खं० का मूल्य ६), और संपूर्ण कोष का ग्राहक बनने के लिए मूल्य १२)।

मिलने का पता:—कोषाध्यक्ष,
भारतीय हिंदी परिषद्,
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग